सुरह 1: चाबी (अल-फातेहा)

1. **अल्लाह** के नाम से, सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले.*

2. तारीफ हो **अल्लाह** की, कायनात के रब•

3. सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले•

4. इंसाफ के दिन के मालिक•

5. हम सिर्फ आपकी इबादत करते हैं• हम सिर्फ आप से मदद मांगते हैं•

6. हिदायत करिये हमें सही राह में;

7. उनका रास्ता जिनको आपने बक्शा; उनका नहीं जो गज़ब के हकदार हुए हैं, नाहिं भटके हुओं का•

**1:1 कुरान में पहेली आयत नुमाईदगी करती है बुनियाद कि जिस पर एक गैरमामुली 19 पर बुनियाद रियाजी मौजेजा बना है• इस एहेम बयान में 19 अरबी हुरूफें हैं और हर लफ्ज़ पूरे कुरान में 19 के ज़रप में वाके होता है (अपेन्डिक्सें 1 और 29 देखें तफसीलों के लिए).*

**1:1-7 सुरेह 1 है अल्लाह कि तरफ से हमारे लिए तोहफा उनसे रबता कायम करने के लिए रोज़ाना कि राबता नमाजों के ज़रिए• यह हकीकत मदद कि गई है एक अज़ीम, समझने के लिए आसान लेकिन नामुमकिन नक्ल किये जाने के लिए रियाज़ी ढांचे के ज़रिये जो ललकारता है सबसे बड़े रियाज़तदानों को ज़मीन पर, और उन्हें हैरान कर देता है; ये इन्सान की काबिलियत के है कहीं बाहर•*

(1) सुरेह नम्बर, उसके बाद आयतों कि नम्बरें, एक दूसरे के आस पास, देता है 11234567• यह नम्बर है एक 19 का ज़रप•

(2) अगर हम बदल दें आयत नम्बरों कि जगह में हर आयत में हुरूफों के नम्बर से, हम पाते हैं 1 19 17 12 11 19 18 43 ये नम्बर भी है एक 19 का जरप •

(3) अगर हम टोटल जिमेटरिकल वेल्यु दाखिल करें हर आयत कि, हम पाते हैं 1 19 786 17 581 12 618 11 241 19 836 18 1072 43 6009• ये नम्बर है एक 19 का जरप•

(4) ऊपर दिखाया गया नम्बर शामिल करता है सुरेह 1 कि सारी हदों को, और शामिल करता है 38 अददें (19x2).

(5) ये काबिले है गौर कि 38 अदद वाला नम्बर फिर भी 19 से तकसीम हो जाता है जब हम लिखते हैं उसके हिस्सों को उल्टी तरफ से, दाएं से बाएं तरफ, जैसा अरबि लोग किया करते थे• इसतरह, 6009 43 1072 18 836 19 241 11 618 12 581 17 786 19 1 भी है एक 19 का ज़रप•

(6) ऊपर बयान की गई रियाज़ी नुमाईदीगियाँ शिरकत करती हैं कई गैरमामूली रियाज़ी कुदरत में रोज़ाना के पाँच वक्त कि राबता नमाज़ों की सारी तफसीलों की तसदीक देने के लिए (अपेन्डिक्स 15)•

(7) कई और हैरतअंगेज़ कुदरत अपेन्डिक्स एक में दिए गए हैं• इस तरह पढ़ने वाले को शुरू में दिया गया है काबिले एहसास सबूत कि यह है अल्लाह का पैगाम दुनिया कि तरफ•

आयत नं•	हुरूफ के अदद	जिमेटरिकल वेल्यु
1	19	786
2	17	581
3	12	618
4	11	241
5	19	836
6	18	1072
7	43	6009
टोटलें	139	10143

मजमूई फ्रिक्युन्सी लफ्ज़ *आयतों का मजमूई जमा जहाँ लफ्ज़ **अल्लाह** का इस पन्ने में =*

***अल्लाह** वाके होता है इस पन्ने में = 1 + 2 =*

सुरह 2: बछिया
(अल-बकराह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. अ•ल•म•*

2. यह आसमानी किताब है बेखता; एक रहनुमा नेककारों के लिए;

तीन किस्मों के लोग

(1) नेककार•

3. जो अंदेखे में ईमान रखते है, रावता नमाजों (सलात) को अदा करते हैं,* और उनके लिए हमारी** नियामतों से, वो देते हैं खैरात को•

4. और वो ईमान रखते हैं उसमें जो तुम को नाज़िल हुआ था, और उसमें जो तुमसे पहले नाज़िल हुआ था, और अगली जिंदगी के मुताल्लिक, वो हैं पूरी तरह यकीनी•*

5. ये हैं हिदायतयाफ्ता उनके रव की तरफ से; ये हैं जीतनेवाले•

(2) काफिरें

6. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, वो एक जैसा है उनके लिए; चाहे तुम उन्हें आगाह करो, या उन्हें आगाह न करो, वो ईमान नहीं ला सकते•*

7. **अल्लाह** उनके ज़हनों और उनकी सुनाई को मोहर लगा देते हैं, और उनकी आँखें हैं ढकी हुई• उन्होंने पाया है सख्त आज़ाब•

(3) मुनाफिकीन

8. फिर वहाँ हैं जो कहते हैं, "हम ईमान रखते हैं **अल्लाह** और आखरी दिन में," जबके वो नहीं हैं ईमानवाले•

**2:1 ये इनीशियलें रहे एक खुदाई महफूज़ राज़ 1400 सालों के लिए• हम अब उन्हें पहचानते हैं कुरान के रियाज़ी मौजज़े का एक बड़े हिस्से जैसा (देखें अपेन्डिक्सें 1, 2, 24, और 26)• अ•ल•म• का मतलब इशारा किया गया हैं आयत 2 में: "यह आसमानी किताब है बेखता•" यह बिला हुज्जत तौर पर सावित हो चुका है इस हकीकत से कि वाकै होने कि फ्रिक्युन्सीयाँ (frequencies) इन तीन इनीशियलों कि इस सुरेह में है 4502, 3202, और 2195 इस तरतीब में• इन नम्बरों का जमा है 9899, या 19x521• इसतरह, अरबी ज़बान के ये सबसे अकसर हुरूफ रखे गए हैं रियाज़ी तौर पर एक गैर मामूली सांचे के मुताबिक• बिल्कुल यही इनीशियलें सुरेह 3, 29, 30, 31, और 32, के भी पहले आते हैं और उनकी फ्रिक्युन्सीयाँ (frequencies) वाकै होने की जमा होती हैं 19 के ज़रप को इन हर एक सूरतों में•*

**2:3 चुँकि रावता नमाजें एक दिन में पाँच दफा मुर्करर की गई हैं, वो कायम करतीं हैं अव्वल सरचश्मा हमारी रूहों कि गिज़ा के लिए• फरमानबरदारी में दूसरे सारे तरीकों के साथ, रावता नमाजें सबसे पहले ईब्राहीम के ज़रिए नाज़िल की गई थी (21:73, 22:78). हालांकि राज़ाना कि ये पाँच नमाजें कुरान के नुजूल के पहले भी पढ़ी जाती थीं, हर रावता नमाज़ कुरान में खास तौर पर बयान की गयी हैं (24:58, 11:114, 17:78, और 2:238)में• अपेन्डिक्सें 1 और 15 मुहय्या करते हैं जिस्मानी सबूत हिमायत करते हुए रावता नमाज़ों की सारी तफसीलें, शामिल करते हुए हिस्सों के अदद (रकातें) और रूकुओं, सुजूदों, और तशहहुदों की अददें हर नमाज़ में•*

***2:3 जब अल्लाह जमा फिअल इस्तेमाल करते हैं, यह इशारा करता है कि दूसरी हस्तियाँ, उमुमन फरिश्ते, शामिल हैं• जब अल्लाह ने मूसा से बात किया, मुनफरिद इस्तेमाल किया गया था (20:12-14)• देखें अपेन्डिक्स 10•*

**2:4 बावजूद बूरी तरह बिगाड़ों के जिन्होंने खराब किया पिछली आसमानी किताबों को, अल्लाह की सच्चाई फिर भी पाई जा सकती है उनमें• दोनों तौरेत और इंजील अब भी वकालत करते हैं मुकम्मल बंदगी सिर्फ अल्लाह के लिए (डियुटेरोनॉमी 6:4-5, मार्क 12:29-30)• सारी बिगाड़ें आसानी से पहचाने जा सकते हैं•*

**2:6-7 जो कोई एक फैसला करते हैं अल्लाह को ठुकराने का मदद किए जाते हैं उस राह में; वो रोके जाते हैं अल्लाह की तरफ से किसी सबूत या हिदायत को देखने से जबतक वो ऐसा एक फैसला कायम रखते हैं• नतीजे ऐसे एक तबाही वाले फैसले का बताया गया है आयत 7 में•*

9. धोखा देने कि कोशिश में **अल्लाह** और उनको जो ईमान रखते हैं, वो सिर्फ धोखा देते हैं अपने आप को बगैर समझते हुए•

10. उनके ज़हनों में है एक बिमारी• इस वजह से, **अल्लाह** बढ़ाते हैं उनकी बिमारी को• उन्होंने पाया है एक र्ददनाक आज़ाब उनके झूठ बोलने के लिए•

11. जब उनसे कहा जाता है, "बुराई मत करो," वो कहते हैं, "लेकिन हम तो हैं नेककार!"

12. असल में, वो हैं बुराई करने वाले, लेकिन वो नहीं समझते•

13. जब उनसे कहा जाता है, "ईमान लाओ उन लोगों जैसा जिन्होंने ईमान लाया है," वो कहते हैं, "क्या हम ईमान लाएं उन बेवकूफों कि तरह जिन्होंने ईमान लाया?" असल में, वो हैं जो हैं बेवकूफ, लेकिन वो नहीं जानते•

14. जब वो ईमान वालों से मिलते हैं, वो कहते हैं, "हम ईमान रखते हैं," लेकिन जब होते हैं तन्हा अपने शयातीनों के साथ, वो कहते हैं, "हम तुम्हारे साथ हैं; हम तो सिर्फ खिल्ली उड़ा रहे थे•"

15. **अल्लाह** उनकी खिल्ली उड़ाते हैं, और उनके खताओं, हिमाकतों में उनकी रहबरी करते हैं•

16. ये वो हैं जिन्होंने गुमराही खरीदी है, हिदायत के बदले• ऐसी तिजारत कभी भी कामयाब नहीं होती, नाहीं वो कोई हिदायत पाते हैं•

17. उनकी मिसाल है उनकी तरह जिन्होंने शुरू कि एक आग, फिर, जैसे हि वो उनके इर्द गिर्द रौशनी फैलाती है, **अल्लाह** ले लेते हैं उनकी रौशनी, उन्हें अंधेरे में छोड़ते हुए, देखने के लिए बेबस•

18. बहरे, गुंगे, और अंधे; वो लौटने के लिए नाकामयाब होते हैं•

19. एक और मिसाल: बारिश का तूफान जिसमें अंधेरा गरज और बिजली है• वो अपनी उंगलियों को अपने कानों मे डाल लेते हैं, मौत से बचने के लिए• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ काफिरों से•

ईमान की रौशनी

20. बिजली की रौशनी तकरीबन उनकी आँखों की रौशनी छीन लेती है• जब वो रौशन होती है उनके लिए, वो आगे बड़ते हैं, और जब अंधेरा छा जाता है, वो ठहर जाते हैं• अगर **अल्लाह** चाहें, वो ले सकते* हैं उनकी सुनाई और उनकी दिखाई• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

21. ऐ लोगों, इबादत करो सिर्फ तुम्हारे रब की —वो वाहिद जिन्होंने पैदा किया तुम्हें और तुमसे पहले उनको — ताके तुम बचाए जा सको•

22. वो वाहिद जिन्होंने ज़मीन को तुम्हारे लिए रहने के काबिल, और आसमान को एक ढांचा बनाया• वो भेजते हैं आसमान से नीचे पानी, ताके उससे हर किस्म के फल पैदा करें तुम्हारे ज़िन्दा रहने के लिए• तुम्हें **अल्लाह** के खिलाफ बुतों को कायम नहीं करना चाहिए, जबके तुम जान चुके हो•

रियाज़ी दावा

23. अगर तुम्हें है कोई शक मुताल्लिक उसके जो हमने हमारे बंदे* पर नाज़िल किया है, तो इनकी तरह एक सुरेह पेश करो, और बुलाओ तुम्हारे खुदके गवाहों को **अल्लाह** के खिलाफ, अगर तुम हो सच्चे•

जहन्नम का मिसाल्या बयान

24. अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते — और तुम ऐसा कभी नहीं कर सकते — फिर जहन्नमी आग से खबरदार रहो, जिसका इंधन लोग और चट्टाने हैं; वो काफिरों का इंतज़ार कर रही है•

**2:20 अरबी में ज़रूरी नहीं "था" या "थी" दलालत दे कुदरती जिन्स का (अपेन्डिक्स 4)•*

**2:23-24 कुरान का मौजज़े वाला रियाज़ी कोड मुहय्या करता है कई सबूतें इशारा करते हुए नाम "रशाद खलीफा" अल्लाह के बंदे जैसा जो बयान किया गया है यहाँ• कुछ अदबी हस्तियाँ, जैसे अल मुतनब्बी और ताहा हुसैन, ने अदबी दावे का जवाब दिया है लेकिन उन्हें कुरान के रियाज़ी बनावट कि कोई खबर न थी• वो है कुरान का रियाज़ी कोड, नाज़िल किया गया अल्लाह के वादे का रसूल, रशाद खलीफा के ज़रिये, जो है असल दावा—इसलिए की उसकी कभी नक्ल नहीं की जा सकती• देखें अपेन्डिक्सें 1, 2, 24, और 26 तफसील किये गये सबूतों के लिए•*

मिसाल्या बयान
जन्नत का

25. अच्छी खबर दो उनको जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िन्दगी बसर करते हैं कि उनके पास होंगे बहती हुई नहरों के साथ बागें• जब मुहय्या किये जायेंगे फलों की एक नियामत से उसमें, वो कहेंगे "यह तो वही है जो हमें पहले मुहय्या किया गया था•" इसतरह, उनको मिसाल्या बयानात दिए जाते हैं• उनके पास होंगे पाक जोड़े उसमें, और वो उसमें रहेंगे हमेशा के लिए•

26. **अल्लाह** नहीं शर्माते किसी भी किस्म की मिसाल बयान करने से,* छोटे मच्छर से लेकर उससे बड़ा• जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं, वो जानते हैं कि वो है सच उनके रब की तरफ से• जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, वो कहते हैं, "**अल्लाह** का क्या मतलब है ऐसी एक इस मिसाल से?" वो गुमराह करते हैं कईयों को उससे, और हिदायत देते हैं कईयों को उससे• लेकिन वो गुमराह नहीं करते उससे सिवाए बदकार के,

27. जो **अल्लाह** से किए गए वादे को तोड़ते हैं उसे बरकरार रखने का एहद करने के बाद, तोड़ते हैं उसे जिसे **अल्लाह** ने हुक्म दिया है जोड़ने का, और बुराई करते हैं• यह हैं खोनेवाले•

दो मौतें और दो ज़िन्दगियाँ
*काफिरों के लिए**

28. कैसे तुम कुफ्र कर सकते हो **अल्लाह** में जबकि तुम थे मुर्दा और उन्होंने दिया तुम्हें ज़िन्दगी, फिर वो डालते हैं तुम्हें मौत को, फिर वो तुम्हें वापस ज़िन्दा करते हैं, फिर आखिर कार तुम उनके पास लौटते हो?

29. वो हैं वाहिद जिन्होंने तुम्हारे लिए ज़मीन पर सारी चीज़ पैदा किया, फिर मुतवज्जह हुए आसमान की तरफ और मुकम्मल किया सात कायनातों को उसमें,* और वो हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

*शैतान: एक आरज़ी "खुदा"**

30. याद करो कि तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा, "मैं रख रहा हूँ एक नुमाइंदा *(एक आरज़ी खुदा)* ज़मीन पर•" उन्होंने कहा, "क्या आप रखेंगे उसमें एक जो फैलाएगा वहाँ बुराई और बहायेगा खून, जबकि हम गाते हैं आपकी तारीफें, आपकी बड़ाई करते हैं, और आपके मुकम्मल इकतेदार की ताईद करते हैं?" उन्होंने कहा, "मैं जो जानता हूँ तुम नहीं जानते•"

आज़माईश होती है शुरू

31. उन्होंने आदम को सिखाया सारे नामें* फिर पेश किए उन्हें फरिश्तों को, कहते हुए, "दो मुझे इनके नामों को, अगर तुम हो सही•"

**2:26 जन्नत और जहन्नम की और बहस के लिए देखें अपेन्डिक्स 5•*

**2:28 नेककार असल में मरते नहीं; वो जाते हैं सीधे जन्नत को• जब उनका दरमियानी वक्त इस ज़मीन पर खत्म हो जाता है, मौत के फरिश्ते सिर्फ दावत देते हैं उनको उसी जन्नत को जाने के लिए जहाँ आदम और हव्वा एक बार रहे थे (2:154, 3:169, 8:24, 22:58, 16:32, 36:20-27, 44:56, 89:27-30)• इस तरह, जबकि नेककार सिर्फ पहली मौत का सामना करते हैं जो हमारी असल गुनाह के बाद पेश आया था, बदकार गुज़रते हैं दो मौतों से (40:11)• मौत के वक्त, काफिरें जानते हैं उनकी आफतज़दाह तकदीर (8:50, 47:27), फिर वो मुसलसल झेलते हैं डरावना ख्वाब जो जारी रहता है जहन्नम तैयार किये जाने तक (40:46, 89:23, अपेन्डिक्स 17)•*

***2:29 हमारी कायनात उसके बिलियन कहकशाओं के साथ, फैलते हुए रौशनी के बिलियनों सालों के फासले, है सबसे छोटी और सबसे अंदर सात कायनातों की (अपेन्डिक्स 6)• बराए करम देखें 41:10-11•*

**2:30-37 ये आयतें ऐसे एहम सवालों का जवाब देतीं हैं जैसे: "क्यों हैं हम यहाँ?" (देखें अपेन्डिक्स 7)•*

**2:31 ये हैं नामें जानवरों, गाड़ी, सबमरीन, स्पेस सेटेलाइट, विसीआर, और दूसरी सारी चीज़ें जो इन्सान को इस ज़मीन पर दरगुज़र होने वाली है•*

32. उन्होंने कहा, “बड़ाई हो आपकी, हमें कोई इल्म नहीं, सिवाए उसके जो आपने हमें सिखाया है• आप हैं सब कुछ जाननेवाले, सबसे हकीम•

33. उन्होंने कहा, “ऐ आदम, बताओ उन्हें उनके नामों को•” जब उसने बताया उन्हें उनके नामों को, उन्होंने कहा, “क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया कि मैं जानता हूँ आसमानों और ज़मीन के राज़ों को? मैं जानता हूँ जो तुम ऐलान करते हो, और जो तुम छिपाते हो•”

34. जब हमने कहा फरिश्तों को, “आदम के आगे सजदे में गिरो,” वो सजदे में गिर गए, सिवाए शैतान के; उसने इन्कार किया, वो था बहुत मगरूर, और एक काफिर•

35. हमने कहा, “ऐ आदम, रहो जन्नत में तुम्हारी बिवी के साथ, और खाओ उसमें फरागदिली से, जैसा तुम्हें पसंद हो, लेकिन इस पेड़ के करीब न जाना, वरना होगे गुनाहगार•”

36. लेकिन शैतान ने उनको धोखा दिया, और वहाँ से उनके निकलने का सबब बना• हमने कहा, “जाओ नीचे एक दूसरे के दुश्मनों कि तरह• ज़मीन पर होगा तुम्हारा ठिकाना और एहतमाम कुछ अरसे के लिए•”

*खास लफ्ज़े**

37. फिर, आदम ने पाया उसके रब की तरफ से लफ्ज़ें, जिससे उन्होंने उसकी मगफरत की• वो हैं माफ करने वाले, सबसे रहमवाले•

38. हमने कहा, “जाओ नीचे वहाँ से, तुम सारे• जब हिदायत आए तुम्हारे पास मेरी तरफ से, जो कोई मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे नहीं होगा कोई डर, नाहीं वो होंगे गमज़दा•

39. “जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं और हमारी वहियों को ठुकराते हैं, वो होंगे रहने वाले जहन्नम के, जिसमें वो रहेंगे हमेशा•”

ख़ुदाई एहकमात
सारे यहूदियों के लिए:
“तुम्हें चाहिए इस कुरान में ईमान लाओ•”

40. ऐ बनी इस्राईल, याद करो मेरी मेहरबानी, जो मैंने तुम पर इनायत किया, और अपने वादे का हिस्सा पूरा करो, ताके मैं मेरे हिस्से का वादा पूरा करूँ, और मेरा एहतराम करो•

41. तुम्हें चाहिए ईमान रखना इसमें जो मैंने यहाँ नाज़िल किया है, तसदीक करता हुआ जो तुम्हारे पास है; और पहेल न करो उसे ठुकराने के लिए• सौदा न करो मेरी वहियों का एक सस्ते दाम के लिए, और मुझे ध्यान में रखो•

42. सच को झूठ से न पलटो, नाहीं सच को छिपाओ, जानबूझकर•

43. तुम्हें राबता नमाज़ों (*सलात*) को अदा करना चाहिए और दो ज़रूरी खैरात (*ज़कात*), और झुको उनके साथ जो झुकते हैं•

44. क्या तुम नसीहत करते हो लोगों को नेककार होने का, जबके खुद भूलते हुए, इसके बावजूद के तुम आसमानी किताब पढ़ते हो? क्या तुम नहीं समझते?

45. तुम्हें साबितकदमी और राबता नमाज़ों (*सलात*) के ज़रिए मदद तलाश करनी चाहिए• यह मुश्किल है वाकई, लेकिन एहतराम करने वाले के लिए नहीं,

46. जो ईमान रखते हैं कि वो मिलेंगे उनके रब से; कि उनकी तरफ आखिरकार वो लौटेंगे•

47. ऐ बनी इस्राईल, याद करो मेरी मेहरबानी जिसे मैंने इनायत किया तुमपर, और ये कि मैंने बक्शा तुम्हें किसी दूसरे लोगों से ज़्यादा•

48. खबरदार रहो उस दिन से जब कोई रूह किसी रूह को बचा न सकेगी, न कोई शिफाअत कबूल की जायेगी, ना कोई फिदया दिया जा सकेगा, नाहीं किसी कि मदद की जा सकेगी•

**2:37 इसीतरह, अल्लाह ने दिये हैं हमें खास रियाज़ी तौर पर कोड किये गये लफ्ज़ें, सुरेह 1 कि लफ्ज़ें उनके साथ राबता कायम करने के लिए (देखें फुटनोट 1:1 और अपेन्डिक्स 15)•*

49. याद करो कि हमने बचाया तुम्हें फिरऔन के लोगों से जिन्होंने तुमपर सबसे बुरी इज़ारसानी डाली, कत्ल करते हुए तुम्हारे बेटों को और बक्शते हुए तुम्हारी बेटियों को• वो थी एक सख्त आज़माईश तुम्हारे रब की तरफ से•

50. याद करो कि हमने तुम्हारे लिए समन्दर को अलग किया; हमने बचाया तुम्हें और डुबोया फिरऔन के लोगों को तुम्हारी नज़रो के सामने•

51. इसके बावजूद, जब हमने मूसा को हाज़िर किया चालीस रातों के लिए, तुमने बछड़े कि इबादत की उसके गैर मौजूदगी में, और बन गए बदकार•*

52. फिरभी, हमने माफ किया तुम्हें उसके बाद ताकि तुम कद्रदान बन सको•

53. याद करो कि हमने दिया मूसा को आसमानी किताब और कानून की किताब, ताके तुम हिदायतयाफ्ता हो सको•

*अपनी अना को कत्ल करो**

54. याद करो कि मूसा ने कहा अपने लोगों से, "ऐ मेरे लोगों, तुमने गलत किया है तुम्हारी रूहों को बछड़े कि इबादत करते हुए• तुम्हें तौबा करना चाहिए तुम्हारे पैदा करने वाले से• तुम्हें तुम्हारी अनाओं को कत्ल करना चाहिए• ये बेहतर है तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले कि नज़र में•" उन्होंने ज़रूर तुम्हें माफ किया• वो हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

*जिस्मानी सबूत**

55. याद करो के तुमने कहा, "ऐ मूसा, हम ईमान नहीं लायेंगे जबतक हम देख न लें **अल्लाह** को, जिस्मानी तौर पर•" इस वजह से, जब तुमने देखा, बिजली गिर पड़ी तुमपर•

56. फिर हमने तुम्हें दोबारा ज़िन्दा किया, इसके बाद के तुम मर चुके थे, ताकि तुम कद्रदान बन सको•

57. हमने छांव किया तुम्हें बादलों के साथ *(सिनाई में)*, और भेजा नीचे तुम्हारे लिए मन्ना और तीतरें: "खाओ अच्छी चीज़ों से हमने मुहय्या किया तुम्हारे लिए•" उन्होंने हमें ठेस नहीं पहुंचाई *(बगावत करते हुए)*; वो ठेस पहुंचाते हैं सिर्फ अपनी खुद कि रूहों को•

अल्लाह में भरोसे कि कमी:
वो इन्कार करते हैं
जेरूसलम में दाखिल होने के लिए

58. याद करो के हमने कहा, "दाखिल हो इस शहर में, जहाँ तुम पाओगे उतनी नियामत जितनी तुम चाहो• बस दाखिल हो फाटक में खाकसारी से, और पेश आओ लोगों के साथ अच्छे से• फिर हम माफ करेंगे तुम्हारे गुनाहों को, और बढ़ायेंगे इनाम मुत्तकियों के लिए•"

59. लेकिन उनमें से बदकारों ने जारी किया एहकामों को बजाये एहकामों के जो उन्हें दिया गया था• इस वजह से, हमने भेजा नीचे खतावारों पर आसमान से लानत, उनकी बदकारी कि वजह से•

और मौजेज़े

60. याद करो कि मूसा ने चाहा पानी उसके लोगों के लिए• हमने कहा, "मारो पत्थर को तुम्हारे आसे से•" जिसपर, बाराह चश्मे फूंट पड़े उसके ज़रिए• हर कबीले का फर्द जानता था उसके खुदके पानी को• खाओ और पियो **अल्लाह** की नियामतों से, और न फिरो ज़मीन पर खराबी से•

**2:51 ये वाक्या झलकाता है इन्सान की बुतपरस्ती वाली फितरत• गहरे मौजज़ों के बावजूद, मूसा की पैरवी करने वालों ने उसकी गैर मौजूदगी में बछड़े कि इबादत की, और मूसा के साथ दो ही ईमान वाले बचे (5:23)• जैसा तार्रुफ में इशारा किया गया है, सारे इन्सानें हैं बागियें जिनकी अनाएं हैं उनकी खुदाएं•*

**2:54 वो है अना जो सबब बना शैतान के गिरने का• वो है अना जो सबब बना हमारे इस दुनिया को जिलावतन का, और वो है अना जो हममें से कईयों को रोक रही है अल्लाह की सल्तनत की तरफ मगफरत पाने से•*

**2:55 ये है काबिले गौर कि लफ्ज़ "अल्लाह" इस आयत में 19वीं बार वाकै हुआ है, और यह है आयत जहाँ लोगों ने "जिस्मानी सबूत" का मुतालबा किया• कुरान का रियाज़ी कोड, जो नम्बर 19 पर बुनियाद है, मुहय्या करता है ऐसा जिस्मानी सबूत• ये भी ध्यान दें कि 2 + 55 = 57 = 19x3•*

इस्राईल करता है बगावत

61. याद करो कि तुमने कहा,"ऐ मूसा, हम अब बर्दाशत नहीं कर सकते एक किस्म का खाना• पुकारो तुम्हारे रब को हमारे लिए ऐसी ज़मीनी अनाजें पैदा करें जैसे फलियाँ, ककड़ियाँ, लहसुन, दालें, और प्याज़ें•" उसने कहा, "क्या तुम चाहते हो बदलने के लिए अच्छे को उससे जो है कमतर? जाओ नीचे मिस्र की तरफ, जहाँ तुम पा सकते हो जो तुमने मांगा है•" उन्होंने पाया है लानत, रूसवाई, और बेइज़्ज़ती, और लाये अपने आप पर **अल्लाह** की तरफ से कहर• यह है इसलिए कि उन्होंने ठुकराया **अल्लाह** की वहियों को, और नाहक नबियों को कत्ल किया• ये इसलिए कि उन्होंने नाफरमानी की और हद से गुज़र गए•

सारे फरमानबरदारों
का एका

62. यकीनन, वो जो ईमान रखते हैं, वो जो हैं यहुदी, इसाईयाँ, और जो तबदील हुए हैं; जो कोई
(1) ईमान रखे **अल्लाह** में , और
(2) रखे ईमान आखरी दिन में, और
(3) बसर करें एक नेक ज़िन्दगी, पायेंगे उनका अज्र उनके **रब** की तरफ से• उनके पास कुछ नहीं है डरने के लिए, नाहीं वो होंगे गमज़दा•

इस्राईल से वादा

63. हमने तुमसे एक वादा लिया, जब हमने कोहे तूर को तुम्हारे ऊपर उठाया: "तुम्हें मज़बूती से बरकरार रखना चाहिए जो हमने दिया है तुम्हें, और उसके मज़ामीनों को याद रखो, ताके तुम बचाए जा सको•"

64. लेकिन तुम पलट गए उसके बाद, अगर न होता **अल्लाह** का फज़्ल और उनकी रहमत तुम्हारी तरफ, तुम तबाह कर दिए गये होते•

65. तुम जानते हो तुम में से उनके बारे में जिन्होंने सब्बाथ कि बेअदबी की• हमने कहा उनको, "तुम बन्दरों की तरह ज़लील हो जाओ•"

66. हमने कायम किया उनको एक मिसाल उनकी नस्ल, साथ साथ बाद की नस्लों के लिए, और एक रौशनाई नेककार के लिए•

*बछिया**

67. मूसा ने उसके लोगों से कहा, "**अल्लाह** तुम्हें एक बछिया कुरबान करने का हुक्म देते हैं•" उन्होंने कहा, "क्या तुम हमारा मज़ाक उड़ा रहे हो?" उसने कहा, "अल्लाह ना करें, कि मैं जाहिलों सा बरताव करूं•"

68. उन्होंने कहा, "पुकारो तुम्हारे रब को हमें बताने के लिए कौन सी•" उसने कहा, "वो कहते हैं कि वो है एक बछिया जो नाहीं है ज़्यादा बुढ़ी और नाहीं ज़्यादा जवान; एक दरमियानी उम्र की• अब, करो वो जो तुम्हें हुक्म दिया गया है करने के लिए•"

69. उन्होंने कहा, "पुकारो तुम्हारे रब को हमें उसका रंग बताने के लिए•" उसने कहा, "वो कहते हैं कि वो है एक पीली बछिया, शोख रंग की, देखने वालों को भाने वाली•"

70. उन्होंने कहा, "पुकारो तुम्हारे रब को हमें बताने के लिए कौन सी• बछियायें तो हमें एक जैसी मालूम होतीं हैं और, **अल्लाह** ने चाहा, हम होंगे हिदायतयाफ्ता•"

71. उसने कहा, "वो कहते हैं, कि वो है एक बछिया जो कभी भी ज़मीन पर हल चलाने या अनाजों को पानी देते हुए रूसवा न की गई हो; किसी ऐब से परे•" उन्होंने कहा, "तुम अब लाए हो सच्चाई•" उन्होंने आखिर कार उसे कुरबान किया, इस लम्बी हिचकिचाहट के बाद•

**2:67 हाँलाकि इस सुरेह में हैं एहम कानूनें और हुक्में, शामिल करते हुए रावता नमाज़ें, रोज़ा, हज, और शादी के कानूनें, तलाक, वगैराह, सुरेह को नाम दिया गया है "बछिया•" ये इशारा करता है बड़ी एहमियत अल्लाह कि फरमानबरदारी और फौरी तौर पर, सावितकदमी से अताअत हमारे पैदाकरने वाले के लिए• ऐसी फरमानबरदारी सावित करती है हमारा अकीदा अल्लाह के कादिरे मुतलक और मुकम्मल इख्तियार में• देखें नम्बरों वाली किताब इंजील भी, सुरेह 19•*

बछिया कि वजह

72. तुमने एक शक्स को कत्ल किया था, फिर आपस में बहस किया। **अल्लाह** को फाश करना था जो तुमने छिपाने कि कोशिश की।

73. हमने कहा, "(*बछिया के*) हिस्से से मारो (*मकतूल को*)।" वो है जब **अल्लाह** ने मकतूल को ज़िन्दा किया, और दिखाया तुम्हें अपनी निशानियाँ, ताके तुम समझ सको।

74. इसके बावजूद, तुम्हारे दिलें पत्थरों जैसे सख्त हो गए, या उससे भी ज़्यादा सख्त। इसलिए कि ऐसे भी पत्थरें हैं जिनसे नदीयाँ फूट पड़ती हैं। दूसरे फटकर और हल्की नहरें छोड़ते हैं, और दूसरे पत्थरें दुबक जाते हैं **अल्लाह** के एहतराम के वासते। **अल्लाह** कभी गाफिल नहीं किसी चीज़ से तुम करते हो।

अल्लाह के लफ्ज़ को बिगाड़ना

75. क्या तुम उम्मीद करते हो उनसे ईमान लाने की जैसा तुम लाए,जबके उनमें से कुछ **अल्लाह** के लफ्ज़ को सुनते, फिर उसे बिगाड़ देते, उसे पूरी तरह समझते हुए, और जानबूझ कर?

अल्लाह के लफ्ज़ को छिपाना

76. और जब वो ईमान वालों से मिलते हैं, वो कहते हैं, "हम ईमान रखते हैं," लेकिन जब वो इकट्ठा होते हैं एक दूसरे के साथ, वो कहते हैं, "इत्तेला ना करो (*ईमान वालों को*) उस मालुमात की जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिया है, वरना तुम अपने रब के बारे में उनकी बहेस में मदद करोगे। क्या तुम नहीं समझते?"

77. क्या वो नहीं जानते कि **अल्लाह** जानते हैं सारी चीज़ें वो छिपाते हैं, और सारी चीज़ें वो ऐलान करते हैं?

78. उनमें हैं उम्मीयें जो आसमानी किताब नहीं जानते, सिवाए सुनी सुनाई बातों के, फिर मानते हैं कि वो उसे जानते हैं।

79. इसलिए, हाय हो उनको जो आसमानी किताब को बिगाड़ते हैं उनके खुदके हाथों से, फिर कहते हैं, "यह है जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया है," तलाश करते हुए एक सस्ता माली मुनाफा। हाय हो उनको ऐसी बिगाड़ के लिए, और हाय हो उनको उनके नाजाएज़ मुनाफों के लिए।

*हमेशगी जन्नत और जहन्नम की**

80. कुछ ने कहा है, "जहन्नम हमें नहीं छुएगी, सिवाए एक महदूद की गई दिनों के लिए।" कहो, "क्या तुमने लिया है ऐसा एक एहद **अल्लाह** से — **अल्लाह** कभी नहीं तोड़ते उनका एहद— या, क्या तुम कह रहे हो **अल्लाह** के बारे में जो तुम नहीं जानते?"

81. वाकई, जो कोई कमाते हैं गुनाहों को और घिर जाते हैं उनके बुरे काम से होंगे जहन्नम के रहने वाले; वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए।

82. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं, और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो रहने वाले होंगे जन्नत के; वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए।

एहकामात

83. हमने बनी इस्राईल से एक वादा लिया: "तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए सिवाए **अल्लाह** की। तुम्हें तुम्हारे वालिदैन कि इज्ज़त करनी और रिश्तेदारों, यतीमों, और गरीब का ध्यान रखना चाहिए। तुम्हें लोगों के साथ खुश इख्लाकि से पेश आना चाहिए । अदा करना चाहिए रावता नमाज़े (*सलात*) और दो ज़रूरी खैरात (*ज़कात*)।" लेकिन तुम पलट गये, सिवाए तुम में से कुछ के, और तुम बन गए मुखालिफ।

**2:80-82 ये एक कायम अकीदा है बिगड़े हुए मुसलमानों के बीच कि वो सिर्फ उनके गुनाहों के बराबर का हिस्सा जहन्नम झेलेंगे, फिर वो निकलेंगे बाहर जहन्नम से और जायेंगे जन्नत को। वो ये भी ईमान रखते हैं कि मुहम्मद उनकी तरफ से शिफाअत करेंगे, और उनको निकालेंगे जहन्नम से बाहर। ऐसे अकीदे हैं कुरान के खिलाफ (अपेन्डिक्स 8)।*

84. हमने तुमसे एक वादा लिया, कि तुम्हें तुम्हारा खून नहीं बहाना चाहिए, नाहीं तुम्हें निकालना चाहिए एक दूसरे को तुम्हारे घरों से• तुमने इकरार किया और गवाही दी•

85. इसके बावजूद, यहाँ तुम कत्ल कर रहे हो एक दूसरे को, और निकाल रहे हो कुछ को तुम उनके घरों से, जमा होते हुए उनके खिलाफ गुनाहगारी और किनाह से• इसके बावजूद के उन्होंने हत्यार डाल दिया, तुमने उनसे फिदया मांगा• अव्वल तो उन्हें घरों से निकालना तुम पर हराम था• क्या तुम आसमानी किताब के कुछ हिस्से में ईमान रखते हो और कुछ में ईमान नहीं रखते? क्या आज़ाब होना चाहिए तुम में से उनके लिए जो ऐसा करते हैं, सिवाए रूसवाई इस ज़िंदगी में, और इस से बदतर अज़ाब हश्र के दिन पर? **अल्लाह** कभी गाफिल नहीं किसी चीज़ से तुम करते हो•

86. ये वो हैं जिन्होंने खरीदा है इस हकीर ज़िंदगी को अगली ज़िंदगी के बदले• इस वजह से, आज़ाब कभी कम नहीं किया जाता उनके लिए, नाहीं उनकी मदद की जा सकती है•

नबियें इस्राईल के

87. हमने दिया मूसा को आसमानी किताब, और उसके बाद हमने भेजा दूसरे रसूलों को, और हमने ईसा, मरयम के बेटे को दिए गहरे मौजेज़ात और उसकी मदद की पाक रूह से• क्या यह एक हकीकत नहीं कि जब भी एक रसूल गया तुम्हारी तरफ साथ किसी चीज़ के जिसे तुमने नापसंद किया, तुम्हारी अना बनी सबब तुम्हारे मगरूर होने का? उनमें से कुछ को तुमने ठुकराया, और उनमें से कुछ को तुमने किया कत्ल•

अफसोस नाक बयान:
“मेरा ज़ेहन बन चुका है!”

88. कुछ कहेंगे, “हमारे ज़ेहने बन चुके हैं!” बलिके, वो है एक लानत **अल्लाह** की तरफ से, एक नतीजा जैसा उनके कुफ्र का, जो उन्हें ईमान लाने से रोकता है, सिवाए उनमें से कुछ के•

कुरान
तकमील करता है
सारी आसमानी किताबें

89. जब यह आसमानी किताब आई उनकी तरफ **अल्लाह** की तरफ से, और इसके बावजूद के ये इकरार, और तसदीक करता है जो है उनके पास, और इसके बावजूद कि जब वो काफिरों से बात करते थे वो इसकी आमदगी कि पेशीनगोई किया करते थे, जब उनके खुद कि पेशीनगोई पेश आई, उन्होंने कुफ्र किया उसमें• **अल्लाह** की मलामत इस तरह पड़ती है काफिरों पर•

90. वाकई आफतज़दा है जिसके लिए उन्होंने बेचा उनकी रूहों को — **अल्लाह** की इन वहियों को ठुकराते हुए सिर्फ नाराज़गी कि वजह से कि **अल्लाह** उनकी रहमत इनायत कर सकते हैं जिस किसी पर वो चुनें उनके बंदों में से• इस वजह से, उन्होंने हासिल किया है कहेर पर कहेर• काफिरों ने हासिल किया है एक रूसवाई वाला अज़ाब•

91. जब उनसे कहा जाता है, “तुम्हें ईमान रखना चाहिए **अल्लाह** की इन वहियों में,” वो कहते हैं, “हम सिर्फ ईमान रखते हैं उसमें जो भेजी गई थी नीचे हमारी तरफ•” इस तरह, वो बाद वाली वहियों में कुफ्र करते हैं, इसके बावजूद के वो है सच उनके रब की तरफ से, और इसके बावजूद के वो देता है तसदीक उसकी जो है उनके पास! कहो, “फिर क्यों तुमने **अल्लाह** के नबियों को कत्ल किया, अगर तुम थे ईमान वाले?”

इस्राईल की तारीख
से सीख

92. मूसा गया तुम्हारी तरफ गहरे मौजज़ों के साथ, फिर भी तुमने उसकी गैरमौजूदगी में बछड़े कि इबादत की, और तुम बन गए बदकार•

93. हमने तुमसे एक वादा लिया, जब हमने कोहे तूर को तुम्हारे ऊपर उठाया, कहते हुए "तुम्हे चाहिए कि मज़बूती से पकड़े रहो जो हमने तुम्हे दिया है, और सुनो•" उन्होंने कहा,"हम सुनते हैं, लेकिन हम नहीं मानते•" उनके दिलें बछड़े कि चाहत से भर गए, उनके कुफ्र कि वजह से• कहो, "वाकई आफतज़दा है जो तुम्हारा अकीदा तुम्हें हुक्म देता है, अगर वाकई तुम्हारे पास है कोई अकीदा•

94. कहो, "अगर अगली जिंदगी का ठिकाना मखसूस है तुम्हारे लिए **अल्लाह** के पास, दूसरे सारे लोगों को छोड़कर, फिर तुम्हें मौत कि तमन्ना करनी चाहिए, अगर तुम हो सच्चे•

95. वो कभी उसकी तमन्ना नहीं करते, इस वजह से के जो उनके हाथों ने आगे भेजा है• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ बदकार से•

96. असल में, तुम उन्हें सबसे ज़्यादा ज़िंदगी कि तमन्ना रखने वाले पाओगे; यहाँ तक के बुत परस्तों से भी ज़्यादा• उनमें से एक तमन्ना रखता हैं एक हज़ार सालों तक जीने का• लेकिन ये उसे कोई आज़ाब से बचा नहीं सकेगी, चाहे कितना लम्बा वो जी ले• **अल्लाह** देखने वाले हैं सारी चीज़ जो वो करते हैं•

जिब्राईल
पहुँचाते हैं वही

97. कहो, "जो कोई जिब्राईल कि मुखालफत करता है मालूम होना चाहिए कि उसने यह *(कुरान)* तुम्हारे दिल में उतारा है, **अल्लाह** की मरज़ी के मुताबिक, पिछली आसमानी किताबों की तसदीक करता हुआ, और अता करते हुए हिदायत और खुशखबरी ईमानवालों के लिए•"

98. जो कोई **अल्लाह**, और उनके फरिश्ते, और उनके रसूलों, और जिब्राईल और मिकाईल की मुखालफत करते हैं, मालूम होना चाहिए कि **अल्लाह** मुखालफत करते हैं काफिरों की•

99. हमने भेजा हैं नीचे तुम पर ऐसी साफ वहियें, और सिर्फ बदकार उन्हें ठुकरायेंगे•

100. क्या ये एक हकीकत नहीं कि जब वो एक वादा करते हैं और एहेद करते हैं उसे पूरा करने का, उनमें से कुछ हर बार उसे नज़र अंदाज़ करते हैं? असल में, उनमें से ज़्यादा ईमान नहीं रखते•

अल्लाह कि आसमानी किताब को नज़र अंदाज़ करना

101. अब कि जब **अल्लाह** का एक रसूल उनकी तरफ आ चुका है,* और इसके बावजूद कि वो साबित करता है और तसदीक करता है उनकी आसमानी किताब, कुछ आसमानी किताब की पैरवी करने वाले (*यहुदियों, ईसाईयों, और मुसलमानें*) नज़र अंदाज़ करते हैं **अल्लाह** की आसमानी किताब उनके पीठों के पीछे, ऐसे जैसे उनके पास कभी नहीं थी कोई आसमानी किताब•

जादू मलामत किया गया

102. उन्होंने उसकी तलाश की जो शयातिनों ने सुलैमान के सलतनत के मुताल्लिक सिखाया• सुलैमान, हाँला कि, काफिर नहीं था, लेकिन शयातीन थे काफिरें• उन्होंने सिखाया लोगों को जादू, और वो जो भेजा गया था नीचे बाबेल के दो फरिश्ते, हारूत और मारूत के ज़रिए• ये दोनो नहीं बताते थे ऐसी मालुमात बगैर इशारा करते हुए: "यह है एक आज़माईश," तुम्हें चाहिए कि ऐसे इल्म का गलत इस्तेमाल ना करो•" लेकिन लोगों ने उसे शादियों को तोड़ने जैसे बुरे मनसूबों में इस्तेमाल किया• वो **अल्लाह** की मरज़ी के खिलाफ किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकते• वो इस तरह सीखते हैं जो उन्हें ठेस पहुँचाता है, वो नहीं जो उन्हें नफा पहुँचाता है, और वो अच्छे से जानते हैं कि जो कोई जादू इस्तेमाल करता है नहीं पायेगा कोई हिस्सा अगली ज़िंदगी में• वाकई आफतज़दा है जिसके लिए वो बेचते हैं अपनी रूहों को, सिर्फ अगर वो जानते•

103. अगर वो ईमान रखें और एक नेक जिंदगी बसर करें, इनाम **अल्लाह** की तरफ से है कहीं बेहतर• अगर वो सिर्फ जानते•

2:101 अल्लाह के वादे का रसूल कि पेशीनगाई की गई है तौरैत (मलाकाई 3:1-3), इंजील (लूक 17:22-37), और ये आखरी किताब (3:81) में•

इल्तेजा के लफ्ज़ों को मरोड़ना

104. ऐ ईमान वालो तुम, न कहो, "*राइना*"* *(हमारा चरवाहा बनो)*• बलिके, तुम्हें कहना चाहिए, "*उनज़ुरना*" *(हमारी निगरानी करो)*, और सुनो• काफिरों ने एक दर्दनाक आज़ाब हासिल किया है•

हसद मलामत कि गई है

105. नाहीं आसमानी किताबों की पैरवी करने वालों में से काफिरें, नाहीं बुतपरस्ती करने वाले, देखना चाहते हैं किसी रहमतों का नीचे उतरना तेरे ऊपर तेरे रब की तरफ से• बहेरहाल, **अल्लाह** बरसाते हैं उनकी रहमतों को जिस किसी पर वो चुनते हैं• **अल्लाह** रखते हैं लामहदूद रहमत•

सबसे आला मौजेज़ा:
*कुरान का रियाज़ी कोड**

106. जब हम कोई मौजेज़ा मनसूख करते हैं, या उसे भुला देते हैं, हम पैदा करते हैं एक बेहतर मौजेज़ा , या कम से कम एक बराबरी वाला• क्या तुम हकीकत को नहीं पहचानते कि **अल्लाह** हैं कादिरेमुतलक?

107. क्या तुम इस हकीकत से वाकिफ नहीं के **अल्लाह** के पास है आसमानों और ज़मीन कि बादशाहत; कि तुम्हारे पास नहीं है कोई रब और मालिक सिवाए **अल्लाह** के?

108. क्या तुम तलब करना चाहते हो तुम्हारे रसूल से जो पहले मूसा से तलब किया गया था? जो कोई चुनता है कुफ्र, अकीदे के बदले, वाकई भटक गया है सही राह से•

109. बलिके कई आसमानी किताब की पैरवी करने वाले चाहेंगे देखना तुझे कुफ्र कि तरफ पलटते, अबके जब तुम ईमान ले आये हो• ये है उनकी तरफ से हसद कि वजह से, इसके बाद के सच्चाई उनको साबित हो चुकी है• तुम्हें उनको माफ करना, और उन्हें अकेला छोड़ देना चाहिए, जबतक **अल्लाह** उनका इंसाफ जारी नहीं कर देते• **अल्लाह** हैं कादिरेमुतलक•

110. तुम्हें राबता नमाज़ों (*सलात*) को अदा करना और ज़रूरी खैरात (*ज़कात*) देना चाहिए• कोई भी अच्छाई तुम आगे भेजो अपनी रूहों कि तरफ से, तुम पाओगे उसे **अल्लाह** के पास, **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ों के तुम करते हो•

सारे ईमान वाले माफ किए गए हैं,
चाहे कुछ भी नाम हो
उनके मज़हब का

111. कुछ ने कहा है, "कोई भी जन्नत में दाखिल न होगा सिवाए यहूदियों या ईसाईयों के!" ऐसी है उनकी खुशफहमी वाली सोच• कहो, "दिखाओ हमें तुम्हारा सबूत, अगर तुम हो सही•"

फरमानबरदारी:
सिर्फ एक मज़हब

112. वाकई, वो जो अपने आप को मुकम्मल तौर पर सिर्फ **अल्लाह** के हवाले करते हैं, एक नेक ज़िंदगी बसर करते हुए, पायेंगे उनका जज़ा उनके रब की तरफ से; उनके पास नहीं है कुछ डरने के लिए, नाहीं वो होंगे गमज़दा•*

113. यहूदियों ने कहा, "ईसाईयों के पास कोई बुनियाद नहीं," जबके ईसाईयों ने कहा, " यहूदियों के पास कोई बुनियाद नहीं," इस के बावजूद कि, वो दोनों आसमानी किताब पढ़ते हैं• ऐसा है बोलना उनका जो इल्म नहीं रखते• **अल्लाह** इंसाफ करेंगे उनका हश्र के दिन पर, उनके बहेसों के मुताल्लिक•

**2:104 कुछ हिबरू बोलने वाले लोगों ने लफ्ज़ "राइना" का गलत इस्तेमाल किया, और मरोड़ा एक गंदा लफ्ज़ जैसा सुनाई देने के लिए (4:46 भी देखें)•*

**2:106 कुरान का रियाज़ी मौजेज़ा है हमेशा रहने वाला और ज़्यादा बड़ा पहले के मौजज़ों से (34:45, 74:35)• जैसे कुरान खुद, वो तसदीक देता है, पूरा करता है, और पिछाड़ता है पिछले सारे मौजज़ों को•*

**2:111-112 देखें 2:62 और 5:69•*

तुम्हें बाकायदगी से मस्जिद जाना चाहिए

114. कौन हैं ज़्यादा बुरे उनसे जो **अल्लाह** की मस्जिदों को तर्क करते हैं, जहाँ पर उनका नाम कसरत से लिया जाता है, और उनकी विरानगी में हिस्सेदार होते हैं? इन्हें चाहिए उनमें ना दाखिल हों लेकिन डरते हुए• वो इस दुनिया में रूसवाई झेलेंगे, और झेलेंगे अगली ज़िंदगी में एक खौफनाक आज़ाब•

115. **अल्लाह** के हैं मगरिब और मशरिक; तुम जहाँ भी जाओ वहाँ **अल्लाह** की मौजूदगी होगी• **अल्लाह** हैं हर जगह मौजूद, सब कुछ जानने वाले•

बड़ी बेअदबी

116. उन्होंने कहा, "**अल्लाह** ने एक बेटा जना है!" उनकी बड़ाई हो; कभी नहीं! वो हैं मालिक आसमानों और ज़मीन में सारी चीज़ों के; सब हैं उन्हीं के ताबेदार•

117. शुरू करने वाले आसमानों और ज़मीन के: किसी चीज़ को करने के लिए, वो सिर्फ उसे कहते हैं, "हो," और वो हो जाता है•

118. वो जो इल्म नहीं रखते कहते हैं, "अगर सिर्फ **अल्लाह** हमसे बात कर सकते, या हम तक कुछ मौजेज़ा आता!" उनसे पहले भी दूसरों ने यही कहा है; उनके ज़हने एक जैसे हैं• हम ज़रूर मौजेज़े ज़ाहिर करते हैं उनके लिए जिन्होंने यकीन हासिल किया है•

119. हमने भेजा है तुम्हें* सच्चाई के साथ खुशखबरी सुनाने वाले, साथ साथ एक ताकीद करने वाले जैसा• तुम जवाबदार नहीं हो उनके लिए जिन्होंने जहन्नम हासिल किया है•

120. नाहीं यहूदीयें, नाहीं इसाईयें, तुम्हें कबूल करेंगे, जबतक तुम उनके मज़हब पर न चलो• कहो, "**अल्लाह** की हिदायत है सही हिदायत•" अगर तू राज़ी हो जाये उनकी आरज़ुओं पर, बावजूद कि इल्म जो तमने पाया है, तू नहीं पायेगा साथी या मददगार तेरी मदद करने के लिए **अल्लाह** के खिलाफ•

121. वो जिन्होंने आसमानी किताब पाई है, और जानते हैं उसे जैसा उसे जानना चाहिए, इस में ईमान लायेंगे• जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, वो हैं हारने वाले•

122. ऐ बनी इस्राईल, याद करो मेरी मेहरबानी जो मैंने तुम पर इनायत किया, और कि मैंने बक्शा तुम्हें किसी दूसरे लोगों से ज़्यादा•

123. खबरदार रहो उस दिन से जब कोई रूह किसी दूसरे रूह कि मदद न करेगी, कोई फिदया कबूल नहीं किया जायेगा, कोई वासता काम न आयेगा, और किसी कि मदद नहीं की जायेगी•

इब्राहीम

124. याद करो कि इब्राहीम आज़माइश में डाला गया था उसके रब की तरफ से, कुछ एहकामों के ज़रिए, और उसने उन्हें पूरा किया• *(अल्लाह ने)* कहा, "मैं मुकर्रर कर रहा हूँ तुम्हें लोगों का इमाम•" उसने कहा, "और मेरी नस्लों को भी?" उन्होंने कहा, "मेरा वादा खतावारों को शामिल नहीं करता•"

125. हमने बनाया मुकद्दस इबादतगाह *(काबा)* को एक मरकज़ लोगों के लिए, और एक महफ़ूज़ पनाहगाह• तुम इब्राहीम के मुकद्दस जगह को एक इबादत घर कि तरह इस्तेमाल कर सकते हो• हमने इब्राहीम और इस्माईल को हुक्म दिया: "तुम्हें चहिए मेरे घर को पाक करना उनके लिए जो ज़ियारत करते हैं, जो वहाँ रहते हैं, और वो जो रूकू और सुजूद करते हैं•"

126. इब्राहीम ने दुआ किया: "मेरे रब, बनाइये इसे एक अमन वाली ज़मीन, और मुहय्या करिए उसके लोगों को फलों से• मुहय्या करिए उनके लिए जो **अल्लाह** और आखरी दिन में ईमान रखते हैं•" *(अल्लाह ने)* कहा, "मैं उन्हें भी मुहय्या करूंगा जो कुफ्र करते हैं• मैं उन्हें मज़े लेने दूंगा, आरज़ी तौर पर, फिर उन्हें जहन्नम के अज़ाब, और एक आफतज़दा तकदीर के हवाले करूंगा, •"

**2:119 ये मेरी ज़िम्मेदारी है बताना कि इस रसूल कि शिनाख्त तसदीक की गई है "रशाद खलीफा" अल्लाह के वादे का रसूल होने की• जोड़ते हुए जिमेटरिकल वेल्यु "रशाद" (505), साथ जिमेटरिकल वेल्यु "खलीफा" (725) कि, साथ आयत नम्बर (119), हम पाते हैं 1349, एक 19 का ज़रप• देखें 3:81 और अपेन्डिक्स दो•*

इब्राहीम ने पहुँचाए फरमानबरदारी (इस्लाम) के सारे तरीकों को

127. जैसे इब्राहीम ने मुकद्दस जगह कि निवों को ऊँचा किया, इस्माईल के साथ (*उन्होंने दुआ किया*): "हमारे रब, हमारी तरफ से इसे कबूल करिए• आप हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

128. "हमारे रब, हमें आपकी तरफ फरमानबरदारें बनाइये, और हमारी नस्लों से होने दिजीए एक फरमानबरदारों की कौम आपकी तरफ• सिखाइये हमें हमारे मज़हब के तरीकों को, और हमारी मगफरत करिए• आप हैं माफ करने वाले, सब से रहम वाले•

129. "हमारे रब, और उठाइये उनमें से एक रसूल उनको आपकी वहियों को पढ़ने, उनके लिए आसमानी किताब और हिकमत कि तालीम देने, और उन्हें पाक करने के लिए• आप हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•"

130. कौन है जो इब्राहीम के मज़हब को तर्क कर दे, सिवाए उसके जो अपनी खुद कि रूह को बेवकूफ बनाता है? हमने चुना है उसे इस दुनिया में, और अगली ज़िंदगी में वो नेककारों के साथ होगा•

131. जब उसके रब ने उस से कहा, "फरमानबरदार हो," उसने कहा, "मैं कायनात के रब का फरमानबरदार होता हूँ•"

132. इसके अलावा, इब्राहीम ने अपनी औलाद से यही करने कि ताकीद किया, और उसी तरह किया याकूब ने: "ऐ मेरी औलाद, **अल्लाह** ने तुम्हारे लिए मज़हब बता दिया है; न मरो सिवाए फरमानबरदारों जैसा•"

133. अगर तुम देखते याकूब को उसके मौत के वक्त; उसने उसकी औलाद से कहा, "तुम किसकी इबादत करोगे मेरी मौत के बाद?" उन्होंने कहा, "हम आपके खुदा की इबादत करेंगे; आप के बुर्जुगों इब्राहीम, इस्माईल, और इसहाक के खुदा; एक खुदा• हम हैं उनके फरमानबरदारें•"

134. ऐसी है एक कौम माज़ी से• वो ज़िम्मेदार हैं उसका जो उन्होंने कमाया, और तुम ज़िम्मेदार हो उसका जो तुमने कमाया• तुम जवाब देह नहीं किसी चीज़ के लिए उन्होंने किया है•

*फरमानबरदारी (इस्लाम) : इब्राहीम का मज़हब**

135. उन्होंने कहा, "तुम्हें यहूदी या ईसाई होना चाहिए, हिदायतयाफ्ता होने के लिए•" कहो, "हम पैरवी करते हैं इब्राहीम के मज़हब— इबादत एक खुदा की— वो कभी एक बुतपरस्त न था•"

कोई फर्क नहीं अल्लाह के रसूलों के बीच

136. कहो, "हम **अल्लाह** में ईमान रखते हैं, और उसमें जो भेजा गया था नीचे हमारी तरफ, और उसमें जो भेजा गया था नीचे इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब, और बुर्जुगों की तरफ; और उस में जो मूसा और ईसा को दिया गया था, और सारे नबियों को उनके रब की तरफ से• हम फर्क नहीं करते उनमें से किसी के बीच• हम हैं फरमानबरदारें सिर्फ उनके लिए•"

137. अगर वो ईमान लाऐं जैसा तुम लाए हो, तो वो हैं हिदायतयाफ्ता• लेकिन अगर वो पलट जाएं, तो वो हैं मुखालफत में• **अल्लाह** तुम्हें उनकी मुखालफत से बचायेंगे; वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

138. ऐसा है **अल्लाह** का निज़ाम, और किसका निज़ाम है बेहतर **अल्लाह** से? "हम सिर्फ उनकी इबादत करते हैं•"

**2:135 कुरान हमें मुसलसल तौर पर इत्तेला करता है कि फरमानबरदारी है इब्राहीम का मज़हब (3:95, 4:125, 6:161, 22:78)• इब्राहीम ने पाया एक अमली "आसमानी किताब" यानी, इस्लाम के सारे फराएज़ और तरीके [रावता नमाज़ें (सलात), ज़रूरी खैरात (ज़कात), रमज़ान का रोज़ा, और हज ज़ियारत]• मुहम्मद था इब्राहीम के मज़हब का एक पैरवी करने वाला, जैसा के हम देखते हैं 16:123 में; उसने पहुँचाई ये आखरी किताब, कुरान• इस्लाम के तीसरे रसूल ने मज़हब की सदाकात का सबूत पहुँचाया (देखें 3:81 और अपेन्डिक्स 1, 2, 24, & 26)•*

139. कहो, "क्या तुम हमसे **अल्लाह** के बारे में बहस करते हो, जब के वो हैं हमारे रब और तुम्हारे रब? हम ज़िम्मेदार हैं हमारे आमालों के लिए, और तुम ज़िम्मेदार हो तुम्हारे आमालों के लिए• हमने अपने आप को सिर्फ उनके के लिए मनसूब किया है•"

140. क्या तुम कहते हो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब और बुर्जुर्गे यहूदी या ईसाई थे? कहो, "क्या तुम **अल्लाह** से बेहतर जानते हो? कौन है उससे ज़्यादा बुरा जो छिपाए गवाही को जो उसने सीखा है **अल्लाह** से? **अल्लाह** कभी बेखबर नहीं कोई चीज़ से तुम करते हो•"

141. वो थी एक कौम माज़ी से• वो ज़िम्मेदार हैं उसके लिए जो उन्होंने कमाया, और तुम ज़िम्मेदार हो उसके लिए जो तुमने कमाया• तुम जवाब देह नहीं किसी चीज़ के लिए जो उन्होंने किया•

*तास्सुब और तंगख्याली का खातमा**

142. लोगों में से बेवकूफें कहेंगे, "उन्होंने अपने *किबले* का रूख क्यों बदला?"* कहो, "**अल्लाह** के हैं मगरिब और मशरिक, वो हिदायत करते हैं जिस किसी को चाहते हैं एक सीधी राह में•"

143. हमने इसतरह तुम्हें एक गैरजानिबदार कौम बनाया, ताकि तुम गवाहों का काम कर सको लोगों के बीच, और रसूल गवाह का काम करे तुम्हारे बीच• हमने तुम्हारे असल *किबले* का रूख सिर्फ इसलिए बदला ताकि पहचाना जा सके तुम में से उनको जो फौरन रसूल की पैरवी करते हैं उनके मुकाबले जो अपने एड़ीयों के बल पीछे पलट जाते हैं• वो एक मुश्किल आज़माईश थी, लेकिन उनके लिए नहीं जो हिदायतयाफ्ता हैं **अल्लाह** की तरफ से• **अल्लाह** तुम्हारी इबादत को कभी ज़ाया नहीं होने देते• **अल्लाह** हैं शफीक लोगों कि तरफ, सबसे रहमवाले•

किबला का रूख मक्के कि तरफ लौटा दिया गया

144. हमने देखा है तुझे तेरा चेहरा आसमान की तरफ पलटते हुए (*सही रूख तलाश करने के लिए*)• अब हम मुकर्रर करते हैं एक *किबला* जो तुझे है पसंद• इसके बाद, तुझे फेरना चाहिए तेरा चेहरा मुकद्दस मस्जिद की तरफ• चाहे तुम जहाँ भी रहो, तुम सारों को फेरना चाहिए तुम्हारे चेहरों को उसकी तरफ• वो जिन्होंने पिछली आसमानी किताब पाई जानते हैं कि ये है सच उनके रब की तरफ से• **अल्लाह** कभी बेखबर नहीं किसी चीज़ से वो करते हैं•

145. अगर तू आसमानी किताबों की पैरवी करने वालों को हर किस्म का मौजज़े दिखा भी दे, वो कभी तेरे *किबले* कि पैरवी नहीं करेंगे• नाहीं तुझे चाहिए उनके *किबले* कि पैरवी करना• वो तो यहाँ तक के एक दूसरों के *किबले* कि पैरवी नहीं करते• अगर तू राज़ी हो जाये उनकी आरज़ुओं पर, इसके बाद के इल्म जो तेरे पास आ चुका है, तू खतावारों के साथ होगा•

आसमानी किताब कि बेइज़्जती:
चुनिंदा मायनों पर ज़ोर
और राज़दारी

146. वो जिन्होंने आसमानी किताब पाई पहचानते हैं सच्चाई इसमें, जैसे वो अपने खुद के बच्चों को पहचानते हैं• इसके बावजूद, उनमें से कुछ सच को छिपाते हैं, जान बूझकर•

147. ये सच हैं तुम्हारे रब की तरफ से; किसी शक को पनाह न दो•

148. तुम में से हर कोई चुनता है रूख पैरवी करने के लिए; तुम्हें चाहिए नेककारी कि तरफ दौड़ना• तुम जहाँ भी रहो, **अल्लाह** तुम सब को जमा करेंगे• **अल्लाह** हैं कादिरेमुतलक•

**2:142-145 "किबला" रूख है जिसकी तरफ कोई अपने चेहरों को करता है रावता नमाज़ों (सलात) के दरमियान• जब जिब्राईल ने मुहम्मद को हुक्म पहुँचाया रूख मक्का के बजाए जेरूसलम कि तरफ करने का, मुनाफिकीन फाश हो गए• अरबियों ने सख्ती से पहले ही तय कर लिया था काबा को अपने हक में "किबले" के तौर पर• सिर्फ ईमानवाले ही अपने आप को खुद के फैसले से बचा पाए थे; उन्होंने फौरन रसूल कि अताअत की•*

किबला लौटाया गया मक्का की तरफ

149. तुम जहाँ भी जाओ, तुम्हें तुम्हारे चेहरे को चाहिए फेरना (*सलात के दरमियान*) मुकद्दस मस्जिद की तरफ•* यह सच है तुम्हारे रब की तरफ से• **अल्लाह** कभी बेखबर नहीं किसी चीज़ से जो तुम सब करते हो•

150. तुम जहाँ भी जाओ, तुम्हें तुम्हारे चेहरे को चाहिए फेरना (*सलात के दरमियान*) मुकद्दस मस्जिद की तरफ; तुम जहाँ भी रहो, तुम्हें तुम्हारे चेहरों को चाहिए फेरना (*सलात के दरमियान*) उसकी तरफ• इसतरह, लोगों के पास तुम्हारे खिलाफ कोई दलील न होगी, सिवाए उनमें से खतावारों के• उनसे न डरो, और बलिके मुझ से डरो• मैं फिर मुकम्मल करूंगा मेरी रहमतें तुम पर, ताके तुम हिदायतयाफ्ता हो सको•

151. (*रहमतें*) ऐसे जैसे भेजना एक रसूल का तुम्ही में से तुम्हारे लिए हमारी वहियों को बयान करने के लिए, तुम्हें पाक करने, तुम्हें आसमानी किताब और हिकमत सिखाने, और तुम्हें वो सिखाने के लिए जो तुम्हें कभी नहीं था मालूम•

152. तुम्हें चाहिए मुझे याद रखना, ताके मैं तुम्हें याद रखूं, और मेरा शुक्रगुज़ार रहो; और नाकद्रदान न बनो•

153. ऐ तुम जो ईमान रखते हो, साबित कदमी और राबता नमाज़ों (*सलात*) के ज़रिए मदद तलाश करो• **अल्लाह** हैं उनके साथ जो साबित कदमी से सब्र करते हैं•

हम कहाँ जाते हैं यहाँ से?

154. न कहो उनके बारे में जो मारे गये हैं **अल्लाह** की राह में, "वो मर गए हैं•" वो जिंदा हैं उनके रब के पास, लेकिन तुम नहीं समझते•*

155. हम ज़रूर आज़मायेंगे तुम्हें कुछ खौफ, भूख, और पैसा, जिंदगियों, और अनाजों के खो जाने के ज़रिए• खुशखबरी दो साबित कदम रहने वालों को•*

156. जब उनपर मुसीबत पड़ती है, वो कहते हैं, "हम **अल्लाह** के लिए हैं, और उनकी तरफ हम लौट रहे हैं•"

157. ये हकदार हुए हैं उनके रब की तरफ से रहमतों और करम के• यहीं हैं हिदायतयाफ्ता•

हज ज़ियारत

158. सफा और मरवाह के टिले **अल्लाह** की तरफ से मुकर्रर किये गए रस्मों में से हैं• जो कोई *हज* और *उमराह* अदा करता है कोई खता नहीं करता उनके दरमियान फासला तय करते हुए• अगर कोईऔर ज़्यादा नेक कामों को करे, तो **अल्लाह** हैं कद्रदान, सब कुछ जानने वाले•

संगीन जुर्म

159. जो कोई हमारी वहियों और हिदायत को छिपाए, लोगों के लिए उन्हें आसमानी किताब में ऐलान करने के बाद, मलामत किए गए हैं **अल्लाह** की तरफ से; वो मलामत किए गए हैं सारे मलामत करने वालों की तरफ से•

160. जहाँ तक वो जो तौबा, इसलाह, और ऐलान करते हैं, मैं उन्हें माफ करता हूँ• मैं हूँ माफ करने वाला, सबसे रहीम•

161. जो कोई कुफ्र करे और काफिरों की हालत में मरे, हासिल किया है मलामत **अल्लाह**, फरिश्तों, और सारे लोगों की (*इंसाफ के दिन पर*)•

**2:149 आज कल के "मुसलमानों" कि तरफ से की गई बुतपरस्ती का एक शफ्फाफ सबूत है मुकर्रर करना मुहम्मद की कब्र को एक "मुकद्दस मस्जिद" जैसा• कुरान सिर्फ एक "मुकद्दस मस्जिद" का बयान करता है•*

**2:154 नेककार लोग असल में मरते नहीं; वो सिर्फ उनका जिस्म यहाँ छोड़कर उसी जन्नत को जाते हैं जहाँ आदम और हव्वा एक बार रहे थे• देखें अपेन्डिक्स 17 सबूत और तफसीलों के लिए•*

**2:155 आज़माईश बनाई गई है साबित करने के लिए कि हम हर हालातों में सिर्फ अल्लाह की इबादत करते हैं (29:2)•*

162. वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए• उनके लिए आज़ाब कभी कम नहीं किया जाता है, नाहीं उनको मोहलत दी जाती है•

163. तुम्हारा खुदा एक खुदा है; कोई खुदा नहीं सिवाए उनके, सबसे महेरबान, सबसे रहम वाले•

बेपनाह अल्लाह की निशानियाँ

164. आसमानों और ज़मीन कि खिलकत में, दिन और रात के बदलते रहने में, कश्तियाँ जो लोगों के फायदे के लिए समंदर में चलती हैं, पानी जो **अल्लाह** नीचे भेजते हैं आसमान से मुर्दा ज़मीन को दोबारा ज़िंदा करने के लिए और सारे किस्मों के मखलूकों को उसमें फैलाने के लिए, हवाओं कि सुबकदस्ती, और बादलें जो रखे गये हैं आसमान और ज़मीन के बीच, काफी सबूतें हैं लोगों के लिए जो समझते हैं•

*बुतें ठुकरायेंगे उनके बुतपरस्तों को**

165. इसके बावजूद, कुछ लोग बुतों को कायम करते हैं **अल्लाह** के मुकाबले में, और उनको चाहते हैं जैसे के वो हैं **अल्लाह**• जो कोई ईमान वाले हैं सबसे ज़्यादा **अल्लाह** को चाहते हैं• अगर सिर्फ खतावारें खुद को देख सकते जब वो देखेंगे आज़ाब! उन्हें तब समझ में आयेगा कि सारी ताकत है सिर्फ **अल्लाह** के पास, और ये कि **अल्लाह** का आज़ाब है ज़बरदस्त•

166. जिनकी पैरवी की जाती थी ठुकरायेंगे उन्हें जो उनकी पैरवी किया करते थे•* वो आज़ाब देखेंगे, और सारे ताल्लुकात उनके दरमियान खत्म हो जायेंगे•

167. जिन्होंने पैरवी कि कहेंगे, "अगर हमें एक और मौका मिले, हम उन्हें ठुकरायेंगे, जैसा उन्होंने हमें ठुकराया है अभी•" **अल्लाह** इसतरह दिखाते हैं उन्हें उनके आमालों के नतीजे नदामत के सिवाए कुछ नहीं; वो जहन्नम से बाहर कभी नहीं निकलेंगे•

शैतान मना करता है हलाल चीज़ो को

168. ऐ लोगों, खाओ ज़मीन कि पैदावार से वो सब जो है हलाल और अच्छा , और शैतान के नक्शोकदम पर न चलो; वो है तुम्हारा सबसे शदीद दुश्मन •

169. वो सिर्फ तुम्हें हुक्म देता है गुनाह और बुराई करने को, और **अल्लाह** के बारे में वो कहने के लिए जो तुम नहीं जानते•

मौजुदा हाल को बरकरार रखना: एक इन्सानी सदमा

170. जब उनसे कहा जाता है, "पैरवी करो जो **अल्लाह** ने इसमें नाज़िल किया है," वो कहते हैं, "हम तो सिर्फ उसकी पैरवी करते हैं जिसे हमने अपने वालिदैन को करते पाया•" क्या अगर उनके वालिदैन को समझ में न आया हो, और न थे हिदायतयाफ्ता ?

171. इन काफिरों कि मिसाल ऐसी है जैसे तोते जो दोहराते हैं सुनी हुई आवाज़ों और पुकारों को, बगैर समझते हुए• बहरे, गुंगे, और अंधे; वो कभी नहीं समझ सकते•

*सिर्फ चार गोश्तों कि मनाई**

172. ऐ ईमान वालो, अच्छी चीजों में से खाओ जो हमने तुम्हारे लिए मुहय्या किया है, और **अल्लाह** के शुक्रगुज़ार बनो, अगर वाकई तुम सिर्फ उनकी इबादत करते हो•

173. वो सिर्फ मना करते हैं तुम को उन जानवरों को खाना जो खुद से मरें (*बिना इंसान के दखलअंदाज़ी के*), खून, खिंज़ीरों का गोश्त, और जानवरें मनसूब किए गए **अल्लाह** के अलावा दूसरे को• अगर कोई मजबूर किया जाता है (*इन्हें खाने के लिए*), बगैर किनावर हुए या जानबूझकर, वो हासिल नहीं करता कोई गुनाह• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले सबसे रहम वाले•

**2:165-166 ईसा, मरयम, मुहम्मद, अली, और बुज़ुर्गें ठुकरायेंगे उनके बुतपरस्तों को हश्र के दिन पर• 16:86, 35:14, 46:6 भी देखें, और मैथ्यु का इंजील 7:21-23•*

**2:172-173 पूरे कुरान में, सिर्फ चार गोश्तों को मना किया गया है (6:145, 16:115, अपेन्डिक्स 16)• खानों के मुताल्लिक मनाईयाँ इन चार के अलावा बराबर हैं बुतपरस्ती के (6:121, 148, 150; 7:32)•*

सारे बिगड़े हुए मज़हबी रहबरें
*छिपाते हैं कुरान का मौजेज़ा**

174. जो कोई आसमानी किताब में **अल्लाह** की आयतों को छिपाएं, एक सस्ते माली फायदे के बदले में, खाते हैं आग उनके पेटों में• **अल्लाह** उनसे बात नहीं करेंगे हश्र के दिन, नाहीं वो उन्हें पाक करेंगे• उन्होंने हासिल किया है एक दर्दनाक अज़ाब•

175. ये हैं वो जो चुनते हैं गुमराही हिदायत के बदले, और अज़ाब मगफरत के बदले• इस कि वजह से, उन्हें जहन्नम झेलना होगा•

176. यह है इसलिए कि **अल्लाह** ने नाज़िल की है यह आसमानी किताब, सच्चाई लिए हुए, और जो कोई आसमानी किताब पर बहस करें हैं सबसे शदीद मुखालिफें•

नेककारी वाज़े कर दी गई

177. तुम्हारे चेहरों को मगरिब या मशरिक की तरफ फेरना नेककारी नहीं है• नेककार वो हैं जो ईमान रखते हैं **अल्लाह**, आखरी दिन, फरिश्ते, आसमानी किताब, और नबियों में; और देते हैं पैसा, खुशी से, रिश्तेदारों, यतीमों, ज़रूरत मंद, अंजान मुसाफिर, भिकारियों को, और गुलामों को आज़ाद करने के लिए; और वो अदा करते हैं राबता नमाज़े (*सलात*) और देते हैं ज़रूरी खैरात (*ज़कात*); और वो रखते हैं अपनी ज़बान जब भी वो एक वादा करते हैं; और कायम रहते हैं साबित कदमी से अज़ियत, सख्ती और जंग की सूरत में• ये हैं सच्चे; ये हैं नेककार•

*सज़ाए मौत कि हौसला अफज़ाई नहीं**

178. ऐ ईमानवालो, तुम्हारे लिए बराबरी का कानून मुकर्रर किया गया है जब कत्ल से सामना हो — आज़ाद के लिए आज़ाद, गुलाम के लिए गुलाम, औरत के लिए औरत है• अगर कोई माफ किया जाता है मकतूल के करीबी रिश्तेदारों कि तरफ से, एक कद्रगनीवाला जवाब है एवज़ में, और एक बराबरी वाला मुआवज़ा अदा किया जाना चाहिए• यह दर्द दूर करने वाली चीज़ है तुम्हारे रब कि तरफ से और रहमत• जो कोई इस हद को पार करेगा हासिल करता है एक दर्दनाक अज़ाब•

179. बराबरी तुम्हारे लिए जिंदगी बचाने वाला कानून है, ऐ अक्ल रखने वालों, ताके तुम नेककार बन सको•

वसीयत लिखो

180. ये मुकर्रर किया गया है कि जब मौत तुम्हारे करीब आए, तुम्हे चाहिए कि वसीयत लिखो वालिदैन और रिश्तेदारों के फायदे के लिए, बराबरी से• यह एक फर्ज़ है उनपर जो नेककार हैं•

181. अगर कोई वसीयत को बदल दे जो उसने सुना था, इस बदलने का गुनाह उसके सर है जो ज़िम्मेदार हैं ऐसी तबदीली करने के लिए• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, जानने वाले•

182. अगर कोई देखता है बड़ी नाइंसाफी या एक तरफा पन एक वसीयत करने वाले की तरफ से, और उसे सही करने का कदम ले वसीयत कि तरफ इंसाफ लौटाने के लिए, वो कोई गुनाह नहीं करता• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले सबसे रहीम•

**2:174-176* *कुरान में अल्लाह के रियाज़ी मौजज़े को उनके पहचानने के बावजूद, बिगड़े हुए मज़हबी रहबरों ने कई सालों तक इस ज़बरदस्त मौजज़े को छिपाने कि कोशिश की• कईयों ने तो अपने आज़ुरदगी का इकरार किया इस हकीकत पर कि इस मौजज़े कि नवाज़िश उन पर न होते रशाद खलीफा पर हुई•*

**2:178* *कुरान साफ तौर पर सज़ाए मौत कि हौसला अफज़ाई नहीं करता• हर किस्म के बहाने पेश किए गए हैं ताके जानें बचाई जा सकें, शामिल करते हुए कातिल कि जान भी• मकतूल के करीबी रिश्तेदार हो सकता है इसे पायें बेहतर, कुछ मखसूस हालातों में, बक्श देना कातिल कि जान को एक बराबरी वाले मुआवज़े के बदले में• इसके अलावा सज़ाए मौत लागू नहीं होती अगर, मिसाल के तौर पर, एक औरत एक मर्द को कत्ल करे, या उसके बर अक्स•*

*रोज़ा रखना ज़ोर दिया गया और बदला गया**

183. ऐ ईमान वालो, रोज़ा तुम्हारे लिए हुक्म किया गया है, जैसा वो हुक्म किया गया था तुम से पहलों के लिए, ताके तुम निजात हासिल कर सको•

184. खास दिनों को (तजवीज़ किया गया हैं रोज़े के लिए); अगर कोई बिमार या सफर कर रहा हो, उतने ही अदद के दूसरे दिनों से बदल सकता है• जो कोई रोज़ा रख सकते हैं, लेकिन बड़ी तकलीफ के साथ, उसके एवज़ में एक गरीब शक्स को खाना खिला सकते हैं हर एक दिन का रोज़ा तोड़ने पर• अगर कोई रज़ाकारी करे (ज़्यादा नेक कामों के लिऐ), वो बेहतर है• लेकिन रोज़ा सबसे अच्छा है तुम्हारे लिए, अगर तुम सिर्फ जानते•

185. रमज़ान महीना है जिसमें कुरान नाज़िल हुआ था, हिदायत मुहय्या करते हुए लोगों के लिए, साफ तालिमें, और कानून की किताव• तुम में से जो कोई इस महीने को देखे चाहिए कि उसमें रोज़ा रखे• जो कोई बिमार हैं या सफर कर रहे हैं बदल सकते हैं उतने ही अदद के दूसरे दिनों से• **अल्लाह** तुम्हारे लिए आसानी चाहते हैं, मेहनतकशी नहीं, ताके तुम पूरा कर सको तुम्हारे फरायज़ों को, और ताके **अल्लाह** कि बड़ाई करो तुम्हें हिदायत देने के लिए, और अपना कद्र ज़ाहिर करने के लिए•

अल्लाह "उनके बंदों"
कि दुआवों का जवाब देते हैं

186. जब मेरे बंदे पूछे तुमसे मेरे बारे में, मैं हूँ हमेशा करीब• मैं उनकी दुआवों का जवाब देता हूँ जब वो मुझसे दुआ करते हैं• लोगों को चाहिए मेरा जवाब दें और मुझमें ईमान रखें, हिदायतयाफता होने के लिए•

187. इजाज़त है तुम्हारे लिए शहवत तुम्हारी विवियों के साथ रोज़े कि रातों के दरमियान• वो हैं तुम्हारे राज़ों के रखने वाले, और तुम हो उनके राज़ों के रखने वाले• **अल्लाह** जानते थे कि तुम अपनी रूहों को धोखा दिया करते थे, और उन्होंने तुम्हारी मगफरत की, और तुम्हें माफ किया• इस के बाद, तुम उनके साथ शहवत कर सकते हो, तलाश करते हुए जिसकी **अल्लाह** ने तुम को इजाज़त दी है• तुम खा और पी सकते हो जवतक सफेद धागा रौशनी का अलग नज़र आने लगे रात के अंधेरे धागे से सुवह को• फिर, तुम्हें चाहिए रोज़ा रखो सूरज डूबने तक• शहवत मना है अगर तुम मस्जिद में एहतेकाफ करने का इरादा करो (*रमज़ान के आखरी दस दिनों के दरमियान*)• ये हैं **अल्लाह** के कानून; तुम्हें उनको पार नहीं करना चाहिए• **अल्लाह** इस तरह अपनी आयतों को वाज़े करते हैं लोगों के लिए, ताके वो निजात हासिल कर सकें•

रिश्वत, खरावी मज़म्मत की गई

188. तुम्हें एक दूसरे का पैसा नाजायज़ तरीके से नहीं लेना चाहिए, नाहिं तुम्हें अफसरों को रिश्वत देना चाहिए दूसरों को उनके कुछ हकों से नाजायज़ तौर पर महरूम करने के लिए, जब कि तुम जानते हो•

बात घुमा फिरा कर न करो

189. वो पूछते हैं तुमसे चाँद कि सूरतों के बारे में! कहो, "वो वक्त बताने वाली घड़ी है लोगों के लिए, और हज का वक्त बताने के लिए•" ये नेककारी नहीं है कि तुम बात को घुमा फिरा कर करो;* नेककारी हासिल होती है एहकामों को बरकरार रखने से और बात को साफ कहने से• तुम्हें चाहिए **अल्लाह** को ध्यान में रखों, ताके तुम कामयाव हो सको•

**2:183-187 फरमानबरदारी में सारे फरायज़ों कि तरह, रोज़ा इब्राहीम के जरिए से हुक्म हुआ था (22:78, अपेन्डिक्स 9 और 15)• कुरान के नाज़िल होने से पहले, शहवत सरासर मना की गई थी रोज़े कि मुद्दत में• ये कानून 2:187 में बदल दिया गया है रमज़ान कि रातों के दरमियान शहवत की इजाज़त के लिए•*

**2:189 कुरान का हुवहु मुहावरा कहता है: "घरों के पिछले दरवाज़ों से दाखिल न हो•" चाँद के सूरतों के बारे में सवाल है एक मिसाल बात को घुमा फिरा कर करने का; इस सवाल के पीछे बुरी खुफिया नियतें थीं•*

*जंग के कानून**

190. तुम **अल्लाह** के वास्ते लड़ सकते हो उनके खिलाफ जो तुम पर हमला करें, लेकिन पहेल न करो• **अल्लाह** पहेल करने वालों को पसंद नहीं करते•

191. तुम कत्ल कर सकते हो उनको जो तुम्हारे खिलाफ जंग करें, और तुम उन्हें निकाल सकते हो वहाँ से जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है• जुल्म कत्ल से बुरा है• उनसे न लड़ो मुकद्दस मस्जिद के पास, जब तक वो तुम पर हमला न करें उसमें• अगर वो तुम पर हमला करें, तुम उन्हें कत्ल कर सकते हो• यह दुरूस्त अज़ाब है उन काफिरों के लिए•

192. अगर वो बाज़ आयें, तो **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहमवाले•

193. तुम लड़ सकते हो उनसे जुल्म को खत्म करने, और **अल्लाह** की इबादत आज़ादी से करने के लिए भी• अगर वो बाज़ आयें, तुम्हें पहेल नहीं करना चाहिए; अदावत कि इजाज़त सिर्फ उनके खिलाफ है जो पहेल करने वाले हैं•

194. मुकद्दस महीनों के दरमियान, अदावत का जवाब बराबरी से दिया जा सकता है• अगर वो तुम पर हमला करें, तुम बदला ले सकते हो बराबरी वाला अज़ाब देते हुए• तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम करो और जानो कि **अल्लाह** हैं नेककारों के साथ•

195. तुम्हें चाहिए **अल्लाह** कि राह में खर्च करो, अपने हाथों से अपने आप को बरबादी में न फेको• तुम्हें चाहिए खैरात करने वाले बनो; **अल्लाह** खैरात करने वालों को पसंद करते हैं•

*हज और उमराह**

196. तुम्हें चाहिए कि **अल्लाह** के लिए *हज* और *उमराह* के अरकानों को पूरा करो• अगर तुम्हें रोका जाता है, तो तुम्हें कुरबानी भेजनी चाहिए, और तुम्हारे बालों को काटना शुरू न करो जब तक तुम्हारी कुरबानी न पहुँचे उसके मंज़िल पर• अगर तुम बिमार हो, या सर का ज़ख्म झेल रहे हो (*और तुम्हें ज़रूर बाल काटना है*), तुम्हें रोज़ा रखकर कफ्फारा अदा करना चाहिए, या खैरात देते हुए, या किसी और किस्म कि इबादत• आम *हज* के दौरान, अगर तुम *एहराम* (पकीज़गी) कि हालत *उमराह* और *हज* के बीच तोड़ते हो, तुम्हें कफ्फारा अदा करना चाहिए एक जानवर कि कुरबानी देते हुए• अगर तुम्हें ऐसा करने कि हैसियत नहीं, तुम्हें चाहिए तीन दिन रोज़ा रखना *हज* के दरमियान और सात जब तुम घर लौटो — यह पूरा करता है दस — बर्शते के तुम मुकद्दस मस्जिद के पास नहीं रहते• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, और जानो के **अल्लाह** हैं सख्त अज़ाब नाफिज़ करने में•

हज के चार महीने
(जुल हिज्जा, मुहररम, सफर और
रबी उल अव्वल)

197. *हज* मुकर्रर महीनों में अदा किया जाना चाहिए•* जो कोई *हज* अदा करने के लिए निकले चाहिए बाज़ रहे शहवत, बद इख्लाकी, और बहेस से पूरे *हज* के दरमियान• जो भी तुम अच्छा करो, **अल्लाह** हैंउस से पूरी तरह वाकिफ• जैसे तुम सफर के लिए तुम्हारे सामानों कि तैयारी करते हो, सबसे बेहतर समान है नेककारी• तुम्हें चाहिए मेरा एहतराम करो, ऐ अक्ल रखने वालो•

**2:190 सारी जंगें 60:8-9 के बुनियादी कानून के मुताबिक लड़ी जानी चहिए• जंग कि इजाज़त सख्ती से खुद के बजाव में है, हाँला कि अदावत और जुल्म सख्ती से मना किया गया है पूरे कुरान में•*

**2:196 हज और उमराह कि तफसीलें अपेन्डिक्स 15 में देखें•*

**2:197 हज अदा किया जा सकता है किसी भी वक्त मुकद्दस महीनों के दरमियान: जुल हिज्जा, मुहररम, सफर और रबी उल अव्वल• मुकामी हुक्मरान हज को कुछ दिनों के लिए मखसूस कर देते हैं उनकी सहुलियत के लिए• देखें 9:37•*

198. तुम कोई खता नहीं करते हाजतों को तलाश करते हुए तुम्हारे रब कि तरफ से (*तिजारत के ज़रिये*)• जब तुम रवाना होते हो अरफात से, तुम्हें **अल्लाह** का ज़िक्र करना चाहिए (*मुज़दलिफा के*) मुकद्दस मुकाम पर• तुम्हें उनका ज़िक्र करना चाहिए तुम्हें हिदायतयाफ्ता करने के लिए; इससे पहले, तुम हो गए थे गुमराह•

199. तुम्हें इकट्ठा रवाना होना चाहिए, बाकी लोगों के साथ जो रवाना होते हैं, और **अल्लाह** से मगफरत मांगो• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

200. जब तुम पूरा कर लो तुम्हारे अरकानों को, तुम्हें जारी रहना चाहिए **अल्लाह** का ज़िक्र करने के लिए जैसा तुम तुम्हारे वालिदैन का ज़िक्र करते हो, या उससे बेहतर• कुछ लोग कहेंगे, "हमारे रब, हमें इस दुनिया से दीजिए," जबके कोई हिस्सा नहीं पाते हुए आखरत में•

201. दूसरे कहेंगे, "हमारे रब, अता करिए हमें नेककारी इस दुनिया में, और नेककारी अगली ज़िंदगी में, और हमें बचाइये जहन्नम के अज़ाब से•"

202. इनमें से हर एक पायेंगे हिस्सा जो उन्होंने कमाया है• **अल्लाह** हैं सबसे काबिल हिसाब लेने में•

मिना: आखरी अरकान हज का

203. तुम्हें **अल्लाह** का ज़िक करना चाहिए कुछ दिनों के लिए (मिना में); जो कोई जल्दबाज़ी करता है इसे दो दिनों में पूरा करने के लिए गुनाह नहीं करता, और जो कोई ज़्यादा रूकता है गुनाह नहीं करता, बर्शते कि नेककारी कायम रखी जाती है• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए, और जानो के उनके सामने तुम्हें जमा किया जायेगा•

बाहरी रूप हो सकता है धोखा देने वाला

204. लोगों में से, हो सकता है कोई उसकी बातों से इस जिंदगी के मुताल्लिक तुम्हें मुतास्सिर करे, और यहाँ तक के हो सकता है वो **अल्लाह** को बुलाए उसके अंदरूनी ख्यालों का गवाह होने के लिए, जबके वो है एक शदीद मुखालिफ•

205. जैसे ही वो रूकसत होता है, वो फिरता है ज़मीन पर खराबी से, मिलकियतें और जानों को तबाह करते हुए• **अल्लाह** पसंद नहीं करते खराबी•

206. जब उससे कहा जाता है, "**अल्लाह** को ध्यान में रखो," वो तकब्बुर से खफा हो जाता हैं• इस वजह से, उसका एक ही मुकद्दर है जहन्नम; क्या एक अफसोस नाक ठिकाना•

207. फिर ऐसे भी हैं जो अपनी ज़िन्दगियों को **अल्लाह** कि खिदमत के लिए मुंतखब कर देते हैं; **अल्लाह** हैं शफीक ऐसे इबादत करने वालों कि तरफ•

208. ऐ ईमानवालो, तुम्हें फरमानबरदारी को पूरी तरह कबूल करना चाहिए; न चलो शैतान के कदमों पर, इसलिए के वो है तुम्हारा सबसे शदीद दुश्मन•

209. अगर तुम पीछे पलट जाओ, इसके बाद के तुम्हारे पास साफ सबूतें आ चुके हैं, तो जानो के **अल्लाह** हैं सबसे ताकतवर, सबसे हकीम•

210. क्या वो इंतेज़ार कर रहें हैं के जबतक **अल्लाह** खुद नहीं आ जाते उनकी तरफ घने बादलों में, इकट्ठा साथ फरिश्तों के? जब ऐसा होगा, सारे मामले खत्म कर दिए जायेंगे, और सारी चीज़ें **अल्लाह** की तरफ लौटाई जायेंगीं•*

*मौजेज़ात लाते हैं बड़ी ज़िम्मेदारी**

211. बनी इस्राईल से पूछो हमने उन्हें कितने गहरे मौजेज़ात दिखाए! इसलिए कि जो कोई नज़रअंदाज़ करे **अल्लाह** की तरफ से उनपर इनायत की गई रहमतों को, **अल्लाह** सबसे सख्त हैं अज़ाब में•

**2:210 यह है दुनिया एक आज़माईश; ये है हमारा आखरी मौका अपने आप को वापस अल्लाह कि बादशाहत में लौटाने के लिए बुत परस्ती को ठुकराते हुए (तार्रुफ देखें)• अगर अल्लाह और उनके फरिश्ते ज़ाहिर हो जाएं, हर कोई ईमान ले आयेगा, और आज़माईश लागू नहीं होगी•*

**2:211 कुरान का रियाज़ी मौजेज़ा है एक बड़ी रहमत, और लाता है उसके साथ एक जबरदस्त ज़िम्मेदारी (बराएकरम देखें 5:115)•*

लापरवाही

212. यह दुनियावी ज़िंदगी सजाई गई है काफिरों कि आँखों में, और वो मज़ाक उड़ाते हैं उनका जो ईमान रखते हैं• बहेरहाल, नेककार बहुत ऊपर होंगे उनसे हश्र के दिन• **अल्लाह** बक्शते हैं जिस किसी को वो चाहें, बगैर हदों के•

मुसीबत अंगेज़ जलन

213. सारे लोग एकही जमात के हुआ करते थे जब **अल्लाह** ने नबियों को भेजा खुशखबरियों, के साथ साथ ताकिदों को लिए हुए• उन्होंने भेजा नीचे उनके साथ आसमानी किताब, सच्चाई लिए हुए, लोगों के बीच उनके तकरारों में इंसाफ करने के लिए• अफसोसके, जिन्होंने आसमानी किताब पाई थी थे सबसे पहले किसी नई आसमानी किताब को ठुकराने वाले, उन्हें साफ सबूतों को दिए जाने के बावजूद• यह उनकी तरफ से जलन कि वजह से है• **अल्लाह** ईमानवालों को सच्चाई कि तरफ हिदायत देते हैं जिसपर तकरार किया जाता हैं दूसरे सारों कि तरफ से, उनकी मरज़ी के मुताबिक में• **अल्लाह** हिदायत देते हैं जिसकिसी को चाहते हैं एक सीधी राह में•*

214. क्या तुम जन्नत में दाखिल होने की उम्मीद करते हो तुमसे पहलों कि तरह बगैर आज़माए गये? वो आज़माये गये थे मेहनतकशी और मुसीबत से, और हिला दिए गए थे, जबतक के रसूल और वो जो उसके साथ ईमान लाये कहा "कहाँ है **अल्लाह** कि जीत?" **अल्लाह** कि जीत है करीब•

खैरात के हकदार

215. वो पूछते हैं तुम्हें देने के बारे में: कहो, "खैरात जो तुम देते हो जाना चाहिए वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों, गरीब, और अंजान मुसाफिर को•" जो भी तुम अच्छा करो, **अल्लाह** हैंउससे पूरी तरह वाकिफ•

ईमानवाले:
की ही है फतेह

216. जंग हो सकता है तुम पर आएद की जाए, भले तुम इसे नापसंद करते हो• लेकिन हो सकता है तुम कोई चीज़ नापसंद करो जो है तुम्हारे लिए अच्छी, और हो सकता है तुम पसंद करो कोई चीज़ जो तुम्हारे लिए है बूरी• **अल्लाह** जानते हैं जबकि तुम नहीं जानते•

जुल्म मलामत किया गया

217. वो तुम से मुकद्दस महीनों के बारे में पूछते हैं और उसमें लड़ाई: कहो, "उनमें लड़ाई करना है एक बेहुरमती• लेकिन, **अल्लाह** की राह से दूर करना और ईमान न लाना उन में और मुकद्दस मस्जिद कि पाकीज़गी में, और उसके लोगों को निकालना, हैं इससे बड़ी बेहुरमतियाँ **अल्लाह** की नज़र में• जुल्म कत्ल से बुरा है•" वो हमेशा तुमसे लड़ेगे ताके तुम तुम्हारे दीन से फिर जाओ, अगर वो ऐसा कर सकें• तुम में से जो कोई पलट जाए उनके दीन से, और मरे काफिरों जैसा, ज़ाया कर दिया है उनके कामों को इस ज़िन्दगी और अगली ज़िंदगी में• ये रहने वाले हैं जहन्नम के, वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए•

218. जो कोई ईमान रखते हैं, और जो कोई हिजरत करते हैं और जद्दोजहेद करते हैं **अल्लाह** के वासते, हकदार हुए हैं **अल्लाह** कि रहमत के• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

**2:213 सारे इबादत करने वाले सिर्फ अल्लाह की, सारे मज़हबों से, हैं वाकई एक•*

नशीली चीज़ें और जुआ
*हराम है**

219. वो तुमसे नशीली चीज़ों और जुए के बारे में पूछते है: कहो, "उनमें है एक बड़ा गुनाह, और कुछ फायदे लोगों के लिए• लेकिन उनकी गुनाहगारी

कई ज़्यादा वज़नी है उनके फायदे से•" वो ये भी तुमसे पूछते हैं खैरात में क्या देना चाहिए: कहो, "जो ज़्यादा•" **अल्लाह** इस तरह वाज़े करते हैं वहीयों को तुम्हारे लिए, ताके तुम गौर कर सको,

220. इस ज़िंदगी और अगली ज़िंदगी पर• और वो तुमसे यतीमों के बारे में पूछते हैं: कहो, "नेककार शक्सों कि तरह उनकी परवरिश करना है सबसे अच्छा जो तुम उनके लिए कर सकते हो• अगर तुम उनकी मिलकियत मिला लो तुम्हारे साथ, तुम्हें पेश आना चाहिए उनके साथ कुम्बे के फरदों की तरह•" **अल्लाह** जानते हैं नेककार और बदकार को• अगर **अल्लाह** चाहते, उन्होंने तुम्हारे ऊपर और सख्त कानूनों को आएद किया होता• **अल्लाह** हैं सबसे ताकतवर, सबसे हकीम•

मुशरिकीनों से शादी न करो

221. शिर्क करने वाली औरतों से शादी न करो जब तक वो ईमान न लाएं; एक ईमानवाली औरत बेहतर है मुशरिका से, भले तुम उसे पसंद करो• नाहि तुम्हे चाहिए के ब्याहो तुम्हारी बेटियों को शिर्क करने वाले मर्दो से, जब तक वो ईमान न लाएं• एक ईमान वाला मर्द बेहतर है मुशरिक से, भले तुम उसे पसंद करो• ये जहन्नम कि तरफ दावत देते हैं, जबके **अल्लाह** जन्नत और मगफरत कि तरफ दावत देते हैं, जैसा वो चाहते हैं• वो वाज़े करते हैं उनकी वहियों को लोगों के लिए, ताके वो तवज्जो दें सकें•

हैज़

222. वो तुमसे हैज़ के बारे में पूछते हैं: कहो, "वो नुकसानदेह है; तुम्हें चाहिए शहवत से बाज़ रहो औरतों के साथ हैज़ के दरमियान; उनके करीब न जाओ जब तक वो उससे छुटकारा न पा लें• जब वो उस से छुटकारा पा लें, तुम उनके साथ शहवत कर सकते हो उस अंदाज़ में जैसा **अल्लाह** कि तरफ से नक्शकारी की गई है• **अल्लाह** तौबा करने वालों को पसंद करते हैं, और वो पसंद करते हैं उन्हें जो हैं साफ•"

223. तुम्हारी औरतें हैं तुम्हारा बीज सहने वाली• इसतरह, तुम इस इख्तेयार का लुत्फ उठाओ जिस तरह तुम चाहो, बर्शते के तुम नेककारी को कायम रखो• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए, और जानो के तुम मिलोगे उनसे• खुशखबरी दो ईमानवालों को•

न लो
अल्लाह का नाम बेकार में

224. **अल्लाह** का नाम इस्तेमाल न करो अपने आम कसम खाने में, ताके तुम नज़र आओ नेककार, मुत्तकी, या हासिल करने के लिए लोगों के दरमियान सदाकत• **अल्लाह** हैं सुनने वाले जानने वाले•

225. **अल्लाह** तुम्हें ज़िम्मेदार नहीं ठहराते महेज़ कसमों को कहने के लिए; वो तुम्हें ज़िम्मेदार ठहराते हैं तुम्हारे अंदरूनी इरादों के लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, रहीम•

तलाक के कानून

226. जो कोई ईरादा करे अपनी बिवियों को तलाक देने का चाहिए इंतेज़ार करें चार महीनों तक (*ठंडा होने के लिए*); अगर वो उनके इरादों को बदल दें और सुलह कर लें, तो **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, रहीम•

227. अगर वो तलाक से गुज़र जाएं, तो **अल्लाह** हैं सुनने वाले, जानने वाले•

**2:219 दुनिया अब यह जान चुकी है के शराब और नाजायज़ दवाएं पैदा करने के माली फायदों का मोल ट्रेफिक से जुड़े नुकसाने, दिमागी नुकसाने शराबी मांओं के बच्चों को, घर का हालत खराब होना, और दूसरे मुसीबतअंगेज़ अंजामों के सामने कुछ भी नहीं• पता करें "अंजान शराबी" और "अंजान जुआरी" से ज़्यादा मालुमात के लिए• 5:90-91 भी देखें•*

228. तलाक दी गई औरतों को तीन हैजों तक इंतेज़ार करना चाहिए (*दूसरे मर्द से शादी करने से पहले*)• ये जाएज़ नहीं उनके लिए छिपाना जो **अल्लाह** पैदा करते हैं उनके कोखों में, अगर वो **अल्लाह** और आखरी दिन में ईमान रखते हैं• (*हमल कि हालत में*), शौहर के ख्वाहिशों को बीवी के ख्वाहिशों पर तरजी है, अगर वो चाहता हो उससे

दोबारा शादी करना• औरतों के बराबर के हक और फराइज़ हैं• इसतरह, मर्द के ख्वाहिशें तारी होते हैं (*हमल कि हलत में*)• **अल्लाह** हैं सबसे ताकतवर, सबसे हकीम•

229. तलाक दो बार वापस लिया जा सकता है• तलाक शुदा औरत को इजाज़त होनी चाहिए के उसी घर में रह सके अमन से, या छोड़े उसे अमन से• यह इजाज़त नहीं शौहर को वापस लेना कोई चीज़ जो उसने उसे दिया था• बहेरहाल, जोड़े को डर हो सकता है कि वो **अल्लाह** के कानून को पार कर सकते हैं• अगर डर है कि वो **अल्लाह** के कानून के हद को पार कर जायेंगे, तो वो गलत नहीं करते अगर बीवी खुद से वापस देदे जो कुछ वो चुने• ये **अल्लाह** के कानूनें हैं, उन्हें पार न करो• जो कोई **अल्लाह** के कानूनों को पार करें हैं बेइंसाफ•

230. अगर वो उसे तलाक दे (*तीसरी बार के लिए*), यह नाजाएज़ है उसके लिए उससे दोबारा शादी करना, जबतक वो दूसरे मर्द से शादी न करे, फिर वो उसे तलाक दे• पहला शौहर तब उससे दोबारा शादी कर सकता है, बर्शते के वो **अल्लाह** के कानूनों को ध्यान में रखें• ये हैं **अल्लाह** के कानूनें; वो समझाते हैं उन्हें लोगों के लिए जो जानते हैं•

न फेको
तलाक शुदाओं को बाहर रास्तों पर

231. अगर तुम तलाक दो औरतों को, जब वो उनकी इद्दत पूरी कर लें (*तीन हैज़ें*), तुम्हें चाहिए के उनको अमन से उसी घर में रहने कि इजाज़त दो, या अमन से उनको जाने दो• उनको ज़ोर न दो रहने के लिए उनकी मरज़ी के खिलाफ, एक बदले कि तौर पर• जो कोई ऐसा करता है वो उसकी खुदकी रूह पर जुल्म करता है• **अल्लाह** कि आयतों को फुजूल में न लो• याद करो **अल्लाह** कि नियामतों को तुमपर, और ये के उन्होंने नीचे भेजा तुम्हारे लिए आसमानी किताब और हिकमत तुम्हें समझाने के लिए• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए , और जानो कि **अल्लाह** हैं वाकिफ सारी चीज़ों से•

232. अगर तुम तलाक दो औरतों को, जब वो उनकी इद्दत को पूरा कर लें, न रोको उन्हें उनके शौहरों से दोबारा शादी करने से, अगर वो अमन से सुलाह करें• ये तवज्जो दिया जाना चाहिए तुम में से उनकी तरफ से जो **अल्लाह** और आखरी दिन में ईमान रखते हैं• यह ज़्यादा पाक है तुम्हारे लिए, और ज़्यादा नेक• **अल्लाह** जानते हैं, जबकि तुम नहीं जानते•

233. तलाकशुदा माँओं को चाहिए कि बच्चों को पूरे दो सालों तक दूध पिलाएं, अगर वालिद ऐसा चाहता है• वालिद को चाहिए कि माँ के खाने और कपड़े का बराबरी से इन्तेज़ाम करे• किसी पर भी उसकी हैसियत से ज़्यादा बोझ नहीं डालना चाहिए• कोई माँ उसके बच्चे कि वजह से सताई नहीं जानी चाहिए, नाहीं वालिद उसके बच्चे कि वजह से सताया जाना चाहिए• (*अगर वालिद मर जाए*), उसके वारिस को चाहिए इन ज़िम्मेदारियों को पूरा करें• अगर बच्चे के वालिदैन आपस में समझौता करके अलग हो जाएं, बाकायदा मशवरा करके, वो कोई गलती नहीं करते ऐसा करने से• तुम कोई गलत नहीं करते दूध पिलाती हुई माँओं को किराए पर लेते हुए, बर्शते के तुम उनको बराबरी से मुआवज़ा दो• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए, और जानो कि **अल्लाह हैं** देखने वाले सारी चीज़ों के तुम करते हो•

तुम्हें चाहिए ख्याल रखो
शादी से पहले के वकफों का

234. जो कोई मर जाए और बिवियाँ छोड़ जाए, उनकी बेवाओं को चाहिए कि चार महीने और दस दिनों तक इंतेज़ार करें (*दोबारा शादी करने से पहले*)• जब वो उनकी इद्दत को पूरा कर लें, तुम कोई गलत नहीं करते उनको जाने देते हुए जो कुछ नेक मामलों को वो करना चाहती हैं• **अल्लाह** हैं पूरी तरह आगाह सारी चीज़ जो तुम करते हो•

235. तुम कोई गुनाह नहीं करते ऐलान करते हुए तुम्हारी मंगनी औरतों सें, या रखते हुए उसे खुफिया• **अल्लाह** जानते हैं कि तुम उनके बारे में सोचोगे• उन से खुफिया तौर पर न मिलो, जबतक तुम्हारे पास कुछ नेक न हो गुफ्तगु करने के लिए• शादी से पहले शादी को मुकम्मल न करो जबतक उनका दरमियानी वकफा पूरा न हो जाए• तुम्हें पता होना चाहिए कि **अल्लाह** तुम्हारे सबसे अंदरूनी ख्यालों

को जानते हैं, और उनको ध्यान में रखो• तुम्हें पता होना चाहिए कि **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, रहीम•

मंगनी तोड़ना

236. तुम कोई गलत नहीं करते औरतों को छूने से पहले उन्हें तलाक देते हुए, या उनके लिए महेर तय करने से पहले• इस सूरत में, तुम्हें उनको मुआवज़ा देना चाहिए—अमीर जैसे उसकी हैसियत हो और गरीब जैसे उसकी हैसियत हो—एक बराबरी का मुआवज़ा• यह है एक ज़िम्मेदारी नेककारों पर•

237. अगर तुम उन्हें तलाक दो उनको छूने से पहले, लेकिन बाद इसके कि तुमने तय कर दिया था उनके लिए महेर, मुआवज़ा होना चाहिए महेर का आधा , जबतक वो खुदसे अपने हकों को माफ न करदें, या जमात जो ज़िम्मेदार हैं तलाक कराने के लिए चुने महेर को माफ कर देना• माफ करना है नेककारी के करीब• तुम्हें चाहिए आपस में अच्छे ताल्लुकातों को बनाए रखो• **अल्लाह** देखते हैं सारी चीज़ें तुम करते हो•

*तुम्हें राबता नमाज़ों को अदा करना चाहिए**

238. तुम्हें मुसलसल तौर पर राबता नमाज़ों को अदा करना चाहिए, खास तौर पर बीच वाली नमाज़, और मनसूब करो अपने आप को पूरी तरह **अल्लाह** के लिए•

239. गैर मामूली हालातों में, तुम चलते हुए या सवारी करते हुए नमाज़ कर सकते हो• जब तुम महफूज़ हो जाओ, तुम्हें **अल्लाह** को कसरत से याद करना चाहिए जैसा उन्होंने तुम्हे सिखाया है जो तुम कभी नहीं जानते थे•

बेवाओं और तलाक शुदाओं के लिए खर्चा

240. जो कोई मर जाएं और बिवियों को छोड़ जाएं, एक वसीयत होनी चाहिए जो उनकी बिवियों के साल भर के अखराजात को मुहय्या कर सके, बर्शते के वो उसी घर में रहती हों• अगर वो जाएं, तुम कोई गुनाह नहीं करते उनको वो जो चाहें करने देने से, बर्शते कि नेककारी बरकरार रखी जाती है• **अल्लाह** हैं सबसे ताकतवर, सबसे हकीम•

241. तलाकशुदाओं को भी दिया जाना चाहिए, बराबरी से• यह नेककारों पर है एक ज़िम्मेदारी•

242. **अल्लाह** इसतरह अपनी आयतों को समझाते हैं तुम्हारे लिए, ताके तुम समझ सको•

जद्दोजहेद करना अल्लाह की राह में

243. क्या तुमने ध्यान दिया है उनको जो उनके घरों से भाग गये — इसके बावजूद के वो थे हज़ारों में — मौत से डरते हुए? **अल्लाह** ने उनसे कहा, “मरो,” फिर उन्हें दोबारा जिंदा किया• **अल्लाह** बरसाते हैं उनकी रहमत लोगों पर, लेकिन ज़्यादातर लोग हैं नाकद्रदान•

**2:238 सारी पाँच नमाज़ें पाई जाती हैं 2:238, 11:114, 17:78, और 24:58 में• जब कुरान नाज़िल हुआ था, राबता नमाज़ें (सलात) पहले से वजूद में थीं (अपेन्डिक्स 9)• सारी पाँच नमाज़ों कि तफसीलें — जिसमें क्या पढ़ना चाहिए और हर नमाज़ों में कितनी अददें (रकातें) होनी चाहिएं वगैराह — रियाज़ी तौर पर साबित किए गए हैं• मिसाल के तौर पर, लिखते हुए हर पाँच नमाज़ों के लिए रकातों का नम्बर, एक दूसरे के बराबर बराबर, हम पाते हैं 24434, 19x1286• इसके अलावा, अगर हम इस्तेमाल करें [*] सुरेह 1 (अल फातेहा) कि नुमाइंदगी करने के लिए, जहाँ [*] = सुरेह नम्बर (1), उसके बाद आयतों का नम्बर (7), उसके बाद हर आयत का नम्बर, हर आयत में हुरूफों का नम्बर, और हर हुरूफ का जिमेटरिकल वेल्यू, लिखते हुए 2[*][*]4[*][*][*][*]4[*][*][*][*]3[*][*][*]4[*][*][*][*] पैदा करता हैं एक 19 का ज़रप (देखें 1:1)•*

244. तुम्हें **अल्लाह** की राह में लड़ना चाहिए, और जानो कि **अल्लाह** हैं सुनने वाले, जानने वाले•

245. कौन देगा एक उधार **अल्लाह** को नेककारी का, उसकी अदायगी उन्हें कई गुना ज़्यादा किये जाने के लिए? **अल्लाह** हैं वाहिद जो मुहय्या करते हैं और रोके रखते हैं, और उनकी तरफ तुम लौटाये जाओगे•

*तालूत**

246. क्या तुमने ध्यान दिया है मूसा के बाद इस्राईल के रहबरों को? उन्होंने उनके नबि से कहा, “अगर तुम

मुकर्रर करो एक बादशाह हमारी रहबरी करने के लिए, हम लड़ेंगे **अल्लाह** की राह में•" उसने कहा, "क्या ये तुम्हारा इरादा है कि, अगर लड़ना मुकर्रर किया जाता है तुम्हारे लिए, तुम न लड़ोगे?" उन्होंने कहा, "हम क्यों न लड़ें **अल्लाह** की राह में, जब के हमें हमारे घरों, और बच्चों से महरूम किया गया है?" इसके बावजूद, जब लड़ना मुकर्रर किया गया था उनके लिए, वो पलट गए, सिवाए कुछ के• **अल्लाह** हैं वाकिफ खतावारों से•

सवाल करना
अल्लाह कि हिकमत पर

247. उनके नबी ने उनसे कहा, "**अल्लाह** ने तालूत को तुम्हारा बादशाह मुकर्रर किया है•" उन्होने कहा, "वो कैसे बादशाहत पा सकता है हम पर जबके हम हैं उससे ज़्यादा लायक बादशाहत के; वो अमीर भी नहीं है?" उसने कहा, "**अल्लाह** ने उसे तुम पर चुना है, और बक्शा है उसे इफराद इल्म में और जिस्म में•" **अल्लाह** अता करते हैं उनकी बादशाहत जिस किसी को वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं करीम, सब कुछ जानने वाले•

वादे का ताबूत

248. उनके नबी ने उनसे कहा, "उसकी बादशाहत कि निशानी है के वादे का ताबूत तुम्हारे लिए बहाल किया जाएगा, लाते हुए भरोसों को तुम्हारे रब की तरफ से, और छोड़ी गई निशानियाँ मूसा के लोगों और हारून के लोगों कि तरफ से• वो फरिश्तों के ज़रिए उठाया जाएगा• ये तुम्हारे लिए एक यकीन दिलाने वाली निशानी होनी चाहिए, अगर तुम हो वाकई ईमानवाले•

दाऊद और जालूत

249. जब तालूत ने फौजों का कमान संभाला, उसने कहा, "**अल्लाह** तुम्हें आज़माईश में डाल रहें एक झरने के ज़रिए• जो कोई उससे पीता है मेरे साथ नहीं — सिर्फ वो जो नहीं चखते उसे हैं मेरे साथ—जब तक वो एक चुसकी न हो•" उन्होंने उससे पिया, सिवाए उनमें से कुछ के• जब उसने उसे पार किया साथ उनके जिन्होंने ईमान रखा, उन्होंने कहा, "अब हमारे पास ताकत कि कमी है जालूत और उसके फौजों का सामना करने के लिए•" जो कोई होशमंद थे **अल्लाह** से मिलने का कहा, "कई एक छोटी लश्कर ने शिकस्त दिया है एक बड़ी लश्कर को **अल्लाह** की मरज़ी से• **अल्लाह** हैं उनके साथ जो सावित कदमी से जमे रहते हैं•"

250. जब उन्होंने जालूत और उसकी फौजों का सामना किया, उन्होंने दुआ किया, "हमारे रब अता करिए हमें सावित कदमी, हमारी पकड़ को मज़बूत करिए, और मदद करिए हमारी कुफ्र करने वाले लोगों के खिलाफ•"

251. उन्होंने **अल्लाह** कि मरज़ी से उन्हें शिकस्त दिया, और दाऊद ने कत्ल किया जालूत को• **अल्लाह** ने दिया उसे बादशाहत और हिकमत और सिखाया उसे जैसा उन्होंने चाहा• अगर ऐसा न हो के **अल्लाह** कुछ लोगों को दूसरों के खिलाफ मदद न करें, तो ज़मीन पर अफरा तफरी मच जाए• लेकिन **अल्लाह** अपनी रहमत बरसाते हैं लोगों पर•

**2:246 बिल्कुल यही तारीख बयान की गई है इंजील में बुक ऑफ I सैम्युल, चै• 9 और 10*

252. ये हैं **अल्लाह** की आयते• हम सुनाते हैं उन्हें तुम्हारे ज़रिए,* सच्चाई से, इसलिए के तुम हो रसूलों में से एक•

कई रसूलें / एक पैगाम

253. ये रसूलें; हमने कुछ को बक्शा दूसरों से ज़्यादा• मिसाल के लिए, **अल्लाह** ने एक से कलाम किया, और उनमें से कुछ को हमने ऊँचे दर्जो को उठाया• और हमने दिया ईसा, मरयम के बेटे को, गहरे मौजेज़ात और मदद कि उसकी पाक रूह से• अगर **अल्लाह** चाहते, उनकी पैरवी करने वाले एक दूसरे से नहीं लड़ते, इसके बाद के उनके पास साफ सबूतें पहुँच चुके थे• बलिके, उन्होंने आपस में बहेस किया; उनमें से कुछ ने ईमान रखा और कुछ ने ईमान नहीं रखा • अगर **अल्लाह** चाहते, वो नहीं

लड़ते॰ सारी चीज़ें हैं **अल्लाह** के मरज़ी के मुताबिक में॰

*शिफाअत नहीं**

254. ऐ ईमान वालो, तुम्हें चाहिए खैरात देना फराहिमों से जो हमने तुम्हें दिया है, इससे पहले के वो दिन आ जाए जहाँ नहीं है कोई खरीदो फरोख्त, न कोई वसीला, और न कोई शिफाअत॰ काफिरें हैं नाइंसाफ॰

255. **अल्लाह**: कोई खुदा नहीं सिवाए उनके, जिन्दा, हमेशा रहने वाले॰ कोई लम्हा नहीं ऐसा के गफलत या झपकी उनपर छा जाए॰ उन्ही कि हैं सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीजें ज़मीन पर॰ कौन उनसे सिफारिश कर सकता है, सिवाए उनकी मरज़ी के मुताबिक? वो जानते हैं उनके माज़ी, और उनके मुस्तकबिल को॰ कोई हासिल नहीं करता किसी किस्म का इल्म, सिवाए उनकी मरज़ी के॰ उनकी बादशाहत घेरे में लेती है आसमानों और ज़मीन को, और उनकी हुकुमत करना उन्हें कभी बोझ नहीं बनता॰ वो हैं सबसे ऊँचे, बड़े॰

कोइ ज़बरदस्ती नहीं मज़हब में

256. कोई ज़बरदस्ती नहीं होना चाहिए मज़हब में: सही रास्ता अब वाज़े है गलत रास्ते से॰ जो कोई ठुकराए शैतान को और ईमान रखे **अल्लाह** में पकड़ा है सबसे मज़बूत जोड़; एक जो कभी नहीं टूटता॰ **अल्लाह** हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले॰

257. **अल्लाह** रब हैं उनके जो ईमान रखते हैं; वो रहबरी करते हैं उनकी अंधेरे से बाहर रौशनी में॰ जहाँ तक वो जो हैं काफिर, उनके बुतें हैं उनके रब; वो रहबरी करते हैं उनकी रौशनी से बाहर अंधेरे में—इनका ठिकाना है जहन्नम; वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए॰

इब्राहीम की बहादुरी वाली बहेस

258. क्या तुमने ध्यान दिया है उसको जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में हुज्जत किया, हांलकि **अल्लाह** ने उसे बादशाहत दी थी? इब्राहीम ने कहा, "मेरे रब अता करते हैं जिंदगी और मौत॰" उसने कहा, "मैं अता करता हूँ जिंदगी और मौत॰" इब्राहीम ने कहा, "**अल्लाह** सूरज को मशरिक से लाते हैं, क्या तुम उसे मगरिब से ला सकते हो?" काफिर दंग रह गया॰ **अल्लाह** बदकार की हिदायत नहीं करते॰

**2:252 कुरान के रियाज़ी तरतीब से ताल मिलाते हुए, ये अल्लाह कि मरज़ी थी के यहाँ पर जो रसूल बयान किया गया है उसका नाम रियाज़ी तौर पर पेश हो॰ 19-कि बुनियाद पर बना कुरान के मौजेज़े कि इंकिशाफ खुदाई तौर पर मखसूस रखी गई थी वादे के रसूल के लिए॰ इस आयत नम्बर (252) को जोड़ते हुए, साथ "रशाद" कि जिमेटरिकल वेल्यु (505), साथ "खलीफा" कि जिमेटरिकल वेल्यु (725) हम पाते हैं 252 + 505 + 725 = 1482, या 19x78॰ बराए करम देखें अपेन्डिक्स 2 और 26 पूरी तफसीलात के लिए जो वादे के रसूल कि पहचान को साबित करते हैं, जिसकी तरफ यह आयत साफ इशारा करती है॰*

**2:254 शैतान के चालाक फरेबों में से एक है मनसूब करना शिफाअत कि ताकत बेबस इंसानी बुतें जैसे मुहम्मद और ईसा को (अपेन्डिक्स 8)॰*

*मौत के बारे में सबक**

259. गौर करो उसपर जो गुज़रा एक विरान शहर से और ताज्जुब किया, "**अल्लाह** इसे दोबारा कैसे जिंदा कर सकते हैं इसके बाद के वो मर चुका था?" **अल्लाह** ने फिर उसे एक सौ सालों के लिए मौत दिया, फिर उसे दोबारा ज़िंदा किया॰ उन्होंने कहा, "तुम यहाँ कितनी देर रहे हो?" उसने कहा, 'मैं रहा हूँ यहाँ एक दिन, या दिन का हिस्सा॰" उन्होंने कहा, "नहीं! तुम रहे हो यहाँ एक सौ सालों तक॰ फिर भी, देखो तुम्हारे खाने और पीने को; वो खराब नहीं हुए॰ तुम्हारे गधे को देखो — हम इसतरह बनाते हैं तुम्हें एक सबक लोगों के लिए॰ अब, ध्यान दो हम कैसे हडडीयों को तामीर करते हैं, फिर उन्हें ढ़ाकते हैं गोश्त से॰" जब उसे समझ

आया क्या हुआ था, उसने कहा, “अब मैं जानता हूँ कि **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•”

हर ईमान वाले को ज़रूरत होती है दिलासे कि

260. इब्राहीम ने कहा, “मेरे रब, दिखाईये मुझे आप कैसे मुर्दे को ज़िंदा करते हैं•” उन्होंने कहा, “क्या तुझे यकीन नहीं?” उसने कहा, “हाँ, लेकिन मैं अपने दिल को दोबारा दिलासा देना चाहता हूँ•” उन्होंने कहा, “लो चार परिंदों को, उनकी निशानियों को पढ़ो, हर परिंदे का एक हिस्सा रखो एक पहाड़ कि चोटी पर, फिर उन्हें अपने पास पुकारो• वो जल्दबाज़ी में तुम्हारे पास आयेंगे• तुम्हें पता होना चाहिए के **अल्लाह** हैं सबसे ताकतवाले, सबसे हकीम•”

सबसे अच्छा सरमाया

261. जो कोई उनके पैसों को **अल्लाह** की राह में खर्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाने से सात बाल फूटते हैं, हर बाल में एक सौ दानों के साथ• **अल्लाह** ज़रप करते हैं इसे कई गुना जिस किसी के लिए वो चाहते हैं• **अल्लाह** है सखी, जानने वाले•

262. जो कोई खर्च करे **अल्लाह** की राह में उनका पैसा, फिर खैरात के बाद मलामत या बेइज्ज्ती न करे, पायेंगे मुआवज़ा उनके रब की तरफ से, उनको कुछ नहीं है डरने के लिए, नाहीं वो गमज़दा होंगे•

263. रहम वाले अलफाज़ और शफकत बेहतर हैं उस खैरात से जिस के बाद बेइज्ज्ती हो• **अल्लाह** हैं अमीर रहम वाले•

264. ऐ ईमानवालो, तुम्हारे खैरातों को ज़ाया न करो मलामत और बेइज्ज्ती देते हुए, जैसे कोई खर्च करता है उसका पैसा दिखावे के लिए, जबकी कुफ़्र करते हुए **अल्लाह** और आखरी दिन में• उसकी मिसाल है एक पत्थर पर जमे एक पतली मिट्टी कि परत जैसी; जैसे ही तेज़ बारिश पड़ती है, वो मिट्टी को धो देती है, उसे एक बेकार पत्थर छोड़ते हुए• वो हासिल नहीं करते कुछ भी उनकी कोशिशों से• **अल्लाह** हिदायत नहीं करते कुफ़्र करने वाले लोगों की•

खैरात

265. मिसाल उनकी जो देते हैं उनका पैसा **अल्लाह** की खूशी तलाश करते हुए, खुलूस इरादे से, है जैसे के एक बाग ऊँची उपजाऊ ज़मीन पर; जब तेज़ बारिश पड़ती है, वो दुगना अनाज देती है• अगर तेज़ बारिश न हो पाए एक हल्की सी बौछार ही काफी होती है• **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ तुम करते हो•

266. क्या तुम में से कोई नख्ल के दरख्तों और अंगूरों के बाग का मालिक होना चाहता है, साथ बहती नहरों और फरागदिली वाले अनाजों के, फिर जैसे ही वो बुढ़ा होता है, और जबके उसकी औलाद अब भी उसपर निर्भर हैं, एक मुकम्मल तबाही मारती है और उसके बाग को जला देती है? **अल्लाह** इसतरह अपनी वहियों को तुम्हारे लिए वाज़े करते हैं ताके तुम गौर कर सको•

**2:259 हम यहाँ पर यह सबक सीखते हैं कि मौत का अरसा — सिर्फ बदअमाल लोग मरते हैं; नेककार सीधे जन्नत को जाते हैं — गुज़रता है एक दिन कि तरह (देखें 18:19-25 और अपेन्डिक्स 17)•*

क्या देना चाहिए

267. ऐ ईमानवालो, तुम्हें खैरात देना चाहिए अच्छी चीजों से जो तुम कमाते हो, और उस से जो हमने तुम्हारे लिए पैदा किया ज़मीन से• उसमें से बुरा न उठाव देने के लिए, जब के तुम खुद उसे कबूल नहीं करोगे जबतक तुम्हारी आँखे न बंद हों• तुम्हें मालूम होना चाहिए के **अल्लाह** हैं अमीर, काबिले तारीफ•

268. शैतान तुम्हें गरीबी का वादा करता है और बुरा करने का हुक्म देता है, जबके **अल्लाह** वादा करते हैं तुमसे उनकी तरफ से मगफरत और रहमत• अल्लाह हैं सखी, सब जानने वाले•

हिकमत: एक बड़ा खज़ाना

269. वो हिकमत इनायत करते हैं जिस किसी पर वो चुनते हैं, और जो कोई हासिल करता है हिकमत, हासिल कर लिया है एक बड़ा खज़ाना• सिर्फ वही जो अक्ल रखते हैं तवज्जो देंगे•

गुमनाम खैरात बेहतर

270. कोई भी खैरात तुम करो, या खैरात करने का ऐहद पूरा करो, **अल्लाह** उससे बखूबी वाकिफ हैं• जहाँ तक बदकार, उनके पास नहीं होगें कोई मदद करने वाले•

271. अगर तुम ऐलान करो तुम्हारी खैरातों का, वो फिर भी अच्छे हैं• लेकिन अगर तुम उन्हें गुमनाम रखो, और दो उसे गरीब को, वो तुम्हारे लिए बेहतर है, और तुम्हारे ज़्यादा गुनाहों को बक्शवाते हैं• **अल्लाह** पूरी तरह वाकिफ हैं सारी चीज़ से तुम करते हो•

अल्लाह हैं सिर्फ
वाहिद जो हिदायत देते हैं

272. तुम ज़िम्मेदार नहीं हो किसी को हिदायत देने के लिए• **अल्लाह** हैं सिर्फ वाहिद जो हिदायत देते हैं जिस किसी को चुनते हैं (हिदायतयाफ्ता होने के लिए)• जो कुछ तुम खैरात दो है तुम्हारे खुद के अच्छे के लिए• जो कुछ खैरात तुम दो होना चाहिए सिर्फ **अल्लाह** के वासते• जो कुछ तुम खैरात दो तुम्हें दोबारा लौटाया जाएगा, बगैर ज़रासी नाइंसाफी के•

273. खैरात जाना चाहिए गरीबों को जो **अल्लाह** की राह में तकलीफ झेल रहे हैं, और हिजरत नहीं कर सकते• ना वाकिफ सोच सकते हैं कि वो हैं अमीर, उनकी अज़मत कि वजह से• लेकिन तुम उन्हें पहचान सकते हो कुछ निशानियों के ज़रिए; इसरारतन वो कभी भीख नहीं मांगते लोगों से• जो कुछ खैरात तुम दो, **अल्लाह** उससे बखूबी वाकिफ हैं•

274. जो कोई दिन और रात खैरात देते हैं, चुपके से और ऐलानिया, पाते हैं उनका अज्र उनके रब की तरफ से; उनको नाहीं कुछ डर होगा, नाहीं वो गमज़दा होंगे•

*रिबा मना किया गया**

275. जो कोई रिबा लेते हैं उसी मकाम पर हैं जैसे काबू किए गए शैतान के असर से• ये है इसलिए के वो दावा करते हैं कि रिबा बराबर है तिजारत के• लेकिन, **अल्लाह** इजाज़त देते हैं तिजारत, और मना करते हैं रिबा• इसतरह, जो कोई उसके रब कि तरफ से इस हुक्मनामे पर तवज्जो दे, और बाज़ रहे रिबा से, वो उसकी पिछली कमाईयों को रख सकता है, और उसका फैसला रहता है **अल्लाह** के पास• जहाँ तक वो जो रिबा में जारी रहते हैं, वो हासिल करते हैं जहन्नम, जिसमें वो रहेंगे हमेशा के लिए•

276. **अल्लाह** रिबा पर लानत भेजते हैं, और खैरातों को मुबारक करते हैं• **अल्लाह** नापसंद करते हैं हर काफिर, गुनाहगार को•

**2:275-278 ये माशी असूलों से साबित हो चुका है कि उधार पर ज़्यादा ब्याज लेना एक पूरे मुल्क को बूरी तरह तबाह कर सकता है• पिछले कई सालों के दरमियान हमने कई मुल्कों कि माशी हालात को तबाह होते देखा हैं जहाँ पर ज़्यादा ब्याज लिया जाता हैं उधार पर• आम ब्याज — 20% से कम — जहाँ पर किसी पर बोझ नहीं और सब मुतमईन हैं, नहीं है रिबा•*

खुदाई ज़मानत

277. जो कोई ईमान रखते हैं और बसर करते हैं एक नेक ज़िंदगी, और अदा करते हैं राबता नमाज़ें (*सलात*), और देते हैं ज़रूरी खैरात (*ज़कात*), वो पाते हैं उनका अज्र उनके रब की तरफ से; उनको न होगा डर, नाहीं वो होंगे गमज़दा•

278. ऐ ईमानवालो, तुम्हें चाहिए **अल्लाह** को ध्यान मे रखो और बाज़ रहो हर किस्मों के रिबा से, अगर तुम हो ईमानवाले•

279. अगर तुम नहीं करते, तो उम्मीद करो एक जंग **अल्लाह** और उनके रसूल की तरफ से• लेकिन अगर तुम तौबा करो, तुम तुम्हारे असल मालों को

रख सकते हो, बगैर नाइंसाफी करते हुए, या नाइंसाफी झेलते हुए•

280. अगर कर्ज़ लेने वाला काबिल न हो अदा करने के, बेहतर वक्त का इंतेज़ार करो• अगर तुम कर्ज़ को छोड़ दो एक खैरात के तौर पर, वो तुम्हारे लिए बेहतर होगा, अगर तुम सिर्फ जानते•

281. खबरदार रहो उस दिन से जब तुम लौटाए जाओगे **अल्लाह** को, और हर रूह को अदा किया जाएगा जो उसने किया था, बगैर ज़रा भी नाइंसाफी के•

लिखो माली लेन देन को

282. ऐ ईमानवालो, जब तुम कर्ज़ का लेन देन करो किसी भी मुद्दत के लिए, तुम्हें उसे लिखना चाहिए• एक गैर जानिबदार कातिब उसे लिखे• कोई कातिब इस खिदमत को करने से इंकार न करे, **अल्लाह** की तालीमों के मुताबिक• उसे लिखना चाहिए, जबके कर्ज़ लेने वाला लिखवाए उसकी शर्तें• उसे चाहिए **अल्लाह** उसके रब को ध्यान में रखे और कभी बेईमानी न करे• अगर कर्ज़ लेने वाला ज़ेहनी तौर पर काबिल नहीं है, या मजबूर, या लिखवा नहीं सकता, उसके सरपरस्त बराबरी से लिखवाएं• दो मर्दों को चाहिए गवाह बनें; अगर दो मर्द नहीं, तो एक मर्द और दो औरतें जिनकी शहादत सब को कबूल है•* इस तरह, अगर एक औरत एक तरफा हो जाए, दूसरी उसे याद दिलाए• ये ज़िम्मेदारी है गवाहों कि जब भी उन्हें शहादत के लिए बुलाया जाए वो हाज़िर हो जाएं• उकताओ नहीं तफसीलों को लिखने से, चाहे कितना लम्बा हो, अदाएगी का वक्त शामिल करते हुए• ये है बराबरी **अल्लाह** कि नज़र में, भरोसा दिलाता है बेहतर गवाही देने में, और तुम्हारे किसी भी शकों को निकालता है• व्यापारी लेन देन जो तुम फौरी तौर पर करते हो ज़रूरी नहीं लिखा जाये, लेकिन उनकी गवाही होने दो• कोई कातिब या गवाह को उसकी खिदमत कि वजह से तकलीफ नहीं दी जानी चाहिए• अगर तुम उन्हें तकलीफ पहुँचाओ, ये बदकारी होगी तुम्हारी तरफ से• तुम्हें चाहिए **अल्लाह** को ध्यान में रखो, और **अल्लाह** तुम्हें सिखायेंगे• **अल्लाह** हैं सब चीज़ों के जानने वाले•

283. अगर तुम सफर कर रहे हो, और कोई कातिब न मिले, एक इकरार नामा भेजा जाना चाहिए ताकि अदाएगी की ज़मानत हो• अगर किसी पर इस तरह भरोसा किया गया हो, उसे चाहिए इकरार नामा लौटा दे जब उसकी मुद्दत पूरी हो जाए, और उसे चाहिए **अल्लाह** उसके रब को ध्यान में रखे• कोई भी शहादत जिसके तुम गवाह थे न रोको उसको छिपाते हुए• जो कोई रोकता है शहादत को गुनाहगार है दिल से• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ से तुम करते हो•

284. सारी चीज़ें **अल्लाह** की हैं आसमानों और ज़मीन में• चाहे तुम तुम्हारे अंदरूनी ख्यालों को ऐलान करो, या उन्हें छिपाए रखो, **अल्लाह** तुम्हें उनके लिए ज़िम्मेदार ठहराते हैं• **वो** माफ करते हैं जिस किसी को **वो** चाहते हैं, और सज़ा देते हैं जिस किसी को **वो** चाहते हैं• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

**2:282 माली लेन देन ही सिर्फ ऐसे मौके हैं जहाँ गवाह के तौर पर दो औरतें एक मर्द कि जगह ले सकतीं हैं• ये इस लिए है की हिफाज़त किया जा सके मुमकिन सच्चाई से कि एक गवाह दूसरे गवाह से शादी कर सकता है, और इस तरह उसे एक तरफा होने का सबब बन सकता है• ये मानी हुई हकीकत है कि औरतें मर्दों के मुकाबले जज़बाती तौर पर ज़्यादा कमज़ोर हैं•*

282 *28768*

तुम्हें चाहिए कोई फर्क न करो
अल्लाह के रसूलों के बीच

1. रसूल ने ईमान रखा है उसमें जो उसको भेजा गया था नीचे उसके **रब** की तरफ से, और उसी तरह ईमान वालों ने भी• वो ईमान रखते हैं **अल्लाह** , **उनके** फरिश्तों, **उनकी** आसमानी किताब, और **उनके** रसूलों में: "हम फर्क नहीं करते उनके किसी भी रसूलों के बीच•" वो कहते हैं, "हम सुनते हैं, और हम अताअत करते हैं•* हमें माफ करिए, हमारे **रब**• आपकी तरफ है असल मुकद्दर•"

2. **अल्लाह** कभी बोझ नहीं डालते किसी रूह पर उसकी ताकत से ज़्यादा: जो वो कमाता है उसका नफा है उसके साथ, और है उसके खिलाफ जो वो

करता है। “हमारे रब, हमारी मज़म्मत न करिए अगर हम भूल जाएं या गलतियाँ करें। हमारे रब, और हमारी हिफाज़त करिए आपकी बेअदबी करने से, जैसा हमसे पहलों ने किया है। हमारे रब, हमारी हिफाज़त करिए गुनाह करने से इससे पहले कि बहुत देर हो जाए हमें तौबा करने के लिए। हमें बक्श दीजिए और हमें माफ करिए। आप हमारे रब और मालिक हैं। अता करिए हमें जीत कुफ़्र करने वाले लोगों पर।

****

सुरह 3: इमरान का कुम्बा (आलि-इमरान)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. अ॰ल॰म॰*
2. **अल्लाह**: कोई खुदा नहीं सिवाए उनके; ज़िन्दा रहने वाले, हमेशा के लिए।
3. उन्होंने भेजा है नीचे इस आसमानी किताब को तुम्हारी तरफ, सच्चाई से, तसदीक देता हुआ पिछली सारी आसमानी किताबों की, और उन्होंने भेजा नीचे तौरेत और इंजील
4. उस से पहले, लोगों को हिदायत देने के लिए, और उन्होंने भेजा नीचे कानून कि किताब। जो कोई कुफ़्र करते हैं **अल्लाह** की वहियों में पाते हैं सख्त अज़ाब। **अल्लाह** हैं सबसे ताकतवर, इंतेकाम लेने वाले।
5. कोई भी चीज़ नहीं छिपी है **अल्लाह** से, ज़मीन पर, या आसमान में।
6. वो हैं वाहिद जो तुम्हारी नक्शकारी करते हैं कोखों में जैसा वो चाहते हैं। कोई खुदा नहीं सिवाए उनके; सबसे ताकतवर, सबसे हकीम।
7. उन्होंने भेजा नीचे इस आसमानी किताब को तुम्हारी तरफ, शामिल करते हुए साफ आयतें — जो कायम करते हैं आसमानी किताब के असल मायने — साथ साथ कई मायने वाली या मिसाल्या आयतें। जो कोई शकों को पनाह देते हैं उनके दिलों में कई मायने वाली आयतों कि तलाश में रहेंगे गड़बड़ी पैदा करने के लिए, और एक खास मायने निकालने के लिए। कोई नहीं जानता उनके सही मायने सिवाए **अल्लाह** और जो इल्म में पुख्तगी रखते है। वो कहते हैं, “हम इस में ईमान रखते हैं — ये सारी आतीं हैं हमारे रब की तरफ से।” सिर्फ वो जो इल्म रखते हैं तवज्जो देंगे।
8. “हमारे रब, हमारे दिलों को न डगमगाने दीजिए, अब जबकि आपने हमें हिदायत दिया है। बरसाईये हमें आपकी रहमत से; आप हैं अता करने वाले।

**2:285 बड़े हुक्मों में से एक है: “तुम्हें चाहिए कोई फर्क न करो अल्लाह के रसूलों के बीच” (2:136, 3:84, 4:150)। ईमान वाले युँ कहते हुए जवाब देते हैं, “हम सुनते हैं और हम अताअत करते हैं,” जबके सारे बुतपरस्त पलट कर बहेस करते हैं और वाजिब ठहराने के लिए उनका इसरार अल्लाह के साथ मुहम्मद का नाम लेना, दूसरे सारे रसूलो को छोड़ते हुए। बिगड़े हुए सारे मुसलमान उनके ईमान का अकीदा (शहादत) और उनकी राबता नमाज़ों के दरमियान मुहम्मद का नाम लेते हैं (देखें 72:18)।*

3:1 देखें फुटनोट 2:1 और अपेन्डिक्स एक।

9. “हमारे रब, आप बेशक लोगों को जमा करेंगे उस दिन जो अटल है। **अल्लाह** कभी वादा नहीं तोड़ते।”
10. जो कोई कुफ़्र करते हैं उनकी कभी मदद न की जायेगी उनके पैसे से, नाहीं उनकी औलाद से, **अल्लाह** के खिलाफ। वो जहन्नम का इंधन होंगे।
11. जैसे फिरऔन के लोग और उनसे पहले, उन्होंने हमारी आयतों को ठुकराया और, अंजाम ये हुआ, **अल्लाह** ने उन्हें सज़ा दिया उनके गुनाहों के लिए। **अल्लाह** सख्त हैं अज़ाब नाफिज़ करने में।
12. कहो उनसे जो कुफ़्र करते हैं, “तुम शिकस्त दिए जाओगे, फिर जमा किए जाओगे जहन्नम में; क्या एक अफसोस नाक ठिकाना!”

ईमानवालों:
आखिरकार जीतने वाले

13. एक मिसाल कायम की गई है तुम्हारे लिए दो लश्करों के ज़रिए जो टकराए — एक लश्कर लड़ रहा था **अल्लाह** कि राह में, जबके दूसरा कुफ्र कर रहा था• उन्होंने अपनी आँखों से देखा के वो दो गुना थे• **अल्लाह** अपनी जीत से मदद करते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं• ये हौसला देना चाहिए उनके लिए जो दूर कि सोच रखते हैं•

मुखतलिफ अव्वलियतें

14. सजाया गया है लोगों के लिए दुनियावी लुत्फों को, ऐसे जैसे औरतें, औलाद का होना, ढ़ेर पर ढ़ेर सोने और चांदी के, सिखाए गए घोड़े, मवेशी जानवर, और अनाजें• ये हैं इस दुनिया कि चीज़ें• इससे कहीं बेहतर ठिकाना मखसूस किया गया है **अल्लाह** के पास•

15. कहो, "मैं तुम्हें इस से बेहतर सौदे का इत्तेला देता हूँ: उनके लिए जो एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, उनके रब के पास मखसूस हैं, बागात बहती हुई नहरों के साथ, और पाक जोड़े, और खुशी **अल्लाह** कि नियामतों में•" **अल्लाह** हैं देखने वाले उनकी इबादत करने वालों को•

16. वो कहते हैं, "हमारे रब, हम ईमान लाए हैं, इसलिए हमारे गुनाहों को माफ करिए, और जहन्नम कि आग कि अज़ियत से बचाईये•"

17. वो हैं साबित कदम, सच्चे, फरमानबरदार, खैरात करने वाले, और सुबह को ध्यान करने वाले•

सबसे एहम
*एहकाम**

18. **अल्लाह** गवाही देते हैं कि कोई खुदा नहीं सिवाए उनके, और इसीतरह फरिश्ते और वो जो इल्म रखते हैं• सच्चाई और बराबरी से• वो हैं कामिल खुदा ; कोई खुदा नहीं सिवाए उनके, कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

फरमानबरदारी:
सिर्फ एक मज़हब

19. **अल्लाह** को सिर्फ मंजूर है मज़हब "फरमानबरदारी•" अफसोस के, वो जिनको किताब मिली है वहीं हैं जो हुज्जत करते हैं इस हकीकत से, इस के बावजूद कि इल्म जो उनको मिला है, जलन कि वजह से• ऐसे **अल्लाह** कि आयतों को ठुकराने वालों पर, **अल्लाह** सबसे सख्त हैं हिसाब लेने में•

**3:18 अकीदे का ऐलान (शहादत) जो फरमान किया गया है अल्लाह कि तरफ से है: "कोई खुदा नहीं सिवाए अल्लाह के," अरबी में "ला इलाहा इल्ल अल्लाह" (देखें 37:35, 47:19 भी)• बिगडे हुए मुसलमान एक दूसरी "शहादत" को जोड़ने पर ज़ोर देते हैं ऐलान करते हुए कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं• ये सही मायनों में "शिर्क" (बुतपरस्ती) और खुली नाफरमानी है अल्लाह और उनके रसूल कि• इसके अलावा, वो खिलाफ वरज़ी करता है 2:136, 2:285, 3:84 और 4:150-152 में बड़े ऐहकामों कि जो मना करता है अल्लाह के रसूलों के दरमियान फरक लाने को• ये ऐलान करते हुए कि "मुहम्मद एक अल्लाह के रसूल हैं," और नाकामयाव होना वही ऐलान करने में दूसरे रसूलों के लिए जैसे इब्राहीम, मूसा, ईसा, सालेह, और युनुस, एक फरक किया जाता है और एक बड़े हुक्म कि खिलाफ वरज़ी होती है•*

20. अगर वो तुमसे बहेस करें, तो कहो, "मैंने सादगी से अपने आप को **अल्लाह** का फरमानबरदार किया है, मैं और वो जो मेरी पैरवी करते हैं•" तुम्हें ऐलान करना चाहिए उनके लिए जिन्हें किताब मिली है, उनके लिए भी जिन्हें नहीं मिली, "क्या तुम फरमानबरदार होते हो?" अगर वो फरमानबरदार होते हैं, तो वा हैं हिदायत पर, लेकिन अगर वो फिर जाएं, तो तुम्हारा काम है सिर्फ इस पैगाम को पहुँचाना• **अल्लाह** हैं देखने वाले सारे लोगों के•

21. वो जिन्होंने **अल्लाह** कि आयतों को ठुकराया है, और नबियों को कत्ल किया नाइंसाफी से, और कत्ल किया उनको जो लोगों में इंसाफ कि वकालत करते थे, वादा करो उनसे एक दर्दनाक आज़ाब का•

22. उनके आमाल ज़ाया कर दिए गए हैं, दोनो इस ज़िंदगी में और अगली ज़िंदगी में, और उनके पास मदद करने वाले न होंगे॰

23. क्या तुमने ध्यान दिया है उनपर जिन्हें किताब का हिस्सा दिया गया था, और कैसे उनको दावत दी जाती है **अल्लाह** कि इस किताब को पकड़ के चलने की, और इसे उनके खुद कि ज़िन्दगियों में इस्तेमाल किए जाने की, फिर उनमें से कुछ नफरत से पलट जाते हैं?

24. ये इसलिए है कि उन्होंने कहा, "जहन्नम कि आग हमें न छुएगी, सिवाए कुछ दिनों के लिए॰" वो इस तरह धोखा दिए गए थे उनके मज़हब में उनके खुदके झूठों से॰

25. वो कैसा होगा उनके लिए, जब हम उन्हें जमा करेंगे उस दिन जो अटल है? हर रूह को सिला दिया जाएगा जो कुछ उसने कमाया, बगैर ज़रा सी भी नाइंसाफी के॰

अल्लाह कि सिफतें

26. कहो, "हमारे खुदा: सारी बादशाहत के मालिक॰ आप अता करते हैं बादशाहत जिस किसी को आप चुनते हैं, आप महरूम करते हैं बदशाहत से जिस किसी को आप चुनते हैं॰ आप अता करते हैं इज्ज़त जिस किसी को आप चुनते हैं, और रूसवा करते हैं जिस किसी को आप चुनते हैं॰ आप के हाथ में है सारे रिज़्क॰ आप हैं कादिरे मुतलक॰

27. "आप मिलाते हैं रात को दिन में, और मिलाते हैं दिन को रात में॰ आप पैदा करते हैं जिंदा मुर्दा से, और पैदा करते है मुर्दा जिंदा से, और आप अता करते हैं जिस किसी को आप चुनते हैं, बिना किसी हदों के॰"

चुनों अपने दोस्तों को ध्यान से

28. ईमानवाले कभी भी अपने आप को नहीं मिलाते काफिरों से, सिवाए ईमानवालों के॰ जो कोई ऐसा करता है जिलावतन दिया जाता है **अल्लाह** कि तरफ से॰ माफ किए गए हैं वो जो मजबूर हैं ऐसा करने के लिए ताके बचें इज़ार से॰ **अल्लाह** तुम्हें आगाह करते हैं ताके तुम सिर्फ उनका एहतराम करो॰ **अल्लाह** कि तरफ आखरी मुकद्दर॰

29. कहो, "चाहे तुम अपने अंदरूनी सोच को छिपाए रखो, या उसे ऐलान करो, **अल्लाह** हैं उससे पूरी तरह वाकिफ॰" वो हैं पूरी तरह वाकिफ आसमानों और ज़मीन में सारी चीज़ें से॰ **अल्लाह** हैं हर कादिरे मुतलक॰

30. वो दिन आएगा जब हर रूह को मालूम होगा वो सारे अच्छे आमाल जो उसने किए थे सामने लाए जाएंगे॰ जहाँ तक के बुरे आमाल का सवाल है, वो तमन्ना करेंगे की वो दूर, दूर तक निकाल दिए जाते॰ **अल्लाह** तुम्हें आगाह करते हैं ताके तुम सिर्फ उनका एहतराम करो॰ **अल्लाह** हैं शफीक लोगों कि तरफ॰

31. ऐलान करो: "अगर तुम **अल्लाह** को चाहते हो, तुम्हें मेरी पैरवी करनी चाहिए॰" **अल्लाह** फिर तुम्हें चाहेंगे, और तुम्हारे गुनाहों को माफ करेंगे॰ **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम॰

32. ऐलान करो: "तुम्हें **अल्लाह** और रसूल कि अताअत करनी चाहिए॰" अगर वो पलट जाएं, **अल्लाह** काफिरों को पसंद नहीं करते॰

मरयम कि पैदाईश

33. **अल्लाह** ने चुना है आदम, नुह, इब्राहीम का कुम्बा, और इमरान का कुम्बा (*रसूलों जैसा*) लोगों कि तरफ॰

34. वो एक नस्ल से हैं॰ **अल्लाह** हैं सुनने वाले, सब जानने वाले॰

35. इमरान कि बिवी ने कहा, "मेरे रब, मैने मुंतखब किया है (*बच्चा*) जो मेरी पेठ में है आप के लिए, पूरी तरह, तो कबूल करिए मेरी तरफ से॰ आप हैं सुनने वाले, सब जानने वाले॰"

36. जब उसने उसे जन्म दिया, उसने कहा, “मेरे रब, मैंने एक लड़की को जन्म दिया है” — **अल्लाह** पूरी तरह वाकिफ थे उससे जो उसमें रह गया था — “मर्द एक सा नहीं है औरत के• मैंने उसे नाम दिया है मरयम, और मैं आपकी हिफाज़त मांगती हूँ उसपर और उसके नस्लों पर ठुकराए हुए शैतान से•

37. उसके रब ने उसे कबूल किया एक इज्ज़त वाला कबूल, और रहमत भरी परवरिश में उसे बड़ा किया, ज़करिया कि सरपरस्ती में• जब भी ज़करिया उसके इबादतगाह में दाखिल होता उसे नियामतों के साथ पाता• वो पूछता, “मरयम, तुमने यह कहाँ से पाया?” वो कहती, “यह **अल्लाह** कि तरफ से है• **अल्लाह** मुहय्या करते हैं जिसे चाहें वो चुनलें, बगैर हदों के•”

याहया कि पैदाईश

38. उसी वक्त ज़करिया ने उसके रब को पुकारा: “मेरे रब, अता करिए मुझे ऐसी एक अच्छी औलाद; आप हैं सुनने वाले दुआओं के•”

39. फरिश्तों ने उसे पुकारा जब वो मेहराब में इबादत कर रहा था: “**अल्लाह** तुम्हें याहया कि खुशखबरी देते हैं, **अल्लाह** कि लफ्ज़ में ईमान रखने वाला, इज्ज़तदार, इख्लाकी, और एक नेक नबी•”

40. उसने कहा, “मुझे कैसे एक बेटा हो सकता है, जब के मैं इतना बुढ़ा हुँ, और मेरी बिवी है बांझ?” उसने कहा, “**अल्लाह** करते हैं जो वो चाहें•”

41. उसने कहा, “मेरे रब, मुझे एक निशानी दीजिए•” उसने कहा, “तेरी निशानी है कि तु लोगों से तीन दिनों तक बात नहीं करेगा, सिवाए इशारों के ज़रिए• याद करो अपने रब को कसरत से; और रात और दिन धान करो•”

मरयम और ईसा

42. फरिश्तों ने कहा, “ऐ मरयम, **अल्लाह** ने तुझे चुना है और तुझे पाक किया है• उन्होंने तुझे चुना है सारी औरतों से•”

43. “ऐ मरयम, तुझे चाहिए फरमानबरदार हो अपने रब्ब का, और सुजूद और रूकु कर उनके साथ जो झुकते हैं•”

44. ये पहलों कि खबरें हैं जो हम तुझ पर नाज़िल करते हैं• तू वहाँ न था जब उन्होंने अपने हिस्से कि परची निकाली मरयम कि सरपरस्ती करने के लिए• तू वहाँ मौजूद न था जब उन्होंने एक दूसरे से बहेस किया•

45. फरिश्तों ने कहा, “ऐ मरयम, **अल्लाह** तुम्हें खुशखबरी सुनाते हैं: एक लफ्ज़ उनकी तरफ से जिसका नाम है ‘मसीहा, ईसा मरयम का बेटा• वो इस ज़िंदगी में और अगली जिंदगी में होगा मशहूर, और उनमें से जो हैं मेरे सबसे करीब होंगे•’

46. “वो लोगों से बात करेगा पालने से, और जब बड़ा होगा तब भी; वो होगा नेककारों में से एक•”

47. उसने कहा, “मेरे रब, मुझे कैसे एक बेटा हो सकता है, जब के किसी मर्द ने मुझे नहीं छुआ है?” उसने कहा, “**अल्लाह** इसतरह पैदा करते हैं जो कुछ वो चाहते हैं• कोई चीज़ करने के लिए, वो सिर्फ उसे कहते हैं, ‘हो,’ और वो हो जाता है•

48. “वो सिखाएंगे उसे आसमानी किताब, हिकमत, तौरेत, और इंजील•”

49. एक रसूल जैसा बनी इस्राईल की तरफ: “मैं आता हूँ तुम्हारे रब कि तरफ से एक निशानी के साथ — मैं पैदा करता हूँ तुम्हारे लिए मिट्टी से एक चिड़िये कि शक्ल, फिर मैं उसमें फूंकता हूँ, और वो बन जाता है एक ज़िंदा चिड़िया **अल्लाह** कि मरज़ी से• मैं अंधों को रौशनी लौटाता हूँ, कोहड़ियों को ठीक करता हूँ, और मैं ज़िंदा करता हूँ मुरदे को **अल्लाह** कि मरज़ी से• मैं तुम्हें बता सकता हूँ जो तुम खाते हो, और जो तुम जमा करते हो तुम्हारे घरों में• यह तुम्हारे लिए एक सबूत होना चाहिए, अगर तुम हो ईमानवाले•

50. “मैं तसदीक करता हूँ पिछली आसमानी किताब — तौरेत कि — और मैं तुम्हारे ऊपर आएद किए गए कुछ हुरमतों को मनसूख करता हूँ• मैं तुम्हारी तरफ

तुम्हारे रब कि तरफ से काफी सबूत के साथ आता हूँ• इसलिए, तुम्हें चाहिए **अल्लाह** को ध्यान रखो और मेरी अताअत करो•

51. “**अल्लाह** हैं मेरे रब और तुम्हारे रब;* तुम्हे चाहिए कि सिर्फ उनकी इबादत करो• ये है सही रास्ता•”

52. जब ईसा ने उनके कुफ्र को भापा, उसने कहा, “कौन हैं मेरी मदद करने वाले **अल्लाह** कि तरफ?” उसकी पैरवी करने वालों ने कहा, “हम हैं **अल्लाह** के मददगार; हम **अल्लाह** में ईमान रखते हैं, और गवाही देते कि हम हैं फरमानबरदारें•

53. “हमारे रब, हम ईमान लाये हैं उसमें जो आपने नीचे उतारा है, और हमने रसूल की पैरवी कि है; हमें गवाहों में से गिनिये•”

*ईसा कि मौत**

54. उन्होंने मनसूबा बनाया और साज़िश कि, लेकिन उसी तरह **अल्लाह** ने भी, और **अल्लाह** हैं सबसे बेहतर साज़िशकार•

55. इसतरह, **अल्लाह** ने कहा, “ऐ ईसा, मैं तुम्हारी ज़िंदगी को खत्म करता हूँ, तुझे मेरी तरफ उठाता हूँ, और निजात देता हूँ तुझे काफिरों से• मैं उन्हें जो तेरी पैरवी करने वाले हैं बुलंद करूंगा उनपर जो काफिर हैं, कयामत के दिन तक• फिर मेरी तरफ है तुम सारों कि आखरी मुकद्दर, फिर मैं इंसाफ करूंगा तुम्हारे बीच तुम्हारे झड़पों के मुताल्लिक•

56. “जहाँ तक के उनका सवाल है जो कुफ्र करते हैं, मैं उनको दर्दनाक आज़ाब दुंगा इस दुनिया में, और अगली ज़िंदगी में• उनके पास कोई न होंगे मदद करने वाले•”

57. जहाँ तक के उनका सवाल है जो ईमान रखते हैं और नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो उनको पूरा मुआवज़ा देंगे• **अल्लाह** नाइंसाफ को पसंद नहीं करते•

58. ये हैं आयतें जो हम तुझको पढ़कर सुनाते हैं, देते हुए एक पैगाम हिकमत से भरा•

*रियाज़ी तसदीक**

59. जहाँ तक **अल्लाह** का ताल्लुक है, ईसा का मिसाल, है ऐसा जैसे आदम का; उन्होंने उसे धूल से पैदा किया, फिर उससे कहा, “हो,” और वो हो गया था•

60. यह सच है तुम्हारे रब्ब कि तरफ से; किसी शकों को न पालो•

**3:51 यही है हुबहू जो ईसा को बताया गया है कहते हुए पूरे इंजील में• मिसाल के तौर पर देखें जॉन का इंजील 20:17, और किताब “जिज़स: मिथ्स ऐण्ड मैसेज” लिसा स्प्रे कि तरफ से, चे• 4 (युनिर्वसल युनिटी, फेरमॉन्ट, कैलिफॉरनिया, 1992)•*

**3:54-55 हम सीखते हैं कि ईसा कि रूह, असल शक्स, उठा ली गई थी, यानी, ईसा कि ज़िंदगी इस ज़मीन पर खत्म कर दी गई थी, गिरफतारी, अज़ियत, उसकी खाली, बगैर रूह कि, लेकिन जिस्मानी तौर पर ज़िंदा जिस्म के सूली चढ़ने से पहले (अपेन्डिक्स 22 देखें तफसिलात के लिए)•*

**3:59 “बराबरी” ईसा और आदम कि पैदाइश की तसदीक की गई है रियाज़ी तौर पर; ईसा और आदम उतनी अदद बार बयान किये गए है कुरान में, दोनो 25 बार•*

काफिरों को
ललकारते हुए

61. अगर कोई तुझसे बहेस करे, बावजूद इसके की तूने ईल्म पाया है, तो कह, “चलो हम जमा करें हमारी औलाद और तुम्हारी औलाद, हमारी औरतों और तुम्हारी औरतों को, हम सारे और तुम सारे, फिर चलो हम पुकारे **अल्लाह** कि लानत झूठ बोलने वालों पर•”

62. बेशक, यह बयान है सच्चाई का• बेशक, कोई खुदा नहीं सिवाए **अल्लाह** के• बेशक, **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

63. अगर वो पलट जाएं, तो **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ बुरा करने वालों से•

दावत
सारे ईमानवालों को

64. कहो, "ऐ आसमानी किताब कि पैरवी करने वालों, चलें हम मुनासिब तौर पर हमारे और तुम्हारे बीच एक मुहायदे पर पहुँचे: कि हम **अल्लाह** के सिवाए किसी कि इबादत न करें; कि हम कभी भी उनके अलावा किसी बुतों को न कायम करें, नाहीं किसी इंसान को रब जैसा कायम करें सिवाए **अल्लाह** के•" अगर वो पलट जाएं, कहो, "गवाह रहो कि हम हैं फरमानबरदारें•"

65. ऐ आसमानी किताब कि पैरवी करने वालों, तुम क्यों इब्राहीम के बारे में बहेस करते हो, जबकि तौरेत और इंजील उसके बाद ही नाज़िल हुई? क्या तुम नहीं समझते?

66. तुमने बहेस किया है उन चीज़ों के बारे में जो तुम जानते थे; तुम क्यों उन चीज़ों के बारे में बहेस करते हो जो तुम नहीं जानते? **अल्लाह** जानते हैं, जबके तुम नहीं जानते•

67. इब्राहीम नाहीं यहूदी था, नाहीं ईसाई; वो था एक रब की इबादत करने वाला फरमानबरदार• वो कभी भी बुतपरस्त न था•

68. लोगों में से सबसे ज़्यादा इब्राहीम के हकदार वो हैं जिन्होंने उसकी पैरवी की, और ये नबी, और जो ईमान रखते हैं• **अल्लाह** हैं रब और मालिक ईमान वालों के•

69. कुछ आसमानी किताब पर चलनेवाले तुझे बहकाना चाहते हैं, लेकिन वो सिर्फ खुद को बहकाते हैं, बगैर जाने•

70. ऐ आसमानी किताब कि पैरवी करने वालों, तुम क्यों **अल्लाह** कि इन आयतों को ठुकराते हो जबके तुम गवाही देते हो (*कि ये सच है*)?

71. ऐ आसमानी किताब कि पैरवी करने वालों, क्यों तुम शिकस्त देते हो सच को झूठ से, और छिपाते हो सच को, जानबूझकर?

72. कुछ आसमानी किताब कि पैरवी करने वाले कहते हैं, "मानों उसे जो ईमानवालों पर उतरा था सुवह में, और ठुकरा दो उसे शाम में; हो सकता है किसी दिन वो पलट जाएं•

73. "और न मानो सिवाए उन जैसे जो तुम्हारे मज़हब पर चलते हैं•" कहो, "**अल्लाह** कि हिदायत है सही हिदायत •" अगर वो दावा करे कि उनके पास भी वैसी हिदायत है, या तुमसे तुम्हारे रव्व के बारे में बहेस करें, कहो, "सारा फज़्ल है **अल्लाह** के हाथ में; वो इनायत करते हैं उसे जिस किसी पर वो चाहते हैं•" **अल्लाह** हैं सखी, सबकुछ जाननेवाले•

74. वो तफसील करते हैं उनकी रेहमत जिस किसी के लिए वो चाहते हैं; **अल्लाह** मालिक हैं बेइन्तेहा फज़्ल के•

सब लोगों के साथ ईमानदार रहो

75. कुछ आसमानी किताब कि पैरवी करने वालों पर भरोसा किया जा सकता है एक पूरे माल के साथ, और वो तुम्हें वापस लौटा देंगे• उनमें से दूसरे हैं कि एक दिनार का भी भरोसा नहीं किया जा सकता; वो वापस नहीं करेंगे तुम्हें जब तक तुम उनके पीछे लगे न रहो• वो इसलिए कि वो कहते हैं, "हमें ज़रूरी नहीं ईमानदार होना जब उम्मियों के साथ लेनदेन करें!"* इसतरह, वो **अल्लाह** को झूठ मनसूब करते हैं, जानबूझकर•

76. वाकई, जो कोई अपने फरायज़ को पूरा करते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, **अल्लाह** चाहते हैं नेककारों को•

77. जहाँ तक वो जो जो बेच देते हैं **अल्लाह** से किया वादा, और उनके फरायज़ों को, एक मामूली दाम के

लिए, वो नहीं पाते हैं कोई हिस्सा अगली ज़िंदगी में• **अल्लाह** उनसे बात नहीं करेंगे, नाहीं उन्हें देखेंगे, हश्र् के दिन पर, नाहीं वो उन्हें पाक करेंगे• उन्होंने पाय है एक दर्दनाक आज़ाब•

78. उनमें हैं वो जो मरोड़ते हैं उनके ज़बानों को आसमानी किताब कि नक्ल करने के लिए, ताके तुम समझो के वो आसमानी किताब से है, जबके वो आसमानी किताब से नहीं है, और वो दावा करते हैं कि वो है **अल्लाह** कि तरफ से, जब कि वो **अल्लाह** कि तरफ से नहीं है• इसतरह, वो झूठ बोलते हैं और उन्हें **अल्लाह** को मनसूब करते हैं, जानबूझकर•

79. कभी भी एक इंसान जिसे **अल्लाह** ने बक्शा हो असमानी किताब और नबुअत के साथ कहे लोगों से, "मुझे बुत बनाओ **अल्लाह** के साथ•" बलिके, (*वो कहेगा*), "अपने आप को पूरी तरह वक्फ करो सिर्फ अपने रब के लिए," असमानी किताब के मुताबिक तुम नसीहत करते हो और तालिमात तुम सीखते हो•

80. नाहीं वो तुम्हें हुक्म देगा फरिश्तों को बुत बनाने का और नबियों को रबों जैसा• क्या वो तुम्हें कुफ्र करने कि नसीहत करेगा फरमानबरदार बनने के बाद?

बड़ी पेशीनगोई पूरी हुई:
अल्लाह के वादे का
रसूल की

81. **अल्लाह** ने नबियों से वादा लिया, कहते हुए, "मैं दूंगा तुम्हें आसमानी किताब और हिकमत• उसके बाद, एक रसूल आएगा सारी मौजूदा आसमानी किताबों कि तसदीक करने के लिए• तुम्हें चाहिए उसमें ईमान रखना और उसकी मदद करना•" उन्होंने कहा, "क्या तुम इसे इकरार करते हो, और एहेद करते हो इस वादे को पूरा करने का?" वो बोले, "हम इकरार करते हैं•" उन्होंने कहा, "तुम इस तरह गवाह हो, और मैं तुम्हारे साथ गवाही देता हूँ•"

3:75 कुरान के रियाज़ी कोड के पता चलने से पहले, कुछ आलिमों ने झूठा दावा किया कि मुहम्मद एक अनपढ़ आदमी था जो ऐसी एक आला किताब नहीं लिख सकता था• उन्होने लफ्ज़ "उम्मी**" के मायने को बिगाड़ दिया, दावा करते हुए के उसके मायने "अनपढ़" है• यह आयत साबित करती है कि "**उम्मीयीन**" के मायने है "आसमानी किताब को नहीं जानने वाले" (62:2 और अपेन्डिक्स 28 भी देखें)•*

**3:81 यह बड़ी पेशीनगोई अब पूरी हो चुकी है• अल्लाह के वादे का रसूल जैसा पेशीनगोई किया गया है इस आयत में और इंजील के मलाकाई 3:1-21, लूक 17:22-36 और मैथ्यु 24:27 में, अल्लाह के पैगामों को पाक करने और एक करने के लिए जो अल्लाह के नबियो के ज़रिए पहुँचाये गये थे• यहूदी मज़हब, ईसाई मज़हब, इस्लाम, हिंदू मज़हब, बुद्ध मज़हब, वगैराह, बूरी तरह बिगाड़ दिए गए हैं• यह अल्लाह कादिरे मुतलक कि मरज़ी है कि उन को पाक करें और उनको एक करें सिर्फ उनकी इबादत करने के परचम के तले• बेहद सबूत अता किया गया है अल्लाह कि तरफ से उनके वादे के रसूल कि मदद में, जिस का नाम यकिनी तौर पर कुरान के रियाज़ी कोड में बताया गया है "रशाद खलीफा" जैसा• मिसाल के तौर पर, जोड़ते हुए जिमेटरिकल वेल्यु "रशाद" कि (505), साथ "खलीफा" कि वेल्यु (725), साथ आयत का नम्बर (81) देता है 1311, या 19x69 (देखें अपेन्डिक्स 2 सबूत की तफसील के लिए)•*

अल्लाह के वादे का रसूल को
ठुकराने वाले हैं काफिरें

82. जो ठुकराए इस (*कुरानी पेशीनगोई*) को हैं बुरे•

83. क्या वो **अल्लाह** के मज़हब के अलावा किसी और कि तलाश कर रहे हैं, जबके सारी चीज आसमानों और ज़मीन में फरमानबरदार हो चुकी है उनकी, खुशी से और बेदिली से, और वो उनकी तरफ लौटाए जायेंगे?

फरक न करो अल्लाह के
रसूलों के बीच

84. कहो, "हम ईमान रखते हैं **अल्लाह** में, और उसमें जो भेजा गया था नीचे हमारी तरफ, और उसमें जो भेजा गया था नीचे इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब, और असबातों कि तरफ, और उसमें जो दिया गया था मूसा, ईसा और नबियों को उनके रब कि तरफ

से• हम उन किसी के बीच फरक नहीं करते• हम हैं सिर्फ उनके फरमानबरदार•”

सिर्फ एक मज़हब
मंजूर किया गया है अल्लाह कि तरफ से

85. जो कोई कबूल करता है फरमानबरदारी के अलावा उसका मज़हब, वो उसकी तरफ से कबूल नहीं किया जाएगा, और अगली ज़िंदगी में, वो खसारों के साथ होगा•

86. **अल्लाह** क्यों हिदायत दें उन लोगों को जो कुफ्र करते हैं ईमान लाने के बाद, और गवाह होने के बाद कि रसूल है सच, और इसके बाद कि उन्हें पुख्ता सबूतें* दिए जा चुके हैं? **अल्लाह** हिदायत नहीं देते गुनाहगार को•

87. इन्होंने लानत पा लिया है **अल्लाह**, और फरिश्तों, और सारे लोगों कि तरफ से•

88. हमेशा के लिए वो रहेंगे उसमें; आज़ाब उनके लिए कभी कम न किया जायेगा, नाहीं वो माफ किए जायेंगे•

89. छूट है उनको जो तौबा करें उसके बाद, और इसलाह करें• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

तौबा कब
कबूल नहीं होती है

90. जो कोई कुफ्र करें ईमान लाने के बाद, फिर डूब जाएं कुफ्र कि गहराई में, उनकी तरफ से तौबा कबूल नहीं किया जाएगा, वो हैं असल गुमराह•

91. जो कोई कुफ्र करे और मरे काफिरों जैसा, उनमें से किसी कि तरफ से ज़मीन भर सोना कबूल नहीं किया जाएगा, अगर ऐसा कोई फिदया मुमकिन होता तब भी• उन्होंने दर्दनाक आज़ाब पा लिया है; उनके लिए कोई मददगार न होंगे•

92. तुम कभी नेककारी हासिल नहीं कर सकते जब तक तुम खैरात न दो तुम्हारी पसंदीदा चीजों से• जो कुछ तुम दो खैरात के लिए, **अल्लाह** हैं उससे पूरी तरह वाकिफ •

हराम न करो
जो है हलाल

93. सारे खाने हलाल हुआ करते थे बनी इस्राईल के लिए, जबतक इस्राईल ने खुदपर कुछ हुरमतें आएद नहीं किये तौरेत नीचे भेजे जाने से पहले• कहो, “तौरेत लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम हो सच्चे•”

94. जो कोईइसके बाद झूठी हुरमतें गढ़े, और उन्हें मनसूब करे **अल्लाह** को, हैं असल गुनाहगार•

**3:86 आयतें 3:82-90 हमें इत्तेला करतीं हैं कि जो कोई अल्लाह के वादे के रसूल को ठुकराए अब फरमानबरदारें (मुसलमानें) नहीं हैं, चुंकि वो अब कुरान में ईमान नहीं रखते• 3:86 में जो सबूते बताये गये हैं वो रियाज़ी कोड कि तरफ इशारा करते हैं, जो अल्लाह के वादे के रसूल के ज़रिए नाज़िल हुआ था• दोनो 3:86 और 3:90 बात करते हैं “कुफ्र करना ईमान लाने के बाद” की•*

95. कहो, “**अल्लाह** ने सच ऐलान किया है: तुम्हें इब्राहीम के मज़हब — एक खुदा की इबादत पर चलना चाहिए • वो कभी एक बुतपरस्त न था•”

96. सबसे एहम इबादतगाह जो लोगों के लिए कायम किया गया वो है बक्का* में; एक रहमत भरी रौशनाई सारे लोगों के लिए•

97. उसमें हैं इब्राहीम का मकाम: साफ निशानियाँ• जो कोई उसमें दाखिल होता है उसे हिफाज़त से रास्ता दिया जाना चाहिए• यह फर्ज़ है लोगों पर **अल्लाह** कि तरफ कि वो इस इबादतगाह को हज अदा करें, जब वो उसकी हैसियत रखें• जहाँ तक वो जो हैं काफिर, **अल्लाह** को किसी कि ज़रूरत नहीं•

98. कहो, "ऐ आसमानी किताब की पैरवी करने वालों, तुम क्यों इन **अल्लाह** कि आयतों को ठुकराते हो, जबकि **अल्लाह** गवाह हैं हर चीज़ के जो तुम करते हो?"

99. कहो, "ऐ आसमानी किताब की पैरवी करने वालों, तुम क्यों पलटते हो **अल्लाह** कि राह से उन्हें जो ईमान लाना चाहते हैं, और उसे बिगाड़ने कि तलाश में रहते हो, इसके बावजूद के तुम गवाह हो?" **अल्लाह** कभी बेखबर नहीं किसी चीज़ से तुम करते हो•

100. ऐ ईमानवालों, अगर तुम ऐतबा करो उनमें से कुछ का जिन्होंने आसमानी किताब पाई है, वो तुम्हें लौटा देंगे, ईमान लाने के बाद, काफिरों में•

101. तुम कैसे कुफ्र कर सकते हो, जबकि ये **अल्लाह** कि आयतें तुम्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं, और उनका रसूल है तुम्हारे बीच में? जो कोई **अल्लाह** को मज़बूती से पकड़े रहे हिदायत किए जायेंगे सही राह में•

102. ऐ ईमानवालों तुम, तुम्हें चाहिए **अल्लाह** को ध्यान में रखो जैसा उन्हें ध्यान में रखना चाहिए, और न मरो सिवाए फरमानबरदारों जैसा•

ईमानवालों में होती है एकाई

103. तुम्हें चाहिए **अल्लाह** कि रस्सी को मज़बूती से पकड़े रहो, तुम सारे, और कभी भी न बटो• याद करो **अल्लाह** कि नियामतों को तुमपर — तुम दुश्मनें हुआ करते थे और उन्होंने तुम्हारे दिलों को जोड़ा• उनकी रहमत से, तुम बन गये भाई• तुम एक आग के घड़े के किनारे पर थे, और उन्होंने तुम्हें बचाया उससे• **अल्लाह** इसतरह उनकी आयतों को तुम्हारे लिए समझाते हैं, ताके तुम हिदायतयाफ्ता हो सको•

104. होने दो तुम में से एक कौम जो दावत दे अच्छाई की तरफ, करें वकालत नेककारी की, और रोकें बुराई• ये हैं फतेहयाब•

105. उनकी तरह न हो जो बट गए और बहेस किया, इसके बावजूद के उन्हें साफ सबूतें दिये गये थे• इसलिए के इन्होंने पा लिया है एक खौफनाक आज़ाब•

106. वो दिन आयेगा जब कुछ चेहरे (*खुशी से*) रौशन होंगे, जबके दूसरे चेहरे होंगे (*गम से*) सियाह• जहाँ तक उनका जिनके चेहरे होंगे सियाह, उनसे पूछा जायेगा, "क्या तुमने कुफ्र नहीं किया ईमान लाने के बाद? इसलिए, झेलो आज़ाब तुम्हारे कुफ्र के लिए•"

107. जहाँ तक के उनका जिनके चेहरे रौशन होंगे, वो जश्न मनायेंगे **अल्लाह** कि रहमत में; वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए•

108. ये हैं **अल्लाह** कि आयतें; हम तुम्हें पढ़कर सुनाते हैं, सच्चाई से• **अल्लाह** लोगों के लिए कोई तकलीफ नहीं चाहते•

**3:96 ये है एक म-इनिशियल वाली सुरेह, और यह खास हिज्जे "मक्का" का "बक्का" जैसा सबब बनता है "म" के वाके होने का कुरान के रियाज़ी कोड के मुताबिक• "मक्का" का आम हिज्जे बढ़ा देता "म" वाके होने कि गिनती (अपेन्डिक्स एक)•*

109. **अल्लाह** की है सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर, और सारे मामलात **अल्लाह** कि तरफ से काबू किए गए हैं•

सबसे अच्छी कौम

110. तुम हो सबसे अच्छी कौम जो उठाई गई है अब तक लोगों के दरमियान: तुम वकालत करते हो नेककारी की और रोकते हो बुराई, और तुम रखते हो ईमान **अल्लाह** में• अगर आसमानी किताब पर चलने वाले ईमान लाएं, वो उनके लिए बेहतर होगा• उनमें से कुछ ज़रूर ईमान रखते हैं, लेकिन उनमें से ज़्यादातर हैं गुनाहगार•

111. वो तुम्हें कभी नुकसान नहीं पहुँचा सकते, तुम्हारी तौहीन करने से ज़्यादा• अगर वो तुमसे लड़ें, वो पलट जायेंगे और भाग जायेंगे• वो कभी नहीं जीत सकते•

112. उनको रूसवा किया जाना चाहिए जब भी तुम उनका सामना करो, जब तक वो **अल्लाह** के वादे को बरकरार न रखें, इसके अलावा तुम्हारे साथ किए गए उनके अमन वाले मुहायदों को• उन्होंने **अल्लाह** का कहर मोल लिया है, और, इस वजह से, सौंपे गये हैं ज़िल्लत को• ये इस वजह से कि उन्होंने **अल्लाह** कि आयतों को ठुकराया, और नाहक नबियों को कत्ल किया• ये इस वजह से कि उन्होंने नाफरमानी की और हद से निकल गए•

नेक यहूदीयें और ईसाईयें

113. वो सारे एक जैसे नहीं हैं; आसमानी किताब पर चलने वालों के बीच, उनमें हैं नेककार• वो **अल्लाह** कि आयतों की तिलावत करते हैं रात के दरमियान, और वो गिरते हैं सजदे में•

114. वो रखते हैं ईमान **अल्लाह** और आखरी दिन में, वो वकालत करते हैं नेककारी की और रोकते हैं बुराई, और जल्दबाज़ी करते हैं नेक कामों को करने के लिए• ये हैं नेककार•

115. कोई अच्छा वो करें नहीं जाएगा बगैर सिला के• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ नेककारों से•

116. जिस किसी ने कुफ किया कभी मदद नहीं किया जायेगा उनके पैसे या उनकी औलाद से **अल्लाह** के खिलाफ• उन्होंने जहन्नम पाया है, जिसमें वो रहेंगे हमेशा के लिए•

117. उनकी कामयाबियों कि मिसाल इस ज़िंदगी में है जैसे एक तूफानी हवा जो उन लोगों कि फसल को मारती है जिन्होंने अपनी रूहों पर गलत किया, और उसे साफ कर देती है• **अल्लाह** ने कभी उनपर गलत नहीं किया; ये तो वो हैं जिन्होंने अपने आप पर गलत किया•

मुनाफिकीनों से दोस्ती न करो

118. ऐ ईमानवालों तुम, बाहर वालों से दोस्ती न करो जो थमते नहीं इस ख्वाहिश से कि तुम्हें नुकसान हो; वो यहाँ तक के तुम्हें तकलीफ झेलते हुए देखना चाहते हैं• नफरत उनके मुहों से बहती है और वो जो अपने सीनों में छिपाते हैं है कहीं बुरा• हम इसतरह आयतों को वाज़े करते हैं तुम्हारे लिए, अगर तुम समझो•

119. यहाँ तुम उन्हें चाहते हो, जबके वो तुम्हें नहीं चाहते, और तुम सारी आसमानी किताब में ईमान रखते हो• जब वो तुमसे मिलते हैं वो कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं,” लेकिन जैसे ही वो निकलते हैं, वो अपनी उंगलियों को चबाते हैं गुस्से से तुम्हारी तरफ• कहो, “मरो तुम्हारे गुस्से में•” **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ अंदरूनी ख्यालों से•

120. जब कोई चीज़ अच्छी आती है तुम्हारी तरफ उन्हें तकलीफ होती है, और जब तुम्हारे साथ कुछ बुरा होता है वो जश्न मनाते हैं• अगर तुम साबित कदमी से पेश आओ, और नेककारी बरकरार रखो, उनके मनसूबे तुम्हें कभी तकलीफ नहीं पहुँचायेंगे• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से वो करते हैं•

बदर कि जंग

121. याद करो के तुम (*मुहम्मद*) थे तुम्हारे लोगों के बीच जब तुम निकले ईमानवालों को उनके जंग के ठिकानों को सौंपने के लिए• **अल्लाह** हैं सुनने वाले सब कुछ जानने वाले•

122. तुम में से दो जमातें तकरीबन नाकामयाब हुई, लेकिन **अल्लाह** थे उनके रब• ईमानवालों को **अल्लाह** में भरोसा रखना चाहिए •

123. अल्लाह ने तुम्हें फतह अता किया है बदर पर, तुम्हारी कमज़ोरी के बावजूद• इसलिए, तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए, अपना शुक्र ज़ाहिर करने के लिए•

अल्लाह के फरिश्ते
मदद करते हैं ईमानवालों की

124. तुमने कहा ईमानवालों से, “क्या ये काफी नहीं के तुम्हारे रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फरिश्तों से, नीचे भेजे हुए?”

125. वाकई, अगर तुम साबित कदमी से पेश आओ और नेककारी बरकरार रखो, फिर वो तुमपर हमला कर दें अचानक, तुम्हारे रब तुम्हारी मदद अच्छी तरह सिखाए हुए, पाँच हज़ार फरिश्तों से* करेंगे•

126. **अल्लाह** तुम्हें इसतरह इत्तेला करते हैं, ताके तुम्हें खुशखबरी दें, और तुम्हारे दिलों को दिलासा देने के

लिए• फतेह आती है सिर्फ **अल्लाह** कि तरफ से, कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

127. वो इसतरह फनाह करते हैं कुछ काफिरों को, या उन्हें बेअसर कर देते हैं; वो हमेशा खत्म होते हैं हारे हुए•

128. ये तुमपर नहीं है; वो उन्हें हो सकता है माफ करें, या हो सकता है वो उन्हें सज़ा दें उनके खताओं के लिए•

129. **अल्लाह** की है सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में• वो माफ करते हैं जिसकिसी को वो चाहें, और देते हैं सज़ा जिसकिसी को वो चाहें• **अल्लाह** हैं माफ करनेवाले, सबसे रहीम•

*रिबा मना किया गया है**

130. ऐ ईमानवालो, तुम्हें चाहिए रिबा न लो, ज़रप किया गया बार बार• **अल्लाह** को ध्यान में रखो, ताके तुम कामयाब हो सको•

131. खबरदार रहो जहन्नम कि आग से जो काफिरों का इंतेज़ार कर रही है•

132. तुम्हें चाहिए अताअत करो **अल्लाह** और रसूल की, ताके तुम रहमत हासिल कर सको•

सिफतें नेककारों की

133. तुम्हें दौड़ना चाहिए शौकी से तुम्हारे रब कि तरफ से मगफरत कि तरफ और जन्नत जिसकी चौड़ाई घेरे में लेती है आसमानों और ज़मीन को; वो नेककरों का इंतेज़ार कर रही है,

134. जो अच्छे वक्तों में खैरात देते हैं, साथ साथ बुरे वक्तों में भी• वो हैं गुस्से को दबाने वाले, और लोगों को माफ करने वाले• **अल्लाह** चाहते हैं खैरात करने वालों को•

135. अगर वो गुनाह में पड़ जाते हैं या अपनी रूहों पर गलत करते हैं, वो **अल्लाह** को याद करते हैं और अपनी गुनाहों के लिए माफी मांगते हैं — और कौन गुनाहों को माफ करता है सिवाए **अल्लाह** के — और वो गुनाहों में जारी नहीं रहते, जानबूझकर•

136. उनका सिला है मगफरत उनके रब कि तरफ से, और बागें बहती हुई नहरों के साथ; वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए• क्या एक मुबारक इनाम है आमिलों के लिए!

नेककारों के लिए फतेह

137. मिसालें तय कर दी गयीं हैं तुम्हारे लिए माज़ी में; घूमो ज़मीन पर और ध्यान दो न मानने वालों के नतीजों को•

**3:124-125 तीस मुखतलिफ नम्बरें बयान किए गये हैं कुरान में• उनका टोटल आता है 162146, 19x8534• यह मुताबिक हैं कुरान के रियाज़ी मौजज़े के साथ (देखें अपेन्डिक्स एक)•*

**3:130 ब्याज बैंक के डिपॉज़िटों पर और ब्याज लोन्स पर किए गए लागू हैं हलाल अगर वो (5-15%) से ज़्यादा न हों• बैंकें सरमायाकारी करते हैं और उनके फायदे डिपॉज़िटरों को पहुँचाये जाते हैं• चूँकि सारी जमातें हैं खुश और किसी पर ज़ुल्म नहीं किया जाता है, ये बिल्कुल हलाल हैं ब्याज लेना बैंक से (देखें 2:275)•*

138. यह एक ऐलान है लोगों के लिए, और एक हिदायत और रौशनाई नेककारों के लिए•

139. तुम्हें डगमगाना नहीं चाहिए, नाहीं तुम्हें गमगीन होना चाहिए, इसलिए के तुम हो आखिरकार जीतनेवाले, अगर तुम हो ईमानवाले •

140. अगर तुम तकलीफ झेलते हो, दुश्मन भी वैसी ही तकलीफ झेलता है• हम लोगों के दरमियान जीत और शिकस्त के दिनों को बारी बारी करते हैं• **अल्लाह** इसतरह परखते हैं सच्चे ईमानवालों को, और बक्शते हैं तुम में से कुछ को शहादत से• **अल्लाह** नापसंद करते हैं नाइंसाफी•

141. **अल्लाह** इसतरह मज़बूत करते हैं जो ईमान रखते हैं और रूसवा करते हैं काफिरों को•

हमारे दावे जाँचे जाने चाहिएं

142. क्या तुम उम्मीद करते हो जन्नत में दाखिल होने का **अल्लाह** बगैर उन्हें परखे तुम में से जो जद्दो जहेद करते हैं, और बगैर जाँचे उन्हें जो साबित कदम हैं?

143. तुम तमन्ना करते थे मौत कि इससे पहले के तुम उसका सामना करते• अब तुमने उसका सामना किया है, बिल्कुल तुम्हारे नज़रों के सामने•

144. मुहम्मद एक रसूल से ज़्यादा कुछ न था उससे पहले रसूलों जैसा• अगर वो मर जाए या मार दिया जाए, क्या तुम पलट जाओगे अपनी एड़ियों के बल पर? जो कोई पलट जाये अपनी ऐड़ियों के बल पर, **अल्लाह** को ठेस नहीं पहुँचाता ज़रा सा भी• **अल्लाह** इनामों को देते हैं उन्हें जो हैं कद्रदान•

मौत का वक्त पहले से मुकर्रर

145. कोई नहीं मरता सिवाए **अल्लाह** कि मरज़ी के, एक मुकर्रर किए गये वक्त पर• जो कोई तलाश करे इस दुनिया की झूठी शानों को, हम देते हैं उसे उसमें से, और जो कोई तलाश करे अगली ज़िंदगी के इनामों को, हम बक्शते हैं उसे उसमें से• हम इनाम देते हैं उन्हें जो हैं कद्रदान •

146. कई एक नबी के पास थे ख़ुदा वाले लोग जो लड़े उसके साथ, दवाव के तहेत बिना डगमगाए **अल्लाह** के वास्ते, वो हिचकिचाए नहीं नाही हौसला पस्त हुए• **अल्लाह** साबित कदम रहने वालों को पसंद करते हैं•

147. उनका सिर्फ कहना था, “हमारे रब, हमें माफ करिए हमारे गुनाहों, और हमारी खताओं को, हमें साबित कदम रखिए, और हमें अता करिए कफिरों पर फतेह•”

148. इसवजह से, **अल्लाह** ने अता किया उनको इस दुनिया के इनामों को, और बेहतर इनामें अगली ज़िंदगी की• **अल्लाह** अच्छा काम करने वालों को पसंद करते हैं•

149. ऐ ईमानवालो, अगर तुम ऐतबा करो उनकी जो हैं काफिर, वो पलट देंगे तुम्हें तुम्हारे एड़ियों के बल पर, फिर तुम खत्म होगे हारनेवाले•

150. सिर्फ **अल्लाह** हैं तुम्हारे रब और मालिक, और वो हैं सबसे अच्छे मदद करने वाले•

अल्लाह काबू करते हैं तुम्हारे दुश्मनों को

151. हम दहशत डालेंगे उनके दिलों में जिन्होंने कुफ्र किया, इसलिए के उन्होंने बेबस बुतों को **अल्लाह** के साथ कायम किया• उनका मुकद्दर जहन्नम है; क्या अफसोसनाक ठिकाना है खतावारों के लिए!

उहुद की लड़ाई

152. **अल्लाह** ने तुमसे किया उनका वादा पूरा, और तुमने उन्हें शिकस्त दिया उनकी मरज़ी से• लेकिन तुम फिर डगमगाये, आपस में बहेस किया, और नाफरमानी कि इसके बाद के उन्होंने दिखाया (*जीत*) जिसकी तुमने तमन्ना की थी• लेकिन फिर, तुम में से कुछ फिर गए इस दुनिया की माले गनीमत कि वजह से, जबके दूसरे सही तौर से फिकरमंद थे अगली ज़िंदगी के बारे में• फिर तुम्हें जाँचने के लिए उन्होंने मोड़ दिया तुम्हें उनसे• उन्होंने तुम्हें माफ कर दिया• **अल्लाह** बरसाते हैं ईमानवालों पर उनका करम•

153. याद करो कि तुम दौड़े (*माले गनीमत के पीछे*), किसी कि तरफ तवज्जो न देते हुए, यहाँ तक कि जब रसूल तुम्हें पीछे से पुकार रहा था• इस वजह से, उन्होंने एक गमज़दा हालात को दूसरे से बदल दिया, ताके तुम्हें मलाल न हो किसी चीज़ पर जो तुमसे छुट गया, या दर्द हो किसी तकलीफ पर जो तुमने झेला है• **अल्लाह** हैं वाकिफ हर चीज़ से जो तुम करते हो•

मौत का लम्हा पहले से मुकर्रर

154. धक्के के बाद, उन्होंने भेजा नीचे तुम पर सुकून वाली नींद जिसने ठंडा किया तुममें से कुछ को• तुममें से दूसरे थे खुदर्गज़ी से खुद के लिए परेशान• उन्होंने पनाह दिया **अल्लाह** के बारे में उन सोचों को जो सही नहीं थे — वैसी सोचें जैसा उन्होंने गफलत के दिनो में पनाह दिया था• इसतरह, उन्होंने कहा, “क्या हम पर कुछ है?” कहो, “सारी चीज़ें हैं **अल्लाह** पर•” उन्होंने तुमसे ज़ाहिर नहीं किया वो जो उन्होंने अपने अंदर छिपाया था• उन्होंने कहा, “अगर ये हम पर होता, हम में से कोई भी मारा नहीं जाता इस जंग में•” कहो, “अगर तुम अपने घरों में

रहते, जिनका मुकद्दर होता मारा जाना वो रेंगते हुए अपने मौत के बिस्तरों पर पहुँच जाते•" **अल्लाह** इसतरह तुम्हें आज़माईश में डालते हैं ताके तुम्हारी सच्ची फितरतों को बाहर ला सकें, और जाँचने के लिए वो जो तुम्हारे दिलों में है• **अल्लाह** पूरी तरह वाकिफ हैं अंदरूनी सोचों से•

155. यकीनन, तुम में से जो पीछे पलट गए उस दिन जब दो फौजें टकराई शैतान कि तरफ से धोखा दिए गए हैं• ये झलकाता है उनके कुछ (*बुरे*) आमालों को जो उन्होंने किया था• **अल्लाह** ने उन्हें माफ किया है• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, हलीम•

156. ऐ ईमानवालो, उनकी तरह न हो जाओ जिन्होंने कुफ्र किया और कहा अपने करीबी साथियों के बारे में जिन्होंने सफर किया या जंग के लिए तैयारी की, "अगर वो हमारे साथ रहते, वो नहीं मरते या मारे जाते•" **अल्लाह** बनाते हैं इसे एक गम का सबब उनके दिलों में• **अल्लाह** काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत• **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ों के जो तुम करते हो•

157. चाहे तुम मारे जाओ या मर जाओ **अल्लाह** के वास्ते, मगफरत **अल्लाह** कि तरफ से, और रहमत कहीं बेहतर है किसी चीज़ से जो वो जमा करते हैं•

158. चाहे तुम मर जाओ या मारे जाओ, तुम **अल्लाह** के सामने हाज़िर किए जाओगे•

रसूल कि नर्म दिली

159. ये रहमत थी **अल्लाह** कि तरफ से कि तु उनकी तरफ नर्म दिल हो गया• अगर तु सख्त या संगदिल होता, वो तुझे छोड़ जाते• इसलिए, तुझे उन्हें माफ करना और उनके लिए माफी मांगना, और उनसे मशवरा करना चाहिए• जब तु एक फैसला करे, पूरा कर अपने मनसूबे को, और **अल्लाह** में भरोसा रख• **अल्लाह** पसंद करते हैं उको जो उनमें* भरोसा रखते हैं•

160. अगर **अल्लाह** तुम्हारी मदद करें, कोई तुम्हें शिकस्त नहीं दे सकता• और अगर वो तुम्हें छोड़ दें, कौन है जो तुम्हारी मदद कर सकता है? **अल्लाह** में ईमानवालों को भरोसा रखना चाहिए•

कोई भी कानून के ऊपर नहीं

161. यहाँ तक के नबी भी अपने हक से ज़्यादा माले जंग से नहीं ले सकता है• जो कोई अपने हक के हिस्से से ज़्यादा लेता है उसका हिसाब देना होगा हश्र के दिन• वही वक्त है जब हर एक रूह को बदला दिया जाता है उसके लिए जो कुछ उसने कमाया, बगैर ज़रा सी भी नाइंसाफी के•

**3:159 यु•एस•ए• कि करेंसी ही सिर्फ करेंसी है जिसपर ये लिखा है; "हम अल्लाह में भरोसा रखते हैं•" यह हकीकत है कि अमेरिकन डॉलर सबसे मज़बूत करेंसी रही है दुनिया में, और मयार जिस से दूसरी सारी करेंसियाँ नापी जाती हैं•*

162. क्या वो जो तलाश करता है **अल्लाह** कि खुशनूदगी बराबर है उसके जो **अल्लाह** कि तरफ से कहेर मोल लेता है और उसका मुकद्दर है जहन्नम, सबसे अफसोसनाक ठिकाना?

163. वो यकीनन हासिल करते हैं मुख्तलिफ दरजे **अल्लाह** के पास• **अल्लाह** हैं देखने वाले हर चीज़ के जो वो करते हैं•

164. **अल्लाह** ने बक्शा है ईमानवालों को उठाते हुए उनके बीच उन्हीं में से एक रसूल, उनके लिए उनकी आयतों को पढ़ने, और उनको पाक करने, और उन्हें सिखाने के लिए आसमनी किताब और हिकमत• इससे पहले, वो थे पूरी तरह गुमराह•

165. अब के जब तुमने धक्का झेला है, और इसके बावजूद तुमने दुगना ज़ख्म दिया है (*तुम्हारे दुश्मन पर*), तुमने कहा, "हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ?" कहो, "यह तुम्हारे खुद के आमालों का नतीजा है•" **अल्लाह** हैं कादिरेमुतलक•

166. जो तकलीफ तुम्हें हुई उस दिन जब दो फौजें टकराई थी **अल्लाह** की मरज़ी के मुताबिक, और परखने के लिए ईमानवालों को•

167. और बेनकाब करने के लिए मुनाफिकीन को जिन्हें बोला गया था, "आओ **अल्लाह** कि राह में लड़ो, या शिरकत करो•" उन्होंने कहा, "अगर हमे पता होता कैसे लड़ा जाता है, हम देते तुम्हारा साथ•" वो थे कुफ्र के ज़्यादा करीब बनिसबत वो थे अकीदे के• उन्होंने कहा अपने मुँहों से जो नहीं था उनके दिलों में• **अल्लाह** जानते हैं जो वो छिपाते हैं•

168. उन्होंने कहा अपने करीबी साथियों के बारे में, जैसे वो पीछे रहे, "अगर वो हमारी मानते, वो मारे नहीं जाते•" कहो, "तो रोको अपने खुद की मौत को, अगर तुम हो सच्चे•"

*नेककार असल में मरते नहीं**

169. न सोचो के वो जो मारे गए हैं **अल्लाह** के वास्ते मर गए हैं; वो अपने रब के पास ज़िंदा हैं, उनकी नियामतों का लुत्फ़ उठाते हुए•

170. वो जश्न मना रहे हैं **अल्लाह** के करम में, और उनके पास खुशखबरी है उनके साथियों के लिए जो उनके साथ नहीं मरे, के उनके पास कुछ नहीं है डरने के लिए, नाहीं वो होंगे गमज़दा•

171. उनके पास है खुशखबरियाँ **अल्लाह** कि रहमतों और करम की, और ये कि **अल्लाह** कभी नाकामयाब नहीं होते ईमानवालों को इनाम देने से•

172. उनके लिए जो जवाब देते हैं **अल्लाह** और रसूल का, इज़ारसानी जो वो झेलते हैं उसके बावजूद, और बरकरार रखते हैं उनके अच्छे कामों को, और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, एक बड़ा इनाम•

173. जब लोग उनसे कहते हैं, "लोग जमा हुए हैं तुम्हारे खिलाफ; तुम्हें उनसे डरना चाहिए," यह सिर्फ उनके अकीदों को पुख्ता करता है, और वो कहते हैं, "**अल्लाह** हैं हमारे लिए काफी; वो हैं सबसे अच्छे हिफाज़त करने वाले•"

174. वो मुस्तहिक हुए हैं **अल्लाह** कि रहमतों और करम के• उन्हें कभी भी कोई तकलीफ नहीं छूती है, इसलिए के उन्होंने **अल्लाह** कि रज़ामंदी हासिल कर लिया है• **अल्लाह** हैं मालिक लामहदूद करम के•

खौफ: शैतान का औज़ार

175. ये शैतान का निज़ाम है के खौफ को अपने बाशिंदों में हौले से डाले• उनसे न डरो और बलिके मुझसे डरो, अगर तुम हो ईमानवाले•

176. गमज़दा न हो उनकी वजह से जो जल्दबाज़ी करते हैं कुफ्र करने के लिए• वो कभी भी **अल्लाह** को ठेस नहीं पहुँचाते ज़रा सा भी• बलिके, **अल्लाह** ने तय किया है कि उनका कोई हिस्सा न होगा अगली ज़िंदगी में• उन्होंने पा लिया है एक खौफनाक आज़ाब•

**3:169 हम कुरान से सीखते हैं कि नेककार असल में मरते नहीं; वो सिर्फ उनकी दुनियावी जिस्मों को छोड़ देते हैं और जाते हैं सीधे उसी जन्नत को जहाँ आदम और हव्वा एक बार रहे थे (2:154, 8:24, 16:32, 22:58, 44:56 & 36:26-27; अपेन्डिक्स 17 भी देखें)•*

177. जो कोई कुफ्र चुनते हैं, अकीदे के बजाए, ठेस नहीं पहुँचाते **अल्लाह** को ज़रा सा भी; उन्होंने पा लिया है एक दर्दनाक आज़ाब•

178. न सोचने दो काफिरों को कि हम उनको बढ़ावा देते हैं उनके खुद के अच्छे के लिए• हम सिर्फ बढ़ावा देते हैं उन्हें उनकी गुनाहगारी को साबित करने के लिए• उन्होंने पा लिया है एक रूसवाई वाला आज़ाब•

179. **अल्लाह** नहीं छोड़ते ईमानवालों को जैसे तुम हो, बिना फरक किए बुरे को अच्छे से• नाहीं **अल्लाह** इत्तेला करते हैं तुम्हें मुस्तकबिल का, लेकिन **अल्लाह** इनायत करते हैं ऐसा इल्म उसपर जिसे वो चुन लें उनके रसूलों में से•* इसलिए, तुम्हें **अल्लाह** और उनके रसूलों में ईमान रखना चाहिए• अगर तुम ईमान रखो और एक नेक ज़िंदगी बसर करो, तुम पाओगे एक बड़ा मुआवज़ा•

180. न सोचने दो उनको जो रोके रखते हैं और जमा करते हैं **अल्लाह** कि नियामतों को कि यह अच्छा है उनके लिए; ये बुरा है उनके लिए• इसलिए के वो अपने ज़खीरे को ढोयेंगे कयामत के दिन उनके गर्दनों के पास• **अल्लाह** हैं आखरी वारिस

आसमानों और ज़मीन के• **अल्लाह** हैं पूरी तरह **वाकिफ** सारी चीज़ से जो तुम करते हो•

इंसान जारी रहते हैं
अल्लाह कि नाफरमानी करने के लिए

181. **अल्लाह** ने सुना है उनकी बातों को जिन्होंने कहा, "**अल्लाह** गरीब है, जबके हम हैं अमीर•" हम ज़ब्त करेंगे सारी चीज़ें जो उन्होंने है कहा, जैसा हमने ज़ब्त किया उनका नाहक कत्ल करना नबियों का, और हम कहेंगे, "झेलो जहन्नम का आज़ाब•

182. "यह अंजाम है तुम्हारे खुद के आमालों का•" **अल्लाह** लोगों कि तरफ कभी नाइंसाफ नहीं•

183. ये वो हैं जिन्होंने कहा, "**अल्लाह** ने हमारे साथ वादा किया है कि हम किसी रसूल में ईमान नहीं लायें, जब तक वो कोई कुरबानी न पेश करे जिसे आग न निगल जाए•" कहो, "मुझ से पहले आयें हैं रसूलें तुम्हारी तरफ साफ सबूतों के साथ, शामिल करते हुए वो जो तुमने अभी तलब किया है• क्यों फिर तुमने उनको कत्ल किया, अगर तुम हो सच्चे?"

184. अगर वो तुम्हें ठुकराएं, तुमसे पहले रसूलों को ठुकराया गया है, इसके बावजूद कि वो सबूतों को, हम्दों को, और मुनव्वर करती आसमानी किताब को लाये•

एक बड़ी फतह

185. हर शक्स मौत चखता है, फिर तुम पाते हो तुम्हारा बदला कयामत के दिन पर• जो कोई बचता है जहन्नम से, बिल्कुल ज़रा सा, और पहुँचता है जन्नत में, हासिल कर लिया है एक बड़ी फतह• इस दुनिया कि ज़िंदगी एक नज़र के धोखे से ज़्यादा कुछ नहीं•

*अटल आज़माईश**

186. तुम यकीनन आज़माए जाओगे, तुम्हारे पैसे और जिंदगियों से, और तुम सुनोगे उनसे जिन्होंने पाई है आसमानी किताब, और बुतपरस्तों कि तरफ से, खूब ज़िल्लत• अगर तुम सबित कदमी से काम लो और नेक जिंदगी बसर करो, यह साबित करेगा तुम्हारे अकीदे कि पुख्तगी को•

**3:179 मुस्तकबिल वाक्ये जैसे दुनिया का खत्म होना एक मिसाल है जिसका इल्म बताया गया अल्लाह के वादे के रसूल को• देखें फुटनोट 72:27•*

**3:186 दाखले के इम्तेहान में कामयाब होने के बाद, साबित हुए सिर्फ अल्लाह कि इबादत करने वाले लुत्फ उठाते हैं एक बेऐब जिंदगी का, अभी और हमेशा के लिए• देखें 10:62, 24:55 और 29:2-3•*

187. **अल्लाह** ने वादा लिया उनसे जिन्होंने किताब पाया: "तुम्हें इसे लोगों के लिए ऐलान करना चाहिए, और इसे कभी न छिपाओ•" लेकिन उन्होंने इसे नज़र अंदाज़ किया अपने पीठो के पीछे, और इसे तिजारत कर दिया एक सस्ते दाम के लिए• क्या एक अफसोसनाक तिजारत•

188. जो कोई शेखी मारे अपने कामों के बारे में, और चाहे कि तारीफ की जाए उसके लिए कुछ चीज़ जो उन्होंने असल में नहीं है किया, नहीं सोचना चाहिए कि वो बच सकते हैं आज़ाब से• उन्होंने पा लिया है दर्दनाक आज़ाब•

189. **अल्लाह** के पास है बादशाहत आसमानों और ज़मीन की• **अल्लाह हैं** कादिरे मुतलक•

जो कोई
अक्ल रखते हैं

190. आसमानों और ज़मीन की पैदाईश में, और दिन और रात के बदलने में, वहाँ हैं निशानियाँ उनके लिए जो अक्ल रखते हैं•

191. वो याद करते हैं **अल्लाह*** को खड़े हुए, बैठ हुए, और उनके करवटों पर, और वो गौर करते हैं आसमानों और ज़मीन की पैदाईश पर: "हमारे रब, आपने बेकार नहीं बनाया यह सब• आपकी हम्द हो• हमें बचाईये दोज़ख के आजाब से•

192. "हमारे रब, जिस किसी को आप दोज़ख रसीद करते हैं वो हैं जिन्हें आपने तर्क कर दिया• ऐसे खतावारों का कोई मददगार नहीं•

193. "हमारे रब, हमने सुना है एक पुकारने वाले को अकीदे कि तरफ पुकारते हुए और ऐलान करते हुए: 'तुम्हें तुम्हारे रब में ईमान रखना चाहिए,' और हम लाए हैं ईमान• हमारे रब, हमारी खताओं को माफ करिए, हमारे गुनाहों को माफ करिए, और हमें मरने दिजिए नेक ईमानवालों कि तरह•

194. "हमारे रब, बरसाईये हमें नियामतों के साथ जिसका आपने वादा किया है हमसे आपके रसूलों के ज़रिए, और हमें तर्क न करिए कयामत के दिन• आप कभी नहीं तोड़ते एक वादा•

अल्लाह
जवाब देते हैं

195. उनके रब ने उन्हें जवाब दिया: "मैं कभी भी ना कामयाब नहीं होता तुम में से किसी भी कामगार को इनाम देने से कोई काम तुम करते हो उसके लिए, चाहे तुम हो मर्द या औरत — तुम हो एक दूसरे के बराबर• इसतरह, जो कोई हिजरत करते हैं, और निकाले जाते हैं उनके घरों से, और तकलीफ दिए जाते हैं मेरी वजह से, और लड़ते हैं और मारे जाते हैं, मैं यकीनन माफ करूंगा उनके गुनाहों को और दाखिल करूंगा उन्हें बहती हुई नहरों के साथ बागों में•" ऐसा है इनाम **अल्लाह** कि तरफ से• **अल्लाह** के पास है असल इनाम•

196. मुतास्सिर न हो काफिरों कि ऊपरी कामयाबी से•

197. वो सिर्फ लुत्फ उठाते हैं आरज़ी तौर पर, फिर खत्म होते हैं दोज़ख में; क्या एक अफसोस नाक मुकद्दर!•

198. जहाँ तक वो जो अपने रब को ध्यान में रखते हैं, वो मुस्तहिक हुए हैं बहती हुई नहरों के साथ बागों के; वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए• ऐसा ठिकाना दिया गया है उनको **अल्लाह** कि तरफ से• जो है **अल्लाह** के पास वो है कहीं बेहतर नेककरों के लिए•

**3:191 तुम्हारा खुदा है कुछ भी या जो कुछ छाए रहे तुम्हारे ज़ेहन पर सबसे ज़्यादा वक्त• सच्चे ईमान वाले वो हैं जो याद रखते हैं अल्लाह को ज़्यादा तर वक्त• देखें 23:84-89 और अपेन्ड़िक्स 27•*

नेक यहूदीयें और इसाईयें

199. यकीनन, कुछ पिछली आसमानी किताबों पर चलने वाले ज़रूर ईमान रखते हैं **अल्लाह** में, और उसमें जो तुझपर नाज़िल किया गया था, और जो उनपर नाज़िल किया गया था• वो **अल्लाह** का एहतराम करते हैं, और वो कभी भी सौदा नहीं करते **अल्लाह** कि आयतों को एक सस्ते दाम के लिए• ये हैं जो पायेंगे उनका सिला उनके रब कि तरफ से• **अल्लाह** हैं सबसे काबिल हिसाब लेने में•

200. ऐ ईमानवालो, तुम साबित कदम रहो, कायम रहो, तुम एक होकर रहो, तुम **अल्लाह** का ध्यान करो, ताके तुम कामयाब हो सको•

****

सुरह 4: औरतें
(अल-निसा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ऐ लोगो, तुम्हारे रब को ध्यान में रखो; जिन्होने तुम्हें एक जान से पैदा किया, और उससे उसका जोड़ा पैदा किया, फिर दोनो से फैलाये कई मर्दे और औरतें• तुम्हें चाहिए **अल्लाह** को ध्यान में रखो, जिनकी तुम कसम खाते हो, और वालिदैन का ख्याल रखो• **अल्लाह** तुमपर नज़र रखे हुए हैं•*

यतीमों का ख्याल

2. तुम्हें चाहिए यतीमों को लौटाओ उनके हक के मिलकियतों को• अच्छे को बुरे से न बदलो, और न हड़पो उनकी मिलकियतों को अपने से मिलाते हुए• यह एक बड़ी नाइंसाफी होगी•

*एक से ज़्यादा शादी कि वजह**

3. अगर तुम्हें यतीमों के लिए बेहतर लगे, तुम उनकी माँओं से शादी कर सकते हो — तुम शादी कर सकते हो दो, तीन, या चार• अगर तुम्हें डर हो के तुम नाइंसाफ न बन जाओ, तब तुम्हें सिर्फ एक से मुतमईन होना चाहिए, या तो जो तुम्हारे पास पहले से है• इसके अलावा, तुम इसतरह मुमकिन है माली तकलीफ से बच जाओ•

4. तुम्हें औरतों को उनके वाजिब महेरों को अदा करना चाहिए, बराबरी से• अगर वो खुद से कोई चीज़ माफ कर दें, फिर तुम उसे कबूल कर सकते हो; वो बिलाहक तुम्हारा है•

5. नाबालिग यतीमों को न लौटाओ उनकी मिलकियतें जो **अल्लाह** ने तुम्हें सौंपी है सरपरस्त जैसा• तुम्हें चाहिए उसमें से उन्हें मुहय्या करो, और उन्हें पहनाओ, और उनके साथ रहम दिली से पेश आओ•

6. तुम्हें यतीमों को आज़माना चाहिए जब वो बालिग हो जाएं• तुम जैसे ही उन्हें काफी हद तक बालिग पाओ, उनकी मिलकियत को उन्हें लौटा दो• तुम फुजूल खर्ची से जल्दी में उसे न हड़पो, इस से पहले के वो बड़े हो जाएं• अमीर सरपरस्त को कुछ भी मुआवज़ा नहीं लेना चाहिए, लेकिन गरीब सरपरस्त मुआवज़ा ले सकता है बराबरी से• जब तुम उनकी मिलकियतें उन्हें दो, तुमहें चाहिए गवाहों को रखो• **अल्लाह** काफी होते हैं हिसाब लेने वाले कि तरह•

औरतों के विरासती हुकूक

7. मर्दो को मिलता है हिस्सा उसमें से जो वालिदैन और रिश्तेदार पीछे छोड़ जाते हैं• औरतों को भी मिलना चाहिए हिस्सा उसमें से जो वालिदैन और रिश्तेदार पीछे छोड़ जाते हैं• चाहे वो छोटा या एक बड़ी विरासत हो, (*औरतों को ज़रूर मिलना चाहिए*) एक साफ साफ हिस्सा•

8. विरासत के बटवारे के वक्त, अगर रिश्तेदारें, यतीमें, और ज़रूरतमंद लोग मौजूद हैं, तुम्हें चाहिए कि उसमें से उन्हें दो, और उनके साथ रहम दिली से पेश आओ•

**4:1 यह दूसरी सबसे लंबी सुरेह है और इसका मज़मून इशारा करता है कि इसका मकसद है औरतों के हुकूक कि हिफाज़त• कोई भी समझ औरतों के हुकूक के हक में होना चाहिए, उनके खिलाफ नहीं•*

**4:3 अपेन्डिक्स 30 देखें एक से ज़्यादा शादी पर तफसीली बहेस के लिए•*

9. जो कोई उनके खुदके बच्चों के बारे में फिकरमंद हैं, ऐसा हो अगर वो उनको पीछे छोड़ जाएं, चाहिए **अल्लाह** को ध्यान में रखे और बराबरी करें•

10. जो कोई यतीमों की मिलकियतों को बेइंसाफी से हड़पते हैं, खाते हैं आग उनके पेटों में, और तकलीफ झेलेंगे जहन्नम में•

*अगर वसीयत न छोड़ी गई हो**

11. **अल्लाह** फरमान करते हैं वसीयत तुम्हारे बच्चों के फायदे के लिए; मर्द पाता है औरत के हिस्से का दुगना•* अगर वारिसें हैं सिर्फ औरते, दो से ज़्यादा, वो पाते हैं दो तिहाई उसमें से जो छोड़ा गया है• अगर सिर्फ एक बेटी बची हो, वो पाती है आधा• मुरदे के हर एक वालिदैने को विरासत का छठा हिस्सा मिलता है, अगर मुरदे ने कोई औलाद छोड़े हैं• अगर उसने कोई औलाद नहीं छोड़े हैं, और उसके वालिदैन हैं सिर्फ वारिसें, माँ पाती है एक तिहाई हिस्सा• अगर उसके भाई बहन हैं, तब माँ पाती है एक छठा हिस्सा• ये सब, कोई वसीयत*

पूरी करने के बाद जो मुरदे ने छोड़ा है, और सारे कर्ज़ों कि अदायगी करने के बाद• जब तुम्हारे वालिदैन और तुम्हारे बच्चों कि बात आती है, तुम नहीं जानते उनमें से कौन वाकई सबसे अच्छा है तुम्हारे लिए और सबसे फायदेमंद• यह है **अल्लाह** का कानून• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

विरासत
जोड़ों के लिए

12. तुम पाते हो आधा वो जो तुम्हारी बिवियाँ पीछे छोड़ जाती हैं, अगर उनको औलाद न थी• अगर उनके औलाद थे, तुम पाते हो एक चौथाई जो वो छोड़ जातीं हैं• ये सब, उनकी कोई छोड़ी गई वसीयत को पूरी करने के बाद, और सारे कर्ज़ों कि अदायगी करने के बाद• वो पाते हैं एक चौथाई उसमें से जो तुम पीछे छोड़ जाओ, अगर तुम्हें औलाद न थी• अगर तुम्हें औलाद थे, वो पाते हैं एक—आठवां हिस्सा उसमें से जो तुम छोड़ जाते हो• ये सब, तुम्हारी कोई छोड़ी गई वसीयत को पूरी करने के बाद, और सारे कर्ज़ों कि अदायगी करने के बाद• अगर मुरदा मर्द या औरत थे अकेले, और छोड़ते हैं दो भाई बहन, मर्द या औरत, उनमें से हर एक को छठा हिस्सा मिलता है विरासत का• अगर वहाँ हैं ज़्यादा भाईयें बहनें, फिर वो बराबरी से एक तिहाई हिस्सा विरासत का बांटते हैं• यह सब, कोई छोड़ी गई वसीयत को पूरी करने के बाद, और सारे कर्ज़ों कि अदायगी करने के बाद• ताके किसी को ठेस न लगे• ये है एक वसीयत फरमान की गई **अल्लाह** कि तरफ से• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, रहीम•

अल्लाह इत्तेला करते हैं
हमें उनके रसूल
के ज़रिए

13. ये हैं **अल्लाह** के कानूनें• जो कोई अताअत करे **अल्लाह** और उनके रसूल की, वो दाखिल करेंगे उन्हें बागों में बहती हुई नहरों के साथ, जिसमें वो रहेंगे हमेशा के लिए• यह है सबसे बड़ी फतेह•

14. जहाँ तक वो जो नाफरमानी करे **अल्लाह** और उनके रसूल की, और खिलाफ वर्ज़ी करे उनके कानूनों की, वो दाखिल करेंगे उन्हें जहन्नम में, जिसमें वो रहेगा हमेशा के लिए• उसने एक शर्म नाक आज़ाब पा लिया है•

**4:11 उमुमन, बेटा ज़िम्मेदार होता है एक कुम्बे के लिए, जबके बेटी को उसका शौहर सम्भालता है• लेकिन, कुरान मशवरा देता है 2:180 में कि वसीयत छोड़ी जानी चाहिए जो मुरदे के मखसूस हलातों के मुवाफिक हो• मिसाल के तौर पर, अगर बेटा अमीर हो और बेटी गरीब, कोई एक वसीयत छोड़ सकता है बेटी को सब कुछ देते हुए, या इतना कि बेटे का दुगना•*

सेहत अलेहदगी

15. जो कोई ज़िना करें तुम्हारी औरतों में से, तुम्हारे पास चाहिए चार गवाहों का होना उनके खिलाफ, तुम में से• अगर वो वाकई गवाही दें, फिर तुम्हें चाहिए ऐसी औरतों को उनके घरों में रखना जब तक वो मर न जाएं, या जब तक **अल्लाह** पैदा न करें उनके लिए निकलने का रास्ता•*

16. जोड़ा जो ज़िना करें सज़ा दिया जाना चाहिए•* अगर वो तौबा और इस्लाह करें, तुम्हें चाहिए उन्हें अकेला छोड़ देना• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

तौबा

17. तौबा कबूल है अल्लाह के पास उनकी तरफ से जो गुनाह में गिर जाएं गफलत कि वजह से, फिर फौरन तौबा करें उसके बाद• **अल्लाह** उन्हें माफ करते हैं• **अल्लाह** हैं सबकुछ जानने वाले सबसे हकीम•

18. तौबा कबूल नहीं है उनकी तरफ से जो गुनाह करते हैं उनकी मौत आने तक, फिर कहते हैं, “अब मैं

तौबा करता हूँ•" नाहीं वो कबूल है उनकी तरफ से जो काफिरों जैसा मरते हैं• इनके लिए, हमने तैयार कर रखा है एक दर्दनाक आज़ाब•

19. ऐ ईमानवालो, ये हलाल नहीं है तुम्हारे लिए वारिस होना उसका जो औरतें पीछे छोड़ जाएं, उनकी मरज़ी के खिलाफ• तुम्हें उनको ज़ोर नहीं देना चाहिए कोई चीज़ वापस करने के लिए जो तुमने उन्हें दिया था, जबतक वो एक सावित ज़िना न करें• तुम्हें चाहिए उनके साथ अच्छे से पेश आओ• अगर तुम उन्हें नापसंद करो, तुम हो सकता है नापसंद करो कोई चीज़ जिसमें **अल्लाह** ने कई अच्छाई रखी है•

औरतों के लिए हिफाज़त

20. अगर तुम चाहते हो दूसरी बिवी ब्याहना, तुम्हारे मौजूदा बिवी के जगह में, और तुमने उनमें से किसी को बहुत दिया था, तुम्हें वापस नहीं लेना चाहिए कोई चीज़ तुमने उन्हें दिया था• क्या तुम लोगे उसे दगाबाज़ी से, किनावरी से, और गुनाहगारी से?

21. तुम उसे कैसे वापस ले सकते हो, इसके बाद के तुम एक दूसरे के करीब रह चुके हो, और उन्होंने तुमसे लिया था एक संजीदा वादा?

वालिद के लिए एहेतराम

22. शादी न करो औरतों से जो पहले ब्याही गयीं थी तुम्हारे वालिदों से — मौजूदा शादियाँ माफ की गई हैं और तोड़ी नहीं जानी चाहिए — इसलिए कि के ये एक बड़ा जुर्म है, और एक नफरतअंगेज़ हरकत•

मुहर्रमात से मुबाश्रत हराम है

23. हराम है तुम्हारे लिए (*शादी में*) तुम्हारी माँयें, तुम्हारी बेटीयाँ, तुम्हारी बहने, तुम्हारे वालिदों कि बहने, तुम्हारी माँओं कि बहने, तुम्हारे भाई कि बेटियाँ, तुम्हारे बहेन कि बेटियाँ, तुम्हारी दुध पिलाने वाली माँयें, लड़कियाँ जिन्होंने उसी औरत से दूध पिया जिससे तुमने पिया, तुम्हारी बिवियों कि माँयें, तुम्हारी बिवियों कि बेटियाँ जिनके साथ तुम सुहाग रात पूरी कर चुके हो — अगर शादी पूरी न हुई हो सुहाग रात से, तुम बेटी से शादी कर सकते हो• इसके अलावा हराम है तुम्हारे लिए औरतें जो ब्याही गई थीं तुम्हारे जिन्सी बेटों से• इसके अलावा, तुम ब्याहे न रहो दो बहनें को एक वक्त में — लेकिन मौजूदा शादियाँ न तोड़ो• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले सबसे रहीम•

**4:15 एक औरत जिसके चार लोग गवाह हुए हों,चार अलग मौकों पर ज़िना कि हरकत में, चार मुखतलिफ साथियों के साथ, लोगों के सहेत के खतरे का नमूना है• ऐसी औरत है एक जरासिमों का ठिकाना, और एक सेहत अलेहदगी उससे माशरे को बचाती है• एक अच्छी मिसाल है निकलने का जो अलेहदा की गई औरत को बचाती है वो है शादी — कोई इरादा कर सकता है उससे शादी करने का, और इसतरह उसकी और माशरे कि हिफाज़त करने का•*

**4:16 गुनाहगारों को लोगों के सामने बेनकाब करना है एक बड़ी रूकावट, जैसा हम देखते हैं 5:38 और 24:2 में•*

आपसी कशिश और महेर ज़रूरी

24. इसके अलावा हराम हैं औरतें जो हैं पहले से शादी शुदा, जबतक वो फरार न हो जाएं उनके काफिर शौहरों से जो हैं जंग में तुम्हारे खिलाफ•* ये हैं **अल्लाह** के हुक्में तुम्हारे लिए• दूसरी सारी किस्मों कि इजाज़त दी गई है तुम्हारे लिए शादी में, वर्शते कि तुम उनके वाजिबी महेरों को अदा करो• तुम्हें तुम्हारे अच्छे इख्लाकों को बरकरार रखना चाहिए, ज़िना न करते हुए• इसतरह, जिस किसी को तुम उनमें से पसंद करो, तुम्हें उनके लिए मुकर्रर किए गए महेर को उन्हें अदा करना चाहिए• तुम गलत नहीं करते आपस में इत्तेफाक करते हुए महेर को मुवाफिक करना• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले सबसे हकीम•

25. तुम में से जो कोई हैसियत नहीं रखता आज़ाद ईमानवाली औरतों से शादी करने का, कर सकते हैं शादी ईमानवाली गुलाम औरतों से• **अल्लाह** सबसे बेहतर जानते हैं तुम्हारे अकीदे के बारे में, और तुम

एक दूसरे के बराबर हो, जहाँ तक अकीदे कि बात है• तुम्हें चाहिए उनके सरपरस्तों से इजाज़त लेना उनसे शादी करने से पहले, और उनके वाजिब महेर को बराबरी से अदा करो• उन्हें नेक इख्लाक को बरकरार रखना चाहिए, न करते हुए ज़िना, या रखते हुए खुफिया यारों को• जब वो आज़ाद कर दी गई हों शादी के ज़रिए, अगर वो ज़िना करें, उनकी सज़ा आधी होनी चाहिए आज़ाद औरतों के बनिसबत•* एक गुलाम से शादी करना आखरी रूजू होना चाहिए उनके लिए जो इंतेज़ार नहीं कर सकते• सब्र करना तुम्हारे लिए बेहतर है• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

26. **अल्लाह** चाहते हैं चीज़ों को समझाना तुम्हारे लिए, और गुज़रे मिसालों के ज़रिए तुम्हें हिदायत देने के लिए, और तुम्हारी मगफरत करने के लिए• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

अल्लाह कि रहमत

27. **अल्लाह** चाहते हैं तुम्हारी मगफरत करना, हाँलाकि जो कोई उनके नफ्सानी ख्वाहिशों के पीछे दौड़ते हैं चाहते हैं कि तुम भटक जाओ एक बड़ी गुमराही•

28. **अल्लाह** तुम्हारे बोझ को हल्का करना चाहते हैं, इसलिए कि इंसान कमज़ोर पैदा किया गया है•

कत्ल, खुदकशी, और
नाजायज़ आमदनियाँ हराम किए गए

29. ऐ ईमानवालो, नाजायज़ तरीकों से एक दूसरे की मिलकियतों को न हड़पो — सिर्फ आपसी काबिलेमंज़ूर सौदों कि इजाज़त दी गई है• तुम्हें चाहिए खुद को कत्ल न करो• **अल्लाह** हैं रहीम तुम्हारी तरफ•

30. जो कोई इन खताओं को करता है, किनावरी से और जानबूझकर, हम उसे जहन्नम रसीद करेंगे• ये करना आसान है **अल्लाह** के लिए •

31. अगर तुम बाज़ रहो बड़े गुनाहो को करने से जो हराम किए गए हैं तुम्हारे लिए, हम तुम्हारे गुनाहों को माफ करेंगे, और तुम्हें दाखला देंगे एक इज्ज़त वाला दाखला•

मर्दों और औरतों को अता किया गया है
यकता खूबियों के साथ

32. तुम्हें **अल्लाह** कि तरफ से एक दूसरों पर इनायत की गयीं खूबियों का हिरसा नहीं करना चाहिए; मर्दे लुत्फ उठाते हैं खास खूबियों का, और औरतें लुत्फ उठातीं हैं खास खुबियों का• तुम **अल्लाह** से इल्तेजा कर सकते हो उनकी रहमत तुमपर बरसाने के लिए• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

अल्लाह कि तरफ से तजवीज़ किए गए
विरासती कानूनों का ऐतराज़ न करो

33. तुममें से हर एक के लिए, हमने तजवीज़ किए हैं वलिदैन और रिश्तेदारों कि तरफ से छोड़े गए विरासत में से हिस्से• इसके अलावा जिनका ताल्लुक है तुमसे शादी के ज़रिए, तुम्हें उनके वाजिब हिस्से को अदा करना चाहिए• **अल्लाह** गवाह रहते हैं सारी चीजों के•

**4:24 अगर ईमानवाली औरतें फरार हो जाएं उनके कुफ करते शौहरों से जो जंग लड़ रहे हैं ईमान वालों के साथ, ज़रूरी नहीं हैं उन्हें तलाक हासिल करना दोबारा शादी करने से पहले• देखें 60:10•*

**4:25 यह कानून साबित करता है कि ज़िना के लिए मुमकिन नहीं सज़ा हो पत्थर मार कर मौत जैसा बताया गया है बिगड़े मुसलमानों के कानूनों में (देखें 24:2)*

*तुम्हारी बिवी को न मारो**

34. मर्दो को औरतों का ज़िम्मेदार बनाया गया है,** और **अल्लाह** ने उन्हें बक्शा है खास खूबियों के साथ, और बनाया उनको रोटी कमाने वाला• नेक औरतें खुशी से इस तरतीब को कबूल करेंगी, चुँकि ये है **अल्लाह** का हुक्म, और उनके शौहरों का एहेतराम करेंगी उनकी गैरमौजूदगी में• अगर तुम औरतों कि तरफ से बगावत महसूस करो, तुम्हें पहले उनसे बात करनी चाहिए, फिर (*तुम इंकारी वाला जज़्बा इस्तेमाल कर सकते जैसे*) उन्हें बिस्तर में र्तक करते हुए, फिर तुम (*आखरी सूरत में*) उन्हें मार सकते हो• अगर वो तुम्हारा कहना मानें, तुम्हें इजाज़त नहीं दी गई है उनके खिलाफ हद को पार करने के लिए• **अल्लाह** हैं सबसे ऊँचे, बुलंद•

शादी का समझौता

35. अगर एक जोड़े को खौफ हो अलग होने का, तुम्हें एक समझौता करनेवाला मुकर्रर करना चाहिए लड़के के कुम्बे से और एक समझौता करनेवाला लड़की के कुम्बे से; अगर वो फैसला करें सुलाह करने का, **अल्लाह** उनकी मदद करेंगे एक दूसरे के साथ होने के लिए• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, हर चीज़ से आगाह•

बड़े हुक्मात

36. तुम्हें सिर्फ **अल्लाह** की इबादत करनी चाहिए — किसी को शरीक न करो उनके साथ• तुम्हें एहेतराम करना चाहिए वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों, गरीब, रिश्तेदार पड़ोसी, गैररिश्तेदार पड़ोसी, करीबी साथी, अंजान मुसाफिर, और तुम्हारे नौकरों का• **अल्लाह** तकब्बूर वाले दिखावों को पसंद नहीं करते•

37. जो कोई कंजूस हैं, नसीहत करते हैं लोगों को कंजूस होने का, और छिपाते हैं वो जो **अल्लाह** ने इनायत किया है उन पर उनकी नियामतों से• हमने काफिरों के लिए एक शर्मनाक आज़ाब तैयार कर रखा है•

38. वो पैसा खैरात करते हैं सिर्फ दिखावे के लिए, जबकि **अल्लाह** और आखरी दिन में कुफ्र करते हुए• अगर किसी का साथी शैतान है, वो है सबसे बुरा साथी•

39. क्यों वो **अल्लाह** और आखरी दिन में ईमान नहीं रखते, और देतें हैं उसमें से जो **अल्लाह** ने उन्हें मुहय्या किया है? **अल्लाह** हैं उनसे पूरी तरह वाकिफ•

खुदाई इंसाफ

40. **अल्लाह** नहीं डालते हैं ज़र्रा बराबर नाइंसाफी• बलिके, वो ज़रप करते हैं इनाम को कई गुना नेक काम के लिए, और अता करते हैं उनकी तरफ से एक बड़ा इनाम•

41. इसतरह, जब *(इंसाफ का)* दिन आयेगा, हम बुलायेंगे एक गवाह को हर एक कौम से, और तुम *(रसूल)* एक गवाह का काम करोगे इन लोगों में से•

***4:34** *अल्लाह मना करते हैं बिवी को मारने से सबसे अच्छा ज़हनी तरीका इस्तेमाल करते हुए• मिसाल के तौर पर, अगर मैं चाहूँ तुम न खरीदो बाज़ार X से, मैं तुम्हें कहूँगा बाज़ार Y से खरीदने को, फिर बाज़ार Z से, फिर, आखरी सूरत में, बाज़ार X से• ये तुम्हें पुर असर तौर पर रोकेगा बाज़ार X से खरीदने के लिए, तुम्हें बगैर रूसवा करते हुए• इसीतरह, अल्लाह मुहय्या करते हैं दूसरी सूरतें बिवी को मारने के अलावा; पहले उसे समझाते हुए, फिर कुछ इंकारी वाले जज़बों को इस्तेमाल में लाते हुए• याद रखें कि इस सुरेह का मौजु है औरतों के हकों कि हिफाज़त करने और औरतों के खिलाफ जारी ज़्यादती रोकने का• कोई भी मायने इस सुरेह कि आयतों के औरतों के हक में होना चाहिए• इस सुरेह का मौजु है "औरतों की हिफाज़त•"*

***4:34** *यह इज़हार सिर्फ बताता हैं कि अल्लाह मुकर्रर कर रहें हैं शौहर को "जहाज़ का कैप्टन" जैसा• शादी एक जहाज़ कि तरह, और कैप्टन उसे चलाता है उसके अफसरों के साथ मशवरा करने के बाद• एक ईमानवाली बिवी आसानी से अल्लाह के मुकर्रर को कबूल करती है, बगैर बगावत के•*

42. उस दिन पर, जिन्होंने कुफ्र किया और नाफरमानी कि रसूल की चाहेंगे कि वो बराबर होते ज़मीन के साथ; वो **अल्लाह** से एक भी कलमा छिपा नहीं पायेंगे•

क्या ज़ाया करती है वज़ू को

43. ऐ ईमानवालो, राबता नमाज़ें *(सलात)* को अदा न करो नशे कि हालत में, ताके तुम्हें मालूम हो कि तुम क्या कह रहे हो• नाहीं शहवती जोश के बाद बगैर नहाए, जब तक तुम रास्ते पर न हो, सफर करते हुए; अगर तुम बिमार हो या सफर कर रहे हो, या तुम्हें पिशाब के ज़रिए या पाखाने के रास्ते से निकला हो *(जैसे गैस)*, या राबता किया हो औरतों से *(शहवती तौर पर)*, और तुम्हें पानी न मिल सके, तुम्हें *तयम्मूम* *(सूखा वज़ू)* करना चाहिए साफ सूखी मिट्टी को छुते हुए, फिर उससे तुम्हारे चेहरों और हाथों को मारते हुए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले गफूर•

44. क्या तुमने ध्यान दिया उनको जिन्होंने पाया आसमानी किताब का एक हिस्सा, और कैसे वो चुनते हैं गुमराही को, और चाहते हैं कि तुम बहेक जाओ राह से?

45. **अल्लाह** सबसे बेहतर जानते हैं कौन हैं तुम्हारे दुश्मनें• **अल्लाह** हैं सिर्फ रब और मालिक• **अल्लाह** हैं सिर्फ मददगार•

46. उनमें से जो हैं यहूदी, कुछ बिगाड़ते हैं लफ्ज़ों को सच के पार, और वो कहते हैं, "हम सुनते हैं, लेकिन हम अताअत नहीं करते," और "तुम्हारे लफ्ज़ें पड़ रहे हैं बहरे कानों पर," और "*राईना** (*हमारे चरवाह बनो*)," जैसे वो उनकी ज़बानों को मरोड़ते हैं मज़हब कि खिल्ली उड़ाने के लिए• अगर उन्होंने कहा होता, "हम सुनते हैं, और हम अताअत करते हैं," और "हम तुम्हें सुनते हैं," और "*उन्ज़ुना* (*हम पर नज़र रखो*)," ये उनके लिए बेहतर होता, और ज़्यादा नेक• बलिके, उन्होंने पा लिया है मलामत **अल्लाह** कि तरफ से उनके कुफ्र कि वजह से• इस वजह से, उनमें से ज़्यादा तर ईमान नहीं ला सकते•

47. ऐ तुम जिसने आसमानी किताब पाई है, तुम्हें चाहिए ईमान लाओ उसमें जो हमने यहाँ नाज़िल किया है, तसदीक देता हुआ जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम दूर कर दें कुछ चेहरों को जिलावतन देते हुए, या सज़ा दें उनको जैसा हमने सज़ा दिया उनको जिन्होंने सब्बाथ कि बेअदबी की• **अल्लाह** का हुक्म होकर रहता है•

न माफ होनेवाला गुनाह

48. **अल्लाह** बुतपरस्ती* माफ नहीं करते, लेकिन वो माफ करते हैं कमतर जुर्मों को जिस किसी के लिए वो चाहें• जो कोई कायम करता है बुतों को **अल्लाह** के साथ, गढ़ लिया है एक खौफनाक जुर्म•

49. क्या तुमने ध्यान दिया हैं उनको जो खुदकी बड़ाई करते हैं? बलिके, **अल्लाह** हैं वाहिद जो बढ़ाते हैं जिस किसी को वो चाहें, बगैर ज़रासी नाइंसाफी के•

50. ध्यान दो वो कैसे झूठ गढ़ते हैं **अल्लाह** के बारे में; क्या एक बड़ा जुर्म है ये!

51. क्या तुमने ध्यान दिया उनको जिन्होंने पाया आसमानी किताब का एक हिस्सा, और कैसे वो ई मान रखते हैं बुतपरस्ती और झूठे अकीदे में, फिर कहते हैं, "काफिरें हैं बेहतर हिदायतयाफ्ता पर ईमानवालों के बनिज़बत?!"

52. ये वो हैं जिन्होंने पाया है **अल्लाह** कि मलामत, और जिस किसी को **अल्लाह** मलामत करें, तुम नहीं पाओगे कोई मददगार उसके लिए•

53. क्या वो एक हिस्सा रखते हैं सल्तनत का? अगर वो रखते, वो लोगों को इतना कि एक दाना बराबर भी नहीं देते•

**4:46 लफ्ज़ "राईना" मरोड़ा गया था कुछ हिब्रू बोलने वाले लोगों कि तरफ से एक गंदा लफ्ज़ सुनाई देने के लिए• देखें 2:104•*
**4:48 बुतपरस्ती माफी के काबिल नहीं है, अगर बरकरार रखी जाती है मौत तक• इससे पहले के मौत आ जाए, कोई कभी भी माफी मांग सकता है किसी भी जुर्म के लिए, शामिल करते हुए बुतपरस्ती (देखें 4:18 & 40:66)•*

54. क्या उन्हें जलन है लोगों से इसलिए के **अल्लाह** ने बरसायें हैं उनपर उनकी रहमतें? हमने इब्राहीम के कुम्बे को आसमानी किताब, और हिकमत अता किया है; हमने अता किया उन्हें एक बड़ा इक्तेदार•

55. उनमें से कुछ ईमान लाए उसमें, और उनमें से कुछ उससे पलट गए; जहन्नम है सिर्फ सही आज़ाब इनके लिए•

मिसाल्या बयान जहन्नम का

56. यकीनन, जो कोई कुफ्र करें हमारी आयतों में, हम रसीद करेंगे उन्हें जहन्नम कि आग को• जब भी उनकी चमड़ियां जलेंगी, हम उन्हें देंगे नई चमड़ियां• इसतरह, वो झेलेंगे लगातार• **अल्लाह** हैं सबसे ताकत वाले, सबसे हकीम•

57. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, हम उन्हें दाखिल करेंगे बागों

में बहती हुई नहरों के साथ; वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए• उनके पास होंगे पाक जोड़े उसमें• हम दाखिल करेंगे उन्हें एक मुसर्रत वाली छांव में•

ईमानदारी और इंसाफ कि वकालत की गई है

58. **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देते हैं वापस करने को कोई भी चीज़ जो लोगों ने तुम्हें सुर्पुद किया है• अगर तुम लोगों के बीच इंसाफ करो, तुम्हें बराबरी से इंसाफ करना चाहिए• वाकई सबसे अच्छा रौशन ख्याल है वो जो **अल्लाह** तजवीज़ करते हैं तुम्हारे लिए• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, देखने वाले•

59. ऐ ईमानवालो, तुम्हें **अल्लाह** कि अताअत करनी चाहिए, और तुम्हें रसूल की अताअत करनी चाहिए, और वो जो हैं तुम में से ज़िम्मेदार• अगर तुम किसी मसले पर बहेस करते हो, तुम्हें चाहिए उसे **अल्लाह** और रसूल के हवाले करना, अगर तुम वाकई **अल्लाह** और आखरी दिन में ईमान रखते हो• यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और मुहय्या करता है तुम्हारे लिए सबसे अच्छा हल•

ईमानवाले या मुनाफिकीन?

60. क्या तुमने ध्यान दिया है उन्हें जो दावा करते हैं कि वो ईमान रखते हैं उसमें जो नाज़िल हुआ है तुझ को, और उसमें जो नाज़िल हुआ था तुझसे पहले, फिर बरकरार रखते हैं अपने बुतों के बेइंसाफ कानूनों को? उन्हें ऐसे कानूनों को ठुकराने का हुक्म दिया गया था• वाकई, ये शैतान कि ख्वाहिश है उन्हें दूर भटकने में रहनुमाई करने के लिए•

61. जब उनसे कहा जाता है, "आओ उसके पास जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया है, और रसूल की तरफ," तुम देखोगे मुनाफिकीन को तुम्हें पूरी तरह नज़र अंदाज करते हुए•

62. कैसा होगा जब एक मुसीबत उनको मारती है, उनके खुद के आमालों कि वजह से? फिर वो तुम्हारे पास आयेंगे और कसम खायेंगे **अल्लाह** की: "हमारे इरादे अच्छे और नेक थे!"

63. **अल्लाह** पूरी तरह वाकिफ हैं उनके सबसे अंदरूनी इरादों से• तुम्हें उनको नज़रअंदाज़ करना, उनको आगाह करना, और उनको अच्छी सलाह देना चाहिए ताके वो अपनी रूहों को बचा सकें•

फरमानबरदारी पर सवाल न करना:
सच्चे ईमानवालों की सिफत

64. हमने नहीं भेजा किसी रसूल को सिवाए **अल्लाह** कि मरज़ी के मुताबिक में अताअत किए जाने के लिए• अगर वो, जब उन्होंने अपनी रूहों पर गलती कि, आते तुम्हारे पास और दुआ करते **अल्लाह** से मगफरत के लिए, और रसूल दुआ करता उनकी मगफरत के लिए, उन्होंने पाया होता **अल्लाह** को माफकरने वाला, सबसे रहीम•

65. वाकई कभी नहीं, तुम्हारे रब कि कसम; वो ईमानवाले नहीं जबतक वो न आएं तुम्हारे पास उनके झगड़ों में इंसाफ करने के लिए, फिर न पाएं किसी किस्म कि हिचकिचाहट उनके दिलों में तुम्हारे इंसाफ को कबूल करने में• उन्हें चाहिए फरमानबरदार होना एक मुकम्मल फरमानबरदारी•

अल्लाह की आज़माईशें कभी भी
मुश्किल नहीं होतीं हैं

66. अगर हमने हुक्म किया होता उनके लिए: "तुम्हें अपनी जानों को कुरबान करना चाहिए," या "छोड़ देना तुम्हारे घरों को," वो उसे नहीं करते, सिवाए उनमें से कुछ के• (*अगर ऐसा एक हुक्म जारी किया भी गया होता,*) अगर वो करते जो उनको करने के लिए हुक्म दिया गया था, वो उनके लिए बेहतर होता, और साबित करता उनके अकीदे कि पख्तगी को•

67. और हमने उनको अता किया होता एक बड़ा इनाम•

68. और हम उनकी हिदायत करते सही राह में•

ईमानवालों की बराबरी

69. जो कोई अताअत करते हैं **अल्लाह** और रसूल कि साथ हैं — नबियों, वलियों, शहीदों, और नेककारों

के जो मुबारक किये गये हैं **अल्लाह** कि तरफ से• ये हैं सबसे अच्छी सोहबत•

70. ऐसी है रहमत अल्लाह कि तरफ से; **अल्लाह** हैं सबसे अच्छे जानने वाले•

71. ऐ ईमानवालो, तुम्हें होशियार रहना चाहिए, और तैयारी करनी चाहिए अकेले, या तैयारी सबके साथ•

72. यकीनन, तुम में ऐसे हैं जो घसीटेंगे उनके पैरों को, फिर, अगर तुम्हें एक धक्का लगता है• वो कहेंगे, "**अल्लाह** ने मुझे बक्शा है कि मैं शहीद नहीं किया गया था उनके साथ•"

73. लेकिन अगर तुम एक रहमत हासिल करते हो **अल्लाह** कि तरफ से, वो कहेंगे, ऐसे जैसे तुम्हारे और उनके दरमियान कोई दोस्ती का रिश्ता न था, "काश मैं उनके साथ होता, ताके मैं हिस्सा लेता ऐसी एक बड़ी फतेह में•"

74. जो कोई आसानी से लड़ते हैं **अल्लाह** कि राह में हैं वो जो छोड़ देते हैं इस दुनिया को आखरत के बदले में• जो कोई लड़ते हैं **अल्लाह** कि राह में, फिर मारे जाते हैं, या फतेह हासिल करते हैं, हम यकीनन उसे अता करेंगे एक बड़ा इनाम•

ईमानवाले होते हैं बेखौफ

75. तुम्हें क्यों नहीं लड़ना चाहिए **अल्लाह** कि राह में जब कमज़ोर मर्दे, औरतें और बच्चे इल्तेजा कर रहे हैं: "हमारे रब, बचाईये हमें ऐसी कौम से जिसके लोग ज़ालिम हैं, और आप रहें हमारे रब और मालिक•"

76. जो कोई ईमानवाले हैं लड़ रहे हैं **अल्लाह** के वास्ते, जबके जो कोई कुफ्र करते हैं लड़ रहे हैं जुल्म के वास्ते• इसलिए, तुम्हें शैतान के साथियों से लड़ना चाहिए; शैतान कि ताकत है सिफर•

77. क्या तुमने ध्यान दिया है उन्हें जिन्हें कहा गया था, "तुम्हें लड़ना नहीं है; तुम्हें है सिर्फ राबता नमाजों (*सलात*) को अदा करना और ज़रूरी खैरात (*ज़कात*) देना," फिर, जब जंग मुकर्रर किया गया था उनके लिए, वो डरे लोगों से ऐसे जैसे डरे **अल्लाह** से, या कहीं ज़्यादा? उन्होंने कहा, "हमारे रब, आपने क्यों ये जंग लादा हमपर? अगर सिर्फ आप हमें मोहलत दें थोड़ी देर के लिए!" कहो, "इस दुनिया की चीज़े हैं सिफर, जबके अगली ज़िंदगी कहीं बेहतर है नेककारों के लिए, और तुम कभी नहीं झेलते ज़रा सी भी नाइंसाफी•"

*सारी चीजों के करने वाले हैं अल्लाह**

78. तुम जहाँ भी हो, मौत आकर तुम्हें पकड़ लेगी, अगर तुम ज़बरदस्त किलों में रहो तब भी• जब कुछ अच्छा होता है उनके साथ, वो कहते हैं, "ये **अल्लाह** कि तरफ से है," और जब कुछ बुरी चीज़ तकलीफ देती है उन्हें, वो तुम्हें कसूरवार ठहराते हैं• कहो, "सारी चीज़े आती हैं **अल्लाह** कि तरफ से•" क्यों ये लोग तकरीबन सारी चीज़ो को गलत समझते हैं?

कोई भी बुरी चीज़ नहीं आती अल्लाह कि तरफ से

79. कोई भी चीज़ अच्छी जो होती है तुम्हारे साथ है **अल्लाह** कि तरफ से, और कुछ भी चीज़ जो बुरी होती है तुम्हारे साथ है तुम्हारी तरफ से• हमने भेजा है तुम्हें एक रसूल जैसा लोगों कि तरफ,* और **अल्लाह** काफी होते हैं गवाह जैसे•

80. जो कोई रसूल कि अताअत करता है अताअत कर रहा है **अल्लाह** की॰ जहाँ तक वो जो पलट जाएं, हमने नहीं भेजा तुम्हें उनका सरपरस्त जैसा॰

81. वो ताबेदारी का एहेद करते हैं, लेकिन जैसे ही वो तुझे छोड़ जाते हैं, उनमें से कुछ पनाह देते हैं इरादों को जो खिलाफ है उसके जो वो कहते हैं॰ **अल्लाह** ज़ब्त करते हैं उनके अंदरूनी इरादों को॰ तुम्हें उनको नज़र अंदाज़ करना चाहिए, और रखो तुम्हारे भरोसे को **अल्लाह** में॰ **अल्लाह** काफी होते हैं एक जैसे॰

खुदाई मुसन्निफ होने का सबूत

82. क्यों वो कुरान को गौरसे नहीं पढ़ते? अगर ये **अल्लाह** के अलावा किसी और कि तरफ से होता, वो पाते इसमें कई इखतिलाफात॰*

शैतान कि अफवाओं से बचो

83. जब एक अफवाह जो अम्न को असर करती है आती है उनके पास, वो उसे फैलाते हैं॰ अगर उन्होंने हवाले किया होता उसे रसूल को, और उनको जो उनके दरमियान ज़िम्मेदार हैं, जो कोई समझते इन मसलों को इत्तेला देते उन्हें॰ अगर **अल्लाह** कि रहमत न होती तुम्हारी तरफ, और उनका करम, तुम शैतान के पीछे हो लेते, सिवाए कुछ के॰

84. तुम्हें **अल्लाह** के वासते लड़ना चाहिए; तुम ज़िम्मेदार हो सिर्फ तुम्हारी खुदकी रूह के लिए, और नसीहत करो ईमानवालों को ऐसा ही करने का॰ जो कोई कुफ्र करते हैं **अल्लाह** ज़ाया करेंगे उनकी ताकत को॰ **अल्लाह** हैं कहीं ज़्यादा ताकतवर, और कहीं ज़्यादा असरदार॰

ज़िम्मेदारी

85. जो कोई एक अच्छे काम कि शिफाअत करता है पाता है एक हिस्सा उसमें से, और जोकोई शिफाअत करता है बुरे काम का, झेलता है एक हिस्सा उसमें से॰ **अल्लाह** सारी चीज़ो को काबू करते हैं॰

तुम्हें खुश इख्लाक होना चाहिए

86. जब मुखातिब किया जाए एक खुशआमदी से॰ तुम्हें चाहिए जवाब देना एक बेहतर खुशआमदी से या कम से कम एक बराबरी वाले से॰ **अल्लाह** सारी चीज़ों का हिसाब लेते हैं॰

87. **अल्लाह** कोई खुदा नहीं सिवाए उनके॰ वो यकीनन हाज़िर करेंगे तुम्हें हश्र के दिन— जो है अटल दिन॰ किसका बयान ज़्यादा है ज़्यादा सच्चा **अल्लाह** से?

**4:78 बुरी चीज़ें हमारे खुद के आमालों के नतीजे हैं (42:30, 64:11), चुँकी सारी चीज़ों के करने वाले हैं अल्लाह (8:17)॰ अल्लाह ने आग को पैदा किया हमारी खिदमत के लिए, लेकिन आप फैसला कर सकते हैं अपनी उंगली को उसमें डालने का॰ हम इस तरह अपने आप को तकलीफ पहुँचाते हैं॰ ये अल्लाह का कानून है कि अगर आप अपनी उंगली को आग में डालते हैं, वो तकलीफ देती है॰*

**4:79 मुहम्मद को नबुवत का कोई सबूत नहीं दिया गया था॰ इसलिए जुमला है "अल्लाह काफी होते हैं गवाह जैसे" (29:51-52)॰ "मुहम्मद" का जिमेटरिकल वेल्यु है 92, और 92+79=171=19x9॰*

**4:82 हाँलाकि कुरान जिहालत के ज़माने में नाज़िल हुआ था, तुम नहीं पा सकते इसमें कोई खुराफात; एक और सबूत खुदाई मुसन्निफ होने का (देखें तारर्रूफ और अपेन्डिक्स एक)॰*

कैसे बरताव करना चाहिए
मुनाफिकीन के साथ

88. तुम्हें अपने आप को दो फिरकों में क्यों तकसीम करना चाहिए (*तुम्हारे बीच*) मुनाफिकीन के मुताल्लिक? **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने उनकी मलामत की है उनके खुदके रवय्ये कि वजह से॰ क्या तुम हिदायत करना चाहते हो उनको जो **अल्लाह** कि तरफ से गुमराह कर दिए गए हैं? जिस किसी को **अल्लाह** गुमराह करते हैं, तुम कभी नहीं पा सकते एक रास्ता उन्हें हिदायत करने का॰

89. वो चाहते हैं तुम कुफ्र करो जैसा उन्होंने कुफ्र किया है, फिर तुम हो जाओ बराबर॰ उन्हें दोस्तों जैसा न लो, जबतक वो तुम्हारे साथ **अल्लाह** कि राह में

जंग कि तैयारी न करें• अगर वो तुम्हारे खिलाफ पलट जाएं, तुम्हें उनसे लड़ना चाहिए, और तुम उन्हें कत्ल कर सकते हो जब तुम उनका सामना करो जंग में• तुम्हें उन्हें दोस्तों, या साथियों जैसा कबूल नहीं करना चाहिए•*

90. माफ किए गए हैं वो जो शामिल होते हैं उन लोगों के साथ जिनसे तुमने एक अमन वाला मुहायदा दस्तखत किया है, और वो जो आते हैं तुम्हारे पास इरादा करते हुए तुमसे न लड़ने का, नाहीं उनके रिश्तेदारों से लड़ने का• अगर **अल्लाह** चाहते, वो इजाज़त देते उन्हें तुम्हारे खिलाफ लड़ने का• इसलिए, अगर वो तुम्हें अकेला छोड़ दें, बाज़ रहें तुमसे लड़ने से, और पेश करें तुम्हें अमन, तब **अल्लाह** तुम्हें बहाना नहीं देते उनसे लड़ने का•

91. तुम पाओगे दूसरों को जो इरादा रखते हैं तुम्हारे साथ अमन का, और उनके लोगों के साथ भी• हाँलाकि, जैसे ही जंग छिड़ती है, वो तुम्हारे खिलाफ लड़ते हैं• जब तक ये लोग तुम्हें अकेला न छोड़ दें, पेश न करें अमन, और बंद न करें तुमसे लड़ना, तुम उनसे लड़ सकते हो जब तुम उनका सामना करो• इनके खिलाफ, हम तुम्हें देते हैं साफ इक्तेदार•

तुम्हें कत्ल नहीं करना चाहिए

92. कोई ईमानवाला किसी दूसरे ईमानवाले को कत्ल न करे, जबतक वो एक हादसा न हो• अगर कोई कत्ल करे एक ईमानवाले को हादसे से, उसे कफ्फारा अदा करना चाहिए एक ईमानवाले गुलाम को आज़ाद करते हुए, और अदा करते हुए एक मुआवज़ा मकतूल के कुम्बे को, जबतक वो माफ न करदें ऐसे मुआवज़े को एक सदके के तौर पर• अगर मकतूल था उन लोगों में से जो तुमसे जंग लड़ रहे हैं, चुँकी वो एक ईमानवाला था, तुम्हें कफ्फारा अदा करना चाहिए एक ईमानवाले गुलाम को आज़ाद करते हुए• अगर वो उन लोगों में से था जिनके साथ तुमने एक अमनवाला मुहायदा दस्तखत किया है, तुम्हें मुआवज़ा अदा करने के अलावा एक ईमानवाले गुलाम को आज़ाद करना चाहिए• अगर तुम न पा सको* एक गुलाम आज़ाद करने के लिए, तुम्हें लगातार दो महीने रोज़े रखते हुए कफ्फारा अदा करना चाहिए, ताके **अल्लाह** कि तरफ से माफ कर दिए जाओ• **अल्लाह** हैं जाननेवाले, सबसे हकीम•

एक नाकाबिले माफ जुर्म

93. जो कोई कत्ल करे एक ईमानवाले को जानबूझकर, उसका आज़ाब है जहन्नम, जिसमें वो रहेगा हमेशा के लिए, **अल्लाह** उससे गुस्सा हैं, और उसकी मलामत करते हैं, और तैयार कर रखा है उसके लिए एक खौफनाक आज़ाब•

94. ऐ ईमानवालो, अगर तुम वार करो **अल्लाह** कि राह में, तुम्हें मुकम्मल यकीन होना चाहिए• न कहो उससे जो पेश करता है तुम्हें अमन, "तुम एक ईमानवाले नहीं हो," इस दुनिया कि माले गनीमतों को तलाश करते हुए• इसलिए कि **अल्लाह** हैं मालिक लामहदूद गनीमतों के• याद रखो कि तुम उनकी तरह हुआ करते थे, और **अल्लाह** ने तुम्हें बक्शा• इसलिए, तुम्हें मुकम्मल तौर पर यकीन होना चाहिए (*इससे पहले के तुम वार करो*)• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो तुम करते हो•

**4:89 बुनियादी कानून जो काबू करते हैं सारी लड़ाई बयान किए गये हैं 60:8-9 में*

**4:92 चुँकी गुलामी वजूद में नहीं है, मुजरिम को लगातार दो महीने रोज़े रखकर कफ्फारा अदा करना चाहिए•*

जद्दोजहेद करने वालों के लिए ऊँचे दरजे

95. बराबर नहीं हैं काहिल ईमानवालों के दरमियान जो माज़ूर नहीं हैं, और वो जो जद्दोजहेद करते हैं **अल्लाह** कि राह में उनके पैसे और उनके जिंदगियों से• **अल्लाह** बुलंद करते हैं जद्दोजहेद करने वालों को उनके पैसे और उनकी जिंदगियों के साथ काहिल के ऊपर• दोनों के लिए, **अल्लाह** वादा करते हैं निजात, लेकिन **अल्लाह** बुलंद करते हैं जद्दोजहेद करने वालों को काहिल के ऊपर साथ एक बड़े इनाम के•

96. ऊँचे दरजे आते हैं उनकी तरफ से, इसके अलावा मगफरत और रहमत• **अल्लाह** हैं माफकरने वाले, सबसे रहीम•

मलामत की गई बेपरवाही

97. वो जिनकी रूहें फरिश्तों के ज़रिए खत्म की जाती हैं, उस हालत में जब वो उनकी रूहों को गलत कर रहे हैं, फरिश्ते उनसे पूछेंगे, "क्या माजरा था तुम्हारे साथ?" वो कहेंगे, "हम पर जुल्म किया गया था ज़मीन पर•" वो कहेंगे, "क्या **अल्लाह** की ज़मीन काफी बड़ी नहीं थी तुम्हारे हिजरत करने के लिए उसमें?" इनके लिए, आखरी ठिकाना है जहन्म, और एक अफसोस नाक मुकद्दर•

98. माफ किए गए हैं कमज़ोर मर्दे, औरतें, और बच्चे जो ताकत नहीं रखते, नाहीं ज़रिया पता लगाने का बाहर निकलने के लिए•

99. हो सकता है ये माफ किए जायें **अल्लाह** कि तरफ से• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, गफूर•

100. जो कोई हिजरत करे **अल्लाह** कि राह में पायेगा ज़मीन पर बड़ी नियामतें और दौलतमंदी• जो कोई उसके घर को छोड़ देता है, हिजरत करते हुए **अल्लाह** और उनके रसूल कि तरफ, फिर मौत उसे आकर पकड़ लेती है, उसका इनाम महफूज़ है **अल्लाह** के पास• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

101. जब तुम सफर करो, जंग के दरमियान, तुम गलती नहीं करते तुम्हारी रावता नमाज़ों (*सलात*) को छोटा करते हुए, अगर तुम डरो कि हो सकता है काफिरें तुमपर हमला करदें• यकीनन, काफिरें हैं तुम्हारे संगीन दुश्मन•

जंग के
एहतियात

102. जब तुम उनके साथ हो, और इमामत करो रावता नमाज़ (*सलात*) की उनके लिए, तुम में से कुछ को पहरेदारी करने दो; उन्हें उनके हत्यारों को थामने दो, और उन्हें तुम्हारे पीछे खड़े रहने दो जब तुम सजदा करते हो• फिर, दूसरी जमात जो पढ़ी नहीं है लेने दो उनकी बारी तुम्हारे साथ पढ़ने की, जबके दूसरे पहरेदारी करते रहें और उनके हत्यारों को थामें रहें• वो जो कुफ्र करते हैं चाहते हैं तुम्हें तुम्हारे हत्यारों और तुम्हारे औज़ारों को नज़रअंदाज़ करते हुए, ताके तुमपर हमला करें एक बार और हमेशा के लिए• तुम गलत नहीं करते, तुम्हारे हत्यारों को नीचे रखते हुए, अगर तुम रोके गए हो बारिश या जख्म के ज़रिये, बर्शते के तुम चौकन्ने रहो• **अल्लाह** ने काफिरों के लिए तैयार कर रखा है एक शर्मनाक आज़ाब•

रावता नमाज़ें

103. जब तुम पूरी कर लो तुम्हारी रावता नमाज़ (*सलात*), तुम्हें **अल्लाह** को याद करना चाहिए खड़े हुए, बैठे हुए, या नीचे लेटे हुए•* जब जंग खत्म हो जाये, तुम्हें रावता नमाज़ों (*सलात*) को अदा करना चाहिए; रावता नमाज़ें (*सलात*) मुकर्रर की गई हैं ईमानवालों के लिए मखसूस वक्तों पर•

**4:103 तुम्हारा खुदा है कुछ भी या जो कुछ छाए रहे तुम्हारे ज़हन पर ज़्यादातर वक्त दिन के• अल्लाह कि बादशाहत में शामिल होने के लिए, और उनका करम और हिफाज़त का लुत्फ उठाने के लिए, कुरान ताकीद करता है हमें अल्लाह को "हमेशा" याद रखने का (2:152 और 200, 3:191, 33:41-42)• ये बड़ी हकीकत समझाती है कई ऐलान करती आयतों को कि "ज़्यादातर" वो जो अल्लाह में ईमान रखते हैं जा रहें हैं जहन्नम को (12:106, 23:84-89, 29:61-63, 31:25, 39:38, 43:87)• देखें फुटनोट 3:191 और अपेन्डिक्स 27•*

104. न डगमगाओ दुश्मन का पीछा करने में• अगर तुम चोट खाते हो, वो भी चोट खाते हैं• लेकिन, तुम उम्मीद करते हो **अल्लाह** से जिसकी वो कभी उम्मीद नहीं करते• **अल्लाह** हैं सब जानने वाले, सबसे हकीम•

105. हमने भेजा है नीचे तुम्हारी तरफ आसमानी किताब, सच्चाई से, लोगों के दरमियान इंसाफ करने के लिए जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिखाया है उसके मुताबिक• तुम्हें गद्दारों का तरफदार नहीं होना चाहिए•

106. तुम्हें मगफरत के लिए **अल्लाह** से इल्तेजा करनी चाहिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

खतावारों की हिमायत न करो

107. बहेस न करो उनकी तरफ से जिन्होंने उनकी खुदकी रूहों पर गलत किया; **अल्लाह** किसी गद्दार, मुजरिम को नहीं चाहते•

108. वो छिपाते हैं लोगों से, और परवाह नहीं करते **अल्लाह** से छिपाने का, जबकि वो उनके साथ हैं जब वो पनाह देते हैं सोचों को जिसे वो नापसंद करते हैं• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो वो करते हैं•

तुम उनकी मदद नहीं करते
"अच्छा" बनते हुए

109. यहाँ हो तुम उनकी तरफ से बहेस करते हुए इस दुनिया में; कौन बहेस करेगा उनकी तरफ से **अल्लाह** के साथ हश्र के दिन? कौन बनेगा उनका वकील?

110. जोकोई गुनाह करता है, या उसकी रूह पर गलत करता है, फिर **अल्लाह** से इल्तेजा करता है मगफरत के लिए, पायेगा **अल्लाह** को माफ करने वाले, सबसे रहीम•

111. जोकोई एक गुनाह कमाता है, कमाता है नुकसान उसकी खुदकी रूह के लिए• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले सबसे हकीम•

112. जोकोई एक गुनाह कमाता है, फिर उसके मुताल्लिक एक मासूम शक्स पर इल्ज़ाम लगाता है, किया है एक बेअदबी और एक बड़ा जुर्म•

113. अगर वो तुम्हारी तरफ **अल्लाह** के करम के लिए न होता, और उनकी रहमत, उनमें से कुछ तुम्हें बहका देते• वो सिर्फ बहकाते हैं अपने आपको, और वो तुम्हें कभी ज़रासी भी तकलीफ नहीं दे सकते• **अल्लाह** ने भेजा है तुम्हारी तरफ नीचे आसमानी किताब और हिकमत, और उन्होंने तुम्हें सिखाया है वो जो तुम कभी नहीं जानते थे• वाकई, रही है तुमपर **अल्लाह** कि रहमत बड़ी•

114. कुछ भी अच्छा नहीं है उनके निजी इज़्तेमाओं के बारे में, सिवाए उनके जो वकालत करते हैं खैरात, या नेक कामों के लिए, या लोगों के दरमियान अमन बनाने का• जो कोई ऐसा करता है, **अल्लाह** के तालिमों के जवाब में, हम अता करेंगे उसे एक बड़ा इनाम•

115. जहाँ तक वो जो मुखालफत करता है रसूल की, इसके बाद कि हिदायत बता दी गई है उसको, और चलता है ईमानवालों के अलावा किसी और राह पर, हम उसका रूख करेंगे उस तरफ जो उसने चुना है, और देंगे उसे जहन्नम को; क्या अफसोसनाक मुकद्दर!

न माफ होने वाल गुनाह

116. **अल्लाह** बुतपरस्ती माफ नहीं करते (*अगर बरकरार रखी जाती है मौत तक*),* और वो माफ करते हैं छोटे जुर्मों को उनके लिए जिस किसी को वो चाहें• जोकोई बुत बनाए **अल्लाह** के अलावा किसी बुत को वहेक गया है बड़ी गुमराही•

117. यहाँ तक के वो ज़नाना खुदाओं को पूजते हैं उनके साथ; दरअसल, वो सिर्फ एक बागी शैतान को पूजते हैं•

118. **अल्लाह** ने उसकी मलामत की है, और उसने कहा, "मैं ज़रूर भरती करूंगा एक यकीनी हिस्सा आपकी इबादत करने वालों का•*

**4:116 एक सादा मायने बुतपरस्ती का: मानना कि कोई चीज़ तुम्हारी मदद कर सकती है अल्लाह के अलावा•*

**4:118 ज़्यादातर अल्लाह में ईमान रखने वाले गिरते हैं बुतपरस्ती में (12:106)•*

119. "मैं उनको बहकाऊंगा, मैं उनको लुभाऊंगा, मैं उनको हुक्म दूंगा (*हराम करने के लिए कुछ गोश्तों को खाने से*) निशान करते हुए मवेशी जानवरों के कानों को, मैं हुक्म दूंगा उनको **अल्लाह** कि खल्क को विगाड़ने के लिए•" जो कोई कबूल करता है शैतान को एक रब जैसा, **अल्लाह** के बजाए, पा लिया है एक बड़ा नुकसान•

120. वो उनसे वादे करता है और उनको लुभाता है; जो वादे करता है शैतान वो धोखे से ज़्यादा कुछ नहीं•

121. इन्होंने पा लिया है जहन्नम उनके आखरी ठिकाने जैसा, और कभी बच नहीं सकते उससे•

122. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, हम दाखिल करेंगे उन्हें बागों में बहती हुई नहरों के साथ, जहाँ वो रहेंगे हमेशा के लिए• ऐसा सच्चा वादा है **अल्लाह** का• किसकी बातें ज़्यादा सच्ची है **अल्लाह** से?

कानून

123. ये मुताविक नहीं है तुम्हारी ख्वाहिशों, या आसमानी किताब के लोगों की ख्वाहिशों के: जो कोई गुनाह करता है चुकाता है उसके लिए, और नहीं पायेगा कोई मददगार या तरफदार **अल्लाह** के खिलाफ•

124. जहाँ तक वो जो एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, मर्द या औरत, ईमान रखते हुए, वो दाखिल होते हैं जन्नत में; बगैर ज़रासी भी नाइंसाफी के•

इब्राहीम:
*पहले रसूल इस्लाम के**

125. कौन है बेहतर हिदायतयाफ्ता उसके मज़हब में उससे जो है पूरी तरह फरमानबरदारी करता **अल्लाह** की, बसर करता है एक नेक ज़िंदगी, इब्राहीम के अकीदे के मुताविक: एक खुदा कि इबादत? **अल्लाह** ने इब्राहीम को चुना है एक अज़ीज दोस्त जैसा•

126. **अल्लाह** हैं मालिक सारी चीज़ों के आसमानों और ज़मीन में• सारी चीज़ें पूरी तरह काबू में है **अल्लाह** के•

127. वो औरतों के मुताल्लिक तुमसे मशवरा करते हैं: कहो, "**अल्लाह** समझाते हैं तुम्हें उनके मुताल्लिक, जैसा सुनाया गया है तुम्हारे लिए आसमानी किताब में• तुम्हें यतीम लड़कियों के हकों को दुरूस्त करना चाहिए जिनको तुम धोखा देते हो उनके हक के महेरों में से जब तुम उनसे शादी का इरादा करते हो: तुम्हें उनका फायदा नहीं उठाना चाहिए• यतीम लड़कों के हकों कि भी हिफाज़त की जानी चाहिये इसी तरह• तुम्हें यतीमों के साथ बराबरी से पेश आना चाहिए• जो कुछ अच्छा तुम करो, **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ उससे•"

तलाक की नाहौसला अफज़ाई

128. अगर एक औरत महसूस करे उसके शौहर कि तरफ से ज़्यादती या लापरवाही, जोड़े को अपने इख्तेलाफात को सुलाह करने कि कोशिश करनी चाहिए, इसलिए के सुलाह करना है उनके लिए सबसे अच्छा• खुदर्गज़ी है एक इंसानी सिफत, और अगर तुम अच्छा करो और एक नेक ज़िंदगी बसर करो, **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें जो तुम करते हो•

*कसरत अज़दवाज कि ना हौसलाअफज़ाई**

129. तुम कभी भी एक से ज़्यादा विवी के साथ बरावर नहीं हो सकते बरताव करने में, चाहे कितनी ही ठोस कोशिश तुम कर लो• इसलिए, इतना एक तरफा न हो जैसे उनमें से एक को लटकता हुआ छोड़ दो (*नाहीं शादी का लुत्फ उठाते हुए, न छोडते हुए किसी और से शादी करने के लिए*)• अगर तुम सही करो ऐसी हालत को और बरकरार रखो नेककारी, **अल्लाह** हैं माफकरने वाले, सबसे रहीम•

130. अगर जोड़ा फैसला करे ज़रूर अलग होने का, **अल्लाह** मुहय्या करेंगे उनमें से हर एक के लिए उनकी नियामतों से• **अल्लाह** हैं सखी, सबसे हकीम•

**4:125 आदम से लेकर सारे रसूलों ने नसीहत किया है एक और वही मज़हब• इब्राहीम थे पहले रसूल मज़हब नाम "इस्लाम" के (22:78, अपेन्डिक्स 26)• "इस्लाम" एक नाम नहीं है, मगर बलिके एक बयान जिसके मायने है "फरमानबरदारी"•*
**4:129 देखें अपेन्डिक्स 30, नाम दिया गया "कसरत अज़दवाज•"*

131. सारी चीज़े **अल्लाह** की हैं आसमानों और ज़मीन में, और हमने ताकीद किया है उनको जिन्होंने तुमसे पहले आसमानी किताब पाई है, और तुमपर ताकीद की है, ताके तुम **अल्लाह** का एहतराम करो• अगर तुम न मानो, तो **अल्लाह** की हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में• **अल्लाह** को कोई ज़रूरत नहीं है, काबिले तारीफ•

132. सारी चीज़े **अल्लाह** की हैं आसमानों और ज़मीन में, और **अल्लाह** हैं सिर्फ हिफाज़त करने वाले•

133. अगर वो चाहें, वो तुम्हें फनाह कर सकते हैं, ऐ लोगों, और तबदील कर दें दूसरों को तुम्हारी जगह में• बेशक **अल्लाह** हैं काबिल ऐसा करने के लिए•

134. जो कोई तलाश करता है इस दुनिया की चीज़ों को पता होना चाहिए कि **अल्लाह** मालिक हैं दोनों इस दुनिया और अगली ज़िंदगी की चीज़ों के• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, देखने वाले•

तुम्हें झूठी गवाही
नहीं देनी चाहिए

135. ऐईमान वालो, तुम्हें पूरी तरह बराबर होना चाहिए, और **अल्लाह** को ध्यान में रखो, जब तुम गवाहों जैसा काम करो, यहाँ तक के खुद, या तुम्हारे वालिदैन, या तुम्हारे रिश्तेदारों के खिलाफ• चाहे मुल ज़िम अमीर हो या गरीब, **अल्लाह** दोनों का ख्याल रखते हैं• इसलिए, एक तरफा न हो तुम्हारे ज़ाती ख्वाहिशों कि वजह से• अगर तुम फिर जाओ या नज़र अंदाज़ करो (*इस हुक्म को*), फिर **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो तुम करते हो•

136. ऐ ईमानवालो, तुम्हें **अल्लाह** और उनके रसूल में ईमान रखना चाहिए, और आसमानी किताब जो उन्होंने नाज़िल की है उनके रसूल के ज़रिये, और आसमानी किताब जो उन्होंने नाज़िल की है उससे पहले• जो कोई**अल्लाह** में, उनके फरिश्तों, और उनकी आसमानी किताबों, और उनके रसूलों, और आखरी दिन को मानने से इन्कार करे, वाकई बहेक गया है बड़ी गुमराही•

137. यकीनन, जो कोई ईमान लाये, फिर कुफ्र करे, फिर ईमान लाये, फिर कुफ्र करे, फिर डूब जाये गहरे कुफ्र में, **अल्लाह** उन्हें माफ नहीं करेंगे, नाहीं वो हिदायत देंगे उन्हें किसी राह में•

138. इत्तेला दो मुनाफिकीन को के उन्होंने पाया है दर्दनाक आज़ाब•

139. ये वो हैं जो जोड़ते हैं अपने आप को काफिरों के साथ बजाए ईमानवालों के• क्या वो तलाश कर रहे हैं अज़मत उनके साथ? सारी अज़मत सिर्फ **अल्लाह** के पास है•

140. उन्होंने आगाह किया है तुम्हें आसमानी किताब में कि: अगर तुम **अल्लाह** कि आयतों का माज़ाक और खिल्ली उड़ता सुनो, तुम्हें उनके साथ नहीं बैठना चाहिए, जबतक वो दूसरे मौजू पर मुबतिला न हो• वरना, तुम होंगे मुजरिम जिस तरह वो हैं• **अल्लाह** जमा करेंगे मुनाफिकीन और काफिरों को एक साथ जहन्नम में•

मुनाफिकीन

141. वो तुम्हें देखते और इंतेज़ार करते हैं; अगर तुम हासिल करो फतेह **अल्लाह** कि तरफ से, वो कहते हैं (*तुम से*), "क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे?" लेकिन अगर काफिरें एक मौका पायें, वो कहते हैं (*उनसे*), "क्या हम तुम्हारी तरफ नहीं थे, और हिफाज़त की तुम्हारी ईमानवालों से?" **अल्लाह** फैसला करेंगे तुम्हारे दरमियान हश्र के दिन पर• **अल्लाह** कभी इजाज़त नहीं देंगे काफिरों को ईमानवालों पर मुसल्लत होने का•

142. मुनाफिकीन सोचते हैं कि वो **अल्लाह** को धोखा दे रहे हैं, लेकिन वो हैं वाहिद जो उनकी रहनुमाई करते हैं• जब वो उठते हैं राबता नमाज़ (*सलात*) के लिए, वो उठते हैं सुस्ती से• वो इसलिए कि वो दिखावा करते हैं लोगों के सामने, और कभी कभार ही वो **अल्लाह** के बारे में सोचते हैं•

143. वो बीच में डगमगाते हैं, न होते हुए इस जमात के, नाहीं उस जमात के• जिस किसी को **अल्लाह** बहका दें, तुम कभी नहीं पा सकते एक रास्ता उनको हिदायत देने के लिए•

144. ऐ ईमानवालो, तुम्हें चाहिए न जोड़ो अपने आपको काफिरों के साथ, बजाए ईमानवालों के• क्या तुम **अल्लाह** को एक साफ सबूत मुहय्या करना चाहते हो तुम्हारे खिलाफ?

वो समझते हैं कि वो हैं ईमानवाले

145. मुनाफिकीन हवाले किए जायेंगे जहन्नम कि सबसे निचले घड़े को• और तुम पाओगे कोई मदद करने वाला नहीं उनके लिए•

146. सिर्फ वो जो करते हैं तौबा, इस्लाह, पकड़े रहते हैं मज़बूती से **अल्लाह** को, और मुंतखब करते हैं अपने मज़हब को पूरी तरह सिर्फ **अल्लाह** के लिए, गिने जायेंगे ईमानवालों के साथ• **अल्लाह** बक्शेंगे ईमानवालों को एक बड़े इनाम के साथ•

147. **अल्लाह** क्या पायेंगे तुम्हें सज़ा देते हुए, अगर तुम बन जाओ तारीफ करने वाले और ईमान रखने वाले? **अल्लाह** हैं तारीफ करने वाले, सब कुछ जानने वाले•

बुरी बोली इस्तेमाल न करो

148. **अल्लाह** बुरी बोली का बोलना पसंद नहीं करते, जबतक सुलूक न किया गया हो किसी का बड़ी नाइंसाफी के साथ• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, जानने वाले•

149. अगर तुम नेककारी का काम करो — चाहे ऐलान किया गया या छिपाया गया — या माफ करो एक खता, **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सारी चीज़ो कि ताकत रखने वाले•

तुम्हें कोई फर्क
नहीं करना चाहिए
अल्लाह के रसूलों के दरमियान

150. जो कोई कुफ्र करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूलों में, और तलाश करते हैं फर्क करना **अल्लाह** और उनके रसूलों के बीच, और कहते हैं, "हम ईमान रखते हैं कुछ में और ठुकराते हैं कुछ," और इरादा रखते हैं एक बीच वाली राह में चलने का;

151. ये हैं असल काफिरें• हमने तैयार कर रखा है एक शर्मनाक आज़ाब काफिरों के लिए•

152. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं **अल्लाह** और उनके रसूलों में, और नहीं करते हैं फर्क उनके बीच, वो अता करेंगे उनको उनके इनाम• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

इस्राईल से सबक

153. आसमानी किताब के लोग दावा करते हैं तुमसे नीचे लाने का उनके लिए एक किताब आसमान से! उन्होंने पूछा है मूसा से उससे ज़्यादा के लिए, कहते हुए, "दिखाओ हमें **अल्लाह**, जिस्मानी तौर पर•" इसलिए, बिजली ने उनको मारा, उनकी ढिटाई कि वजह से• इसके अलावा, सारे मौजज़ो के बाद जो उन्होंने देखे थे, उन्होंने बछड़े कि इबादत की• फिर भी, हमने माफ किया ये सब• हमने मदद की मूसा की बड़े मौजज़ों के साथ•

154. और हमने उठाया किया कोहे तूर को उनके ऊपर, जब हमने उनका वादा लिया• और हमने उनसे कहा, "दाखिल हो दहलीज़ में खाकसारी से•" और हमने उनसे कहा, "न तोड़ो सब्बाथ को•" वाकई, हमने लिया उनसे एक संजीदा वादा•

155. (*उन्होंने पाया मलामत*) उनके वादे को तोड़ने के लिए, ठुकराते हुए **अल्लाह** कि आयतों को, कत्ल करते हुए नबियों को नाइंसाफी से, और कहने के लिए "हमारे ज़हनों में नहीं आता!" हकीकत में, **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने उनके ज़हनों को बंद कर दिया है, उनके कुफ्र कि वजह से, इसलिए वो नाकामयाब होते हैं ईमान लाने से, सिवाए कुछ के•

156. (*उनकी मलामत की गई है*) कुफ्र करने के लिए और मरयम के बारे में एक बड़ा झूठ बोलने के लिए•

*ईसा के "जिस्म" को सूली पर चढ़ाते हुए**

157. और दावा करने के लिए कि उन्होंने कत्ल किया मसीहा, ईसा, मरयम के बेटे, **अल्लाह** के रसूल को• असल में, उन्होंने उसे कभी कत्ल नहीं किया, उन्होंने उसे कभी सूली पर नहीं चढ़ाया — उनको समझने दिया गया था कि उन्होंने किया• सारे फिरके जो बहेस कर रहे हैं इस मसले में हैं पूरे शक में इस मसले के मुताल्लिक• वो नहीं रखते इल्म; वो सिर्फ अंदाज़ा लगाते हैं• यकीनन, उन्होंने उसे कत्ल नहीं किया•*

158. बलिके, **अल्लाह** ने उसे उनकी तरफ उठाया; **अल्लाह** हैं पूरी ताकत वाले, सबसे हकीम•

159. हर कोई आसमानी किताब के लोगों में से ज़रूरी था ईमान लाने का उसमें उसकी मौत से पहले• हश्र के दिन पर, वो गवाह होगा उनके खिलाफ•

160. उनकी खताओं की वजह से, हमने हराम किए यहूदियों के लिए अच्छे खाने जो उनके लिए हलाल हुआ करते थे; इसके अलावा मुसलसल **अल्लाह** कि राह से पलटाने के लिए•

161. और रिबा चलाने के लिए, जो मना किया गया था, और लोगों का पैसा नाजायज़ तौर पर हड़पने के लिए• हमने तैयार कर रखा है उनमें से काफिरों के लिए दर्दनाक आज़ाब•

162. जहाँ तक उनमें से वो जो हैं इल्म में पुख्ता, और ईमानवाले, वो ईमान रखते हैं उसमें जो तुझ पर नाज़िल हुआ था, और उसमें जो तुझसे पहले नाज़िल हुआ था• वो हैं रावता नमाज़ों (*सलात*) के अदा करने वाले, और ज़रूरी खैरात (*ज़कात*) के देने वाले; वो हैं **अल्लाह** और आखरी दिन में ईमान रखने वाले• हम अता करते हैं इन्हें एक बड़ा इनाम•

अल्लाह के रसूलें

163. हमने तुझे इल्हाम किया है, जिस तरह हमने नुह और उसके बाद नबियों को इल्हाम किया• और हमने इल्हाम किया इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब, अस्वातें, ईसा, अय्यूब, युनूस, हारून, और सुलैमान को• और हमने दिया दाऊद को ज़बूर•

164. रसूलें जिनके बारे में हमने तुझे बताया है, और रसूलें जिनके बारे में हमने तुझे कभी नहीं बाताया• और **अल्लाह** ने मूसा से सीधे बात किया•

165. रसूलें अच्छी खबरे पहुँचाने के लिए, साथ साथ ताकीदों के• इस तरह, लोगों के पास कोई बहाना न होगा जब वो **अल्लाह** का सामना करेंगे, ये सारे रसूलें उनके पास आजाने के बाद• **अल्लाह** हैं पूरी ताकत वाले, सबसे हकीम•

166. लेकिन **अल्लाह** गवाही देते हैं उसके मुताल्लिक जो उन्होंने तुझे नाज़िल किया है; उन्होंने नाज़िल किया है इसे उनके इल्म के साथ• और इसी तरह फरिश्ते भी गवाही देते हैं, लेकिन **अल्लाह** काफी हैं गवाह जैसे•

167. यकीनन, जो कोई कुफ्र करते हैं और **अल्लाह** कि राह से पलट जाते हैं बहेक गये हैं बड़ी गुमराही•

168. जो कोई कुफ्र करते हैं और हद से निकल जाते हैं, **अल्लाह** उन्हें माफ नहीं करेंगे, नाहीं वो उन्हें हिदायत देंगे किसी राह में;

169. सिवाए जहन्नम की राह कि तरफ, जहाँ वो रहेंगे हमेशा के लिए• यह **अल्लाह** के लिए आसान है करना•

**4:157-158 ईसा, असल शक्स, रूह, उठाई गई थी उसी अंदाज़ में जिस तरह किसी नेक शक्स कि मौत में• उसके बाद, उसके दुश्मनों ने गिरफ्तार किया, अज़ियत दी, और सूली पर चढ़ाया उसकी ज़िंदा, लेकिन खाली, जिस्म को• देखें अपेन्डिक्स 17 और 22, और किताब "जिज़स मिथ्स एॅन्ड मैसेज," लिसा स्प्रे कि तरफ से (युनिवर्सल युनिटी, फ्रेमॉन्ट, कैलिफॉरनिया 1992)•*

170. ऐ लोगों, रसूल आ चुका है तुम्हारे पास सच्चाई के साथ तुम्हारे रब कि तरफ से• इसलिए, तुम्हें ईमान रखना चाहिए तुम्हारे खुद के अच्छे के लिए• अगर तुम कुफ्र करो, फिर **अल्लाह** कि हैं सारी चीज़े आसमानों और ज़मीन में• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले सबसे हकीम•

ट्रिनिटी:
एक झूठा अकीदा

171. ऐ आसमानी किताब के लोगों, तुम्हारे मज़हब के हदों को पार न करो, और न कहो **अल्लाह** के बारे में सिवाए सच के• मसीहा, ईसा, मरयम का बेटा, था **अल्लाह** का एक रसूल, और उनका लफ़्ज़ जो

उन्होंने भेजा मरयम को, और एक आयत उनकी तरफ से• इसलिए, तुम्हें **अल्लाह** और उनके रसूलों में ईमान रखना चाहिए• तुम्हें "ट्रिनिटी" नहीं कहना चाहिए• तुम्हें इससे बाज़ आना चाहिए तुम्हारे खुद के अच्छे के लिए• **अल्लाह** हैं सिर्फ एक खुदा• उनकी तारीफ हो; वो कहीं ज़्यादा बुलंद हैं एक बेटा रखने के लिए• उनकी हैं सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर• **अल्लाह** काफी हैं रब और मालिक जैसे•

172. मसीहा कभी भी नज़र अंदाज़ नहीं करेगा **अल्लाह** का एक बंदा होने से, नाहीं सबसे करीबी फरिश्ते• जो कोई नज़र अंदाज़ करते हैं उनकी इबादत करने से, और हैं बहुत मगरूर फरमानबरदार होने के लिए, वो हाज़िर करेंगे उन सारों को उनके सामने•

173. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो उन्हें पूरी तरह इनाम देंगे, और बरसायेंगे उनको उनकी रहमत से• जहाँ तक वो जो नज़रअंदाज़ करते हैं और मगरूर बन जाते हैं, वो रसीद करेंगे उन्हें दर्दनाक आज़ाब• वो नहीं पायेंगे रब **अल्लाह** के अलावा, नाहीं एक बचाने वाला•

कुरान का रियाज़ी कोड:
काबिले महसूस, ना काबिले इंकार सबूत

174. ऐ लोगों, एक सबूत आ चुका है तुम्हारे पास तुम्हारे रब कि तरफ से; हमने भेजा है नीचे तुम्हारी तरफ एक गहरा रहनुमा•

175. जो कोई ईमान रखते हैं **अल्लाह** में, और उन्हें मज़बूती से पकड़े रहते हैं, वो दाखिल करेंगे उन्हें उनकी तरफ से रहमत, और फज़ल में, और उनकी हिदायत करेंगे एक सीधी राह में अपनी तरफ•

176. वो तुझसे मशवरा करते हैं; कहो, "**अल्लाह** तुम्हें मशवरा देते हैं अकेले शक्स के मुताल्लिक• अगर कोई मर जाये और न छोड़े औलाद, और उसे थी एक बहन, वो पाती है विरासत का आधा• अगर वो पहले मरती है, वो उसका वारिस होता है, अगर वो नहीं छोड़े औलाद• अगर वहाँ थीं दो बहनें, वो पाती हैं विरासत का दो तिहाई• अगर भाई बहन मर्दें और औरतें हैं, मर्द पाता है दुगना ज़नाने के हिस्से से•" **अल्लाह** इस तरह वाज़े करते हैं तुम्हारे लिए, ताके तुम गुमराह न हो जाओ• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

****

सुरह 5: दावत
(अल-मायदा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. ऐ ईमानवालो, तुम्हें तुम्हारे वादों को पूरा करना चाहिए• इजाज़त दी गई है तुम्हारे लिए मवेशी जानवर खाने के लिए, सिवाए जो खास तौर पर यहाँ मना किए जाते हैं• तुम्हें शिकार करने की इजाज़त नहीं देनी चाहिए पूरे हज ज़ियारत के दौरान• **अल्लाह** हुक्म देते हैं जोकुछ वो चाहते हैं•

2. ऐ ईमानवालो, खिलाफ वर्ज़ी न करो **अल्लाह** कि तरफ से कायम किए गए तरीकों, नाही मुकद्दस महीने, नाही कुरबान किए जाने वाले जानवरों, नाहीं उनको निशान करती हुई हारों को, नाहीं लोगों को जो रूख करते हैं मुकद्दस इबादतगाह (*कावा*) कि तरफ तलाश करते हुए उनके रब कि तरफ से रहमतें और रज़ामंदी• जब तुम हज पूरा कर लो, तुम शिकार कर सकते हो•* न भड़क उठो अदावत में तुम्हारी लोगों कि नफरत की वजह से जिन्होंने तुम्हें एक दफा रोका मुकद्दस मस्जिद को जाने से• तुम्हें नेककारी और तकवे के मामलों में साथ देना चाहिए; साथ न दो उन मामलों में जो हैं गुनाहगार और बुरे• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना

चाहिए• **अल्लाह** सख्त हैं आज़ाब नाफिज़ करने में•

सिर्फ चार गोश्त हराम किए गए हैं
"जानवरें जो
खुदसे मरते हैं" वाज़े कर दिए गए

3. मना किए गए हैं तुम्हारे लिए जानवरें जो मरते हैं खुद से, खून, खिंज़ीरों का गोश्त,* और जानवरें मुंतखब किए गए किसी और को **अल्लाह** के अलावा• (*जानवरें जो खुदसे मरते हैं शामिल करते हैं वो जिनका*) गला घोंटा गया, किसी चीज़ से मारा गया, ऊंचाई से गिरा हुआ, खून किया गया, एक जंगली जानवर से हमला किया गया — जबतक तुम बचा न लो तुम्हारे जानवर को उसके मरने से पहले — और जानवरें कुरबान किए गए चबुतरों पर• इसके अलावा मना किया गया है गोश्त को लॉटरी के ज़रिए तकसीम करना; यह एक हकारत है• आज, काफिरों ने कोशिश छोड़ दी है तुम्हारे मज़हब (*का खातमा*) करने के मुताल्लिक; उनसे न डरो बलिके मुझसे डरो• आज, मैंने पूरा किया है तुम्हारा मज़हब, मुकम्मल किया है मेरी रहमत को तुमपर, और मैंने फरमानबरदारी मुकर्रर किया है तुम्हारे लिए मज़हब जैसा• अगर कोई मजबूर हो सूखे कि वजह से (*हराम किया गया खाना खाने के लिए*), बगैर जानबूझकर गुनाहगार होते हुए, फिर **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

4. वो तुझसे मशवराह करते हैं क्या हलाल है उनके लिए इसके मुताल्लिक; कहो, "हलाल हैं तुम्हारे लिए सारी अच्छी चीज़े, शामिल करते हुए वो जो सिखाए गए कुत्ते और बाज़ें पकड़ते हैं तुम्हारे लिए•" तुम सिखाते हो उन्हें **अल्लाह** कि तालीमों के मुताबिक• तुम खा सकते हो जो वो पकड़ें तुम्हारे लिए, और **अल्लाह** का नाम लो उसपर• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चहिए• **अल्लाह** हैं सबसे काबिल हिसाब लेने में•

5. आज, सारे अच्छे खाने हलाल किए गए हैं तुम्हारे लिए• आसमानी किताब के लोगों के खाने हलाल है तुम्हारे लिए• इसके अलावा, तुम शादी कर सकते हो ईमानवालों में से पाकीज़ा औरतों से, इसके अलावा पाकीज़ा औरतें पिछली आसमानी किताब पर चलने वालों में से, बर्शते के तुम उनके हक के महरों को अदा करो• तुम्हें पाकीज़गी बरकरार रखनी चाहिए, ज़िना न करते हुए, न रखते हुए खुफिया महबूबों को• जो कोई ठुकराता है अकीदा, उसके सारे काम ज़ाया हो जायेंगे, और अगली ज़िंदगी में वो होगा खसारों के साथ•

**5:2 शिकार करना और पौधों को काटना मना किये गए हैं हज के दौरान कुदरती खज़ानों कि हिफाज़त करने के लिए• हज़ारों हाजीयें जमा होते हैं मक्के पर, अगर शिकार करने कि इजाज़त दी गई होती, ज़मीन जल्दी से कुदरती खज़ानों से महरूम हो जाती• जानवर कि कुरबानियाँ बनाये गये हैं हिस्सा हज का ताके मुहय्या किया जा सके जमा होने वाले हाजियों के लिए, साथ साथ मुकामी आवादी के लिए, और ताके दोवारा भरा जाए कोई कम हुई फराहमियों को• देखें 2:196•*

**5:3 खिंज़ीर का "गोश्त" हराम किया गया है, "चरबी" नहीं• कोई भी चीज़ जो खास तौर पर हराम नहीं किया गया हो कुरान में हलाल माना जाना चाहिए• देखें 6:145-146•*

वज़ू

6. ऐ ईमानवालो, जब तुम रावता नमाज़ें (*सलात*) अदा करो, तुम्हें चाहिए: (1) तुम्हारे चेहरों को धोना, (2) तुम्हारे बाजुओं को कोहनियों तक धोनो, (3) तुम्हारे सरों को पोछना, और (4) तुम्हारे पैरों को टखनों तक धोना• अगर तुम साफ नहीं थे शहवती जोश कि वजह से, तुम्हें नहाना चाहिए• अगर तुम विमार हो, या सफर कर रहे हो, या हुआ हो कोई हाज़में के मुताल्लिक खुरूज (*पिशावी, संडास, या गैस*), या हुआ हो (*शहवती*) ताल्लुक औरतों के साथ, और तुम पानी न पा सको, तुम्हें सूखा वज़ू (*तयम्मुम*) करना चाहिए साफ सूखी मिट्टी छूते हुए, फिर घिसते हुए तुम्हारे चेहरों और हाथों को• **अल्लाह** तुम्हारे लिए मज़हब को मुश्किल नहीं

बनाना चाहते; वो चाहते हैं तुम्हें साफ करने का और तुम पर उनकी रहमत को मुकम्मल करने का, ताके तुम कद्र करने वाले बन जाओ•

7. याद करो तुमपर **अल्लाह** कि रहमत को, और उनका वादा जो उन्होंने तुम्हारे साथ वादा किया: तुमने कहा, "हम सुनते हैं और हम अताअत करते हैं•" तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए; **अल्लाह** पूरी तरह वाकिफ हैं अंदरूनी ख्यालों से•

तुम्हें झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए

8. ऐ ईमानवालो, तुम्हें पूरी तरह बराबर होना चाहिए, और **अल्लाह** को ध्यान में रखो, जब तुम गवाहों जैसा काम करो• न भड़क उठो तुम्हारी झगड़ों कि वजह से कुछ लोगों के साथ नाइंसाफी करने में• तुम्हें पूरी तरह बराबर होना चाहिए, इसलिए कि ये है ज़्यादा नेक• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें तुम करते हो•

9. **अल्लाह** वादा करते हैं उनसे जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं मगफरत और एक बड़े इनाम का•

10. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं और ठुकराते हैं हमारी आयतों को, वो हैं जहन्नम के रहने वाले•

अल्लाह ईमानवालों कि हिफाज़त करते हैं

11. ऐ ईमानवालो, याद करो **अल्लाह** कि रहमतों को तुमपर; जब कुछ लोगों ने बढ़ाये उनके हाथों को तुम्हारे खिलाफ हमला करने के लिए, उन्होंने तुम्हारी हिफाज़त की और रोके रखा उनके हाथों को• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए; ईमानवालों को **अल्लाह** में भरोसा रखना चाहिए•

*अल्लाह कि हिफाज़त में रहने के लिए शर्तें**

12. **अल्लाह** ने एक वादा लिया था बनी इस्राईल से, और हमने उठाया उनमें से बाराह असबातों को• और **अल्लाह** ने कहा, "मैं हूँ तुम्हारे साथ, जब तक तुम राबता नमाज़ें (*सलात*) अदा करते रहो, ज़रूरी खैरात (*ज़कात*) देते रहो, और ईमान रखो मेरे रसूलों में और उनकी इज्ज़त करो, और जारी रहो **अल्लाह** को उधार देते हुए एक उधार नेककारी का• मैं फिर तुम्हारे गुनाहों को माफ करूंगा, और दाखिल करूंगा तुम्हें बागों में बहती हुई नहरों के साथ• जो कोई कुफ्र करता है इसके बाद, है वाकई बहेक गया सही रास्ते से•"

अल्लाह का वादा तोड़ने के नतीजे

13. वो एक नतीजा था उनके वादे को तोड़ने का कि हमने उनकी मलामत की, और हमने सबब बनाया उनके दिलों को सख्त बनने का• इस वजह से, उन्होंने लिया लफ्ज़ों को मज़मून के बाहर, और नज़रअंदाज़ किया उनको दिए गए कुछ एहकामों को• और तुम उनकी तरफ से मुसलसल दगाबाज़ी देखोगे, सिवाए उनमें से कुछ के• तुम्हें उनको माफ करना, और उनको नज़र अंदाज़ करना चाहिए• **अल्लाह** चाहते हैं उनको जो हैं नर्मदिल•

**5:12 अगर तुम पूरा करो इस आयत में बयान किए गए ज़रूरतों को, अल्लाह तुम्हें मालूम होने देंगे कि वो तुम्हारे साथ हैं; तुम्हें कोई शक नहीं होगा उसके मुताल्लिक• अल्लाह कि निशानियों में सबसे नुमाया हैं रियाज़ी निशानियाँ उनके लिए जो कुरान के मौजज़े को समझते हैं (अपेन्डिक्स एक)•*

ईसाईयों, को भी, ज़रूरी है अताअत करना अल्लाह के रसूल की

14. हमने उनका वादा लिया उनसे भी जिन्होंने कहा, "हम हैं ईसाई,"• लेकिन उन्होंने नज़रअंदाज़ किया उनको दिए गए कुछ एहकामों को• इस वजह से, हमने उनको मलामत किया उनके आपस में दुश्मनी और नफरत कि तरफ, हश्र के दिन तक• **अल्लाह** फिर उन्हें इत्तेला करेंगे सारी चीज़ो के बारे में उन्होंने किया•

कुरान: अल्लाह का पैगाम यहूदियों और ईसाईयों के लिए

15. ऐ आसमानी किताब के लोगों, हमारा रसूल तुम्हारी तरफ आ चुका है तुम्हें ऐलान करने के लिए कई चीज़ें जो तुमने छिपाई हैं आसमानी किताब में, और कई दूसरी खताओं को माफ करने के लिए जो

तुमने किया है• एक हिदायत आ चुकी है तुम्हारी पास **अल्लाह** कि तरफ से, और एक गहरी आसमानी किताब•

16. उससे, **अल्लाह** हिदायत देते हैं उन्हें जो तलाश करते हैं उनकी रज़ामंदी• वो हिदायत देते हैं उन्हें अमन के रास्तों कि तरफ, रहनुमाई करते हैं उनकी अंधेरे से बाहर रौशनी में उनकी मर्ज़ी से, और हिदायत देते हैं उनको एक सीधी राह में•

बड़ी बेअदवी

17. काफिरें हैं वाकई वो जो कहते हैं कि **अल्लाह** है मसीहा, मरयम का बेटा• कहो, "कौन है जो मुखालिफत कर सकता है **अल्लाह** कि अगर वो मसीहा, मरयम के बेटे को फना करना चाहें, और उसकी माँ, और हरएक को ज़मीन पर?" **अल्लाह** के पास है आसमानों और जमीन की सल्तनत, और सारी चीज़े उनके बीच• वो पैदा करते हैं जोकुछ वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

अल्लाह का रसूल यहूदियों,
ईसाईयों और मुसलमानों के लिए

18. यहूदियों और ईसाईयों ने कहा, "हम हैं **अल्लाह** कि औलाद और उनके चहीते•" कहो, "क्यों फिर वो सज़ा देते हैं तुम्हें तुम्हारी गुनाहों के लिए? तुम वैसे ही इंसाने हो जैसे दूसरे इंसानों को उन्होंने पैदा किया•" वो माफ करते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं और सज़ा देते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं• **अल्लाह** के पास है आसमानों और जमीन की सल्तनत, और सारी चीज़े उनके बीच, और उनकी तरफ है आखरी मुकद्दर•

अल्लाह का वादे का रसूल

19. ऐ आसमानी किताब के लोगों, हमारा रसूल आ चुका है तुम्ही तरफ, तुम्हारे लिए चीज़ों को समझाने के लिए, एक मुद्दत बाद बिना रसूलों के, ताके तुम न कहो, "हमने नहीं पाया कोई नसीहत करने और ताकीद करने वाला•" एक नसीहत करने वाला और ताकीद करने वाला अब आ चुका है तुम्हारी तरफ• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•*

20. याद करो कि मूसा ने कहा उसके लोगों को, "ऐ मेरे लोग, याद करो तुमपर **अल्लाह** कि रहमतों को; उन्होंने मुकर्रर किए तुममें से नबियों को, तुम्हें बनाया बादशाहें, और अता किया तुम्हें जो उन्होंने कभी नहीं अता किया किसी और लोगों को•

अल्लाह देते हैं मुकद्दस ज़मीन इस्राईल को

21. "ऐ मेरे लोग, दाखिल हो मुकद्दस ज़मीन में जो **अल्लाह** ने मुकर्रर किया है तुम्हारे लिए, और बगावत न करो, ताके तुम खसारे वाले न बन जाओ•"

**5:19 यह आयत इत्तेला देती है पूरा होने का इंजील और कुरान कि पेशीनगोई अल्लाह के वादे के रसूल कि आमदगी के मुताल्लिक (मलाकाई 3:1, कुरान 3:81)• इस रसूल का नाम रियाज़ी तौर पर कोड किया गया है कुरान में "रशाद खलिफा" जैसा• यह बहुत खास आयत मुतालबा करती है मखसूस सबूत की पेशकश• जोड़ते हुए जिमेटरिकल वेल्यु "रशाद" (505) कि, साथ "खलीफा" (725) कि वेल्यु, साथ सुरेह नंबर (5), साथ आयत नंबर (19), हम पाते हैं 505+725+5+19 = 1254 का टोटल, या 19x66• उन्नीस कुरान का आम डिनोमिनेटर है, जो रशाद खलीफा के ज़रिए नाज़िल हुआ था• ज़्यादा सबूत और खास तफसीलें हैं अपेन्डिक्स दो में•*

22. उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, वहाँ हैं ताकतवर लोग उसमें, और हम उसमें नहीं दाखिल होंगे, जबतक वो उसमें से बाहर नहीं निकलते• अगर वो बाहर निकलते हैं, हम दाखिल हो रहे हैं•"

23. दो मर्दे जो बाअदब थे और बक्शे गए थे **अल्लाह** कि तरफ से कहा, "सिर्फ दहलीज़ में दाखिल हो जाओ• अगर तुम सिर्फ उसमें दाखिल होगे, तुम यकीनन कामयाब होगे• तुम्हें **अल्लाह** में भरोसा रखना चाहिए, अगर तुम हो ईमानवाले•

वो सारे मौजज़ों के देखने के बावजूद

24. उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, हम उसमें कभी दाखिल नहीं होंगे, जबतक वो हैं उसमें• इसलिए, जाओ — तुम और तुम्हारा रब — और लड़ो• हम बैठते हैं बिल्कुल यहीं •"

25. उसने कहा, "मेरे रब, मैं सिर्फ अपने आपको और मेरे भाई को काबू कर सकता हूँ• इसलिए, इजाज़त दीजिए हमें अलग होने का बुरे लोगों कि सोहबत से•"

26. उन्होंने कहा, "इसके बाद, वो उनके लिए चालीस सालों तक हराम है, जिसके दरमियान वो फिरेंगे ज़मीन पर बिना मकसद के•" गमज़दा न हो ऐसे बुरे लोगों पर•

*सबसे पहला कत्ल**

27. बयान करो उनके लिए सच्ची तारीख आदम के दो बेटों की• उन्होंने एक कुरबानी की, और वो उसमें से एक कि तरफ से कबूल हुई, लेकिन दुसरे कि तरफ से नहीं• उसने कहा, "मैं यकीनन तुझे कत्ल करूंगा•" उसने कहा, "**अल्लाह** सिर्फ नेककारों की तरफ से कबूल करते हैं•

28. "अगर तू बढ़ाये तेरा हाथ मुझे कत्ल करने के लिए, मैं नहीं बढ़ा रहा हूँ मेरा हाथ तुझे कत्ल करने के लिए• इसलिए के मैं **अल्लाह**, कायनात के रब का एहतराम करता हूँ •

29. "मैं चाहता हूँ तू, मैं नहीं, बरदाश्त करे मेरे गुनाह और तेरे गुनाह को, फिर तू खत्म हो जहन्नम के रहने वालों के साथ• ऐसा बदला हैं खतावारों के लिए•"

30. उसके अना ने उसे आमादा किया उसके भाई का कत्ल करने में• उसने उसे कत्ल किया, और खत्म हुआ खसारों के साथ•

31. **अल्लाह** ने फिर एक कौआ भेजा मिट्टी कुरेदने के लिए, उसे सिखाने के लिए कैसे दफनाया जाए उसके भाई की लाश को• उसने कहा, "गम हो मुझपर; और मेरे भाई कि लाश को दफन करने के लिए, मैं इस कौए जितना अकलमंद होने से नाकामयाब रहा•" वो नदामत से भर गया•

कत्ल का घिनौनापन

32. इस वजह से, हमने हुक्म किया बनी इस्राईल के लिए कि जो कोई कत्ल करता है किसी शक्स को जिसने कत्ल या संगीन जुर्मो नहीं किया हो, वो ऐसा होगा जैसे उसने सारे लोगों का कत्ल किया• और जो कोई बचाता है एक जिंदगी, वो ऐसा होगा जैसे उसने सारे लोगों कि जिंदगियों को बचाया• हमारे रसूलें गये उनकी तरफ साफ सबूतों और आयतों के साथ, लेकिन उनमें से ज़्यादा, इस सब के बाद, अब भी खता कर रहे हैं•

सज़ाए मौत:
कब है ये जायज़?

33. सही आज़ाब उनके लिए जो लड़ते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल से, और करते हैं संगीन जुर्मो को, कत्ल किया जाना, या सुली चढ़ाया जाना, या उनके हाथों और पैरों को अलग अलग तरफों से काटना, या जिलावतन दिया जाना चाहिए ज़मीन से• ये है उनको रूसवा करने के लिए इस जिंदगी में, फिर वो झेलेंगे एक बड़ा बुरा आज़ाब अगली ज़िंदगी में•

**5:27-31 दो बेटों के नामें शामिल हुए इस पहले कत्ल में एहम नहीं हैं• लेकिन वो दिए गए हैं इंजील में एबेल और कैन जैसे (जिनेसिस 4:2-9)•*

34. माफ किए गए हैं वो जो तौबा करते हैं इससे पहले कि तुम उनपर तारी हो जाओ• तुम्हें मालूम होना चाहिए कि **अल्लाह** हैं माफकरने वाले, सबसे रहीम•

35. ऐ ईमानवालो, तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना और उनकी तरफ के रास्तों और ज़रियों को तलाश करना, और उनकी राह में जद्दोजहेद करना चाहिए, ताके तुम कामयाब हो सको•

कुफ्र का दाम

36. यकीनन, वो जिन्होंने कुफ्र किया, अगर वो मालिक हो जाएं सारी चीज़ों के ज़मीन पर, यहाँ तक के उससे दुगना, और पेश करते उसे एक फिदया के

तौर पर ताके बाचाए जा सकें आज़ाब से हश्र के दिन पर, वो उनसे कबूल नहीं किया जायेगा; उन्होंने पा लिया है एक दर्दनाक आज़ाब•

37. वो चाहेंगे जहन्नम से बाहर निकलने को, लेकिन हाय, वो वहाँ से कभी नहीं निकल पायेंगे; उनका आज़ाब है हमेशा के लिए•

रियाज़ी सबूत
हिमायत करता है कुरानी इंसाफ का

38. चोर, मर्द या औरत, तुम्हें उनके हाथों* को निशान करना चाहिए उनके जुर्म के लिए एक सज़ा के तौर पर, और एक मिसाल जैसा काम करने के लिए **अल्लाह** कि तरफ से• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

39. अगर कोई तौबा करता है इस जुर्म को करने के बाद, और इस्लाह करता है, **अल्लाह**उसे माफ करते हैं• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

40. क्या तुम नहीं जानते कि **अल्लाह** आसमानों और ज़मीन कि सल्तनत के मालिक हैं? वो सज़ा देते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं, और माफ करते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

41. ऐ रसूल तुम, गमज़दा न हो उनकी वजह से जो जल्दबाज़ी करते हैं कुफ्र करने का उनमें से जो कहते हैं "हम ईमान रखते हैं," उनके मुंहो से, जबकि उनके दिलें ईमान नहीं रखते• यहूदियों में से, कुछ झूठों को सुनते हैं• वो सुनते हैं लोगों को जो कभी नहीं मिले तुझसे, और जिन्होंने बिगाड़ा लफ्ज़ों को मौज़ू के बाहर, फिर कहा, "अगर तुम्हें यह दिया जाता है, इसे कबूल करो, लेकिन अगर तुम्हें दिया जाता है कोई चीज़ मुखतलिफ, खबरदार•" जिस किसी को **अल्लाह** चाहें फेरने का, तुम कुछ नहीं कर सकते उसकी मदद करने के लिए **अल्लाह** के खिलाफ• **अल्लाह** नहीं चाहते उनके दिलों को साफ करने का• उन्होंने पा है लिया ज़िल्लत इस दुनिया में, और अगली ज़िंदगी में, वो झलेंगे एक खौफनाक आज़ाब•

42. वो हैं झूठों के हामी भरने वाले, और नाजायज़ आमदनियों के खाने वाले• अगर वो आयें तुम्हारे पास उनके बीच इंसाफ करने के लिए, तुम उनके दरमियान इंसाफ कर सकते हो, या तुम उन्हें नज़रअंदाज़ कर सकते हो• अगर तुम चुनो उन्हें नज़रअंदाज़ करने का, वो तुम्हें ज़रासी भी तकलीफ नहीं दे सकते• लेकिन अगर तुम उनके दरमियान इंसाफ करो, तुम्हें इंसाफ करना चाहिये बराबरी से• **अल्लाह** चाहते हैं उन्हें जो हैं मुंसिफ•

**5:38 तरीका चोर के हाथ को कलम करने का, जैसा फरमान किया गया है झूठे मुसलमानों कि तरफ से, है एक शैतानी तरीका बगैर कुरानी बुनियाद के• इस मिसाल कि खास एहमियत होने कि वजह से, अल्लाह ने अता किए हैं रियाज़ी सबूत चोर के हाथ को निशान करने कि हिमायत में, बजाये उसे कलम करने के• आयत 12:31 मुखातिब करती है औरतों कि तरफ जिन्होंने युसुफ को इतना पसंद किया कि उन्होंने उनके हाथों को "काट" लिया• ज़ाहिर है, उन्होंने "कलम" नहीं किया उनके हाथों को; कोई भी नहीं कर सकता• जमा सुरेह और आयत नंबरों का 5:38 और 12:31 के लिए वही है, यानी, 43• यह मर्ज़ी और रहमत है अल्लाह कि के ये रियाज़ी ताल्लुक तसदीक करता है कुरान के 19 पर बुनियाद कोड से• 12:31 कि उन्नीस आयतों बाद, हम देखते हैं वही लफ्ज़ (12:50)•*

43. वो क्यों उनके दरमियान तुम्हें पूछते हैं इंसाफ करने के लिए, जब उनके पास है **अल्लाह** का कानून रखता हुआ, तौरेत, और उन्होंने चुना उसे नज़रअंदाज़ करने का? वो नहीं हैं ईमानवाले•

पिछली आसमानी किताब का एहतराम करना

44. हमने भेजा है नीचे तौरेत,* रखते हुए हिदायत और रौशनी• इंसाफ करते थे उसके मुताबिक यहूदी नबियें, इसके अलावा रब्बीयें और पादरियें, जैसा हुक्म हुआ था उनको **अल्लाह** कि आसमानी किताब में, और जैसा उनकी तरफ से देखा गया• इसलिये, तुम्हें चाहिए इंसानों का एहतराम न करो; तुम्हें मेरा एहतराम करना चाहिए बलिके• और तिजारत न करदो मेरी आयतों को एक सस्ते दाम

के लिए• जो कोई फैसला नहीं करते **अल्लाह** कि आयतों के मुताबिक हैं काफिरें•

बराबरी का कानून

45. और हमने हुक्म किया उनके लिए उसमें कि: जिंदगी के लिए जिंदगी, आँख के लिए आँख, नाक के लिए नाक, कान के लिए कान, दांत के लिए दांत, और एक बराबरी वाला ज़ख्म किसी ज़ख्म के लिए• अगर कोई माफ कर दे वो जो उसका हक है एक खैरात के तौर पर, वो कफ्फारा करेगा उसके गुनाहों के लिए• जो कोई फैसला नहीं करते **अल्लाह** कि आयतों के मुताबिक हैं नाइंसाफ•

ईसा का इंजील:
हिदायत और रौशनी

46. उनके बाद, हमने भेजा ईसा, मरयम के बेटे को, तसदीक करते हुए पिछली आसमानी किताब, तौरेत की• हमने दिया उसे इंजील, रखते हुए हिदायत और रौशनी, और तसदीक करता हुआ पिछली आसमानी किताबों की, तौरेत, और बढ़ाते हुए उसकी हिदायत और रौशनी, और नेककारों को समझाने के लिए•

47. इंजील के लोगों को उसमें **अल्लाह** कि आयतों के मुताबिक फैसला करने चाहिए• जो कोई हुक्मरानी नहीं करता है **अल्लाह** कि आयतों के मुताबिक हैं बदकार•

कुरान: आखरी हवाला

48. फिर हमने नाज़िल किया इस आसमानी किताब को तेरी तरफ, सच्चाई से, तसदीक करते हुए पिछली आसमानी किताबों की, और उनकी जगह लेते हुए• तुझे उनके दरमियान **अल्लाह** कि आयतों के मुताबिक फैसला करना चाहिए, और उनके ख्वाहिशों पर न चल अगर वो राज़ी न हों सच्चाई से जो आई तेरी तरफ• तुम में से हर एक के लिए, हमने मुकर्रर किये हैं कानूने और मुख्तलिफ तरीके• अगर **अल्लाह** चाहते, वो बना सकते थे तुम्हें एक जमात• लेकिन इस तरह वो तुम्हें आज़माईश में डालते हैं उन्होंने तुम में से हर एक को दी गई वहियों के ज़रिये• तुम्हें नेककारी में मुकाबला करना चाहिए• **अल्लाह** कि तरफ है तुम्हारा आखरी मुकद्दर—तुम सारों का — फिर वो तुम्हें इत्तेला करेंगे सारी चीज़ों का जो तुमने बहेस किया था•

49. तुझे फैसला करना चाहिए उनके दरमियान तेरी तरफ **अल्लाह** कि आयतों के साथ• उनके ख्वाहिशों पर न चल, और खबरदार ताके वो तुझे फेर न दें तेरी तरफ **अल्लाह** कि कुछ आयतों से• अगर वो फिर जायें, तो जानो कि **अल्लाह** उनके कुछ गुनाहों के लिए उन्हें सज़ा देना चाहते हैं• वाकई, कई लोग हैं बदकार•

50. क्या वो जहालत के दिनों के कानून को बरकरार रखना चाहते हैं? किस का कानून है **अल्लाह** से बेहतर उनके लिये जिन्होंने यकीन हासिल कर लिया है?

**5:44 तौरेत सारे इस्राईल के नबियों के ज़रिये ईसा से पहले नाज़िल हुई सारी आसमानी किताबों का एक जमा है, यानी, आज का तौरेत• हम कहीं भी कुरान में नहीं पाते हैं कि तौरेत मूसा को दी गई थी•*

कुछ यहूदीयें और इसाईयें
दोस्त नहीं हो सकते*

51. ऐ ईमानवालो, न लो कुछ यहूदियों और इसाईयों को साथियों जैसा; ये हैं एक दूसरे के साथियें• तुम में से जो कोई जोड़े अपने आप को इन के साथ है उनमें से• **अल्लाह** खतावारों को हिदायत नहीं करते•

52. तुम देखागे उन्हें जो पनाह देते हैं उनके दिलों में शकों को जल्दबाज़ी करते हुए उनके साथ जुड़ने के लिए, कहते हुए, “हम डरते है ताके हम शिकस्त न दिये जायें•” **अल्लाह** करें जीत, या एक हुक्म लायें उनकी तरफ से, जो सबब बने उनका उनके खुफिया ख्यालों के मलाल का•

53. ईमानवाले फिर कहेंगे, “क्या ये वहीं लोग हैं जिन्होंने संजीदगी से **अल्लाह** कि कसम खाई थी के वो थे तुम्हारे साथ?” उनके आमालों को ज़ाया कर दिया गया है; वो हैं हारे हुए•

54. ऐ ईमानवालो, अगर तुम पलट जाओ तुम्हारे मज़हब से, तो **अल्लाह** बदल देंगे तुम्हारी जगह लोगों को जिन्हें वो चाहते हैं और जो उन्हें चाहते हैं• वो होंगे नरम दिल ईमानवालों के साथ, सख्त काफिरों के साथ, और जद्दोजहेद करेंगे **अल्लाह** कि राह में बगैर किसी इल्ज़ाम के डर से• ऐसी है **अल्लाह** कि रहमत; वो इनायत करते हैं जिस किसी पर वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं सखी, सब कुछ जानने वाले•

55. तुम्हारे सही साथीयें हैं **अल्लाह** और उनका रसूल, और ईमानवाले जो रावता नमाज़ें (*सलात*) अदा करते हैं, और देते हैं ज़रूरी खैरात (*ज़कात*), और वो झुकते हैं•

56. जो कोई जोड़े अपने आप को **अल्लाह** और उनके रसूल के साथ, और वो जो ईमान लाये, हैं **अल्लाह** कि जमात में; यकीनन, वो जीते हुए हैं•

कौनसे यहूदीयें और ईसाईयें

57. ऐ ईमानवालो, दोस्त न बनाओ पिछली आसमानी किताब के पाने वालों में से उन्हें जो मज़ाक और हंसी उड़ाते हैं तुम्हारे मज़हब की, नाहीं तुम्हें काफिरों को दोस्त बनाना चाहिये• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिये, अगर तुम हो वाकई ईमानवाले •

आसमानी किताबों के पाने वाले
खिलाफ वरज़ी करते हैं

58. जब तुम रावता नमाज़ों (*सलात*) के लिए पुकारते हो, वो उसका मज़ाक और हंसी उड़ाते हैं• ये इसलिए कि वो हैं लोग जो समझते नहीं•

59. कहो, “ऐ आसमानी किताब के लोगों, क्या तुम हमसे नफरत करते हो इसलिए कि हम **अल्लाह** में ईमान रखते हैं, और उसमें जो हमारी तरफ नाज़िल हुआ था, और उसमें जो हमसे पहले नाज़िल हुआ था, और इसलिए के तुम में से ज़्यादातर नेक नहीं हो?”

60. कहो, “मुझे तुम्हें बताने दो कौन है सबसे बुरा **अल्लाह** कि नज़र में: वो जो मलामत किये गये हैं **अल्लाह** कि तरफ से उनका कहेर पाने के बाद जब तक उन्होंने उनको बनाया *(उतना बेइज़्ज़त जितना)* बंदरें और खिंज़ीरें, और बुतपरस्ती करने वाले• ये हैं कहीं ज़्यादा बुरे, और ज़्यादा दूर सही रास्ते से•”

61. जब वो तुम्हारी तरफ आते हैं, वो कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं,” इसके बावजूद कि वो कुफ्र से भरे थे जब वो दाखिल हुए, और वो हैं कुफ्र से भरे जब जाते हैं• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें वो छिपाते हैं•

**5:51 दूसरे लोगों के साथ ताल्लुकात बंदोबस्त किये गये हैं 5:57 और 60:8-9 में बुनियादी कानून के ज़रिये• यहूदी और इसाई जो दोस्त नहीं बन सकते बयान किये गये हैं खासतौर पर आयत 5:57 में; ये वो हैं जो मज़ाक और हंसी उड़ाते हैं ईमानवालों कि, या उनपर हमला करते हैं•*

62. तुम देखते हो उनमें से कईयों को आसानी से बुराई और खता करते हुए, और खाते हुए नाजायज़ आमदनियों को• वाकई आफतज़दा है जो वो करते हैं•

63. अगर रब्बियें और पादरियें उन्हें सिर्फ ताकीद करें उनके गुनाहवाले कलमात और नाजायज़ आमदनियों से! आफतज़दा है वाकई वो जो करते हैं•

बेअदबी करते हुए अल्लाह के खिलाफ

64. यहूदियों ने यहाँ तक कहा, “**अल्लाह** का हाथ बंधा है!” ये तो उनके हाथें हैं जो बंधे हैं• उनकी मलामत की गई है ऐसी एक बेअदबी कहने के लिए• बलिके, उनके हाथें चौड़े खुले हैं, खर्च करते हुए जैसा वो चाहते हैं• यकीनी तौर पर, तुम्हारे रब कि आयतें तुम्हारी तरफ उनमें से कईयों का सबब होगी ज़्यादा गहरी खता और कुफ्र में

गिरने कि• इस वजह से, हमने सुपुर्द किया है उन्हें उनके आपस में दुश्मनी और नफरत को हश्र के दिन तक• जब भी वो जंग कि लौ को सुलगाते हैं, **अल्लाह** उन्हें बुझा देते हैं• वो बदकारी से ज़मीन पर फिरते हैं, और **अल्लाह** बुरा करने वालों को पसंद नहीं करते•

यहूदियों और ईसाईयों के लिए निजात

65. अगर सिर्फ आसमानी किताब के लोग ईमान रखें और एक नेक ज़िंदगी बसर करें, हम फिर उनके गुनाहों को माफ करेंगे, और दाखिल करेंगे उन्हें मुसर्ररत वाली बागों में•

उन्हें ज़रूरी है इस कुरान में ईमान रखना

66. अगर सिर्फ वो बरकरार रखते तौरेत और इंजील, और वो जो भेजा गया है नीचे उनको इसमें उनके रब कि तरफ से, वो बरसाये जायेंगे रहमतों के साथ उनके ऊपर से और उनके पैरों के नीचे से• उनमें से कुछ हैं नेक, लेकिन उनमें से हैं ज़्यादा बुरा करने वाले•

रसूल को ज़रूरी है पहुँचाना

67. ऐ रसूल तू, पहुँचा जो तुझ पर नाज़िल किया गया है तेरे रब कि तरफ से — जब तक तू नहीं करता, तूने नहीं पहुँचाया है उनका पैगाम — और **अल्लाह** तेरी हिफाज़त करेंगे लोगों से• **अल्लाह** हिदायत नहीं करते कुफ्र करने वाले लोगों को•

68. कहो, "ऐ आसमानी किताब के लोगों, तुम्हारे पास कोई बुनियाद नहीं जब तक तुम बरकरार न रखो तौरेत, और इंजील, और वो जो भेजा गया है नीचे तुमको इसमें तुम्हारे रब कि तरफ से•" यकीनन, ये आयतें तुम्हारे रब कि तरफ से सबब होंगी उनमें से कईयों के ज़्यादा खता और कुफ्र में गिरने की• इसलिए, मायूस न हो कुफ्र करने वाले लोगों के लिए•

कम से कम ज़रूरते
निजात के लिए

69. यकीनन, जो कोई ईमान रखते हैं, जो कोई यहूदी हैं, तबदील हुए, और ईसाईयें; उनमें से जो कोई (1) **अल्लाह** में ईमान रखता है और (2) आखरी दिन में ईमान रखता है, और (3) एक नेक ज़िंदगी बसर करता है, नहीं है कुछ डरने के लिए, नाहीं वो गमज़दा होंगे•

70. हमने लिया है एक वादा बनी इस्राईल से, और हमने भेजा उनकी तरफ रसूलों को• जब भी एक रसूल गया उनकी तरफ किसी चीज़ के साथ जिसे उन्होंने नापसंद किया, कुछ को उन्होंने ठुकराया, और कुछ को उन्होंने किया कत्ल•

71. उन्होंने सोचा कि वो आज़माये न जायेंगे, इसलिए वो बन गये अंधे और बहरे, फिर **अल्लाह** ने उन्हें माफ किया, लेकिन उनमें से कई फिर से अंधे और बहरे बन गये• **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ें वो करते हैं•

आज का ईसाई मज़हब
*ईसा का मज़हब नहीं**

72. वाकई काफिरें हैं वो जिन्होंने कहा कि **अल्लाह** है मसीहा, मरयम का बेटा• खुद मसीहा ने कहा, "ऐ बनी इस्राईल, तुम्हें इबादत करनी चाहिए **अल्लाह**; मेरे रब* और तुम्हारे रब की•" जो कोई कायम करते हैं किसी बुत को **अल्लाह** के साथ, **अल्लाह** ने हराम किया है जन्नत उसके लिए, और उसका मुकद्दर है जहन्नम• गुनाहगार के मदद करने वाले नहीं•

73. वाकई काफिरें हैं वो जो कहते हैं कि **अल्लाह** तीसरे हैं एक ट्रिनिटी में• कोई खुदा नहीं सिवाए एक खुदा के• जबतक वो बाज़ न आयें ऐसा कहने से, उनमें से जो कोई कुफ्र करेंगे पायेंगे एक दर्द नाक आज़ाब•

74. क्या वो तौबा नहीं करेंगे **अल्लाह** से, और मांगेंगे उनकी मगफरत? **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

75. मसीहा, मरयम का बेटा, उससे पहले रसूलों कि तरह एक रसूल से ज़्यादा कुछ नहीं, और उसकी माँ एक वली थी• दोनों खाना खाया करते थे• ध्यान दो हम किस तरह आयतों को समझाते हैं उनके लिए, और ध्यान दो वो फिर भी कैसे बहकते हैं!

76. कहो, "क्या तुम **अल्लाह** के अलावा बेबस बुतों कि इबादत करोगे जो नाहीं तुम्हें नुकसान दे सकते हैं, नाहीं तुम्हें फायदा दे सकते हैं? **अल्लाह** हैं सुनने वाले, सबकुछ जानने वाले•"

चुनों तुम्हारे दोस्तों को ध्यान से

77. कहो, "ऐ आसमानी किताब के लोगों, तुम्हारे मज़हब कि हदों को सच्चाई के बाहार पार न करो, और न चलो उन लोगों के रायों पर जो गुमराह हुए हैं, और गुमराह किया है कसरत से लोगों को; वो दूर बहक गये हैं सही राह से•"

78. मलामत की गई हैं उनकी जिन्होंने कुफ्र किया बनी इस्राईल में से, दाऊद और ईसा, मरयम के बेटे कि ज़बान से• इसलिए कि उन्होंने नाफरमानी की और हद से निकल गये•

बेपरवाही कि मलामत की गई है

79. उन्होंने एक दूसरे को नहीं रोका बुराई करने से• वाकई आफतज़दा है जो उन्होंने किया•

80. तुम देखोगे उनमें से कईयों को अपने आप को जोड़ते हुए उनके साथ जो कुफ्र करते हैं• वाकई आफतज़दा है वो जो उनके हाथों ने आगे भेजा है उनकी रूहों कि तरफ से• **अल्लाह** उनसे गुस्सा हैं और, इस वजह से, वो हमेशा के लिए रहेंगे आज़ाब में•

81. अगर वो ईमान रखते **अल्लाह** में, और नबी, और उसमें जो उसे नाज़िल हुआ है इसमें, वो उनके साथ दोस्ती न बनाये होते• लेकिन हैं उनमें ज़्यादातर बुरे•

एक बयान हकीकत का

82. तुम पाओगे यहूदियों और बुतपरस्तों को सबसे बुरा दुश्मन ईमानवालों का• और तुम पाओगे दोस्ती में ईमानवालों के सबसे करीब वो लोग जो कहते हैं, "हम हैं ईसाई•" इसलिए कि उनके दरमियान हैं पादरियें और इबादत करने वाले, और वो नहीं हैं मगरूर•

5:72-76 जॉन 20:17 में, हम देखते हैं कि ईसा ने सिखाया कि वो नाहीं था अल्लाह, नाहीं अल्लाह का बेटा• कई मज़हबी आलिमें नतीजे पर पहुँच चुके हैं, एहतियाती तहकीकात के बाद, कि आज का ईसाई मज़हब नहीं है वही ईसाई मज़हब जो ईसा के तरफ से सिखाया गया था• दो सबसे नुमाया किताबें इस मौज़ू पर हैं "द मिथ ऑफ गॉड इनकारनेट" (द वेस्ट मिनिस्टर प्रेस, फिलाडेलफिया, 1977) और "द मिथमेकर" (हारपर एन्ड रो, न्युयॉर्क, 1986)• ऊपर कि ज़िल्द पर "द मिथमेकर" के हम पढ़ते हैं ये जुमला:* *"...हयाम माकोबी पेश करता है नई हुज्जतें इस राय कि हिमायत में कि पॉल, ईसा नहीं, था ईसाई मज़हब का शुरू करने वाला.... वो था पॉल अकेला जिसने पैदा किया एक नया मज़हब उसके इस ख्याल से कि ईसा थे खुदाई निजात दिलाने वाले जो मरे इंसानियत को बचाने के लिए•"***

83. जब वो सुनते हैं उसे जो नाज़िल हुआ था रसूल कि तरफ, तुम देखोगे उनकी आँखे आसुंओं से बहते हुए जैस वो सच्चाई को पहचानते हैं उसमें, और वो कहते हैं, "हमारे रब, हम ईमान लाये, इसलिए गिनिये हमें गवाहों में से•

84. "हम क्यों ईमान न लायें **अल्लाह** में, और सच्चाई में जो हमारे पास आया है, और उम्मीद करते हैं कि हमारे रब दाखिल करें हमें नेक लोगों के साथ?"

85. **अल्लाह** ने इनाम दिया है उन्हें ऐसा कहने के लिए; वो दाखिल करेंगे उन्हें बागों में बहती हुई

नहरों के साथ• वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए• ऐसा है इनाम नेककारों के लिए•

86. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं और ठुकराते हैं हमारी आयतों को, वो हैं रहने वाले जहन्नम के•

हलाल चीज़ों को हराम न करो

87. ऐ ईमानवालो, हराम न करो अच्छी चीजें जो **अल्लाह** कि तरफ से हलाल किये गये हैं, और अदावत न करो; **अल्लाह** अदावत करने वालों को पसंद नहीं करते•

88. और खाओ अच्छी और हलाल चीज़ों से जो **अल्लाह** ने तुम्हारे लिए मुहय्या किया है• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, जिसमें तुम हो ईमानवाले•

न लो अल्लाह
का नाम फुजूल में

89. **अल्लाह** तुम्हें ज़िम्मेदार नहीं ठहराते महेज़ कसमों को कहने के लिए; वो तुम्हें ज़िम्मेदार ठहराते हैं तुम्हारे असल इरादों के लिए• अगर तुम कसम को तोड़ो, तुम्हें कफ्फारा अदा करना चाहिए दस गरीब लोगों को खिलाते हुए उसी ही खाने से जो तुम तुम्हारे खुद के कुम्बे को देते हो, या उन्हें कपड़ा पहनाते हुए, या एक गुलाम को आज़ाद करते हुए• अगर तुम इसकी हैसियत नहीं रख सकते, तो तुम्हें तीन दिनों तक रोज़ा रखना चाहिए• यह कफ्फारा है कसमों को तोड़ने के लिए जिसका तुमने कसम खाया था रखने का• तुम्हें तुम्हारे कसमों को पूरा करना चाहिए• **अल्लाह** इसतरह समझाते हैं उनकी आयतों को तुम्हारे लिए, ताके तुम कद्र करने वाले बन जाओ•

नशे कि चीज़ें और जुआ

हराम करार दिये गये

90. ऐ ईमानवालो, नशे कि चीज़े, और जुआ, और बुतों के चबुतरे, और तुक्के वाले खेल हैं शैतान के घिनौनेपन; तुम्हें उनसे बचना चाहिए, ताके तुम कामयाब हो सको•

91. शैतान तुम्हारे बीच दुश्मनी और नफरत को उकसाना चाहता है नशे कि चीज़ों और जुए के ज़रिये, और ताके फेरे तुम्हें **अल्लाह** को याद करने से, और राबता नमाज़ों (*सलात*) को अदा करने से• क्या तुम फिर बाज़ आओगे?

92. तुम्हें **अल्लाह** की अताअत करनी चाहिए, और तुम्हें रसूल की अताअत करनी चाहिए, और खबरदार• अगर तुम पलट जाओ, फिर जानो कि हमारे रसूल का सिर्फ काम है पैगाम को अच्छी तरफ पहुँचाना•

93. जो कोई ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं कोई खता नहीं उठाते खाते हुए कोई खाना, बर्शते के वो एहकामों को ध्यान में रखें, ईमान रखें और एक नेक ज़िंदगी बसर करें, फिर उनकी परहेज़गारी और अकीदे को बरकरार रखें, और जारी रहें परहेज़गारी और नेककारी का ख्याल करते हुए• **अल्लाह** चाहते हैं नेककारों को•

शिकार कि हिफाज़त

94. ऐ ईमानवालो तुम, **अल्लाह** तुम्हें तुम्हारे हाथों कि पहुँच में कुछ शिकार और तुम्हारे तीरों के साथ आज़मायेंगे (*हज के दरमियान*)• **अल्लाह** इसतरह फरक करते हैं तुम्हारे बीच उनको जो उन्हें ध्यान में रखते हैं उनकी तन्हाई में• जो कोई हद से निकलता है इसके बाद पाया है एक दर्दनाक आज़ाब•

95. ऐ ईमानवालो, न मारो किसी शिकार को हज के दौरान• कोई भी जो मारे किसी शिकार को जानबूझकर, उसका हरजाना उतने ही मवेशी जानवरों का अदद होना चाहिए जितने शिकारी जानवरों को उसने मारा• फैसला किया जाना चाहिए तुम में से दो दुरूस्त लोगों कि तरफ से• उन्हें ध्यान रखना चाहिये कि कुरबानियाँ *काबा* को पहुँचती हैं• वरना, वो कफ्फारा अदा कर सकता है गरीब लोगों को खिलाते हुए, या एक बराबरी वाले रोज़े से उसके जुर्म का कफ्फारा अदा करने के लिए• **अल्लाह** ने पिछले जुर्मो को माफ किया है• लेकिन अगर कोई लौटता है ऐसे एक जुर्म कि तरफ,

अल्लाह उसका बदला लेंगे• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, बदला लेने वाले•

सारी मखलूकें
समंदर की हलाल हैं खाने के लिए

96. सारी मछलियाँ समंदर की तुम्हारे खाने के लिए हलाल की गई हैं• हज के दौरान, ये तुम्हारे लिए मुहय्या कर सकते हैं तुम्हारे सफर के दौरान• तुम्हें पूरे हज के दौरान शिकार नहीं करना चाहिए• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, जिनके सामने तुम हाज़िर किए जाओगे•

97. **अल्लाह** ने मुहद्दस मस्जिद,* *कावा*, को एक हिफाज़त कि जगह मुकर्रर की है लोगों के लिए, और मुकद्दस महीने भी, कुरवानियाँ (*मुकद्दस मस्जिद को*), और उनको निशान करती हारें• तुम्हें मालूम होना चाहिए कि **अल्लाह** आसमानों और ज़मीन में सारी चीज़ों को जानते हैं, और ये कि **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले•

98. जानों कि **अल्लाह** सख्त हैं आज़ाब नाफिज़ करने में, और ये कि **अल्लाह** हैं माफ करने वाले सबसे रहीम•

99. रसूल का सिर्फ काम है पैगाम को पहुँचाना, और **अल्लाह** जानते हैं सारी चीज़े जो तुम ऐलान करते हो और सारी चीज़ें जो तुम छिपाते हो•

100. ऐलान करो: "बुरा और अच्छा एक जैसा नहीं हैं, अगर बुरे का इफराद तुम्हें मुतास्सिर करे तब भी• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, (*अगर तुम कम तादाद में हो तब भी*) ऐ तुम अक्ल रखने वालो, ताके तुम कामयाब हो सको•"

101. ऐ ईमानवालो, न पूछो मसलों के बारे में जो, अगर तुम्हें बताया जाये वक्त से पहले, तुम्हें तकलीफ देगा• अगर तुम उनके बारे में पूछो कुरान कि रौशनी में, वो तुम्हें ज़ाहिर हो जायेंगे• **अल्लाह** ने उन्हें जानबूझकर नज़रअंदाज़ किया है• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, रहीम•

102. तुमसे पहले दूसरों ने वैसे ही सवालों को पूछा है, फिर उसमें कुफ्र करने वाले बन गये•

103. **अल्लाह** ने हराम नहीं किया मवेशी जानवर जो जनती है खास नरों और मादाओं के जोड़ों को, नाहीं आज़ाद किये गये कसम के ज़रिये मवेशी जानवर, नाहीं एक जो जनती है दो नरों को लगातार, नाहीं सांड़ जो पैदा करता है दस• ये तो काफिरें हैं जिन्होंने ऐजाद किया है ऐसे झूठों को **अल्लाह** के बारे में• उनमें से ज़्यादातर नहीं समझते•

न चलो तुम्हारे वालिदैन के मज़हब पर
आँख बंद करके

104. जब उनसे कहा जाता है, "आओ उसके पास जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया है, और रसूल कि तरफ," वो कहते हैं, "हमने जो हमारे वालिदैन को करते हुए पाया है हमारे लिए काफी•" क्या अगर उनके वालिदैन कुछ नहीं जानते थे, और नहीं थे हिदायत याफता?

**5:97*बुत परस्ती करते हुए मुसलमानों ने नबी कि कब्र को मुकद्दस करार देते हुए दो "मुकद्दस मस्जिदों" को नाफिज़ किया है• कुरान सिर्फ एक मुकद्दस मस्जिद के बारे में बात करता है•*

105. ऐ ईमानवालो, तुम्हें सिर्फ तुम्हारे गर्दनों के बारे में फिकर करनी चाहिए• अगर दूसरे गुमराह होते हैं, वो तुम्हें तकलीफ नहीं पहुँचा सकते, जब तक तुम हिदायतयाफ्ता हो• **अल्लाह** कि तरफ है तुम्हारा आखरी मुकद्दर, तुम सभी का, फिर वो तुम्हें इत्तेला देंगे सारी चीज़ों का जो तुमने किया था•

गवाह बनते हुए एक वसीयत का

106. ऐ ईमानवालो, वसीयत का गवाह बनते हुए जब तुम में से एक मर रहा हो होना चाहिए तुम में से दो दुरूस्त लोगों कि तरफ से• अगर तुम सफर कर रहे हो, तो दूसरे दो गवाह बन सकते हैं• राबता नमाज़ (*सलात*) अदा करने के बाद, गवाहों को अल्लाह कि कसम खाने दो, तुम्हारे शकों को हल्का करने के लिए: "हम इसे ज़ाती फायदों को हासिल करने के

लिए इस्तेमाल नहीं करेंगे, अगर चे वसीयत करने वाला हमारा रिश्तेदार ही क्यों न हो• नाहीं हम छिपायेंगे **अल्लाह** कि शहादत• वरना, हम होंगे गुनहगार•"

107. अगर गवाहें पाये जायें एक तरफा होने के मुजरिम, तो दूसरे दो को पूछा जाना चाहिए उनकी जगह लेने के लिए• चुनो दो शक्सों को जो शिकार बने थे पहले गवाहों के ज़रिये, और उन्हें **अल्लाह** कि कसम खाने दो: "हमारी शहादत उनसे ज़्यादा सच्ची है; हम एक तरफा न होंगे• वरना, हम होंगे खतावार•"

108. ये ज़्यादा दुरूस्त है उनकी तरफ से सच्ची शहादत की हौसलाअफज़ाई करने के लिए, डरते हुए कि उनकी कसम भी नज़रअंदाज़ की जा सकती है पिछले गवाहों कि तरह• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना और सुनना चाहिए• **अल्लाह** गुनाहगारों को हिदायत नहीं देते•

मुरदा रसूलें
बिल्कुल नावाकिफ

109. दिन आयेगा जब **अल्लाह** हाज़िर करेंगे रसूलों को और उनसे पूछेंगे, "कैसा था जवाब तुम्हारी तरफ?" वो कहेंगे, "हमें कोई इल्म नहीं• आप हैं जानने वाले सारे राज़ों के•"

110. **अल्लाह** कहेंगे, "ऐ ईसा, मरयम का बेटा, याद करो मेरी रहमतों को तुझ पर और तेरी माँ पर• मैंने मदद की तेरी मुकद्दस रूह के साथ, काबिल करने के लिए तुझे पालने से लोगों को बात करने के लिए, इसके अलावा सियानेपन में• मैंने सिखाया तुझे आसमानि किताब, हिकमत, तौरेत, और इंजील• याद कर कि तूने मिट्टी से पैदा किया एक चिड़िया का ढांचा मेरी मरज़ी से, फिर फूंका उसमें, और वो एक ज़िंदा चिड़िया बन गयी मेरी मरज़ी से• तूने ठीक किया अंधे और कोहणियों को मेरी मरज़ी से, और मुरदों को जिंदा किया मेरी मरज़ी से• याद कर कि मैंने तेरी हिफाज़त की बनी इस्राईल से जो तुझे नुकसान पहुँचाना चाहते थे, इसके बावजूद के गहरे मौजज़ों को तूने उनको दिखाया• उनमें से काफिरों ने कहा, 'ज़ाहिर है ये जादू है•'

111. "याद कर कि मैंने इल्हाम किया पैरवी करने वालों को: 'तुम्हें ईमान रखना चाहिए मुझ में और मेरे रसूल में•' उन्होंने कहा, 'हम ईमान लाये हैं, और गवाह रहो कि हम फरमानबरदार हैं•' "

दावत

112. याद कर कि पैरवी करने वालों ने कहा, "ऐ ईसा मरयम के बेटे, क्या तुम्हारे रब आसमान से हमारे लिए नीचे एक दावत भेज सकते हैं?" उसने कहा, "तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, अगर तुम हो ईमानवाले•"

113. उन्होंने कहा, "हम उससे खाना चाहते हैं, और हमारे दिलों को दोबारा यकीन दिलाना चाहते हैं, और यकीन तौर पर जानने के लिए कि तुमने हमसे सच कहा है• हम उसके मुताल्लिक गवाहों जैसा काम करेंगे•

बड़े मौजज़े लाते हैं
*बड़ी ज़िम्मेदारी**

114. मरयम का बेटा, ईसा ने कहा, "हमारे खुदा, हमारे रब, भेजिये हमारे लिए नीचे एक दावत आसमान से• उसे हम में से हर एक के लिए लाने दीजिये ज़्यादा, और एक निशानी आप की तरफ से• मुहय्या करिये हमारे लिए; आप हैं सबसे अच्छे मुहय्या करने वाले•"

115. **अल्लाह** ने कहा, "मैं नीचे भेज रहा हूँ उसे• तुम में से कोई भी कुफ्र करे इसके बाद, मैं सज़ा दूंगा उसे ऐसा जैसे मैंने नहीं दिया सज़ा किसी और को•"*

हश्र के दिन पर

116. **अल्लाह** कहेंगे, "ऐ ईसा, मरयम का बेटा,* क्या तूने लोगों से कहा, 'बनाओ मुझे और मेरी माँ को बुतों जैसा

अल्लाह के साथ?' " वो कहेगा, "आपकी बड़ाई हो• मैं ज़बान पर नहीं ला सकता था वो जो सही नहीं था• अगर मैंने उसे कहा होता, आप पहले से ही उसे जान लेते• आप जानते हैं मेरे ख्यालों को, और मैं नहीं जानता आपके ख्यालों को• आप जानते हैं सारे राज़ों को •

117. "मैंने कहा उनसे सिर्फ वही जो आपने मुझे हुक्म दिया, कि: 'तुम्हें मेरे रब और तुम्हारे रब की **अल्लाह**, कि इबादत करनी चाहिए•' मैं एक गवाह था उस वक्त तक जबतक मैं रहा उनके साथ• जब आपने खत्म किया मेरी ज़िंदगी ज़मीन पर, आप उनकी निगरानी करने वाले हो गये• आप सारी चीज़ों के गवाह होते हैं•

118. "अगर आप उन्हें सज़ा दें, वो हैं आप के बंदे• अगर आप उन्हें माफ करें, आप हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•"

119. **अल्लाह** ऐलान करेंगे, "यह है दिन जब सच्चा बचाया जायेगा उनकी सच्चाई कि वजह से•" वो मुस्तहेक हुए हैं बहती हुई नहरों के साथ बागों के• वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए• **अल्लाह** उनसे राज़ी हैं, और वो उनसे राज़ीं हैं• यह है सबसे बड़ी फतेह•

120. **अल्लाह** के पास है सल्तनत आसमानों और ज़मीन, और उनमें सारी चीज़ों की, और वो हैं कादिरे मुतलक•

****

सुरह 6: मवेशी जानवर (अल-अनाम)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. तारीफ हो **अल्लाह** की, जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और बनाया अंधेरेपन और रोशनी• इसके बावजूद, जो कोई कुफ्र करते हैं उनके रब में जारी रहते हैं भटकने के लिए•

2. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया तुम्हें मिट्टी से, फिर पहले से तय किया तुम्हारी ज़िंदगी कि मुद्दत को, एक ज़िंदगी कि मुद्दत जो है सिर्फ उनको पता• इसके बाजजूद, तुम जारी रहते हो शक करने के लिए•

3. वो हैं वाहिद **अल्लाह** आसमानों और ज़मीन में• वो जानते हैं तुम्हारे राज़ों को और तुम्हारे ऐलानों को, और वो जानते हैं सारी चीज़ें तुम कमाते हो•

4. चाहे किसी भी किस्म का सबूत आता है उनके पास उनके रब कि तरफ से, वो उससे पलट जाते हैं, नफरत में•

5. चुँकि उन्होंने ठुकराया सच को जब वो आया उनकी तरफ, उन्होंने उनके बेपरवाही के नतीजों को पाया है•

**5:114-115 कुरान का ज़बरदस्त मौजज़ा (अपेन्डिक्स एक) बयान किया गया है 74:35 में "बड़े मौजज़ों में से एक" जैसा, और लाता है उसके साथ एक गैरमामूली बड़ी ज़िम्मेदारी•*

**5:116 ये काबिलेगौर है कि कुरान मुसलसल ईसा को "मरयम का बेटा" पुकारता है और इंजील पुकारता है उसे "आदमी का बेटा•" अल्लाह जानते थे कि कुछ बेअदबी करेंगे और पुकारेंगे उसे "अल्लाह का बेटा"!*

6. क्या उन्होंने नहीं देखा उनसे पहले कितनी नस्लों को हमने फना किया है? जितना हमने तुम्हारे लिये किया उससे ज़्यादा हमने उन्हें फरागदिली से, ज़मीन पर कायम किया, और हमने उनको रहमतों के साथ बरसाया, और हमने मुहय्या किया उन्हें बहती नहरों के साथ• हमने फिर फना किया उन्हें उनके गुनाहों कि वजह से, और हमने बदल दिया दूसरी नस्ल को उनके जगह में•

7. अगर हम भेजते नीचे उनकी तरफ एक जिस्मानी किताब, लिखा हुआ कागज़ पर, और वो छूते उसे उनके हाथों से तब भी, वो जिन्होने कुफ्र किया कहते, "ये चालाक जादू से ज़्यादा कुछ नहीं•"

8. उन्होंने ये भी कहा, "अगर सिर्फ एक फरिश्ता आ सकता नीचे उसके साथ!" अगर हमने भेजा होता एक फरिश्ता, सारे मामले खत्म कर दिये गये होते, और वो कभी भी राहत नहीं पाते•

ज़रूरतें आज़माईश की

9. अगर हमने एक फरिश्ता भेजा होता, हमने भेजा होता उसे एक आदमी के सूरत में, और हमने रखा होता उन्हें उतना ही परेशान जितना परेशान वो अब हैं•

10. तुमसे पहले रसूलों का मज़ाक उड़ाया गया है, ये वो हैं जिन्होंने उनकी हंसी उड़ाई और उनके मज़ाक उड़ाने के नतीजों को झेला•

11. कहो, "घूमो ज़मीन पर और ध्यान दो ठुकराने वालों के लिए नतीजों को•"

12. कहो, "किसकी हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में?" कहो, "**अल्लाह** की•" उन्होंने मुकर्रर किया है कि रहम है उनकी सिफत• वो यकीनन तुम सारों को हाज़िर करेंगे हश्र के दिन पर, जो है अटल• वो जो खोते हैं उनकी रूहों को हैं वो जिन्होंने कुफ्र किया•

13. उनकी हैं सारी चीज़ें जो बसती है रात और दिन में• वो हैं सुनने वाले, जाननेवाले•

14. कहो, "क्या मैं कबूल करूं **अल्लाह** के अलावा एक रब और मालिक जैसा, जब के वो हैं आसमानों और ज़मीन के शुरू करने वाले, और वो खिलाते हैं लेकिन खिलाये नहीं जाते?" कहो, "मुझे हुक्म हुआ है सबसे ताबेदार फरमानबरदार होने, और, 'एक बुत परस्त न होने का•' "

15. कहो, "मैं डरता हूँ, अगर मैं नाफरमानी करूं मेरे रब कि, आज़ाब एक ज़बरदस्त दिन का•

16. "जो कोई बचाया जायेगा (*आज़ाब से*), उस दिन पर, हासिल कर लिया है उनका रहम• और ये है सबसे बड़ी फतेह•"

सिर्फ अल्लाह काबू करते हैं खुशी

17. अगर **अल्लाह** छूते हैं तुम्हें मुसीबत से, कोई नहीं निजात दे सकता है सिवाय उनके• और अगर वो छूते हैं तुम्हें रहमत से, वो हैं कादिरे मुतलक•

18. वो सबसे आला हैं उनके मखलूको पर• वो हैं सबसे हकीम, सब कुछ जानने वाले•

कुरान, पूरा कुरान
और कुरान के अलाव कुछ नहीं

19. कहो, "किसकी शहादत है सबसे बड़ी?" कहो, "**अल्लाह** की• वो हैं गवाह मेरे और तुम्हारे बीच कि यह कुरान* मुझे इल्हाम की गई है, तुम्हें तकरीर करने के लिये और जिस किसी को ये पहुँचे• वाकई, तुम गवाही देते हो कि दूसरे खुदाएं हैं* **अल्लाह** के सिवाय•" कहो, "मैं गवाही नहीं देता जैसी तुम देते हो; सिर्फ एक खुदा है, और मैं ठुकराता हूँ तुम्हारी बुतपरस्ती को•"

20. उन्हें जिनको हमने दिया है आसमानी किताब पहचानते हैं इसे जैसे वो उनकी खुदकी औलादों को पहचानते हैं• वो जो खोते हैं उनकी रूहों को हैं वो जो ईमान नहीं रखते•

**6:19 ये आयत ऐलान करती है कि सिर्फ कुरान मज़हबी हिदायत का सर चश्मा है• जो कोई बरकरार रखते हैं इसके अलावा ज़रियों को, जैसे हदीस और सुन्नत (झूट मंसूब किये गये नबी को), वाज़े किये गये हैं बुतपरस्तों जैसे•*

21. कौन ज़्यादा बुरा है उससे जो झूठ कहता है **अल्लाह** के बारे में, या ठुकराता है उनकी आयतों को? खता करने वाले कभी कामयाब नहीं होते•

बुतपरस्ती करने वाले इंकार करते हैं
उनकी बुतपरस्ती

22. उस दिन जब हम उन सारों को हाज़िर करेंगे, हम पूछेंगे बुतपरस्ती करने वालों को, "कहाँ है बुतें जिनको तुमने कायम किया?"•

23. उनका आफत अंगेज़ जवाब होगा, "**अल्लाह** कि कसम हमारे रब, हम कभी बुतपरस्ती करने वाले न थे•"*

24. ध्यान दो कैसे उन्होंने अपने आप को झुठलाया, और उनके ऐजाद किये गये बुतों ने उन्हें छोड़ दिया•

25. उनमें से कुछ तुम्हें सुनते हैं, लेकिन हम उनके दिलों पर परदे डाल देते हैं उन्हें समझने से रोकने के लिए,

और बहरापन उनके कानो में• इसतरह, चाहे वो किसी किस्म का सबूत देखें, वो कभी ईमान नहीं ला सकते• इसतरह, जब वो आते हैं तुम्हारे पास बहेस करने के लिए, काफिरें कहते हैं, "ये कहानियाँ हैं माज़ी से•"

26. वो दूसरों को इस (*कुरान*) से पलटाते हैं, जैसे वो खुद इससे दूर रहते हैं, और इसतरह, वो सिर्फ तवाह करते हैं अपने आप को बगैर समझे•

27. अगर सिर्फ तुम उनको देख सकते जब वो सामना करेंगे जहन्नम कि आग का! वो तब कहेंगे, "गम हो हमपर• आह, काश हम वापस जा सकते, और कभी न ठुकराते हमारे रब कि आयतों को, और जुड़ते ईमानवालों के साथ•"

28. दर हकीकत में, (*वो सिर्फ ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि*) उनके राज़ें फाश हो चुके हैं• अगर वो वापस जायें, वो करेंगे बिल्कुल वही जुर्मों* को• वो झूठे हैं•

29. वो कहते हैं (*छिपे तौर पर*), "हम सिर्फ ये ज़िंदगी जीते हैं; हम फिर जिलाये न जायेंगे•

30. अगर सिर्फ तुम देख सकते उनको जब वो उनके रब के सामने खड़े होंगे! वो कहेंगे, "क्या ये सच नहीं है?" वो कहेंगे, "हाँ, हमारे रब कि कसम•" वो कहेंगे, "तुमने पाया है आज़ाब तुम्हारे कुफ्र कि वजह से•"

31. वाकई खसारा उठाने वाले हैं जो नहीं मानते हैं **अल्लाह** से मिलने का, जब तक वक्त न आजाये उनके पास अचानक, फिर कहेंगे, "हमें बेहद अफसोस है इस दुनिया में हमारी ज़िंदगियों को ज़ाया करने का•" वो उठायेंगे उनके गुनाहों के बोझों को उनके पीठों पर; क्या एक अफसोसनाक बोझ!

हमारी एहमियतों को दोबारा तरतीब करते हुए

32. इस दुनिया कि ज़िंदगी धोखा और गुरूर के अलावा कुछ नहीं, जबके अगली ज़िंदगी का ठिकाना कहीं बेहतर है नेककारों के लिए• क्या तुम नहीं समझते?!

33. हम जानते हैं तुम गमज़दा हो सकते हो उससे जो वो कहते हैं• तुम्हें पता होना चाहिए कि ये तुम नहीं हो जिसे वो ठुकराते हैं; ये तो **अल्लाह** कि आयतें हैं जो गुनाहगार नज़रअंदाज़ करते हैं•

34. तुमसे पहले रसूलों को ठुकराया गया है, और वो पक्केतौर पर सावित कदम रहे ठुकराये जाने कि सूरत में• उन्हें ऐज़ा दिया गया था जबतक हमारी जीत नहीं आई उनके पास• ऐसा है **अल्लाह** का निज़ाम जो कभी नहीं बदलेगा• मेरे रसूलों कि तारीख इस तरह मिसाल कायम करती है तुम्हारे लिये•

**6:23 अब और हमेशा के लिए, बुतपरस्ती करने वाले पुर ज़ोर तरीके से इंकार करते हैं कि वो बुतपरस्ती करने वाले हैं•*

**6:28 ये है इसलिए जैसे ही हम इस दुनियावी पैमाईश में दाखिल होते हैं, हम रूहों कि पैमाईश में हादसों से पूरी तरह बेखबर हो जाते हैं, जहाँ अल्लाह और उनके फरिश्ते, और जन्नत और जहन्नम, देखे जा सकते हैं• इसतरह, मुजरिम उनके रवय्ये को नहीं बदलेगा, उस दायमी पैमाईश को देखने के बाद भी•*

35. अगर उनका ठुकराना तुम्हारे लिए बहुत होता है, तुम्हें पता होना चाहिए कि चाहे तुम एक सुरंग भी खोद लो ज़मीन के पार, या एक सीड़ी भी चढ़ जाओ आसमान में और पेश करो एक मौजज़ा उनके लिए (*वो फिर भी ईमान नहीं लायेंगे*)• अगर **अल्लाह** ने चाहा होता, वो उनको हिदायत दे सकते थे, एक राय से• इसलिए, गाफिलों कि तरह बरताव न करो•

36. सिर्फ वही जवाब देंगे जो सुनते हैं• **अल्लाह** मुर्दों को ज़िंदा करते हैं; वो आखिरकार उनकि तरफ लौटते हैं•

37. उन्होंने कहा, "अगर सिर्फ एक खास निशानी नीचे आ सकती उसके पास उसके रब कि तरफ से!" कहो, "**अल्लाह** काबिल हैं नीचे एक निशानी भेजने के लिए, लेकिन उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते•"

जानवरें और परिंदे:
*फरमानबरदारी करती मखलूकें**

38. सारी मखलूकें ज़मीन पर, और सारे परिंदे जो पंखों के साथ उड़ते हैं, हैं कौमें तुम्हारी तरह• हमने नहीं छोड़ा किसी चीज़ को इस किताब के बाहर•** उनके **रब** कि तरफ, ये सारी मखलूकें हाज़िर किये जायेंगे•

बेइंतेहा मौजज़ा
कुरान का

39. जो कोई हमारे सबूतों को ठुकराते हैं बहरे और गुंगे हैं, पूरे अंधेरे में• जिस किसी को **अल्लाह** चाहते हैं, वो गुमराह कर देते हैं, और जिस किसी को **वो** चाहें, **वो** हिदायत करते हैं एक सीधी राह में•

40. कहो, "क्या अगर **अल्लाह** का आज़ाब आये तुम्हरी तरफ, या वक्त आये तुम्हारी तरफ: क्या तुम **अल्लाह** के अलावा किसी और से इल्तेजा करोगे, अगर तुम हो सच्चे?"

41. हकीकत है: सिर्फ उन्हें तुम इल्तेजा करते हो, और **वो** तुम्हारी दुआ का जवाब देते हैं, अगर **वो** ऐसा चाहें, और तुम भूल जाओ तुम्हारे बुतों को•

42. हमने तुमसे पहले कौमों कि तरफ (*रसूलों को*) भेजा है, और हमने डाला उनको आज़माईश में मुसीबत और मेहनतकशी के ज़रिये, ताके वो इल्तेजा करें•

43. अगर वो सिर्फ इल्तेजा करते जब हमारी आज़माईश ने उनको तकलीफ में डाला! बलिके, उनके दिलें सख्त हो गयें, और शैतान ने सजाया उनके कामों को उनकी आँखों में•

*निज़ाम**

44. जब वो इस तरह नज़रअंदाज़ करते हैं उनको दिये गये पैगाम को, हम खोल देते हैं उनके लिये सारी चीज़ों के दरवाज़ों को• फिर, जैसे ही वो लुत्फ उठाते हैं उसमें जो दिया गया था उनको, हम उन्हें अचानक सज़ा देते हैं; वो बिल्कुल बदहवास रह जाते हैं•

45. गुनाहगार इस तरह फना किये जाते हैं• तारीफ हो **अल्लाह** कि, कायनात के **रब**•

सिर्फ अल्लाह
इबादत के मुस्तहिक

46. कहो, "क्या अगर **अल्लाह** ले लें तुम्हारी सुनाई और तुम्हारी नज़र को, और बंद करदें तुम्हारे ज़हनों को; कौनसा खुदा, **अल्लाह** के अलावा, लौटा सकता इन्हें तुम्हारे लिए?" ध्यान दो हम किस तरह आयतों को समझाते हैं, और ध्यान दो कैसे वो फिर भी फिरते हैं!

**6:38 जानवरे उन मखलूकों में से थे जिन्होंने अल्लाह कि पेशकश का फायदा उठाया तौबा करने के लिये पहला गुनाह करने के बाद (देखें तारुफ)•*

***6:38 कुरान में हमारी आखरत कि दायम ज़िंदगी के मुताल्लिक सारी जानकारी मौजूद है• सच्चे ईमानवाले कबूल करते हैं, बगैर हिचकिचाहट के, अल्लाह का ऐलान: "हमने नहीं छोड़ा किसी चीज़ को इस किताब के बाहर•" एहमियत इस जुमले, और मिलते जुलते जुमलों की, बरअक्स किया गया है इस हकीकत में कि उनसारों में हैं 19 अरबी हुरूफें (अपेन्डिक्स 19)•*

***6:44 इससे पहले कि मुजरिम खिड़की से बाहर फेकें जाते हैं, उन्हें ले जाया जाता है एक ऊँची ज़मीन कि तरफ•*

47. कहो, "क्या अगर **अल्लाह** का आज़ाब आये तुम्हारी तरफ अचानक, या एक ऐलान के बाद, क्या गुनाहगार नहीं हैं जो तबाही मोल लेते हैं?"

रसूलों का किरदार

48. हम नहीं भेजते रसूलों को सिवाए अच्छी खबरें पहुँचाने वाले, साथ साथ आगाह करने वालों जैसा• जो कोई ईमान रखते हैं और इस्लाह करते हैं कुछ नहीं है डरने के लिए, नाहीं वो गमज़दा होंगे•

49. जहाँ तक वो जो ठुकराते हैं हमारी आयतों को, वो पाते हैं आज़ाब उनके गुनाहगारी के लिए•

50. कहो, "मैं तुमको नहीं कहता कि मैं मालिक हूँ **अल्लाह** के खज़ानों का• नाहीं मुझे मुस्तकबिल का

पता है। नाहीं मैं तुम को कहता हूँ कि मैं एक फरिश्ता हूँ। मैं सिर्फ पैरवी करता हूँ उसकी जो मुझे नाज़िल हुआ है।” कहो, “क्या अंधा बराबर उसके जो देखसकता है? क्या तुम गौर नहीं करते?”

51. और नसीहत करो इस (*कुरान*) से उनके लिए जो उनके रब के सामने हाज़िर होने का एहतराम करते हैं — उनके पास नहीं है कोई उनके सिवाए एक रब और मालिक जैसा, नाहीं एक शिफाअत करानेवाला — ताके वो निजात पा सकें।

52. और दफा न करो उनको जो दिन और रात इल्तेजा करते हैं उनके रब से, अपने आप को सिर्फ उनके लिए तावेदार करते हुए। तुम उनके हिसाब के लिए ज़िम्मेदार नहीं, नाहीं वो तुम्हारे हिसाब के लिए ज़िम्मेदार हैं। अगर तुम उन्हें दफा करो, तुम एक खतावार हो जाओगे।

53. हम इसतरह आज़माते हैं लोगों को एक दूसरे से, उन्हें (*मज़ाकिया तौर पर*) कहने देने के लिए, “क्या हम में से ये लोग हैं जो बक्शे गये हैं **अल्लाह** कि तरफ से?” क्या **अल्लाह** वाकिफ नहीं हैं कद्र करने वालों से?

54. जब तुम्हारे पास आयें वो जो ईमान रखते हैं हमारी आयतों में, तुम्हें कहना चाहिए, “*सलामुन अलैकुम*” (*तुम पर सलामती हो*)। तुम्हारे रब ने मुकर्रर किया है कि रहमत है उनकी सिफत। इसतरह, तुम में से जो एक खता करता है गफलत कि वजह से, और तौबा करता है उसके बाद और इस्लाह करता है, फिर वो हैं माफकरने वाले, सबसे रहीम।”

55. हम इस तरह समझाते हैं आयतों को, और बताते हैं गुनाहगारों के रास्तों को।

56. कहो, “मुझे हराम किया गया है इबादत करने से जिसकी तुम **अल्लाह** के साथ इबादत करते हो।” कहो, “मैं तुम्हरी रायों पर नहीं चलूंगा। वरना, मैं बहेक जाऊँगा, और हिदायतयाफता नहीं होऊंगा।”

57. कहो, “मेरे पास पुख्ता सबूत है मेरे रब कि तरफ से, और तुमने उसे ठुकराया है। मैं काबू नहीं करता आज़ाब तुम ललकारते मुझे लाने के लिये। फैसला सिर्फ **अल्लाह** के पास है। वो सच बयान करते हैं, और वो हैं सबसे अच्छे मुनसिफ।”

58. कहो, “अगर मैं काबू करता आज़ाब तुम ललकारते हो मुझे लाने के लिए, सारे मामले काफी पहले खत्म कर दिये गये होते। **अल्लाह** सबसे अच्छा जानते हैं कौन हैं गुनाहगार।”

कादिरे मुतलक अल्लाह

59. उनके पास हैं सारे राज़ों कि चाबियां; कोई नहीं जानता सिवाय उनके। वो जानते हैं ज़मीन पर और समंदर में सारी चीज़ों को। एक भी पत्ता नहीं गिरता वगैर उनके इल्म के। नाही है वहाँ एक दाना मिट्टी कि गहराई में। नाहीं है कोई चीज़ गीली या सूखी, जो ज़वत नहीं किया गया है एक गहरे दफ्तर में।

मौत और दोबारा जिलाना:
*हर दिन**

60. वो हैं वाहिद जो डालते हैं तुम्हें मौत को रात के दरमियान, और जानते हैं तुम्हारे सबसे छोटी हरकतों को भी दिन के दरमियान। वो दोबारा जिलाते हैं तुम्हें हर सुबह, जबतक तुम्हारे जिंदगी कि मुद्दत पूरी नहीं हो जाती, फिर तुम्हारा उनकी तरफ है आखिरकार लौटना। वो फिर तुम्हें इत्तेला करेंगे सारी चीज़ों का तुमने किया था।

61. वो आला हैं उनकी मखलूकों पर, और वो मुकर्रर करते हैं निगेहबानो को तुम्हारी हिफाज़त के लिए। जब मौत का मुकर्रर किया गया वक्त आता है तुम में

से किसी कि तरफ, हमारे रसूलें डालते हैं उसे मौत को बगैर मुलतवी किये•

62. फिर हर कोई लौटाया जाता है **अल्लाह** कि तरफ, उनका हकिकी रब और मालिक• बेशक, वो हैं आखरी मुनसिफ; वो हैं सबसे दुरूस्त हिसाब लेने वाले•

63. कहो, "कौन तुम्हें बचा सकता है ज़मीन या समंदर के अंधेरेपन से?" तुम उनसे इल्तेजा करते हो ज़ोर से और खुफिया तौर पर: "अगर वो बचायें हमें इस बार, हम बन जायेंगे हमेशा के लिये कद्रदान•"

64. कहो, "**अल्लाह** ज़रूर बचाते हैं तुम्हें इस बार, और दूसरे मौकों पर भी, तब तुम फिर भी कायम करते हो बुतों को उनके साथ•"

65. कहो, "वो यकीनन काबिल हैं तुमपर तुम्हारे ऊपर से आज़ाब उंढेलने के लिए, या तुम्हारे पैरों के तले से• या वो तकसीम कर सकते हैं तुम्हें फिरकों में और तुम्हें एक दूसरे की ज़्यादती चखने दें• ध्यान दो हम कैसे समझाते हैं आयतों को, ताके वो समझ सकें•"

66. तम्हारे लोगों ने इसे ठुकराया है, इसके बावजूद कि ये है सच• कहो, "मैं तुमपर एक निगेहबान नहीं हूँ•"

67. सारी पेशीनगोई इसमें गुज़र जायेगी, और तुम यकीनन जान जाओगे•

अल्लाह के लफ्ज़ के लिए इज्ज़त

68. अगर तुम देखो उन्हें जो मज़ाक उड़ाते हैं हमारी आयतों का, तुम्हें चाहिये उनको नज़रअंदाज़ करना जबतक वो दूसरे मौजू में न उलझ जायें• अगर शैतान सबब बने तुम्हारे भूलने का, फिर, जैसे ही तुम्हें याद आये, न बैठो ऐसे बुरे लोगों के साथ•

69. नेककार ज़िम्मेदार नहीं हैं उन लोगों कि बातों के लिए, लेकिन हो सकता है वो मदद करे उनको याद दिलाने का; शायद वो बचाये जा सकें•

70. तुम्हें नज़रअंदाज़ करना चाहिये उन्हें जो उनके मज़हब को फुज़ूल में लेते हैं, जैसे कि वो एक समाजी जलसा है, और हैं पूरी तरह जज़्ब इस दुनियावी जिंदगी में• याद दिलाओ इस (*कुरान*) से, ऐसा न हो कि एक रूह झेले उसके बुरी आमदनियों के नतीजों को• उसके पास नहीं है कोई सिवाय **अल्लाह** जैसे एक रब और मालिक, नाहीं एक शिफाअत करने वाला• अगर वो किसी किस्म का फिदया दे सकता, वो कबूल नहीं किया जायेगा• वो झेलते हैं बुरे कामों के नतीजों को जो वो कमाते हैं; उन्होंने पा लिया है जहन्नमी शरबतों को, और एक दर्दनाक आज़ाब उनके कुफ्र कि वजह से•

71. कहो, "क्या हम इल्तेजा करें, **अल्लाह** के अलावा, जिसके पास नहीं हैं ताकत हमें नफा या हमें तकलीफ पहुँचाने की, और पलट जायें हमारे ऐड़ियों के बल पर **अल्लाह** ने हमें हिदायत दिया उसके बाद? उस हालत में, हम साथ हो जायेंगे उनके साथ जो काबू किये गये हैं शयातीन के ज़रिये, और हो जायेंगे पूरी तरह परेशान, जबके उनके रफीकें कोशिश करते हैं उनको बचाने की: 'रहो हमारे साथ सीधी राह पर•' " कहो, "**अल्लाह** कि हिदायत है सही हिदायत• हमें कायनात के रब का फरमानबरदार होने का हुक्म किया गया है•

**6:60 नेककार असल में मरते नहीं; वो जाते हैं सीधे वही जन्नत में जहाँ आदम और हव्वा एक बार रहे थे• गैरनेककार मरते हैं और महसूस करते हैं एक डरावना ख्वाब जो जारी रहता है हश्र के दिन तक (देखें 2:154, 3:169, 8:24, 16:32, 22:58, 36:26-27, 40:46, 44:56, और अपेन्डिक्स 17)•*

72. "और रावता नमाज़ें (*सलात*) अदा करने के लिए, और उनका एहतराम करने के लिए — वो हैं वाहिद जिनके सामने तुम हाज़िर किये जाओगे (*हिसाब के लिए*)•"

73. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, सच्चाई से• जब भी वो कहते हैं, "हो," वो हो जाता है• उनका लफ्ज़ है कामिल सच• सारी बादशाहत उनकी होगी जिस दिन सुर फूंका जायेगा• जाननेवाले सारे राज़ों और ऐलानों के, वो हैं सबसे हकीम, सब जाननेवाले•

इब्राहीम बहेस करता है
बुतपरस्ती करने वालों के साथ

74. याद करो इब्राहीम ने उसके वालिद अज़र से कहा, "तुम कैसे मूर्तियों कि इबादत कर सकते हो खुदाओं जैसी? मैं देख रहा हूँ तुम और तुम्हारे लोग दूर बहेक गये हैं•"

75. हमने दिखाये इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन के अजूबे, और बक्शा उसे यकीन के साथ:

76. जब रात पड़ी, उसने देखा एक चमकता हुआ नज्म• "शायद ये हैं मेरे रब ," उसने कहा• जब वो गायब हुआ, उसने कहा, "मैं पसंद नहीं करता (*खुदाओं को*) जो गायब होते हैं•"

77. जब उसने चांद को चढ़ते हुए देखा, उसने कहा, "शायद ये हैं मेरे रब!" जब वो गायब हुआ, उसने कहा, "जब तक मेरे रब मुझे हिदायत न दें, मैं होऊंगा गुमराहों के साथ•"

78. जब उसने सूरज को चढ़ते हुए देखा, उसने कहा, "ये मेरे रब होने चाहियें• ये है सबसे बड़ा•" लेकिन जब वो डूब गया, उसने कहा, "ऐ मेरे लोग, मैं ठुकराता हूँ तुम्हारी बुतपरस्ती को•

79. "मैंने पूरे तौरपर अपने आप को तावेदार किया है उस वाहिद के लिए जिन्होंने शूरू किया है आसमानों और ज़मीन को; मैं कभी भी बुतपरस्त नहीं होऊंगा•"

80. उसके लोगों ने उससे बहेस किया• उसने कहा, "क्या तुम मुझसे **अल्लाह** के बारे में बहेस करते हो, इसके बाद के उन्होंने मुझे हिदायत दी है? मुझे कोई डर नहीं बुतों का जो तुम कायम करते हो• मुझे कुछ नहीं हो सकता, जबतक मेरे रब न चाहें• मेरे रब का इल्म सारी चीज़ों को घेरे में लेता है• क्या तुम असर न लोगे?

81. "क्यों मुझे तुम्हारे बुतों से डरना चाहिये? ये तो तुम हो जिन्हें डरना चाहिये, चुंकी तुम इबादत करते हो **अल्लाह** के बजाये बुतों कि जो हैं पूरी तरह बेबस तुम्हारी मदद करने के लिए• कौन सी तरफ है ज़्यादा मुस्तेहिक हिफाज़त की, अगर तुम जानते?"

मुकम्मल हिफाज़त ईमानवालों के लिए

82. जो कोई ईमान रखते हैं, और खराब नहीं करते उनके अकीदे को बुतपरस्ती से, मुस्तेहिक हुए हैं मुकम्मल हिफाज़त की, और वो हैं असल तौर पर हिदायतयाफ्ता•

83. ऐसी थी हमारी बहेस, जिस से हमने मदद की इब्राहीम की उसके लोगों के खिलाफ• हम बुलंद करते हैं जिस किसी को हम चाहें ऊंचे दरजों को• तुम्हारे रब हैं सबसे हकीम, सब कुछ जानने वाले•

84. और हमने उसे अता किया इसहाक और याकूब, और हमने दोनों कि हिदायत की• उसी तरह, हमने हिदायत की नुह कि उस से पहले, और उसकी औलादों से (*हमने हिदायत की*) दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, युसुफ, मूसा, और हारून की• हम इस तरह इनाम देते हैं नेककारों को•

85. इसके अलावा, ज़करिया, याहया, ईसा, और इल्यास की; सारे थे नेककार•

86. और इस्माईल, यसा, युनुस, और लूत; हमने इसमें से हर एक को फज़ीलत दी सारे लोगों पर•

87. उनके पुरखों, उनके औलादें, और उनके भाईयो बहनों में से, हमने चुना कईयों को, और हमने हिदायत की उनकी एक सीधी राह में•

88. ऐसी है **अल्लाह** कि हिदायत, जिसके साथ वो हिदायत करते हैं जिस किसी को वो चुनते हैं उनके बंदो में से• अगर उनमें से कोई बुतपरस्ती में गिरा होता, उनके आमालें ज़ाया कर दिये गये होते•

89. वो थे जिनको हमने दिया है किताब, हिकमत, और नबूवत• अगर ये लोग ईमान न लायें, हम बदल देंगे दूसरों को उनकी जगह में, और नये लोग न होंगे काफिरें•

90. ये हैं जो हिदायतयाफ्ता हैं **अल्लाह** कि तरफ से; तुम्हें उनके नक्शो कदम पर हिदायतयाफ्ता होना चाहिए• कहो, "मैं तुमसे कोई मुआवज़ा नहीं मांगता• लेकिन ये है एक पैगाम सारे लोगों के लिए•"

अल्लाह के पैगामें दुनिया कि तरफ

91. उन्होंने कभी एहमियत नहीं दिया **अल्लाह** को जैसा उन्हें एहमियत दिया जाना चाहिए• इसतरह, उन्होंने

कहा, "**अल्लाह** नाज़िल नहीं करते कोई चीज़ किसी इंसान को•" कहो, "फिर किसने नाज़िल किया आसमानी किताब जो मूसा लाया, रौशनी और हिदायत के साथ लोगों के लिए?" तुम नीचे लिखते हो कागज़ पर उसे ऐलान करने के लिए, जबके उसमें से काफी छिपाते हुए• तुम्हें वो सिखाया गया था जो तुम्हें कभी नहीं था पता — तुम और तुम्हारे वालिदैन• कहो, "**अल्लाह** (*हैं वाहिद जिन्होंने उसे नाज़िल किया*)," फिर उनको छोड़ देते हैं उनकी लापरवाही में, खेलते हुए•

92. ये भी है एक मुबारक आसमानी किताब जिसे हमने नाज़िल किया है, तसदीक करते हुए पिछली आसमानी किताबों की, ताके तुम ताकीद कर सको सबसे एहम कौम* को और दूसरे सारे उसके इर्दगिर्द• जो कोई अगली ज़िंदगी में ईमान रखते हैं ईमान लायेंगे इस (*आसमानी किताब*) में, और राबता नमाजों (*सलात*) को कायम करेंगे•

झूठे रसूलों कि मलामत की गई है

93. कौन है उससे ज़्यादा बुरा जो झूठों को बनाता और उन्हें **अल्लाह** को सुर्पुद करता है, या कहता है, "मुझे मिला है खुदाई इल्हाम," जबके उसे ऐसा कोई इल्हाम नहीं दिया गया था, या कहता है, "मैं लिख सकता हूँ **अल्लाह** कि आयतों जैसा"? अगर सिर्फ तुम देख सकते खतावारों को मौत के वक्त! फरिश्ते बढ़ाते हैं उनके हाथों को उनकी तरफ, कहते हुए, "निकल जाने दो तुम्हारी रूहों को• आज, तुमने पाया है एक शर्मनाक आज़ाब **अल्लाह** के बारे में सच के अलावा कहने के लिए, और काफी मगरूर होने के लिए उनकी आयतों को कबूल करने से•

94. "तुम आये हो वापस हमारी तरफ तन्हा जैसे, जैसा हमने पैदा किया तुम्हें पहली बार, और तुम छोड़ आये हो पीछे वो जो हमने मुहय्या किया था तुम्हारे लिए• हम नहीं देखते तुम्हारे साथ शिफाअत करने वाले जिनको तुमने बुत बनाया था और दावा किया की वो तुम्हारी मदद करेंगे• सारे नाते तुम्हारे बीच तोड़ दिये गये हैं; बुतें जिनको तुमने कायम किया तुम्हें छोड़ गये•"

अल्लाह की बुलंदी

95. **अल्लाह** हैं वाहिद जो सबब बनाते हैं दानों और बीजों को फटने और उगने का• वो पैदा करते हैं ज़िंदे को मुरदा से, और मुरदे को ज़िंदा से• ऐसे हैं **अल्लाह**; तुम कैसे भटक सकते हो!

96. तुलू होते ही, वो सुबह को निकलने देते हैं• उन्होंने रात को ठहरा बनाया, और उन्होंने सूरज और चाँद को हिसाब करने वाले औज़ारों जैसा काम करने के लिए बनाया• ऐसी है नक्शकारी कादिरे मुतलक , सब कुछ जानने वाले की•

**6:92 आज की "सबसे एहम कौम" है अमेरिका, जहाँ अल्लाह का पैगाम दुरूस्त किया जा रहा है• जब कुरान नाज़िल हुआ था, मक्का था सबसे एहम कौम•*

97. और वो हैं वाहिद जिन्होंने बनाया सितारों को अंधेरे में, ज़मीन पर और समंदर पर तुम्हारी रहनुमाई करने के लिए• हम इस तरह आयतों को वाज़े करते हैं लोगों के लिए जो जानते हैं•

98. उन्होंने शुरू किया तुम्हें एक शक्स से, और तय कर दिया तुम्हारा रास्ता, इसके अलावा तुम्हारी आखरी तकदीर• हम इस तरह आयतों को वाज़े करते हैं लोगों के लिए जो समझते हैं•

99. वो हैं वाहिद जो भेजते हैं नीचे आसमान से पानी, जिससे हम पैदा करते हैं सारे किस्मों के पौधे• हम पैदा करते हैं हरी चीज़ से बड़ी तादाद के पेचीदे दाने, नख्ल के दरख्तें लटकते हुए गुच्छों के साथ, और बागें अंगूरों, ज़ैतूनों और अनार के; फलें जो हैं एक जैसे, फिर भी मुखतलिफ• ध्यान दो उनके फलों को जैसे वो उगते और पकते हैं• ये हैं निशानियाँ लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं•

100. इसके बावजूद, वो कायम करते हैं बुतों को **अल्लाह** के साथ जिनों में से, हाँलाकि वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया है उनको• वो यहाँ तक उनको बेटे और बेटियाँ मनसूब करते हैं, बगैर किसी इल्म के• उनकी तारीफ हो• वो हैं सबसे आला, उनके दावों से कहीं ऊपर•

101. आसमानों और ज़मीन के शुरू करने वाले• कैसे उनको एक बेटा हो सकता है, जबके उनके पास कभी नहीं था एक जोड़ा? उन्होंने पैदा किया सारी चीज़ों को, और वो हैं सारी चीज़ों से पूरी तरह वाकिफ•

अल्लाह

102. ऐसे हैं **अल्लाह** तुम्हारे रब, कोई खुदा नहीं सिवाय उनके, सारी चीज़ों के पैदा करने वाले• तुम्हें सिर्फ उनकी इबादत करनी चाहिए• सारी चीज़ें उनके काबू में हैं•

103. कोई नज़रें उनको घेरे में नहीं ले सकती, लेकिन वो घेरे में लेते हैं सारी नज़रों को• वो हैं शफीक, सब कुछ जानने वाले•

104. रौशन करने वाला इल्म आ चुका है तुम्हारे पास तुम्हारे रब कि तरफ से• जहाँ तक वो जो देख सकते हैं, वो ऐसा करते हैं उनके खुद के अच्छे के लिए, और जो कोई अंधे बन जाते हैं, ऐसा करते हैं उनके खुद के नुकसान के लिए• मैं तुम्हारा निगेहबान नहीं•

105. हम इस तरफ आयतों को समझाते हैं, साबित करने के लिए कि तुमने पाया है इल्म, और उनको वाज़े करने के लिए उन लोगों के लिए जो जानते हैं•

106. पैरवी करो जो तुम्हें नाज़िल किया गया है तुम्हारे रब कि तरफ से, कोई खुदा नहीं सिवाए उनके, और नज़र अंदाज़ करो बुतपरस्तों को•

107. अगर **अल्लाह** चाहते, उन्होंने बुतों कि इबादत न की होती• हमने तुम्हें उनका निगेहबान जैसा मुकर्रर नहीं किया, नाहीं हो तुम उनके वकील•

108. न कोसो बुतों को जिन्हें वो कायम करते हैं **अल्लाह** के साथ, जब तक वो बेअदबी न करें और **अल्लाह** को न कोसें, जाहिलियत कि वजह से• हमने सजाया है हर फिरके के आमालों को उनकी आँखों में• आखिरकार, वो लौटते हैं उनके रब कि तरफ, फिर वो उनको इत्तेला करते हैं सारी चीज़ों की जो उन्होंने किया था•

109. वो **अल्लाह** कि कसम खाते हैं, संजीदगी से, के अगर एक मौजज़ा आता उनके पास, वो यकीनन ईमान लाते• कहो, "मौजज़े सिर्फ **अल्लाह** कि तरफ से आते हैं•" तुम तो इतना जानो, अगर एक मौजज़ा आता भी उनके पास, वो जारी रहते कुफ्र करने के लिए•

110. हम उनके ज़हनों और उनके दिलों को काबू करते हैं• इसतरह, चुंकि उनका फैसला है नहीं मानने का, हम उनको उनकी खताओं में, गलती करते हुए छोड़ देते हैं•

एक नतीजा
उनके खुदके फैसले का

111. अगर हम भेजते नीचे फरिश्तों को भी उनकी तरफ; अगर मुर्दे भी उनसे बात करते; अगर हम हाज़िर करते उनके सामने सारे मौजज़ों को भी; वो कभी ईमान नहीं ला सकते जब तक उसे **अल्लाह** न चाहें• यकीनन, उनमें ज़्यादा तर हैं जाहिल•

हदीस और सुन्नत: नबी के
दुश्मनों कि तरफ से झूठें

112. हमने हर नबी के दुश्मनों—इंसान और जिन शयाती को इजाज़त दिया है—ताके एक दूसरे को सजावटी लफ्ज़ों से रागिब करें, धोखा देने के लिए• अगर तुम्हारे रब चाहते, उन्होंने ऐसा नहीं किया होता• तुम्हें नज़रअंदाज़ करना चाहिए उन्हें और उनके झूठों को•

एहम मयार

113. ये इसलिए है कि वो जहनें जो ईमान नहीं रखते अगली ज़िंदगी में सुने ऐसे झूठों को, और उन्हें

कबूल करें, और इसतरह फाश करें उनके असल फितरतों को•*

*कुरान: पूरी तरह तफसील की गई**

114. क्या मैं तलाश करूं **अल्लाह** के बजाए किसी दूसरे से कानून का ज़रिया, जबकि उन्होंने नाज़िल किया है तुमको यह किताब पूरी तरह तफसील की गई?* जिन्होंने पाया है आसमानी किताब पहचानते हैं कि वो नाज़िल किया गया है तुम्हारे रब कि तरफ से, सच्चाई से• तुम्हें किसी शक को पनाह नहीं देना चाहिए•

115. तुम्हारे रब का लफ्ज़ है मुकम्मल,* सच और इंसाफ में• कुछ भी रद्द नहीं कर सकता उनके लफ्ज़ों को• वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

116. अगर तुम ज़मीन पर ज़्यादातर लोगों कि अताअत करो, वो तुम्हें फेर देंगे **अल्लाह** के रास्ते से• वो सिर्फ तुक्केबाज़ी पर चलते हैं; वो सिर्फ अंदाज़ा लगाते हैं•

117. तुम्हारे रब पूरी तरह वाकिफ हैं उनसे जो उनके रास्ते से बहकते हैं, और वो हैं पूरी तरह वाकिफ उनसे जो हैं हिदायतयाफ्ता•

118. तुम्हें खाना चाहिये उससे जिसपर **अल्लाह** का नाम लिया गया है, अगर तुम वाकई ईमान रखते हो उनकी आयतों में•

मौका अल्लाह को याद करने का:

वायन करो अल्लाह का नाम
तुम खाने से पहले

119. क्यों नहीं खाना चाहिए तुम्हें उससे जिसपर **अल्लाह** का नाम बयान किया गया है? उन्होंने तुम्हारे लिए तफसील किया है क्या है हराम तुम्हारे लिए, जब तक तुम्हें मजबूर न किया जा रहा हो• वाकई, कई लोग दूसरों को गुमराह करते हैं उनके खुदके रायों से, बगैर इल्म के• तुम्हारे रब हैं पूरी तरह वाकिफ खतावारों से•

120. तुम्हें बचना चाहिए ज़ाहिर गुनाहों से, साथ साथ छिपे हुओं से• वो जिन्होंने ने गुनाहों को कमाया है यकीनन मुआवज़ा देंगे उनके खताओं के लिए•

121. न खाओ उससे जिस पर **अल्लाह** का नाम बयान नहीं किया गया है, इसलिए कि वो है एक घिनौनापन• शयातीन उनके साथीयों को रागिब करते हैं तुमसे बहेस करने के लिए; अगर तुम उनकी अताअत करो, तुम बुतपरस्ती करनेवाले बन जाओगे•*

122. क्या वो जो मुर्दा था और हमने अता किया उसे जिंदगी, और मुहय्या किया उसे रौशनी से जो उसे काविल करती है लोगों के बीच चलने के लिए, एकसा है उसके जो है पूरे अंधेरे में जिससे वो कभी नहीं निकल सकता? काफिरों के आमालों को इसतरह सजाया गया है उनकी आँखों में•

**6:113 कुरान मुहय्या करता है मयारें जो कहते हैं हमें क्या हम वाकई ईमान रखते हैं अगली ज़िंदगी में या देते हैं उसे सिर्फ ज़वानी खिदमत• ये एहम मयारें यहाँ बयान किये गये हैं, और 17:45-46 और 39:45 में•*

**6:113-115 बुलंद करना किसी और ज़रिये को कुरान के अलावा झलकाता है कुरान में कुफ्र करना (अपेन्डिक्स 18)•*

**6:121 खुराकी मनाईयाँ कायम किये गये अल्लाह के अलावा किसी और कि तरफ से नुमाइंदगी करती है बुतपरस्ती की•*

123. हम हर कौम के नामवर मुजरिमों को इजाज़त देते हैं मनसूबा और साज़िश करने के लिए• लेकिन वो मनसूबा और साज़िश करते हैं सिर्फ उनकी खुदकी रूहों के खिलाफ, बगैर समझे•

*अल्लाह कि हिकमत पर सवाल करते हुए**

124. जब एक ताकतवर सबूत आता है उनकी तरफ, वो कहते हैं, "हम ईमान नहीं लायेंगे, जबतक हमें नहीं दिया जाता है जो **अल्लाह** के रसूलों को दिया गया है!" **अल्लाह** ठीक ठीक जानते हैं कौन सबसे लायक है उनके पैगाम को पहुँचाने के लिए•* ऐसे मुजरिमें ज़िल्लत झेलेंगे **अल्लाह** के पास, और खौफनाक आज़ाब उनकी बुरी साज़िश का एक नतीजे के तौरपर•

कुरानी इल्म कहीं आगे
*इंसानी तरक्की के**

125. जिस किसी को **अल्लाह** हिदायत देना चाहते हैं, वो चौड़ा खोल देते हैं उसके सीने को फरमानबरदारी के लिए• और जिस किसी को वो

गुमराह करना चाहते हैं, वो कर देते हैं उसके सीने को कट्टर और तंग, जैसे कोई आसमान कि तरफ चढ़ रहा हो•* **अल्लाह** इस तरह लानत रखते हैं उनपर जो इमान लाने के लिए इंकार करते हैं•

126. ये सीधा रास्ता है तुम्हारे रब कि तरफ• हमने आयतों को समझाया है लोगों के लिए जो तवज्जो देते हैं•

127. वो मुस्तहिक हुए है अमन के ठिकाने का उनके रब के पास; वो हैं उनके रब और मालिक, उनके आमालों के लिए एक इनाम जैसा•

128. दिन आयेगा जब वो हाज़िर करेंगे उन सारों को (*और कहेंगे*): "ऐ जिनो, तुमने इफराद में हासिल किया इंसानों को•" उनके इंसान साथी कहेंगे, "हमारे रब, हमने एक दूसरे कि सोहबत में लुत्फ उठाया जब तक हमने जिंदगी कि मुद्दत को ज़ाया नहीं कर दिया जो आपने हमारे लिए तय किया था•" वो कहेंगे, "जहन्नम है तुम्हारा मुकद्दर•" वो रहते हैं वहाँ हमेशा के लिए, **अल्लाह** कि मरज़ी के मुताबिक• तुम्हारे रब हैं हकीम, सब कुछ जानने वाले•

129. हम इस तरह जोड़ बनाते हैं गुनाहगारों को एक दूसरे का साथी होने के लिए, उनके खताओं के लिए एक सज़ा कि तौर पर•

130. ऐ जिनो और इंसानो, क्या तुमने नहीं पाया रसूलों को तुम में से, जिन्होंने बयान किया तुम्हारे लिए मेरी आयतों को, और आगाह किया तुम्हें इस दिन के मिलने के बारे में? वो कहेंगे, "हम खुद के खिलाफ गवाही देते हैं•" वो पूरी तरह मसरूफ थे दुनियावी जिंदगी के साथ, और वो खुद के खिलाफ गवाही देंगे कि वो थे काफिरें•

131. ये है दिखाने के लिए कि तुम्हारे रब कभी फना नहीं करते किसी कौम को बेइंसाफी से, जबके उसके लोग हैं गाफिल•

132. हर कोई हासिल करेगा एक दरजा उनके आमालों के मुताबिक• तुम्हारे रब कभी नावाकिफ नहीं हैं किसी चीज़ से वो करते हैं•

133. तुम्हारे रब हैं वो जो अमीर; सारी रहमत के मालिक• अगर वो चाहें, वो तुम्हें निकाल सकते हैं, और तबदील कर सकते हैं जिस किसी को वो चाहें तुम्हारी जगह में, जिस तरह उन्होंने पैदा किया तुमको दूसरे लोगों कि नस्ल से•

134. जो तुमसे वादा किया गया है गुज़र जायेगा, और तुम उससे कभी नहीं बच सकते•

**6:124 जलन और अना इंसानी सिफतें हैं जो उकसाते हैं कुछ लोगों को अल्लाह कि हिकमत उनके रसूलों को चुनने पर सवाल करने के लिए• बिगड़े मुसलमान आलिमों ने कहा है यही कलमा अल्लाह के वादे का रसूल के ज़रिये नाजिल हुए कुरान के रियाज़ी कोड के मुताल्लिक•*

**6:125 कुरान के नाज़िल होने के सदियों बाद, हम सीखते हैं कि ऑक्सीजन का हिस्सा कम होता जाता है जब हम आसमान कि तरफ चढ़ते हैं, और हम हवा के लिए हांपने लगते हैं•*

135. कहो, "ऐ मेरे लोगों, तुम पूरी कोशिश करो, और उसी तरह मैं भी• तुम्हें यकीनन पता लग जायेगा कौन हैं आखिरकार जीतने वाले•" यकीनन, गुनाहगार कभी कामयाब नहीं होंगे•

अल्लाह कि नियामतों का बुरा इस्तेमाल करते हुए

136. यहाँ तक के वो **अल्लाह** कि नियामतों का एक हिस्सा अनाजों और मवेशी जानवर का अलग रखते हैं, कहते हुए, "ये हिस्सा **अल्लाह** के लिए है," उनके दावों के मुताबिक, "और ये हिस्सा हमारे बुतों के लिए है•" हाँलाकि, जो उन्होंने अलग रखा उनके बुतों के लिए कभी नहीं पहुँचा **अल्लाह** को, जबके हिस्सा जो उन्होंने अलग रखा **अल्लाह** के लिए हरबार गया उनके बुतों को• वाकई अफसोसनाक है उनका फैसला•

137. इस तरह बुत कि इबादत करने वाले धोखा दिए गये थे उनके बुतों के ज़रिए, उनके खुद की औलाद को कत्ल करने कि हद तक•* दरअसल, उनके बुतें उनपर बड़ा दर्द डालते हैं, और उनके

लिए उनके मज़हब को गड़बड़ा देते हैं• अगर **अल्लाह** चाहते, उन्होंने ऐसा नहीं किया होता• तुम्हें उन्हें और उनके झूठों को नज़रअंदाज़ करना चाहिए•

मज़हबी बिदआतें
मलामत किए गये

138. उन्होंने कहा, "ये हैं मवेशी जानवरें और अनाजें जो हराम किए गये हैं; उन्हें कोई न खाये सिवाए जिस किसी को हम इजाज़त दें," तो उन्होंने दावा किया• उन्होंने कुछ मवेशी जानवरों कि सवारी को भी मना किया• यहाँ तक कि मवेशी जानवरें जो उन्होंने खाये, उन्होंने कभी **अल्लाह** का नाम नहीं लिया जब उन्होंने उनको कुरबान किया• ऐसी हैं उनको मनसूब कि गई बिदआतें• वो यकीनन बदला चुकायंगे उनको उनकी बिदआतों के लिए•

139. उन्होंने ये भी कहा, "जो है इन मवेशी जानवरों के पेटों में मखसूस है सिर्फ हम में से मर्दो के लिए, और हराम किए गए हैं हमारी विवीयों के लिए•" लेकिन अगर वो था एक मुर्दा बच्चा, उन्होंने इजाज़त दिया उनकी विवियों को उसमें हिस्सा लेने का• वो यकीनन उन्हें बदला देंगे उनकी बिदआतों के लिए• वो हैं सबसे हकीम, सब चीज़ों के जानने वाले•

140. वाकई हारे हुए हैं वो जिन्होंने कत्ल किया उनके बच्चों को बेवकूफी से, उनके इल्म कि कमी की वजह से, और मना किया उसे जो **अल्लाह** ने उनके लिए मुहय्या किया है, और **अल्लाह** को मनसूब किए गये बिदआतों कि पैरवी की• वो गुमराह हो गये हैं, वो हिदायतयाफ्ता नहीं हैं•

*"फसल के दिन पर"**
ज़कात ज़रूर दिया जाना चाहिए

141. वो हैं वाहिद जिन्होंने कायम किया बागों को, जालीवाले और बगैर जाली वाले, और नख्ल कि दरख्तें, और अनाजे मुख्तलिफ ज़ायकों के, और ज़ैतूनें, अनार — फलें जो हैं एक जैसे, फिर भी मुख्तलिफ• खाओ उनके फलों से, और दो हक वाला सदका फसल के दिन पर,* और ज़ाया न करो कुछ भी• वो पसंद नहीं करते ज़ाया करने वालों को•

142. कुछ मवेशी जानवरें मुहय्या करते हैं तुम्हें सवारी के साथ, बिस्तर के सामान भी• खाओ तुम्हारी तरफ **अल्लाह** कि नियामतों से, और न चलो शैतान के कदमों पर; वो है तुम्हारा संगीन दुश्मन•

**6:137 एक सही मिसाल है बैनल अकवामी बदनाम वाक्या सऊदिया अरब के एक शहज़ादी को मौत कि सज़ा 1978 में मुबय्यना ज़िना के लिए• अल्लाह का कानून कायम करता है कोड़े मारना, मौत कि सज़ा नहीं, ज़िना के लिए एक सज़ा कि तौर पर (24:1-2) जबके बुतपरस्ती वाले कानूने मौत कि सज़ा आएद करते हैं• जैसा बताया गया है 42:21 में, रवायत को मानने वाले पैरवी करते हैं एक मज़हब कि जिसकी इजाज़त नहीं दी गई है अल्लाह की तरफ से•*

**6:141 ज़कात सदका इतना एहम है, सबसे रहम वाले ने महदूद किया है उनकी रहमत उनके लिए जो उसे देते हैं (7:156)• इसके बावजूद, बिगड़े मुसलमानों ने खो दिया है ये सबसे एहम फरमान; वो ज़कात साल में सिर्फ एक बार देते हैं• हम यहाँ देखते हैं कि ज़कात दिया जाना चाहिए "उस दिन पर जब हम आमदनी पाते हैं•" हिस्सा जो आया हमारे पास ईब्राहीम के ज़रिए है 2.5% हमारे खालिस आमदनी का•*

एजाद किए गये खुराकी मनाईयाँ
मलामत किए गए

143. आठ किस्मों के मवेशी जानवरे: दो किस्मों के भेड़, और दो किस्मों के बकरों के मुताल्लिक, कहो, "क्या वो दो नरें हैं जिनको उन्होंने मना किया है, या दो मादायें, या दो मादाओं कि कोखों की चीज़े? बताओ मुझे तुम क्या जानते हो, अगर तुम हो सच्चे•"

144. दो किस्मों के ऊँठें और दो किस्मों के मवेशी के मुताल्लिक, कहो, "क्या वो दो नरें हैं जिनको उन्होंने मना किया है, या दो मादायें, या दो मादाओं कि कोखों की चीज़े? "क्या तुम गवाह थे जब **अल्लाह** ने ऐसे मनाईयों को तुम्हारे लिए फरमान किया? कौन ज़्यादा बुरा है उनसे जो ऐजाद करते हैं ऐसे झूठों को और उन्हें **अल्लाह** को मनसूब करते हैं? वो इसतरह गुमराह करते हैं

लोगों को बगैर इल्म के• **अल्लाह** ऐसे बुरे लोगों को हिदायत नहीं देते•"

*सिर्फ खुराकी मनाईयाँ**

145. कहो, "मैं नहीं पाता मुझ को दी गई आयतों में कोई खाना जो मना किया गया है किसी खाने वाले के लिए सिवाय: (1) मुरदार, (2) दौड़ता हुआ खून, (3) खिनज़िरों के गोश्त*, इसलिए कि वो खराब है, और (4) बेअदबी से अल्लाह के अलावा किसी और को मनसूब किये गये जानवरों के गोश्त•" अगर कोई मजबूर है *(इन्हें खाने के लिए)* बगैर जानबूझकर या कीनावर होते हुए, फिर तुम्हारे रब हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

146. वो जो यहूदी हैं हमने उनके लिए जुड़े हुए खुरों के साथ जानवरों को हराम किया; और मवेशी और भेड़ में से हमने चरबी हराम किया, सिवाय उसके जो लदा है उनके पीठों पर, या आंत में, या हड्डीयों के साथ मिला हुआ• वो था एक आज़ाब उनके खताओं के लिए, और हम हैं सच्चे•

147. अगर वो तुम्हें न माने, फिर कहो, "तुम्हारे रब मालिक हैं लामहदूद रहमत के, लेकिन उनका आज़ाब लाज़िमी है मुजरिम लोगों के लिए•"

148. बुतपरस्ती करने वाले कहते हैं, "अगर अल्लाह चाहते, हम बुतपरस्ती नहीं करते, नाहीं हमारे वालिदैन, नाहीं कोई चीज़ हम हराम करार देते•" इसतरह उनसे पहलों ने कुफ्र किया, जबतक उन्होंने नहीं झेला हमारे आज़ाब• कहो, "क्या है तुम्हारे पास कोई साबित इल्म जो तुम हमें दिखा सकते हो, तुम चलते नहीं हो लेकिन अंदाज़े पर; तुम सिर्फ तुक्का लगाते हो•"

सबसे ताकतवर
*बहेस**

149. कहो, "**अल्लाह** के पास है सबसे ताकतवर बहेस: अगर वो चाहें तुम सारों को वो हिदायत दे सकते हैं•"

150. कहो, "लाओ तुम्हारे गवाहों को जो गवाही दें कि ये या वो हराम किया है **अल्लाह** ने•" अगर वो गवाही दें, उनके साथ गवाही नदो• नाहीं तुम चलो उनके रायों पर जो हमारी आयतों को ठुकराते हैं, और वो जो अगली ज़िंदगी में ईमान नहीं रखते, और वो जो बहेक जाते हैं दूर उनके रब से•

**6:145-146 सिर्फ चार किस्मों के जानवर कि चीज़ें हराम किये गये हैं: जानवरें जो खुदसे मरते हैं, दौड़ता हुआ खून (नहीं फसा हुआ गोश्त के बीच), खिनज़ीरों के गोश्त, और जानवरें उनके पैदाकरने वाले के अलावा किसी और को मनसूब किये गये• आयत 146 हमें इत्तेला करती है कि ऐसी मनाईयाँ हैं बहुत खास; अल्लाह हराम करते हैं या तो "गोश्त" या "चरबी," या दोनो, अगर वो ऐसा चाहें•*

**6:149 कुरान का रियाज़ी कोड है एक काबिले महसूस और निहायत अटल सबूत कि ये है अल्लाह का पैगाम दुनिया को• उसे लगता है खुदाई दखालअंदाज़ी किसी पढ़ने वाले को इस गैरमामुली कुदरत कि तारीफ करने से, फिर सजदे में गिरने, और इस जबरदस्त मौजज़े को कबूल करने से (देखें 17:45-46, 18:57, 56:79, और अपेन्डिक्स एक)•*

बड़े एहकामात

151. कहो, "आओ मुझे तुमको बताने दो तुम्हारे रब ने असल में क्या हराम किया है तुम्हारे लिए: तुम्हें उनके के सिवाए बुतों को कायम नहीं करना चाहिए• तुम्हें तुम्हारे वालिदैन कि इज्ज़त करनी चाहिए• तुम्हें तुम्हारी औलाद को गुरबत के डर से कत्ल नहीं करना चाहिए — हम तुम्हारे लिए और उनके लिए मुहय्या करते हैं• तुम्हें बड़े गुनाहों को नहीं करना चाहिए, ज़ाहिर या छिपा हुआ• तुम्हें कत्ल नहीं करना चाहिए — **अल्लाह** ने जान को मुकद्दस बनाया है — सिवाय इंसाफ कि राह में• ये हैं उनके एहकामात तुम्हारे लिए, ताके तुम समझ सको•"

और एहकामात

152. तुम्हें यतीमों के पैसे को नहीं छूना चाहिए सिवाए सबसे नेक अंदाज़ में, जब तक वो न पहुँचें बुलुगत को• तुम्हें बराबरी से, पूरा वज़न और पूरा नाप देना चाहिए जब तुम तिजारत करो• हम किसी रूह पर

उसकी ताकत से ज़्यादा बोझ नहीं डालते• तुम्हें मुकम्मल तौर पर हक पर होना चाहिए जब तुम गवाही दो, तुम्हारे रिश्तेदारों के खिलाफ भी• तुम्हें **अल्लाह** के साथ किए गए तुम्हारे वादे को पूरा करना चाहिए• ये हैं उनके एहकामात तुम्हारे लिए, ताके तुम गौर कर सको•"

153. ये है मेरा रास्ता — एक सीधा वाला• तुम्हें उसपर चलना चाहिए, और किसी दूसरी राहों पर न चलो, ताके वो तुम्हें उनके रास्ते से फेर न दें• ये हैं उनके एहकामात तुम्हारे लिए, ताके तुम बचाए जा सको•"

154. और हमने दिया मूसा को आसमानी किताब, सबसे अच्छे एहकामों के साथ कामिल, और तफसील करता हुआ सारी चीज़ों कि, और एक रहनुमाई और रहमत, ताके वो ईमान ला सकें उनके रब से मिलने में•

155. यह भी है एक मुबारक आसमानी किताब जो हमने नाज़िल किया है; तुम्हें उस पर चलना और एक नेक जिंदगी बसर करना चाहिए, ताके तुम रहमत हासिल कर सको•

156. अब तुम कभी नहीं कह सकते, "आसमानी किताब नीचे भेजी गई थी हमसे पहले दो जमातों कि तरफ, और हम लाइल्म थे उनकी तालिमों से•"

*रियाज़ी: सबसे बड़ा सबूत**

157. नाहीं तुम कह सकते हो, "अगर सिर्फ एक आसमानी किताब नीचे आ सकती हमारी तरफ, हम उनसे बेहतर हिदायतयाफ्ता होते•" एक साबित आसमानी किताब आ चुकी है तुम्हारे पास तुम्हारे रब कि तरफ से, और एक रहनुमाई, और एक रहमत• अब, कौन है ज़्यादा बुरा उससे जो ठुकराता है इन **अल्लाह** कि तरफ से सबूतों को, और उन्हें नज़र अंदाज़ करता है? हम देंगे सबसे बुरा आज़ाब उन्हें जो नज़र अंदाज़ करते हैं हमारे सबूतों को उनकी बेपरवाही के लिए•

ज़रूरतें आज़माईश की

158. क्या वो उनकी तरफ फरिश्तों के आने का, या तुम्हारे रब, या तुम्हारे रब के कुछ जिस्मानी मज़ाहिरों का इंतेज़ार कर रहे हैं? जिस दिन ऐसा होगा, कोई रूह फायदा न उठा पायेगी ईमान लाने से अगर उसने उससे पहले ईमान नहीं लाया, और अकीदे के फसल का नफा नहीं उठाया एक नेक ज़िंदगी बिताते हुए•* कहो, "इंतेज़ार करते रहो; हम भी इंतेजार कर रहे हैं•"

मज़हबी फिरकों कि मलामत की गई है

159. जो कोई अपने आप को फिरकों में बांटे तुम में से नहीं• उनका इंसाफ रहता है **अल्लाह** के पास, फिर वो उनको इत्तेला करेंगे सारी चीज़ों कि जो उन्होंने किया था•

**6:157 कुरान के रियाज़ी कोड का किरदार साबित होता है इस हकीकत से कि जमा आयत नम्बर (157) के साथ "रशाद खलीफा" का जिमेटरिकल वेल्यु (1230), जिस के ज़रिये कोड नाज़िल हुआ था, देता है 1387, या 19x73•*

**6:158 ईमान लाने के बाद, रूह को बढ़ना और तरक्की करना चाहिए अल्लाह कि तरफ से मुकर्रर किये गये इबादत के तरीको के ज़रिए•*

160. जो कोई एक नेक काम करता है पाता है इनाम दस के वासते, और वो जो करता है एक गुनाह सिला दिया जाता है सिर्फ एक के लिए• कोई भी नहीं झेलता है ज़रासी भी नाइंसाफी•

161. कहो, "मेरे रब ने मूझे हिदायत किया है एक सीधी राह में — कामिल मज़हब इब्राहीम का, तौहीद• वो कभी एक बुतपरस्त न था•"

162. कहो, "मेरी राबता नमाज़े (*सलात*), मेरे इबादत के तरीके, मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत, हैं सारे पूरी तरह सिर्फ **अल्लाह** को निसार, कायनात के रब•

163. "उनके पास कोई साथी नहीं• ये है जो मुझे हुक्म किया गया है मानने के लिए, और मैं हूँ पहला फरमानबरदार होने के लिए•"

164. कहो, "क्या मैं **अल्लाह** के अलावा किसी और को एक रब जैसा तलाश करूँ, जबके वो हैं सारी चीज़ों के रब? कोई रूह नफा नहीं उठाता सिवाए उसके खुदके आमालों से, और कोई नहीं ढोता है बोझ दूसरे का• आखिरकार, तुम तुम्हारे रब कि तरफ लौटते हो, फिर वो तुम्हें इत्तेला करते हैं तुम्हारे झड़पों के मुताल्लिक•"

165. वो हैं वाहिद जिन्होंने तुम्हें ज़मीन का वारिस बनाया, और उन्होंने उठाया तुम में से कुछ को दूसरों के ऊपर दरजे में, तुम्हें आज़माने के लिए उसके मुताबिक जो उन्होंने तुम्हे दिया है• यकीनन, तुम्हारे रब मुस्तैद हैं आज़ाब जारी करने में, और वो हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

****

सुरह 7: आराफ (अल-आराफ)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. अ•ल•म•सा•*

2. यह आसमानी किताब तुम्हें नाज़िल की गई है — तुम्हें शक को पनाह नहीं देना चाहिए उसके बारे में तुम्हारे दिल में — ताके तुम उससे ताकीद कर सको, और ईमानवालों को एक ताकीद मुहय्या करने के लिए•

3. तुम सारों को चाहिए पैरवी करो उसकी जो नाज़िल हुआ है तुम को तुम्हारे रब कि तरफ से; उनके अलावा किसी और कि पैरवी न करो• कभी कभार ही तुम तवज्जो देते हो•

4. कई कौम को हमने फनाह किया; उन्होंने पाया हमारे आज़ाब को जब वो सो रहे थे, या पूरी तरह जागे•

5. जब हमारा आज़ाब आया उनके पास उनका कहना था: "वाकई, हम थे खतावार•"

6. हम यकीनन सवाल करेंगे उनसे जिन्होंने पैगाम पाया, और हम सवाल करेंगे रसूलों से•

7. हम उनको इत्तेला करेंगे बिलइखतियारी से, इसलिए के हम कभी गैर हाज़िर न थे•

8. उस दिन पर मिज़ानें दुरूस्त किये जायेंगे, बराबरी से• वो जिनके वज़ने होंगे भारी होंगे जीते हुए•

9. जहाँ तक वो जिनके वज़ने हैं हल्के, वो होंगे जिन्होंने खो दिया उनकी रूहों* को, एक नतीजे के तौर पर नज़र अंदाज़ करने का, हमारी आयतों को नाइंसाफी से•

**7:1 देखें अपेन्डिक्स एक कुरान के रियाज़ी मौजज़े में इन इनिशियलों के किरदार के लिए•*

**7:9 हमारे पैदा करने वाले कि तरफ तवज्जो देने के लिए नाकामयाब होना कयादत करता है रूहानी फाकाकशी और आखिर कार रूह के "खो" जाने का•*

10. हमने कायम किया है तुम्हें ज़मीन पर, और हमने उसमें मुहय्या किया है तुम्हारे लिए मदद के ज़रियों को• कभी कभार ही तुम कद्र करते हो•

11. हमने तुम्हें पैदा किया, फिर हमने तुम्हें शक्ल दिया, फिर हमने फरिश्तों से कहा, "गिरो आदम के सामने सजदे में•" वो सजदे में गिर गये, सिवाए इब्लीस (*शैतान*) के; वो सजदा करने वालों के साथ न था•

आज़माईश शुरू होती है

12. उन्होंने कहा, "क्या रोका तुझे सजदा करने से जब मैंने तुझे हुक्म दिया?" उसने कहा, "मैं उससे बेहतर हूँ; आपने मुझे आग से पैदा किया, और उसे पैदा किया मिट्टी से•"

13. उन्होंने कहा, "इसलिए, तुझे नीचे जाना ज़रूरी है, तू यहाँ मगरूर नहीं हो सकता• बाहर निकल जा; तुझे ज़लील किया गया है•"

14. उसने कहा, “मुझे एक मौका बक्शिये, हश्र के दिन तक॰”

15. उन्होंने कहा, “तुझे बक्शा गया है एक मौका॰”

16. उसने कहा, “चुँकि आपने चाहा है कि मैं गुमराह हो जाऊं,* मैं उनके लिए आपकी सीधी राह पर ताक में रहूंगा॰

17. “मैं आऊंगा उनके पास उनके सामने से, और उनके पीछे से, और उनके दाहिने से, और उनके बांये से, और आप पायेंगे उनमें से ज़्यादा नाकद्रदान॰”

18. उन्होंने कहा, “बाहर निकल जा वहाँ से, ज़लील और शिकस्त किया गया॰ उनमें से जो तेरी पैरवी करे, मैं भरूंगा जहन्नम को तुम सारों से॰

19. “जहाँ तक तू, आदम, रह जन्नत में तेरी बिवी के साथ, और खाओ उसमें से जैसा तुम चाहो, लेकिन इस एक पेड़ के करीब न जाओ, ताके तुम गुनाह में न गिर जाओ॰”

20. शैतान ने उनको वसवसे किया, उनके जिस्मों को ज़ाहिर करने के लिए, जो उनके लिए गायब थे॰ उसने कहा, “तुम्हारे रब ने मना नहीं किया तुम्हें इस पेड़ से, सिवाए तुम्हें फरिश्ते बनने से रोकने के लिए, और दायम वजूद को हासिल करने से॰”

21. उसने उनके लिए कसम खाया, “मैं तुम्हें अच्छी सलाह दे रहा हूँ॰”

22. इसतरह उसने झूठों के साथ उनको धोखा दिया॰ जैसे ही उन्होंने पेड़ चखा, उनके जिस्में उनके लिए ज़ाहिर हो गये, और उन्होंने अपने आप को जन्नत के पत्तों से ढ़ाकने कि कोशिश की॰ उनके रबने उनको पुकारा: “क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं की उस पेड़ से, और आगाह किया तुम्हें कि शैतान है तुम्हारा सबसे संगीन दुश्मन?”

23. उन्होंने कहा, “हमारे रब, हमने गलत किया है हमारी रूहों पर, और जब तक आप हमें माफ न करें और हम पर रहम न करें, हम होंगे हारने वाले॰”

24. उन्होंने कहा, “जाओ नीचे एक दूसरे के दुश्मनों कि तरह॰ ज़मीन पर होगा तुम्हारा ठिकाना और एहतमाम कुछ वक्त के लिए॰”

25. उन्होंने कहा, “उसपर तुम रहोगे, उसपर तुम मरोगे, और उसमें से तुम बाहर निकाले जाओगे॰”

26. ऐ आदम कि औलादों, हमने तुम्हारे जिस्मों को ढ़ाकने के लिए लिबासों के साथ मुहय्या किया है, इसके अलावा ऐश के लिए भी॰ लेकिन सबसे अच्छा लिबास है नेककारी का लिबास॰ ये हैं **अल्लाह** कि कुछ निशानियाँ, ताके वो तवज्जोह दे सकें॰

**7:16 शैतान एक साबित किया गया झूटा है, और हैं इसी तरह उसके बाशिंदे (देखें 2:36, 6:22-23, और 7:20-22)॰*

27. ऐ आदम कि औलादों, शैतान को तुम्हें धोखा देने न दो जैसा उसने किया जब सबब बना तुम्हारे वालिदैन को जन्नत से खारिज होने का, और उनके लिबासों के निकलने का उनके जिस्मों को ज़ाहिर करने के लिए॰ वो और उसके कबीले तुम्हें देख सकते हैं, जबके तुम उन्हें नहीं देख सकते॰ हम मुकर्रर करते हैं शयातीनों को साथीयों जैसा उनके लिए जो ईमान नहीं रखते॰

जाँचो विरासत में पाये गये सारी खबर को

28. वो एक बड़ा गुनाह करते हैं, फिर कहते हैं, “हमने हमारे वालिदैन को ऐसा करते पाया, और **अल्लाह** ने हमें ऐसा करने का हुक्म दिया है॰” कहो, “**अल्लाह** गुनाह कि वकालत नहीं करते॰ क्या तुम **अल्लाह** के बारे में कह रहे हो जो तुम नहीं जानते?”

29. कहो,”मेरे रब इंसाफ कि वकालत करते हैं, और सिर्फ उनको मनसूब होते हुए खड़ा होने के लिए हर इबादत कि जगह पर॰ तुम्हें तुम्हारी इबादत को

मुकम्मल तौर पर सिर्फ उनको मनसूब करना चाहिए• जैसा उन्होंने तुम्हें शुरू किया, तुम आखिर कार उनके पास लौटकर जाओगे•"

खबरदार: वो मानते हैं कि वो हैं हिदायतयाफ्ता

30. कुछ कि उन्होंने हिदायत दिया, जबके दूसरे गुमराह होने के लिए सुर्पद किये गये थे• उन्होंने शयातीनों को मालिकों जैसा लिया है बजाए **अल्लाह** के, फिर भी वो मानते हैं कि वो हैं हिदायतयाफ्ता•

उम्दा तरीके से पहनो मस्जिद के लिए

31. ऐ आदम कि औलादों, तुम्हें साफ होना चाहिए और उम्दा तरीके से पहनना चाहिए जब तुम मस्जिद को जाओ• और खाओ और पियो दरमियानी अंदाज़ में; यकीनन, वो खाउविरों को नहीं चाहते•

ऐजाद की गई मनाईयाँ मलामत कि गई

32. कहो, "किसने मना किया अच्छी चीज़ें जो **अल्लाह** ने पैदा किये हैं उनके मखलूकों के लिए, और अच्छी नियामतें?" कहो, "ऐसी नियामतों का लुत्फ उठाया जाना है इस दुनिया में उनके ज़रिये जो ईमान रखते हैं• उसके अलावा, अच्छी नियामतें मखसूस तौर पर उनके होंगे हाश्र के दिन पर•" हम इसतरह समझाते हैं आयतों को लोगों के लिए जो जानते हैं•

33. कहो, "मेरे रब मना करते हैं सिर्फ बुरे आमालों को, चाहे वो हों ज़ाहिर या छिपे हुए, और गुनाहें, और नामुनासिब अदावत, और **अल्लाह** के सिवाए बेबस बुतों को कायम करने का, और **अल्लाह** के बारे में कहने के लिए जो तुम नहीं जानते•"

34. हर एक कौम के लिए, एक पहले से तय की गई जिंदगी कि मुद्दत है• जब उनका दरमियानी वक्फा खत्म हो जाता है, वो उसे एक घंटे से मुल्तवी नहीं कर सकते, नाहीं उसे बढ़ा सकते हैं•

तुम में से रसूलें

35. ऐ आदम कि औलादों, जब रसूलें आयें तुम्हारे पास तुम में से, और तिलावत करें मेरी आयतों को तुम्हारे लिए, जो कोई तवज्जोह ले और एक नेक ज़िंदगी बसर करें, कुछ नहीं होगा डरने के लिए, नाहीं वो गमज़दा होंगे•

36. जहाँ तक वो जो ठुकरायें हमारी आयतों को, और हैं बहुत मगरूर उन्हें बरकरार रखने के लिए, उन्होंने जहन्नम पा लिया है, जिसमें वो रहेंगे हमेशा के लिए•

37. कौन है उससे ज़्यादा बुरा जो ऐजाद करे **अल्लाह** के बारे में झूठों को, या ठुकराये उनकी आयतों को? ये पायेंगे उनका हिस्सा, आसमानी किताब के मुताबिक, फिर, जब हमारे रसूलें आयेंगे उनकी ज़िंदगियों को खत्म करने के लिए, वो कहेंगे, "कहाँ हैं बुतें **अल्लाह** के सिवाय तुम इल्तेजा किया करते थे?" वो कहेंगे, "उन्होंने हमें छोड़ दिया है•" वो गवाही देंगे खुद के खिलाफ कि वो थे काफिरें•

आपसी इल्ज़ाम देना

38. वो कहेंगे, "दाखिल हो जाओ जहन्नम में जिनों और इंसानों कि पिछली कौमों के साथ•" जब भी एक गिरोह दाखिल होता है, वो कोसेंगे उनके पुरखों वाली गिरोह को• जब वो सारे उसमें होंगे, आखिर वाले कहेंगे पहले वालों को, "हमारे रब, ये हैं जिन्होंने हमें बहकाया• उनको दीजिये दुगना आज़ाब जहन्नम का•" वो कहेंगे, "हर कोई पाता है दुगना, लेकिन तुम नहीं जानते•"

39. पुरखों वाला गिरोह कहेगा बाद वाले गिरोह को, "चुँकी तुम्हारे पास हमारे बनिसबत फायदा था, चखो आज़ाब तुम्हारे खुद के गुनाहों के लिए•"

अल्लाह कि आयतों को ठुकराना: एक नाकाबिले माफ जुर्म

40. यकीनन, जो कोई ठुकराएं हमारी आयतों को और काफी मगरूर हैं उन्हें बरकरार रखने को, आसमान के दरवाज़े कभी नहीं खुलेंगे उनके लिए, नाहीं वो जन्नत

में दाखिल होंगे जबतक ऊँठ नहीं गुज़रता सुई कि आँख से• हम इस तरह बदला देते हैं मुजरिम को•

41. उन्होंने पाया है जहन्नम एक ठिकाने जैसा; उनके पास होंगी रूकावटें उनके ऊपर• हम इस तरह बदला देते हैं खतावारों को•

42. जहाँ तक वो जो ईमान रखें और एक नेक ज़िंदगी बसर करें — हम कभी भी बोझ नहीं डालते किसी रूह पर उसकी ज़रियों से ज़्यादा — ये होंगे जन्नत के रहने वाले• वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए•

अल्लाह के करम से

43. हम निकालेंगे उनके दिलों से सारे जलन• नहरे बहेंगीं उनके नीचे, और वो कहेंगे, "**अल्लाह** कि तारीफ हो हमें हिदायत देने के लिए• मुमकिन न था हम हिदायतयाफ्ता होते, अगर **अल्लाह** हमें हिदायात न करते• हमारे रब के रसूलों ने वाकई सच्चाई लाये•" उन्हें पुकारा जायेगा: "यह है तुम्हारी जन्नत• तुमने उसे पा लिया है, तुम्हारे आमालों के बदले में•"

44. जन्नत के रहने वाले पुकारेंगे जहन्नम के रहने वालों को: "हमने पाया है हमारे रब के वादे को सच्चा होने का, क्या तुमने पाया है तुम्हारे रब के वादे को सच्चा होने का?" वो कहेंगे, "हाँ" एक ऐलान करने वाला उनके दरमियान ऐलान करेगा: "**अल्लाह** कि लानत पड़ चुकी है खतावारों पर;

45. "जो दूर करते हैं **अल्लाह** कि राह से, और जद्दोजहेद करते हैं उसे पेचीदा करने के लिए, और, अगली ज़िंदगी के मुताल्लिक, वो हैं काफिरें •

46. एक रूकावट अलग करती है उनको, जबके आराफ* कब्ज़ा किया गया है लोगों के ज़रिये जो पहचानते हैं हर एक तरफ को उनके शक्लों से• वो पुकारेंगे जन्नत के रहने वालों को: "तुम पर सलामती हो•" वो दाखिल नहीं हुए (*जन्नत में*) ख्वाहिशमन्द सोच से•

47. जब वो फेरेंगे उनकी आँखे जहन्नम के रहने वालों कि तरफ, वो कहेंगे, "हमारे रब, ना डालिये हमें इन बदकार लोगों के साथ•"

ज़्यादा तादाद तबाही

48. आराफ के रहने वाले पुकारेंगे लोगों को जिन्हें वो पहचानते हैं उनके शक्लों से, कहते हुए, "तुम्हारी बड़ी तादाद ने मदद नहीं की तुम्हारी किसी तरह, नाहीं तुम्हारे तकब्बुर ने•

49. "क्या वो लोग हैं तुमने कसम खाया कि **अल्लाह** कभी नहीं छुएंगे उनको रहम के साथ• (*आराफ के लोगों से तब कहा जायेगा,*) "दाखिल हो जाओ जन्नत में; नहीं है तुम्हें कुछ डरने के लिए, नाहीं तुम होगे गमज़दा •"

**7:46-49 शरू में, वहाँ होंगी 4 जगह: (1)ऊँची जन्नत, (2) निचली जन्नत, (3) आराफ, और (4) जहन्नम• आराफ जोड़ दिया जायेगा निचली जन्नत में•*

50. जहन्नम के रहने वाले पुकारेंगे जन्नत के रहने वालों को: "तुम्हारा कुछ पानी, या तुम्हारी तरफ **अल्लाह** कि कुछ नियामतें हमारी तरफ बहने दो•" वो कहेंगे, "**अल्लाह** ने उन्हें हराम किया है काफिरों के लिए•"

51. जो कोई उनके मज़हब को संजीदगी से नहीं लेते हैं, और पूरी तरह मसरूफ हैं इस दुनियावी ज़िंदगी के साथ, हम भूल जाते हैं उनको उस दिन पर, इसलिए के वो उस दिन को भूल गये, और इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को ठुकराया•

कुरान:
पूरी तफसील में

52. हमने दिया है उनको एक आसमानी किताब जो पूरी तफसील की गई है, इल्म, हिदायत, और रहमत के साथ लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं•

53. क्या वो इंतेज़ार कर रहे हैं जबतक सारी *(पेशीनगोई याँ)* पूरे नहीं कर दिये जाते? दिन जब ऐसा अंजामदही गुज़र जायेगा, वो जिन्होंने उसे माज़ी में नज़रअंदाज़ किया कहेंगे, "हमारे रब के रसूलों ने लाय है सच्चाई• हैं कोई शिफाअत करने वाले हमारी तरफ से शिफाअत करने के लिए? क्या आप हमें वापस भेजेंगे, ताके हम हमारे बरताव को बदलें, और हमने जो किया उससे बेहतर कामों को करें?" उन्होंने अपनी रूहों को खो दिया है, और उनके खुद कि एजादें सबब बनी है उनके तबाही की•

54. तुम्हारे रब हैं एक **अल्लाह** ; जिन्होंने आसमानों और ज़मीन को छ: दिनों* में पैदा किया, फिर सारे इख्तेयार को काबू में लिया• रात पीछे छोड़ती है दिन को, जैसे वो मुसतकिल तौर पर उसका पीछा करती है, और सूरज, चाँद, और सितारे लगाये गये हैं काम को उनके हुक्म से• बेशक, वो काबू करते हैं सारी मखलूक और सारे हुक्मों को• सबसे बुलंद हैं **अल्लाह**, कायनात के रब•

55. तुम्हें इबादत करनी चाहिये तुम्हारे रब की लोगों में और तन्हाई में; वो खतावारों को नहीं चाहते•

56. न बिगाड़ो ज़मीन को इसके बाद के वो सही जमाई गई है, और उनकी इबादत करो एहतराम कि वजह से, और उम्मीद कि वजह से• यकीनन, **अल्लाह** का रहम है काबिले हासिल नेककारों कि तरफ से•

57. वो हैं वाहिद जो भेजते हैं हवा को अच्छी अलामत के साथ, एक रहम के तौर पर उनके हाथों से• जब वो वज़नी बादलों को जमा करते हैं, हम चलाते हैं उनको मुरदा ज़मीनों कि तरफ, और उससे नीचे पानी भेजते हैं, उससे सारे किस्मों के फलों को पैदा करने के लिए• हम इस तरह मुरदे को ज़िदा करते हैं, ताके तुम तवज्जोह ले सको•

58. अच्छी ज़मीन आसानी से पैदा करती है उसके पौधों को उसके रब कि मरज़ी से, जबके बुरी ज़मीन मुश्किल से पैदा करती है कोई चीज़ फायदेमंद• हम इस तरह समझाते हैं आयतों को लोगों के लिए जो हैं कद्रदान•

नुह

59. हमने नुह को भेजा उसके लोगों कि तरफ, कहते हुए, "ऐ मेरे लोगों, **अल्लाह** कि इबादत करो; तुम्हारे पास कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• मैं डरता हूँ तुम्हारे लिए एक ज़बरदस्त दिन के आज़ाब से•"

60. उसके लोगों में से रहबरों ने कहा, "हम देखते हैं कि तुम दूर बहेक गये हो•"

61. उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, मैं गुमराह नहीं हूँ; मैं कायनात के रब कि तरफ से एक रसूल हूँ•

62. "मैं पहुँचाता हूँ मेरे रब के पैगामों को, और मैं तुमको मशवरा देता हूँ, और मैं जानता हूँ **अल्लाह** से जो तुम नहीं जानते•

**7:54 छ: दिनें खिलकत कि मिसाल्या हैं; वो एक मयार का काम करते हैं हमें हमारे कमतरीन नज्म ज़मीन कि पेचीदगी बताने के लिए — वो पैदा कि गई थी "4 दिनों" में (देखें 41:10)*

63. "क्या वो एक बहुत अजूबा है कि एक याद दिलाने वाला आए तुम्हारे रब कि तरफ से तुम्हारे पास, तुम्हारी तरह एक आदमी के ज़रिये, तुम्हें ताकीद करने के लिए, और तुम्हारी रहनुमाई करने के लिए नेककारी कि तरफ, ताके तुम रहमत हासिल कर सको?"

64. उन्होंने उसे ठुकराया• अंजाम ये हुआ कि, हमने उसे बचाया और उसके साथ उन्हें कश्ती में, और डुबाया उनको जिन्होंने हमारी आयतों को ठुकराया; वो थे अंधे•

हूद

65. आद कि तरफ हमने भेजा उनके भाई हूद को• उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, **अल्लाह** कि इबादत करो; तुम्हारे पास कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• क्या तुम फिर नेककारी कायम करोगे?"

66. रहबरें जिन्होंने कुफ्र किया उसके लोगों में से कहा, "हम देख रहें हैं कि तुम बेवकूफों कि तरह बरताव

कर रहे हो, और हम समझते हैं कि तुम हो एक झूठे•"

67. उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, मुझ में कोई बेवकूफी नहीं है; मैं हूँ एक रसूल कायनात के रब कि तरफ से•

68. "मैं पहुँचाता हूँ तुम्हारी तरफ मेरे रब के पैगामों को, और मैं ईमानदारी से तुम्हें सलाह दे रहा हूँ•

69. "क्या वो एक बहुत अजूबा है कि एक पैगाम आए तुम्हारे रब कि तरफ से तुम्हारे पास, तुम्हारी तरह एक आदमी के ज़रिये, तुम्हें ताकीद करने के लिए? याद करो कि उन्होंने तुम्हें विरासत पाने वाले बनाया नुह के लोगों के बाद, और ज़रप किया तुम्हारी तादाद को• याद करो **अल्लाह** कि रहमतें, ताके तुम कामयाब हो सको•"

वालिदैन के पीछे चलना आँख बंद करके:
एक इंसानी हादसा

70. उन्होंने कहा, "क्या तुम आये हो हमें सिर्फ **अल्लाह** कि इबादत कराने, और तर्क कराने के लिए जो हमारे वालिदैन इबादत किया करते थे? हम ललकारते हैं करते हैं तुम्हें तबाही लाने का जिससे तुम हमें डराते हो, अगर तुम हो सच्चे•"

71. उसने कहा, "तुमने पा लिया है लानत और कहर तुम्हारे रब कि तरफ से• क्या तुम मेरे साथ बहेस करते हो तुम्हारे बनाये हुए ऐजादों के बचाव में — तुम और तुम्हारे वालिदैन — जो कभी भी इजाज़त नहीं दिये गये थे **अल्लाह** कि तरफ से? इसलिए, इंतेज़ार करो और मैं इंतेज़ार कर रहा हूँ तुम्हारे साथ•"

72. हमने फिर बचाया उसे और उसके साथ उन्हें, हमारी तरफ से रहमत के ज़रिए, और हमने फना कर दिया उनको जिन्होंने हमारी आयतों को ठुकराया और ईमानवाले होने का इंकार किया•

सालेह

73. तमूद कि तरफ हमने भेजा उनके भाई सालेह को• उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, **अल्लाह** कि इबादत करो; तुम्हारे पास कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• सबूत मुहय्या कर दिया गया है तुम्हारे लिए तुम्हारे रब कि तरफ से: यहाँ हैं **अल्लाह** की ऊँठनी, तुम्हारे लिए एक निशानी जैसा काम करने के लिए• उसे **अल्लाह** कि ज़मीन से खाने दो, और न छुओ उसे किसी तकलीफ के साथ, ताके तुम न पाओ एक दर्दनाक आज़ाब•

74. "याद करो कि उन्होंने बनाया तुम्हें आद के बाद विरासत पाने वाले, और कायम किया तुम्हें ज़मीन पर, तामीर करते हुए हवेलियाँ उनकी वादियों में और तराशते हुए घरों को उसके पहाड़ों से• तुम्हें **अल्लाह** कि रहमतों को याद करना चाहिए, और न फिरो ज़मीन पर खराबी से•"

पैगाम:
रिसालत का सबूत

75. उसके लोगों में से मगरूर रहबरों ने कहा आम लोगों से जिन्होंने ईमान लाये, "तुम कैसे जानते हो कि सालेह भेजा गया है उसके रब कि तरफ से?" उन्होंने कहा, "पैगाम जो वो लाया बनाया हमें ईमानवाले•"

76. जो मगरूर थे उन्होंने कहा, "हम नहीं मानते जिसमें तुम ईमान रखते हो•"

77. उसके बाद, उन्होंने ऊँठनी को ज़बा कर दिया, उनके रब के हुक्म के खिलाफ बगावत की, और कहा, "ऐ सालेह, लाओ तबाही तुम डराते हो हमें जिससे, अगर तुम वाकई हो एक रसूल•"

78. अंजाम ये हुआ कि, ज़लज़ले ने उनको फनाह कर दिया, उन्हें मुरदा छोड़ते हुए उनके घरों में•

79. वो उनसे दूर पलट गया, कहते हुए, "ऐ मेरे लोगों, मैंने पहुँचाया है मेरे रब के पैगाम को तुम्हारी तरफ, और तुम्हें सलाह दिया, लेकिन तुम पसंद नहीं करते किसी सलाह देने वालों को•"

लूत:
हमजिन्साना मलामत किया गया

80. लूत ने उसके लोगों से कहा, "तुम करते हो एक ऐसा घिनौनापन; किसी ने नहीं किया उसे दुनिया में इस सेपहले!

81. "तुम मर्दो के साथ शहवत करते हो, बजाय औरतों के• वाकई, तुम हो एक खता करने वाले लोग•"

82. उसके लोगों ने जवाब दिया कहते हुए, "निकाल दो उन्हें तुम्हारे शहर से• वो हैं लोग जो पाक बनना चाहते हैं•"

83. अंजाम ये हुआ कि, हमने बचाया उसे और उसके कुम्बे को, लेकिन उसकी बिवी को नहीं; वो थी तबाह होने वालों के साथ•

84. हमने बरसाये उनको एक खास बौछार से; ध्यान दो गुनाहगारों के अंजामों को•

शुऐब:
धोखाधड़ी, बेईमानी मलामत कि गई

85. मिदयन कि तरफ हमने भेजा उनके भाई शुऐब को• उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, **अल्लाह** कि इबादत करो; तुम्हारे पास कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• सबूत आ चुका है तुम्हारे पास तुम्हारे रब कि तरफ से• तुम्हें पूरा वज़न और पूरा नाप देना चाहिए जब तुम कारोबार करते हो• लोगों को धोखा न दो उनके हकों के ज़रिये• ज़मीन को न बिगड़ो इसके बाद के वो सही कायम की गई है• यह है तुम्हारे लिए बेहतर, अगर तुम हो ईमानवाले•

86. "बाज़ आओ हर रास्ते को रोकने से, तलाश करते हुए **अल्लाह** के रास्ते से दूर करने के लिए उनको जो ईमान रखते हैं, और उसे पेचीदा न करो• याद करो तुम कम हुआ करते थे और उन्होंने तुम्हारी तादाद को ज़रप किया• याद करो बदकारों के अंजामों को•

87. "अबके जब तुम में से कुछ ईमान लाए हो उसमें जिसके साथ मैं भेजा गया था, और कुछ ईमान नहीं लाए, इंतेज़ार करो जब तक **अल्लाह** जारी नहीं करते हैं उनका इंसाफ हमारे दरमियान; वो हैं सबसे अच्छे मुनसिफ•"

88. उसके लोगों में से मगरूर रहबरों ने कहा, "हम तुम्हें हमारे शहर से, निकाल देंगे, ऐ शुऐब, साथ उनके जो तुम्हारे साथ ईमान लाये, जब तक तुम पलट न आओ हमारे मज़हब कि तरफ•" उसने कहा, "क्या तुम हमें ज़ोर दोगे?

89. "हम बेअदबी करेंगे **अल्लाह** के खिलाफ अगर हम लौट जायें तुम्हारे मज़हब कि तरफ इसके बाद के **अल्लाह** ने हमें बचाया है उससे• हम कैसे लौट सकते हैं उसकी तरफ **अल्लाह** हमारे रब कि मरज़ी के खिलाफ? हमारे रब का इल्म सारी चीज़ों को घेरे में लेता है• हमने रखा है हमारा भरोसा **अल्लाह** में• हमारे रब, अता करिये हमें एक फैसलाकुन फतेह हमारे लोगों पर• आप हैं सबसे अच्छे मददगार•"

90. उसके लोगों में से कुफ्र करने वाले रहबरों ने कहा, "अगर तुम शुऐब कि पैरवी करो, तुम बन जाओगे हारने वाले•"

91. ज़लज़ले ने उनको फनाह कर दिया, छोड़ते हुए उनको मुरदा उनके घरों में•

92. जिस किसी ने शुऐब को ठुकराया गायब हो गये, ऐसे जैसे वो कभी वजूद में नहीं थे• जिस किसी ने शुऐब को ठुकराया हारने वाले थे•

93. वो उनसे दूर पलट गया, कहते हुए, "ऐ मेरे लोगों, मैंने पहुँचाया है तुम्हारी तरफ मेरे रब के पैगामों को, और मैंने तुमको सलाह दिया है• मैं कैसे रंजीदा हो सकता हूँ कुफ्र करने वाले लोगों पर•"

रहमतें भेस बदलकर

94. जब भी हमने भेजा एक नबी किसी कौम को, हमने तकलीफ दिया उसके लोगों को मुसीबत और मेहनतकशी के साथ, ताके वो इल्तेजा करें•

95. फिर हमने बदल दिया अमन और तरक्की उस मेहनतकशी कि जगह में• लेकिन अफसोस, वो बेपरवाह हो गये और कहा, "वो थे हमारे वालिदैन जिन्होंने तर्जुबा किया उस मेहनतकशी का तरक्की से पहले•" इस वजह से, हमने सज़ा दिया उनको जब उन्होंने सबसे कम उम्मीद की•

ज़्यादातर लोग
चलते हैं गलत

96. अगर उन कौमों के लोग ईमान लाते और नेककार बनते, हमने बरसाया होता उन्हें रहमतों के साथ आसमान और ज़मीन से• चुँकी उन्होंने फैसला किया कुफ्र करने का, हमने सज़ा दिया उनको उसके लिए जो उन्होंने कमाया•

97. क्या मौजूदा कौमों के लोग ज़मानत देते हैं कि हमारा आज़ाब नहीं आयेगा उनको जब वो रात में सो रहे हों?

98. क्या आज के कौमों के लोग ज़मानत देते हैं कि हमारा आज़ाब नहीं आयेगा उनको दिन में जब वो खेल रहे हों?

99. क्या उन्होंने मामुली लिया है **अल्लाह** के मनसूबों को? कोई नहीं लेता है मामुली **अल्लाह** के मनसूबों को सिवाए हारने वालों के•

100. कभी ऐसा ख्याल आता है उनको जिन्होंने विरासत पाई ज़मीन की पिछली नस्लों के बाद की, अगर हम चाहें, हम उनको सज़ा दे सकते हैं उनके गुनाहों के लिए, और मोहर लगा दें उनके दिलों पर, उन्हें बहरा करने के लिए?

101. हम बयान करते हैं तुम्हेंउन कौमों कि तारीख: उनके रसूलें गये उनके पास साफ सबूतों के साथ, लेकिन वो ईमान लाने वाले न थे उसमें जो उन्होंने पहले ठुकराया था• **अल्लाह** इस तरह काफिरों के दिलों को मोहर लगा देते हैं•

102. हमने उन में से ज़्यादा को उनके वादे को नज़र अंदाज करता पाया; हमने उनमें से ज़्यादा को बदकार पाया•*

मूसा

103. बाद (*उन रसूलों के,*) हमने भेजा मूसा को हमारी निशानियों के साथ फिरऔन और उसके लोगों कि तरफ, लेकिन उन्होंने खता किया• ध्यान दो बदकार के नतीजों को•

104. मूसा ने कहा, "ऐ फिरऔन, मैं एक रसूल हूँ कायनात के रब कि तरफ से•

105. "ये ज़रूरी है मुझपर कि मैं न कहूँ **अल्लाह** के बारे में सिवाए सच के • मैं आया तुम्हारी तरफ तुम्हारे रब कि तरफ से एक निशानी के साथ; बनी इस्राईल को जाने दो•"

106. उसने कहा, "अगर तेरे पास है एक निशानी, तो पेश कर उसे, अगर तु है सच्चा•"

107. उसने फेंका उसके आसे को नीचे, और वो बदल गया एक ज़बरदस्त सांप में•

108. उसने निकाला उसके हाथ को, और वो देखने वालों के लिए था सफेद•

109. फिरऔन के लोगों में से रहबरों ने कहा, "यह एक चालाक जादूगर से ज़्यादा कुछ नहीं•

110. "वो चाहता है तुम्हें तुम्हारे ज़मीन से बाहर ले जाने के लिए; तुम क्या तजवीज़ करते हो?"

111. उन्होंने कहा, "मोहलत दो उसे और उसके भाई को, और जमा करने वालों को भेजो हर शहर कि तरफ•

**7:102 यह ज़िंदगी है हमारा आखरी मौका अपने आप को बक्शवाने के लिए, लेकिन ज़्यादातर लोग साबित किये गये हैं ज़िद्दी तौर पर बागी और बुरे होने के लिए (देखें तार्रुफ)•*

112. "उन्हें जमा करने दो हर तर्जुबेकार जादूगर को•"

113. जादूगरें आये फिरऔन के पास और कहा, "क्या हमें मुआवज़ा दिया जायेगा अगर हम जीतने वाले हुए?"

114. उसने कहा, "हाँ वाकई; तुम आ जाओगे मेरे और करीब•"

115. उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, या तो तुम फेकों, या हम फेंकते हैं•"

116. उसने कहा, "तुम फेकों•" जब उन्होंने फेंका, उन्होंने लोगों कि आँखों को धोखा दिया, उन्हें डराया, और पैदा किया एक बड़ा जादू•

117. फिर हमने इल्हाम किया मूसा को: "फेकों नीचे तुम्हारे आसे को," जिस के बाद वो निगल गया जोकुछ उन्होंने बनाया था•

सच पहचाना गया माहिरों कि तरफ से

118. इस तरह, सच गालिब हुआ, और उन्होंने जो किया रद्द कर दिया गया था•

119. वो तभी के तभी हरा दिये गये थे; वो रूसवा किये गये थे•

120. जादूगर सजदे में गिर गये•

121. उन्होंने कहा, "हम ईमान लाते हैं कायनात के रब में•

122. "मूसा और हारून के रब•"

123. फिरऔन ने कहा, "क्या तुम उसमें ईमान लाये मेरी इजाज़त के बगैर? यह एक साज़िश होनी चाहिए जो तुमने शहर में रची है, ताके उसके लोगों को दूर ले जाओ• तुम यकीनन जान जाओगे•

124. "मैं तुम्हारे हाथों और पैरों को उल्टी तरफों से काट दूंगा, फिर मैं तुम सारों को सूली पर चढ़ा दूंगा•"

125. उन्होंने कहा, "हम फिर हमारे रब को लौटेंगे •

126. "तुम गिरफ्तार करते हो हमें सिर्फ इस वजह से के हम ईमान लाये हमारे रब के सबूतों में जब वो आये हमारे पास•" "हमारे रब, अता करिये हमें साबित कदमी, और हमें फरमानबरदारों जैसा मरने दीजिए•"

127. फिरऔन के लोगों में से रहबरों ने कहा, "क्या तुम मूसा और उसके लोगों को इजाज़त दोगे ज़मीन को बिगाड़ने, और तुम्हें और तुम्हारे खुदाओं को तर्क कर देने के लिए?" उसने कहा, "हम उनके बेटों को कत्ल कर देंगे, और छोड़ देंगे बेटियों को• वो जितना हैं उससे हम हैं कही ज़्यादा ताकतवर•"

128. मूसा ने उसके लोगों से कहा, "**अल्लाह** कि मदद मांगो, और साबित कदमी से कायम रहो• ज़मीन **अल्लाह** की है, और वो अता करते हैं जिसकिसी को वो चुनें उनके बंदों में से• आखिरी जीत होती है नेककरों कि•"

129. उन्होंने कहा, "हम गिरफ्तार किये गये थे तुम्हारे हमारे पास आने से पहले, और तुम्हारे हमारे पास आने के बाद•" उसने कहा, "तुम्हारे रब फनाह कर देंगे तुम्हारे दुश्मन को और कायम करेंगे तुम्हें ज़मीन पर, फिर वो देखेंगे तुम कैसा बरताव करते हो•"

प्लेगस

130. हमने फिर फिरऔन के लोगों को तकलीफ पहुँचाया सूखा, और अनाजों कि कमी के साथ, ताके वो तवज्जोह दे सकें•

131. जब अच्छी अलामते आयीं उनकी राह में, उन्होंने कहा, "हम इसके मुसतहिक हुए हैं," लेकिन जब एक मेहनतकशी ने उनको तकलीफ दिया, उन्होंने इल्ज़ाम लगाया मूसा पर और जो उसके साथ थे• असल में, उनकी अलामतें तय की जाती हैं सिर्फ **अल्लाह** कि तरफ से, लेकिन उनमें से ज़्यादा नहीं जानते•

132. उन्होंने कहा, "चाहे तुम किसी भी किस्म कि निशानी हमें दिखाओ, हमें तुम्हारे जादू से धोखा देने के लिए, हम ईमान नहीं लायेंगे•"

नसीहतें बेअसर जातीं हैं

133. इस वजह से, हमने उनके ऊपर भेजा सैलाब, टिड्डीयाँ, जुएें, मेढ़कें, और खून — गहरी निशानियाँ• लेकिन उन्होंने बरकरार रखा उनके गुरूर को• वो थे बुरे लोग•

134. जब भी एक प्लेग ने उनको तकलीफ पहुँचाया, उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, तुम्हारे रब से इल्तेजा करो—तुम उनके करीब हो• अगर तुम कम करो इस प्लेग को, हम तुम्हारे साथ ईमान लायेंगे, और भेजेंगे बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ•"

135. इसके बावजूद, जब हमने प्लेग को कम किया वक्त के किसी अरसे के लिए, उन्होंने उनके वादे को तोड़ दिया•

अटल आज़ाब

136. इस वजह से, हमने उनके हरकतों का बदला लिया, और उनको समंदर में डुबो दिया• वो इसलिए कि

उन्होंने हमारी निशानियों को ठुकराया, और थे उससे पूरी तरफ बेपरवाह•

137. हमने मगरिब और मशरिक, ज़मीन का वारिस बनने दिया मज़लूम लोगों को, और हमने उसे मुबारक किया• मुबारक एहकामें इस तरह पूरे किये गये थे तुम्हारे रब की तरफ से बनी इस्राईल के लिए, उनको इनाम उनके सावित कदमी के लिए, और हमने फनाह किया फिरऔन और उसके लोगों के आमालों को और सारी चीज़ें जो उन्होंने बोई थीं•

सारे मौजज़ों के बाद

138. हमने बनी इस्राईल को समंदर के पार पहुँचाया• जब वो गुज़रे लोगों के पास से जो मूर्तियों कि इबादत कर रहे थे, उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, बनाईये हमारे लिए एक खुदा, जैसे उनके पास खुदाएं हैं•" उसने कहा, "वाकई, तुम हो जाहिल लोग•

139. "ये लोग एक बेअदबी कर रहे हैं, इसलिए कि जो वो कर रहे हैं उनके लिए है तबाही•

140. "क्या मैं तुम्हारे लिए चाहूँ **अल्लाह** के अलावा तुम्हारा खुदा होने के लिए, जबकि उन्होंने बक्शा है तुम्हें दुनिया में किसी और से ज़्यादा?"

बनी इस्राईल के लिए ताकीद

141. याद करो कि हमने तुम्हें फिरऔन के लोगों से बचाया, जिन्होंने तुम पर सबसे बुरी आज़ारसानी पहुँचाई, कत्ल करते हुए तुम्हारे बेटों को और छोड़ते हुए तुम्हारी बेटियों को• वो थी एक सख्त आज़माईश तुम्हारे लिए तुम्हारे रब कि तरफ से•

हमारी दुनिया अल्लाह कि जिस्मानी मौजूदगी का सामना नहीं कर सकती

142. हमने मूसा को तीस* रातों के लिए हाज़िर किया, और उनको पूरा किया जोड़ते हुए दस*• इस तरह, हुज़ूरी उसके रब के साथ जारी रही चालीस* रातों तक• मूसा ने उसके भाई हारून से कहा, "रहो यहाँ मेरे लोगों के साथ, नेककारी बरकरार रखो, और न चलो बिगाड़ने वालों कि राहों पर•"

143. जब मूसा हमारे मुकर्रर किये गये वक्त पर आया, और उसके रब ने उससे बात किया, उसने कहा, "मेरे रब, मुझे आप पर नज़र डालने और देखने दीजिये•" उन्होंने कहा, "तुम मुझे नहीं देख सकते• उस पहाड़ को देखो; अगर वो रहता है अपनी जगह में, तब तुम मुझे देख सकते हो•" फिर उसके रब ने खुद को पहाड़ पर ज़ाहिर किया, और यह सबब बना उसके रेज़ा रेज़ा होने का• मूसा बेहोश गिर पड़ा• जब वो होश में आया, उसने कहा, "आप की तारीफ हो• मैं आप से तौबा करता हूँ, और मैं हूँ सबसे कायल ई मानवाला•"

144. उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, मैने तुम्हें चुना है, सारे लोगों में से, मेरे पैगामों के साथ और तुझसे बात करने से• इसलिए, लो जो मैंने दिया है तुझे और बनो कद्रदान•"

145. हमने उसके लिए तखतियों पर लिखा सारे किस्मों के रौशन ख्यालात और हर चीज़ो कि तफसीलें; "तुम्हें चाहिए इन तालीमों को मज़बूती से बरकरार रखना, और तुम्हारे लोगों को नसीहत करो उसे बरकरार रखने के लिए — ये सबसे अच्छी तालीमें हैं• मैं बताऊंगा तुम्हारे लिए बदकारों का मुकद्दर•"

**7:142 एहम हैं ये नम्बरें जिस अंदाज़ में बयान किये गये हैं• जैसा अपेन्डिक्स 1 में बयान किया गया है, कुरान में बयान किये गये सारे नम्बरे जुड़ते हैं 162146 को, 19x8534•*

खुदाई दखल अंदाज़ी रखती है काफिरों को अंधेरे में

146. मैं फेरूंगा मेरी आयतों से उनको जो बिला वाजिब, मगरूर हैं ज़मीन पर• इस वजह से, जब वो देखेंगे हर किस्म के सबूत को वो ईमान नहीं लायेंगे• और जब वो देखेंगे हिदायत का रास्ता वो उसे कबूल नहीं करेंगे उसे उनकी राह के तौर पर, लेकिन जब वो देखेंगे गुमराही का रास्ता वो उसे कबूल करेंगे उसे उनके रास्ते जैसा• यह अंजाम है उनका हमारी

सबूतों को ठुकराने, और उससे पूरी तरह बेपरवाह होने का•

147. जो कोई हमारी आयतों को और अगली ज़िंदगी के मिलने को ठुकराते हैं, उनके आमाल ज़ाया कर दिए गये हैं• क्या वो बदला दिए जाते हैं सिर्फ उसके लिए जो उन्होंने किया?

सुनहरा बछड़ा

148. उसकी गैरमौजूदगी में, मूसा के लोगों ने उनके ज़ेवर से एक बछड़े कि मूर्ती बनाई, एक बछड़े* की पूरी आवाज़ के साथ• क्या उन्होंने नहीं देखा कि वो उनके साथ बात नहीं कर सकता था, या हिदायत करता उनको किसी राह में? उन्होंने उसकी इबादत की, और इस तरह बदकार बन गये•

149. आखिरकार, जब उन्हें मलाल हुआ उनकी हरकत पर, और एहसास हुआ कि वो गुमराह हो गये थे, उन्होंने कहा, "जब तक हमारे रब उनकी रहमत से हमें नहीं बक्शते, और हमें माफ नहीं करते, हम होंगे हारने वाले•"

150. जब मूसा लौटा उसके लोगों के पास, गुस्से में और मायूस, उसने कहा, "क्या एक वहशतनाक चीज़ की है तुमने मेरी गैरमौजूदगी में! क्या तुम तुम्हारे रब के एहकामों का इंतेज़ार नहीं कर सकते थे?" उसने तखतियों को नीचे फेंक दिया, और पकड़ लिया उसके भाई के सर को, उसे अपनी तरफ खीचते हुए• (*हारून ने*) कहा, "मेरी माँ के बेटे, लोगों ने मेरी कमज़ोरि का फायदा उठाया, और तकरीबन किया मुझे कत्ल• मेरे दुश्मनों को जश्न मनाने न दो, और मुझे खता करने वाले लोगों के साथ न गिनो•"

151. (*मूसा*) ने कहा, "मेरे रब, मुझे और मेरे भाई को माफ करिये, और दाखिल करिये हमें आपकी रहमत में• सारे रहम करने वालों में से, आप हैं सबसे रहीम•"

152. यकीनन, जिस किसी ने बछड़े कि बुतपरस्ती की पाया है उनके रब कि तरफ से कहर, और रूसवाई इस ज़िंदगी में• हम इसतरह बदला देते हैं ऐजाद करने वालों को•

153. जहाँ तक वो जिन्होंने गुनाहों को किया, फिर तौबा किया और उसके बाद ईमान लाये•, तुम्हारे रब — इसके बाद — हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

154. जब मूसा का गुस्सा ठंडा हुआ, उसने हिदायत और रहमत ज़ब्त करती हुई तखतियों को उठाया, उनके लिए जो उनके रब का एहतराम करते हैं•

155. मूसा ने फिर चुना सत्तर मर्दो को उसके लोगों में से, आने के लिए हमारे मुकर्रर हाज़रीन को• जब ज़लज़ले ने उनको हिलाया, उसने कहा, "मेरे रब, आप माज़ी में उनको फनाह कर सकते थे, मेरे साथ, अगर आप ऐसा चाहते• क्या आप फनाह करेंगे हमें उनके आमालों के लिए जो हम में से बेवकूफ हैं? ये आज़माईश होनी चाहिए जो आपने हमारे लिए नाफिज़ किया है• उसके साथ, आप मलामत करते हैं जिसकिसी को आप चाहें, और हिदायत करते हैं जिस किसी को आप चाहें• आप हैं हमारे रब और मालिक, इसलिए हमें माफ करिये, बरसाई ये हमपर आपकी रहमत; आप हैं सबसे अच्छे माफ करने वाले•

**7:148 सुनहरे बछड़े ने किस तरह हासिल किया एक बछड़े कि आवाज़ समझाया गया है फुटनोट 20:96 में•*

अल्लाह का रहम हासिल करने के लिए ज़रूरतें: ज़कात की एहमियत

156. "और फरमान करिये हमारे लिए नेककारी इस दुनिया में, और अगली ज़िंदगी में• हमने आपसे तौबा किया है•" उन्होंने कहा, "मेरा आज़ाब पड़ता है जिस किसी पर मैं चाहूँ• लेकिन मेरी रहमत सारी चीज़ों को घेरे में लेती है• अलबत्ता, मैं मखसूस करूंगा उसे उनके लिए जो *(1)* एक

नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, *(2)* ज़रूरी खैरात (*ज़कात*) देते हैं,* *(3)* ईमान रखते हैं मेरी आयतों में, और

157. “*(4)* पिछली किताब को न जानने वाले रसूल, नबी (*मुहम्मद*) कि पैरवी करते हैं, जिसको लिखा पाते हैं उनके तौरैत और इंजील में•* वो उनको नेककारी की नसीहतें देता है, उनको हिदायत करता है बुराई से, इजाज़त देता है उनके लिए सारे अच्छे खाने, और मना करता है वो जो बुरा है, और उन पर आएद किये गये बोझों और बन्धनों को हल्का करता है• जो कोई उसमें ईमान रखते हैं, उसकी इज्ज़त करते हैं, उसकी मदद करते हैं, और पैरवी करते हैं रौशनी कि जो उसके साथ आई हैं कामयाब लोग•”

158. कहो, “ऐ लोगों, मैं **अल्लाह** का रसूल हूँ तुम सब कि तरफ• उनकी हैं आसमानों और ज़मीन की बादशाहत• कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• वो काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत•” इसलिए, तुम्हें ईमान रखना चाहिए **अल्लाह** और उनके रसूल, पिछली किताब को न जानने वाले नबी में, जो **अल्लाह** और उनके लफ्ज़ों में ईमान रखता है• उसकी पैरवी करो, ताके तुम हिदायतयाफ्ता हो सको•

हिदायतयाफ्ता यहूदियें

159. मूसा कि पैरवी करने वालों में से वहाँ हैं वो जो रहनुमाई करते हैं सच्चाई के मुताबिक, और सच्चाई उनको नेककार बनाती है•

मौजज़े सिनाई में

160. हमने उनको बारह कबाईली जमातों में तकसीम कर दिया, और हमने मूसा को इल्हाम किया जब उसके लोगों ने उससे पानी के लिए पूछा; “वार करो चट्टान पर तुम्हारे आसे से,” जिसपर बारह चश्में फूट पड़े वहाँसे• इसतरह, हर जमात जानता था उसका पानी• और हमने उनको छांव किया बादलों से, और भेजा उनके लिए नीचे मन्ना और बटेरें: “खाओ अच्छी चीज़ों से हमने मुहय्या किया तुम्हारे लिए•” वो हम नहीं हैं जिसको उन्होंने गलत किया; ये वो हैं जिन्होंने उनकी खुदकी रूहों को गलत किया•

मौजज़ो के बावजूद बागी

161. याद करो कि उनको कहा गया था, “जाओ इस शहर में रहने के लिए, और खाओ उसमें से जैसा तुम चाहो, और लोगों के साथ दोस्ताना बरताव करो, और दाखिल हो दहलीज़ में खाकसारी से• हम फिर तुम्हारे खताओं को माफ करेंगे• हम ज़रप करेंगे इनाम नेककारों के लिए •”

162. लेकिन उनमें से कुछ लोगों ने उनको दिये गये हुक्मों के बदले दूसरे हुक्मों से बदल दिया• अंजाम यह हुआ कि, हमने उन पर भेजा आसमान से लानत, उनकी बदकारी कि वजह से•

एहकामों को मानना
लाता है तरक्की

163. याद दिलाओ उनको समंदर के किनारे कि कौम का, जिन्होंने तोड़ा सब्बाथ को• जब उन्होंने कायम किया सब्बाथ को, मछली आई उनके पास इफरात से• जब उन्होंने सब्बाथ को तोड़ा, मछली नहीं आई • हमने इसतरह उनको तकलीफ दिया, उनके खता के अंजाम के तौर पर•

**7:156 ज़रूरी खैरात (ज़कात) कि एहमियत पर ज़्यादा नहीं कहा जा सकता• जैसा आएद किया गया है 6:141 में, ज़कात ज़रूर दिया जाना चाहिए किसी आमदनी के पाने पर — 2.5% किसी के खालिस आमदनी का ज़रूर दिया जाना चाहिए वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों, गरीब, और अंजान मुसाफिर को, इस तरतीब में (देखें 2:215)•*

7:157 मुहम्मद पेशीनगोई किये गये हैं डिय्टेरोनॉमी 18:15-19 और जॉन 14:16-17 और 16:13 में•

मज़ाक उड़ाना और बेइज़्ज़ती करना
अल्लाह के पैगाम की

164. याद करो के जब उनमें से एक जमात ने कहा, “तुम्हें क्यों नसीहत करनी चाहिए लोगों को जिन्हें

अल्लाह यकीनन फनाह या बुरी तरह सज़ा देंगे?" उन्होंने जवाब दिया, "तुम्हारे रब से माफी मांगो," ताके वो बचाये जा सकें•

165. जब उन्होंने नज़रअंदाज़ किया उसका जो उनको याद दिलाया गया था, हमने बचाया उन्हें जिन्होंने बुराई को मना किया, और सज़ा दिया गलतकरने वालों को एक खौफनाक आज़ाब से उनके बदकारी के लिए•

166. जब वो जारी रहे हुक्मों को ललकारने को, हमने उनको कहा, "हो जाओ तुम काबिले नफरत बंदरें•"

167. इसके अलावा, तुम्हारे रब ने मुकर्रर किया है के वो खड़ा करेंगे उन लोगों के खिलाफ जो डालेंगे बुरा आज़ाब उनके ऊपर, हश्र के दिन तक• तुम्हारे रब सबसे काबिल हैं आज़ाब नाफिज़ करने में, और वो हैं यकीनन माफ करने वाले, सबसे रहीम•

168. हमने फैलाया है उनको कई कौमो के बीच पूरी ज़मीन पर• उनमें से कुछ नेक थे, और कुछ थे नेककार से कम• हमने उनको आज़माया तरक्की और मेहनतकशी से, ताके वो लौट सकें•

169. उनके बाद, उन्होंने तबदील कर दिया नई नस्लों को जो वारिस हुए आसमानी किताब के• लेकिन उन्होंने दुनियावी ज़िंदगी को चुना उसके बदले में, कहते हुए, "हम माफ किये जायेंगे•" लेकिन फिर वो जारी रहे चुनने के लिए इस दुनिया के सामानों को• क्या उन्होंने किताब को बरकरार रखने का एक वादा नहीं किया था, और न कहने के लिए **अल्लाह** के बारे में सिवाए सच? क्या उन्होंने नहीं पढ़ा आसमनी किताब को? यकीनन, अगली ज़िंदगी का ठिकाना हैं कहीं बेहतर उनके लिए जो नेककारी बरकरार रखते हैं• क्या तुम नहीं समझते?

170. जो कोई आसमानी किताब को बरकरार रखते हैं, और कायम करते हैं राबता नमाज़ें (*सलात*), हम कभी भी नाकामयाब नहीं होते हैं नेक को इनाम देने के लिए•

171. हमने उनके ऊपर पहाड़ को उठाया जैसे एक छाता, और उन्होंने सोचा वो उनके ऊपर गिर रहा है: "तुम्हें मज़बूती से, बरकरार रखना चाहिए जो हमने तुम्हें दिया है, और उसके मज़ामीनों को याद रखो, ताके तुम बचाए जा सको•"

हम पैदा हुए हैं अल्लाह के बारे में*
फितरती इल्म के साथ

172. याद करो कि तुम्हारे रब ने जमा किया आदम के सारे औलादों को, और गवाह बनने दिया उनको उनके खुद के लिए: "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं?" उन सब ने कहा, "हाँ• हम गवाही देते हैं•" इस तरह, तुम नहीं कह सकते हश्र के दिन पर, "हम इससे आगाह नहीं थे•"

173. नाही तुम कह सकते हो, "वो तो हमारे वालिदैन थे जिन्होंने बुतपरस्ती किया, और हम तो सिर्फ चले उनके नक्शोकदमों पर• क्या आप हमें सज़ा देंगे उसके लिए जो दूसरों ने ऐजाद किया है?"

174. हम इसतरह आयतों को समझाते हैं, ताके काबिल करें लोगों को खुद कि निजाद कराने के लिए•*

175. बयान करो उनके लिए उसकी खबरें जिसको हमारी सबूतें दी गयीं थीं, लेकिन चुना उसे नज़रअंदाज़ करने का• अंजाम यह हुआ, शैतान ने उसका पीछा किया, जबतक वो बन न गया एक भटकने वाला•

**7:172 इसतरह, हर इंसान पैदा होता है अल्लाह के बारे में एक फितरती इल्म के साथ•*

**7:174 यह ज़िंदगी है हमारा आखरी मौका अल्लाह कि बादशाहत में लौटने का (देखें तार्रुफ)•*

176. अगर हम चाहते, हमने बुलंद किया होता उसे उसके साथ , लेकिन उसने ज़मीन को चिपकने पर ज़ोर दिया, और पीछा किया उसके खुदकि रायों का• इसतरह, वो कुत्ते कि तरह है; चाहे तुम उसे

पुचकारो या डांटो, वो हांपता है• ऐसी है मिसाल लोगों कि जो ठुकराते हैं हमारे सबूतों को• सुनाओ इन बयानों को, ताके वो गौर करें•

177. वाकई बुरी है मिसाल लोगों कि जो हमारे सबूतों को ठुकराते हैं; वो है सिर्फ उनकी खुदकी रूहें जिनको वो गलत करते हैं•

178. जिसकिसी को **अल्लाह** देते हैं हिदायत है हकीकत में एक हिदायतयाफ्ता, और जिसकिसी को वो गुमराही के हवाले करते हैं, वो हैं हारे हुए•

शैतान नज़रबंद करता है
उसके बाशिंदों को

179. हमने हवाले किया है जहन्नम को बहुत सारे जिन्नो और इंसानों को• उनके पास ज़हने हैं जिससे वो समझते नहीं, आँखें जिससे वो देखते नहीं, और काने जिससे वो सुनते नहीं• वो जानवरों कि तरह हैं; नहीं, वो हैं कहीं बुरे— वो हैं पूरी तरह नावाकिफ•

180. **अल्लाह** के लिए हैं सबसे अच्छे नामें; पुकारो उन्हें उससे, और नज़रअंदाज़ करो उनको जो बिगाड़ते हैं उनके नामों को• उनको बदला दिया जायेगा उनके गुनाहों के लिए•

181. हमारी खलकों में से, वहाँ हैं वो जो सच्चाई के साथ हिदायत करते हैं, और सच्चाई बनाती है उनको नेककार•

182. जहाँ तक वो जो ठुकराते हैं हमारी आयतों को, हम उन्हें कभी उसका एहसास दिलाए बगैर उनकी रहनुमाई करते हैं•

183. मैं यहाँ तक उनकी हौसलाअफजाई करूंगा; मेरा मनसूबा है ज़बरदस्त•

184. क्यों वो उनके दोस्त (*रसूल*) पर गौर नहीं करते? वो नहीं है दिवाना• वो है सिर्फ एक गहरा ताकीद करने वाला•

185. क्या उन्होंने नहीं देखा आसमानों और ज़मीन की सल्तनत, और सारी चीज़ों कि तरफ **अल्लाह** ने पैदा किया है? क्या उनको कभी ख्याल आता है कि उनकी ज़िंदगी का खातमा करीब हो सकता है? कौनसी *हदीस*, इसके अलावा, जिसमें वो ईमान रखते हैं?

186. जिसकिसी को **अल्लाह** गुमराही के हवाले करते हैं, वहाँ नहीं है कोई रास्ता उनको हिदायत करने के लिए• वो उन्हें उनके गुनाहों में भटकता हुआ, छोड़ देते हैं•

187. वो तुमसे पूछते हैं दुनिया के खत्म होने के (*वक्त*)* के बारे में, और वो कब गुज़र जाएगा• कहो, "उसका इल्म मेरे रब के पास है• वो नाज़िल करते हैं सिर्फ उसका अरसा•* भारी है वो, आसमानो और ज़मीन में• वो नहीं आयेगा तुम्हारे पास सिवाए अचानक•"** वो पूछते हैं तुझसे जैसे वो तेरे काबू में है• कहो, "उसका इल्म **अल्लाह** के पास है," लेकिन ज़्यादा तर लोग नहीं जानते•

रसूलें हैं बेबस;
वो नहीं जानते मुस्तकबिल•

188. कहो, "मेरे पास कोई ताकत नहीं खुदको फायदा, या खुदको नुकसान देने के लिए• सिर्फ जो **अल्लाह** चाहते हैं होता है मेरे लिए• अगर मैं जानता मुस्तकबिल, मैने इज़ाफा किया होता मेरी दौलत का, और कोई नुकसान मुझे तकलीफ नहीं देती• मैं एक ताकीद करने वाले से ज़्यादा कुछ नहीं, और एक खुशखबरी देने वाला उनके लिए जो ईमान रखते हैं•"

**7:187 सही अरसा इस खबर को नाज़िल करने का पहले से मुकर्रर किया गया था होने का 1980 ऐ• डी•, अल्लाह के वादे का रसूल के ज़रिए (देखें 15:87, 72:27, और अपेंडिक्स 2 और 11)•*

***7:187 "वक्त" आता है "अचानक" सिर्फ काफिरों के लिए (देखें अपेंडिक्स 11)•*

हमारे बच्चे हो सकते हैं हमारे बुतें

189. उन्होंने पैदा किया तुमको एक शक्स *(आदम)* से• उसके बाद, वो देते हैं हर मर्द को एक जोड़ा सुकून पाने के लिए उसके साथ • फिर वो उठाती है एक हल्का हमल जिसे वो मुश्किल से पता लगा पाती है• जैसे हमल वज़नी होता जाता है, वो उनके रब **अल्लाह** से इल्तेजा करते हैं: "अगर आप हमें दें एक अच्छा बच्चा, हम बन जायेंगे कद्र करने वाले•"

190. लेकिन जब वो देते हैं उनको एक अच्छा बच्चा, वो बदल देते हैं उनके तोहफे को एक बुत में जो मुखालिफत करता है उनकी• **अल्लाह** कि बड़ाई हो, कही ऊपर किसी शिरकत से•

191. क्या यह हकीकत नहीं के वो बुत बना रहे हैं बुतों को जो कुछ नहीं पैदा करते, और खुद पैदा किए गए है?

192. बुतें जो मदद नहीं कर सकते उनकी, नाही वो खुद की भी मदद कर सकते हैं•

193. जब तुम दावत देते हो उनको हिदायत कि तरफ, वो तुम्हारी पैरवी नहीं करते• इसतरह, यकसा है उनके लिए चाहे तुम उनको दावत दो, या खामोश रहो•

194. बुतें जिनको तुम पुकारते हो **अल्लाह** के अलावा हैं मखलूकें तुम्हारी तरह• आगे बढ़ो और पुकारो उनको, तुम्हारा जवाब देने दो उनको, अगर तुम हो सही•

195. क्या पैरें हैं उनके पास जिस पर वो चलते हैं? क्या उनके पास हाथ हैं जिससे वो खुदका बचाव करते हैं? क्या उनके पास आँखें हैं जिससे वो देखते हैं? क्या उनके पास काने हैं जिससे वो सुनते हैं? कहो, पुकारों तुम्हारे बुतों को, और कहो उनसे कि मारे मुझे बगैर ढील दिए•

196. "जिस वाहिद ने इस आसमानी किताब को नाज़िल किया; हैं सिर्फ **अल्लाह** मेरे रब और मालिक• वो करते हैं हिफाज़त नेककारों कि•

197. "जहाँ तक बुतें तुम कायम करते हो उनके अलावा, वो तुम्हारी मदद नहीं कर सकते, नाहीं वो खुद कि मदद कर सकते हैं•

198. जब तुम उनको हिदायत कि तरफ दावत देते हो, वो नहीं सुनते• और तुम देखते हो उनको तुम्हारी तरफ देखते हुए, लेकिन वो नहीं देखते•

199. तुम्हें माफी, बरदाश्त कि वकालत, और जाहिल को नज़रअंदाज करने का रास्ता पकड़ना चाहिए•

200. जब शैतान वसवसे करे तुमको कोई वसवसा, पनाह तलाश करो **अल्लाह** में; वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

201. जो कोई हैं नेककार, जबभी शैतान उनके करीब आता है एक तरकीब के साथ, वो याद करते हैं, जिस पर वो देखने वाले बन जाते हैं•

202. उनके साथी लगातार लुभाते हैं उनको गुमराह होने के लिए•

203. अगर तुम पैदा न करो एक मौजेज़ा जिसका वो तकाज़ा करते हैं, वो कहते हैं, "क्यों न पूछे उसके लिए?" कहो, "मैं सिर्फ पैरवी करता हूँ जो मुझको नाज़िल हुआ है मेरे रब कि तरफ से•" ये रौशन ख्यालात हैं तुम्हारे रब कि तरफ से, और हिदायत, और रहम लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं•

204. जब कुरान पढ़ी जाती है, तुम्हें उसे सुनना और तवज्जोह देना चाहिए, ताके तुम रहम हासिल कर सको•

205. तुम्हें याद करना चाहिए तुम्हारे रब को खुद में, ऐलानिया, खुफिया, और खामोशी से, दिन और रात; बेखबर न रहो•*

206. जो हैं तुम्हारे रब के पास नहीं हैं कभी बहुत मगरूर उनकी इबादत करने के लिए; वो उनकी हम्दोसना करते हैं और गिरते हैं उनके सामने सजदे में•

****

**7:205 तुम्हारा खुदा है जोकोई या कुछभी छाया रहता है तुम्हारे ज़हन पर ज़्यादा तर दिन के• यह समझाता है इस हकीकत को कि ज़्यादा तर वो जो अल्लाह में ईमान रखते हैं मुकर्रर किए गये हैं जहन्नम के लिए (देखें 12:106, 23:84-90, और अपेन्डिक्स 27)•*

सुरह 8: जंग का
माले गनीमत (अल-अनफाल)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

207. वो तुमसे जंग के माले गनीमत के बारे में मशवरा करते हैं• कहो, "जंग का माले गनीमत हैं **अल्लाह** और रसूल के•" तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना, एक दूसरे को नेककार होने की ताकीद करना, और **अल्लाह** और उनके रसूल की पैरवी करनी चाहिए, अगर तुम हो ईमानवाले•

सच्चे ईमानवाले

208. सच्चे ईमानवाले वो हैं जिनके दिलें लरज़ जाते हैं जब **अल्लाह** बयान किए जाते हैं, और जब उनकी आयतें उनको पढ़ी जाती हैं, उनका अकीदा मज़बूत होता है, और वो उनके रब में भरोसा करते हैं•

209. वो रावता नमाज़ों *(सलात)* कायम करते हैं, और उनके लिए हमारी नियामतों से, वो देते हैं खैरात•

210. ऐसे हैं सच्चे ईमान वाले• वो हासिल करते हैं ऊंचे दरजे उनके रब के पास, इसके अलावा मगफरत और एक फरागदिली वाली नियामत•

कमज़ोर ईमानवाले

211. जब तुम्हारे रब ने चाहा कि तुम तुम्हारे घर को छोड़ो, एक खास मनसूबे को पूरा करने के लिए, कुछ ईमानवाले बेनकाब हो गये जैसे अड़ियल ईमानवाले•

212. उन्होंने सच्चाई के खिलाफ तुमसे बहेस किया, इसके बावजूद के उनको सारी चीज़ समझा दी गई थी• उन्होंने बरताव किया ऐसा जैसे वो ले जाये जा रहे थे खास मौत कि तरफ•

213. याद करो के **अल्लाह** ने तुमसे एक खास गिरोह के ऊपर फतेह का वादा किया, लेकिन तुमने फिर भी कमज़ोर गिरोह का सामना करना चाहा• वो था **अल्लाह** का मनसूबा उनके लफ्ज़ों से सच को कायम करने का, और काफिरों को शिकस्त देने का•

214. इसलिए कि उन्होंने फरमान किया है सच कामयाब होगा, और झूठ मिट जायेगा, बुरा करने वालों के बावजूद•

अल्लाह के गैबी लश्करें

215. इसतरह, जब तुमने इल्तेजा कि तुम्हारे रब से बचाव को आने के लिए, उन्होंने तुम्हारा जवाब दिया: "मैं मदद कर रहा हूँ तुम्हारी सिलसिले वार में एक हज़ार फरिश्तों से•"

फतेह कि ज़मानत दी गई है
ईमानवालों के लिए

216. **अल्लाह** ने तुमको दी ये अच्छी खबरें तुम्हारे दिलों को मज़बूत करने के लिए• फतेह आती है सिर्फ **अल्लाह** कि तरफ से• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

217. वो सबब बने अमनवाली नींद का तुम तक पहुँचने और तुम्हें ठंडा करने का, और उन्होंने पानी भेजा नीचे आसमान से उससे तुम्हें साफ करने के लिए• उन्होंने बचाया तुमको शैतान कि लानत से, यकीन दिलाया तुम्हारे दिलों को और मज़बूत किया तुम्हारे कदम की पकड़ को•

*नसीहतें तारीख से**

218. याद करो कि तुम्हारे रब ने इल्हाम किया फरिश्तों को: "मैं तुम्हारे साथ हूँ; उनकी मदद करो जो ईमान लाये• मैं दहशत डालूंगा उनके दिलों में जिन्होंने कुफ्र किया• तुम वार कर सकते हो उनके गर्दनों के ऊपर, और तुम वार कर सकते हो यहाँ तक हर उंगली•"

219. ये है सही सज़ा जो उन्होंने हासिल किया है **अल्लाह** और उनके रसूल से लड़ते हुए• इसलिए कि जो लड़ते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल के खिलाफ, **अल्लाह** का आज़ाब है सख्त•

**8:12-16 सारी जंगें पाबंद किए गये हैं बुनियादी कानून 60:8-9 के ज़रिए•*

220. यह है काफिरों को सज़ा देने के लिए; उन्होंने हासिल किया है जहन्नम का आज़ाब•

221. ऐ ईमानवालो, अगर तुम सामना करो काफिरों का जिन्होंने जंग कि तैयारी की है तुम्हारे खिलाफ, पीछे पलट कर फरार न हो•

222. जो कोई पीछे पलटता है उस दिन पर, सिवाए एक जंग के मनसूबे को पूरा करने के लिए, या उसके गिरोह को जुड़ने के लिए, पा लिया है गज़ब **अल्लाह** कि तरफ से, और उसका ठिकाना है जहन्नम; क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर!

अल्लाह कर रहे हैं
*सारी चीज़ें**

223. वो तुम नहीं थे जिसने उनका कत्ल किया; **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने उनका कत्ल किया• वो तुम नहीं थे जिसने फेंका जब तुमने फेंका; **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने फेंका• लेकिन वो इसतरह ईमानवालों को देते हैं एक मौका बहुत सारी नेकी कमाने का• **अल्लाह** हैं सुननेवाले, सब कुछ जानने वाले•

224. इसके अलावा, **अल्लाह** इसतरह ज़ाया करते हैं काफिरों के मनसूबों को•

225. तुमने चाहा फतेह *(ऐ काफिरों)*, और फतेह ज़रूर आई; वो हुई ईमानवालों की• अगर तुम बाज़ आओ *(अदावत से)* वो तुम्हारे लिए बेहतर होगा, लेकिन अगर तुम लौटो, उसी तरह हम भी• तुम्हारी फौजें कभी तुम्हारी मदद नहीं करेंगीं, चाहे हो कितनी ही बड़ी• इसलिए कि **अल्लाह** हैं ईमानवालों की तरफ •

226. ऐ ईमानवालो, **अल्लाह** और उनके रसूल की अताअत करो, और उसे नज़रअंदाज़ न करो जब तुम सुन रहे हो•

काफिरें बाहर रोके गये हैं

227. उनकी तरह न हो जो कहते हैं, "हम सुनते हैं," जब वो नहीं सुनते हैं•

228. सबसे बुरी मखलूकें **अल्लाह** कि नज़र में हैं बहरे और गूंगे, जो नहीं समझते•

229. अगर **अल्लाह** जानते कुछ अच्छा उनमें, वो बनाते उनको सुननेवाले• अगर वो बना भी दें उनको सुननेवाले, वो फिर भी पलट जायेंगे नफरत में•

*ईमानवाले असल में मरते नहीं**

230. ऐ ईमानवालो, तुम्हें चाहिए जवाब देना **अल्लाह** और रसूल का जब वो तुमको दावत देता है उसकी तरफ जो तुमको देती है ज़िंदगी•* तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम्हारे दिल से ज़्यादा **अल्लाह** तुम्हारे करीब हैं, और ये कि तुम उनके सामने हाज़िर किए जाओगे•

231. खबरदार रहो एक आज़ाब से जो हो सकता है महदूद न हो तुम में से बुरा करने वालों के लिए•* तुम्हें मालूम होना चाहिए कि **अल्लाह** का आज़ाब है सख्त•

अल्लाह मदद करते हैं ईमानवालों की

232. याद करो कि तुम हुआ करते थे चंद और मज़लूम, डरते हुए कि लोग तुम्हें छीन न लें, और उन्होंने अता किया तुमको एक महफूज पनाह, मदद की तुम्हारी उनकी फतेह से, और मुहय्या किया तुमको अच्छी नियामतों से, ताके तुम कद्रदान हो सको•

233. ऐ ईमानवालो, धोखा न दो **अल्लाह** और रसूल को, और धोखा न दो उनको जो तुमपर भरोसा करते हैं, अबके जब तुम जान चुके हो•

**8:17 अल्लाह में ईमान रखना ज़रूरी करता है उनकी खूबियों में ईमानरखना, उसमें से है एक कि वो कर रहे हैं सारी चीज़ें• अल्लाह को जाने बगैर, नहीं है कोई अकीदा (23:84-90)• बुरी चीज़ें मोल ली जाती हैं हमारी तरफ से, अंजाम दिया गया शैतान कि तरफ से, अल्लाह के कानूनों के मुताबिक में (4:78-79, 42:30)•*

**8:24 देखें अपेन्डिक्स 17• जब नेककार निकलते हैं उनके जिस्मों से, वो जाते हैं सीधे जन्नत को•*

**8:25 एक कौम जो बरदाश्त करती है हमजिनसानेपन को, मिसाल के तौर पर, हो सकता है मारे जायें एक ज़लज़ले से•*

पैसा और औलाद हैं आज़माईशे

234. तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम्हारा पैसा और तुम्हारी औलाद हैं एक आज़माईश, और ये कि **अल्लाह** मालिक हैं एक बड़े बदले के•

235. ऐ ईमानवालो, अगर तुम **अल्लाह** का एहतराम करो, वो तुम्हें वाज़े करेंगे, माफ करेंगे तुम्हारे गुनाहों को, और बक्शेंगे तुमको• **अल्लाह** हैं मालिक ला महदूद रहम के•

*अल्लाह हिफाज़त करते हैं उनके रसूल की**

236. काफिरों ने साज़िश और तजवीज़ की तुम्हें बेअसर, या तुम्हें कत्ल, या तुम्हें जिला वतन करने की• बहेरहाल, वो साज़िश और तजवीज़ करते हैं, लेकिन उसी तरह करते हैं **अल्लाह• अल्लाह** हैं सबसे अच्छे तजवीज़ करने वाले•

237. जब हमारी आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं, वो कहते हैं, हमने सुना है• अगर हम चाहते तो, हम भी वही चीज़ें कहते• ये माज़ी के किस्सों से ज़्यादा कुछ नहीं हैं!"

238. उन्होंने यह भी कहा, "हमारे खुदा, अगर यह है सही में सच आपकी तरफ से, तो आसमान से बरसाईये हमें पत्थरों से, या हम पर उंडेलिये एक दर्दनाक सज़ा•"

239. बहेरहाल, **अल्लाह** सज़ा नहीं देते उनको जबकि तुम हो उनके बीच; **अल्लाह** उनको सज़ा नहीं देते जबकि वो तलाश कर रहे हैं मगफरत•

240. क्या वो मुस्तेहिक नहीं हुए हैं **अल्लाह** के आज़ाब का, पलटाते हुए दूसरों को मुकद्दस मस्जिद से, इसके बावजूद के वो नहीं हैं निगेहबाने उसके? उसके सही निगेहबानें हैं नेककार, लेकिन उनमें से ज़्यादा नहीं जानते•

रावता नमाज़े (सलात)
*मौजूद थी कुरान से पहले**

241. उनकी रावता नमाज़ें *(सलात)* इबादतगाह *(काबा)* के पास थीं एक मज़ाक से ज़्यादा कुछ नहीं और एक ज़रिया पलटाने का लोगों को *(उनकी भीड़ करते हुए)*• इसलिए, झेलो आज़ाब तुम्हारे कुफ्र के लिए•

खर्च करते हुए उनके पैसे को
*अल्लाह से लड़ने के लिए**

242. जो कोई काफिर हैं खर्च करते हैं उनका पैसा दूसरों को **अल्लाह** के रास्ते से पलटने के लिए• वो उसे खर्च करेंगे, फिर वो उनके लिए बदल जायेगा गम और नदामत में• आखिरकार, वो हरा दिये जायेंगे, और सारे काफिरें जहन्नम को हाज़िर किए जायेंगे•

243. **अल्लाह** छानेंगे बुरे को अच्छे से, फिर बुरे को एक दूसरे के ऊपर ढेर करेंगे, सारे एक अंबार में, फिर फेकेंगे उसे जहन्नम में• ऐसे हैं हारने वाले•

**8:30 अल्लाह ने उनके आखरी नबी, मुहम्मद को चुना, अरब के सबसे ताकतवर कबीले से• ये कबायली कानून और रिवाजें थीं जिसने रोका काफिरों को — अल्लाह की मरज़ी से — मुहम्मद का कत्ल करने से• उसी तरह, वो थी अल्लाह कि मरज़ी उनके वादे के रसूल को हटाने का मशरिकी ममालिक से, जहाँ वो कत्ल कर दिया जाता, यु•एस•ऐ• को जहाँ अल्लाह का पैगाम कामयाब हो सकता और पहुँचता ज़मीन के हर कोने को• यह रियाज़ी तौर पर तसदीक की गई है: सुरह और आयत नंबरें = 8+30 = 38 = 19x2•*

**8:35 सारे मज़हबी तरीके इस्लाम में आए हमारे पास इब्राहीम कि तरफ से; जब कुरान नाज़िल हुई थी, "फरमानबरदारी" में सारे तरीके पहले से वजूद में थे (21:73, 22:78)•*

**8:36 सऊदी अरब के, बुतपरस्ती करने वाले बिगड़े हुए इस्लाम के रहबरों ने, मुकर्रर किया है बहुत बड़ा पैसा सालाना तौरपर अल्लाह और उनके मौजज़े से लड़ने के लिए• मिसाल के तौर पर, मशहूर लिबनानी पबलिशर दार अल-इल्म लिल-मलईन (इल्म लाखों के लिए) ने छापा अरबी तरजुमा "कुरान का मौजज़ा" को मार्च, 1983 में• सऊदियों ने खरीदा सारी कापियों को और उन्हें बरबाद कर दिया•*

1052 *71127*

244. कहो उनसे जिन्होंने कुफ्र किया: अगर वो थम जाएं, उनके सारे पिछले माफ कर दिए जायेंगे• लेकिन अगर वो लौटते हैं, वो उनके बराबर वाले पिछलों कि तरह वैसा ही अंजाम मोल लेंगे•

245. तुम्हें उनसे लड़ना चाहिए जुल्म दूर करने के लिए, और सिर्फ **अल्लाह** को मनसूब किया गया तुम्हारा मज़हब अमल करने के लिए• अगर वो अदावत से बाज़ आयें, तो **अल्लाह** हैं पूरी तरह देखने वाले सारी चीज़ो के जो वो करते हैं•

246. अगर वो पलट जायें, तो तुम्हें पता होना चाहिए कि **अल्लाह** हैं तुम्हारे रब और मालिक; सबसे अच्छे रब और मालिक, सबसे अच्छे मददगार•

247. तुमको मालूम होना चाहिए कि अगर तुम हासिल करो कोई माले गनीमत जंग में, पाँचवा हिस्सा जाना चाहिए **अल्लाह** और रसूल को, रिश्तेदारों, यतीमों, गरीब और अंजान मुसाफिर को दिए जाने के लिए• तुम ऐसा करोगे अगर तुम **अल्लाह** में ईमान रखते हो और उसमें जो हमने नाज़िल किया हमारे बंदे को फैसले के दिन पर, जिस दिन दो फौजें टकराई• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

अल्लाह काबू करते हैं सारी चीज़ें और
तय करते हैं ईमानवालों के लिए

248. याद करो कि तुम वादी के इस तरफ थे, जबकि वो थे दूसरी तरफ• फिर उनके कारवां को निचली ज़मीन कि तरफ जाना पड़ा• अगर तुमने इस तरह तय किया होता, तुम उसे नहीं कर पाते• लेकिन **अल्लाह** को एक पहले से तय किया गया मनशा पूरा करना था, जिस से जो मुकर्रर किए गये थे फनाह होने के लिए फनाह कर दिये गये थे ज़ाहिर वजह के लिए, और जो मुकर्रर किए गये थे बचाए जाने के लिए बचाए गये थे ज़ाहिर वजह के लिए• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

249. **अल्लाह** ने कम तादाद में नज़र आने दिया उनको तुम्हारे सपने में *(ऐ मुहम्मद)*• अगर उन्होंने उनको ज़्यादा तादाद में नज़र आने दिया होता, तुम नाकामयाब हो जाते, और तुम तुम्हारे आपस में बहेस करते• लेकिन **अल्लाह** ने हालत से बचाया• वो हैं जानने वाले सबसे अंदरूनी ख्यालों के•

250. और जब वक्त आया और तुमने उनका सामना किया, उन्होंने नज़र आने दिया उनको तुम्हारी नज़रों में कम, और उनकी नज़रों में भी तुमको कम नज़र आने दिया• इसलिए कि **अल्लाह** ने चाहा एक खास मनसूबे को पूरा करने का• सारे फैसले तय किये जाते हैं **अल्लाह** कि तरफ से•

251. ऐ ईमानवालो, जब तुम सामना करो एक लश्कर का, तुम्हें मज़बूती से पकड़े रहना और **अल्लाह** को मुसलसल याद करना चाहिए, ताके तुम कामयाब हो सको•

252. तुम्हें **अल्लाह** और उनके रसूल कि अताअत करनी चाहिए, और तुम्हारे आपस में बहेस न करो, ताके तुम नाकामयाब न हो और बिखेर न दो तुम्हारी ताकत को• तुम्हें साबित कदमी से कोशिश करते रहना चाहिए• **अल्लाह** हैं उनके साथ जो साबित कदमी से कोशिश करते रहते हैं•

253. उनकी तरह न हो जिन्होंने अपने घरों को छोड़ा बड़बड़ाते हुए, सिर्फ दिखावा करने के लिए, और असल में हौसला पस्त किया दूसरों का **अल्लाह** के रास्ते पर चलने से• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें वो करते हैं•

शैतान देखता है अल्लाह के
गैबी सिपाहियों को

254. शैतान ने सजाया था उनके आमालों को उनकी नज़रों में, और कहा, "तुम हराए नहीं जा सकते आज किसी भी लोगों से," और "मैं लड़ूंगा तुम्हारे साथ•" लेकिन जैसे ही दो लश्करों ने एक दूसरे का सामना किया, वो उसकी एड़ियों के बल पलट गया और फरार हो गया, कहते हुए, "मैं तुम्हें ठुकराता हूँ• मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते• मैं **अल्लाह** से डरता हूँ• **अल्लाह** का आज़ाब है ज़बरदस्त•

255. मुनाफिकीन और वो जिन्होंने उनके दिलों में शक को पनाह दिया कहा, "ये लोग धोखा दिए गये हैं उनके मज़हब कि तरफ से•" बहेरहाल, अगर कोई उसके भरोसे को रखे **अल्लाह** में, तो **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

256. अगर सिर्फ तुम देख सकते उनको जिन्होंने कुफ्र किया जब फरिश्ते मौत देते हैं उनको! वो मारेंगे उनको उनके चेहरों पर और उनके पिछले हिस्सों को: "चखो जहन्नम का आज़ाब•

257. "यह है एक अंजाम जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा है• **अल्लाह** कभी भी नाइंसाफ नहीं मखलूकों की तरफ•"

258. यह वैसा ही अंजाम है जैसा फिरऔन के लोगों का और वो जिन्होंने उनसे पहले कुफ्र किया• उन्होंने ठुकराया **अल्लाह** कि आयतों को, और **अल्लाह** ने उनको सज़ा दिया उनके गुनाहों के लिए• **अल्लाह** हैं ताकतवर, और उनका आज़ाब है सख्त•

आज़ाब:
गुनाह का एक अंजाम

259. **अल्लाह** नहीं बदलते एक नियामत जो उन्होंने इनायत किया है किसी लोगों पर जबतक वो खुद फैसला नहीं करते बदलने का• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

260. ऐसा हाल था फिरऔन के लोगों के साथ और दूसरे उनसे पहले• उन्होंने पहले ठुकराया उनके रब कि निशानियों को• अंजाम यह हुआ कि हमने उनको फनाह किया उनके गुनाहों के लिए• हमने फिरऔन के लोगों को डुबोया; गुनाहगार मुसलसल सज़ा दिए गये थे•

261. सबसे बुरी मखलूकें **अल्लाह** की नज़र में हैं वो जिन्होंने कुफ्र किया; वो ईमान नहीं ला सकते•

262. तुम उनके साथ मुहायदों को पहुँचते हो, लेकिन वो तोड़ते हैं उनके मुहायदों को हर बार; वो नेककार नहीं•

263. इसलिए, अगर तुम सामना करो उनका जंग में, तुम्हें कायम करना चाहिए उनको एक मज़म्मत वाली मिसाल उनके लिए जो उनके बाद आते हैं, ताके वो तवज्जोह दे सकें•

264. जब तुम धोखा दिए जाते हो एक गिरोह के लोगों से, तुम्हें उनके खिलाफ उसी अंदाज़ में जंग की तैयारी करनी चाहिए• **अल्लाह** दगा देने वालों को पसंद नहीं करते•

265. वो जिन्होने कुफ्र किया उनको सोचने न दो की वो उससे बच सकते हैं; वो कभी बच नहीं सकते•

तुम्हें तैयार रहना चाहिए:
एक खुदाई एहकाम

266. तुम्हें चाहिए उनके लिए तैयार करना सारी ताकत जो तुम जमा कर सकते हो, और सारे सामान जो तुम जमा कर सकते हो, ताके तुम डरा सको **अल्लाह** के दुश्मनों को, तुम्हारे दुश्मनों को, साथ साथ दूसरे जिनको तुम नहीं जानते; **अल्लाह** उनको जानते हैं• जो कुछ तुम खर्च करो **अल्लाह** के वासते लौटाया जायेगा तुमको फरागदिली से, बगैर ज़रा सी भी नाइंसाफी के•

267. अगर वो अमन को चुनें, उसी तरह तुम्हें भी चुनना चाहिए, और रखो तुम्हारे भरोसे को **अल्लाह** में• वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

अल्लाह काफी होते
हैं ईमानवालों के लिए

268. अगर वो चाहें तुमको धोखा देना, तो **अल्लाह** तुम्हारे लिए काफी होंगे• वो तुम्हें सहारा देंगे उनकी मदद से, और ईमान वालों से•

269. उन्होंने मिलाप कराया है *(ईमान वालों के)* दिलों को• अगर तुमने खर्च किया होता ज़मीन पर सारा पैसा, तुम मिलाप नहीं करा पाते उनके दिलों को• लेकिन **अल्लाह** ने ज़रूर मिलाप किया उनका• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

270. ऐ नबी, काफी हैं **अल्लाह** तुम्हारे लिए और ईमानवाले जो तुम्हारी अताअत करते हैं•

271. ऐ नबी, नसीहत करनी चाहिए तुम्हें ईमानवालों को लड़ने की• अगर वहाँ हैं तुम में से बीस जो हैं साबित कदम, वो दो सौ को शिकस्त दे सकते हैं, और तुम में से एक सौ शिकस्त दे सकते हैं एक हज़ार उनमें से जिन्होंने कुफ्र किया• इसलिए कि वो हैं लोग जो नहीं समझते•

272. अब *(के जब कई नए लोग जुड़ चुके हैं तुमसे)* **अल्लाह** ने वो तुम्हारे लिए आसान किया है, इसलिए कि वो जानते हैं तुम उतने मज़बूत नहीं हो जितना तुम हुआ करते थे• इसके बाद, एक सौ सावित कदम ईमानवाले दो सौ को शिकस्त दे सकते हैं, और एक हज़ार तुम में से शिकस्त दे सकते हैं दो हज़ार को **अल्लाह** कि मरज़ी से• **अल्लाह** हैं उनके साथ जो सावित कदमी से कोशिश करते रहते हैं•

273. कोई नवी कैदियों को हासिल न करे, जवतक वो लड़ाई में हिस्सा न ले• तुम लोग तलाश कर रहे हो इस दुनिया की चीज़ें, जवकी **अल्लाह** वकालत करते हैं अगली ज़िंदगी की• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सवसे हकीम•

274. अगर वो **अल्लाह** के तरफ से पहले से मुकर्रर किए गये फरमान के लिए न होता, तुमने झेला होता, उस वजह से जो तुमने लिया, एक वहशतनाक आज़ाव•

275. इसलिए, खाओ माले ज़ग से जो तुमने कमाया है जो है हलाल और अच्छा, और **अल्लाह** को ध्यान में रखो• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सवसे रहीम•

276. ऐ नवी, तुम्हारे हाथों में जंग के कैदियों से कहो, "अगर **अल्लाह** जानते कोई चीज़ अच्छा तुम्हारे दिलों में, जो तुमने खोया है वो देते उससे बेहतर कोई चीज़ तुमको, और माफ करते तुमको• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सवसे रहीम•"

277. और अगर वो चाहें तुमको धोखा देने का, उन्होंने पहले से ही **अल्लाह** को धोखा दिया है• इसलिए उन्होंने उनको हारने वाला बनाया• **अल्लाह** हैं सव कुछ जानने वाले, सवसे हकीम•

278. यकीनन, जो कोई ईमान लाया, और हिजरत किया, और जद्दोजहेद की उनके पैसे और उनकी ज़िंदगियों से **अल्लाह** के वास्ते, इसके अलावा वो जिन्होंने उनकी मेज़वानी की और उनको पनाह दिया, और उनकी मदद कि, वो एक दूसरे के साथी हैं• जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं, लेकिन तुम्हारे साथ हिजरत नहीं करते, तुम ज़िम्मेदार नहीं उनको कोई मदद देने के, जब तक वो वाकई हिजरत न करें• बहेरहाल, अगर उन्हें ज़रूरत हो तुम्हारी मदद की, अकीदे में भाई होने के नाते, तुम्हें उनकी मदद करनी चाहिए, सिवाए लोगों के खिलाफ जिनके साथ तुमने एक अमन वाला मुहायदा दस्तखत किया है• **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ों के तुम करते हो•

279. जिस किसी ने कुफ्र किया हैं एक दूसरे के साथी• जव तक तुम इन हुक्मों को पूरा न करो, वहाँ ज़मीन पर अफरातफरी होगी, और भयानक विगाड़•

280. जो कोई ईमान लाया और हिजरत किया, और जद्दोजहेद किया **अल्लाह** के वास्ते, इसके अलावा वो जिन्होंने उनकी मेज़वानी की और उनको पनाह दिया, और उनकी मदद कि, ये है सच्चे ईमानवाले• वो मुस्तेहिक हुए हैं मगफरत और एक फरागदिली वाले बदले का•

281. जो कोई वाद में ईमान लाया, और हिजरत किया, और तुम्हारे साथ जद्दोजहेद किया, वो हैं तुम्हारे साथ• जो कोई हैं एक दूसरे के रिश्तेदार चाहिए पहले एक दूसरे कि मदद करें, **अल्लाह** के हुक्मों के मुताविक में• **अल्लाह** हैं सारी चीज़ों से पूरी तरह वाकिफ•

****

सुरह ९: आखरी बात (बराहा)

*विसमिल्लाह नहीं**

1. एक आखरी बात यहाँ जारी किया गया है **अल्लाह** और उनके रसूल कि तरफ से बुतपरस्तों के लिए जो दाखिल होते हैं एक मुहायदे में तुम्हारे साथ•

2. इसलिए, घूमो ज़मीन पर आज़ादी से चार महीनो के लिए, और जानो कि तुम बच नहीं सकते **अल्लाह** से, और यह के **अल्लाह** रूसवा करते हैं काफिरों को•

9:1 **विसमिल्लाह कि गैरमौजूदगी इस सुरह से नाही है सिर्फ एक गहरी निशानी कुरान के मुसन्नफ कादिरे मुतलक कि तरफ से कि इस सुरह के साथ दखलअंदाज़ी की गई है, वलिके इसके अलावा नुमाइंदगी करता है एक ज़वरदस्त मौजज़े का अपने खुदके हक में• देखें तफसीलें अपेन्डिक्स 24 और 29 में•*

3. एक ऐलान **अल्लाह** और उनके रसूल कि तरफ से इसमें जारी किया गया है सारे लोगों के लिए हज के बड़े दिन पर, कि **अल्लाह** ने ठुकराया है बुतपरस्तों को, और उसी तरह उनके रसूल ने• इसतरह, अगर तुम तौबा करो, वो तुम्हारे लिए बेहतर होगा• लेकिन अगर तुम पलट जाओ, तो जानो कि तुम कभी बच नहीं सकते **अल्लाह** से• वादा करो उन्हें जिन्होंने कुफ्र किया एक दर्दनाक आज़ाब•

4. अगर बुत परस्ती करने वाले तुम्हारे साथ एक अमन वाला मुहायदा दस्तख्त करें, और उसे न तोड़ें, नाहीं दूसरों के साथ गिरोह बनाए तुम्हारे खिलाफ, तुम्हें चाहिए पूरा करना तुम्हारा मुहायदा उनके साथ, जब तक मुद्दत कि तारीख खत्म न हो जाये• **अल्लाह** पसंद करते हैं नेककारों को•

5. जब मुकद्दस महीने गुज़र जायें, *(और वो अमन रखने के लिए इंकार करें)* तुम कत्ल कर सकते हो बुतपरस्तों को जब सामना करो तुम उनका, उन्हें सज़ा दो, और रोको हर हरकत जो वो करते हैं• अगर वो तौबा करें और कायम करें राबता नमाज़ें *(सलात)* और दें ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, तुम्हें उनको जाने देना चाहिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

6. अगर बुतपरस्तों में से एक चाहे हिफाज़त वाला रास्ता तुमसे, तुम्हें उसको हिफाज़त वाला रास्ता देना चाहिए, ताके वो सुन सके **अल्लाह** का लफ्ज़, फिर भेजो उसे उसके महफूज़ जगह को• इसलिए कि वो हैं लोग जो नहीं जानते•

7. बुतपरस्ती करने वाले कैसे मुतालबा कर सकते हैं किसी एहद का **अल्लाह** से और उनके रसूल से? माफ किये गये हैं वो जिन्होंने एक अमन वाला मुहायदा दस्तख्त किया है तुम्हारे साथ मुकद्दस मस्जिद के पास• अगर वो अदब करें और बरकरार रखें ऐसे एक मुहायदे को, तुम्हें भी उसी तरह बरकरार रखना चाहिए• **अल्लाह** नेककारों को पसंद करते हैं•

8. वो कैसे *(एक एहद का मुतालबा)* कर सकते हैं जब उन्होंने कभी कायम नहीं किया किसी रिश्तेदारी के हकों को नाहीं कोई वादा तुम्हारे और उनके दरमियान, अगर उनको कभी एक मौका मिलता कामयाब होने का• उन्होंने तुमको ठंडा किया ज़बानी खिदमत से, जबकि उनके दिलें मुखालिफत में थे, और उनमें ज़्यादातर हैं बदकार•

9. उन्होंने तिजारत कर दिया **अल्लाह** कि आयतों को एक सस्ते दाम के लिए• इस वजह से, उन्होंने पलटाया लोगों को उनकी राह से• वाकई अफसोस नाक है जो उन्होंने किया!

10. उन्होंने कभी कायम नहीं किया किसी रिश्तेदारी के हकों को किसी ईमानवाले कि तरफ, नाहीं वो अपने वादों को बरकरार रखते हैं; ये हैं असल खता करने वाले•

तौबा: तख्ती साफ करना

11. अगर वो तौबा करें और कायम करें राबता नमाज़ें *(सलात)* और दे ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, तब वो हैं तुम्हारे मज़हब में भाई• हम इसतरह समझाते हैं आयतों को लोगों के लिए जो जानते हैं•

12. अगर वो तोड़े उनके कसमों को उनके वादों को रखने के लिए एहद करने के बाद, और तुम्हारे मज़हब पर हमला करें, तुम लड़ सकते हो बुतपरस्ती के रहबरों से — तुम अब नहीं बंधे हो उनके साथ तुम्हारे वादे से — ताके वो बाज़ आ सकें•

13. क्या तुम नहीं लड़ोगे लोगों के साथ जिन्होंने तोड़ा उनके मुहायदों को, कोशिश कि रसूल को जिलावतन करने कि, और वो हैं जिन्होंने शुरू की जंग सबसे पहले? क्या तुम उनसे डरते हो? **अल्लाह** हैं वाहिद जिनसे तुमको डरना चाहिए, अगर तुम हो ईमानवाले•

14. तुम्हें उनसे लड़ना चाहिए, इसलिए कि **अल्लाह** उनको सज़ा देंगे तुम्हारे हाथों से, उनको रूसवा करेंगे, तुम्हें अता करेंगे फतेह उनपर, और ईमानवालों के सीनों को ठंडा करेंगे•

15. वो ईमानवालों के दिलों से गुस्से को भी निकालेंगे• **अल्लाह** बक्शते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं सबकुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

अटल आज़माईश

16. क्या तुमने सोचा कि तुम तन्हा छोड़ दिये जाओगे बगैर **अल्लाह** तुम में से फरक किये उनको जो जद्दोजेहेद करते हैं, और कभी अपने आप को नहीं जोड़ते हैं **अल्लाह** के दुश्मनों, या उनके रसूल के दुश्मनों, या ईमानवालों के दुश्मनों के साथ? **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो तुम करते हो•

17. बुतपरस्ती करने वाले अकसरियत से न जायें **अल्लाह** कि मस्जिदों को, जबके इकरार कर रहे हों उनके कुफ्र का• इन्होंने ज़ाया कर दिया है उनके आमालों को, और वो रहेंगे हमेशा के लिए जहन्नम में•

18. सिर्फ लोग जो अकसरियत से जा सकते हैं **अल्लाह** कि मस्जिदों को हैं वो जो ईमान रखते हैं **अल्लाह** और आखरी दिन में, और कायम करते हैं राबता नमाज़ें *(सलात)*, और देते हैं ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, और नहीं डरते हैं सिवाए **अल्लाह** के• ये यकीनन होंगे हिदायतयाफताओं में से•

अरबियों को सवाल•

19. क्या तुमने समझा है हाजियों को पानी पिलाना और मुकद्दस मस्जिद के लिए ख्याल करना **अल्लाह** और आखरी दिन को मानने, और **अल्लाह** के वासते जद्दोजहेद करने के बदले? वो बराबर नहीं है **अल्लाह** कि नज़र में• **अल्लाह** हिदायत नहीं देते बदकार लोगों को•

अच्छी खबरें

20. जो कोई ईमान रखते हैं, और हिजरत करते हैं, और जद्दोजहेद करते हैं उनके पैसे और उनकी ज़िंदगियों से **अल्लाह** के वासते, हैं कहीं ऊँचे दरजे में **अल्लाह** के नज़र में• ये हैं जीतने वाले•

21. उनके रब देते हैं उनको अच्छी खबरें: रहमत और रज़ामंदी उनकी तरफ से, और बागें जहाँ वो जश्न मनाते हैं दायम मुसर्रत में•

22. वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए• **अल्लाह** हैं मालिक एक बड़े अर्ज के•

अगर तुम्हें चुनना पड़े

23. ऐ ईमानवालो, न जोड़ो अपने आप को यहाँ तक के तुम्हारे वालिदैन और तुम्हारे भाई बहनों के साथ, अगर वो कुफ्र करने को ईमान रखने के ऊपर तरजी दें• तुम में से जो कोई जोड़े अपने आप को उनके साथ है खता करने वाले•

*एहम मयार**

24. ऐलान करो: "अगर तुम्हारे वालिदैन, तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे भाई बहनें, तुम्हारे जोड़े, तुम्हारा कुम्बा, पैसा जो तुमने कमाया है, एक करोबार जिसके बारे में तुम फिक्र करते हो, और घरें जिसका तुम चाव रखते हो हैं ज़्यादा पसंदीदा तुमको **अल्लाह** और उनके रसूल से,** और जद्दोजहेद करना उनके वासते, तो सिर्फ इंतेज़ार करो जबतक **अल्लाह** उनका इंसाफ नहीं लाते•" **अल्लाह** हिदायत नहीं देते बदकार लोगों को•

**9:24 चुँकी ज़बरदस्त हैं इमकानात किसी इंसान के खिलाफ असल में ईमान लाने और इबादत सिर्फ अल्लाह को मंसूब करने के लिए (12:103, 106), वो तकरीबन मुकम्मल तौर पर नामुमकिन है देखना एक पूरे कुम्बे को ईमान रखते हुए• इसतरह, ज़्यादातर ईमानवालों ने इस सवाल का सामना किया है: "यातो मैं या अल्लाह और उनके रसूल•" ये इंतेखाब मुसलसल बयान किया गया है ईमान वालों के जोड़ों, या उनके वालिदैन, उनके बच्चों, वगैराह कि तरफ से• यह एक ज़रूरी आज़माईश है सारे ईमानवालों के लिए (29:2)•*

***9:24 कुरानी, रियाज़ी सबूत खासतौर पर इशारा करता है अल्लाह के वादे के रसूल की तरफ• जोड़ते हुए जिमेटरिकल वेल्यु "रशाद" का (505), साथ "खलीफा" कि वेल्यु (725), साथ आयत नम्बर (24), हम पाते हैं 505+725+24=1254=19x66•*

25. **अल्लाह** ने तुम्हें कई मौको पर फतेह अता किया है• लेकिन हुनैन के दिन पर, तुम काफी मगरूर हो गये तुम्हारी बड़ी तादाद के लिए• इस वजह से, उसने तुम्हारी बिल्कुल मदद नहीं की, और कुशादाह ज़मीन इतनी तंग हो गई तुम्हारे इर्द गिर्द, कि तुम पलट गये और फरार हो गये•

26. **अल्लाह** ने भेजा नीचे चैन उनके रसूल के ऊपर और ईमानवालों के ऊपर• और उन्होंने भेजा नीचे गैबी लश्करों को; उन्होंने इसतरह सज़ा दिया उनको जिन्होंने कुफ्र किया• ये है बदला काफिरों के लिए•

27. आखिरकार, **अल्लाह** बक्शते हैं जिसकिसी को वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

28. ऐ ईमानवालो, बुत परस्ती करने वाले गंदे हैं; उन्हें इजाज़त नहीं दिया जाना चाहिए मुकद्दस मस्जिद के करीब जाने का इस साल के बाद• अगर तुम डरो आमदनी के खोने का, **अल्लाह** बरसायेंगे तुम्हें उनकी नियामतों के साथ, उनकी मरज़ी के मुताबिक• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

29. तुम्हें पलट कर लड़ना चाहिए उनके खिलाफ जो ईमान नहीं रखते **अल्लाह** में, नाहीं आखरी दिन में, नाहीं वो हराम करते हैं जो **अल्लाह** और उनके रसूल ने हराम किया है, नाहीं वो सच्चाई के मज़हब के हिसाब से चलते हैं — उनके दरमियान जिन्होंने आसमानी किताब पाया है — जबतक वो वाजिब दंड न दें, मरज़ी से या गैरमरज़ी से•

बेअदबियाँ

30. यहुदियों ने कहा, “इज़रा है **अल्लाह** का बेटा,” जबकी इसाईयों ने कहा, “ईसा है **अल्लाह** का बेटा!” ये उनके मुंहों से कही गई बेअदबियाँ हैं• वो इसतरह बराबरी करते हैं उनके बेअदबियों को जिन्होंने माज़ी में कुफ्र किया है• **अल्लाह** मलामत करते हैं उनकी• वो वाकई भटक गये हैं•

बरकरार रखते हुए मज़हबी रहबरों
के तालीमों को
बजाए अल्लाह के तालीमों के

31. उन्होंने कायम किया है उनके मज़हबी रहबरों और आलिमों को रबों जैसा,* बजाए **अल्लाह** के• दूसरों ने पूज मसीहा, मरयम के बेटे को• उन सारों को सिर्फ एक खुदा कि इबादत करने का हुक्म दिया गया था• कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• उनकी तारीफ हो, कहीं ऊपर किसी शरीकों को रखने से•

32. वो उनके मुंहों से **अल्लाह** कि रौशनी को बुझाना चाहते हैं, लेकिन **अल्लाह** इसरार करते हैं उनकी रौशनी को मुकम्मल करने का, काफिरों के बावजूद•

**9:31* अगर तुम “मुसलमान आलिमों” से मशवरा करो सिर्फ अल्लाह कि इबादत, और सिर्फ अल्लाह के लफ्ज़ को बरकरार रखने के बारे में, जैसा सिखाया गया है इस साबित की गई आसमानी किताब में, वो सलाह देंगे तुमको उसके खिलाफ• अगर तुम पोप से मशवरा करो ईसा कि पहचान के बारे में, वो मशवरा देगा एक ट्रिनिटी को बरकरार रखने के लिए• अगर तुम “मुसलमान आलिमों” की अताअत करो जिसकी सलाह है अल्लाह के तालिमों के खिलाफ, या अगर तुम लो पोप का सलाह बजाये अल्लाह के, तुमने कायम किया है इन मज़हबी रहबरों को खुदाओं जैसा बजाये अल्लाह के•*

*"फरमानबरदारी" मुकर्रर की गयी है गालिब होने के लिए**

33. वो हैं वाहिद जिन्होंने भेजा उनके रसूल* को हिदायत और मज़हब की सच्चाई के साथ, और उसे बनायेंगे गालिब सारे मज़हबों पर, बुतपरस्ती करने वालों के बावजूद•

खबरदार रहो पेशेवर मज़हबपरस्तों से

34. ऐ ईमानवालो, कई मज़हबी रहबरें और नसीहत करने वाले लेते हैं लोगों के पैसे नाजायज़ तरीके से, और दूर करते हैं **अल्लाह** के रास्ते से• जो कोई जमा करते हैं सोना और चांदी, और उन्हें **अल्लाह** की राह में खर्च नहीं करते, वादा करो उनको एक दर्दनाक आज़ाब का•

35. दिन आयेगा जब उनका सोना और चांदी गरम किया जायेगा जहन्नम कि आग में, फिर इस्तेमाल किया गया उनके माथों, उनके बाजुओं, और उनके पीठों को जलाने के लिए: "ये है जो तुमने जमा किया तुम्हारे खुद के लिए, तो चखो जो तुमने जमा किया•"

अल्लाह का निज़ाम:
*एक साल में बाराह महीने**

36. महीनों कि गिनती, जहाँ तक **अल्लाह** का ताल्लुक है, है बाराह•* ये रहा है **अल्लाह** का कानून, जबसे उन्होंने पैदा किया है आसमानों और ज़मीन को• उनमें चार हैं मुकद्दस• यह है मुकम्मल मज़हब; तुम्हें तुम्हारी रूहों को गलत नहीं करना चाहिए मुकद्दस महीनों के दरमियान *(लड़ते हुए)*• बहेरहाल, तुम ऐलान कर सकते हो पूरा जंग बुतपरस्तों के खिलाफ *(यहाँ तक के मुकद्दस महीनों के दरमियान भी)*, जब वो ऐलान करें पूरा जंग तुम्हारे खिलाफ, और जानो कि **अल्लाह** हैं नेककारों कि तरफ•

*बदलते हुए मुकद्दस महीनों को**

37. मुकद्दस महीनों को बदलना है निहायत कुफ्र कि एक निशानी; वो इज़ाफा करता है भटकना उनका जो कुफ्र करते हैं• वो मुकद्दस महीनों और आम महीनों कि अदला बदली करते हैं, जबके कायम रखते हुए **अल्लाह** कि तरफ से मुबारक किये गये महीनों के अदद को• वो इस तरह बिगाड़ते हैं जो **अल्लाह** ने मुबारक किया है• उनके बुरे आमालें सजाये गये हैं उनके आखों में• **अल्लाह** कुफ्र करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देते•

38. ऐ ईमानवालो, जब तुमसे कहा जाता है, "**अल्लाह** के वास्ते जंग की तैयारी करो," क्यों तुम बुरी तरह ज़मीन से लग जाते हो? क्या तुमने चुना है यह दुनियावी ज़िंदगी को अगली ज़िंदगी कि जगह में? इस दुनिया की चीज़ें, अगली ज़िंदगी के मुकाबले में, हैं सिफर•

**9:33 ये जुमला, हुरूफ ब हुरूफ, वाके होता है यहाँ और 61:9 में• अगर हम लिखे "रशाद" कि जिमेटरिकल वेल्यु (505), उसके बाद "खलीफा" कि वेल्यु (725), उसके बाद सुरेह और आयत नंबरें जहाँ यह जुमला वाके होता है (9:33 और 61:9), हम पाते हैं 505 725 9 33 61 9, एक 19 का ज़रप• यह तसदीक करता है कि यहाँ रसूल है रशाद खलीफा• इसके अलावा, आयतों की अदद 9:33 से 61:9 तक (3902)+9+33+61+9+ "रशाद खलीफा" कि वेल्यु (1230) देता है 5244, भी एक 19 का ज़रप• जिमेटरिकल वेल्यु 9:33 और 61:9, जोड़ते हुए हिसाब किया गया हर हुरूफ का वेल्यु, है 7858• इस नंबर को जोड़ते हुए, साथ दो आयतों में हुरूफों कि अदद (120), साथ आयतों का अदद 9:33 से 61:9 तक (3902), साथ "रशाद खलीफा" कि वेल्यु (1230), हम पाते हैं 7858+120+3902+1230=13110=19x690• देखें अपेन्डिक्स 1, 2, और 26•*

***9:36 लफ्ज़ "महीना" बयान किया गया है कुरान में बाराह बार, और "दिन" 365 बार•*

***9:37 मुकद्दस महीने बिगड़े हुए मुसलमान मुमालिक के मुताबिक हैं रज्जब, जुलकायदा, जुलहिज्जा, और मुहर्रम (7वां, 11वां, 12वां और 1ला महीने इस्लामी कैलेंडर के)• कुरान को संभल कर गौर करने पर, बहेरहाल, ज़ाहिर करता है कि वो होने चाहिए जुलहिज्जा, मुहर्रम, सफर, और रबिउल अव्वल (12वां, 1ला, 2रा, और 3रा महीने)• देखें फुटनोट 2:196•*

1161 *73410*

39. जबतक तुम जंग कि तैयारी न करो; वो तुम्हें दर्दनाक आज़ाब के हवाले करेंगे और बदल देंगे दूसरे लोगों को तुम्हारी जगह में, तुम उनको तकलीफ नहीं दे सकते ज़रासा भी• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

अल्लाह के गैबी लश्करें

40. अगर तुम उसकी *(रसूल की)* मदद करने के लिए नाकामयाब होते हो, **अल्लाह** ने उसकी पहले से ही मदद की है• इसतरह, जब काफिरों ने उसका पीछा किया, और वो था दो में से एक गुफा में, उसने उसके दोस्त से कहा, "परेशान न हो; **अल्लाह** हैं हमारे साथ•" **अल्लाह** ने फिर भेजा सुकून और हिफाज़त उस पर, और मदद की उसकी गैबी लश्करों से• उन्होंने काफिरों के लफ्ज़ को नीचा किया• **अल्लाह** का लफ्ज़ सबसे बुलंद हुकुमत करता है• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

बेहतर है ईमानवाले जद्दोजहेद करें अल्लाह कि राह में

41. तुम्हें असानी से जंग के लिए तैयारी करनी चाहिए, हल्का या भारी, और जद्दोजहेद करो **अल्लाह** कि राह में तुम्हारे पैसे और तुम्हारे जिंदगियों से• यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम सिर्फ जानते•

काहिल

42. अगर वहाँ होता फौरन चीज़ों का हासिल होना, और एक छोटा सफर, वो तुम्हारे पीछे चलते• लेकिन जद्दोजहेद करना उनके लिए बस बहुत है• वो **अल्लाह** कि कसम खायेंगे: "अगर हम कर सकते, हम जंग कि तैयारी करते तुम्हारे साथ•" वो इस तरह अपने आप को तकलीफ देते हैं, और **अल्लाह** जानते हैं कि वो हैं झूटे•

43. **अल्लाह** ने तुमको माफ किया है: तुमने उनको क्यों इजाज़त दिया *(पीछे रहने के लिए)*, इससे पहले के तुम फरक करते उन झूठों में से कौन सच्चा है?

44. जो कोई वाकई ईमान रखते हैं **अल्लाह** और आखरी दिन में नहीं पूछते हैं तुम्हारी इजाज़त मौके से बचने के लिए उनके पैसे और उनकी ज़िंदगियों से जद्दोजहेद करने के लिए• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ नेककारों से•

45. सिर्फ लोग जो चाहते हैं छोड़ दिए जाने के लिए हैं वो जो वाकई में **अल्लाह** और आखरी दिन में ईमान नहीं रखते• उनके दिले शक से भरे हैं, और उनकी शकें उनके भटकने का सबब बनते हैं•

46. अगर वो वाकई चाहते जंग के लिए तैयारी करना, उन्होंने अच्छे से उसके लिए तैयारी की होती• लेकिन **अल्लाह** ने नापसंद किया उनका शामिल होना, इसलिए उन्होंने उनका हौसला पस्त किया; उनको कहा गया था, "रहो पीछे उनके साथ जो पीछे रूक रहे हैं•"

47. अगर उन्होंने तुम्हारे साथ जंग कि तैयारी की होती, उन्होंने हैरानी पैदा किया होता, और तुम्हारे दरमियान सबब बने होते झड़पों और बटवारों का• तुम में से कुछ मुस्तैद थे उनको सुनने के लिए• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ खतावारों से•

48. उन्होंने चाहा माज़ी में तुम्हारे दरमियान हैरानी फैलाने का, और मामलों को उलझाया तुम्हारे लिए• बहेरहाल, सच्चाई आखिरकार कामयाब होती है, और **अल्लाह** का मंसूबा पूरा होता है, उनके बावजूद•

49. उनमें से कुछ कहेंगे, "इजाज़त दो मुझे *(पीछे रहने के लिए)*; मुझ पर मजबूर न करो ऐसी एक मेहनतकशी•" दरअसल, उन्होंने मोल लिया है एक खौफनाक मेहनतकशी; जहन्नम घेरे हुए है काफिरों को•

50. अगर कुछ अच्छा होता है तुम्हारे साथ, उन्हें तकलीफ होती है, और अगर एक तकलीफ पड़ती है तुमपर, वो कहते हैं, "हमने तुमसे पहले ही कहा था," जैसे वो पलट जाते हैं जश्न मनाते हुए•

51. कहो, "हमें कुछ नहीं होता, सिवाए उसके जो **अल्लाह** ने मुकर्रर किया है हमारे लिए• वो हैं हमारे रब और मालिक• ईमानवालों को **अल्लाह** में भरोसा रखना चाहिए•"

52. कहो, "तुम सिर्फ उम्मीद कर सकते हो हमारे लिए दो अच्छी चीजों में से एक *(फतेह या शहादत)*, जबकी हम तुम्हारे लिए उम्मीद करते हैं **अल्लाह** कि तरफ से लानत और आज़ाब उनकी तरफ से, या हमारे हाथों• इसलिए, इंतेज़ार करो, और हम तुम्हारे साथ इंतेज़ार करेंगे•"

53. कहो, "खर्च करो, मरज़ी से या गैर मरज़ी से• तुमसे कुछ भी कबूल नहीं किया जायेगा, इसलिए कि तुम हो बुरे लोग•"

नमाज़ मौजूद थी
*मुहम्मद से पहले**

54. जिस चीज़ ने रोका उनके खर्च करने कि कबुलियत को है यह कि उन्होंने कुफ्र किया **अल्लाह** और उनके रसूल में, और जब उन्होंने अदा किया रावता नमाज़ें *(सलात)*,* उन्होंने उसे सुस्ती से अदा किया, और जब उन्होंने दिया खैरात को, उन्होंने ऐसा किया बड़बड़ाते हुए•

ऊपरी दुनियावी तरक्की

55. मुतास्सिर न हो उनके पैसे, या उनकी औलाद से• **अल्लाह** होने देते हैं इन्हें उनके लिए इस ज़िंदगी में आज़ाब के सबवें, और *(जब वो मरते हैं)* उनकी रूहें अलग होती हैं जबकि वो हैं काफिरें•

56. वो **अल्लाह** की कसम खाते हैं कि वो तुम में से हैं, जबकी वो तुम में से नहीं; वो हैं बटवारा करने वाले लोग•

57. अगर वो पा सकते एक पनाह, या गुफायें, या एक छिपने कि जगह, वो जायेंगे उसको, जल्दबाज़ी से•

58. उनमें से कुछ तुम्हारे खैरातों के तकसीम की ऐबजोई करते हैं; अगर उनको उसमें से दिया जाता है, वो मुतमईन हो जाते हैं, लेकिन अगर उनको नहीं दिया जाता है उसमें से, वो ऐबजोई करने वाले बन जाते हैं•

59. उनको मुतमईन होना चाहिए उसके साथ जो **अल्लाह** और उनके रसूल ने उनको दिया है• उनको कहना चाहिए था, "**अल्लाह** हमें काफी हैं• **अल्लाह** मुहय्या करेंगे हमारे लिए उनकी नियामतों से, और उसी तरह उनके रसूल• हम सिर्फ **अल्लाह** को तलाश कर रहे हैं•"

खैरातों के तकसीम का निज़ाम

60. खैरातें जानी चाहिएं गरीब, ज़रूरतमंद, मुलाज़िमें जो जमा करते हैं उनको, नये तबदील हुए, गुलामों को आज़ाद करने के लिए, वो जो लदे हुए हैं अचानक अखराजातों से, **अल्लाह** कि राह में, और अंजान मुसाफिर को• ऐसा है **अल्लाह** का हुक्म• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

61. उनमें से कुछ नबी को तकलीफ पहुँचाते हैं कहते हुए, "वो सब कि सुनते हैं!" कहो, "वो बेहतर है तुम्हारे लिए कि वो तुम्हारी सुनते हैं• वो **अल्लाह** में ईमान रखते हैं, और ईमानवालों में भरोसा करते हैं• वो एक रहमत है उनके लिए जो तुम में से ईमानवाले हैं•" जो कोई तकलीफ पहुँचाता है **अल्लाह** के रसूल को पा लिया है एक दर्दनाक आज़ाब•

62. वो तुमसे **अल्लाह** की कसम खाते हैं, तुम्हें खुश करने के लिए, जबकि **अल्लाह** और उनके रसूल ज़्यादा मुस्तेहिक हैं खुश किये जाने के लिए, अगर वो हैं वाकई ईमानवाले•

अल्लाह और उनके रसूल कि मुखालिफत
करने का आज़ाब

63. क्या वो नहीं जानते कि जो कोई मुखालिफत करता है **अल्लाह** और उनके रसूल की पा लिया है जहन्नम कि आग हमेशा के लिए? यह है सबसे बुरी रूसवाई•

मुनाफिकीन

64. मुनाफिकीन परेशान होते हैं की हो सकता है एक सुरेह नाज़िल हो जाये फाश करते हुए जो उनके दिलों के अंदर है• कहो, "जाओ और मज़ाक उड़ाओ• **अल्लाह** बिल्कुल फाश करेंगे जिस से तुम डरते हो•"

**9:54 यह है एक और सबूत कि रावता नमाज़ें (सलात) मौजूद थीं कुरान से पहले, और पहुँचाई गई थी आगे इब्राहीम कि तरफ से (देखे 21:73)• इसके अलावा, वो उलझा देता है उनको जो दावा करते हैं अल्लाह के दावे को कि कुरान है मुकम्मल और पूरी तफसील में जब वो पूछते हैं, "हम कहाँ पा सकते हैं रावता नमाज़ों कि तफसील कुरान में?" (6:19, 38, 114)•*

1196 *74482*

65. अगर तुम उनसे पूछो, वो कहेंगे, “हम तो सिर्फ हंसी उड़ा रहे थे और मज़ाक कर रहे थे॰” कहो, “क्या तुम एहसास करते हो कि तुम **अल्लाह**, और उनकी आयतों, और उनके रसूल का मज़ाक उड़ा रहे हो?”

66. माफी न मांगो॰ तुमने कुफ्र किया है ईमान रखने के बाद॰ अगर हम तुम में से कुछ को माफ कर दें, हम देंगे सज़ा तुम में से दूसरों को, उनके बदकारपन के एक नतीजे जैसा॰

67. मुनाफिक मर्दे और मुनाफिक औरतें एक दूसरे के साथ होते हैं — वो बुराई कि वकालत करते हैं और नेककारी रोकते हैं, और वो हैं कंजूस॰ वो **अल्लाह** को भूल गये, इसलिए वो उनको भूल गये॰ मुनाफिकीन सच में हैं बदकार॰

68. **अल्लाह** वादा करते हैं जहन्नम की आग, मुनाफिक मर्दे और मुनाफिक औरतें, साथ साथ काफिरों को, जिसमें वो रहेंगे हमेशा के लिए॰ वो उनके लिए काफी है॰ **अल्लाह** ने उनकी मलामत की है; उन्होंने पा लिया है एक नाखत्म होने वाला आज़ाब॰

अल्लाह का निज़ाम नहीं बदलता

69. उनमें से कुछ तुम से पहले थे तुम से ज़्यादा ताकतवर, और मालिक थे ज़्यादा पैसे और औलाद के॰ वो मसरूफ हो गये उनके दुनियावी विरासतों के साथ॰ उसी तरह, तुम भी मसरूफ हो गये हो तुम्हारी दुनियावी विरासतों के साथ, जिस तरह तुम से पहले मसरूफ हो गये॰ तुम बन गये हो पूरी तरह बेपरवाह, जिस तरह वो थे बेपरवाह॰ ऐसे हैं लोग जो ज़ाया करते हैं उनके कामों को, दोनो इस दुनिया में और अगली ज़िंदगी में; वो हैं हारे हुए॰

हारे हुए

70. क्या उन्होंने नहीं सीखा है पिछली नस्लों से; लोग नुह, आद, तमूद के, इब्राहीम के लोग, मिदयन के रहने वाले, और बुरा करने वाले *(सोडोमी और गोमोराह)*? उनके रसूलें गये उनके पास साफ सबूतों के साथ॰ **अल्लाह** ने उनको कभी गलत नहीं किया; वो हैं खुद जिन्होंने गलत किया उनकी खुदकी रूहों पर॰

जीते हुए

71. ईमानवाले मर्दे और औरतें हैं एक दूसरे के साथी॰ वो नेककारी कि वकालत करते हैं और बुराई रोकते हैं, वो राबता नमाज़ें *(सलात)* कायम करते हैं और देते हैं ज़रूरी खैरात *(ज़कात),* और वो अताअत करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल की॰ इन पर बरसाई जायेगी **अल्लाह** कि रहमत॰ **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम॰

72. **अल्लाह** वादा करते हैं ईमानवाले मर्दो और ईमानवाली औरतों को बहती हुई नहरों के साथ बागें, जिसमें रहते हैं हमेशा के लिए, और शानदार महलें अदन के बागों में॰ **अल्लाह** कि रहमतें और रज़ामंदी हैं इससे भी बड़ीं॰ यह है सबसे बड़ी फतेह॰

तुम्हें सख्त होना चाहिए
काफिरों के साथ

73. ऐ नबी तुम, जद्दोजहेद करो काफिरों और मुनाफिकीन के खिलाफ, और सख्त रहो उनसे बरताव करने में॰ उनका मुकद्दर है जहन्नम; क्या एक अफसोसनाक ठिकाना!

74. वो **अल्लाह** कि कसम खाते हैं कि उन्होंने कभी नहीं कहा उसे, हालाँ कि उन्होंने कहा है कुफ्र का लफ्ज़; उन्होंने कुफ्र किया है फरमानबरदार बनने के बाद॰ असल में, उन्होंने दे दिया जो उनके पास कभी नहीं था॰ उन्होंने बगावत किया इसके बावजूद कि **अल्लाह** और उनके रसूल ने बरसाया उनको उनकी रहमत और नियामतों के साथ॰ अगर वो तौबा करें, वो उनके लिए सबसे अच्छा होगा॰ लेकिन अगर वो पलट जायें, **अल्लाह** उनको हवाले करेंगे दर्दनाक आज़ब इस ज़िंदगी में और अगली ज़िंदगी में॰ वो नहीं पायेंगे किसी को ज़मीन पर उनका रब और मालिक होने के लिए॰

75. उनमें से कुछ ने यहाँ तक एहद किया: “अगर **अल्लाह** हमें बरसाएं उनके फज़ल के साथ, हम होंगे खैरात करने वाले, और बसर करेंगे एक नेक ज़िंदगी॰”

76. लेकिन जब उन्होंने वाकई बरसाया उनको उनकी नियामतों से, वो बन गये कंजूस, और पलट गये नफरत में●

77. इस वजह से, उन्होंने बेवस कर दिया उनको निफाक से उनके दिलों में, उस दिन तक जब वो मिलते हैं उनसे● ये है इसलिए कि उन्होंने **अल्लाह** से किये उनके वादों को तोड़ा, और उनके झूठ बोलने कि वजह से●

78. क्या वो एहसास नहीं करते कि **अल्लाह** जानते हैं उनके राज़ों को, और उनकी साज़िशों को, और यह के **अल्लाह** हैं जानने वाले सारे राज़ों के?

79. जो कोई ऐबजोई करते हैं फरागदिल ईमानवालों कि बहुत देने के लिए, और मज़ाक उड़ाते हैं गरीब ईमानवालों की बहुत कम देने के लिए, **अल्लाह** नफरत करते हैं उनसे● उन्होंने पाया है एक दर्दनाक आज़ाब●

शैतान की सबसे असरदार तरकीब:
*शफाअत का वहेम**

80. चाहे तुम मगफरत मांगो उनके लिए, या न मांगो मगफरत उनके लिए — अगर तुम उनके लिए सत्तर बार मगफरत मांगो तब भी — **अल्लाह** उनको माफ नहीं करेंगे● ये इसलिए है कि उन्होंने कुफ्र किया **अल्लाह** और उनके रसूल में● **अल्लाह** बदकार लोगों को हिदायत नहीं देते●

81. काहिल जश्न मनाये उनके **अल्लाह** के रसूल के पीछे रहने में, और नफरत किया उनके पैसे और उनके ज़िंदगियों से **अल्लाह** के वासते जद्दोजहेद करने में● उन्होंने कहा, "हमे इस गरमी में जंग कि तैयारी करने न दो!" कहो, "जहन्नम कि आग है कहीं ज़्यादा गरम," अगर वो सिर्फ समझ सकते●

82. उनको थोड़ा हंसने, और ज़्यादा रोने दो● ये है बदला गुनाहों के लिए जो उन्होंने कमाया है●

83. अगर **अल्लाह** लौटाये तुम्हें एक मौके को जहाँ वो मांगें तुम्हारी इजाज़त तुम्हारे साथ जंग कि तैयारी करने के लिए, तुम्हें कहना चाहिए, "तुम मेरे साथ दोबारा कभी जंग कि तैयारी नहीं करोगे, नाहीं तुम लड़ोगे कभी मेरे साथ किसी दुश्मन के खिलाफ● इसलिए कि तुमने चुना काहिल होने के लिए सबसे पहले● इसलिए, तुम्हें रहना चाहिए काहिल के साथ●"

84. तुम्हें उनमें से किसी के लिए जनाज़े कि नमाज़ अदा नहीं करनी चाहिए जब वो मरता है, नाहीं तुम्हें उसकी कब्र पर खड़ा होना चाहिए● उन्होंने कुफ्र किया **अल्लाह** और उनके रसूल में, और मरे बदकारी कि एक हालत में●

दुनियावी चीज़े हैं सिफर

85. मुतास्सिर न हो उनके पैसे या उनकी औलाद से; **अल्लाह** बनाते हैं इन्हें आफत के सबबें उनके लिए इस दुनिया में, और उनकी रूहें विदा होती हैं काफिरों जैसी●

86. जब एक सुरह नाज़िल होती है, कहते हुए: "**अल्लाह** में ईमान रखो, और जद्दोजहेद करो उनके रसूल के साथ," यहाँ तक के उनमें से ताकतवर कहते हैं," हमें रहने दो पीछे!"

87. वो चुनते हैं काहिल के साथ रहने के लिए● इस वजह से, उनके दिलें मोहर लगा दिए गये थे, और इसतरह, वो कभी नहीं समझ सकते●

सच्चे ईमानवाले ख्वाहिशमन्द हैं जद्दोजहेद के लिए

88. जहाँ तक रसूल और वो जो ईमान लाये उसके साथ, वो शौक से जद्दोजहेद करते हैं उनके पैसे और उनकी ज़िंदगियों से● ये मुस्तेहिक हुए हैं सारी अच्छी चीज़ों के; वो हैं फतेहयाब●

**9:80 अगर मुहम्मद शिफाअत नहीं कर सके उनके खुद के चचाओं और चचा ज़ात भाई बहनों कि तरफ से, अजनबीयें जो कभी नहीं मिले उनसे क्या सबब बनता है सोचने का कि वो शिफाअत करेंगे उनकी तरफ से? इब्राहीम शिफाअत नहीं कर सके उनके वालिद कि तरफ से, नाहीं नूह शिफाअत कर सके उनके बेटे कि तरफ से (11:46, और 60:4)●*

89. **अल्लाह** ने तैयार किया है उनके लिए बागें साथ बहती हुई नहरों के, जिसमें वो रेहते हें हमेशा के लिए● यह है सबसे बड़ी फतेह●

90. अरबियों ने बहाने बनाये, और आये तुम्हारे पास इजाज़त मांगते हुए पीछे रहने के लिए● यह

अलामत है उनके इन्कार का **अल्लाह** और उनके रसूल में — वो रहते हैं पीछे• वाकई, उनमें से जिन्होंने कुफ्र किया पा लिया है एक दर्दनाक आज़ाब•

91. इल्ज़ाम नहीं दिया जाना है उनको जो हैं कमज़ोर, या बिमार, या नहीं पाते कोई चीज़ पेश करने के लिए, जबतक वो मनसूब रहते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल को• इल्ज़ाम नहीं देना चाहिए उनमें से जो नेककार हैं• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

92. इसके अलावा माफ किये गये हैं वो जो आते हैं तुम्हारे पास चाहते हुए तुम्हारे साथ शामिल किये जाने के लिए, लेकिन तुम उनसे कहते हो, “मेरे पास कुछ नहीं जिसपर तुमको सवार किया जा सके•” फिर वो वापस लौट जाते हैं उनकी आँखों में आंसुओं के साथ, वाकई में गमगीन होकर कि वो हैसियत नहीं रख सके शामिल होने के लिए•

93. इल्ज़ाम है उन पर जिन्होंने तुमसे पीछे रहने के लिए इजाज़त मांगा, इसके बावजूद के उनके पास कोई बहाना नहीं है• उन्होंने चुना काहिल के साथ रहने का• इस वजह से, **अल्लाह** ने उनके दिलों को मोहर लगा दिया, और इसतरह, वो हासिल नहीं करते कोई इल्म•

मुश्किल वक्तें मुनाफिकीन को फाश करने का काम करते हैं

94. वो माफी मांगते हैं तुमसे जब तुम लौटते हो उनकी तरफ *(जंग से)*• कहो, “माफी न मांगो; अब हम तुमपर भरोसा नहीं करते• **अल्लाह** ने हमे इत्तेला किया है तुम्हारे बारे में•” **अल्लाह** देखेंगे तुम्हारे कामों को, और उसी तरह रसूल भी, फिर तुम लौटाये जाओगे सारे राज़ों और ऐलानों के जानने वाले कि तरफ, फिर वो तुमको इत्तेला करेंगे सारी चीज़ें जो तुमने किया था•

95. वो तुमसे **अल्लाह** की कसम खायेंगे, जब तुम लौटो उनकी तरफ, ताके तुम उनको नज़रअंदाज़ करो• ज़रूर नज़रअंदाज करो उनको• वो हैं खराब, और उनका मुकद्दर है जहन्नम, गुनाहों के लिए बदले जैसा जो उन्होंने कमाया है•

96. वो तुमसे कसम खाते हैं, ताके तुम उनको माफ करो• अगर तुम उन्हें माफ करो तब भी, **अल्लाह** माफ नहीं करते ऐसे बदकार लोगों को•

अरबियें

97. अरबियें हैं सबसे बुरे कुफ्र और निफाक में, और सबसे ज़्यादा मुमकिन हैं कानूनों को नज़रअंदाज़ करने के लिए जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया उनके रसूल को• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

98. कुछ अरबियें मानते हैं उनका खर्च करना *(अल्लाह कि राह में)* एक नुकसान होना, और यहाँ तक इंतेज़ार करते हैं उम्मीद में कि एक आफत तुमको मारे• ये वो हैं जो पायेंगे सबसे बुरी आफत• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

99. दुसरे अरबियें ज़रूर ईमान रखते हैं **अल्लाह** और आखरी दिन में, और मानते हैं उनका खर्च करना एक ज़रिया **अल्लाह** कि तरफ होने का, और एक ज़रिया रसूल कि मदद करने का• वाकई, वो लायेगा उनको और करीब; **अल्लाह** दाखिल करेंगे उनको उनकी रहमत में• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

100. जहाँ तक इब्तेदाई पहले सफ वाले जिन्होंने हिजरत किया *(मुहाजिरीन)*, और मदद करने वाले जिन्होंने उनको पनाह दिया *(अनसार)* और वो जिन्होंने पैरवी कि उनकी नेककारी में, **अल्लाह** उनसे खुश हैं, और वो उनसे खुश हैं• उन्होंने तैयार किया है उनके लिए बागें बहती हुई नहरों के साथ, जिसमें रहते हैं वो हमेशा के लिए• यह है सबसे बड़ी फतेह•

*आज़ाब दुगना किया गया मुनाफिकीन के लिए**

101. अरबियों के बीच तुम्हारे ईदर्गिद, हैं मुनाफिकीन• इसके अलावा, शहर के रहने वालों के बीच, वहाँ हैं वो जो आदी हैं निफाक पर• तुम उनको नहीं जानते, लेकिन हम उनको जानते हैं• हम दुगना करेंगे उनके लिए आज़ाब, फिर वो खत्म होंगे एक खौफनाक आज़ाब को सुपुर्द हुए•

102. वहाँ हैं दूसरे जिन्होंने इकरार किया उनके गुनाहों को; उन्होंने मिलाया अच्छे अमालों को बुरे आमालों

के साथ• **अल्लाह** उनकी मगफरत करेंगे, इसलिए कि **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

103. लो उनके पैसे से खैरात उनको पाक और उनको मुकद्दस करने के लिए• और उनकी हौसला अफज़ाई करो, इसलिए कि तुम्हारी हौसला अफज़ाई उनको इतमिनान दिलाती है• **अल्लाह** हैं सुननेवाले, सब कुछ जानने वाले•

104. क्या वो एहसास नहीं करते कि **अल्लाह** कबूल करते हैं तौबा उनके इबादत करने वालों कि, और लेते हैं खैरातों को, और ये कि **अल्लाह** हैं मगफरत करने वाले, सबसे रहीम?

105. कहो, "नेककारी वाले काम करो; **अल्लाह** देखेंगे तुम्हारा काम, और उसी तरह उनके रसूल और ईमानवाले• आखिरकार, तुम लौटाये जाओगे सारे राज़ों और ऐलानो के जानने वाले कि तरफ, फिर वो इत्तेला करेंगे तुम्हें सारी चीज़ें जो तुमने किया था•"

106. दूसरे इंतेज़ार कर रहे हैं **अल्लाह** के फैसले के लिए; हो सकता है वो उनको सज़ा दें, या हो सकता है वो उनकी मगफरत करें• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

*मस्जिदें जो मुखालिफत करते हैं अल्लाह और उनके रसूल की**

107. वहाँ हैं वो जो मस्जिद का गलत इस्तेमाल करते हैं बुतपरस्ती करते हुए, तकसीम करते हुए ईमानवालों को, राहत देते हुए उनको जो मुखालफत करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल की• वो संजीदगी से कसम खाते हैं: "हमारे इरादे हैं अच्छे!" **अल्लाह** गवाही देते हैं कि वो हैं झूठे•

नमाज़ न पढ़ो उन मस्जिदों में

108. तुम्हें नमाज़ कभी नहीं पढ़ना चाहिए ऐसी एक मस्जिद में• एक मस्जिद जो कायम की गई हैं नेककारी कि बुनियाद पर पहले दिन से है ज़्यादा मुस्तेहिक तुम्हारे उसमें नमाज़ पढ़ने के लिए• उसमें, वहाँ हैं लोग जो चाहते हैं पाक होना• **अल्लाह** पसंद करते हैं उनको जो अपने आप को पाक करते हैं•

109. क्या वो जो कायम करता है उसकी इमारत **अल्लाह** का एहेतराम करने कि बुनियाद पर और हासिल करने के लिए उनकी रज़ामंदी है बेहतर, या एक जो कायम करता है उसकी इमारत एक फुसफुसे टीले के किनारे पर, जो गिर जाता है जहन्नम कि आग में उसके साथ? **अल्लाह** खता करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देते•

110. ऐसी एक इमारत जो कायम की है उन्होंने रहती है शक का एक ज़रिया उनके दिलों में, जब तक उनके दिलें थाम नहीं दिये जाते हैं• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

**9:101 मुनाफिकीन बैठते हैं ईमानवालों के बीच, सुनते हैं पैगाम और सबूतों को, फिर फैलाते हैं उनके ज़हरीले शकों को• यह है एक कुरानी कानून कि वो पाते हैं दुगना आज़ाब, अब और हमेशा के लिए•*

9:107 कोई भी मस्जिद जहाँ तरीके मनसूब नहीं किये जाते हैं **सिर्फ अल्लाह के लिए हैं शैतान के, अल्लाह के नहीं• मिसाल के तौर पर, नाम लेते हुए इब्राहीम, मुहम्मद, और/या अली के नामों को आज़ान और/या रावता नमाज़ों में तोड़ता है एहकामों को 2:136, 2:285, 3:84 और 72:18 में• बदनसीबी से, ये है एक आम बुतपरस्ती वाला तरीका पूरे बिगड़े हुए मुस्लिम मुमालिक में•*

सबसे फायदेमंद सरमाया

111. **अल्लाह** ने खरीदा है ईमानवालों से उनकी ज़िंदगियों को और उनके पैसे को जन्नत के बदले में• इसतरह, वो लड़ते हैं **अल्लाह** के वासते, राज़ी कत्ल करने के और कत्ल होने के लिए• ऐसा है उनका सच्चा वादा तौरेत, इंजील, और कुरान में — और कौन है जो **अल्लाह** से बेहतर उसका

वादा पूरा करता है? तुम्हें जश्न मनाना चाहिए ऐसा एक सौदा करने में• यह है सबसे बड़ी फतेह•

ईमानवाले

112. वो हैं तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, तारीफ करने वाले, ध्यान करने वाले, रूकु करने और सजदा करने वाले, नेककारी की वकालत करने वाले और बुराई मना करने वाले, और **अल्लाह** के कानूनों को रखने वाले• दो खुशखबरी ऐसे ईमानावालों को•

तुम्हें अल्लाह के दुश्मनों को ठुकराना चाहिए:
इब्राहीम ने उसके वालिद को ठुकराया

113. नाहीं नबी, नाहीं जो ईमान रखते हैं चाहिए मांगे मगफरत बुतपरस्ती करने वालों के लिए, अगर वो उनके सबसे करीब के रिश्तेदार हों तब भी, जब उनको एहसास हो जाये कि वो तय किये गये हैं जहन्नम के लिए•

114. सिर्फ इसलिए इब्राहीम ने उसके वालिद के लिए माफी मांगा क्योंकि उसने वादा किया था ऐसा करने के लिए• लेकिन जैसे ही उसने एहसास किया की वो था **अल्लाह** का दुश्मन, उसने उसे ठुकरा दिया• इब्राहीम था बेहद नर्मदिल, बामुरव्वत•

115. **अल्लाह** किसी भी लोगों को नहीं बहकाते, इसके बाद कि उन्होंने हिदायत दिया था उनको, बगैर बताते हुए पहले उनके लिए क्या उम्मीद करें• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

116. **अल्लाह** की हैं सारी सल्तनत आसमानों और ज़मीन की• वो काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत• तुम्हारे पास नहीं है **अल्लाह** के अलावा एक रब और मालिक जैसा•

117. **अल्लाह** ने माफ किया है नबी, और हिजरत करने वालों *(मुहाजिरीन)* और मदद करने वाले जिन्होंने उनकी मेज़बानी की और उनको पनाह दिया *(अनसार)*, जिन्होंने उसकी पैरवी की मुश्किल वक्तों में• वो वक्त था जब दिलें तुम में से कुछ के तकरीबन डगमगाये• लेकिन उन्होंने माफ किया है उनको, इसलिए के वो हैं शफीक उनकी तरफ, सबसे रहीम•

तर्क न करो रसूल को

118. इसके अलावा *(मगफरत किये गये थे)* तीन जो पीछे रह गये• कुशादा ज़मीन उनके लिए इतनी तंग हो गई, कि उन्होंने तकरीबन सारी उम्मीद छोड़ दिया अपने आप के लिए• आखिरकार, उन्होंने एहसास किया के कोई बचाव नहीं था **अल्लाह** से, सिवाए उनकी तरफ• उन्होंने फिर उनकी मगफरत की ताके वो तौबा कर सकें• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

119. ऐ ईमान वालो, तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना , और सच्चों के बीच रहना चाहिए•

120. नाहीं शहर के रहने वाले, नाहीं अरबियें तुम्हारे ईदर्गिद, चाहें तलाश करना **अल्लाह** के रसूल के पीछे रहने के लिए *(जब वो तैयारी करे जंग के लिए)*• नाहीं उनको तरजी देनी चाहिए उनके खुद के मामलों को उसकी मदद करने के ऊपर• यह इस लिए है कि वो नहीं झेलते कोई प्यास, या कोई कोशिश, या भूख **अल्लाह** कि राह में, या लेते हैं एक कदम जो गुस्सा दिलाता है काफिरों को, या आज़ियत देते हैं कोई मेहनतकशी दुश्मन पर, बगैर उसे लिखवाए गये उनके लिए एक फायदा जैसा• **अल्लाह** कभी नाकामयाब नहीं होते हैं बदला देने के लिए उनको जो नेककारी वाला काम करते हैं•

121. नाहीं वो कोई खर्च उठाते हैं, बड़ा या छोटा, नाहीं वो कोई वादी पार करते हैं, बगैर फायदा लिखवाए गये उनके लिए• **अल्लाह** यकीनन इनाम देंगे उनको फरागदिली से उनके कामों के लिए•

एहमियत
मज़हबी तालीम की

122. जब ईमानवाले जंग की तैयारी करें, सारों को ऐसा नहीं करना चाहिए• हर गिरोह से कुछ को चाहिए तैयारी करना मनसूब करते हुए उनका वक्त मज़हब कि तालीम हासिल करने के लिए• इस तरह, वो इल्म को आगे बड़ा सकते हैं उनके लोगों कि तरफ जब वो लौटते हैं, ताके वो रहें मज़हबी तौर पर आगाह•

काफिरें

123. ऐ ईमानवालों, तुमको चाहिए लड़ना काफिरों से जो तुमपर हमला करते हैं — उन्हें तुमको सख्त पाने दो — और जानों कि **अल्लाह** हैं साथ नेककारों के•

मुनाफिकीन

124. जब एक सुरह नाज़िल की गई थी, उनमें से कुछ कहते, “क्या यह सुरह ने मज़बूत किया तुम में से किसी का अकीदा?” वाकई, उसने ज़रूर मज़बूत किया अकीदा उनका जिन्होंने ईमान रखा, और वो किसी भी नुज़ूल में जश्न मनाते हैं॰

125. जहाँ तक वो जिन्होंने पनाह दिया शकों को उनके दिलों में, उसने असल में इज़ाफा किया नापाकीज़गी उनके नापाकीज़गी को॰ और वो मरे काफिरों जैसा॰

126. क्या वो नहीं देखते वो झेलते हैं सख्त आज़माईशों से एक या दो बार हर साल? इसके बावजूद, वो मुसलसल ना कामयाब होते हैं तौबा करने के लिए, और नाकामयाब होते हैं असर लेने के लिए?

एक तारीखी जुर्म फाश हुआ:
अल्लाह के लफ्ज़ से
*दखल अंदाज़ी करना**
अल्लाह पेश करते हैं नाकाबिले रद सबूत

127. जब एक सुरह नाज़िल की गई थी, उनमें से कुछ एक दूसरे को देखते ऐसे जैसे कहने के लिए: “क्या कोई देख रहा है तुमको?” फिर वो चले गये॰ इस तरह, **अल्लाह** ने मोड़ दिया है उनके दिलों को, इसलिए के वो हैं लोग जो नहीं समझते॰

****

सुरह 10: युनुस (युनुस)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. अ॰ ल॰ र॰* ये *(हुरूफें)* हैं सबूतें इस हिकमत वाली किताब के॰

2. क्या यह एक बहुत ज़्यादा अजूबा है लोगों के लिए कि हमने इल्हाम किया उनके जैसे एक आदमी को? वो *(इल्हाम किया गया था कहने के लिए)*, “तुम्हें लोगों को ताकीद करनी चाहिए, और दो खुशखबरी उनको जो ईमान रखते हैं कि उन्होंने पाया है एक शोहरत कि जगह उनके रब के पास॰” काफिरों ने कहा, “यह है एक चालाक जादुगर!”

9:1और *9:127 यह है सिर्फ सुरह जो* **बिस्मिल्लाह *के साथ शुरू नहीं किया गया है॰ इस कुदरत ने 14 सदियों से उल्झाया है कुरान के तालिबे इल्म को, और कई नज़रिये पेश किये गये थे उसको समझाने के लिए॰ अब हम समझते हैं कि ज़ाहिर गैर मौजूदगी* **बिस्मिल्लाह** *कि तीन सबबों का काम करती है: (1) वो नुमाइंदगी करती है एक पहले से तय किए गये खुदाई ऐलान का कि बुतपरस्ती करने वाले पहले से मुकर्रर किये गये थे कुरान के साथ दखल अंदाज़ी करने के लिए 2 झूठी आयतों को जोड़ते हुए (9:128-129)॰ (2) वो मुज़ाहिरा करता है कुरान में अल्लाह के रियाज़ी कोड के कामों में से एक का, जो है, कुरान कि हिफाज़त करना किसी तबदीली के खिलाफ॰ (3)वो मुहय्या करता और ज़्यादा हैरत अंगेज़ सिफतें कुरान के कोड का॰ उनके गैरमामूली एहमियत कि वजह से, तफसीलें दिए गये हैं अपेन्डिक्स 24 और 29 में॰ एक फौरी सोच है कि लफ्ज़ “अल्लाह” के वाकै होने का अदद सुरह 9 के खत्म होने पर है 1273 (19x67)॰ अगर दो झूठी आयतें 128 और 129 शामिल किये जाते हैं, यह कुदरत — और कई दूसरे— गायब हो जायेंगे॰*

**10:1 यह हुरूफें कायम करते हैं एक बड़ा हिस्सा कुरान के ज़बरदस्त रियाज़ी कोड और खुदाई मुसन्निफ के सबूत का॰ देखें अेपेन्डिक्स 1 तफसीलों के लिए॰*

1273 *79186*

3. तुम्हारे रब हैं सिर्फ **अल्लाह**; जिस वाहिद ने पैदा किया आसमानो और ज़मीन को छ: दिनो में, फिर लिया सारी इकतेदार को॰ वो सारे मामलों को काबू करते हैं॰ वहाँ कोई शिफाअत करने वाला नहीं, सिवाए उनकी मरज़ी के मुताबिक॰ ऐसे हैं **अल्लाह** तुम्हारे रब॰ तुम्हें उनकी इबादत करनी चाहिए॰ क्या तुम तवज्जो नहीं दोगे?

4. उनकी तरफ तुमको लौटना है आखिरकार, तुम सारों को॰ यह है **अल्लाह** का सच्चा वादा॰ वो खलक को शुरू करते हैं, फिर उसे दोहराते हैं, ताके इनाम दें उनको जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, बराबरी से॰ जहाँ तक वो जो

कुफ़्र करते हैं, वो झेलते हैं दोज़खी शराब, और एक दर्दनाक आज़ाब उनके कुफ़्र करने के लिए•

5. वो हैं वाहिद जिन्होंने बनाया सूरज को चमकता हुआ, और चांद को एक रौशन, और उन्होंने नक्शकारी की उसके मरहलों कि ताके तुम सालों को गिनना और हिसाब करना सीख सको• **अल्लाह** ने पैदा नहीं किया ये सब, सिवाए एक खास मकसद के लिए• वो समझाते हैं आयतों को लोगों के लिए जो जानते हैं•

6. यकीनन, रात और दिन कि तबदिली में, और जो **अल्लाह** ने पैदा किया है आसमानों और ज़मीन में, वहाँ हैं सबूतें लोगों के लिए जो हैं नेककार•

मसरूफियत
इस दुनिया के साथ

7. जो कोई उम्मीद नहीं कर रहे हैं हम से मिलने का, और हैं मसरूफ इस दुनियावी ज़िंदगी के साथ और हैं मुतमईन उससे, और इन्कार करते हैं हमारे सबूतों पर तवज्जो देने के लिए;

8. इन्होंने पा लिया है जहन्नम उनका आखरी ठिकाने जैसा, उनके खुदके कामों का एक नतीजे जैसा•

अल्लाह हिदायत देते हैं ईमानवालों को

9. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, उनके रब उनको हिदायत देते हैं, उनके अकीदे कि वजह से• नहरे बहेंगे उनके नीचे मुसर्रत वाली बागों में•

10. उनकी इबादत उसमें है: "आप की तारीफ हो, हमारे खुदा," उनका आदाब है वहाँ , "सलाम," और उनकी सबसे आला इबादत है "**अल्लाह** की तारीफ हो, कायनात के रब•"

11. अगर लोगों कि तरफ से हासिल किये गये आजाब कि जल्दबाज़ी करें **अल्लाह**, जिस तरह वो नियामतों का तकाज़ा करते हैं, वो काफी पहले फनाह कर दिये गये होते• बहरहाल, जो ईमान नहीं रखते हमसे मिलने में हम छोड़ देते हैं उनको उनके खताओं में, गलती करते हुए•

12. जब मुसीबत छूती है इन्सान को, वो पुकारता है हमें लेटे हुए, बैठे हुए, या खड़े हुए• लेकिन जैसे ही हम उसकी मुसीबत को हटाते हैं, वो चलता है ऐसे जैसे उसने कभी इल्तेजा नहीं किया हमसे किसी मेहनतकशी को हटाने के लिए! खतावारों के कामों को इस तरह सजाया गया है उनकी आँखों में•

सबकें माज़ी से

13. हमने कई नस्लों को फनाह किया है तुमसे पहले जब उन्होंने खता किया• उनके रसूलें गये उनकी तरफ साफ सबूतों के साथ, लेकिन उन्होंने इन्कार किया ईमान लाने के लिए• हम इस तरह बदला देते हैं मुजरिम लोगों को•

अब बारी है तुम्हारी

14. फिर हमने तुमको उनके बाद ज़मीन का विरासत पाने वाले बनाया, देखने के लिए तुम कैसा करते हो•

हर हुरूफ हिसाब किया गया
और खुदाई तौर से नक्शकारी किया गया

15. जब हमारी आयतें पढ़ी जाती है उनके लिए, जो कोई उम्मीद नहीं करते हमसे मिलने का कहते हैं, "लाओ एक कुरान* इस के अलावा, या इसे बदल दो!" कहो, "मुमकिन नहीं के मैं बदल सकूं इसे खुद से• मैं सिर्फ पैरवी करता हूँ जो मुझ को नाज़िल किया गया है• मैं डरता हूँ, अगर मैं नाफरमानी करूँ मेरे रब की, आज़ाब एक ज़बरदस्त दिन का•"

16. कहो, "अगर **अल्लाह** चाहते, मैं नहीं पढ़ता इसे तुम्हारे लिए, नाहीं तुम जानते कोई चीज़ इसके बारे में• मैं रहा हूँ तुम्हारे दरमियान एक पूरी ज़िंदगी इससे पहले *(और तुमने जाना हैं मुझे एक समझदार, सच्चे शक्स जैसा)*• क्या तुम नहीं समझते?"

17. कौन है ज़्यादा बुरा उससे जो झुठें गढ़ता है **अल्लाह** के बारे में, या ठुकराता है उनकी आयतें• यकीनन, खतावार कभी कामयाब नहीं होते हैं•

18. वो इबादत करते हैं **अल्लाह** के बजाए बुतों की जो नहीं रखते कोई ताकत उनको नुकसान या उनको फायदा पहुँचाने का, और वो कहते हैं, "यह हैं हमारी शिफाअत कराने वाले **अल्लाह** के पास!" कहो, "क्या तुम **अल्लाह** को इत्तेला कर रहे हो कोई चीज़ वो नहीं जानते आसमानों या ज़मीन में?" उनकी तारीफ हो• वो हैं सबसे आला; कहीं ऊपर ज़रूरतमंद साथी रखने के•

19. लोग एक जमात हुआ करते थे, फिर उन्होंने बहेस किया• अगर वो पहले से तुम्हारे रब की तरफ से तय किये गये लफ़्ज़ के लिए न होता, उनके बहेसों के मुताल्लिक उनका फौरन इंसाफ कर दिया गया होता•

कुरान का मौजेज़ा
मुहम्मद के बाद
*फाश किया जाना**

20. वो कहते हैं, "कैसे कोई मौजेज़ा नहीं आया नीचे उसके लिए उसके रब की तरफ से?" कहो, "मुस्तकबिल **अल्लाह** के पास है; इसलिए इंतेज़ार करो, और मैं तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहा हूँ•"

बागी इंसानें

21. जब हम इनायत करते हैं रहमत लोगों पर, इसके बाद कि मुसीबत ने तकलीफ दिया था उनको, वो फौरन मनसूबा बनाते हैं हमारी आयतों के खिलाफ! कहो, "**अल्लाह** का मनसूबा बनाना है कहीं ज़्यादा असरदार• इसलिए कि हमारे रसूलें ज़ब्त कर रहे हैं सारी चीज़ें तुम रचते हो•"

22. वो हैं वाहिद जो चलाते हैं तुमको ज़मीन और समंदर के पार• तुम कश्तियों पर सवार होते हो, और वो तैरते हैं आसानी से अच्छी हवा में• फिर, जब उसमें जश्न मनाते हुए, तेज़ हवा बहती है, और लहरें घेरती हैं उनको हर तरफ से• ये वक्त है जब वो **अल्लाह** से इल्तेजा करते हैं, खुलूसी से सिर्फ उनको मनसूब करते हुए उनकी दुआऐं: "अगर आप सिर्फ बचाएं हमें इस बार, हम होंगे हमेशा के लिए कद्र करने वाले•"

23. लेकिन जैसे ही वो बचाते हैं उनको, वो ज़मीन पर खता करते हैं, और सच कि मुखालफत करते हैं• ऐ लोगों, तुम्हारी मुखालिफत सिर्फ नुकसानदेह हैं तुम्हारी खुद की रूहों के लिए• तुम मसरूफ रहते हो इस दुनियावी ज़िंदगी के साथ, फिर हमारी तरफ है तुम्हारा आखिर कार लौटना, फिर हम इत्तेला करते हैं सारी चीज़ें जो तुमने किया था•

**10:15 लफ़्ज़ "कुरान" बयान किया गया है कुरान में 58 बार, लेकिन चूँकी ये आयत "दूसरे कुरान" को मुखातिब करती है, उसे शामिल नहीं किया जाना चाहिए; "यह कुरान" बयान किया गया है कुरान में 57 बार, 19x3•*

**10:20 यादे माज़ी में, अब हम देखते हैं कि कुरान का मौजेज़ा, वाकई "सबसे बड़े मौजेज़ों में से एक" (74:30-35), खुदाई तौर पर पहले से मुहम्मद के 14 सदियों बाद मुकर्रर किया गया था फाश किये जाने के लिए• रवायती मुसलमानों कि मौजूदा हालत कि नज़र में, अगर मुहम्मद को दिया गया होता यह मौजेज़ा, वो मुसलमानें, जो पहले से बुत बना रहे हैं मुहम्मद को अल्लाह के साथ, उसकी इबादत करते अल्लाह जैसा• इसके अलावा, ये मौजेज़ा ज़ाहिर हैं बनाया गया था कम्प्युटर ज़माने के लिए, और कद्र किये जाने के लिए रियाज़ी तौर पर पेचीदा नस्लों कि तरफ से•*

24. इस दुनियावी ज़िंदगी की मिसाल है ऐसी: हम भेजते हैं आसमान से नीचे पानी उससे पैदा करने के लिए सारे किस्मों के पौधे ज़मीन से, और खाना मुहय्या करने के लिए लोगों और जानवरों के लिए• फिर, जैसे ही ज़मीन ठीक ठीक सजाई जाती है, और उसके लोग सोचते हैं कि वो है उनके काबू में, हमारा इंसाफ आता है रात या दिन को,* छोड़ते हुए उसे पूरी तरह बंजर, ऐसे जैसे कुछ भी वजूद मेंनहीं था पिछले दिन• हम इस तरह समझाते हैं आयतों को लोगों के लिए जो गौर करते हैं•

25. **अल्लाह** दावत देते हैं अमन के ठिकाने कि तरफ, और हिदायत देते हैं जिसकिसी को वो चाहते हैं एक सीधी राह में•

जन्नत और जहन्नम हैं दायम

26. नेककारों के लिए, इनाम ज़रप किया जायेगा कई गुना• उनके चेहरे कभी महसूस नहीं करेंगे कोई महरूमी या शर्म• वो हैं रहने वाले जन्नत के; वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए•

27. जहाँ तक वो जो कमाते हैं गुनाहों को, उनका बदला है उनके गुनाह के बराबर का• रूसवाई है

उनका हिस्सा, और कोई नहीं सिवाए **अल्लाह** के जो उनकी हिफाज़त कर सकता है• उनके चेहरे बेबस मालूम होंगे अंधेरी रात के अंबार से• वो होंगे जहन्नम के रहने वाले; वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए•

बुतें ठुकराते हैं
उनकी इबादत करने वालों को

28. उस दिन पर जब हम हाज़िर करेंगे उन सारों को, हम कहेंगे उनको जिन्होंने बुतों की इबादत किया, "हमने हाज़िर किया है तुमको, तुम्हारे बुतों के साथ•" हम उनको एक दूसरे का सामना करने देंगे, और उनके बुतें उनसे कहेंगे, "हमें कोई अंदाज़ा नहीं था कि तुमने हमारी बुत परस्ती की•

29. "**अल्लाह** काफी हैं एक गवाह जैसे हमारे और तुम्हारे बीच, कि तुम इबादत करते थे हमारी हम थे पूरी तरह बेखबर•"

30. वो वक्त है जब हर रूह जांचेगी सारी चीजें जो उसने किया था• वो लौटाए जायेंगे **अल्लाह**, उनके हकीकी **रब** और **मालिक** कि तरफ, और बुतें जो उन्होंने बनाया उनको ठुकरा देंगे•

31. कहो, "कौन मुहय्या करता है तुम्हारे लिए आसमान और ज़मीन से? कौन काबू करता है सारी सुनाई और दिखाई? कौन पैदा करता है जिंदगी मौत से, और मौत को ज़िंदगी से? किस के काबू में हैं सारी चीज़ें?" वो कहेंगे, "**अल्लाह•**" कहो, "तुम फिर क्यों एहकामों को कायम नहीं करते?"•

32. ऐसे हैं **अल्लाह**, तुम्हारे हकीकी **रब**• क्या है सच्चाई के बाद, सिवाए झूठ के? तुम कैसे नज़रअंदाज़ कर सकते हो ये सब?

33. ऐसा है तुम्हारे रब का फैसला जो करता है उनके लिए जो चुनते हैं बदकार रहने के लिए: वो ईमान नहीं ला सकते•

गौर करो तुम्हारे बुतों पर

34. कहो, "क्या तुम्हारे कोई बुतें कर सकते हैं खिलकत को शुरू, फिर उसे दोहरा सकते हैं?" कहो, "**अल्लाह** शुरू करते हैं खिलकत को, फिर उसे दोहराते हैं•"

35. कहो, "क्या तुम्हारे बुतों में से कोई हिदायत करता है सच्चाई की तरफ?" कहो, "**अल्लाह** हिदायत करते हैं सच्चाई की तरफ• क्या वो जो हिदायत करता हैं सच्चाई की तरफ है ज़्यादा मुसतेहिक पैरवी किये जाने के लिए या वो जो हिदायत नहीं करता, और ज़रूरतमंद है खुद के लिए हिदायत? क्या माजरा है तुम्हारे फैसले के साथ?"

**10:24 अल्लाह, बेशक, जानते हैं कब आयेगा उनका फैसला दिन के दरमियान, या रात के दरमियान• लेकिन वो ऐसा होता है कि ज़मीन होगी आधा दिन और आधी रात जब दुनिया के खत्म होने का वक्त आयेगा• एक और "साइंसी मौजेज़ा" कुरान का•*

36. उनमें से ज़्यादातर किसी चीज़ की पैरवी नहीं करते सिवाए तुक्केबाज़ी के, और तुक्केबाज़ी सच की जगह नहीं ले सकती• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो वो करते हैं•

सिर्फ अल्लाह हो सकते हैं
कुरान के मुसन्निफ

37. यह कुरान मुमकिन नहीं मुसन्निफ किया गया हो **अल्लाह** के सिवाए दूसरे से• वो तसदीक करता है सारे पिछले पैगामों की, और मुहय्या करता है एक पूरी तफसील की गई आसमानी किताब• वो है बिला खता; इसलिए के वो आता है कायनात के रब कि तरफ से•

38. अगर वो कहें, "उसने उसे गढ़ लिया है," कहो, "फिर पैदा करो एक सुरह इनकी तरह, और दावत दो जिसकिसी को तुम चाहो, सिवाए **अल्लाह** के, अगर तुम हो सच्चे•

39. वाकई, उन्होंने इसे बगैर गौर करते और उसे जांचते हुए, और उसे समझने से पहले ठुकराया है• इसी तरह किया उनसे पहले जिन्होंने कुफ्र किया• इसलिए, ध्यान दो खतावारों के नतीजों को•

40. उनमें से कुछ ईमान रखते हैं *(इस आसमानी किताब में)*, जबकी दूसरे कुफ़्र करते हैं उसमें• तुम्हारे रब हैं पूरी तरह वाकिफ बुरा करने वालों से•

41. अगर वो तुम्हें ठुकराएं, तो कहो, "मेरे पास हैं मेरे आमाल, और तुम्हारे पास हैं तुम्हारे आमाल• तुम बेकसूर हो किसी चीज़ से मैं करता हूँ, और मैं बेकसूर हूँ किसी चज़ि से तुम करते हो•"

42. उनमें से कुछ सुनते हैं तुम्हें, लेकिन क्या तुम बहरे को सुना सकते हो, इसके बावजूद कि वो नहीं समझ सकते?

इंसानें आज़ादी से चुनते हैं उनके रास्तों को

43. उनमें से कुछ देखते हैं तुम्हारी तरफ, लेकिन क्या तुम हिदायत दे सकते हो अंधे को, इसके बावजूद कि वो नहीं देखते•

44. **अल्लाह** कभी गलत नहीं करते लोगों को; वो लोग हैं जो गलत करते हैं उनके खुदकी रूहों को•

45. उस दिन पर जब वो हाज़िर करेंगे उन सारों को, वो एहसास करेंगे ऐसे जैसे वो रहे इस दुनिया में दिन के एक घंटे तक, जिस के दरमियान वो मिले• हारने वाले हैं वाकई वो जो कुफ़्र करते हैं **अल्लाह** से मिलने में; और चुनते हैं गुमराह होने के लिए•

46. चाहे हम दिखायें तुम्हें *(आज़ाब का)* कुछ हमने वादा किया है उनको, या खत्म करें तुम्हारी ज़िंदगी उससे पहले, हमारी तरफ है आखिकार उनका लौटना• **अल्लाह** गवाह होते हैं सारी चीजों के वो करते हैं•

47. हर कौम कि तरफ, एक रसूल• इसके बाद कि जब उनका रसूल आता है, उनका बराबरी से इंसाफ किया जाता है, बगैर ज़रा सी भी नाइंसाफी के•

48. वो दावा करते हैं: "यह पेशीनगोई कब गुज़रेगी, अगर तुम सच बोल रहे हो?"

रसूल नहीं रखता कोई ताकत

49. कहो, "मैं ताकत नहीं रखता खुद को नुकसान पहुँचाने, या खुद को फायदा पहुँचाने का; सिर्फ वही जो **अल्लाह** चाहते हैं होता है•" हर कौम के पास एक पहले से तय की गई ज़िंदगी कि मुद्दत है• जब उनका दरमियानी वक्फा खत्म होता, वो उसें एक घंटे से मुलतवी नहीं कर सकते, नाहीं उसे आगे कर सकते हैं•

50. कहो, "चाहे उनका आज़ाब आता है तुम्हारी तरफ रात को या दिन को, क्यों खता करने वाले हैं इतनी जल्दी में?

51. "अगर वो वाकई हो, क्या तुम तब ईमान लाओगे? तुम्हें क्यों तब ईमान लाना चाहिए? तुम उसके आने का दावा किया करते थे?

52. कहा जायेगा खतावारों को, "चखो दायम आज़ाब• क्या तुम्हें सिलाह नहीं दिया जा रहा है ठीक ठीक उसके लिये जो तुमने कमाया है?"

53. वो दावा करते हें तुम्हें पेशीनगोई करने के लिए: "क्या वाकई यह है जो होगा?" कहो, "हाँ यकीनन, मेरे रब की कसम, यह है सच, और तुम कभी नहीं बच सकते•"

क्या कीमत अकीदे की

54. अगर कोई बदकार जान मालिक बन जाये ज़मीन पर सारी चीज़ों की, वो आसानी से पेश कर देगी उसे मुआवजें कि तौर पर• वो नदामत से भरे होंगे जब वो देखेंगे आज़ाब• उनका फैसला किया जायेगा बराबरी से, बगैर ज़रासी भी नाइंसाफी के•

55. बेशक, **अल्लाह** की हैं सारी चीज़ें आसमानो और ज़मीन में• बेशक, **अल्लाह** का वादा है सच, लेकिन उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते•

56. वो काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत, और उनकी तरफ तुम लौटाये जाओगे•

57. ऐ लोगों, रौशनाई आ चुकी है तुम्हारी तरफ इसमें तुम्हारे रब की तरफ से, और कोई चीज़ जो परेशान करती है तुम्हारे दिलों को उसके लिए मरहम, और हिदायत, और रहमत ईमान वालों के लिए•

खुशी ईमानवालों के लिए

58. कहो, "**अल्लाह** के फज़्ल के साथ और उनकी रहमत के साथ वो जश्न मनायेंगे•" यह है कहीं बेहतर किसी दौलत के जो वो जमा कर सकते हैं•

इंसान के बनाये खुराकी मनाईयाँ

59. कहो, "क्या तुमने ध्यान दिया है कैसे **अल्लाह** भेजते हैं नीचे सारे किस्मों की नियामतें तुम्हारी तरफ, फिर तुम बनाते हो कुछ को उनमें से हराम, और कुछ को हलाल?" कहो, "क्या **अल्लाह** ने दिया तुमको इजाज़त ऐसा करने के लिए? या, क्या तुम गढ़ते हो झूठों को और मनसूब करते हो उन्हें **अल्लाह** को?"

60. क्या कभी कोई ख्याल आता है उनको जो गढ़ते हैं झूठों को **अल्लाह** के बारे में कि उन्हें उनका सामना करना पड़ेगा हश्र के दिन पर? यकीनन, **अल्लाह** बरसाते हैं लोगों को उनकी फज़्ल के साथ, लेकिन ज़्यादा तर उनमें हैं नाकद्रदान•

अल्लाह को जानना

61. तुम नहीं पड़ते किसी हालत में, नाहीं तुम पढ़ते हो कोई कुरान, नाहीं तुम कोई चीज़ करते हो, बगैर हमारे गवाह होते हुए उसके जब तुम उसे करते हो• ज़र्रा बराबर वज़न भी तुम्हारे रब के काबू के बाहर नहीं है, चाहे वो हो आसमानों या ज़मीन में• नाहीं है वहाँ कोई चीज़ ज़र्रा से छोटी, या बड़ी, जो ज़प्त नहीं की गई है एक गहरे दफ्तर में•

खुशी:
*अभी और हमेशा के लिए**

62. यकीनन, **अल्लाह** के साथियों को कुछ नहीं है डरने के लिए, नाहीं वो होंगे गम ज़दा•

63. ये हैं वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं•

64. उनके लिए, शादमानी और खुशी इस दुनिया में, इस के अलावा अगली ज़िंदगी में• यह है **अल्लाह** का न बदलने वाला कानून• ऐसी है सबसे बड़ी फतेह•

65. उनके बातों कि वजह से गमगीन न हो• सारी ताकत है **अल्लाह** के पास• वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

66. बेशक, **अल्लाह** का है हर कोई आसमानों में और हर कोई ज़मीन पर• जो कोई कायम करते हैं बुतों को सिवाए **अल्लाह** के असल में किसी चीज़ कि पैरवी नहीं कर रहे हैं• वो सिर्फ सोचते हैं कि वो किसी चीज़ कि पैरवी कर रहे हैं• वो सिर्फ अंदाज़ा लगाते हैं•

67. वो हैं वाहिद जिन्होंने बनाया रात को तुम्हारे आराम के लिए, और बनाया दिन को रौशन• ये हैं सबूतें लोगों के लिए जो सुन सकते हैं•

**10:62-64 ज़्यादातर लोग सोचते हैं कि उनको इंतेज़ार करना पड़ेगा हश्र के दिन तक इससे पहले की वो उनके नेककारी के इनामों को पायेंगे, या आज़ाब उनके बदकारी के लिए• लेकिन कुरान बार बार भरोसा दिलाता है ईमानवालों को कि उनको ज़मानत दी गई है मुकम्मल खुशी की यहाँ इस दुनिया में, अभी और हमेशा के लिए• यहाँ उनका दरमियानी वक्फा खत्म होने पर, वो जाते हैं सीधे जन्नत को (देखें अपेन्डिक्स 17)•*

बड़ी बेअदबी

68. उन्होंने कहा, "**अल्लाह** ने एक बेटा जना है!" उनकी तारिफ हो• वो हैं सबसे अमीर• उनकी हैं सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर• तुम्हारे पास कोई सबूत नहीं ऐसी एक बेअदबी कि हिमायत करने के लिए• क्या तुम **अल्लाह** के बारे में कह रहे हो जो तुम नहीं जानते?

69. ऐलान करो: "जो कोई **अल्लाह** के बारे में झूठों को गढ़ते हैं नहीं होंगे कभी कामयाब•"

70. वो पाते हैं आरज़ी हिस्सा इस दुनिया में, फिर हमारी तरफ हैं आखिरकार उनका लौटना, फिर हम हवाले करते हैं उनको सख्त आज़ाब को उनके कुफ्र करने के लिए•

नुह

71. बयान करो उनके लिए नुह कि तारीख• उसने उसके लोगों से कहा, "ऐ मेरे लोगों, अगर तुम पाते हो मेरा मकाम और मेरा तुमको याद दिलाना **अल्लाह** कि आयतों का बहुत ज़्यादा तुम्हारे लिए, तो मैं रखता हूँ मेरा भरोसा **अल्लाह** में• तुम्हें जमा होना चाहिए तुम्हारे रहबरों के साथ, राज़ी हो एक आखरी फैसले पर तुम्हारे खुद के दरमियान, फिर मालूम होने दो उसे मुझ को बगैर मुलतवी किये•

72. "अगर तुम पलट जाओ, तो मैंने तुमसे नहीं मांगा किसी मज़दूरी के लिए• मेरी मज़दूरी आती है **अल्लाह** के तरफ से• मुझे हुक्म दिया गया है एक फरमानबरदार होने के लिए•"

73. उन्होंने उसे ठुकराया और, इस वजह से, हमने उसे और उनको बचाया जो कश्ती में उसके साथ हुए;

हमने उनको विरासत पाने वाला बनाया• और हमने डुबो दिया उनको जिन्होंने ठुकराया हमारी आयतों को• ध्यान दो अंजामों को; उन्हें आगाह किया गया था•

इंसानें उनके असल
गुनाह पर इसरार करते हैं

74. फिर हमने भेजा उसके बाद रसूलों को उनके लोगों कि तरफ, और उन्होंने दिखाये उनको साफ सबूतें• लेकिन वो ईमान लाने वाले नहीं थे उसमें जो ठुकराया था उन्होंने माज़ी में• हम इस तरह खतावारों के दिलों को बंद कर देते हैं•

मूसा और हारून

75. फिर हमने भेजा उनके बाद मूसा और हारून को फिरऔन और उसके गिरोह कि तरफ, हमारे सबूतों के साथ• लेकिन वो मगरूर हो गये; और थे खता करने वाले•

76. जब सच आया उनके पास हमारी तरफ से, उन्होंने कहा, "यह ज़ाहिरतौर पर है जादू!"

77. मूसा ने कहा, "क्या तुम इस तरह मुखातिब करते हो सच को जब वो आता है तुम्हारी तरफ? क्या यह जादू है? कैसे कोई जादुगरें कामयाब हो सकते हैं?"

78. उन्होंने कहा, "क्या तुम हमें फेरने के लिए आये हो उससे जो हमने हमारे वालिदैन को करते पाया, और खुद के लिए शोहरत के दरजों को हासिल करने के लिए? हम कभी नहीं जुड़ेंगे तुम्हारे साथ ईमानवालों जैसा•"

सच कामयाब होता है

79. फिरऔन ने कहा, "लाओ मेरी तरफ हर तर्जुबेकार जादुगर•"

80. जब जादुगरें आये, मूसा ने उनसे कहा, "फेंको जो कुछ तुम फेंकने वाले हो•"

81. जब उन्होंने फेंका, मुसा ने कहा, "जो तुमने पैदा किया है जादू है, और **अल्लाह** उसे नाकामयाब करेंगे• **अल्लाह** खतावारों के काम की मदद नहीं करते•

82. **अल्लाह** कायम करते हैं सच को उनके लफ्ज़ो से, मुजरिमों के बावजूद•

83. किसी ने ईमान नहीं लाया मूसा के साथ सिवाए उसके कुछ लोगों के, जबके डरते हुए फिरऔन और उसके बुर्जुगों के जुल्म से• यकीनन, फिरऔन था बहुत ज़्यादा मगरूर ज़मीन पर, और एक असल ज़ालिम•

84. मूसा ने कहा, "ऐ मेरे लोगों, अगर तुमने वाकई में ईमान रखा है **अल्लाह** में, तो रखो तम्हारे भरोसे को उनमें, अगर तुम वाकई हो फरमानबरदारें•"

85. उन्होंने कहा, "हम **अल्लाह** में भरोसा करते हैं• हमारे रब, बचाईये हमें इन ज़ालिम लोगों के एज़ारसानी से•

86. "बचाईये हमें, आपकी रहमत से, कुफ्र करने वाले लोगों से•"

87. हमने मूसा और उसके भाई को इल्हाम किया• "कायम करो तुम्हारे घरों को मिस्र में मौजुदा वक्त के लिए, बदल दो तुम्हारे घरों को मस्जिदों में, और कायम करो रावता नमाज़ों *(सलात)* को• दो खुशखबरी ईमानवालों को•"

88. मूसा ने कहा, "हमारे रब, आपने दिया है फिरऔन और उसके बुर्जुगों को ऐशें और दौलत इस दुनिया में• हमारे रब, वो उन्हें सिर्फ इस्तेमाल करते हैं दूसरों को आप के रास्ते से बहकाने के लिए• हमारे रब, उनके दौलत को मिटा दिजिए, और सख्त कर दिजिए उनके दिलों को उनको ईमान लाने से रोकने के लिए, जब तक वो न देखें दर्दनाक आज़ाब•"

89. उन्होंने कहा, "तुम्हारी दुआ कबूल की गई है *(ऐ मूसा और हारून)*, इसलिए साबित कदम रहो, और जो नहीं जानते उनके राहों कि पैरवी न करो•"

90. हमने बचाया बनी इस्राईल को समंदर के पार• फिरऔन और उसकी टुकड़ियों ने वहशताना और गुनाहगारी से, उनका पीछा किया• जब डूबना एक हकीकत हुआ उसके लिए, उसने कहा, "मैं ईमान लाता हूँ कि कोई खुदा नहीं सिवाए वाहिद के जिसमें बनी इस्राईल नें ईमान लाए हैं; मैं एक फरमानबरदार हूँ•"

91. "बहुत देर चुकी!* इसलिए के तूने बगावत किया पहले ही, और चुना एक खतावार होने के लिए•

*फिरऔन का जिस्म महफूज रखा गया**

92. “आज, हम महफ़ूज़ रखेंगे तेरे जिस्म को, एक सबक कायम करने के लिए मुस्तक़विल नस्लों के लिए•”* बदनसीबी से, कई लोग हैं पूरी तरह गाफिल हमारी निशानियों से•

93. हमने बक्शा है बनी इस्राईल को एक इज़्जत के मकाम से, और मुबारक किया उनको अच्छी नियामतों से• इसके बावजूद, उन्होंने बहेस किया जब यह इल्म आया उनकी तरफ• तुम्हारे रब उनका इंसाफ करेंगे हश्र के दिन पर उन सारी चीज़ों के मुताल्लिक जों उन्होंने बहेस किया•

रसूल का शक

94. अगर तुम्हें कोई शक है उसके मुताल्लिक जो नाज़िल हुआ है तुमको तुम्हारे रब की तरफ से, तो पूछो उन्हें जो पिछली आसमानी किताब पढ़ते हैं• वाकई, सच आया है तुम्हारी तरफ तुम्हारे रब की तरफ से• शक करने वालों के साथ न हो•

95. नाहीं तुम्हें उनके साथ जुड़ना चाहिए जो ठुकराते हैं **अल्लाह** की आयतों को, ताके तुम हारने वालों के साथ न हो जाओ•

96. यकीनन, जो मलामत किये गये हैं तुम्हारे रब की तरफ से एक फरमान के ज़रिये ईमान नहीं ला सकते•

97. चाहे तुम किसी भी किस्म का सबूत उनको दिखाओ, *(वो ईमान नहीं ला सकते)*, जब तक वो न देखलें दर्दनाक आज़ाब•

ईमान रखने वाले ममालिक तरक्की करते हैं

98. कोई कौम जो ईमान रखती है यकीनन इनाम दी जायेगी ईमान रखने के लिए• मिसाल के लिए, युनुस के लोग: जब वो ईमान लाये, हमने हल्का किया रूसवा करने वाली आज़ाब को जो वो झेल रहे थे इस दुनिया में, और हमने उनको बनाया तरक्की वाला•

**10:91 अल्लाह में ईमान लाना है पहला कदम• उसके बाद, शक्स को चाहिए परवरिश करना और बड़ाना रूह को इबादत करने के तरीकों के ज़रिये (देखें अपेन्डिक्स 15)•*

**10:92 अल्लाह ने बक्शा मिस्रियों को लाश को सूखाने के खास इल्म के साथ• आज, फिरऔन का सुखाया हुआ जिस्म नुमाईश पर है काहिरा म्युज़ियम में•*

99. अगर तुम्हारे रब ने चाहा होता, ज़मीन पर सारे लोग ईमान लाये होते•* क्या तुम लोगों को ईमानवाला बनने के लिए ज़ोरे देना चाहते हो?

काफिरें
*रोके गये हैं**

100. कोई रूह ईमान नहीं ला सकती सिवाए **अल्लाह** की मरज़ी के मुताबिक• इसलिए कि वो एक लानत रखते हैं उनपर जो इन्कार करते हैं समझने के लिए•

101. कहो, “देखो सारी निशानियों को आसमानों और ज़मीन में•” सारे सबूतें और सारी ताकीदें कभी मदद नहीं कर सकतीं लोगों की जो कुफ्र करने का फैसला करते हैं•

102. क्या वो माज़ी में उनके बराबर वालों कि मुकद्दर के आलावा उम्मीद कर सकते हैं? कहो, “बस इंतेज़ार करो, और, तुम्हारे साथ, मैं भी इंतेज़ार कर रहा हूँ•”

फतेह कि ज़मानत दी गई है

103. हम आखिरकार बचाते हैं हमारे रसूलों को और उन्हें जो ईमान रखते हैं• यह है हमारा अटल कानून कि हम बचाते हैं ईमानवालों को•

104. कहो, “ऐ लोगों, अगर तुम्हें कोई शक है मेरे मज़हब के मुताल्लिक, मैं इबादत नहीं करता जिसकी तुम **अल्लाह** के अलावा इबादत करते हो• मैं सिर्फ **अल्लाह** कि इबादत करता हूँ; वाहिद जो खत्म करेंगे तुम्हारी ज़िंदगियों को• मुझे एक ईमानवाला होने का हुक्म किया गया है•

105. मुझे हुक्म दिया गया है: “अपने आप को रखो मज़हब एक अल्लाह कि इबादत के लिए मनसूब: तुम्हें बुत परस्ती नहीं करनी चाहिए•

106. “तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए **अल्लाह** के बजाये उनकी जो नहीं रखते ताकत तुम्हें फायदा या नुकसान पहुँचाने का• अगर तुम करो, बन जाओगे तुम एक खतावार •”

सारी ताकत अल्लाह की है

107. अगर **अल्लाह** छुयें तुमको एक मेहनतकशी से, कोई नहीं हल्का कर सकता है उसे सिवाए उनके• और जब वो मुबारक करते हैं तुमको, कोई ताकत नहीं रोक सकती उनके फज़्ल को• वो इनायत करते हैं उसे जिसकिसी को वो चुनते हैं उनके बंदों में से• वो हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

108. ऐलान करो: "ऐ लोगों, सच्चाई आ चुकी है इसमें तुम्हारे रब की तरफ से• जो कोई किये गये हैं हिदायत हैं हिदायतयाफता उनके खुदके अच्छे के लिए• और जो कोई गुमराह होता है, बहेकता है खुदके नुकसान के लिए• मैं एक निगेहबान नहीं तुम्हारे ऊपर•"

109. पैरवी करो उसकी जो तुमको नाज़िल हुआ है, और सब्र करो जबतक **अल्लाह** उनका फैसला जारी नहीं कर देते; वो हैं सबसे अच्छा फैसला करने वाले•

****

सुरह 11: हूद
(हूद)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. अ• ल• र• यह है एक आसमानी किताब जिसकी आयतें मुकम्मल की गई हैं, फिर समझाई गई हैं•* वो आती है एक सबसे ज़्यादा हकीम, सबसे ज़्यादा वाकिफ की तरफ से•

कुरान: अल्लाह का रसूल

2. ऐलान करते हुए: "तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए सिवाए **अल्लाह** के• मैं आता हूँ तुम्हारी तरफ उनकी तरफ से एक ताकीद करने वाले जैसा, साथ साथ एक खुशखबरी सुनाने वाले जैसा•

**10:99-101 आज़माईश दावा करती है कि हम ठुकरायें बुतपरस्ती हमारे खुद से, बगैर खुदाई दखलअंदाज़ी के हमारे पहले फैसले में• अल्लाह रोकते हैं बाहर उनको जो चुनते हैं कुफ्र करने के लिए•*

**11:1 हमारी नस्ल खुशनसीब है कुरान में दो ज़बरदस्त कुदरत का गवाह होने के लिए: (1) एक गैरमामूली रियाज़ी कोड (अपेन्डिक्स 1), और (2) नाकाबिले यकीन वुसत का एक अदबी मौजेज़ा• अगर इंसाने कोशिश करें लिखना एक रियाज़ी तौर पर ढाला गया काम, अददी इंतेज़ामात बुरी तरह उल्झा देगा अदबी खूबी को• कुरान कायम करता है अदबी खूबी का मयार•*

3. "तुम्हें तुम्हारे रब कि मगफरत तलाश करना, फिर उनसे तौबा करना चाहिए• वो फिर बक्शेंगे तुमको फरागदिली से एक पहले से मुकर्रर किये गये मुद्दत के लिए, और इनायत करेंगे उनका फज़्ल उनपर जो उसके मुसतेहिक हैं• अगर तुम पलट जाओ, तो मैं डरता हूँ तुम्हारे लिए एक ज़बरदस्त दिन के आज़ाब से•

4. **अल्लाह** की तरफ है तुम्हारा आखिरकार लौटना, और वो हैं कादिरे मुतलक•

5. वाकई, वो छुपाते हैं उनके अंदरूनी ख्यालों को, ऐसे जैसे के वो न जान सकें उनको• दर असल, जैसे ही वो अपने आप को ढ़ाकते हैं उनके कपड़ों से, वो जानते हैं उनके सारे राज़ों और ऐलानों को• वो जानते हैं सबसे अंदरूनी ख्यालों को •

नियामतों कि ज़मानत दी गई है

6. ज़मीन पर नहीं है एक भी मखलूक जिसके रिज़्क की ज़मानत नहीं दी गई हो **अल्लाह** की तरफ से• और वो जानते हैं उसका रास्ता और उसकी आखिरी मंज़िल• सारे दर्ज किये गये हैं एक गहरे दफ्तर में•

7. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को छ: दिनों में — * और उनकी *(ज़मीनी)* बादशाहत पूरी तरह ढकी थी पानी से — ** ताके तुमको आज़मायें, फरक करने के लिए तुम में से उनको जो नेककारी के काम करता है• इसके बावजूद, जब तुम कहते हो, "तुम फिर से ज़िंदा किये जाओगे मौत के बाद," वो जिन्होंने कुफ्र किया कहेंगे, "यह है एक साफ जादू•"

8. और अगर हम मुलतवी करें आज़ाब को जो उन्होंने पाया है — इसलिए कि हम महफूज़ रखते हैं उसे एक खास कौम के लिए — वो कहते हैं, "उन्हें क्या चीज़ रोक रही है?" असल में, जब वो उनके पास आयेगा, कोई चीज़ उसे नहीं रोक सकती, और उनका मज़ाक उड़ाना वापस आ कर उनको सतायेगा•

9. जब भी हम बक्शते हैं इंसान को हमारी तरफ से रहमत के साथ, फिर हटाते हैं उसे, वो हो जाता है मायूस, नाकद्रदान•

10. जब भी हम उसे बक्शते हैं, इसके बाद कि मुसीबत ने उसको तकलीफ दिया था, वो कहता है, "सारी मुसीबत मुझ से दूर हो गई है:" वो बन जाता है बेताब, मगरूर•

11. जहाँ तक वो जो साबितकदमी से जमे रहते हैं, और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो मुसतेहिक हुए हैं मगफरत और एक फरागदिल बदले का•

अल्लाह की वही है वज़नी

12. तुम हो सकता है चाहो नज़रअंदाज करने का उसमें से कुछ जो नाज़िल हुआ है तुमको, और तुम हो सकता है उस से नाराज़ हो जाओ• इसके अलावा, वो कह सकते हैं, "कैसे कोई खज़ाना नहीं आता नीचे उसकी तरफ, या एक फरिश्ता?" तुम हो सिर्फ एक ताकीद करने वाले; **अल्लाह** काबू करते हैं सारी चीज़ों को•

कुरान: मुमकिन नहीं नक्ल किया जा सके

13. अगर वो कहें, "उसने *(कुरान)* गढ़ लिया है," उनसे कहो, "तो पैदा करो दस सुरतें इनके जैसी, गढ़ी हुई , और दावत दो जिसकिसी को तुम दे सकते हो, **अल्लाह** के अलावा, अगर तुम हो सच्चे•"*

14. अगर वो नाकामयाब हों तुम्हारे दावे को पूरा करने के लिए, तो जानो कि यह नाज़िल हुआ है **अल्लाह** के इल्म के साथ, और ये कि कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• क्या तुम फिर फरमानबरदारी करोगे?

**11:7 छ: दिनें हैं सिर्फ एक आला जो मुहय्या करता है हमें बहुत सारी जानकारी के साथ• इसतरह, हम सीखते हैं कि कुशादा बेजान जिस्मानी कायनात पैदा की गई थी दो दिनो में, जबकी नन्हा सा तिनका जिसे "ज़मीन" कहा जाता है पैदा किया गया था चार दिनों में (41:10-12)• खाना, पानी, और ऑक्सीज़न का मुहय्या किया जाना ज़मीन के रहने वालों के लिए ज़रूरी था सही सही हिसाब और तरतीब किये जाने के लिए•*

**11:7 ज़मीन शुरू में ढकी थी पानी से• उसके बाद, ज़मीन के मोटे टुकड़े उभरे, और बराअज़म तैरकर दूर हो गये•*

**11:13 कुरान का रियाज़ी मौजज़ा है ना काबिले नक्ल• (देखें अपेन्डिक्स 1)•*

15. जो कोई इस दुनियावी ज़िंदगी और उसकी खोखली चीज़ों का पीछा करते हैं, हम अता करेंगे उनको उनके कामों के लिए इस ज़िंदगी में; बगैर ज़रा सी भी कमी के•

16. ये वो हैं जिन्होंने दे दिया उनका हिस्सा अगली ज़िंदगी में• और, इसलिए, जहन्म है उनका हिस्सा• उनके सारे आमाल बेकार हैं; सारी चीज़ें जो उन्होंने किया ज़ाया कर दिये गये हैं•

कुरान का
रियाज़ी कोड

17. जहाँ तक वो जिनको पक्का सबूत* दिया गया है उनके रब की तरफ से, इत्तेला दिया गया उनकी तरफ से एक गवाह के ज़रिये, और उस से पहले, मूसा की किताब ने मिसाल कायम किया है और एक रहमत,** वो यकीनन ईमान लायेंगे• जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं मुख्तलिफ गिरोहों में से, जहन्म उनका इंतेज़ार कर रही है• कोई शक को न पालो; यह है सच तुम्हारे रब क तरफ से, लेकिन ज़्यादातर लोग कुफ्र करते हैं•

18. कौन है ज़्यादा बुरा उनसे जो गढ़ते हैं झूठों को **अल्लाह** के बारे में? वो पेश किये जायेंगे उनके रब के सामने, और गवाह कहेगा, "ये हैं जिन्होंने झूठ बोला उनके रब के बारे में• **अल्लाह** की लानत पड़ गई है खतावारों पर•"

19. वो **अल्लाह** के रास्ते से दूर करते हैं और उसे टेढ़ा बनाने कि कोशिश करते हैं, और वो हैं काफिरें अगली ज़िंदगी में•

काफिरें

20. ये कभी नहीं बचेंगे, नाहीं वो पायेंगे कोई रबों और मालिकों को उनकी मदद करने के लिए **अल्लाह** के खिलाफ• आज़ाब दोहरा किया जायेगा उनके लिए• वो नाकामयाब हुए हैं सुनने के लिए, और वो नाकामयाब हुए हैं देखने के लिए•

21. ये हैं वो जो अपनी रूहों को खो देते हैं, और बुतें जिनको उन्होंने गढ़ा ठुकरा देंगे उनको•

22. कोई शक नहीं है कि, अगली ज़िंदगी में, वो सबसे बरबाद होने वाले होंगे•

ईमानवाले

23. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बिताते हैं, और मनसूब करते हैं अपने आप को सिर्फ उनके रब के लिए, वो हैं जन्नत के रहने वाले; वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए•

24. इन दो गिरोहों कि मिसाल ऐसी है जैसे अंधे और बहरे, देखने वाले और सुनने वाले के मुकाबले• क्या वो बराबर हैं? क्या तुम तवज्जो नहीं दोगे?

नुह

25. हमने नुह को भेजा उसके लोगों कि तरफ, कहते हुए, "मैं आता हूँ तुम्हारी तरफ एक साफ ताकीद करने वाले कि तरह•

26. "तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए सिवाए **अल्लाह** के• मैं डरता हूँ तुम्हारे लिए एक दर्दनाक आज़ाब के दिन से•"

27. उसके लोगों में से रहबरें जिन्होंने कुफ्र किया कहा, "हम देखते हैं कि तुम हमारी तरह एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं, और हम देखते हैं कि तुम्हारी पैरवी करने वाले सबसे पहले लोग वो हैं जो हममें से हैं सबसे बुरे• हम देखते हैं कि तुम्हारे पास हमारे ऊपर कोई बेहतरी नहीं• वाकई, हम समझते हैं तुम हो झूठे•"

28. उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, क्या अगर मेरे पास एक पक्का सबूत हो मेरे रब कि तरफ से? क्या अगर उन्होंने मुझको बक्शा हो उनकी रहमत में से, हाँलाकी तुम उसे नहीं देख सकते? क्या हम ज़ोर देंगे तुमको उसमें ईमान लाने के लिए?

**11:17 कुरान का 19 पर बुनियाद रियाज़ी कोड है एक एहम सबूत खुदाई मुसन्निफ का• यह काबिले गौर है कि लफ्ज़ "बय्यना" (सबूत) बयान किया गया है कुरान में 19 बार•*

**11:17 जैसा पता चलता है, मूसा की किताब भी रियाज़ी तौर पर तरतीब की गई थी, साथ "19" जैसे कॉमन डिनोमिनेटर के• देखें फुटनोट 46:10 और अपेन्डिक्स 1•*

29. "ऐ मेरे लोगों, मैं नहीं पूछता तुमसे कोई पैसे के लिए; मेरी मज़दूरी आती है सिर्फ **अल्लाह** की तरफ से• मैं बरखास्त नहीं कर रहा हूँ उनको जो ईमान लाये; वो मिलेंगे उनके रब से *(और सिर्फ वो उनका फैसला करेंगे)*• मैं देखता हूँ कि तुम हो गाफिल लोग •

30. ऐ मेरे लोगों, कौन मेरी मदद कर सकता है **अल्लाह** के खिलाफ, अगर मैं उनको बरखास्त करूँ? क्या तुम तवज्जो नहीं दोगे?

सारी ताकत
है अल्लाह की

31. "मैं दावा नहीं करता कि मेरे पास है **अल्लाह** के खज़ाने, नाहीं मैं मुसतकबिल जानता हूँ, नाहीं मैं एक फरिश्ता होने का दावा करता हूँ• नाहीं मैं कहता हूँ उनको जो नफरत किये गये हैं तुम्हारी नज़रों से कि **अल्लाह** कोई रहमतें इनायत नहीं करेंगे उनके ऊपर• **अल्लाह** सबसे अच्छा जानते हैं क्या है उनके सबसे अंदरूनी ख्यालों में• *(अगर मैंने ऐसा किया,)* मैं बन जाऊंगा एक खतावार•"

32. उन्होंने कहा, "ऐ नुह, तुमने हमारे साथ बहेस किया है, और जारी रहे बहेस करने पर• हम तुझे तबाही लाने को ललकारते हैं जिससे तू हमें डराता है, अगर तु है सच्चा•"

33. उसने कहा, "**अल्लाह** हैं वाहिद जो लाते हैं उसे तुम्हारी तरफ, अगर वो ऐसा चाहें, फिर तुम नहीं बच सकते•

34. "अगर मैं तुमको मशवरा भी दूँ, मेरा मशवरा तुमको फायदा नहीं दे सकता अगर यह **अल्लाह** कि मर्ज़ी है तुम्हें गुमराह करने के लिए• वो हैं तुम्हारे रब, और उनकी तरफ तुम लौटाये जाओगे•"

35. अगर वो कहें, "उसने यह कहानी बनाई है," तो कहो, "अगर मैं उसे बनाता, तो मैं ज़िम्मेदार हुँ मेरे जुर्म के लिए, और मैं बेकसूर हूँ किसी जुर्म से जो तुम करते हो•"

36. नुह को इल्हाम किया गया था: "तुम्हारे लोगों में से और ज़्यादा ईमान नहीं लाने वाले, बाद उनके जो पहले से ईमान रखते हैं, गमगीन न हो उनकी हरकतों से•

37. "बनाओ कश्ती हमारी चौकन्नी आँखो के तहेत, और हमारे इल्हाम के साथ, और **मुझ** से इल्तेजा न करो उनकी तरफ से जो हद से गुज़र गये हैं; वो मुकर्रर किये गये हैं डुबोए जाने के लिए•

जो कोई हँसता है आखीर में
हँसता है सही में

38. जब वो कश्ती बना रहा था, उसके कुछ लोग जब भी गुज़रे उसकी तरफ से वो हँसे उसपर• उसने कहा, "तुम हम पर हँस रहे होगे, लेकिन हम तुमपर हँस रहे हैं• ऐसे ही जैसे तुम हँस रहे हो•

39. "तुम यकीनन जान जाओगे कौन झेलेगा एक शर्मनाक आज़ाब, और बरदाश्त करेंगे एक नाखत्म होने वाली सज़ा•"

40. जब हमारा फैसला आया, और फिज़ा उबल गई, हम ने कहा, "सवार करो उसपर एक जोड़ा हर किस्म का,* तुम्हारे कुम्बे के साथ, सिवाए उनके जो मलामत किये गये हैं• तुम्हारे साथ लो उनको जो ईमान लाये," और सिर्फ कुछ ही ईमान लाये उसके साथ•

41. उसने कहा, "सवार हो जाओ• **अल्लाह** के नाम से होगा उसका तैरना, और उसका लंगर लगना• मेरे रब हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•"

42. जैसे ही वो तैरी उनके साथ पहाड़ जैसे लहरों में, नुह ने उसके बेटे को पुकारा, जो तन्हा हो गया था: "ऐ मेरे बेटे, आओ सवार हो जाओ हमारे साथ; न रहो काफिरों के साथ•"

**11:40 और 44 यह है अल्लाह की साबित सच्चाई: नुह कि कश्ती बनाई गई थी लट्ठों से, बांधे गये एक साथ इबतेदाई रस्सीयों से (54:13)• आम अकीदे के खिलाफ, सैलाब महदूद था आज के मुरदा समंदर के इलाके के ईर्द गिर्द, और जानवरे थे सिर्फ नुह के मवेशी, नहीं थे सारे जानवर जो रहे ज़मीन पर•*

43. उसने कहा, "मैं पनाह लूंगा एक पहाड़ के ऊपर, मेरी हिफाज़त करने के लिए पानी से•" उसने कहा, "कुछ नहीं बचा सकता किसी को आज **अल्लाह** के फैसले से; सिर्फ वही जो मुसतेहिक हैं उनके रहमत के *(बचाये जायेंगे)*• लहरों ने उनको अलग कर दिया, और वो उनमें से था जो डूब गये•

कहाँ उतरी कश्ती

44. ये ऐलान किया गया था; "ऐ ज़मीन, निगल जा तेरा पानी," "ऐ आसमान, थम•" पानी फिर घट गया; फैसला पूरा कर दिया गया था• कश्ती आखिर कार ठहरी जुडाई के पहाड़ों पर•* फिर ये ऐलान किया गया था: "खतावार खत्म हो गये हैं•"

45. नुह ने इल्तेजा किया उसके रब से: "मेरे रब, मेरा बेटा है मेरे कुम्बे का एक फर्द, और आपका वादा है सच्चा• आप हैं हकीमों के हकीम•"

*शफाअत का वहेम**

46. उन्होंने कहा, "ऐ नुह, वो तेरे कुम्बे का नहीं है• ये बदआमाली है पूछना **मुझ** से कोई चीज़ के लिए जो तुम नहीं जानते•* मैं तुम्हें समझाता हूँ, ताके तुम गाफिल कि तरह न हो जाओ•"

47. उसने कहा, "मेरे रब, मैं आप में पनाह चाहता हूँ, ताके मैं दोबारा आप से इल्तेजा न करूँ कोई चीज़ के लिए जो मैं नहीं जानता• जबतक आप मुझ को माफ नहीं करेंगे, और रहम नहीं करेंगे मुझपर, मैं होऊंगा हारने वालों के साथ•"

48. ये ऐलान किया गया था: "ऐ नुह, उतरो कश्ती से, तुमपर अमन और फज़लों के साथ, और कौमों पर जो आयेंगे तेरे साथियों से• जहाँ तक दूसरी कौमें जो आयेंगी तुझसे, हम बक्शेंगे उनको थोड़ी देर के लिए, फिर हवाले करेंगे उनको दर्दनाक आज़ाब को•"

49. ये खबरें हैं माज़ी से जो हम तुझ को नाज़िल करते हैं• तुझे कोई इल्म नहीं था उसके बारे में — नाहीं तुझे, नाहीं तेरे लोगों को— इससे पहले• इसलिए सब्र करो• आखिर कार जीत होती है नेककारों की•

हूद: एक और वही पैगाम

50. आद की तरफ हमने भेजा उनके भाई हूद को• उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, **अल्लाह** की इबादत करो; तुम्हारे पास कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• तुम ऐजाद कर रहे हो•

51. “ऐ मेरे लोगों, मैं तुमसे कोई मज़दूरी नहीं मांगता• मेरी मज़दूरी आती है सिर्फ **वाहिद** कि तरफ से जिन्होंने मुझ को शुरू किया• क्या तुम नहीं समझते?

52. “ऐ मेरे लोगों, तलाश करो मगफरत तुम्हारे **रब** कि तरफ से, फिर तौबा करो **उनसे**• **वो** फिर बरसायेंगे तुमपर आसमान से नियामतें, और बढ़ायेंगे तुम्हारी ताकत• न बदलो वापस खतावारों में •”

53. उन्होंने कहा,”ऐ हूद, तुमने हमें कोई सबूत नहीं दिखाया, और हम नहीं छोड़ रहे हैं हमारे खुदाओं को इस बाइस पर जो तुम केह रहे हो• हम कभी भी ईमानवाले नहीं होंगे तुम्हारे साथ•

54. “हम मानते हैं कि हमारे कुछ खुदाओं ने तुमको एक लानत के साथ मारा है•” उसने कहा, “मैं **अल्लाह** के सामने गवाही देता हूँ, और इसके अलावा तुम भी गवाह रहो, कि मैं बुतों को ठुकराता हूँ जो तुम कायम करते हो —

55. “—उनके सिवाए• इसलिए दो मुझे तुम्हारा इकट्ठा फैसला, बगैर मुलतवी किये•

**11:44 देखें फुटनोट 11:40 के लिए•*

**11:46 शिफाअत शैतान का सबसे असरदार चंगुल है लोगों को बुतपरस्ती में लुभाने के लिए• बहेरहाल, इब्राहीम अपने वालिद को न बचा पाये, नाहीं नूह अपने बेटे को बचा पाये, नाहीं मुहम्मद उसके खुदके रिश्तेदारों कि मदद कर सके (2:254, 9:80 और 114)•*

56. “मैंने अपने भरोसे को मेरे **रब** और तुम्हारे **रब**, **अल्लाह** में रखा है• कोई मखलूक नहीं जिसको **वो** काबू नहीं करते• मेरे **रब** हैं सही राह पर•

57. “अगर तुम पलट जाओ, मैंने पहुँचाया तुम्हारी तरफ जिसके साथ मुझे भेजा गया था• मेरे **रब** बदल देंगे दूसरे लोगों को तुम्हारी जगह में; तुम **उनको** ज़रासा भी तकलीफ नहीं पहुँचा सकते• मेरे **रब** के काबू में हैं सारी चीज़े•

58. जब हमारा फैसला आया, हमने बचाया हूद और उनको जो ईमान लाये उसके साथ, हमारी तरफ से रहम के ज़रिये से• हमने बचाया उनको एक खौफनाक आज़ाब से•

59. ऐसा था आद — उन्होंने नज़रअंदाज़ किया उनके **रब** कि आयतें, नाफरमानी की **उनके** रसूलों की, और हर ज़िद्दी ज़ालिम के रास्तों कि पैरवी की•

60. इस वजह से, उन्होंने लानत पाया इस दुनिया में, और हश्र के दिन• वाकई, आद ने ठुकराया तुम्हारे **रब** को• वाकई, आद, हूद के लोग, हलाक हो गये•

सालेह:
एक और वही पैगाम

61. तमूद कि तरफ हमने भेजा उनके भाई सालेह को, उसने कहा, “ऐ मेरे लोगों, **अल्लाह** की इबादत करो, तुम्हारे पास कोई खुदा नहीं सिवाए **उनके**• **उन्होंने** शुरू किया तुमको ज़मीन से, फिर तुमको उसमें आबाद किया• तुम्हें तलाश करनी चाहिए **उनकी** मगफरत, फिर **उनसे** तौबा करना चाहिए• मेरे **रब** हैं हमेशा करीब, जवाब देने वाले•”

62. उन्होंने कहा, “ऐ सालेह, तुम इससे पहले हमारे बीच मशहूर हुआ करते थे• क्या तुम ताकीद कर रहे हो हमें इबादत करने से जिसकी हमारे वालिदैन इबादत कर रहे हैं? हम पूरी तरह शक में हैं सारी चीज़ों के मुताल्लिक जो तुमने हमें बताया है•”

काफिरें हमेशा हारने वाले

63. उसने कहा, “ऐ मेरे लोगों, क्या अगर मेरे पास है पक्का सबूत मेरे **रब** कि तरफ से, और **उनकी** तरफ से रहम? कौन मदद करेगा मेरी **अल्लाह** के खिलाफ, अगर मैंने **उनकी** नाफरमानी किया? तुम सिर्फ बढ़ा सकते हो मेरे खसारे को•

64. “ऐ मेरे लोगों, यह है **अल्लाह** कि ऊँठनी एक सबूत के तौरपर तुम्हारे लिए• तुम्हें उसे **अल्लाह** की ज़मीन से खाने देना चाहिए, और न छुओ उसे

किसी तकलीफ से, ताके तुम मोल न लो एक फौरी आज़ाब का•"

65. उन्होंने उसे ज़बा कर दिया• फिर उसने कहा, "तुम्हारे पास सिर्फ तीन दिन हैं रहने के लिए• यह है एक पेशीनगोई जो है अटल•"

66. जब हमारा फैसला आया, हमने सालेह को बचाया और उन्हें जिन्होंने ईमान लाया उसके साथ हमारी तरफ से रहम के ज़रिये, उस दिन कि रूसवाई से• तुम्हारे रब हैं सबसे ताकतवर, कादिरे मुतलक•

67. वो जो हद से गुज़र गये थे फनाह कर दिये गये आफत से, छोड़ते हुए उन्हें उनके घरों में, मुरदा•

68. ऐसे जैसे वो वहाँ कभी नहीं रहे थे• वाकई, तमूद ने ठुकराया है उनके रब को• बेशक, तमूद ने मोल लिया है उनकी हलाकत•

इब्राहीम और लूत

69. जब हमारे रसूलें इब्राहीम के पास गये खुशखबरी के साथ, उन्होंने कहा "सलाम•" उसने कहा, "सलाम," और जल्दी लाया एक भुना हुआ बछड़ा•

70. जब उसने देखा कि उनके हाथों ने उसे नही छुआ, वो उनसे शक्की और खौफज़दा हो गया• उन्होंने कहा, "डरो नहीं, हम भेजे गये हैं लूत के लोगों कि तरफ•"

71. उसकी बिवी खड़ी थी, और वो हंसी जब हमने उसे इसहाक और, इसहाक के बाद याकूब कि खुशखबरी दी•

72. उसने कहा, "हाय हो मुझपर, मेरी उम्र में मैं कैसे जन सकती हूँ एक बच्चा, और ये है मेरा शौहर, एक बुढ़ा आदमी? ये वाकई अजीब है!"

73. उन्होंने कहा, "क्या तुम उसे अजीब पाते हो **अल्लाह** के लिए? **अल्लाह** ने इनायत किया है उनका रहम और नियामतें तुम्हारे ऊपर• ऐ इबादतगाह के बाशिंदों• वो हैं काबिले तारीफ, शानदार•"

74. जब इब्राहीम का डर कम हुआ, और अच्छी खबर पहुँचा दी गई थी उसको, वो आगे बड़ा हमारे साथ बहेस करने के लिए लूत के लोगों कि तरफ से•

75. वाकई, इब्राहीम था नर्म दिल, बेहद महेरबान, और ताबेदार•

76. "ऐ इब्राहीम, बाज़ आओ इस से• तुम्हारे रब का फैसला जारी कर दिया गया है; उन्होंने पाया है लाज़िमी आज़ाब•"

हम जिस्मानापन
मलामत किया गया

77. जब हमारे रसूलें गये लूत कि तरफ, उनके साथ बदसलूकी की गई थी, और वो शर्मिंदा हुआ उनकी मौजूदगी कि वजह से• उसने कहा, "ये है एक मुश्किल दिन•"

78. उसके लोग दौड़ते हुए आये, वो उनके गुनहगारी वाली हरकतों से पूरी तरह आदी हो गये थे• उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, ये तुम्हारे लिए पाक होगा, अगर तुम लो मेरी बेटियों को बलिके• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए; मुझे और मेरे मेहमानों को शर्मिंदा न करो• क्या तुम्हारे पास तुम्हारे बीच एक भी मुनासिब मर्द नहीं?"

79. उन्होंने कहा, "तुम अच्छे से जानते हो कि हमें कोई ज़रूरत नहीं तुम्हारी बेटियों की; तुम अच्छे से जानते हो हमें क्या चाहिए•"

80. उसने कहा, "काश मैं होता काफी ताकतवर, या होता मेरे पास एक ताकतवर साथी!"

81. *(फरिश्तों ने)* कहा, "ऐ लूत, हम हैं तुम्हारे रब के रसूलें, और यह लोग तुम्हें नहीं छू सकते• तुम्हें जाना चाहिए तुम्हारे कुम्बे के साथ रात के दरमियान, और तुम में से किसी को भी पीछे न देखने दो, सिवाए तुम्हारी बिवी के; वो मलामत की गई है उनके साथ जो मलामत किये गये हैं• उनका मुकर्रर किया गया वक्त है सुबह• क्या सुबह काफी जल्दी नहीं है?"

सोडोम और गोमोराह बरबाद हो गये

82. जब हमारा फैसला आया, हमने उसे उलट पलट कर दिया, और हमने बरसाया उसे सख्त, बरबाद करने वाले पत्थरों के साथ•

83. ऐसी पत्थरें चुने गये थे तुम्हारे रब कि तरफ से हद से निकल जाने वालों को वार करने के लिए•

शुऐब: एक और वही पैगाम

84. मिदयन कि तरफ हमने भेजा उनके भाई शुऐब को• उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, **अल्लाह** की इबादत करो, तुम्हारे पास कोई खुदा नहीं सिवाए उनके•

धोखा न दो जब तुम नापते या तौलते हो• मैं देखता हूँ कि तुम हो तरक्कीयाफता, और मैं डरता हूँ तुम्हारे लिए एक ज़बरदस्त दिन के आज़ाब से•

85. “ऐ मेरे लोगों, तुम्हें बराबरी से, पूरा नाप और पूरा वज़न देना चाहिए• धोखा न दो लोगों को उनके हकों से, और न फिरो ज़मीन पर खराबी से•

86. “जो कुछ **अल्लाह** मुहय्या करते हैं तुम्हारे लिए, चाहे हो कितना ही छोटा, है कहीं बेहतर तुम्हारे लिए, अगर तुम हो वाकई ईमानवाले• मैं एक निगेहबान नहीं तुम्हारे ऊपर•”

87. उन्होंने कहा, “ऐ शुऐब, क्या तुम्हारा मज़हब हुक्म देता है तुमपर कि हम तर्क कर दें हमारे वालिदैन का मज़हब, या चलायें हमारे कारोबार किसी भी तरह जैसा हम चाहें? यकीनन, तुम जाने जाते हो नर्म दिल, और हकीम होने के लिए•”

88. उसने कहा, “ऐ मेरे लोगों, क्या अगर मेरे पास पक्का सबूत हो मेरे रब कि तरफ से; क्या अगर उन्होंने मुझ को अता किया है एक बड़ी नियामत के साथ? ये मेरा इरादा नहीं है करना जिससे मैं हिदायत करता हूँ तुम्हारी• मैं सिर्फ जितना ज़्यादा हो सके उतनी गलतियों को सही करना चाहता हूँ• मेरी हिदायत वाबस्ता है पूरी तरह **अल्लाह** पर, मैंने रखा है मेरे भरोसे को उनमें• मैंने पूरी तरह हवाले किया है उनको•

89. “और, ऐ मेरे लोगों, मेरी तरफ तुम्हारी मुखालिफत कि वजह से न भड़को नुह के लोगों, या हूद के लोगों, या सालेह के लोगों कि तरह वही हलाकतों को मोल लेने में; और लूत के लोग बहुत दूर नहीं हैं तुमसे•

90. “तुम्हें तुम्हारे रब से इल्तेजा करनी चाहिए मगफरत के लिए, फिर उनसे तौबा करो• मेरे रब हैं सबसे महेरबान, करीम•

91. उन्होंने कहा, “ऐ शुऐब, हम नहीं समझते कई चीज़ें तुम हमें कह रहे हो, और हम देखते हैं कि तुम हो कमज़ोर हमारे बीच• अगर वो तेरे कबीले के लिए न होता, हमने तुझपर पथराव किया होता• तू कोई कीमत नहीं रखता हमारे लिए•”

92. उसने कहा, “ऐ मेरे लोगों, क्या मेरा कबीला तलब करता है एक बड़ा एहतराम **अल्लाह** के बदले? क्या ये है जिसकी वजह से तुम बेपरवाह रहे हो उनसे? मेरे रब हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से तुम करते हो•

93. “ऐ मेरे लोगों, करते रहो जो तुम करना चाहते हो, और उसी तरह मैं भी• तुम यकीनन जान जाओगे हम में से कौन मोल लेगा शर्मनाक आज़ाब; तुम पता लगा लोगे कौन है झूठा• बस इंतेज़ार करो उम्मीद में, और मैं इंतेज़ार करूंगा उम्मीद में तुम्हारे साथ साथ•”

94. जब हमारा फैसला आया, हमने शुऐब को बचाया और उनको जिन्होंने ईमान लाया उसके साथ, हमारी तरफ से रहम के ज़रिए• जहाँ तक बुरे लोग, वो मारे गये थे एक तबाही से जिसने छोड़ा उनको मुर्दा उनके घरों में•

95. वो ऐसा था जैसे वो कभी वजूद में नहीं थे• इसतरह, मिदयन खत्म हो गये, उसी तरह जैसे तमूद खत्म हुए उससे पहले•

मूसा

96. हमने मूसा को हमारी निशानियों के साथ और एक गहरे इख्तियार के साथ भेजा•

97. फिरऔन और उसके बुर्जुगों कि तरफ• लेकिन उन्होंने फिरऔन के हुक्म कि पैरवी की, और फिरऔन का हुक्म नहीं था समझदारी वाला•

98. वो रहबरी करेगा उसके लोगों कि हश्र के दिन पर, पूरा रास्ता जहन्नम को, क्या एक अफसोस नाक ठिकाना रहने के लिए!

99. उन्होंने पाया है लानत इस दुनिया में, इसके अलावा हश के दिन पर, क्या एक अफसोसनाक रास्ता पैरवी करने के लिए!

सबकें
सीखने के लिए

100. ये खबरें हैं माज़ी से कौमों की जो हम बयान करते हैं तुम्हारे लिए• कुछ अब भी हैं खड़े, और कुछ हो गये हैं गायब•

101. हमने कभी गलत नहीं किया उनको, उन्होंने खुद की रूहों को गलत किया• उनके खुदाएं, जिनको उन्होंने पुकारा **अल्लाह** के अलावा, नहीं मदद कर

पाये उनकी ज़रासी भी जब तुम्हारे रब का फैसला आया• असल में, उन्होंने सिर्फ यकीन दिलाया उनकी बरबादी का•

102. ऐसा आज़ाब नाफिज़ किया गया था तुम्हारे रब कि तरफ से जब कौमें हद से गुज़र गई• वाकई, उनका आज़ाब है दर्दनाक, बरबाद करने वाला•

103. यह एक सबक होना चाहिए उनके लिए जो डरते हैं अगली ज़िंदगी के आज़ाब से• वो है एक दिन जब सारे लोग हाज़िर किये जायेंगे — एक दिन गवाह होने के लिए•

104. हमने मुकर्रर किया है एक खास वक्त उसके होने के लिए•

105. दिन जब वो गुज़र जायेगा, कोई रूह नहीं लायेगी ज़बान पर एक भी लफ्ज़, सिवाए उनकी मरज़ी के मुताबिक• कुछ लोग होंगे बदहाल, और कुछ होंगे खुश•

106. जहाँ तक वो जो होंगे बदहाल, वो होंगे जहन्नम में, जिसमें वो आहें भरेंगे और मातम करेंगे•

107. जब तक आसमानें और ज़मीन कायम रहेंगे, वो हमेशा के लिए रहेंगे उसमें, तुम्हारे रब कि मरज़ी के मुताबिक में• तुम्हारे रब हैं करनवाले जो कुछ वो चाहते हैं•

108. जहाँ तक वो जो हैं नसीब वाले, वो होंगे जन्नत में• वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए, जब तक आसमानें और ज़मीन कायम रहेंगे, तुम्हारे रब कि मरज़ी के मुताबिक में — एक दायम रहने वाला इनाम•

हमारे वालिदैन के पीछे आँख बंद करके चलना
एक बड़ी इंसानी बदबख्ती

109. ये लोग जो इबादत करते हैं कोई शक न रखो उसके मुताल्लिक; वो इबादत करते हैं बिल्कुल उसी तरह जैसे उन्होंने उनके वालिदैन को इबादत करते पाया• हम बगैर कमी किये, बदला चुकायेंगे पूरी तरह उनको उनके वाजिब हिस्से का•

110. हमने दिया है मूसा को आसमानी किताब, लेकिन वो बहेस की गई थी, और अगर वो तुम्हारे रब कि तरफ एक पहले से तय किये गये फरमान लफ्ज़ के लिए न होता, उनका फैसला कर दिया गया होता फौरन• वो हैं इस के बारे में पूरी तरह शक में, शक्की•

111. तुम्हारे रब यकीनन हर किसी को बदला देंगे उनके कामों के लिए• वो हैं पूरी तरह आगाह सारी चीज़ें जो वो करते हैं•

112. इसलिए, जारी रहो उस राह में जिसपर तुमको ताकीद किया गया है चलने के लिए, साथ उनके जिन्होंने तौबा किया तुम्हारे साथ, और हद से न निकलो• वो हैं देखने वाले सारी चीज़ें तुम करते हो•

113. न झुको उनकी तरफ जो हद से निकाल गये हैं, ताके तुम जहन्नम न मोल ले लो, और न पाओ कोई साथियों को तुम्हारी मदद करने के लिए **अल्लाह** के खिलाफ, फिर खत्म हो हारे हुए•

पाँच में से तीन नमाजें

114. तुम्हें राबता नमाज़ों *(सलात)* को अदा करना चाहिए दिन के दोनो छोरों पर, और रात के दरमियान• नेक आमालें मिटा देते हैं बुरे कामों को• यह है एक ताकीद है उनके लिए जो तवज्जो देंगे•

115. तुम्हें साबित कदमी से कायम रहना चाहिए, इसलिए कि **अल्लाह** कभी नाकामयाब नहीं होते हैं नेककार को बदला देने के लिए•

116. अगर सिर्फ उनमें से कुछ पिछली नस्लों में से काफी अक्ल रखते बुराई रोकने के लिए! उनमें से सिर्फ कुछ ही मुस्तेहिक थे हमारी तरफ से बचाए जाने के लिए• जहाँ तक वो जो हद से निकल गये, वो उनके माली ऐशों के साथ मसरूफ थे; वो थे मुजरिम•

117. तुम्हारे रब कभी फनाह नहीं करते किसी कौम को नाइंसाफी से, जबकी उसके लोग हैं नेक•

हम क्यों
पैदा किये गये थे

118. अगर तुम्हारे रब चाहते, सारे लोग एक *(ईमान वालों की)* जमात होते• लेकिन वो हमेशा बहेस करेंगे *(सच्चाई)*•

119. सिर्फ वो जो बक्शे गये हैं उनकी रब कि तरफ से रहमत के साथ *(बहेस नहीं करेंगे सच्चाई के बारे में)*• ये है जिसलिए उन्होंने उनको पैदा किया•* तुम्हारे रब का फैसला पहले से जारी हो चुका है: "मैं भरूंगा जहन्नम को जिनों और इंसानों के साथ, सारों को एक साथ•"**

120. हम सुनाते हैं तुमको रसूलों कि काफी तारीख तुम्हारे दिल को पुख्ता करने के लिए• तुम्हारी तरफ सच्चाई आ चुकी है इसमें, साथ साथ ईमानवालों के लिए रौशन ख्यालें और ताकीदें•

**11:119 सबसे रहेम वाले ने हमें पैदा किया इस ज़मीन पर हमें फिर भी एक और मौका देने के लिए हमारे पहले जुर्म को ठुकराने और मगफरत पाने के लिए (देखें तार्रुफ और अपेन्डिक्स 7)•*

**11:119 अल्लाह एक भी शक्स को जहन्नम में नहीं डालते; वो चुनते हैं और इसरार करते हैं जहन्नम को जाने के लिए•*

121. कहो उनसे जो कुफ्र करते हैं, "करो जो तुम कर सकते हो, और उसी तरह मैं भी•

122. "फिर इंतेज़ार करो; हम भी इंतेज़ार करेंगे•"

123. **अल्लाह** के हैं आसमानों और ज़मीन के मुसतकविल, और सारे मामलात उनकी तरफ से काबू किये जाते हैं• तुम्हें उनकी इबादत और उनमें भरोसा करना चाहिए• तुम्हारे रब कभी भी बेखबर नहीं हैं कोई चीज़ से तुम करते हो•

****

सुरह 12: युसुफ (युसुफ)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. अ•ल•र• ये *(हुरूफें)* हैं सबूतें इस गहरी आसमानी किताब के•*

2. हमने नाज़िल किया है इसे एक अरबी कुरान, ताके तुम समझ सको•*

3. हम बयान करते हैं तुमको सबसे सही तारीख इस कुरान के नाज़िल होने के ज़रिए• इससे पहले, तुम थे बिल्कुल बेखबर•

4. याद करो कि युसुफ ने उसके वालिद से कहा, "ऐ मेरे वालिद, मैंने देखा ग्यारह नजमों, और सूरज, और चांद को; मैंने देखा उन्हें मेरे सामने सजदा करते हुए•

5. उसने कहा, "मेरे बेटे, न कहो तुम्हारे भाईयों से तुम्हारे सपने के बारे में, ताके वो तुम्हारे खिलाफ साज़िश और मनसूबा न बनायें• यकीनन, शैतान है आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन•

6. "तुम्हारे रब ने इस तरह तुम्हें बक्शा, और दिया है तुमको अच्छी खबरें तुम्हारे सपने के ज़रिए• उन्होंने मुकम्मल किया है उनकी नियामतें तुम्हारे और याकूब के कुम्बे पर, जैसा उन्होंने उससे पहले तुम्हारे पुरखों इब्राहीम और इसहाक पर किया• तुम्हारे रब हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

7. युसुफ और उसके भाईयों में तलाश करने वालों के लिए हैं सबकें•

8. उन्होंने कहा, "युसुफ और उसका भाई तरफदारी किये जाते हैं हमारे वालिद कि तरफ से, और हम हैं ज़्यादा तादाद में• वाकई, हमारे वालिद दूर बहेक गये हैं•

युसुफ की तकदीर पहले से
अल्लाह कि तरफ से तय की जा चुकी थी*

9. "चलो हम युसुफ को कत्ल कर दें, या शहर बदर कर दें, ताके तुम कुछ तवज्जो पा सको तुम्हारे वालिद कि तरफ से• उसके बाद, तुम नेक लोग हो सकते हो•"*

10. उसमें से एक न कहा, "युसुफ को कत्ल न करो; चलो हम उसे फेंक दें कुएं कि गहराई में• शायद हो सकता है उसे कोई कारवां उठा ले, अगर ये है जो तुम फैसला करो करने का?"

11. उन्होंने कहा, "हमारे वालिद, क्यों आप हम पर भरोसा नहीं करते युसुफ के साथ? हम उसका अच्छा ख्याल रखेंगे•

12. “भेजिए उसे हमारे साथ कल दौड़ने और खेलने के लिए• हम उसकी हिफाजत करेंगे•”

13. उसने कहा, “मैं फिक्र करता हूँ ताके तुम जाओ उसके साथ, फिर हो सकता है भेड़िया निगल जाये उसे जबकी तुम उसकी निगरानी नहीं कर रहे हो•”

14. उन्होंने कहा, “वाकई, अगर भेड़िया उसे निगल जाये, हमारे इतने सारों के रहते हुए आस पास, फिर हम वाकई हारे हुए हैं•”

**12:1 कुरानी इनिशियलें कायम करते हैं एक बड़ा हिस्सा एक बड़े मौजज़े का (अप• 1)•*

**12:2 कुरान क्यों अरबी में नाज़िल किया गया था? देखें 41:44 और अपेन्डिक्स 4•*

**12:9 हम सीखते हैं युसुफ के सपने से की वो मुकर्रर किया गया था एक बढ़ियां मुस्तकबिल के लिए• इसतरह, जब उसके भाईयें मिले उसकी तकदीर का फैसला करने के लिए, उसकी तकदीर पहले से तय कर दी गई थी अल्लाह की तरफ से• सारी चीज़ें की जाती है अल्लाह कि तरफ से (8:17), और पहले से दर्ज किये जा चुके हैं (57:22)•*

ईमानवाले बक्शे जाते हैं अल्लाह के भरोसों से

15. जब वो चले गये उसके साथ, और एक राय होकर फैसला किया उसे कुएं कि गहराई में फेंकने का, हमने उसे इल्हाम किया: “किसी दिन, तुम उनको बताओगे इस सब के बारे में, जब उनके पास इल्म न होगा•”

16. वो वापस आये उनके वालिद के पास शाम में, रोते हुए•

17. उन्होंने कहा, “हमारे वालिद, हम एक दूसरे के साथ दौड़ते हुए गए, युसुफ को हमारे सामान के साथ छोड़ते हुए, और भेड़िया उसे निगल गया• आप हमारा कभी यकीन नहीं करेंगे, अगर हम सच बोल रहें हो तब भी•”

18. उन्होंने उसकी कमीज़ को पेश किया उसपर झूठे खून के साथ• उसने कहा, “वाकई, तुमने एक दूसरे के साथ मनसूबा रचा है एक खास साज़िश करने के लिए• मैं इतना कर सकता हूँ कि सब्र का दामन थामू• **अल्लाह** मेरी मदद करें तुम्हारे मनसूबे कि सूरत में•”

युसुफ मिस्र को ले जाया गया

19. एक कारवां गुज़रा उधर से, और जल्दी भेजा उनके पानी निकालने वाले को• उसने अपनी बाल्टी नीचे जाने दिया, फिर कहा, “कितना खुशनसीब! यहाँ एक लड़का है!” वो ले गये उसे साथ में सौदे कि तौर पर, और **अल्लाह** पूरी तरह आगाह थे उससे जो उन्होंने किया•

20. उन्होंने उसे बेच दिया एक सस्ते दाम के लिए — कुछ दिरहमों के लिए — इसलिए कि उनको उसकी कोई ज़रूरत नहीं थी•

21. जिसने उसे मिस्र में खरीदा कहा उसकी बिवी से, “उसका अच्छा ख्याल रखो• हो सकता है वो हमारी मदद करे, या हो सकता है हम उसे गोद ले लें•” हमने इस तरह युसुफ को ज़मीन पर कायम किया, और हमने उसे सिखाया सपनों कि ताबीर• **अल्लाह** का हुक्म हमेशा होता है, लेकिन ज़्यादा तर लोग नहीं जानते•

22. जब वो बुलुगत को पहुँचा, हमने उसे अता किया हिकमत और इल्म के साथ• हम इस तरह ईमानवालों को इनाम देते हैं•

अल्लाह ईमानवालों की हिफाज़त करते हैं गुनाह से

23. जहाँ वो रहा उस घर कि मोहतरमा ने कोशिश किया उसे लुभाने के लिए• उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और कहा, “मैं पूरी तरह तेरी हूँ•” उसने कहा, “**अल्लाह** मेरी हिफाज़त करें, वो हैं मेरे **रब**, जिन्होंने मुझ को एक अच्छा घर दिया•* खता करने वाले कभी कामयाब नहीं होते•”

24. वो तकरीबन उसका शिकार हो गई, और वो तकरीबन उसका शिकार हो गया, अगर वो उसके लिए न होता कि उसने देखा एक सबूत उसके **रब** कि तरफ से• हमने इस तरह फेर दिया बुराई और गुनाह को दूर उससे, इसलिए कि वो हमारे एक साबित कदम बंदों में से था•

25. दोनों दौड़े दरवाज़े कि तरफ, और, इस सूरत में, उसने फाड़ दिया उसका लिबास पीछे से• उन्होंने पाया उसके शौहर को दरवाज़े पर• उसने कहा, “क्या सज़ा होनी चाहिए उसके लिए जो चाहता था तेरी बिवी की आबरू लेना, सिवाए कैद या एक दर्दनाक सज़ा के?”

26. उसने कहा, “वो है जिसने चाहा मुझ को लुभाने के लिए.” एक गवाह ने उसके कुम्बे से मशवरा दिया: “अगर उसका लिबास आगे से फटा है, तो वो सच बोल रही है और वो है एक झुठा.

27. “और अगर उसका लिबास पीछे से फटा है, तो वो झूठ बोली है और वो सच बोल रहा है.”

28. जब उसके शौहर ने देखा कि उसका लिबास पीछे से फटा था, उसने कहा, “यह एक औरत कि साज़िश है. वाकई, तेरा साज़िश बनाना है ज़बरदस्त.

12:23 युसुफ ने कहा इस बयान को इस अंदाज़ में कि हाकिम कि बिवी ने सोचा कि वो उसके शौहर के बारे में बोल रहा है, जबकी असल में वो अल्लाह के बारे में बात कर रहा था.

29. “युसुफ नज़रअंदाज़ करो इस हादसे को. जहाँ तक तू *(मेरी बिवी)*, तुझे तेरे गुनाह के लिए माफी मांगनी चाहिए. तूने की है एक खता.”

30. कुछ औरतें शहर में बातें बनाने लगीं; “हाकिम कि बिवी उसके खादिम को लुभाने कि कोशिश कर रही है. वो शिद्दत से है उसके इश्क में. हम देखते हैं कि वो बहेक गई है.”

31. जब उसने उनकी बातों को सुना, उसने उनको दावत दिया, तैयार किया उनके लिए एक आराम की जगह, और उनमें से हर एक को दिया छुरी. फिर उसने उस से कहा, “उनके कमरे में दाखिल हो जा.” जब उन्होंने उसे देखा, उन्होंने उसे इतना पसंद किया, की अपने हाथों को काट लिया.* उन्होंने कहा, “**अल्लाह** की तारीफ हो, यह एक इंसान नहीं; यह है एक काबिले इज़्जत फरिश्ता.”

32. उसने कहा, “यह है वो जिस से इश्क में गिरने का तुमने मुझ को इल्ज़ाम लगाया. मैंने वाकई उसे लुभाने कि कोशिश की, और उसने इंकार किया. जब तक वो नहीं करता जिसे करने का मैं उसे हुक्म देती हूँ, वो यकीनन कैद खाने में जायेगा, और किया जायेगा ज़लील.

33. उसने कहा, “मेरे रब, कैदखाना बेहतर है उनको हवाले करने से. जबतक आप फेर न दें मुझसे उनका साज़िश बनाना, हो सकता है मैं उनकी आरज़ू करूँ और बरताव करूँ जाहिलों कि तरह.”

34. उसके रब ने जवाब दिया उसकी दुआ का और फेर दिया उनके साज़िश को उससे. वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले.

35. उसके बाद, साफ सबूतों के बावजूद, उन्होंने देखा, कि उसे कुछ देर के लिए कैद करना उनको ज़रूरी है.

36. दो जवान मर्द थे कैद में उसके साथ. उसमें से एक ने कहा, “मैंने देखा *(मेरे सपने में)* कि मैं शराब बना रहा हूँ” और दूसरे ने कहा, “मैंने देखा खुद को रोटी को उठाते हुए अपने सर पर, जिससे चिड़ियें खा रहीं थीं. इत्तेला दो हमें इन सपनों कि ताबीर. हम देखते हैं कि तुम हो नेक.”

37. उसने कहा, “अगर कोई खाना मुहय्या किया जाता है तुमको, मैं तुम्हें इत्तेला कर सकता हूँ उसके बारे में इससे पहले कि तुम उसे पाओ. यह है कुछ इल्म जो इनायत किया गया है मुझपर मेरे रब कि तरफ से. मैंने छोड़ दिया है उन लोगों के मज़हब को जो अल्लाह में ईमान नहीं रखते, और अगली ज़िंदगी के मुताल्लिक, वो हैं असल में काफिरें .

38. और मैंने बदले में पैरवी की मेरे पुरखो इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के मज़हब की. हम कभी बुतों को कायम नहीं करते **अल्लाह** के सिवाए. ऐसी है इनायत **अल्लाह** कि तरफ से हम पर और लोगों पर, लेकिन ज़्यादातर लोग हैं नाकद्रदान.

39. “ऐ मेरे कैदी साथियों, क्या कई खुदाएं बेहतर हैं, या सिर्फ **अल्लाह**, वाहिद, सब से आला?

40. तुम उनके बाजाए इबादत नहीं करते सिवाए ऐजादों के जो तुमने बना लिया है, तुम और तुम्हारे वालिदैन. **अल्लाह** ने कभी ऐसे बुतों कि इजाज़त नहीं दी है. सारा हुक्म है **अल्लाह** के पास, और उन्होंने हुक्म किया है कि तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए सिवाए उनके. ये है मुकम्मल मज़हब, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते.

41. “ऐ मेरे कैदी साथियों, तुम में से एक उसके रब के लिए शराब निकालने वाला जमादार होगा, जबके दूसरा सूली पर चढ़ाया जायेगा — चिड़ियें खायेंगी

उसके सर से• यह तय करता है मामले जिसके बारे में तुमने दरयाफ्त किया था•"

**12:31 ये वही लफ़्ज़ है जो 5:38 में इस्तेमाल हुआ है चोर के हाथ के मुताल्लिक, और जमा सुरह और आयत नंबरों का (12 + 31 और 5 + 38) वही है• इसलिए, चोर के हाथ निशान किए जाने चाहिएं, कलम नहीं जैसा अमल किया जाता है बिगड़े हुए इस्लाम कि तरफ से (देखें फुटनोट 5:38)•*

1383 *83541*

42. उसने फिर उस से कहा जो बचाया जाने वाला था "याद रखना मुझको तेरे रब के पास•"* इसतरह, शैतान उसे उसके रब को भुलाने का सबब बना, और, इस वजह से, वो रहा कैद में कुछ और सालों तक•

बादशाह का सपना

43. बादशाह ने कहा, "मैंने सात मोटे गायों को सात दुबले गायों से निगलते देखा, और सात हरे *(गेहुँ)* के बालियें, और दूसरे सुखे हुए• ऐ मेरे बुर्जुगों, मशवरा दो मुझे मेरे सपने के मुताल्लिक, अगर तुम जानते हो सपनों कि ताबीर कैसे की जाती है•

44. उन्होंने कहा, "जब सपनों के ताबीर कि बात आती है, बेहुदे सपने• हम जानकार नहीं•"

45. जो बचाया गया था *(कैद से)* बोला, अबकी जब उसे आखिरकार याद आया, "मैं बता सकता हूँ उसकी ताबीर, तो भेजो मुझे *(युसुफ कि तरफ)*•"

युसुफ ताबीर करता है बादशाह का सपना

46. "युसुफ मेरे दोस्त, इत्तेला दो हमें सात मोटी गायें निगली जाती हैं दुबली गायों से, और सात हरी बालियाँ, और दूसरे सूखे के बारे में• मैं वापस जाना चाहता हूँ लोगों के लिए कुछ खबर के साथ•"

47. उसने कहा, "जो तुम बोते हो सात सालों के दरमियान, जब फसल का वक्त आये, छोड़ दो दानों को उनके बालियों में, सिवाए उसके जो तुम खाते हो•

48. "उसके बाद, सूखे के सात साल आयेंगे, जो खत्म कर देगा ज़्यादातर वो जो तुमने उनके लिए जमा किया था•

49. "उसके बाद, एक साल आयेगा जो लायेगा राहत लोगों के लिए, और वो, एक बार फिर, रस निकालेंगे•"

50. बादशाह ने कहा, "लाओ उसे मेरे पास•" जब रसूल उसके पास आया, उसने कहा, "जाओ वापस तुम्हारे रब के पास और पूछो उससे औरतों की तहकीकात करने के लिए जिन्होंने उनके हाथों को काटा• मेरे रब पूरी तरह वाकिफ हैं उनके साज़िशों से•"

51. *(बादशाह ने)* कहा *(औरतों से)*, "क्या जानते हो तुम उस वाकिये के बारे में जब तुमने युसुफ को लुभाने कि कोशिश किया?" उन्होंने कहा, "**अल्लाह** न करें; हम नहीं जानते कोई भी बुराई की गई हो उसकी तरफ से•" हाकिम कि बीवी ने कहा, "अब सच हुआ है तारी• मैं हूँ जिसने कोशिश किया उसको लुभाने की और वो था सच्चा•

52. "मैं उम्मीद करती हूँ कि वो एहसास करेगा कि मैंने कभी उस से दगाबाज़ी नहीं की उसके गैर मौजूदगी में, इसलिए कि **अल्लाह** नहीं बक्शते हैं दगाबाज़ों के साज़िशों को•

53. "मैं अपने आप के लिए मासुमियत का दावा नहीं करती• नफ्स बदी का वकील है, सिवाए उनके जिन्होंने रहमत हासिल किया है मेरे रब कि तरफ से• मेरे रब हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•"

युसुफ हासिल करता है शोहरत

54. बादशाह ने कहा, "लाओ उसे मेरे पास, ताके मैं उसे मुलाज़मत दे सकुँ मेरे लिए काम करने को•" जब उसने उस से बात किया, उसने कहा, "आज, तुम्हारे पास है एक शोहरत वाला मकाम हमारे साथ•"

55. उसने कहा, "मुझे बनाईये खजांची, इसलिए कि मैं हूँ तर्जुबेकार इस इलाके में और जानकार•"

**12:42 जब युसुफ ने इल्तेजा किया उसके साथी से उसकी तरफ से बादशाह के पास शिफाअत करने के लिए, उसने अल्लाह के अलावा दूसरे पर भरोसा ज़ाहिर किया कैद से बचाए जाने के लिए• यह नही जचता एक सच्चे ईमानवाले को, और ऐसी एक संजीदा खता सबब बनी युसुफ को कुछ सालों तक कैद में रहने की• हम सीखते हैं कुरान से कि सिर्फ अल्लाह राहत दे सकते हैं किसी मेहनत कशी से जो हो सकता है पड़े हमपर• एक सच्चा ईमानवाला अल्लाह में भरोसा रखता है और पूरी तरह सिर्फ उनपर आसरा रखता है (1:5, 6:17, 8:17, 10:107)•*

56. हमने इसतरह युसुफ को कायम किया ज़मीन पर, जैसा चाहा उसने हुक्मरानी किया• हम बरसाते हैं हमारी रहमत को जिसकिसी पर हम चाहते हैं, और हम कभी नाकामयाब नहीं होते नेककारों को जज़ा देने से•

57. इसके अलावा, इनाम अगली ज़िंदगी में है इससे भी बेहतर उनके लिए जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं•

58. युसुफ के भाई आये; जब वो दाखिल हुए, उसने उनको पहचान लिया, जबकी उन्होंने उसे नहीं पहचाना•

59. इसके बाद कि उसने मुहय्या किया उनको उनके फराहमियों के साथ, उसने कहा, "अगली बार, तुम्हारे साथ तुम्हारे सौतेले भाई को लाना• क्या तुम नहीं देखते कि मैं देता हूँ पूरा नाप, और तुम्हारे साथ फरागदिली से पेश आता हूँ?

60. "अगर तुम नाकामयाब हो उसे मेरे पास लाने के लिए, तुम नहीं पाओगे कोई हिस्सा मेरी तरफ से; तुम यहाँ तक मेरे करीब भी नहीं आओगे•"

61. उन्होंने कहा, "हम मनायेंगे उसके वालिद को उसके बारे में• हम यकीनन ऐसा करेंगे•"

62. उसने हिदायत दिया उसके मददगारों को: "डाल दो उनके माल को उनकी थैलियों में• जब वो पायेंगे उन्हें अपने कुम्बे को लौटने पर, हो सकता है वो जल्दी वापस आयें•"

63. जब वो लौटे उनके वालिद के पास, उन्होंने कहा, "हमारे वालिद, अब हम नहीं पा सकते किसी फराहिमों को, जब तक आप न भेजें हमारे भाई को हमारे साथ• हम उसका अच्छा ख्याल रखेंगे•"

64. उसने कहा, "क्या मैं तुम पर भरोसा करूँ उसे लेकर, जैसा मैंने तुमपर उससे पहले भरोसा किया उसके भाई को लेकर? **अल्लाह** हैं सबसे अच्छे हिफाज़त करने वाले, और, सारे रहम करने वालों में से, वो हैं सबसे रहीम•

65. जब उन्होंने उनके थैलियों को खोला, उन्होंने पाया उनके मालों को लौटाया गया उनको• उन्होंने कहा, "हमारे वालिद, हम इससे ज़्यादा क्या मांग सकते हैं? यहाँ हैं हमारे माल लौटाये गये हमको• हम इस तरह मुहय्या कर सकते हैं हमारे कुम्बे के लिए, हिफाज़त कर सकते हैं हमारे भाई की, और पा सकते हैं एक और ऊँठ भर हिस्सा• यह है वाकई एक फायदेमंद सौदा•"

66. उसने कहा, "मैं उसे नहीं भेजुंगा तुम्हारे साथ, जबतक तुम मुझ को न दो तुम्हारा एक संजीदा वादा **अल्लाह** के सामने कि तुम उसे वापस लाओगे, जबतक तुम बिल्कुल मजबूर नहीं कर दिये जाते हो•" जब उन्होंने उनका संजीदा वादा दिया, उसने कहा, "**अल्लाह** गवाह हैं सारी चीज़ों के जो हम कह रहे हैं•"

67. और उसने कहा, "ऐ मेरे बेटों, न दाखिल हो एक दरवाज़े से, दाखिल हो मुखतलिफ दरवाज़ों से• बहेरहाल, मैं तुम्हें नहीं बचा सकता किसी चीज़ से जो पहले से मुकर्रर किया गया है **अल्लाह** कि तरफ से• **अल्लाह** के पास हैं सारे फैसले• मैं भरोसा करता हूँ उनमें, और उनमें सारे भरोसा करने वालों को उनका भरोसा रखना चाहिए•"

याकूब महसूस करता है युसुफ को

68. जब वो गये *(युसुफ कि तरफ)*, वो दाखिल हुए उनके वालिद के हिदायतों के मुताबिक में• हाँलाकि यह बदल नहीं सकता था किसी चीज़ को जो **अल्लाह** कि तरफ से मुकर्रर किया गया था, याकूब के पास थी एक खास वजह उनको ऐसा करने का कहने के लिए• इसलिए कि उसके पास था खास इल्म जो हमने उसे सिखाया, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते•

वापस मिस्र में

69. जब वो यसुफ के मकाम में दाखिल हुए, उसने अपने भाई को करीब लाया और कहा, "मैं हूँ तुम्हारा भाई, उनकी हरकतों से गमगीन न हो।"

युसुफ अपने भाई को रख लेता है

70. जब उसने उनको उनके फराहिमों से मुहय्या किया, उसने पीने का प्याला उसके भाई के थैले में रख दिया, फिर एक ऐलान करने वाले ने ऐलान किया: इस कारवाँ के मालिकें हैं चोर।"

71. उन्होंने कहा, जैसे वो उनके करीब आये, "तुमने क्या खोया?"

72. उन्होंने कहा, "हमने खोया बादशाह का प्याला। जो कोई उसे लौटायेगा पायेगा एक ज़्यादा ऊँठ भर हिस्सा; मैं खुद ज़मानत देता हूँ इसकी।"

73. उन्होंने कहा, "**अल्लाह** कि कसम, आप अच्छे से जानते हैं कि हम लोग यहाँ नहीं आये बुराई करने के लिए, नाहीं हम हैं चोर।"

74. उन्होंने कहा, "चोर के लिए क्या सज़ा है, अगर तुम हो झूठे?"

75. उन्होंने कहा, "अगर वो उसके थैले में मिलता है, सज़ा, है कि चोर तुम्हारा हुआ। हम इसतरह सज़ा दें मुजरिम को।"

76. वो शुरू हुआ तफतीश करता हुआ उनके बर्तनों से, उसके भाई के बर्तन के पास पहुँचने से पहले, और उसने उसके भाई के बर्तन से उसे निकाला। हमने इसतरह युसुफ के लिए पूरा किया मनसूबे को; वो नहीं रख सकता था उसके भाई को अगर उसने बादशाह का कानून लगाया होता। लेकिन वो थी **अल्लाह** कि मरज़ी । हम बुलंद करते हैं जिसकिसी को हम चुनते हैं ऊँचे दरजों को। हर इल्म वाले के ऊपर, वहाँ है एक जो है उससे भी ज़्यादा आलिम।

77. उन्होंने कहा, "अगर उसने चुराया, उसी तरह उसके एक भाई ने किया माज़ी में।" युसुफ ने खुद में उसके जज़्बों को छुपाया, और उनको कोई एहसास होने नहीं दिया। उसने *(खुद से कहा)*, "तुम वाकई बुरे हो। **अल्लाह** पूरी तरह आगाह हैं तुम्हारे इल्ज़ामों से।

78. उन्होंने कहा, "ऐ महेरबान तुम, उसके पास है एक वालिद जो है बुढ़ा; क्या तुम लोगे उसकी जगह में हममें से एक को? हम देखते हैं कि तुम हो एक नर्म दिल आदमी।"

79. उसने कहा, "**अल्लाह** न करें कि हम लें किसी और को बजाये उसके जिसके कब्ज़े से हमने पाया हो हमारी चीज़ें। वरना, हम होंगे बेइंसाफ।"

80. जब वो नाउम्मीद हुए उसके इरादे को बदलने से, उन्होंने आपस में मशवरा किया। उनके सबसे बड़े ने कहा, "क्या तुम एहसास करते हो कि तुम्हारे वालिद ने एक संजीदा वादा लिया है तुमसे **अल्लाह** के सामने? माज़ी में तुमने युसुफ को खो दिया। मैं नहीं जा रहा इस जगह से जबतक मेरे वालिद न दें मुझ को इजाज़त, या जब तक **अल्लाह** फैसला न करें मेरे लिए; वो हैं सबसे अच्छे मुनसिफ।

81. "जाओ वापस तुम्हारे वालिद के पास और कहो उनसे...

वापस फिलिस्तीन में

'हमारे वालिद, आप के बेटे ने की है एक चोरी। हम जानते हैं यकीन से, इसलिए कि यह है जो हमने देखा है। ये था एक अजीब वाक्या।

82. 'आप पूछ सकते हैं जमात से जहाँ हम थे, और कारवाँ जो हमारे साथ आया। हम बोल रहें हैं सच।' "

83. उसने कहा, "वाकई, तुमने साज़िश की है एक खास मनसूबा बनाने के लिए। खामोश सब्र है सिर्फ मेरा रास्ता। **अल्लाह** करें लायें सारों को वापस मेरे पास। वो हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम।"

84. वो पलट गया उनकी तरफ से, कहते हुए, "मैं रंजीदा हूँ युसुफ पर।" उसकी आँखे सफेद हो गई बहुत रंजीदा होने से; वो था वाकई गमगीन।

85. उन्होंने कहा, "**अल्लाह** कि कसम, आप सोग मनाते रहोगे युसुफ पर जब तक आप बिमार न हो जाओ, या जब तक आप मर न जाओ।"

86. उसने कहा, "मैं सिर्फ **अल्लाह** से शिकायत करता हूँ मेरी मुश्किल और गम के बारे में, इसलिए कि मैं जानता हूँ **अल्लाह** से जो तुम नहीं जानते।

87. "ऐ मेरे बेटों, जाओ ढुंडो युसुफ और उसके भाई को, और कभी नाउम्मीद न हो **अल्लाह** की रहमत से। कोई ना उम्मीद नहीं होता **अल्लाह** की रहमत से सिवाए कुफ्र करने वाले लोगों के।"

इस्राईल जाता है मिस्र को

88. जब वो दाखिल हुए *(युसुफ के)* कयामगाह में, उन्होंने कहा, "ऐ महेरबान तुम, हमने झेला है बहुत मेहनतकशी, हमारे कुम्बे के साथ, और हम लाये हैं कमतर चीज़ों को। लेकिन हम उम्मीद करते हैं कि आप देंगे हमें पूरा नाप और होंगे हमारी तरफ खैराती। **अल्लाह** इनाम देते हैं खैरात करने वालों को।"

89. उसने कहा, "क्या तुम्हें याद है तुमने क्या किया युसुफ और उसके भाई के साथ जब तुम थे जाहिल?"

90. उन्होंने कहा, "तुम युसुफ हो।" उसने कहा, "मैं हूँ युसुफ , और यहाँ है मेरा भाई। **अल्लाह** ने हमें बक्शा है। वो इसलिए कि अगर कोई बसर करता है एक नेक ज़िंदगी, और साबित कदमी से कायम रहता है, **अल्लाह** कभी नाकामयाब नहीं होते नेककारों को इनाम देने के लिए।"

91. उन्होंने कहा, "**अल्लाह** कि कसम, वाकई **अल्लाह** ने तुम्हें फज़ीलत दी है हमारे ऊपर। हम बेशक गलत थे।"

92. उसने कहा, "तुम पर आज कोई इल्ज़ाम नहीं। **अल्लाह** तुम्हें माफ करें। सारे रहम करने वालों में से, वो हैं सबसे रहीम।

93. "मेरी इस कमीज़ को ले जाओ; जब तुम फेको इसे मेरे वालिद के चेहरे पर, उनकी नज़र लौटा दी जायेगी। लाओ तुम्हारे पूरे कुम्बे को और आओ वापस मेरे पास।"*

94. इस से पहले कि कारवां पहुँचता, उनके वालिद ने कहा, "मैं महसूस कर सकता हूँ युसुफ कि महेक। क्या कोई मुझे बतायेगा?"

95. उन्होंने कहा, "**अल्लाह** कि कसम, तुम अब भी हो तुम्हारे पुरानी उलझन में।"

96. जब खुशखबरी लाने वाला पहुँचा, उसने *(कमीज़)* को फेका उसके चेहरे पर, जिससे उसकी नज़र लौटा दी गई थी। उसने कहा, "क्या मैंने तुम को नहीं कहा था कि मैं जानता था **अल्लाह** कि तरफ से जो तुम नहीं जानते?"

97. उन्होंने कहा, "हमारे वालिद, हमारी माफी के लिए दुआ करिये; हम थे वाकई गलत।"

98. उसने कहा, "मैं इल्तेजा करूंगा मेरे रब से तुम्हें माफ करने के लिए; वो हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम।"

मिस्र में

99. जब वो युसुफ के कयामगाह में दाखिल हुए, उसने अपने वालिदैन को गले लगा लिया, कहते हुए, "मिस्र में इस्तेकबाल हो। **अल्लाह** कि मरज़ी से, आप महफूज़ रहोगे यहाँ।"

100. उसने उसके वालिदैन को तख्त पर बैठाया। वो उसके सामने सज़दे में गिर गये। उसने कहा, "ऐ मेरे वालिद, यह तकमिलियत है मेरे पुराने सपने की। मेरे रब ने उसे सच होने दिया। उन्होंने मुझे बक्शा है, बचाया मुझे कैद से, और लाये तुम्हें रेगिस्तान से, इसके बाद के शैतान ने एक दरार डाल दिया था मेरे और मेरे भाईयों के बीच। मेरे रब हैं सबसे रहम वाले उसकी तरफ जिसकिसी को वो चाहें। वो हैं जानने वाले, सबसे हकीम।"

101. "मेरे रब, आपने मुझ को दिया है बादशाहत और सिखाया सपनों कि तावीर। शुरू करने वाले आसमानों और ज़मीन के; आप हैं मेरे रब और मालिक इस ज़िंदगी में और अगली ज़िंदगी में। मुझे एक फरमानबरदार कि तरह मरने दिजिए, और गिनिये मुझे नेककारों के साथ।"

102. ये है खबर माज़ी से जो हम तुझको नाज़िल करते हैं। तुम मौजूद न थे जब उन्होंने एक राय होकर फैसला किया *(युसुफ को कुएं में फेंकने का)*, जब उन्होंने एक दूसरे के साथ मिलकर साज़िश बनाया।

ज़्यादातर लोग
ईमान नहीं रखते

103. ज़्यादातर लोग, तुम चाहे कुछ भी कर लो, ईमान नहीं लायेंगे•

104. तुम उनसे मांग नहीं रहे हो कोई पैसे के लिए; तुम सिर्फ इस ताकीद को पहुँचा रहे हो सारे लोगों के लिए•

105. कितने सारे सबूतें आसमानों और ज़मीन में दिये गये हैं उनके लिए, लेकिन वो गुज़रते हैं उनसे, बेपरवाही से!

ज़्यादातर ईमानवाले
मुकर्रर किये गये हैं जहन्नम के लिए

106. ज़्यादातर वो जो ईमान रखते हैं **अल्लाह** में नहीं करते ऐसा बगैर बुतपरस्ती करते हुए•

107. क्या उन्होंने ज़मानत दिया है कि एक ज़बरदस्त आज़ाब उनको नहीं मारेगा **अल्लाह** कि तरफ से, या वक्त नहीं आयेगा उनकी तरफ अचानक, जब वो उसकी सबसे कम उम्मीद कर रहे हों?

108. कहो, "यह है मेरा रास्ता: मैं दावत देता हूँ **अल्लाह** कि तरफ, एक साफ सबूत के बुनियाद पर, और उसी तरह वो जो मेरी पैरवी करते हैं• **अल्लाह** की तारीफ हो• मैं एक बुतपरस्त नहीं•"

109. हमने नहीं भेजा तुमसे पहले सिवाए मर्दों को जिन्हें हमने इल्हाम किया, चुने गये मुखतलिफ कौमों के लोगों से• क्या वो नहीं घूमे ज़मीन पर और देखा उनसे पहलों के नतीजों को? अगली ज़िंदगी का ठिकाना है कहीं बेहतरउनके लिए जो एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं• क्या तुम तब समझोगे•

फतेह, आखिरकार, होती है
ईमानवालों के लिए

110. जैसे ही रसूलें नाउम्मीद होते हैं, और सोचते हैं कि वो ठुकराये गये हैं, हमारी फतेह आती है उनके पास• हम फिर बचाते हैं जिसकिसी को हम चुनते हैं, जबकी हमारा आज़ाब टाला नहीं जा सकता है मुजरिम लोगों के लिए•

हमें ज़रूरत है सिर्फ कुरान की

111. उनकी तारीख में, वहाँ है एक सबक उनके लिए जो अक्ल रखते हैं• यह नहीं है एक बनावटी *हदीस*; यह *(कुरान)* तसदीक करती है पिछले आसमानी किताबों की, मुहय्या करती है सारी चीज़ों की तफसीलें, और एक रहनुमाई और रहम उनके लिए जो ईमान रखते हैं•

****

सुरह 13: बिजली कि गरज (अल-राद)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. अ•ल•म•र•* ये *(हुरूफ़ें)* हैं सबूतें इस किताब की• जो नाज़िल किया गया है तुमको तुम्हारे **रब** कि तरफ से है सच, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमान नहीं रखते•

2. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने उठाया आसमानों को बगैर सुतूनों के ताके तुम देख सको, फिर लिया सारे इख्तेयार को• उन्होंने हवाले किया सूरज और चांद को, हर एक दौड़ता है *(अपने दायरे में)* एक पहले से मुकर्रर किये गये मुद्दत के लिए• वो काबू करते हैं सारी चीज़ें, और आयतों को समझाते हैं, ताके तुम यकीन हासिल कर सको तुम्हारे **रब** से मिलने के बारे में•

3. वो हैं वाहिद जिन्होंने तामीर किया ज़मीन को और रखा उस पर पहाड़ों और नदियों को• और मुखतलिफ किस्मों के फलों से, उन्होंने उनको मर्दानें और ज़नाने — जोड़ों में बनाए• रात पिछाड़ती है दिन को• ये पक्के सबूतें हैं लोगों के लिए जो सोचते हैं•

13:1 ये इनिशियलें कायम करते हैं एक बड़ा हिस्सा कुरान के हैरतअंगेज़ रियाज़ी कोड के कामिल खुदाई मुसन्निफ होने का सबूत• देखें अपेन्डिक्स 1•

4. ज़मीन पर, वहाँ हैं मिले हुए गुच्छे जो पैदा करते हैं बागें अंगूरों, अनाजों, नख्ल के दरख्तों के — जोड़े और गैर जोड़ों वाले• हाँलाकी वो एक ही पानी से सीचें जाते हैं, हम उनमें से कुछ को दूसरों पर फज़ीलत देते हैं खाने के लिए• यह पक्के सबूतें हैं लोगों के लिए जो समझते हैं•

अगली ज़िंदगी में
अकीदा रखना ज़रूरी है
निजात के लिए

5. अगर तुम कभी ताज्जुब करते हो, असल अजूबा है उनका कहना: "इसके बाद कि हम धूल में बदल जायेंगे, क्या हम दोबारा नये पैदा किये जायेंगे?" ये हैं जिन्होंने कुफ्र किया है उनके रब में• ये हैं वो जिन्होंने मोल लिया है ज़ंजीरें उनके गर्दन के इर्द गिर्द• ये हैं वो जिन्होंने मोल लिया है जहन्नम, जिसमें वो रहेंगे हमेशा के लिए•

6. वो दावा करते हैं तुम्हें उनके ऊपर हलाकत लाने का, बजाए नेककार बनने के! काफी मिसालें कायम किये गये हैं उनके लिए माज़ी में• वाकई, तुम्हारे रब भरे हैं माफी से लोगों के लिए, उनके खताओं के बावजूद, और तुम्हारे रब सख्त भी हैं आज़ाब नाफिज़ करने में•

7. जिस किसी ने कुफ्र किया कहते हैं, "अगर सिर्फ एक मौजज़ा आता उसकी तरफ उसके रब कि तरफ से *(हम तब ईमान लायेंगे)*•" तुम सिर्फ एक आगाह करने वाले हो — हर कौम पाती है एक हिदायत करने वाला उस्ताद•

8. **अल्लाह** जानते हैं क्या जनती है हर ज़नाना, और क्या आज़ाद करती है हर कोख, या हासिल करती है• सारी चीज़ें जो वो करते हैं सही सही नापे गये हैं•

9. जानने वाले सारे राज़ों और ऐलानों के; बुलंद, सबसे आला•

10. वो बराबर है चाहे तुम छुपाओ तुम्हारे ख्यालों को, या उनको ऐलान करो, या छुपाओ रात के अंधेरे में, या हरकत करो दिन के उजाले में•

11. *(फरिश्ते)* बारी लेते हैं एक के बाद एक, रहते हुए तुम में से हर एक के साथ — वो हैं तुम्हारे आगे और तुम्हारे पीछे• वो तुम्हारे साथ रहते हैं, और निगेहबानी करते हैं **अल्लाह** के हुक्मों के मुताबिक में• इसतरह, **अल्लाह** नहीं बदलते किसी लोगों के लिए हालात को जबतक वो खुद फैसला नहीं करते बदलने का• अगर किसी लोगों के लिए **अल्लाह** चाहें कोई मेहनतकशी, कोई ताकत उसे नहीं रोक सकती• इसलिए कि उनके पास कोई नहीं है सिवाए उनके रब और मालिक जैसा•

12. **वो** हैं वाहिद जो दिखाते हैं तुम्हें बिजली एक डर के सरचश्में जैसा, साथ उम्मीद की तरह, और वो शुरू करते हैं वज़नी बादलों को•

13. बिजली कि कड़क तारीफ करती है उनके अज़मत की, और उसी तरह फरिश्ते, उनके लिए एहतराम कि वजह से• वो भेजते हैं बिजली को, जो वार करती है उनके मरज़ी के मुताबिक में• फिरभी, वो **अल्लाह** के बारे में बहेस करते हैं, जबकी उनकी ताकत है ज़बरदस्त•

14. उनको पुकारना है सिर्फ जायेज़ इल्तेजा, जबकी बुतें जिनको वो पुकारते हैं उनके सिवाए, कभी जावब नहीं दे सकते• इसतरह, वो हैं उनके जैसे जो उनके हाथों को आगे बढ़ाते हैं पानी कि तरफ, लेकिन कुछ नहीं पहुँचता है उनके मुंहों को• काफिरों कि इल्तेजाएं हैं बेकार •

हर मखलूक ने
अपने आप को अल्लाह के हवाले किया है

15. हर कोई आसमानों और ज़मीन में करते हैं सजदा **अल्लाह** को, मर्ज़ी से या बिना मर्ज़ी से, और उसी तरह उनकी परछाईयाँ सवेरों में या शामों में•*

16. कहो, "कौन है रब आसमानों और ज़मीन का? कहो, "**अल्लाह**•" कहो, "फिर क्यों तुम कायम करते हो उनके अलावा मालिकों को जो कोई ताकत नहीं रखते तुम्हें फायदा देने या अपने आप को यहाँ तक नुकसान पहुँचाने का?" कहो, "क्या अंधा बराबर है देखने वाले के?" क्या अंधेरा बराबर है रौशनी के?" क्या उन्होंने बुतों को पाया है **अल्लाह** के अलावा जिन्होंने पैदा किया है खलकों को उनके खलकों जैसा, इस हद तक के फरक नहीं किया जा सकता दो खलकों का? कहो, "**अल्लाह** हैं पैदा करने वाले सारी चीज़ों के, और वो हैं वाहिद, बुलंद•"

सच्चाई का मुकाबला झूठ से

17. वो भेजते हैं नीचे आसमान से पानी, जो सबब बनता है वादियों के बहने का, फिर तेज़ी पैदा करती है बहुत झाग• उसी तरह, जब वो इस्तेमाल करते हैं आग धातुओं को उनके जवाहरात या साज़ो समान को साफ करने के लिए, झाग पैदा होता है• **अल्लाह** इस तरह मिसालों का हवाला देते हैं सच और झुठ के लिए• जहाँ तक के झाग है, वो ज़ाया जाता है, जबकी वो जो फायदा देता है लोगों के लिए रहता है ज़मीन के करीब• **अल्लाह** इसतरह हवाला देते हैं मिसालों का•

18. जो कोई उनके रब का जवाब देते हैं मुसतेहिक हैं अच्छे इनामों के• जहाँ तक वो जो नाकामयाब हुए उनको जवाब देने के लिए, अगर वो ज़मीन पर सारी चीज़ों के मालिक होते— यहाँ तक दुगने के बराबर — वो फौरन दे देते फिदये कि तौर पर• उन्होंने सबसे बुरा हिसाब मोल लिया है, और उनका आखिरी ठिकाना है जहन्नम; क्या एक अफसोस नाक मुकद्दर•

ईमानवालों का मुकाबला काफिरों से
(1) ईमानवाले

19. क्या एक वो जो पहचानता है की तुम्हारे रब कि आयतें हैं सच तुम्हारी तरफ बराबर उसके जो है अंधा? सिर्फ वो जो अक्ल रखते हैं तवज्जो लेंगे•

20. ये वो हैं जो पूरा करते हैं **अल्लाह** से किये गये एहद को, और नहीं तोड़ते हैं वादा•

21. वो जोड़ते हैं जो **अल्लाह** ने हुक्म दिया है जोड़ने का, एहतराम करते हैं उनके रब का, और डरते हैं खौफनाक हिसाब से•

22. वो साबित कदमी से कायम रहते हैं उनके रब को तलाश करने में, राबता नमाज़ें *(सलात)* कायम करते हैं, खर्च करते हैं उनकी तरफ हमारी नियामतों से खुफिया तौर पर या ऐलानिया तौर पर, और बुराई का अच्छाई से सामना करते हैं• ये मुस्तेहिक हुए हैं सबसे अच्छे ठिकाने के•

23. वो दाखिल होते हैं अदन के बागों में, इकट्ठे उनके वालिदैन, उनके जोड़ों, और उनके औलादों में से नेककारों के साथ• फरिश्ते उनकी तरफ दाखिल होंगे हर दरवाजें से•

24. "तुम पर सलामती हो, इसलिए कि तुम साबित कदमी से कायम रहे• क्या एक मुसर्रत भरा मुकद्दर•"

(2) काफिरें

25. जहाँ तक वो जो **अल्लाह** के वादे को तोड़ते हैं उसे पूरा करने का एहद करने के बाद, और तोड़ते हैं उसे जो **अल्लाह** हुक्म देते हैं जोड़ने का, और बुराई करते हैं, उन्होने पाया है मलामत; उन्होंने पाया है सबसे बुरा मुकद्दर•

**13:15 बुतपरस्त भी सजदा करते हैं, मिसाल के तौर पर वो यहाँ तक की, काबू नहीं कर सकते उनके दिल कि धड़कनों, उनके फेफड़ों, या उनके आंतों को• परछाईयाँ मुकर्रर किये गये हैं अल्लाह कि सूरज और चाँद के घूमने कि दायरे कि नक्शकारी कि वजह से, और नजम ज़मीन की खास शक्ल कि वजह से जो सबब बनता है चार मौसमों का• कामिल दुरूस्ती सूरज/ज़मीन का ताल्लुक साबित किया जा चुका है सोलार क्लॉक और उनके परछाईयों के ज़रिये•*

अल्लाह काबू करते हैं सारी नियामतों को

26. **अल्लाह** हैं वाहिद जो नियामत को बढ़ाते हैं जिसकिसी के लिए वो चाहते हैं, या उसे रोकते हैं• वो मसरूफ हो गये हैं इस ज़िंदगी के साथ, और यह ज़िंदगी, अगली ज़िंदगी के मुकाबले, है सिफर•

27. जो कोई कुफ्र करते हैं कहेंगे, "अगर सिर्फ एक मौजेज़ा आ सकता नीचे उसके पास उसके रब की तरफ से *(हम ईमान लाते)*• कहो, "**अल्लाह** गुमराह करते हैं जिसकिसी को वो चाहते हैं, और हिदायत देते हैं उनकी तरफ सिर्फ उन्हें जो ऐतबा करते हैं•"

28. ये हैं वो जिनके दिलें **अल्लाह** को याद करने में जश्न मनाते हैं• बेशक, **अल्लाह** को याद करने से, दिलें जश्न मनाते हैं•

29. जो कोई ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं मुसतेहिक हुए हैं खुशी और एक मुसर्रत वाले मुकद्दर के•

अल्लाह के
*वादे का रसूल**

30. हमने भेजा है तुम्हे *(ऐ रशाद)**, इस कौम कि तरफ, जिस तरह हमने दूसरे कौमों के लिए भेजा माज़ी में• तुम्हें उनके लिए बयान करना चाहिए जो हम तुम्हें नाज़िल करते हैं, इसलिए कि उन्होंने कुफ्र किया है सबसे रहमवाले में• कहो, "वो हैं मेरे रब• कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• मैं मेरे भरोसे को सिर्फ उनमें रखता हूँ; उनकी तरफ है मेरा आखिरी मुकद्दर •"

कुरान का
रियाज़ी कोड

31. अगर कुरान पहाड़ों के हरकत करने का, या ज़मीन के अलग अलग फट जाने का, या मुर्दों के बोलने का सबब बनता तब भी *(वो ईमान नहीं लायेंगे)*• **अल्लाह** सारी चीज़ों को काबू करते हैं• क्या यह वक्त नहीं ई मान वालों को छोड़ देने और एहसास करने का कि अगर **अल्लाह** चाहते, उन्होंने सारे लोगों को हिदायत दिया होता? काफिरें जारी रहेंगे आफत झेलने के लिए, उनके खुद के कामों कि वजह से, या पायेंगे आफतों को उनके करीब पड़ता, जब तक **अल्लाह** का वादा पूरा नहीं हो जाता• **अल्लाह** कभी नहीं बदलेंगे पहले से मुकर्रर किये गये मुकद्दर को•

सारे रसूलों का ज़रूरी है
मज़ाक उड़ाया जाना

32. तुमसे पहले रसूलों का मज़ाक उड़ाया गया है; मैंने इजाज़त दिया काफिरों को जारी रहने के लिए, फिर उनको मैंने सज़ा दिया• क्या खौफनाक था मेरा आज़ाब!

33. क्या कोई बराबर है उसके जो काबू करता है हर एक रूह को? फिर भी, वो बुतों को कायम करते हैं **अल्लाह** कि खिलाफत करने के लिए• कहो, "बताओ उनके नाम• क्या तुम इत्तेला दे रहे हो उनको किसी चीज़ के बारे में ज़मीन पर जो वो नहीं जानते? या, क्या तुम खोखली बातों को गढ़ रहे हो?" वाकई, साज़िशें उनके जो कुफ्र करते हैं सजाये गये हैं उनकी आँखों में• वो इस तरह फेर दिये गये हैं सही राह से• जिसकिसी को **अल्लाह** गुमराह करते हैं कभी नहीं पा सकता एक हिदायत देने वाले उस्ताद को•

34. उन्होंने आज़ाब को मोल लिया है इस ज़िंदगी में, और अगली ज़िंदगी में है इससे कही बुरा आज़ाब• कुछ नहीं हिफाज़त कर सकता उनको **अल्लाह** के खिलाफ•

जन्नत मिसाल्या तौर पर बयान की गई

35. जन्नत का मिसाल, जो वादा किया गया है नेककारों के लिए, है बहती नहरें, न खत्म होने वाली नियामतें, और ठंडी छांव• ऐसा है मुकद्दर उनके लिए जो नेककारी कायम रखते हैं, जबकी काफिरों का मुकद्दर है जहन्नम•

36. जिन्होंने आसमानी किताब पाई जश्न मनाते हैं उसमें जो तुमको नाज़िल किया गया था, कुछ दूसरे हो सकता है उसके हिस्सों को ठुकराएं कहो, "मुझे सिर्फ ताकीद की गई है **अल्लाह** की इबादत करने, और कभी शरीक न ठहराने के लिए उनके साथ किसी बुतों को• मैं उनकी

तरफ दावत देता हूँ, और उनकी तरफ है मेरा आखिरी मुकद्दर•

*13:30 अगर हम जमा करें जिमेटरिकल वेल्यु “रशाद” कि (505), साथ “खलीफा” कि वेल्यु (725), साथ सुरह नंबर (13), साथ आयत नंबर (30), हम पाते हैं 505+725+13+30 = 1273 = 19x67• अल्लाह इसतरह ज़ाहिर करते हैं उनके रसूल का नाम (देखें अपेन्डिक्स 2 तफसीलों के लिए)•

खुदाई इजाज़त
*कुरान के रियाज़ी कोड की**

37. हमने इन कानूनों को अरबी में नाज़िल किया, और अगर तुम कभी उनके ख्वाहिशों की बात मानो, इसके बाद कि ये इल्म आचुका है तुम्हारी तरफ, न होगा तुम्हारे पास कोई साथी, नाहीं एक हिफाज़त करने वाला, **अल्लाह** के खिलाफ•

38. हमने भेजे हैं रसूलों को तुमसे पहले *(ऐ रशाद)*, और हमने बनाया उनको शौहरें साथ बिवियों और बच्चों के• कोई रसूल एक मौजज़ा नहीं पेश कर सकता बगैर **अल्लाह** कि इजाज़त के, और पहले से मुकर्रर किये गये, एक खास वक्त के मुताबिक•

39. **अल्लाह** मिटाते हैं, और ठीक करते हैं जो कुछ वो चाहते हैं• उनके पास है असली दफ्तर नक्ल का•

40. चाहे हम दिखायें तुम्हें जो हम उनसे वादा करते हैं, या खत्म कर दें तुम्हारी ज़िंदगी उससे पहले, तुम्हारा सिर्फ मकसद है *(पैगाम)* पहुँचाना• वो हम हैं जो लेंगे उनसे हिसाब•

41. क्या वो नहीं देखते कि हर दिन ज़मीन पर, लाता है उनको आखरत के करीब, और ये की **अल्लाह** अटल तौर पर, फैसला करते हैं उनकी ज़िंदगी कि मुद्दत? वो हैं सबसे काबिल हिसाब लेने वाले•

42. उनसे पहले दूसरों ने मनसूबा बनाया है, लेकिन **अल्लाह** के पास है आखरी मनसूबा बनाना• वो जानते हैं हर कोई क्या कर रहा है• काफिरें जान जायेंगे कौन हैं आखिरकार जीतनेवाले•

43. वो जिन्होंने कुफ्र किया कहेंगे, “तुम एक रसूल नहीं हो!” कहो, “**अल्लाह** काफी होते हैं एक गवाह जैसे तुम्हारे और मेरे दरमियान, और वो जो रखते हैं आसमानी किताब का इल्म•”

****

सुरह 14: इब्राहीम (इब्राहीम)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. अ•ल•र•* एक आसमानी किताब जो हमने तुमको नाज़िल किया, ताके रहनुमाई करें लोगों की अंधेरे से बहार रौशनी में — उनके रब की मरज़ी के मुताबिक में— कादिरे मुतलक, काबिले तारीफ कि राह कि तरफ•

2. **अल्लाह** *(का रास्ता)*, वाहिद जो मालिक हैं सारी चीज़ों के आसमानों में और सारी चीज़े ज़मीन पर• हाय हो काफिरों के लिए; उन्होंने पाया है एक खौफनाक आज़ाब•

क्या है तुम्हारी अफज़लियत?

3. ये वो हैं जो इस ज़िंदगी को फज़ीलत देते हैं अगली ज़िंदगी पर, पलटते हैं **अल्लाह** के रास्ते से, और कोशिश करते हैं उसे पेचीदा करने का; वो दूर बहेक गये हैं•

रसूल कि ज़बान

4. हमने किसी रसूल को नहीं भेजा सिवाए *(नसीहत करने के लिए)* उसके लोगों कि ज़बान में, ताके उनके लिए चीज़ों को वाज़े कर सकें• **अल्लाह** फिर गुमराह करते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं, और जिसकिसी को वो चाहते हैं हिदायत करते हैं• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

मूसा

5. इसतरह, हमने मूसा को मौजज़ों के साथ भेजा, कहते हुए, “रहनुमाई करो तुम्हारे लोगों की अंधेरे से बहार रौशनी में, और याद दिलाओ उनको **अल्लाह** के दिनों का•” ये सबकें हैं हर साबित कदम रहने वाले, कद्र करने वाले शक्स के लिए•

**13:37-38 आयत नंबर (38) = 19x2• रखते हुए वेल्युएं "रशाद" कि (505) और "खलीफा" की (725) 13:37-38 के पास में, देता है 505 725 13 37 38, या 19x26617112302 (अपेन्डिक्स 2)•*

**14:1 ये इनिशियलें रहे एक खुदाई महफूज़ राज़ 1974 ऐ• डी• में रियाज़ी कोड के पता लग जाने तक• देखें अपेन्डिक्स 1 इन इनिशियलों कि खुसीसियत के लिए•*

एहमियत
कद्रदान होने की

6. याद करो मूसा ने कहा उसके लोगों से, "याद करो तुम पर **अल्लाह** के फज़्लों को• उन्होंने तुमको फिरऔन के लोगों से बचाया जिन्होंने तुम पर सबसे बुरा इज़ारसानी डाला, ज़बा करते हुए तुम्हारे बेटों को और छोड़ते हुए तुम्हारी बेटियों को• वो थी एक सख्त आज़माईश तुम्हारे रब कि तरफ से•"

कद्रदान के मुकाबले नाकद्रदान

7. तुम्हारे रब ने फरमान किया है: "जितना ज़्यादा तुम मेरा शुक्र करो, उतना ज़्यादा दूंगा मैं तुमको•" लेकिन अगर तुम नाकद्रदान बन जाओ, तो मेरा आज़ाब है सख्त•

8. मूसा ने कहा, "अगर तुम ज़मीन के सारे लोगों के साथ कुफ्र करो, **अल्लाह**, काबिले तारीफ को कोई ज़रूरत नहीं•"

खुदगरज़ाना नाफरमानी: एक इंसानी फितरत

9. क्या तुमने नहीं सुना है तुमसे पहलों के बारे में — नुह के लोग, आद, तमूद, और दूसरे जो उनके बाद आये और सिर्फ **अल्लाह** को मालूम? उनके रसूलें गये उनकी तरफ साफ सबूतों के साथ, लेकिन वो उनके साथ ज़िल्लत से पेश आये और कहा, "हम नहीं मानते उस में जिसके साथ तुमको भेजा गया है• शक से भरे; हम मशकूक हैं तुम्हारे पैगाम के बारे में•"

आँख बंद करके वालिदैन कि पैरवी करना:
एक बड़ी इंसानी बदनसीबी

10. उनके रसूलों ने कहा, "क्या तुम्हें **अल्लाह** के बारे में शक है, आसमानों और ज़मीन के शुरू करने वाले? वो दावत देते हैं सिर्फ तुम्हारे गुनाहों को माफ करने के लिए, और तुम्हें एक और मौका देने का तुम्हारे खुदकी मगफरत कराने के लिए•" उन्होंने कहा, "तुम हमारे जैसे इंसानों से ज़्यादा कुछ नहीं हो, जो हमें पलटाना चाहता है उससे जिसकी हमारे वालिदैन इबादत किया करते थे• दिखाओ हमें कुछ गहरा इखतियार•"

11. उनके रसूलों ने कहा उनसे, "हम तुम्हारे जैसे इंसानों से ज़्यादा कुछ नहीं, लेकिन **अल्लाह** बक्शते हैं जिसकिसी को वो चुनते हैं उनके बंदों में से• मुमकिन नहीं हम तुम्हें किसी किस्म का इखतियार दिखा सकें, सिवाए **अल्लाह** की मरज़ी के मुताबिक में• **अल्लाह** में ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए•

12. "हम क्यों **अल्लाह** में भरोसा न करें, जबकी उन्होंने हमें हिदायत किया है हमारी राहों में? हम साबित कदमी से कायम रहेंगे तुम्हारे इज़ारसानी की सूरत में• **अल्लाह** में सारे भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए•"

13. जिन्होंने कुफ्र किया कहा उनके रसूलों को, "हम तुम्हें हमारे ज़मीन से जिला वतन कर देंगे, जबतक तुम पलट न जाओ हमारे मज़हब को•" उनके रब ने उनको इल्हाम किया: "हम लाज़िमी खतावारों को फनाह कर देंगे•

14. "और हम तुम्हें उनकी ज़मीन में बसने देंगे उनके बाद• यह है *(इनाम)* उनके लिए जो मेरी अज़मत का एहतराम करते हैं, और मेरे वादे का एहतराम करते हैं•"

15. उन्होंने एक दावा जारी किया, और इस वजह से, हर ज़िद्दी ज़ालिम खत्म हुआ बरबाद•

16. इंतेजार कर रही है जहन्नम, जिसमें वो पियेगा सड़ा हुआ पानी•

17. वो निगलेगा उसे, हाँलाकी वो उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता, जैसे मौत उसकी तरफ आती है हर तरफ से, लेकिन वो कभी नहीं मरेगा• उसका इंतेज़ार कर रहा है एक खौफनाक आज़ाब•*

**14:17 जब हमने बगावत किया अल्लाह के खिलाफ, और इकरार किया शैतान के साथ हंगामें के दौरान (38:69), फरिश्तों ने मशवरा दिया कि हम जहन्नम को जिला वतन कर दिये जायें (अपेन्डिक्स 7)• लेकिन सबसे ज़्यादा रहम वाले ने फैसला किया हमें एक और मौका देने का हमारी खुदकी मगफरत कराने के लिए• उन्होंने फरिश्तों से कहा, "मैं जो जानता हूँ तुम नहीं जानते" (2:30)• अल्लाह जानते थे की कई इंसानों ने ऐतराज़ किया होता की उन्हें कोई इल्म नहीं था जहन्नम कितना बुरा था• हैरतअंगेज़ बयान जहन्नम का 14:17 में और 22:19-22 में, मनसूख करता है ऐसे एक ऐतराज़ का• अब हमें खूब अच्छे से मालूम है कितना खौफनाक है जहन्नम•*

18. मिसाल उनकी जो कुफ्र करते हैं उनके रब में: उनके आमालें हैं राखों जैसे एक तेज़ हवा में, एक तूफानी दिन पर• वो कुछ नहीं हासिल करते उस से जो कुछ वो कमाते हैं; यह है सबसे दूर बहकना•

जो सिर्फ कादिरे मुतलक हैं उनकी इबादत करो

19. क्या तुम एहसास नहीं करते की **अल्लाह** ने पैदा किया है आसमानों और ज़मीन को एक खास मकसद के लिए? अगर वो चाहें, वो तुम्हें निकाल सकते हैं, और बदल सकते हैं एक नई खल्क को तुम्हारी जगह में•

20. यह **अल्लाह** के लिए ज़्यादा मुश्किल नहीं•

हश्र के दिन पर

21. जब वो सारे **अल्लाह** के सामने खड़े होंगे,* पैरवी करने वाले कहेंगे उनके रहबरों से, "हम तुम्हारी पैरवी किया करते थे• क्या तुम बचा सकते हो हमें **अल्लाह** के आज़ाब के एक ज़र्रा बराबर भी हिस्से से?" वो कहेंगे, "अगर **अल्लाह** ने हमें हिदायत दिया होता, हमने तुमको हिदायत दिया होता• अब बहुत देर हो चुकी है, चाहे हम रंज मनाएं या सब्र को चुनें, कोई रास्ता नहीं हमारे लिए बहार जाने का•

शैतान ठुकराता है उसके पैरवी करने वालों को

22. और शैतान कहेगा, फैसला जारी हो जाने के बाद, "**अल्लाह** ने वादा किया है तुमसे सच्चा वादा, और मैंने तुमसे वादा किया, लेकिन मैंने मेरे वादे को तोड़ा• मेरे पास कोई ताकत नहीं थी तुम्हारे ऊपर; मैंने सिर्फ तुमको दावत दिया, और तुमने मेरा दावत कबूल किया• इसलिए मुझे इल्ज़ाम न दो, और सिर्फ अपने आप को इल्ज़ाम दो• मेरा गिला करना तुम्हारी मदद नहीं कर सकता, नाहीं तुम्हारा गिला करना मेरी मदद कर सकता है• मैंने कुफ्र किया है तुम्हारी मेरे बुतपरस्ती करने में • खतावारों ने पाया है एक दर्दनाक आज़ाब•"

23. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो दाखिल किये जायेंगे बागों में बहती हुई नहरों के साथ• वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए, उनके रब कि मरज़ी के मुताबिक में• उनका आदाब उसमें है: "अमन•"

सच के मुकाबले झूठ

24. क्या तुम नहीं देखते की **अल्लाह** ने बयान किया है मिसाल अच्छे लफ्ज़ का जैसे एक अच्छा दरख्त जिसकी जड़ें मज़बूती से जमे हैं, और उसकी शाखें हैं ऊँची आसमान में?

25. वो पैदा करता है उसका अनाज हर मौसम, जैसे नक्शकारी की गई उसके रब कि तरफ से• **अल्लाह** इसतरह लोगों के लिए मिसाल बयान करते हैं, ताके वो तवज्जो ले सकें•

26. और मिसाल बुरे लफ्ज़ कि है ऐसी जैसे एक बुरा दरख्त कलम किया गया बराबर ज़मीन से; उसके पास कोई जड़ नहीं उसे खड़ा रखने के लिए•

27. **अल्लाह** मज़बूत करते हैं उनको जो ईमान रखते हैं साबित किए गए लफ्ज़ के साथ, इस ज़िंदगी में और अगली ज़िंदगी में• और **अल्लाह** खतावारों को गुमराह करते हैं• सारी चीज़ें हैं **अल्लाह** की मरज़ी के मुताबिक में•

वो निकालते हैं उनके कुम्बे को
अल्लाह कि हिफाज़त से

28. क्या तुमने ध्यान दिया है उनको जिन्होंने जवाब दिया **अल्लाह** कि नियामतों का कुफ्र करने से, और इस तरह लाये मुसीबत उनके खुदके कुम्बों पर?

29. जहन्म है उनका मुकद्दर, जिसमें वो जलते हैं; क्या एक अफसोसनाक अंजाम!

बुतपरस्ती: सारे बुराई की माँ

30. वो कायम करते हैं बागियों को **अल्लाह** के दरजे के साथ और उनके रास्ते से दूसरों को फेरने के लिए• कहो, "कुछ वक्त के लिए मज़े लो; तुम्हारा आखरी मुकद्दर है जहन्नम•"

बेहद एहम हुक्मात

31. नसीहत करो मेरे बंदों को जो ईमान लाये राबता नमाज़ों *(सलात)* को कायम करने के लिए, और *(खैरात)* देने के लिए उनकी तरफ हमारी नियामतों से, खुफिया तौर

पर और ऐलानिया तौर पर, इस से पहले कि एक दिन आ जाये जहाँ नहीं है तिजारत, नाहीं तरफदारी•

*14:21 बार बार, कुरान बात करता है अगली जिंदगी के बारे में जैसे माज़ी में• ये इसलिए की वो हैं मुस्तकबिल के वाक्यात जो पहले से देखे गये हैं अल्लाह कि तरफ से, और यकीनन गुज़र जायेंगे•

1476 *86496*

32. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और वो भेजते हैं आसमान से नीचे पानी पैदा करने के लिए सारे किस्म के फल तुम्हारी खुराक के लिए• उन्होंने हवाले किया है कश्तियों को तुम्हारी खिदमत के लिए समंदर पर उनके हुक्म के मुताबिक में• उन्होंने हवाले किया है नदियों को भी तुम्हारी खिदमत के लिए•

33. उन्होंने हवाले किया है सूरज और चांद को तुम्हारी खिदमत में, मुसलसल तौर पर• उन्होंने रात और दिन को हवाले किया है तुम्हारी खिदमत के लिए•

34. और वो देते हैं तुम्हें सारी किस्म कि चीज़ें जिसके लिए तुम उनसे इल्तेजा करते हो• अगर तुम गिनों **अल्लाह** कि मेहरबानियों को, तुम उनको कभी अहाते में नहीं ले सकते• वाकई, इंसान है खतावार, नाकद्रदान•

इब्राहीम

35. याद करो इब्राहीम ने कहा, "मेरे रब, बनाईये इसे एक अमन वाली ज़मीन, और हिफाज़त करिये मेरी और मेरी औलाद की बुतों की इबादत करने से•

36. "मेरे रब, उन्होंने कई लोगों को गुमराह किया है• जहाँ तक वो जो पैरवी करते हैं मेरी, वो मेरे साथ हैं• जहाँ तक वो जो मेरी नाफरमानी करते हैं, आप हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

37. "हमारे रब, मैंने बसाया है मेरे कुम्बे के हिस्से को इस बंजर वादी में, आपके मुकद्दस घर के पास• हमारे रब, उन्हें चाहिये रावता नमाज़ों *(सलात)* को कायम करें, इस तरह लोगों कि भीड़ को उनकी तरफ जमा होने दिजिये, और उनके लिए मुहय्या कीजिये सारे किस्मों के फलें, ताके वो कद्रदान बन सकें•

38. "हमारे रब, आप जानते हैं जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ हम ऐलान करते हैं — कोई चीज़ नहीं छिपी है **अल्लाह** से ज़मीन पर, नाहीं आसमानों में•

39. "**अल्लाह** कि तारीफ हो मुझे अता करने के लिए, इस्माईल और इसहाक, मेरे बुढ़ापे के बावजूद• मेरे रब दुवाओं का जवाब देते हैं•

रावता नमाजें:
अल्लाह कि तरफ से तोहफा

40. "मेरे रब, मुझे बनाईये वो जो मुसलसल तौर पर रावता नमाज़ें *(सलात)* कायम करता है, और मेरी औलाद भी• हमारे रब, बराए करम मेरी दुवाओं का जवाब दिजिये•"

41. "मेरे रब, मुझे और मेरे वालिदैन, और ईमानवालों को माफ करिये, उस दिन पर जब हिसाब लिया जायेगा•"

42. कभी भी न सोचो कि **अल्लाह** बेखबर हैं उससे जो खता करने वाले कर रहें हैं• वो उन्हें मोहलत देते हैं सिर्फ उस एक दिन तक जहाँ आँखें घूरेंगीं दहशत में•

43. जैसे वो जल्दी करते हैं *(कब्र के बाहर)*, उनके चेहरे ऊपर कि तरफ देख रहे होंगे, उनकी आँखें यहाँ तक के झपकेंगी नहीं, और उनके ज़हने होंगे दहशतज़दा•

अल्लाह भेजते हैं उनके हुक्मों को
उनके रसूलों के ज़रिये

44. तुम्हें लोगों को उस दिन की ताकीद करनी चाहिए जब आज़ाब आयेगा उनकी तरफ• जिन्होंने खता किया कहेंगे, "हमारे रब, हमें एक और मौका दिजिए• हम फिर जवाब देंगे आपके पुकारने का और पैरवी करेंगे रसूलों की•" क्या तुमने कसम नहीं खाया माज़ी में के तुम ज़िंदा रहोगे हमेशा के लिए?

45. तुम बसे तुमसे पहलों के घरों में, जिन्होंने गलत किया उनकी रूहों को, और तुमने देखा है साफ साफ हमने क्या किया उनको• हमने कायम किये हैं कई मिसालों को तुम्हारे लिए•

46. उन्होंने बनाये उनके साज़िशों को, और **अल्लाह** पूरी तरह आगाह हैं उनके साज़िशों से• वाकई, उनके साज़िशें काफी थे पहाड़ों को मिटाने के लिए•

फतेह कि ज़मानत
अल्लाह के रसूलों के लिए

47. ये न सोचो की **अल्लाह** कभी भी तोड़ेंगे उनका वादा उनके रसूलों के लिए• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, इंतेकाम लेने वाले•

*नई आसमानें और नई ज़मीन**

48. दिन आयेगा जब यह ज़मीन बदल दी जायेगी एक नए ज़मीन से, और आसमानें भी, और हर कोई, लाया जायेगा वाहिद, सबसे आला **अल्लाह** के सामने•

49. और तुम देखोगे उस दिन पर मुजरिम को ज़ंजीरों में बंधे हुए•

50. उनके लिबासे डांबर के बने होंगे, और आग बेबस कर देगी उनके चेहरों को•

51. इसलिए कि **अल्लाह** अदाएगी करेंगे हर रूह को जो कुछ उसने कमाया; **अल्लाह** हैं सबसे काबिल हिसाब लेने वाले•

52. ये एक ऐलान है लोगों के लिए, इससे ताकीद किये जाने के लिए, और उनको पता लगने देने के लिए की वो हैं सिर्फ एक खुदा, और उनके लिए जो अक्ल रखते हैं तवज्जो लेने के लिए•

****

सुरह 15: अल हिज्र वादी (अल-हिज्र)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. अ•ल•र•* ये *(हुरूफें)* सबूतें हैं इस आसमानी किताब; एक गहरा कुरान की•

2. यकीनन, वो जिन्होंने कुफ्र किया चाहेंगे कि वो फरमानबरदार होते•

3. उन्हें खाने, मज़ा, और रहने दो अंधा वहेम कि वजह से; वो जान जायेंगे•

4. हम कभी फनाह नहीं करते हैं किसी कौम को, सिवाए एक खास, पहले से मुकर्रर किये गये वक्त के मुताबिक में•

5. अंजाम किसी कौम का आगे नहीं किया जा सकता, नाहीं मुलतवि किया जा सकता है•

6. उन्होंने कहा, "ऐ तुम जिसने यह ताकीद पाई है, तुम हो दिवाने•

7. "तुम क्यों फरिश्तों को नीचे नहीं लाते, अगर तुम हो सच्चे?"

8. हम नहीं भेजते हैं नीचे फरिश्तों को सिवाए खास कामों के लिए• वरना, किसी को मोहलत नहीं दी जायेगी•

अल्लाह के वादे का
*रसूल**

9. बेशक, हमने नाज़िल किया है ताकीद, और, बेशक, हम उसकी हिफाज़त करेंगे•*

10. हमने भेजा है *(रसूलों को)* कौमों कि तरफ माज़ी में तुम से पहले•

11. हर बार जब एक रसूल गया उनकी तरफ, उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया•

12. हम इस तरह मुजरिम के ज़हनों को काबू करते हैं•

13. इस वजह से, वो उसमें ईमान नहीं ला सकते• यह निज़ाम रहा है पिछली नस्लों से•

**14:48 यह पेशीनगोई तौरेत में भी पाई जाती है (इसाईयाह 65:17 और 66:22) में और इंजील में: "हम इंतेज़ार कर रहे हैं जिसका है नई आसमानें और एक नई ज़मीन जहाँ, उनके वादे के मुताबिक, अल्लाह का फैसला बसेगा•" (2 पीटर 3:13)•*

**15:1 और *15:9 खुदाई सरचश्मा और मुकम्मल हिफाज़त कुरान की साबित की गई है कुरान के रियाज़ी कोड से (अपेन्डिक्स 1)• अल्लाह के वादे का रसूल मुकर्रर किया गया था इस बड़े मौजज़े को बेनकाब करने के लिए• लफ्ज़ "धिक्र" ज़ाहिर करता है कुरान के कोड को कई आयतों में (15:6, 21:2, 26:5, 38:1, 38:8, 74:31)• वेल्यु "रशाद खलीफा" की (1230) + 15 + 9 = 1254, 19x66•*

14. अगर हम खोल भी दें उनके लिए एक दरवाज़ा आसमान कि तरफ, जिसके ज़रिये वो चढ़ सकें;

15. वो कहेंगे, "हमारी आँखों को दोखा दिया गया है• हम पर जादू किया गया•"

16. हमने कहकशाओं को रखा है आसमान में, और सजाया उसे देखने वालों के लिए•

17. और हमने हिफाज़त की उसकी हर ठुकराये गये शैतान के खिलाफ•

18. अगर उनमें से कोई चुपके से घुस जाता है सुनने के लिए, एक ताकतवर गोलाबारी उसका पीछा करके वापस लौटा देगी•

19. जहाँ तक ज़मीन की बात है, हमने उसे तामीर किया, और उसपर तवाजुन करने वाले *(पहाड़ों)* को रखा, और हमने उगाये उसपर एक मुकम्मल मिज़ान हर चीज़ के•

20. हमने उसे तुम्हारे लिए रहने के काबिल बनाया,* और सारे मखलूकों के लिए जिनके लिए तुम मुहय्या नहीं करते•

21. वहाँ कुछ नहीं है जिसके हम लामहदूद तादादों के मालिक नहीं• लेकिन हम भेजते हैं उसे नीचे ठीक ठीक नाप में•

22. और हम भेजते हैं हवाओं को जैसे बीज को एक जगह से दूसरे जगह ले जाने वाले, और सबब करते हैं पानी को नीचे आने का आसमान से तुम्हारे पीने के लिए• वरना तुम नहीं रख सकते उसे पीने के काबिल•

23. वो हम हैं जो काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत, और हम हैं आखिरकार विरासत पाने पाले•

24. और हम पूरी तरह वाकिफ हैं उनसे जो तुम में से आगे बड़ते हैं, और हम पूरी तरह जानते हैं तुम में से कौन पलटता है•

25. यकीनन तुम्हारे रब उनको हाज़िर करेंगे• वो हैं सबसे हकीम, सब कुछ जानने वाले•

इंसानी नस्ल

26. हमने पैदा किया इंसान को पुरानी मिट्टी से, जैसे कुम्हार कि मिट्टी•

27. जहाँ तक जिनें, हमने पैदा किया उनको, उससे पहले, लहकती आग से•

28. तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा, "मैं पैदा कर रहा हूँ एक इंसान को पुरानी मिट्टी से, जैसे कुम्हार कि मिट्टी•

29. "जब मैं उसे मुकम्मल कर दुँ, और फुंकुं उसमें मेरी रूह से, तुम्हें उसके सामने सजदे में गिर जाना चाहिए•"

30. फरिश्ते सजदे में गिर गये; उनमें से सारे,

31. सिवाए इबलीस *(शैतान)* के• उसने सजदा करने वालों के साथ होने का इंकार किया•

32. उन्होंने कहा, "ऐ इबलीस *(शैतान)*, तू क्यों सजदा करने वालों के साथ नहीं है?"

33. उसने कहा, "मैं इंसान के सामने सजदा नहीं करने वाला, जिसे आपने पुरानी मिट्टी से पैदा किया, जैसे कुम्हार कि मिट्टी•

34. उन्होंने कहा, "इसलिए तुझे बाहर निकल जाना चाहिए; तू जिला वतन किया गया है•

35. "तूने पाया है मेरी लानत इंसाफ के दिन तक•"

36. उसने कहा, "मेरे रब, मुझको उस दिन तक मोहलत दीजिए जब तक वो दोबारा ज़िंदा नहीं किये जाते•"

37. उन्होंने कहा, "तुझको मोहलत दी गई है•

38. "मुकर्रर किये गये दिन और वक्त तक•"

39. उसने कहा, "मेरे रब, चुंकी आपने चाहा है कि मैं गुमराह हो जाऊँ, मैं यकीनन लुभाऊंगा उनको ज़मीन पर; मैं उन सारों को गुमराह करूंगा•

**15:20* *जब हम एसट्रोनॉटस को फिज़ा में भेजते हैं, हम मुहय्या करते हैं उनको सही सही नापा गया खाना, पानी, और ऑक्सीज़न की तादादों के साथ• अल्लाह ने पैदा किया फिज़ाई जहाज़ ज़मीन साथ अरबों एसट्रोनॉटस के जो काम करते हैं और जनते हैं; उन्होंने*

मुहय्या किया उनको एक खुद को सहारा देने वाली निज़ाम से जो पैदा करता है ऑक्सीज़न, ताज़ा पानी, और एक बड़ी किस्म ज़ायकेदार खाने और पीने के•

1487 *86873*

40. "सिवाए आपकी इबादत करने वालों में से वो जो हैं मुकम्मल तौर पर सिर्फ आप को मनसूब•"

41. उन्होंने कहा, "ये है एक कानून जो है अटल•

42. "तुझे कोई ताकत नहीं मेरे बंदों पर• तुझे ताकत है सिर्फ बहके हुओं पर जो तेरी पैरवी करते हैं•

43. "और जहन्नम उन सारों का इंतेज़ार कर रही है•

44. "उसके पास होंगे सात दरवाज़े• हर दरवाज़ा पायेगा एक खास हिस्सा उन में से•"

45. जहाँ तक नेकी करने वाले, वो लुत्फ उठायेंगे बागों और नहरों का•

46. दाखिल हो उसमें, मुतमईन और महफूज़•

47. हम निकालेंगे सारी जलन को उनके दिलों से• एक कुम्बे कि तरह, वो होंगे करीब करीब तख्तों पर•

48. वो कभी नहीं झेलंगे कोई थकान उसमें, नाहीं वो उससे निकाले जायेंगे•

49. इत्तेला दो मेरे बंदों को कि मैं हूँ माफ करने वाला, सबसे रहीम•

50. और यह की मेरा आज़ाब है सबसे दर्दनाक आज़ाब•

फरिश्ते गये इब्राहीम के पास

51. इत्तेला दो उनको इब्राहीम के मेहमानों के बारे में•

52. जब वो उसके मकाम में दाखिल हुए, उन्होंने कहा, "अमन•" उसने कहा, "हम खौफज़दा हैं तुम्हारे बारे में•"

53. उन्होंने कहा, "खौफज़दा न हो• हमारे पास तुम्हारे लिए खुशखबरी है: एक हिदायतयाफता बेटा•"

54. उसने कहा, "तुम कैसे मुझ को ऐसी खुशखबर दे सकते हो, जब मैं हूँ इतना बुढ़ा?" क्या तुम तब भी मुझे ये खुशखबरी देते हो?

55. उन्होंने कहा, "ना उम्मीद न हो; खुशखबरी हम देते हैं तुझ को है सच•"

56. उसने कहा, "कोई नाउम्मीद नहीं होता है उसके रब कि रहमत से, सिवाए बहके हुओं के•"

57. उसने कहा, "तुम्हारा मकसद क्या है, ऐ रसूलों?"

58. उन्होंने कहा, "हम रवाना किये गये हैं गुनाहगार लोगों कि तरफ•

59. "जहाँ तक लूत का कुम्बा है, हम उन सबको बचायेंगे•

60. "लेकिन उसकी बिवी को नहीं; वो मुकरर्र की गई है होने के लिए तवाह होने वालों के साथ•"

लूत

61. रसूलें गये लूत के शहर कि तरफ•

62. उसने कहा, "तुम अंजान लोग हो•"

63. उन्होंने कहा, "हम लाते हैं तुम्हारी तरफ जिसका वो शक कर रहे थे•

64. "हम लाते हैं तुम्हारी तरफ सच; हम हैं सच्चे•

65. तुम्हें रात के दरमियान तुम्हारे कुम्बे को लेजाना चाहिए• उनके पीछे रहो, और ध्यान रखो तुम में से कोई पीछे न देखे• सीधे जाओ जैसा हुक्म किया गया है•"

66. हमने पहुँचाया उसे उसके हुक्म को: वो लोग फनाह किये जाने वाले हैं सुबह में•

67. शहर के लोग आये खुशी से•

68. उसने कहा, "ये मेरे मेहमान हैं; मुझ को शर्मिंदा न करो•

69. "**अल्लाह** से डरो, और मुझे शर्मसार न करो•"

70. उन्होंने कहा, "क्या हमने तुम्हें ताकीद नहीं किया किसी से ताल्लुक रखने से?"

71. उसने कहा, "यहाँ हैं मेरी बेटियाँ, अगर तुम्हें ज़रूरत है•"

72. लेकिन, अफसोस, वो पूरी तरह अंधे किये गये थे उनकी हवस कि वजह से•

73. इस वजह से, तबाही ने मारा उनको सुबह में•

74. हमने उसे उलट पलट दिया, और बरसाया उनको बरबाद करने वाले पत्थरों से•

75. यह एक सबक है उनके लिए जो अक्ल रखते हैं•

76. यह निज़ाम रहेगा हमेशा•

77. यह एक निशानी है ईमानवालों के लिए•

78. जंगल के लोग भी खतावार थे•

79. इस वजह से, हमने उनसे बदला लिया, और दोनो जमातें पूरी तरह दर्ज की गई हैं•

80. अल हिज्र के लोगों ने रसूलों को नहीं माना•

81. हमने उनको हमारी आयतें दिए, लेकिन उन्होंने उनको नज़र अंदाज़ किया•

82. वो तराशा करते थे पहाड़ों से महफूज़ घरों को•

83. तबाही ने मारा उनको सुबह में•

84. जो उन्होंने जमा किया था मदद नहीं किया उनकी•

दुनिया का खत्म होना
*बेनकाब किया गया**

85. हमने पैदा नहीं किया आसमानों और ज़मीन को, और सारी चीज़ें उनके दरमियान, सिवाए एक खास मकसद के लिए• दुनिया का खत्म होना आयेगा, इसलिए तवज्जो न दो उनको नर्म अंदाज़ में•

86. तुम्हारे रब हैं पैदा करने वाले, सब कुछ जानने वाले•

87. हमने दिया है तुमको सात जोड़े, और बुलंद कुरान•

88. हसद न रखो उसके लिए जो हमने इनायत किया है दूसरे *(रसूलों)* पर, और गमगीन न हो *(काफिरों कि वजह से)*, और अपने <u>बाज़ू को नीचा करो</u> ईमान वालों के लिए•

89. और ऐलान करो: "मैं हूँ एक ज़ाहिर ताकीद करने वाला•"

90. हम निपटेंगे बांटने वालों के साथ•

91. वो सिर्फ अधूरे तौर पर कबूल करते हैं कुरान को•

92. तुम्हारे रब कि कसम, हम उन सारों से सवाल करेंगे,

93. सारी चीज़ों के बारे में जो उन्होंने किया है•

94. इसलिए, तुम्हें दिये गये एहकामों को पूरा करो, और नज़र अंदाज़ करो बुतपरस्ती करने वालों को•

95. हम आज़ाद करेंगे तुम्हें मज़ाक करने वालों से,

96. जो कायम करते हैं दूसरे खुदा को **अल्लाह** के सिवाए• वो यकीनन जान जायेंगे•

97. हम पूरी तरह जानते हैं कि तुम नाराज़ हो सकते हो उनकी बातों से•

98. तुम्हें गाना चाहिए तुम्हारे रब की तारीफें, और हो सजदा करने वालों के साथ•

99. और तुम्हारे रब की इबादत करो, यकीन हासिल करने के लिए•*

****

सुरह 16: शहेद की मक्खी (अल-नहल)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. **अल्लाह** का हुक्म पहले से जारी हो चुका है *(और सारी चीज़ें पहले से लिखीं जा चुकी हैं)*, इसलिए उसकी जल्दी न करो•* उनकी तारीफ हो; किसी बुतों को वो कायम करते हैं उससे कहीं ऊपर, सबसे आला•

**15:85-88 अल्लाह के वादे के रसूल के कामों में से है पहुँचाना कुरानी ऐलान कि दुनिया 2280 ए डी में खत्म हो जायेगी (20:15, 72:27 और अपेन्डिक्स 25)•*

**15:99 इबादत के तरीके हैं हमारे यकीन को हासिल करने का ज़रिया (अपेन्डिक्स 15)•*

*16:1 सारी चीज़ें पहले से दर्ज की जा चुकी हैं (57:22)• देखें अपेन्डिक्स 14 भी•

2. वो भेजते हैं आयतों के साथ फरिश्तों को नीचे, लिए हुए उनके हुक्मों को, जिसकिसी की तरफ वो चुनते हैं उनके बंदों में से: "तुम्हें नसीहत करनी चाहिए की कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए मेरे; तुम्हें मेरा एहतराम करना चाहिए•"

3. उन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को एक खास मकसद के लिए• वो कहीं आला हैं, कहीं ऊपर किसी बुतों से जिनको वो कायम करते हैं•

4. उन्होंने पैदा किया इंसान को एक छोटी बूंद से, फिर वो बदल जाता है एक पुरजोश दुश्मन में•

5. और उन्होंने पैदा किए मवेशी को तुम्हारे लिए, मुहय्या करने के लिए तुम्हें गरमी, और दूसरे कई फायदे, साथ साथ खाने के•

6. वो तुम्हें ऐश से भी मुहय्या करते हैं तुम्हारी फुरसत के दरमियान, और जब तुम सफर करते हो•

अल्लाह की नियामतें

7. और वो उठाते हैं तुम्हारे बोझों को ज़मीनों कि तरफ जो तुम नहीं पहुँच सकते बगैर बड़ी मेहनत कशी के• यकीनन, तुम्हारे रब हैं हमदर्द, सबसे रहम वाले•

8. और *(उन्होंने पैदा किया)* घोड़ों, खच्चरों, और गधों को तुम्हारे सवारी करने के लिए, और तुम्हारे ऐश के लिए• इसके अलावा, वो पैदा करते हैं जो तुम नहीं जानते•

9. **अल्लाह** दिखाते हैं रास्तों को, शामिल करते हुए गलत वाले• अगर वो चाहते, उन्होंने तुम सारों को हिदायत किया होता•

10. वो भेजते हें नीचे आसमान से पानी तुम्हारे पीने के लिए, और दरख्तों को उगाने को तुम्हारे फायदे के लिए•

11. उससे, वो उगाते हैं तुम्हारे लिए अनाजें, ज़ैतूनें, खजूर के नख्लें, अंगूरें, और सारे किस्मों के फलें• यह *(काफी)* सबूत हैं लोगों के लिए जो सोचते हैं•

12. और वो हवाले करते हैं तुम्हारी खिदमत में, रात और दिन, इसके अलावा सूरज और चाँद• सितारे भी, हवाले किये गये हैं उनके हुक्म से• ये *(काफी)* सबूतें हैं लोगों के लिए जो समझते हैं•

13. और *(उन्होंने पैदा किये)* तुम्हारे लिए ज़मीन पर चीज़ें मुख्तलिफ रंगों की• ये *(काफी)* है एक सबूत लोगों के लिए जो तवज्जो लेते हैं•

14. और उन्होंने समंदर को हवाले किया तुम्हारी खिदमत के लिए; तुम उस में से नर्म गोश्त खाते हो, और ज़ेवर निकालते हो जिसे तुम पहनते हो• और तुम जहाज़ों को उसपर घूमते देखते हो तुम्हारे तिजारती फायदों के लिए, जैसे तुम तलाश करते हो उनकी नियामतों को, ताके तुम कद्रदान बन सको•

15. और उन्होंने ज़मीन पर तवाजुन करने वाले *(पहाड़ों)* को रखा, ताके वो लुड़क न जायें तुम्हारे, साथ साथ नदियों और रास्तों के, ताके तुम हिदायतयाफता हो सको•

16. और राहों की निशानियाँ, साथ साथ सितारों के; रूख को पता करने का इस्तेमाल किये जाने के लिए•

17. क्या वो जो पैदा करते हैं बराबर हैं उसके जो पैदा नहीं करता? क्या तुम अब तवज्जो दोगे?

18. अगर तुम गिनों **अल्लाह** कि नियामतों को, मुमकिन नहीं तुम उन्हें कभी आहाते में ले सको• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

19. और **अल्लाह** जानते हैं जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम ऐलान करते हो•

मुर्दा नबियें और बुर्जुगें

20. जहाँ तक बुतें जिनको वो कायम करते हैं **अल्लाह** के सिवाए, वो कुछ भी पैदा नहीं करते; वो खुद पैदा किये गये थे•

21. वो मर चुके हैं, ज़िंदा नहीं, और उनको कोई इल्म नहीं कैसे या कब वो दोबारा ज़िंदा किये जायेंगे•

22. तुम्हारे खुदा हैं एक खुदा• जहाँ तक वो जो अगली ज़िंदगी में ईमान नहीं रखते, उनके दिलें इंकार कर रहे हैं, और वो हैं मगरूर •

23. बेशक, **अल्लाह** जानते हैं सारी चीज़ें वो छुपाते हैं और सारी चीज़ें वो ऐलान करते हैं• वो पसंद नहीं करते उनको जो मगरूर हैं•

24. जब उनसे पूछा जाता है, "तुम क्या सोचते हो तुम्हारे रब कि तरफ से इन आयतों के बारे में," वो कहते हैं, "कहानियाँ माज़ी से•"

25. वो ज़िम्मेदार ठहराये जायेंगे उनके गुनाहों के लिए हश्र के दिन पर, उनमें से सारे, इसके अलावा उनके गुनाहें जिनको उन्होंने गुमराह किया उनके जिहालत कि वजह से• क्या एक अफसोसनाक बोझ!

26. उनकी तरह दूसरों ने साज़िश बनाया माज़ी में, और इस वजह से, **अल्लाह** ने तबाह कर दिया उनकी इमारत को जड़ से, ताके सबब बने उनके ऊपर छत गिरने का• आज़ाब ने उनको मारा जब उन्होंने सबसे कम उम्मीद की उसकी•

27. फिर, हश्र के दिन, वो उनको शर्मसार करेंगे और पुछेंगे, "कहाँ हैं मेरे शरीकें जिनको तुमने कायम किया था मेरे सिवाए, और मेरी मुखालफत की थी उनके खातिर?" जो इल्म से नवाज़े गये थे कहेंगे, "आज, शर्म और मुसीबत गिर पड़ी है काफिरों पर•"

काफिरों के लिए मौत

28. फरिश्ते मौत देते हैं उनको उनकी रूहों पर गलत करने कि हालत में• वो वक्त है जब वो आखिरकार अपने आप को हवाले करते हैं, और कहते हैं, "हमने कुछ गलत नहीं किया!" हाँ बेशक• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो तुम ने किया है•

29. इसलिए, जहन्नम के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ, जिसमें तुम रहोगे हमेशा के लिए• क्या एक अफसोस नाक मुकद्दर मगरूर लोगों के लिए•

*ईमानवाले असल में मरते नहीं**

30. जहाँ तक नेककार के लिए, जब उनसे पूछा जाता है, "तुम क्या सोचते हो तुम्हारे रब की तरफ से इन आयतों के बारे में," वो कहते हैं, "अच्छा•" जो एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं उनके लिए, खूशी, और अगली ज़िंदगी का ठिकाना है इससे भी बेहतर• क्या एक मुसर्रत भरा ठिकाना नेककारों के लिए•

31. अदन के बागें मखसूस हैं उनके लिए, जिसमें नहरें बहतीं हैं• उसमें उनके लिए हैं कुछ भी जिसका वो ईरादा करते हैं• **अल्लाह** इस तरह नेककारों को इनाम देते हैं•

वो सीधे जन्नत को जाते हैं

32. फरिश्ते खत्म करते हैं उनकी ज़िंदगियों को एक नेककारी कि हालत में, कहते हुए, "अमन हो तुम पर• दाखिल हो जन्नत में *(अभी)* एक इनाम जैसा तुम्हारे कामों के लिए•"*

काफिरें

33. क्या वो फरिश्तों के नीचे आने का इंतेज़ार कर रहे हैं उनकी तरफ, या जब तक तुम्हारे रब का फैसला नहीं गुज़र जाता? उनसे पहलों ने वही चीज़ किया• **अल्लाह** नहीं हैं वो जिन्होंने उनको गलत किया; वो हैं खुद जिन्होंने अपने खुद की रूहों को गलत किया•

34. उन्होंने पाया है नतीजे उनके बुरे कामों का, और वही चीज़ें जिनका उन्होंने मज़ाक उड़ाया आये वापस उनको परेशान करने के लिए•

मशहूर बहाना

35. बुतपरस्ती करने वाले कहते हैं, "अगर **अल्लाह** ने चाहा होता, हम इबादत नहीं करते किसी बुतों की सिवाए उनके, नाहीं हमारे वालिदैन करते• नाहीं हम मना करते कोई चीज़ सिवाए उनकी मनाईयों के•" उनसे पहलों ने वही किया है• क्या रसूलें कुछ कर सकते हैं सिवाए मुकम्मल पैगाम पहुँचाने के?

**16:30-32 नेककार चखते हैं सिर्फ पहली मौत, जो पहले से सामना किया गया है हम सारों कि तरफ से (देखें 44:56)• इस दुनिया में उनके दरमियानी वक्फा खत्म होने पर, मौत के फरिश्ते सिर्फ दावत देते हैं उनको जन्नत में जाने के लिए जहाँ आदम और हव्वा एक दफा रहे थे (2:154, 3:169, 8:24, 22:58, 36:27)•*

36. हमने भेजा हैं हर कौम कि तरफ एक रसूल, कहते हुए, "तुम्हें **अल्लाह** कि इबादत करना, और बुतपरस्ती से बचना चाहिए." उसके बाद, कुछ हिदायत किये गये थे **अल्लाह** कि तरफ से, जबकी दूसरे हवाले किये गये थे गुमराह होने के लिए. घुमो ज़मीन पर और ध्यान दो ठुकराने वालों के लिए नतीजों को.

37. चाहे तुम कितनी ही ज़ोर कोशिश कर लो उनको हिदायत देने की, **अल्लाह** हिदायत नहीं देते उन्हें जिनको उन्होंने गुमराही के हवाले किया है. इस तरह, उनकी कोई मदद नहीं कर सकता.

उनके ज़हेनों कि गहराई में

38. उन्होंने संजीदगी से **अल्लाह** की कसम खाई: "**अल्लाह** मुर्दों को दोबारा ज़िंदा नहीं करेंगे." बेशक, ऐसा है उनका अटल वादा, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते.

39. वो फिर हर किसी को बतायेंगे सारी चीज़ें जिसपर उन्होंने बहेस किया था, और पता लगने देंगे उनको जिन्होंने कुफ्र किया था कि वो थे झूठे.

मुर्दों को ज़िंदा करने के लिए

40. किसी चीज़ को करने के लिए, हम सिर्फ उसे कहते हैं, "हो" और वो हो जाता है.

41. जिन्होंने हिजरत किया **अल्लाह** के वास्ते, इसलिए कि वो तंग किये गये थे, हम यकीनन मुहय्या करेंगे उनको फरागदिली से इस ज़िंदगी में, और अगली ज़िंदगी का बदला है इससे भी बेहतर, अगर सिर्फ वो जानते.

42. ये इसलिए है कि वो साबित कदमी से कायम रहते हैं, और उनके रब में वो भरोसा करते हैं.

43. हमने नहीं भेजा तुमसे पहले सिवाए मर्दो को जिनको हमने इल्हाम किया. पूछो उनसे जो आसमानी किताब जानते हैं, अगर तुम नहीं जानते.

44. हमने मुहय्या किया उनको साथ सबूतों और आसमानी किताबों के. और हमने भेजा नीचे तुम्हारी तरफ इस पैगाम को, लोगों को ऐलान करने के लिए सारी चीज़ें जो भेजी गई है उनकी तरफ नीचे, शायद वो गौर करें.

45. क्या वो जिन्होंने बुरी साज़िशें बनाई ज़मानत दिया कि **अल्लाह** उनको ज़मीन कि तरफ से नहीं निगलने देंगे, या आज़ाब उनकी तरफ नहीं आयेगा जब वो उसकी सबसे कम उम्मीद कर रहे हों?

46. हो सकता है वो उनको मारे जब वो सो रहे हों; वो कभी नहीं बच सकते.

47. या हो सकता है वो उनको मारे जब वो डरते हुए उसका इंतेज़ार कर रहे हों. तुम्हारे रब हैं दर्दमंद, सबसे रहीम.

48. क्या उन्होंने **अल्लाह** कि तरफ से पैदा की गई सारी चीज़ों को नहीं देखा? उनकी परछाईयाँ घेरती है उनके दायें और बायें, **अल्लाह** कि पूरी फरमानबरदारी में, और खुशी से.

49. **अल्लाह** को सजदा करती हैं सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर — सारे मखलूक — और उसी तरह फरिश्ते भी; बगैर ज़रासा भी गुरूर के.*

50. वो उनके रब का एहतराम करते हैं, कहीं ऊपर उनके, और वो करते हैं वो जो उनको हुक्म दिया जाता है करने के लिए.

51. **अल्लाह** ने ऐलान किया है: "दो खुदाओं कि इबादत न करो; वहाँ सिर्फ एक खुदा है. तुम्हें सिर्फ मेरा एहतराम करना चाहिए."

52. उनकी हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में और इसलिए, मज़हब सिर्फ उनको मुकम्मल तौर पर मनसूब किया जाना चाहिए. क्या तुम **अल्लाह** के अलावा किसी दूसरे कि इबादत करोगे?

53. कोई भी नियामत का तुम लुत्फ उठाते हो है **अल्लाह** कि तरफ से. इसके बावजूद, जब भी तुम कोई मुसीबत झेलते हो तुम फौरन उनसे शिकायत करते हो.

54. इसके बावजूद, जैसे ही वो तुम्हारे आफत को हटाते हैं, तुम में से कुछ बुत परस्ती को पलट जाते हैं.

*16:49 इंसान का जिस्म, चाहे वो हो एक ईमानवाले का या एक काफिर का, अपने आप को हवाले करता है अल्लाह के; दिल कि धड़कनें, फेफड़ों कि हरकत, और आंत कि हरकत अलामत देते हैं इस फरमानबरदारी का•

55. उनको कुफ़्र करने दो उसमें जो हमने उनको दिया है• बढ़ो आगे और मज़े लो आरज़ी तौर पर; तुम यकीनन जान जाओगे•

56. बुतें जिनको वो कायम करते हैं गफलत कि वजह से तजवीज़ करते हैं, एक हिस्सा नियामतों का हमने इनायत किया उन पर• **अल्लाह** कि कसम, तुम ज़िम्मेदार ठहराये जाओगे तुम्हारे एजादों के लिए•

एक तरफा हठधर्मी
दूध पीती बच्चियों के खिलाफ

57. वो यहाँ तक **अल्लाह** को बेटियाँ मनसूब करते हैं, उनकी तारीफ हो, जबके वो खुदके लिए पसंद करते है जो वो चाहते हैं•

58. जब उनमें से एक पाता है एक दूध पीती बच्ची, उसका चेहरा सियाह पड़ जाता है बेपनाह गम से•

59. शर्मसार, वो छुपता है लोगों से, उसे बुरी खबर दिये जाने कि वजह से• वो यहाँ तक सोचता है: क्या वो रखे बच्ची को बेदिली से, या दफन कर दे उसे धूल में• यकीनन अफसोसनाक है उनका फैसला•

60. जो कोई अगली ज़िंदगी में ईमान नहीं रखते कायम करते हैं सबसे बुरी मिसालें, जबकि **अल्लाह** के लिए हैं सबसे बुलंद मिसालें• वो हैं कादिरे मुतलक सबसे हकीम•

सबसे पहला गुनाह

61. अगर **अल्लाह** ने सज़ा दिया होता लोगों को उनके खताओं के लिए, उन्होंने ज़मीन पर सारे मखलूक को फनाह कर दिया होता• लेकिन वो मोहलत देते हैं उनको एक खास, पहले से मुकर्रर किये गये वक्त के लिए• जब उनका दरमियानी वक्त खत्म होता है, वो मुलतवी नहीं कर सकते उसे एक घंटे से, नाहीं उसे आगे बढ़ा सकते हैं•

62. वो मनसूब करते हैं **अल्लाह** को वो जो खुद के लिए नापसंद करते हैं, फिर झूठ कहते हैं उनके खुदकी ज़बानों से कि वो हैं नेककार! बग़ैर किसी शक के, उन्होंने पा लिया है जहन्नम, इसलिए कि उन्होंने बगावत की है•

63. **अल्लाह** कि कसम, हमने भेजे हैं *(रसूलों)* को तुमसे पहले कौमों कि तरफ, लेकिन शैतान ने सजाया उनके कामों को उनकी आँखों में• इस वजह से, वो है अब उनका रब, और उन्होंने पा लिया है एक दर्दनाक आज़ाब•

64. हमने नाज़िल किया है यह आसमानी किताब तुम्हारी तरफ, उनको बताने के लिए जो वो बहेस करते हैं, और मुहय्या करने के लिए हिदायत और रहमत लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं•

और सबूतें अल्लाह कि तरफ से

65. **अल्लाह** भेजते हैं नीचे आसमान से पानी ज़मीन को ज़िंदा करने के लिए इसके बाद के वो मर चुका है• यह *(काफी)* सबूत होना चाहिए लोगों के लिए जो सुनते हैं•

66. और मवेशी में वहाँ हैं तुम्हारे लिए एक सबक: हम मुहय्या करते हैं तुम्हें एक पीने कि चीज़ उनके पेटों से• हज़म किया गया खाना और खून के दरमियान में से, तुम पाते हो खालिस दूध, ज़ायकेदार पीने वालों के लिए•

67. और खजूर के नख्लों और अंगूरों के फलों से तुम पैदा करते हो नशे की चीज़ें, इसके अलावा अच्छी नियामतें• यह *(काफी)* सबूत होना चाहिए लोगों के लिए जो समझते हैं•

शहद कि मक्खी

68. और तुम्हारे रब ने इल्हाम किया शहद कि मक्खी को: बनाओ घरों को पहाड़ों और पेड़ों में, और *(छत्तों)* में वो बनाते हैं तुम्हारे लिए•

69. फिर खाओ सारे फलों से, तुम्हारे रब की नक्शकारी की पैरवी करते हुए, बाकायदगी से• उनके पेटों से आती है एक पीने की चीज़ मुख्तलिफ रंगों की, जिसमे है शिफा लोगों के लिए• यह *(काफी)* सबूत होना चाहिए लोगों के लिए जो गौर करते हैं•*

**16:69 माने गये गिज़ाई एहमियत के अलावा, शहेद एक शिफा देने वाली दवा जैसा साइंसी तौर पर साबित किया जा चुका है खास एलरजियों और दूसरे मरज़ों के लिए•*

70. **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया, फिर वो तुम्हारी ज़िंदगियों को खत्म करते हैं• वो तुम में से कुछ को सबसे बुढ़ापे तक जीने देते हैं, सिर्फ जानने के लिए कि वहाँ है एक हद इलम का जो वो हासिल कर सकते हैं• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, कादिरे मुतलक•

कोई शरीकें नहीं अल्लाह के साथ

71. **अल्लाह** ने मुहय्या किया है तुम में से कुछ को दूसरों से ज़्यादा• जिन्हें दिया गया है इफ़रात में कभी नहीं देंगे उनके मालों को उनके मददगारों को इस हद तक के उन्हें साथीयें बना सकें• क्या वो देदेंगे **अल्लाह** कि नियामतों को?*

72. और **अल्लाह** ने बनाये तुम्हारे लिए जोड़े तुम्हारे खुद में से, और पैदा किया तुम्हारे लिए तुम्हारे जोड़ों से औलादें और पोते पोतियाँ, और मुहय्या किया तुम्हें अच्छी नियामतों से• क्या उन्हें झूठ में ईमान रखना, और **अल्लाह** कि नियामतों से नाकद्रदान बन जाना चाहिए ?

बुतपरस्ती:
कोई अकलमंदी नहीं

73. इसके बावजूद, वो इबादत करते हैं **अल्लाह** के सिवाए जो नहीं रखते कोई नियामतें उनके लिए आसमानों में, नाहीं ज़मीन पर, नाहीं मुहय्या कर सकते हैं उनको किसी चीज़ से•

74. इसलिए, **अल्लाह** के लिए मिसालें न बयान करो; **अल्लाह** जानते हैं जबकी तुम नहीं जानते•

अमीर ईमानवाला है बेहतर
गरीब ईमान वाले से

75. **अल्लाह** बयान करते है मिसाल एक गुलाम का जो है कब्ज़े में, और है पूरी तरह कमज़ोर, मुकाबले उसके जिसे हमने बक्शा है अच्छी नियामतों से, जिससे वो देता है खैरात खुफ़िया और ऐलानिया तौर पर• क्या वो बराबर हैं? तारीफ हो **अल्लाह** की, उनमें से ज़्यादा नहीं जानते•

76. और **अल्लाह** बयान करते हैं मिसाल दो मर्दो का; एक है गुंगा, कम काबिलियत रखता है किसी चीज़ को करने की, पूरी तरह सहारा रखता है उसके मालिक पर — जिस किसी रास्ते में वो उसकी रहनुमाई करता है, वो कभी पैदा नहीं कर सकता कोई चीज़ अच्छा• क्या वो है बराबर उसके जो हुकुमत करता है इंसाफ के साथ, और हिदायतयाफता है सीधी राह में?

यह जिंदगी है बहुत छोटी

77. **अल्लाह** आसमानों और ज़मीन के मुस्तकबिल के मालिक हैं• जहाँ तक उनकी बात है, दुनिया का खत्म होना *(वक्त)* है एक आँख कि झपकी भर दूर, या उससे भी करीब• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

78. **अल्लाह** ने तुमको बाहर निकाला तुम्हारी माँओं कि कोखों से कुछ नहीं जानते हुए, और उन्होंने दिया तुम्हें सुनाई, दिखाई, और ज़हनें, ताके तुम कद्रदान बन सको•

79. क्या वो उड़ने के लिए हवाले किये गये परिंदों को नहीं देखते आसमान कि फिज़ा में? कोई नहीं थामता उनको हवा में सिवाए **अल्लाह** के• यह *(काफी)* सबूत होना चाहिए लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं•

80. और **अल्लाह** ने मुहय्या किया तुम्हारे लिए ठहरे घरों को जहाँ तुम रह सकते हो• और उन्होंने मुहय्या किया तुम्हारे लिए आसानी से एक जगह से दूसरी जगह लेजाने के काबिल घरें मवेशी जानवर के खालों से बनी हुई, ताके तुम उन्हें इस्तेमाल करो जब तुम सफर करो, और जब तुम ठहर जाओ• और उनके ऊनों, मुलायम खालों, और बाल से, तुम बनाते हो आरामगाहें और ऐश के सामान कुछ वक्त के लिए•

81. और **अल्लाह** ने चीज़ों के ज़रिये मुहय्या किया तुम्हारे लिए छांव जिसे उन्होंने पैदा किया, और मुहय्या किया तुम्हारे लिए पनाह पहाड़ों में, और मुहय्या किया तुम्हारे लिए लिबासे जो हिफाज़त करते हैं तुम्हारी गरमी से, और लिबासें जो हिफाज़त करतीं हैं जब तुम जंगों में

लड़ते हो• वो इसतरह मुकम्मल करते हैं उनकी रहमतों को तुम पर, ताके तुम फरमाबरदार बन सको•

*16:71 अगर इंसानें नहीं देंगे उनकी ताकत को उस हद तक, वो क्यों उम्मीद करते अल्लाह से ऐसा करने के लिए, और पैदा करें साथियों को खुद के लिए?

82. अगर वो फिर भी पलट जायें, तो तुम्हारा सिर्फ मकसद है साफ पहुंचाना *(पैगाम को)*•

काफिरें नाकद्रदान

83. वो अच्छे से पहचानते हैं **अल्लाह** कि रहमतें, फिर उनका इन्कार करते हैं; उनमें ज़्यादातर हैं काफिरें•

हश्र के दिन पर

84. दिन आयेगा जब हम उठायेंगे हर कौम से एक गवाह, फिर वो जिन्होंने कुफ्र किया इजाज़त नहीं दिये जायेंगे *(बात करने के लिए)*, नाहीं उनको छोड़ा जायेगा•

85. जब वो जिन्होंने खता किया था देखेंगे आज़ाब को, बहुत देर हो चुकी होगी; वो उनके लिए बदला नहीं जायेगा, नाहीं उनको राहत दी जायेगी•

बुतें ठुकराते हैं
उनकी बुतपरस्ती करने वालों को

86. और जब वो जिन्होंने बुतपरस्ती की देखेंगे उनके बुतों को, वो कहेंगे, "हमारे रब, ये हैं हमारे बुतें जिनको हमने कायम किया आप के साथ•" बुतें फिर सामना करेंगे उनका और कहेंगे, "तुम झुठे हो•"

87. वो उस दिन पर पूरी तरह **अल्लाह** के फरमानबरदार होंगे, और बुतें जिनको उन्होंने एजाद किया था ठुकरा देंगे उन्हें•

88. जो कोई कुफ्र करते हैं और पलटते हैं **अल्लाह** कि राह से, हम बड़ाते हैं उनके आज़ाब को जोड़ते हुए ज़्यादा आज़ाब से, उनके खताओं कि वजह से•

89. दिन आयेगा जब हम उठायेंगे हर कौम से एक गवाह उनमें से, और लायेंगे तुमको इन लोगों का गवाह जैसा• हमने यह किताब नाज़िल किया है तुमको हर चीज़ों कि सफाईयों को बयान करने के लिए, और हिदायत, और रहमत, और खुशखबरी फरमानबरदारों के लिए•

90. **अल्लाह** वकालत करते हैं इंसाफ, खैरात, और रिश्तेदारों का ख्याल करने का• और वो मना करते हैं खराबी, बुराई, और हद से गुज़रना• वो तुम्हें रौशन करते हैं, ताके तुम गौर कर सको•

तुम्हें तुम्हारी ज़बान रखनी चाहिए

91. तुम्हें **अल्लाह** से किया गया तुम्हारा वादा पूरा करना चाहिए जब तुम करो ऐसा एक वादा• तुम्हें कसमों को नहीं तोड़ना चाहिए उनको पूरा करने का *(अल्लाह की)* कसम खाने के बाद, इसलिए कि तुमने बनाया है **अल्लाह** को एक ज़ामिन तुम्हारे लिए• **अल्लाह** जानते हैं सारी चीज़ें तुम करते हो•

92. बुनने वाली कि तरह न हो जो उधेड़ती है उसके मज़बूत विनाई को फुसफुसे सूत के अंबार में• यह है तुम्हारा मिसाल अगर तुम कसमों की बदसलूकी करो ताके एक दूसरे का फायदा उठा सको• चाहे एक गिरोह बड़ा हो दूसरे से, **अल्लाह** इस तरह तुमको आज़ामाईश को डालते हैं• वो यकीनन दिखायेंगे तुम्हें हश्र के दिन पर सारी चीज़ें तुमने बहेस किया था•

93. अगर **अल्लाह** चाहते, उन्होंने बनाया होता तुमको एक जमात• लेकिन वो भेजते हैं गलत राह पर जिसकिसी को चुनते हैं गुमराह होने के लिए, और वो रहनुमाई करते हैं जिसकिसी को चाहते है हिदायतयाफ्ता होने के लिए•* तुम यकीनन पूछे जाओगे सारी चीज़ों के बारे में जो तुमने किया है•

तुम्हारी कसम को तोड़ना
एक संगीन जुर्म

94. तुम्हारे बीच के कसमों कि बदसुलूकी न करो, ताके तुम खिसक न जाओ एक मज़बूत पकड़ रखने के बाद, फिर तुम झेलो मुसीबत• ऐसा है अंजाम **अल्लाह** कि राह से पलटने का *(एक बुरा मिसाल कायम करते हुए)*; तुम झेलते हो एक भयानक आज़ाब•

95. तुम्हारे कसमों को तकरीबन बेच न दो **अल्लाह** के सामने• जो **अल्लाह** रखते हैं कहीं बेहतर है तुम्हारे लिए, अगर तुम सिर्फ जानते•

*16:93 अल्लाह जानते हैं हमारे दरमियान संजीदा ईमानवालों को जो मुसतेहिक हैं निजात पाने के लिए• उसके मुताबिक वो उनको हिदायत देते हैं, जबकी रोकते हुए उनको जो चुनते हैं कुफ्र करनके लिए•

1551 89874

96. जो है तुम्हारे पास खत्म हो जाता है, लेकिन जो **अल्लाह** के पास है रहता है हमेशा के लिए• हम यकीनन इनाम देंगे उनको जो सबित कदमी से जमे रहते हैं; हम बदला देंगे उन्हें उनके नेक कामों के लिए•

खुशी की ज़मानत
अभी और हमेशा के लिए

97. जो कोई नेक कामों को करते हैं, मर्द या औरत, ईमान रखते हुए, हम यकीनन अता करेंगे उनको एक खुशी की ज़िंदगी इस दुनिया में, और हम यकीनन मुआवज़ा देंगे उन्हें उनका पूरा बदला *(इंसाफ के दिन पर)* उनके नेक कामों के लिए•

*एक एहम हुक्म**

98. जब तुम कुरान पढ़ते हो, तुम्हें ठुकराये गये शैतान से **अल्लाह** में पनाह मांगनी चाहिए •

99. उसके पास कोई ताकत नहीं उनपर जो उनके रब में ईमान और भरोसा रखते हैं•

100. उसकी ताकत महदूद है उन तक जो उसे चुनते हैं उनका मालिक जैसा; जो कोई चुनते हैं उसे उनके खुदा जैसा•

101. जब हम बदलते हैं एक नुजूल कि जगह में दूसरे को, और **अल्लाह** पूरी तरह वाकिफ हैं उससे जो वो नाज़िल करते हैं, वो कहते हैं, "तुमने यह बनाया है!" वाकई, उनमें से ज़्यादा नहीं जानते•

102. कहो, "पाक रूह ने लाया है उसे नीचे तुम्हारे रब की तरफ से, सच्चाई से, इतमिनान दिलाने के लिए उन्हें जो ईमान रखते हैं, और एक रहनुमाई और अच्छी खबरें मुहय्या करने को फरमानबरदारों के लिए•"

कुरान नक्ल नहीं की गई है
इंजील से

103. हम हैं पूरी तरह वाकिफ कि वो कहते हैं, "एक इंसान उसे सिखा रहा है!" बुनियाद ज़बान की जिस तरफ वो इशारा करते हैं है गैर अरबी, और यह है एक मुकम्मल अरबी ज़बान•

104. यकीनन, जो कोई **अल्लाह** कि आयतों में ईमान नहीं रखते हैं, **अल्लाह** उनको हिदायत नहीं देते• उन्होंने पा लिया है एक दर्दनाक आज़ाब•

105. सिर्फ वो जो गढ़ते हैं झूठे अकीदों को हैं वो जो ईमान नहीं रखते **अल्लाह** कि आयतों में; वो हैं असल झूठे•

ज़बानी कहना गिना नहीं जाता

106. जो कोई कुफ्र करते हैं **अल्लाह** में, अकीदा हासिल कर लेने के बाद, और हो जाते हैं पूरी तरह मुतमईन कुफ्र से, पा लिया है कहर **अल्लाह** कि तरफ से• सिर्फ उन्हें माफ किया जाना है हैं वो जिनको ज़ोर दिया जाता कुफ्र ज़ाहिर करने के लिए, जबके उनके दिलें हैं अकीदे से भरे•*

मसरूफियत इस ज़िंदगी के साथ
अल्लाह से जिलावतन को ले जाती है

107. यह है इसलिए कि उन्होंने दिया है इस ज़िंदगी को तरजी अगली ज़िंदगी के ऊपर, और **अल्लाह** हिदायत नहीं करते ऐसे कुफ्र करने वाले लोगों को•

108. वो लोग हैं जिनको **अल्लाह** ने उनके दिलों, और उनकी सुनाई, और उनकी दिखाई को बंद कर दिया है• इस वजह से वो गाफिल रहते हैं•

109. बगैर किसी शक के, वो हारे हुए होंगे अगली ज़िंदगी में•

110. जहाँ तक वो जो हिजरत करते हैं एज़ारसानी की वजह से, फिर जारी रहते हैं जद्दोजहेद और साबित कदमी से जमे रहने के लिए, तुम्हारे रब, इन सब कि वजह से, हैं माफकरने वाले, सबसे रहीम•

*16:98 हमारी निजात हासिल होती हैं हमारी तरफ अल्लाह का पैगाम, कुरान, को जानने से, और शैतान उसकी पूरी कोशिश करेगा हमरी मगफरत करने से दूर रखने के लिए• इसलिए यह हुक्म•

*16:106 *अल्लाह कि हिकमत फरमान करती है की अगर कोई तुम्हारे सर पर एक बंदूक रखे और हुक्म दे तुमको कि तुम ऐलान करो कि तुम अल्लाह में ईमान नहीं रखते, तुम उसे अता कर सकते हो उसकी ख्वाहिश• जो दिल पनाह देता है वही गिना जाता है•*

1561 *90699*

111. दिन आयेगा जब हर रूह खिदमत करेगा खुदके वकील जैसा, और हर रूह को पूरी तरह मुआवज़ा दिया जायेगा उसके लिए जो कुछ उसने किया था, बगैर ज़रा सा भी नाइंसाफी के•

हलाल खाने को
हराम करना
लाता है महरूमी

112. **अल्लाह** बयान करते हैं मिसाल एक कौम का जो होती थी महफूज़ और तरक्कीयाफ्ता, नियामतें आती उसकी तरफ साथ हर तरफ से• लेकिन फिर, वो नाकद्रदान बन गये **अल्लाह** की रहमतों से• इस वजह से, **अल्लाह** ने उनको चखने दिया फाके कि मेहनतकशी और खतरा• ऐसा है बदला उसके लिए जो उन्होंने किया•

113. एक रसूल गया था उनकी तरफ उन्ही में से, लेकिन उन्होंने उसे ठुकरा दिया• इस वजह से, अज़ाब ने उनको मारा उनके खताओं के लिए•

114. इसलिए, तुम्हें **अल्लाह** कि नियामतों से खाना चाहिए सारी चीज़ें जो हलाल और अच्छी हैं, और **अल्लाह** की रहमतों के कद्रदान रहो, अगर तुम वाकई सिर्फ उनकी इबादत करते हो•

सिर्फ चार खाने
हराम किये गये

115. वो सिर्फ हराम करते हैं तुम्हारे लिए मुर्दा जानवरें, खून, खिंज़ीरों का गोश्त,* और खाना जो **अल्लाह** के अलावा किसी और को मनसूब किया गया हो• अगर किसी को ज़ोर दिया जाये *(इन्हें खाने के लिए)*, बगैर जानबूझकर या हसद रखते हुए, फिर **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

116. तुम्हें झूठ नहीं बोलना चाहिए तुम्हारे खुद के ज़बानों से कहते हुए: "यह है हलाल , और यह है हराम," झूठ गढ़ने और उसे **अल्लाह** को मनसूब करने के लिए• यकीनन, जो कोई झूठ गढ़ते हैं और उसे **अल्लाह** को मनसूब करते हैं कभी कामयाब न होंगे•

117. वो सरसरी तौर पर लुत्फ उठाते हैं, फिर झेलते हैं दर्द नाक आज़ाब•

118. यहूदियों के लिए, हमने हराम किया जो हमने बयान किया तुमको पहले•* वो हम नहीं थे जिन्होंने उनको गलत किया; वो हैं खुद जिन्होंने उनकी खुद की रूहों को गलत किया•

119. इसके बावजूद, उनके मुताल्लिक जो गुनाह में गिरते हैं नादानी कि वजह से फिर उसके बाद तौबा करते हैं और इसलाह करते हैं, तुम्हारे रब, यह होने के बाद, हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

इब्राहीम

120. इब्राहीम वाकई था एक आला दरजे का अव्वल आने वाला उसकी **अल्लाह** कि फरमानबरदारी में, एक खुदा कि इबादत करने वाला उसने कभी बुतों कि इबादत नहीं की•

121. क्यों कि वो कद्रदान था उसके रब की रहमतों का, उन्होंने उसे चुना और उसे हिदायत किया एक सीधी राह में•

122. हमने अता किया उसे खुशियाँ इस दुनिया में, और अगली ज़िंदगी में वो होगा नेककारों के साथ•

मुहम्मद
*इब्राहीम की पैरवी करने वाला**

123. फिर हमने तुमको *(मुहम्मद)* इल्हाम किया इब्राहीम के मज़हब कि पैरवी करने का,* एक खुदा कि इबादत करने वाला; वो कभी एक बुतपरस्त नहीं था •

*16:115 & 118 *सबसे बरबाद करने वाला ट्रिचिनोसिस जरासीम, ट्रिचिनेला स्पायरालिस, (इसके अलावा खिंज़ीर टेपवर्म टायनिया सोलियम) जिंदा रहता है खिंज़िरों के गोश्त में, चरबी में नहीं• 150,000 से ज़्यादा लोग मुतास्सिर होते हैं सालाना तौर पर युनाईटेड स्टेटस में• देखें 6:145-146, और अपेन्डिक्स 16•*

**16:123 यह इत्तेला करता है हमे कि सारे मज़हबी तरीके, जो आये हमारे पास इब्राहीम कि तरफ से, थे जैसे के तैसे मुहम्मद के वक्त पर• (देखे 22:78और अपेन्डिक्स 9)•*

1571 *91276*

सब्बाथ मनसूख किया गया

124. सब्बाथ फरमान किया गया था सिर्फ उनके लिए जो खत्म हुए उसे हुज्जत करते हुए *(यहूदीयें और ईसाईयें)*• तुम्हारे **रब** हैं वाहिद जो फैसला करेंगे उनका हश्र के दिन पर उनके हुज्जतों के मुताल्लिक•

कैसे फैलाया जाये अल्लाह का पैगाम

125. तुम्हें दावत देना चाहिए तुम्हारे **रब** की राह कि तरफ हिकमत और शफीक रौशन ख्याल के साथ, और बहेस करो उनके साथ सबसे अच्छे अंदाज़ में• तुम्हारे **रब** सबसे अच्छा जानते हैं कौन गुमराह हो गया है उनकी राह से, और वो सबसे अच्छा जानते हैं कौन हैं हिदायतयाफ्ता•

126. और अगर तुम सज़ा दो, तुम्हें चाहिए एक बराबर वाला सज़ा आयेद करने का• लेकिन अगर तुम सब्र को चुनो (*इंतेकाम के बदले*), वो सब्र करने वालों के लिए बेहतर होगा•

127. तुम्हें सब्र चुनना चाहिए — और तुम्हारा सब्र है हासिल के काबिल सिर्फ **अल्लाह** कि मदद से• उनपर रंज न करो, और नाराज़ न हो उनके मनसूबो से•

128. **अल्लाह** हैं उनके साथ जो एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, और वो जो हैं खैरात करने वाले•

****

सुरह 17: इस्राईल की औलाद (बनी इस्राईल)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. सबसे बाअज़मत हैं वाहिद जिन्होंने हाज़िर किया उनके बंदे *(मुहम्मद)* को रात के दरमियान, *(मक्के का)* मुकद्दस मस्जिद से सबसे दूर सजदे कि जगह को,* जिसका माहौल हमने मुबारक बनाया है, उसे हमारी कुछ निशानियों को दिखाने के लिए• वो हैं सुनने वाले, देखने वाले•

2. उसीतरह, हमने मूसा को दी आसमानी किताब, और बनाया उसे एक रहनुमाई इस्राईल की औलाद के लिए कि: “तुम्हें मेरे सिवाए किसी बुत को एक **रब** और **मालिक** जैसा कायम नहीं करना चाहिए•”

3. वो हैं नस्लें उनमें से जिनको हम ले गये नुह के साथ; वो था एक कद्रदान बंदा•

4. हमने खिताब किया इस्राईल की औलाद को आसमानी किताब में: “तुम दुगना, बड़ी बुराई करोगे ज़मीन पर• तुम तय किये गये हो तकब्बुर कि बड़ी ऊँचाई में गिरने के लिए•

5. “जब पहला मौका गुज़र जायेगा, हम भेजेंगे तुम्हारे खिलाफ हमारे बंदों को जो रखते हैं बड़ी ताकत, और वो तुम्हारे घरों पर हमला करेंगे यह है एक पेशीनगोई जो ज़रूरी है गुज़रने के लिए•

6. “उसके बाद, हम देंगे तुम्हें एक मौका उनपर, और मुहय्या करेंगे तुम्हें बहुत दौलत और औलाद से; हम देंगे तुम्हें गलबा•

7. “अगर तुम नेककारी करो, तुम नेककारी करते हो तुम्हारे खुद के अच्छे के लिए, लेकिन अगर तुम बुराई करते हो तुम ऐसा करते हो तुम्हारे खुद के नुकसान के लिए• इसतरह, जब दूसरा मौका गुज़र जाता है, वो तुम्हें शिकस्त देंगे और दाखिल होंगे मस्जिद में, जैसा उन्होंने किया पहली दफा• वो मिटा देंगे सारे फायदों को जो तुमने हासिल किया था•”

8. तुम्हारे **रब** बरसाते हैं तुम्हें उनकी रहमत से• लेकिन अगर तुम गुनाह को पलटो, हम जवाब देंगे आज़ाब के साथ• हमने चुना है जहन्नम एक आखिरी ठिकाने जैसा काफिरों के लिए•

**17:1 “अकसा मस्जिद” के मायने है “सबसे दूर जगेह जहाँ है सजदा,” रौशनी के कई करोड़ों सालों दूर• यह आयत हमें इत्तेला करती है कि मुहम्मद, जो है रूह, ले जाई गई थी सबसे ऊँची जन्नत को कुरान दिये जाने के लिए (2:185, 44:3, 53:1-18, & 97:1)•*

1573 *91531*

कुरान: ज़रिया हमारे निजात का

282. यह कुरान हिदायत करता है सबसे अच्छे रास्ते कि तरफ, और लाता है खुशखबरी ईमानवालों के लिए जो एक नेक ज़िंदगी बिताते हैं, कि वो मुस्तेहिक हुए हैं एक बड़े इनाम के•

283. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं अगली ज़िंदगी में, हमने तैयार किया है उनके लिए एक दर्दनाक आज़ाब•

284. इंसान अकसर कोई चीज़ के लिए दुआ करता है जो उसे नुकसान दे सकती है, सोचते हुए कि वो दुआ मांग रहा है कुछ अच्छे के लिए• इंसान है बेसब्र•

285. हमने बनाया रात और दिन को दो निशानियाँ• हमने रात को सियाह, और दिन को रौशन बनाया, ताके तुम तलाश कर सको उसमें तुम्हारे रब कि नियामतों को• इसके अलावा यह कायम करता है तुम्हारे लिए एक वक्त बताने वाला निज़ाम, और ज़रिया हिसाब करने का• हम इस तरह समझाते हैं सारी चीज़ें तफसील में•

*विडियो टेप**

286. हमने दर्ज कर रखा है हर इंसान कि तकदीर; वो बंधा है उसके गले से• हश्र के दिन पर हम देंगे उसे एक आसानी से समझ सकने वाला दफ्तर•

287. पढ़ो तुम्हारे खुद का दफ्तर• आज, तुम काफी हो तुम्हारे खुद के हिसाब लेने वाले जैसे•

288. जो कोई हिदायतयाफ्ता है, है हिदायतयाफ्ता उसके खुद के अच्छे के लिए, और होता है जो कोई गुमराह करता है ऐसा उसके खुद के नुकसान के लिए• कोई गुनाहगार नहीं उठायेगा किसी और के गुनाहों को• हम कभी सज़ा नहीं देते बगैर पहले एक रसूल भेजते हुए•

289. अगर हमें किसी कौम को फनाह करना हो, हम रहबरों को उसमें बड़ी खराबी करने देते हैं• जब वो मुस्तेहिक होते हैं आज़ाब के, हम फनाह करते हैं उसे पूरी तरह•

290. कई एक नस्ल हमने फनाह किया नुह के बाद• तुम्हारे रब हैं सबसे काबिल उनके बंदों के गुनाहों के साथ बरताव करने में; वो हैं सब कुछ जानने वाले, देखने वाले•

चुनों तुम्हारे अव्वलियतों को ध्यान से
यह ज़िंदगी

291. जो कोई चुनता है इस फनाह होती ज़िंदगी को उसकी अव्वलियत जैसा, हम जल्दी करेंगे उसके लिए जो हमने फैसला किया है उसको देने का, फिर हम हवाले करते हैं उसे जहन्नम को, जहाँ वो मुसीबत उठाता है हमेंशा के लिए, ज़लील किया और हराया गया•

अगली ज़िंदगी

292. जहाँ तक वो जो चुनते हैं अगली ज़िंदगी को उनकी अव्वलियत जैसा, और नेककारी करते हैं, ईमान रखते हुए, उनकी कोशिशों कि कद्र की जायेगी•

293. उनमें से हर एक को हम मुहय्या करते हैं; हम मुहय्या करते हैं उन्हें और इन्हें तुम्हारे रब कि नियामतों से• तुम्हारे रब कि नियामतें हैं कभी न खत्म होने वाली•

294. ध्यान दो हमने किस तरह कुछ लोगों को तरजी दी दूसरों पर *(इस ज़िंदगी में)*• फरकें अगली ज़िंदगी में हैं कहीं बड़े और कहीं ज़्यादा एहम•

बड़े हुक्में

295. तुम्हें किसी दूसरे खुदा को कायम नहीं करना चाहिए सिवाए **अल्लाह** के, ताके तुम्हारा अंजाम ज़लील किया गया और बेइज्ज़त किया गया न हो•

296. तुम्हारे रब ने फरमान किया है कि तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए सिवाए उनके, और तुम्हारे वालिदैन कि इज्ज़त की जानी चाहिए• जबतक एक या उन में से दोनों रहें, तुम्हें कभी नहीं कहना चाहिए, *"उफ्फ"* *(ज़रा सा भी नाराज़गी का इशारा)*, नाहीं तुम्हें उनको चिल्लाना चाहिए; तुम्हें उनसे अच्छे से बरताव करना चाहिए•

**17:13 तुम्हारी जिंदगी पहले से दर्ज की जा चुकी है, ऐसे जैसे एक विड़ियो टेप पर, पैदाईश से मौत तक• यह वही रिकार्ड दस्तेयाब किया जायेगा हमको हश्र पर• देखें 57:22 और अपेन्डिक्स 14•*

297. और नीचे करो उनके लिए खाकसारी और रहम दिली के बाजुओं को, और कहो, "मेरे रब, रहम करिये उनपर, इसलिए कि उन्होंने परवरिश की है मेरी बचपने से•"

298. तुम्हारे रब पूरी तरह वाकिफ हैं तुम्हारे अंदरूनी ख्यालों से• अगर तुम नेककारी बरकरार रखो, वो हैं माफ करने वाले उनको जो तौबा करते हैं•

299. तुम्हें देना चाहिए हक वाला खैरात रिश्तेदारों, ज़रूरतमंद, गरीब, और अंजान मुसाफिर को, लेकिन न दो ज़्यादा, अंधा धुंध•

300. अंधा धुंध हैं शयातीनों के हमज़ात, और शैतान है उसके रब का नाकद्रदान•

301. अगर तुम्हें उनसे पलटना हो तब भी, जब तुम पीछा करते हो तुम्हारे रब की रहमत, तुम्हें उनसे सबसे अच्छे अंदाज़ में पेश आना चाहिए•

कंजूसी पर लानत

302. तुम्हें कंजूसी से तुम्हारे हाथ को तुम्हारे गर्दन से बंधा नहीं रखना चाहिए, नाहीं तुम्हें बेवकूफी से उसे खोलना चाहिए, ताके तुम्हारा अंजाम न हो मलामत किया गया और रंजीदा•

303. इसलिए कि तुम्हारे रब बढ़ाते हैं नियामत जिस किसी के लिए वो चुनते हैं, और कम करते हैं उसे• वो हैं पूरी तरह वाकिफ उनके मखलूकों से, देखने वाले•

हमल गिराना है कत्ल

304. तुम्हें तुम्हारी औलाद को कत्ल नहीं करना चाहिए गुरबत कि डर से• हम मुहय्या करते हैं उनके लिए, इसके अलावा तुम्हारे लिए भी• उन्हें कत्ल करना है एक बड़ा जुर्म•

305. तुम्हें ज़िना नहीं करना चाहिए; यह है एक बड़ा गुनाह, और एक बुरी हरकत•

306. तुम्हें किसी शक्स को कत्ल नहीं करना चाहिए — इसलिए कि **अल्लाह** ने ज़िंदगी को मुकद्दस बनाया है—सिवाए इंसाफ कि राह में• अगर कोई मारा जाता है बेइंसाफी से, फिर हम देते हैं उसके वारिस को इख्तेयार इंसाफ जारी करने का• इस तरह, उसे हदों को पार नहीं करना चाहिए कत्ल का बदला लेने में, उसकी मदद की जायेगी•

307. तुम्हें यतीमों के पैसे को नहीं छूना चाहिए सिवाए उनके खुद के अच्छे के लिए, जब तक वो बलूगत को न पहुँचे• तुम्हें तुम्हारे वादों को पूरा करना चाहिए, इसलिए कि वादा है एक बड़ी ज़िम्मेदारी•

308. तुम्हें पूरा नाप देना चाहिए जब तुम तिजारत करो, और बराबरी से वज़न करो• यह बेहतर है और ज़्यादा नेककारी•

एहम मशवराह

309. तुम्हें कबूल नहीं करनी चाहिए कोई इत्तेला, जब तक तुम जांच न लो उसे खुद के लिए• मैंने दिया है तुम्हें सुनाई, दिखाई, और दिमाग, और तुम ज़िम्मेदार हो उनको इस्तेमाल करने के लिए•

310. तुम्हें गुरूर से ज़मीन पर नहीं चलना चाहिए —तुम ज़मीन के पार छेद नहीं कर सकते, नाहीं तुम हो सकते हो पहाड़ों के बराबर ऊँचा•

311. सारी बुरी हरकत मलामत की गई है तुम्हारे रब कि तरफ से•

कुरान है हिकमत

312. यह है कुछ हिकमत इल्हाम किया गया तुमको तुम्हारे रब कि तरफ से• तुम्हें **अल्लाह** के अलावा दूसरे खुदा को कायम नहीं करना चाहिए, ताके तुम खत्म न हो जहन्नम में, मलामत किये गये और शिकस्त दिये गये•

313. क्या तुम्हारे रब ने दिये हैं तुम्हें बेटे, जबके देते हुए खुद को फरिश्ते बेटियों जैसे?! तुम कैसे कह सकते हो ऐसी एक बेअदबी?

314. हमने बयान किये हैं इस कुरान में *(सारे किस्म के मिसालें)*, ताके वो तवज्जो दे सकें• लेकिन वो सिर्फ बढ़ाता है उनकी नफरत•

315. कहो, "अगर वहाँ होते कोई और खुदाएं उनके सिवाए, जैसा वो दावा करते हैं, उन्होंने तख्त के मालिक को शिकस्त देने की कोशिश की होती•"

316. उनकी तारीफ हो, वो हैं कहीं बुलंद उनके बातों से•

सारी चीज़ें अल्लाह कि बड़ाई करती हैं

317. बड़ाई कर रहे हैं उनकी सात आसमानें, ज़मीन, और हर कोई उसमें• वहाँ कुछ नहीं है जो उनकी बड़ाई नहीं करते, लेकिन उनकी बड़ाई करना तुम नहीं समझते• वो हैं रहीम, माफ करने वाले•

काफिरें कभी नहीं
समझ सकते कुरान

318. जब तुम कुरान पढ़ते हो, हम पोशीदा परदा रखते हैं तुम्हारे और उनके दरमियान जो ईमान नहीं रखते अगली ज़िंदगी में•

कुरान: सिर्फ ज़रिया

319. हम ढाल रखते हैं उनके ज़हनों के आस पास, उन्हें उसे समझने से रोकने के लिए, और बहरापन उनके कानों में• और जब तुम नसीहत करते हो तुम्हारे रब की, सिर्फ कुरान इस्तेमाल करते हुए,* वो भाग जाते हैं नफरत से•

320. हम हैं पूरी तरह वाकिफ उससे जो वो सुनते हैं, जब वो तुम्हें सुनते हैं, और जब वो साज़िश करते हैं खुफिया तौर से—काफिरें कहते हैं, "तुम एक दिवाने आदमी कि पैरवी कर रहे हो•"

321. ध्यान दो वो किस तरह तुम्हें मुखातिब करते हैं, और कैसे यह सबब बनता है उनका रास्ते से भटकने का•

322. उन्होंने कहा, "जब हम हड्डियों और टुकडों में बदल जायें, हम दोबारा जिलाये जायेंगे नये सिरे से?!"

323. कहो, "अगर तुम बदल जाओ चट्टानों या लोहे में तब भी•

324. "अगर तुम बदल जाओ किसी किस्म के खलक में जिसे तुम नामुमकिन समझते हो तब भी•" वो फिर कहेंगे, "कौन हमें दोबारा लायेगा?" कहो, "जिस वाहिद ने पैदा किया तुम्हें पहले•" फिर वो अपने सरों को हिलायेंगे और कहेंगे, "वो कब होगा?" कहो, "वो हो सकता है तुम्हारे सोच से करीब•"

325. जिस दिन वो तुमको हाज़िर करेंगे, तुम जवाब दोगे उनकी तारीफ करते हुए, और तुम तब एहसास करोगे की तुम रहे हो इस ज़िंदगी में सिर्फ एक छोटे अरसे के लिए•

एक दूसरे के साथ खुश इख्लाकी से पेश आओ

326. कहो मेरे बंदों से एक दूसरे से सबसे अच्छे अंदाज़ में पेश आने का, इसलिए कि शैतान हमेशा कोशिश करेगा उनके दरमियान दरार डालने का• यकीनन, शैतान है आदमी का सबसे संगीन दुश्मन•

327. तुम्हारे रब जानते हैं तुम्हें सबसे अच्छा• उनके इल्म के मुताबिक, वो हो सकता है बरसायें तुम्हें रहमत के साथ, या हो सकता है वो तुम्हें बदला दें• हमने नहीं भेजा तुम्हें उनका वकील बनने के लिए•

328. तुम्हारे रब हैं सबसे अच्छे जानने वाले हरकिसी को आसमानों और ज़मीन में• इस इल्म के मुताबिक में, हमने कुछ नबियों को तरजी दी दूसरों पर• मिसाल के तौर पर, हमने दिया दाऊद को ज़बूर•

329. कहो, "इल्तेजा करो जो कुछ बुतों को तुमने कायम किया सिवाए उनके•" उनके पास कोई ताकत नहीं तुम्हारे तकलीफों को हल्का करने कि, नाहीं वो उनको रोक सकते हैं•

नेककार बुतें
सिर्फ अल्लाह कि इबादत करते हैं

330. यहाँ तक बुतें जिनको वो इल्तेजा करते हैं तलाश कर रहे हैं रास्ते और ज़रिये उनके रब कि तरफ का• वो दुआ करते हैं उनकी रहमत के लिए, और डरते हैं उनके आज़ाब से• यकीनन, तुम्हारे रब का आज़ाब है खौफनाक•

331. वहाँ नहीं है कोई कौम जिसे हम फनाह नहीं करेंगे हश्र के दिन से पहले, या डालेंगे सख्त आज़ाब उनके ऊपर• यह पहले से लिखा जा चुका है किताब में•

*17:46 अरबी लफ्ज़ "सिर्फ" हवाला देता है अल्लाह कि तरफ 7:70, 39:45, 40:12 और 84, और 60:4 में• अगर तुम जोड़ो इन नम्बरों को, तुम पाते हो 361, 19x19• लेकिन अगर तुम शामिल करो 17:46, जो मुखातिब करता है कुरान को, हासिल हुआ एक ज़रप नहीं है 19 का• "सिर्फ," इसलिए मुखातिब करता है 17:46 में कुरान को (अपेन्डिक्स 18)•

पुराने किस्म के मौजज़े
मनसूख कर दिये गये

332. हमें जिसने रोका मौजज़ों को भेजने से है यह कि पिछली नस्लों ने ठुकराया उनको• मिसाल के तौर पर, हमने तमूद को ऊँठ दिखाए, एक गहरा *(मौजेज़ा)*, लेकिन उन्होंने खिलाफ वरज़ी की उसके खिलाफ• हम भेजते हैं मौजज़े सिर्फ एहतराम डालने के लिए•

333. हमने इत्तेला किया तुम्हें कि तुम्हारे रब पूरी तरह काबू करते हैं लोगों को, और हमने जो नज़ारा दिखाया तुम्हें हमने बनाया एक आज़माईश लोगों के लिए, और वो पेड़ जो कोसा गया है कुरान में•* हमने दिखाए उनको पुख्ता सबूतें उनमें एहतराम डालने के लिए, लेकिन इसने सिर्फ बढ़ाया उनकी सरकशी•

शैतान धोखा देता है लोगों को

334. जब हमने फरिश्तों से कहा, "आदम के सामने गिरो सजदे में," वो गिर गये सजदे में, सिवाए शैतान के• उसने कहा, "क्या मैं सजदा करूँ उसको जिसे आपने पैदा किया मिट्टी से?"

335. उसने कहा, "चुँकी आपने उसे मेरे ऊपर इज्ज़त दिया है, अगर आप मुझे मोहलत दें हश्र के दिन तक, मैं काबू करूंगा उसके सारी औलादों को, सिवाए कुछ के•"

336. उन्होंने कहा, "तो जा; तू और जो तेरी पैरवी करें खत्म होंगे जहन्नम में तेरे बदले कि तौर पर; एक बराबरी वाला बदला•

337. "तू फुसला सकता है उनको तेरी आवाज़ से, और जमा कर तेरी सारी ताकतों को और तेरे सारे मर्दो को उनके खिलाफ, और साथ दे उनके पैसे और औलाद में, और उनको वादा कर• जो कुछ शैतान वादा करता है कुछ नहीं सिवाए एक फरेब के•

338. "जहाँ तक मेरे बंदे, तेरे पास कोई ताकत नहीं उनके ऊपर•" तुम्हारे रब काफी हैं एक वकील जैसे•

339. तुम्हारे रब हैं वाहिद जो सबब बनते हैं समंदर पर जहाज़ों के तैरने का,* ताके तुम तलाश करो उनकी नियामतों को• वो हैं सबसे रहीम तुम्हारी तरफ•

मौका परस्त
दोस्ती

340. अगर तुम्हें तकलीफ होती है समंदर के बीच में, तुम भूल जाते हो तुम्हारे बुतों को और संजीदगी से सिर्फ उनसे इल्तेजा करते हो• लेकिन जैसे ही वो तुम्हें बचाते हैं किनारे को, तुम पलट जाते हो• वाकई, इंसान है नाकद्रदान•

341. क्या तुमने ज़मानत दी है कि वो ज़मीन को, किनारे पर, तुम्हारे निगलने का सबब नहीं बनने देंगे? या, ये की वो नहीं भेजेंगे तुमपर एक आंधी, तब तुम नहीं पाओगे कोई बचाने वाला?

342. क्या तुमने ज़मानत दी है की वो तुम्हें नहीं लौटायेंगे समंदर को दूसरी बार, फिर भेजेंगे तुमपर एक तूफान जो डुबो देगा तुम्हें तुम्हारे कुफ्र कि वजह से? जब यह होगा, हम नहीं देंगे तुम्हे दूसरा मौका•

343. हमने इज्ज़त दी है आदम कि औलाद को, और मुहय्या किया सवारियों से उनको ज़मीन पर और समंदर में• हमने मुहय्या किया उनके लिए अच्छी नियामतें, और हमने दिए उनको बड़े फायदे बनिज़बत हमारे कई मखलूकों के•

344. दिन आयेगा जब हम हाज़िर करेंगे सारे लोगों को, इकट्ठा उनके दफ्तर के साथ• जहाँ तक वो जिनको दिया गया है एक दफ्तर नेककारी का, वो पढ़ेंगे उनके दफ्तर को और नहीं झेलेंगे ज़रा सा भी नाइंसाफी•

**17:60 मुहम्मद का सफर सबसे ऊँचे आसमान कि तरफ कुरान को पाने के लिए, जैसा बयान किया गया है 17:1 और 53:1-18 में, है एक आज़माईश क्योंकि लोगों को ज़रूरी था मुहम्मद को माने अकीदे पर•*

**17:66 अब हम सीखते हैं फिज़िक्स और फिज़िकल केमिस्ट्री से कि पानी रखता है खास खूबियाँ जो बनाता है उसे बिल्कुल मुनासिब हमारे मुख्तलिफ ज़रूरतों की खिदमत करने के लिए•*

345. जहाँ तक वो जो हैं अंधे इस ज़िंदगी में, वो होंगे अंधे अगली ज़िंदगी में, उससे भी कहीं बुरे•

अल्लाह मज़बूत करते हैं रसूल को

346. उन्होंने तुमको तकरीबन फेर दिया आयतों से जो हमने दिया है तुम्हें• वो चाहते थे तुम्हें कुछ और गढ़ने का, ताके तुम्हें एक दोस्त मानें•

347. अगर ये कि हमने तुमको मज़बूत नहीं किया होता, तुम तकरीबन झुके उनकी तरफ बस ज़रा सा•

348. अगर तुमने ऐसा किया होता, हमने दुगना किया होता आज़ाब तुम्हारे लिए इस ज़िंदगी में, और मरने के बाद, और तुम न पाते किसी को तुम्हारी मदद करने के लिए हमारे खिलाफ•

349. उन्होंने तकरीबन तुमको ज़मीन से जिलावतन किया तुमसे छुटकारा पाने के लिए, ताके वो पलट सकें जैसे ही तुम चले जाओ•

350. यह मुसलसल सूरत रही है सारे रसूलों के साथ जिनको हमने भेजा तुमसे पहले, और तुम पाओगे की हमारा निज़ाम कभी नहीं बदलता•

ज़ोहर कि नमाज़

351. तुम्हें रावता नमाज़ *(सलात)* अदा करनी चाहिए जब सूरज ढलता है उसकी सबसे ऊंची मकाम से दोपहर को, जैसे ही वो बड़ता है गुरूब ए आफताब कि तरफ• तुम्हें इस के अलावा फजर को कुरान *(कि तिलावत करनी)* चाहिए• गवाह होते हैं फजर के वक्त कुरान कि *(तिलावत)* का•

ध्यान करना

352. रात के दरमियान, तुमको ध्यान करना चाहिए ज़्यादा फायदे के लिए, ताके तुम्हारे रब उठायें तुमको एक इज़्जत वाले दरजे को•

353. और कहो, "मेरे रब, दाखिल कीजिए मुझको एक इज़्जत वाला दाखला, और मुझको विदा होने दीजिये एक इज़्जत वाली विदाई, और अता करिये मुझको आप की तरफ से एक ताकतवर मदद•"

354. ऐलान करो, "सच हावी हुआ है, और झूठ गायब हो गया है; झूठ यकीनी तौर पर गायब हो जायेगा•"

मरहम और रहमत

355. हमने भेजा नीचे कुरान में मरहम और रहमत ईमानवालों के लिए• साथ साथ, वो सिर्फ बड़ाता है बदकारी खतावारों की•

356. जब हम इंसान को बक्शते हैं, वो हो जाता है मसरूफ और लापरवाह• लेकिन जब मुसीबत मारती है उसे, वो नाउम्मीद बन जाता है•

357. कहो, "हर किसी के आमाल हैं उसके अकीदे के मुताबिक में, और तुम्हारे रब सबसे अच्छा जानते हैं कौन से हैं हिदायतयाफता सही राह में•

खुदाई नुज़ूल: सारे इल्म की बुनियाद

358. वो तुमसे पूछते हैं नुज़ूल के बारे में• कहो, "नुज़ूल आते हैं मेरे रब कि तरफ से• तुम्हें दिया गया इल्म है छोटा•"

359. अगर हम चाहें, हम वापस ले सकते हैं जो हमने तुमको नाज़िल किया है, फिर तुम नहीं पा सकते हिफाज़त करने वाला हमारे खिलाफ•

360. लेकिन यह है रहमत तुम्हारे रब कि तरफ से• उनकी रहमतें तुमपर रही है बड़ी•

रियाज़ी तरतीब कुरान की

361. कहो, "अगर सारे इंसाने और सारे जिनें जमा हो जायें एक साथ ताके पैदा करें एक कुरान इस जैसा, वो कभी पैदा नहीं कर सकते इसकी तरह कोई चीज़, चाहे कितनी ही मदद वो दें एक दूसरे को•"

362. हमने बयान किये हैं लोगों के लिए इस कुरान में सारे किस्मों के मिसालें, लेकिन ज़्यादातर लोग इसरार करते हैं कुफ़्र करने पर•

अल्लाह के रसूलें ललकारे गये

363. उन्होंने कहा, "हम तुम पर ईमान नहीं लायेंगे जब तक तुम वजह न बनो ज़मीन से एक झरने के फूट निकलने का•

364. "या जब तक तुम खजूर कि नख्लों और अंगूरों के एक बाग के मालिक न हो जाओ, बहती हुई नहरें दौड़ती हुई उसके बीच•

365. "या जब तक तुम वजह न बनो आसमान से अंबार, के हम पर गिरने का, जैसा तुम दावा करते हो• या जब तक तुम न लाओ **अल्लाह** और फरिश्तों को हमारी नज़रों के सामने•

366. "या जब तक तुम मालिक न हो जाओ एक शानदार महल के, या जब तक तुम चढ़ न जाओ आसमान में• अगर तुम चढ़ जाओ तब भी, हम ईमान नहीं लायेंगे जब तक तुम न लाओ एक किताब जो हम पढ़ सकें•"* कहो, "तारीफ हो मेरे रब की• क्या मैं एक इंसानी रसूल से ज़्यादा कुछ हूँ?"

रिसालत: एक ज़रूरी आज़माईश

367. जिसने रोका लोगों को ईमान लाने से जब हिदायत आई उनकी तरफ, है उनका कहना, "क्या **अल्लाह** ने भेजा एक इंसान को रसूल जैसा?"

368. कहो, "अगर ज़मीन पर फरिश्ते बसे होते, हमने भेजा होता आसमान से नीचे उनकी तरफ एक फरिश्ता रसूल•"

अल्लाह हैं मेरे गवाह

369. कहो, "**अल्लाह** काफी हैं एक गवाह जैसे तुम्हारे और मेरे बीच• वो उनकी इबादत करने वालों से हैं पूरी तरह वाकिफ, देखने वाले•"

370. जिसकिसी को **अल्लाह** हिदायत देते हैं है असल में हिदायतयाफ्ता• और जिसकिसी वो गुमराह करते हैं, तुम कभी नहीं पा सकते सिवाए उनके कोई रबों और मालिकों जैसा उनके लिए• हम ज़बरदस्ती हाज़िर करेंगे उनको हश्र के दिन पर; अंधा, गुंगा, और बहरा• उनका मुकद्दर है जहन्नम; जब भी वो ठंडा होगा, हम बड़ायेंगे उनके आग को•

उनके सबसे अंदरूनी ख्याले

371. ऐसा है उनका दुरूस्त आज़ाब, चुँकी उन्होंने हमारी आयतों को ठुकराया• उन्होंने कहा, "इसके बाद की हम बदल जायें हड्डीयों और टुकड़ों में, क्या हम दोबारा जिलाये जाते हैं एक नई खलक में?"

372. क्या वो नहीं देख सके कि **अल्लाह** जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, हैं काबिल पैदा करने के वैसी ही खलकें? उन्होंने पहले से मुकर्रर कर रखा है उनके लिए एक अटल ज़िंदगी कि मुद्दत? इसके बावजूद, काफिरें इसरार करते हैं कुफ़्र करने पर•

373. ऐलान करो, "अगर तुम काबू में रखते मेरे रब के रहमत के खज़ानों को, तुमने उनको रोक रखा होता, डरते हुए कि तुम उसे खत्म न कर दो• इंसान है बखील•

मुसा और फिरऔन

374. हमने मदद किया मूसा की नौ गहरे मौजज़ों से — पूछो इस्राईल कि औलाद से• जब वो गया उनकी तरफ, फिरऔन ने उससे कहा, "मैं समझता हूँ तू, मूसा, जादू किया गया है•"

375. उसने कहा, "तुम अच्छे से जानते हो की कोई भी ज़ाहिर नहीं कर सकता इन्हें, साफ तौर से, आसमानों और ज़मीन के रब के सिवाए• मैं समझता हूँ तू, फिरऔन, तबाह किया गया है•"

376. जब उसने उनको तलाश किया, जैस ही पीछा किया उसने उनका ज़मीन के बाहर, हमने उसे डुबो दिया, एक साथ उनके जो उसकी तरफ हुए, उन सारों को•

**17:93 अल्लाह के वादे का रसूल, रशाद खलीफा, इस तरह ललकारा गया था, दावा शामिल करते हुए लाने का एक नई किताब, या आसमान से नीचे अंबार• आयत 3:81 वाज़े करती है अल्लाह के वादे का रसूल कि ज़िम्मेदारियाँ• ज़बरदस्त सबूत तफसील किये गये हैं अपेन्डिक्स 2 और 26 में•*

377. और हमने इस्राईल कि औलाद को कहा उसके बाद, "जाओ रहो ज़मीन में• जब आखरी पेशीनगोई गुज़र जायेगी, हम हाज़िर करेंगे तुम सारों को एक गिरोह में•"

कुरान आहिस्ते से आज़ाद किया गया
याद करने कि सहुलियत के लिए

378. सच्चाई से, हमने उसे नीचे भेजा, और सच के साथ वो नीचे आया• हमने नहीं भेजा तुमको सिवाए एक खुश खबरी लेजाने वाले जैसा, साथ साथ एक ताकीद करने वाले जैसा•

379. एक कुरान जो आज़ाद की गई है आहिस्ता से, ताके तुम उसे पढ़ सको लोगों के लिए एक लंबे मुद्दत तक, हाँला कि हमने भेजा उसे नीचे पूरा एक साथ•

380. ऐलान करो, "उसमें ईमान रखो, या उसमें ईमान न रखो•" जो कोई इल्म रखते हैं पिछली आसमानी किताबों से, जब वो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है, वो ठोड़ियों के साथ नीचे गिर जाते हैं, सजदा करते हुए•

381. वो कहते हैं, "हमारे रब की तारीफ हो• यह पूरा करता है हमारे रब की पेशीनगोई•"

382. वो ठोड़ियों के साथ नीचे गिर जाते हैं, सजदा करते और रोते हुए• इसलिए के वो बढ़ाता है उनका एहतराम•

383. कहो, "पुकारो उनको **अल्लाह**, या पुकारो उन्हें सबसे मेहरबान; जो कोई नाम तुम इस्तेमाल करो, उनके लिए हैं सबसे अच्छे नामें•"

आवाज़
राबता नामाज़ों (सलात) की

तुमको नहीं कहना चाहिए राबता नमाज़ें *(सलात)* बहुत आवाज़ से, नाहीं चुपके से; इस्तेमाल करो एक बीच वाली आवाज़•

384. और ऐलान करो: "**अल्लाह** की तारीफ हो, जिन्होंने कभी नहीं जना है एक बेटा, नाहीं वो रखते हैं एक शरीक उनकी बादशाहत में, नाहीं उनको ज़रूरत है किसी साथी की कमज़ोरी की वजह से," और उनकी लगातार बड़ाई करो •

****

सुरह 18: गुफा (अल-कॉफ)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. **अल्लाह** कि तारीफ हो, जिन्होंने नाज़िल किया यह आसमानी किताब उनके बंदे को, और बनाया उसे बिला नुक्स•

2. एक मुकम्मल *(आसमानी किताब)* उनकी तरफ से सख्त आज़ाब की ताकीद करने के लिए, और ईमानवालों कि तरफ खुशखबरी पहुँचाने के लिए जो एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, कि उन्होंने कमाया है एक फराग दिल वाला बदला•"

3. जिसमें वो रहते हैं हमेशा के लिए•

4. और ताकीद करने के लिए उन्हें जिन्होंने कहा, "**अल्लाह** ने जना है एक बेटा!"

5. वो नहीं रखते हैं इल्म इसके बारे में, नाहीं उनके वालिदैन• कैसी एक बेअदबी आती है बाहर उनके मुहों से! जो वो कहते हैं एक बड़ा झूठ है•

6. उनके इस बायन के जवाब और उसमें कुफ्र करनें कि वजह से, तुम हो सकता है अपने आप को इल्ज़ाम दो; हो सकता है तुम उदास हो जाओ•

*दुनिया का खत्म होना**

7. हमने सारी चीज़ को सजाया है ज़मीन पर, ताके उनको आज़मायें, और इस तरह परखें उनमें से वो जो नेककारी वाले काम करते हैं•

**18:7 फुटनोट के लिए देखें 18:8-9•*

8. बिला शक, हम मिटा देंगे उस पर सारी चीज़ें, छोड़ते हुए उसे पूरी तरह बंजर•*

गुफा के
रहने वाले

9. वरना क्यों तुम सोचते हो हम बता रहें हैं तुम्हें गुफा के लोगों, और उनसे जुड़ी हुई अददों के बारे में? वो हैं हमारे अजूबे निशानियों में से•

10. जब नौजवानों ने पनाह लिया गुफा में, उन्होंने कहा, "हमारे रब, बरसाईये हमें आपकी रहमत से, और बक्शिये हमारे मामलों को आपकी हिदायत के साथ•"

11. हमने फिर बंद कर दिया उनके कानों को गुफा में एक पहले से तय किये गये सालों के अदद के लिए•

12. फिर हमने उनको दोबारा ज़िंदा किया देखने के लिए दो फिरकों में से कौन गिन सकता था उनके उसमें रहने कि मुद्दत•

13. हम बयान करते हैं तुम्हें उनकी तारीख, सच्चाई से• वो थे नौजवानें जो उनके रब में ईमान रखते थे, और हमने बड़ाया उनकी हिदायत•

14. हमने मज़बूत किया उनके दिलों को जब वो खड़े हुए और ऐलान किया: "हमारे सिर्फ रब हैं रब आसमानों और ज़मीन के• हम कभी भी इबादत नहीं करेंगे किसी दूसरे खुदा की सिवाए उनके• वरना, हम दूर बहेक जायेंगे•"

15. "यहाँ हैं हमारे लोग कायम करते हुए खुदाओं को उनके सिवाए• अगर सिर्फ वो मुहय्या कर सकते कोई सबूत उनके राय कि मदद करने के लिए! कौन है ज़्यादा बुरा उससे जो गढ़ता है झूठों को और उन्हें मनसूब करता है **अल्लाह** के लिए?

सात सोनेवाले
इफेसेस के*

16. "चुँकी तुम उनको, और उनके **अल्लाह** के अलावा किसी दूसरे कि इबादत करने से बचना चाहते हो,* चलो हम पनाह लें गुफा में• तुम्हारे रब बरसायें तुम्हें उनकी रहमत से और रहनुमाई करें तुम्हारी सही फैसले कि तरफ•"

एक हिदायत करने वाला उस्ताद
ज़रूरी है

17. तुम देख सकते सूरज को जब वो निकला आते हुए गुफा के दाहिने तरफ से, और जब वो डूबा, वो चमका उनपर बायें से, जैसे वो सोये उसके खोखले में• यह है **अल्लाह** कि एक निशानियों में से,* जिसकिसी को **अल्लाह** हिदायत करते हैं है सही में हिदायतयाफ्ता, और जिसकिसी को वो गुमराह करते हैं, तुम नहीं पा सकते उसके लिए एक हिदायत करने वाला उस्ताद•

18. तुम सोचते कि वो जाग रहे हैं, जबकी वो हकीकत में सो रहे थे• हमने पलटा उनको दाहिनी तरफ और बायीं तरफ, जबकी उनका कुत्ता फैलाये था उसके बाजुओं को उनके बीच में• अगर तुमने उनको देखा होता, तुम उनसे फरार हो जाते, दहशत के मारे•

**18:8-9 इससे पता चलता है की, तारीख इन ईसाई ईमानवालों की, सात सोनेवाले इफेसेस के, सीधे जुड़ा है दुनिया के खत्म होने के साथ जैसा 18:9 और 21 में बयान किया गया है• दुनिया के खत्म होने को बेनकाब करने में किरदार इन ईमानवालों का तफसील किया गया है अपेन्डिक्स 25 में•*

**18:16-20 इफेसेस पुराने निसीन के तकरीबन 200 मील जुनूब में है, और 30 मील जुनूब मौजुदा इज़मीर तुर्की में• गुफा के रहने वाले थे नौजवान ईसाईयें जो ईसा कि तालीमों पर चलना, और सिर्फ अल्लाह की इबादत करना चाहते थे• वो फरार हो रहे थे नये ईसाई यों के इज़ारसानी से जिन्होने बिगड़े ईसाई मज़हब का ऐलान किया ईसा के तीन सदियों बाद, निसीन इजतिमाओं के बाद, जब तीन*

ख़ुदाओं वाला अकीदा ऐलान किया गया था• 1928 में, फ्रांज़ मिल्टनर, एक ऑस्ट्रियन आरकियोलॉजिस्ट ने पता लगाया कब्र इफ़ेसेस के सात सोने वालों की• उनकी तारीख़ अच्छे से दर्ज की गई है कई इनसाइक्लोपीडियाओं में•

**18:17 यह निशानी, या इशारा, बताता है हमें कि गुफ़ा मगरिब को रूख़ कर रही थी•*

19. जब हमने उनको दोबारा ज़िंदा किया, उन्होंने एक दूसरे से पूछा, "कितनी देर रहे हो तुम यहाँ?" "हम यहाँ रहें हैं एक दिन या दिन का एक हिस्सा," उन्होंने जवाब दिया• "तुम्हारे **रब** सबसे अच्छा जानते हैं हम कितनी देर रहे हैं यहाँ, तो चलो हम भेजें हम में से एक को इस पैसे के साथ शहर कि तरफ़• उसे लेकर आने दो सबसे साफ खाना, और खरीदे कुछ हमारे लिए• उसे होशियार रहने, और ध्यान न बटोरने दो•

20. "अगर वो तुमको ढूंढ़ लें, वो तुमको पत्थर से मार देंगे, या ज़ोर देंगे तुम्हें उनके मज़हब को पलटने को, तब तुम कभी कामयाब नहीं हो सकते•

जोड़
*दुनिया के खत्म होने के साथ**

21. हमने उनको पता लगने दिया, हर कोई को जानने के लिए कि **अल्लाह** का वादा है सच्चा, और सारे शक को दूर करने के लिए दुनिया के खत्म होने के मुताल्लिक•* फिर लोगों ने उनके मुताल्लिक आपस में बहेस किया• कुछ ने कहा, "चलें हम एक इमारत बनायें उनके आस पास•" उनके **रब** हैं सबसे अच्छा जानने वाले उनके बारे में• वो जो तारी हुए कहा, "हम बनायेंगे एक इबादत की जगह उनके आस पास•"

22. कुछ कहते, "वो थे तीन; चौथा उनका कुत्ता," जबके दूसरे कहते, "पाँच; छठा उनका कुत्ता," जैसे उन्होंने अंदाज़ा किया• दूसरों ने कहा, "सात," और आठवां था उनका कुत्ता• कहो, "मेरे **रब** हैं सबसे अच्छा उनके अदद के जानने वाले•" सिर्फ कुछ ही जानते थे सही अदद• इसलिए, उनसे बहेस न करो; बस हो लो उनके साथ• तुम्हें इसके बारे में किसी से मशवरा करने की ज़रूरत नहीं•

अल्लाह को याद करना
हर मौका जो हम पाते हैं

23. तुम्हें नहीं कहना चाहिए कि तुम करोगे कोई चीज़ मुस्तकबिल में,

24. बगैर कहते हुए, "**अल्लाह** ने चाहा•"* अगर तुम भूल जाओ ऐसा करने से, तुमको फौरन तुम्हारे रब को याद करना और कहना चाहिए, "मेरे **रब** मुझे हिदायत दें बेहतर करने का अगली बार•"

*[300 + 9]**

25. वो रहे उनके गुफ़ा में तीन सौ सालें, बड़ाए गए नौ से•*

26. कहो, "**अल्लाह** हैं सबसे अच्छे जानने वाले वो कितनी देर रहे वहाँ•" **वो** आसमानों और ज़मीन के सारे राज़ों को जानते हैं• **उनकी** रहमत से तुम देख सकते हो; **उनकी** रहमत से तुम सुन सकते हो• कोई **रब** और **मालिक** नहीं सिवाए **उनके**, और **वो** कभी इजाज़त नहीं देते कोई शरीकों को हिस्सेदार होने का **उनकी** बादशाहत में•

27. तुम्हें तुम्हारे **रब** कि आसमानी किताब से पढ़कर सुनाना चाहिए जो नाज़िल हुआ है तुमको• कोई चीज़ भी तर्क नहीं करना चाहिए **उनके** लफ्ज़ों को, और तुम्हें कोई दूसरा ज़रिया नहीं ढूंढ़ना चाहिए सिवाए इसके•

कुरान सीखने वाली जमातें

28. तुम्हें अपने आप को ज़ोर देना चाहिए होने के लिए उनके साथ जो उनके **रब** कि दिन और रात इबादत करते हैं, सिर्फ **उनको** तलाश करते हुए• न फेरो तुम्हारी आँखें उनसे दूर, ढूंढ़ते हुए इस दुनिया की सजावटों को• नाहीं तुमको पैरवी करनी चाहिए उसकी जिसका दिल हमने गाफिल किया हमारे पैगाम से; वो जो पीछा करता है उसके खुदके ख्वाहिशों की, और जिसकी एहलियतें हैं उल्झी हुई•

**18:21 जैसा अपेन्डिक्स 25 में तफसील किया गया है, इस कहानी ने मदद किया दुनिया के खत्म होने का पता लगाने का•*

**18:24 यह ज़रूरी हुक्म देता है हमे अल्लाह को रोज़ाना याद करने का बेहतरीन मौका•*

**18:25 सूरज के 300 सालों और चांद के 300 सालों में हैं नौ सालों का फरक• इस तरह, पता लगना दुनिया के खत्म होने का पहले से मुकर्रर किया गया था कादिरे मुतलक कि तरफ से 1980 ए डी (1400 हिजरी) में होने का, 300 सालें (309 चांद के सालें) दुनिया के खत्म होने से पहले (देखें 72:27 और अपेन्डिक्स 25)•*

मुकम्मल आज़ादी मज़हब की

29. ऐलान करो: "यह सच है तुम्हारे रब कि तरफ से," फिर जो कोई चाहता है उसे ईमान लाने दो, और जो कोई चाहता है उसे कुफ्र करने दो• हमने खतावारों के लिए तैयार किया है एक आग जो पूरी तरह उनको घेर लेगी• जब वो चिल्लायेंगे मदद के लिए, उनको दिया जायेगा एक पानी कि तरह तेज़ तेज़ाब जो चेहरों को छाला दे देगा• क्या एक अफसोसनाक पीने कि चीज़! क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर!

30. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, हम कभी नाकामयाब नहीं होते बदला देने के लिए उनको जो नेककारी वाले आमाल करते हैं•

31. वो मुस्तेहिक हुए हैं अदन के बागों के जिसमें नहरें बहती हैं• वो सजाये जायेंगे वहाँ सोने के कड़ों से, और पहनेंगे कपड़े हरे रेशम और मखमल के, और आराम करेंगे आरामदेह बिछौनों पर• क्या एक ज़बरदस्त इनाम: क्या एक जबरदस्त ठिकाना!

*मिलकियत एक बुत जैसी**

32. बयान करो उनके लिए मिसाल दो आदमियों कि: हमने दिया उनमें से एक को दो बागें अंगूरों के, घिरे हुए खजूर के नख्लों से, और दूसरे अनाजें रखे गये उनके बीच•

33. दोनो बागों ने पैदा किया उनके अनाजे वक्त पर, और कुशादगी से, इसलिए कि हमने एक नहेर बहने दिया उनके बीच से•

34. एक दफा, फसल होने के बाद, उसने शेखी मारते हुए उसके दोस्त से कहा: "मैं कहीं ज़्यादा कामयाब हूँ तुझसे, और मैं ज़्यादा काबू रखता हूँ लोगों से इज़्जत•"

35. जब वो उसके बाग में दाखिल हुआ, उसने उसकी रूह पर गलत किया कहते हुए, "मैं नहीं समझता कि ये कभी खत्म होगा•

36. "बलिके, मैं समझता हूँ वो यही है; मैं नहीं समझता कि वक्त *(अगली ज़िंदगी)* कभी गुज़र जायेगा• अगर मैं मेरे रब को लौटाया जाता हूँ तब भी, मैं होऊंगा *(काफी चालाक)* रखने के लिए उससे भी बेहतर वाला वहाँ पर•"

37. उसके दोस्त ने उससे कहा, जब उसने उससे बहेस किया, "क्या तुमने कुफ्र किया उस वाहिद में जिन्होंने पैदा किया तुम्हें धूल से, फिर एक छोटी सी बूंद से, फिर मुकम्मल किया तुमको एक आदमी में?

38. "जहाँ तक मेरी बात है, **अल्लाह** हैं मेरे रब, और मैं कभी कायम नहीं करूंगा कोई दूसरा खुदा सिवाए मेरे रब के•

एहम
हुक्म

39. "जब तुम दाखिल हुए तुम्हारे बाग में, तुम्हें कहना चाहिए था, 'यह है जो **अल्लाह** ने मुझे दिया है *(माशा अल्लाह)*• कोई ताकत नहीं रखता सिवाए **अल्लाह** के *(ला कुव्वता इल्लाबिल्लाह)*' तुम देख सकते हो कि मैं रखता हूँ तुमसे कम पैसा और कम औलाद•

40. "मेरे रब अता करें मुझको तुम्हारे बाग से बेहतर• वो भेजें एक सख्त आंधी आसमान से जो मिटा दे तुम्हारे बाग को, छोड़ते हुए उसे पूरी तरह बंजर•

41. "या, उसका पानी और गहरा धंस जाये, तुम्हारे पहुँच से बाहर•"

42. वाकई, उसके अनाजें मिटा दिये गये थे, और वो खत्म हुआ गमगीन, मातम मनाते हुए जो उसने खर्च किया उसपर फुज़ूल में, जैसे उसकी मिलकियत पड़ी थी बंजर• उसने आखिर कार कहा, "काश मैंने कभी कायम नहीं किया होता मेरी मिलकियत को एक खुदा जैसा सिवाए मेरे रब के•"

**18:32-42 कुरान बयान करता है कई मिसालें मुखतलिफ खुदाओं कि जिसकी लोग इबादत करते हैं अल्लाह के सिवाए; वो शामिल करते हैं औलाद (7:190), मज़हबी रहबरें और आलिमें (9:31)¸ मिलकियत (18:42), मुर्दा बुर्जुगें और नबियें (16:20-21, 35:14, और 46:5-6), और अना (25:43, 45:23)•*

43. कोई ताकत उसकी मदद नहीं कर पाती ज़मीन पर **अल्लाह** के खिलाफ, नाहीं मुमकिन था उसके लिए कोई मदद पाने का•

44. वो इसलिए कि सिर्फ **अल्लाह** हैं सच्चे रब और मालिक, वो मुहय्या करते हैं सबसे अच्छा अज्र, और उनके पास है सबसे अच्छा मुकद्दर•

45. बयान करो उनके लिए इस ज़िदगी कि मिसाल जैसे पानी जो हम भेजते हैं नीचे आसमान से ज़मीन के पौधों को पैदा करने के लिए, फिर वो बदल जाता है सूखी घांस में जो उड़ा दी जाती है हवा से• **अल्लाह** हैं काबिल सारी चीज़ों को करने के•

दोबारा तरतीब करते हुए
हमारी अव्वलियतों को

46. पैसा और औलाद खुशियाँ हैं इस ज़िंदगी की, लेकिन नेककारी वाले आमाल मुहय्या करते हैं एक दायम अज्र तुम्हारे रब कि तरफ से, और एक कहीं बेहतर उम्मीद•

47. दिन आयेगा जब हम मिटा देंगे पहाड़ों को, और तुम देखोगे ज़मीन बंजर• हम हाज़िर करेंगे उन सारों को, नहीं छोड़ते हुए उनमें से एक को भी•

48. वो पेश किये जायेंगे तुम्हारे रब के सामने एक कतार में• तुम आये हो हमारे पास जैसे तन्हा, जैसा हमने पैदा किया तुम्हें पहले• वाकई, ये है वो जो तुमने दावा किया था कभी न होने का•

49. दफ्तर दिखाया जायेगा, और तुम देखोगे गुनहगार को उसके मज़मूनों से खौफज़दा• वो कहेंगे, "हाय हो हमारे लिए• कैसे यह किताब नहीं छोड़ती है कुछ भी, छोटी या बड़ी, बगैर उसे गिनते हुए?" वो जानेंगे सारी चीज़ों को जो उन्होंने किया सामने लाये गए• तुम्हारे रब कभी नाइंसाफ नहीं हैं किसी कि तरफ•

अल्लाह की मखलूकों का बटवारा

50. हमने फरिश्तों से कहा, "आदम के सामने सजदे में गिर जाओ•" वो सजदे में गिर गये, सिवाए शैतान के• वो बन गया एक जिन, इसलिए कि उसने नाफरमानी की उसके रब के हुक्म की•* क्या तुम चुनोगे उसे और उसकी औलादों को रबों जैसा बजाये मेरे, इसके बावजूद कि वो हैं तुम्हारे दुश्मनें? क्या एक अफसोसनाक बदला!

51. मैंने कभी उनको इजाज़त नहीं दिया गवाह होने का आसमानों और ज़मीन कि पैदाईश का, नाहीं उनके खुदकी पैदाईश का• नाहीं मैं इजाज़त देता हूँ गुनाहगार को मेरी बादशाहत में काम करने का•*

52. दिन आयेगा जब वो कहेंगे, "पुकारों मेरे शरीकों को, जिनको तुमने खुदाएं होने का दावा किया सिवाए मेरे," वो उनको पुकारेंगे, लेकिन वो उनको जवाब नहीं देंगे• एक बेहद ज़बरदस्त आड़ अलग करेगी उनको एक दूसरे से•

53. गुनाहगार देखेंगे जहन्नम, और वो एहसास करेंगे की वो उसमें गिर जायेंगे• वो बच नहीं सकेंगे वहाँ से•

काफिरें इंकार करते हैं कुरान के मुकम्मलपन को
कबूल करने से

54. हमने बयान किया है इस कुरान में हर किस्म के मिसाल, लेकिन इंसान है सबसे ज़्यादा बहेस करने वाली मखलूक•

55. किसी चीज़ ने नहीं रोका लोगों को ईमान लाने से, जब हिदायत आई उनके पास, और उनके रब कि तरफ से मगफरत तलाश करने से, सिवाए ये कि उन्होंने दावा किया देखने का वही *(किस्म के मौजज़ों को)* पिछली नस्लों जैसा, या दावा किया आज़ाब को वक्त से पहले देखने का•

**18:50 जब बड़ी झड़प आसमानी जमात में पेश आई (38:69), सारी मखलूकें बट गई फरिश्तों, जिनों, और इंसानों में (अपेन्डिक्स 7)•*

**18:51 अल्लाह जानते थे कि शैतान और उसका साथ देने वाले (जिनें और इंसाने) गलत फैसला करने वाले थे• इस वजह से उन्हें अलाहयदा रखना पैदाईश कि तरतीब का गवाह होने से•*

56. हम सिर्फ भेजते हैं रसूलों को फकत अच्छी खबरों को पहुँचाने वाले, साथ साथ ताकीद करने वाले जैसा• जो कोई कुफ्र करते हैं बहेस करते हैं झूठ से सच को हराने के लिए, और वो लेते हैं मेरी सबूतों और ताकीदों को फुजूल में•

खुदाई दखलअंदाज़ी

57. कौन हैं ज़्यादा उनसे बुरे जिनको याद दिलाया जाता है उनके रब के सबूतें, फिर उनको नज़रअंदाज़ करते हैं, बगैर एहसास करते हुए वो क्या कर रहे हैं• इस वजह से, हम रखते हैं उनके दिलों पर ढालों को इसे *(कुरान)* समझने से रोकने के लिए, और बहरापन उनके कानों में• इस तरह, चाहे तुम कुछ भी करो उनको हिदायत करने के लिए, वो कभी भी हिदायतयाफ्ता नहीं हो सकते•

58. इसके बावजूद, तुम्हारे रब हैं माफ करने वाले, रहमत से भरे• अगर वो उनको बुलायें उनके आमालों के हिसाब के लिए, वो फनाह कर देंगे उनको वहीं और तभी• बलिके, वो देते हैं उनको एक मोहलत पहले से मुकर्रर किये गये, एक खास वक्त तक; फिर वो कभी नहीं बच सकते•

59. कई एक कौम को हमने फनाह किया उनके खताओं कि वजह से, हमने मुकर्रर किया एक खास वक्त उनके फनाह के लिए•

कीमती सबकें मूसा और
उसके उस्ताद से

60. मूसा ने उसके खदिम से कहा, "मैं आराम नहीं करूंगा जब तक मैं पहुँच न जाऊँ उस जगह पर जहाँ दो नदियाँ मिलती हैं, चाहे उसे कितना ही वक्त लग जायें•

61. जब वो पहुँचे उस जगह पर जहाँ वो मिले, वो उनकी मछली को भूल गये, और उसने पाया उसका रास्ता वापस नदी को, चुपके से•

62. इसके बाद कि वो उस जगह से गुज़रे, उसने उसके खादिम को कहा, "चलें हम खाना खायें• यह सारे सफर ने हमे पूरी तरह थका दिया है•"

63. उसने कहा, "याद करो जब हम बैठे चट्टान के पास वहाँ पीछे? मैंने कोई ध्यान नहीं दिया मछली कि तरफ• वो था शैतान जिसने मुझे उसे भुला दिया, और उसने पाया उसका रास्ता वापस नदी को, अजीब तरीके से•"

64. *(मूसा ने)* कहा, "वो थी जगह जो हम ढूंढ़ रहे थे•" उन्होंने खोज किया पीछे उनके कदमों को•

65. उन्होंने पाया हमारे एक बंदे को, जिसको हमने बक्शा रहमत से, और उसपर इनायत किया हमारे खुदके इल्म से•

66. मूसा ने उससे कहा, "क्या मैं तुम्हारे पीछे चलुं, ताके तुम मुझको सिखा सको तुम्हारे ऊपर इनायत किये गये कुछ इल्म और हिदायत?"

67. उसने कहा, "तुम कभी बरदाश्त नहीं कर सकते मेरे साथ होने के लिए•

68. "तुम कैसे बरदाश्त कर सकते हो वो जो तुम नहीं समझते?"

69. उसने कहा, "तुम पाओगे मुझको, साबिर, **अल्लाह** ने चाहा• कोई हुक्म तुम मुझे देते हो मैं नाफरमानी नहीं करूंगा•

70. उसने कहा, "अगर तुम मेरे पीछे चलो, फिर तुमको नहीं पूछना चाहिए किसी चीज़ के बारे में मुझ से, जब तक मैं न चुनुं तुम्हे बताने का उसके बारे में•"

71. तो वो गये• जब वो एक कश्ती पर सवार हुए, उसने उसमें एक सुराग बना दिया• उसने कहा, "क्या तुमने उसमें एक सुराग बनाया उसके लोगों को डुबोने के लिए? तुमने किया है कुछ भयानक•"

72. उसने कहा, “क्या मैंने नहीं कहा कि तुम कभी बरदाश्त नहीं कर सकते मेरे साथ होने के लिए?”

73. उसने कहा, “मैं माफी चाहता हूँ• मुझे सज़ा न दो मेरे भुलनेपन के लिए; मेरे साथ ज़्यादा सख्त न हो•”

74. तो वो गये• जब वो मिले एक जवान लड़के से, उसने उसे कत्ल कर दिया• उसने कहा, “तुमने क्यों कत्ल किया ऐसी एक मासूम रूह को, जिसने किसी दूसरी रूह को कत्ल नहीं किया? तुमने किया है कुछ दहशतनाक•”

75. उसने कहा, “क्या मैंने तुमको नहीं कहा कि तुम कभी बरदाश्त नहीं सकते मेरे साथ होने के लिए?”•

76. उसने कहा, “अगर मैं पुछूं किसी और चीज़ के बारे में, तो मुझे नहीं रखना तुम्हारे साथ• तुमने देखा है काफी माफियों को मेरी तरफ से•”

77. फिर वो गये• जब वो पहुँचे कोई एक कौम को, उन्होंने लोगों से खाने के लिए पूछा, लेकिन उन्होंने उनकी मेज़बानी करने से इंकार किया• अनकरीब, उन्होंने पाया एक दिवार जो ढहने वाली थी, और उसने उसे ठीक कर दिया• उसने कहा, “तुम उनसे मज़दूरी का दावा कर सकते थे उसके लिए!”

वहाँ है एक अच्छी वजह
हर चीज़ के लिए

78. उसने कहा, “अब हमें अलग होना होगा सोहबत से• लेकिन मैं समझाऊंगा सारी चीजें जिनको तुम बरदाश्त न कर सके•

79. “जहाँ तक कश्ती, वो गरीब मछेरों की थी, और मैं उसे ऐबदार बनाना चाहता था• वहाँ था एक राजा जो उनके पीछे आ रहा था, जो ज़प्त कर रहा था हर कश्ती को, ज़बरदस्ती•

80. “जहाँ तक लड़का, उसके वालिदैन थे अच्छे ईमानवाले, और हमने देखा कि वो उनपर बोझ डालने जा रहा था उसके खता और कुफ्र के साथ•*

81. “हमने चाहा कि तुम्हारे रब बदल दें दूसरा बेटा उसकी जगह में; एक वो जो बेहतर हो नेककारी और रहमदिली में•

82. “जहाँ तक दिवार, वो थी शहर में दो यतीम लड़को की• उसके नीचे, वहाँ था एक खाज़ाना जो था उनका• क्योंकि उनका वालिद था एक नेककार आदमी, तुम्हारे रब ने चाहा उनको बड़ा होने और पूरी ताकत हासिल करने, फिर निकालने का उनके खज़ाने को• ऐसी है रहमत तुम्हारे रब कि तरफ से• मैंने वो कुछ नहीं किया मेरी खुदकी मरज़ी से• यह है खुलासा चीज़ों का जिनको तुम बरदाश्त नहीं कर पाये•

जुल-करनैन:
दो सींगों के साथ
या दो नस्लों वाला

83. वो तुमसे जुल-करनैन के बारे में पूछते हैं• कहो, “मैं बयान करूंगा तुमको उसकी कुछ तारीख•”

84. हमने अता किया उसको इख्तियार ज़मीन पर, और मुहय्या किया उसको हर किस्मों के ज़रियों से•

85. फिर, उसने पीछा किया एक रास्ता•

86. जब पहुँचा दूर मगरिब को, उसने पाया सूरज को एक बड़े समंदर में डूबता हुआ, और पाया लोगों को वहाँ• हमने कहा, “ऐ जुल-करनैन, तुम हुकुमत कर सकते हो जैसा तुम चाहो; चाहे सज़ा दो, या नर्म हो उनकी तरफ•”

87. उसने कहा, “जहाँ तक वो जो खता करते हैं, हम उनको सज़ा देंगे, फिर, जब वो लौटेंगे उनके रब कि तरफ, वो हवाले करेंगे उनको ज़्यादा आज़ाब कि तरफ•

88. “जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो पाते हैं एक अच्छा इनाम; हम उनके साथ नरमी से पेश आयेंगे•”

89. फिर उसने पीछा किया दूसरा रास्ता•

90. जब वो पहुँचा दूर मशरिक को, उसने पाया सूरज को लोगों पर उगता जिनके पास कुछ नहीं था उससे उनको आड़ करने के लिए•

91. ज़ाहिर है, हम थे पूरी तरह वाकिफ सारी चिज़ों से जो उसने पता लगाया•

92. फिर उसने पीछा किया दूसरा रास्ता•

93. जब वो पहुँचा दो बाड़ों के दरमियान वादी को, उसने पाया लोगों को जिनकी ज़बान थी मुश्किल से समझने के काबिल•

**18:80 अडॉल्फ हिटलर था एक प्यारा और बज़ाहिर मासूम बच्चा• अगर वो एक बच्चा जैसा मरा होता, कईयोंने गम किया होता, और यहाँ तक कईयों ने सवाल किया होता अल्लाह कि हिकमत को• हम सीखते हैं इस गहरे सबकों से कि वहाँ है एक अच्छी वजह हर चीज़ के पीछे•*

*याजूज और माजूज**

94. उन्होंने कहा, "ऐ जुलकरनैन, याजूज और माजूज हैं ज़मीन कि खराबी करने वाले• क्या हम तुम्हें मुआवज़ा दे सकते हैं एक आड़ बनाने के लिए हमारे और उनके बीच?"

95. उसने कहा, "मेरे रब ने दिये हैं मुझको बड़ी नियामतें• अगर तुम मेरा साथ दो, मैं बनाऊंगा एक बांध तुम्हारे और उनके बीच•

96. "लाओ मेरे पास लोहे के ढेरों को•" जब उसने बाड़ियों के बीच खाई को भरा, उसने कहा, "आग लपटाओ•" जब वो तप कर लाल हो गया, उसने कहा, "मदद करो मेरी उस पर डामर उंडेलने को•"

97. इस तरह, वो उसपर चढ़ नहीं सके, नाहीं वो उसमें छेद कर सके•

98. उसने कहा, "ये रहमत है मेरे रब कि तरफ से• जब मेरे रब कि पेशीनगोई गुज़र जायेगी, वो सबब बनेंगे बांध के रेज़ा रेज़ा होने का• मेरे रब की पेशीनगोई है सच•"

99. उस वक्त पर, हम इजाज़त देंगे उन्हें एक दूसरे पर हमला करने को, फिर सुर फूंका जायेगा, और हम हाज़िर करेंगे उन सारों को एक साथ•

100. हम पेश करेंगे जहन्नम, उस दिन पर, काफिरों के लिए•

101. ये वो हैं जिनकी आँखों पर बहुत परदा था मेरे पैगाम को देखने के लिए• नाहीं वो सुन सके•

102. क्या वो जिन्होंने कुफ्र किया समझा कि वो बच सकते हैं कायम करते हुए मेरे बंदों को खुदाओं जैसा मेरे सिवाए? हमने तैयार किया है काफिरों के लिए जहन्नम एक दाईम ठिकाने जैसा•

अपने आप को जाँचो

103. कहो, "क्या मैं बताऊँ तुमको कौन है सबसे बुरे हारने वाले?

104. "ये वो हैं जिनकी कामें हैं पूरी तरह गुम इस ज़िंदगी में, लेकिन वो समझते हैं कि वो कर रहे हैं अच्छा•"

105. ऐसे हैं वो जिन्होंने कुफ्र किया उनके रब की आयतों में और उनसे मिलने में• इसलिए, उनके आमालें हैं ज़ाया; हश्र के दिन पर, उनके पास न होगा वज़न•

106. उनका सही बदला है जहन्नम, बदले में उनके कुफ्र के लिए, और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का मज़ाक उड़ाने के लिए•

107. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं वो मुस्तेहिक हुए हैं एक मुसर्रत वाली जन्नत का उनके ठिकाने जैसा•

108. वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए; वो कभी भी नहीं चाहेंगे कोई दूसरा बदला•

कुरान:
सारी चीज़ें जो हमें चाहिए

109. कहो, "अगर समंदर होते स्याही मेरे रब के लफ्ज़ों के लिए, समंदर खत्म हो जाता, इससे पहले कि मेरे रब के लफ्ज़ें खत्म होते, अगर हम दुगना भी कर दें स्याही कि तादाद•

110. कहो, "मैं तुम्हारी तरह एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं हूँ, जिसे इल्हाम किया गया कि तुम्हारे खुदा हैं एक खुदा• जो कोई उम्मीद करते हैं उनके रब से मिलने का चाहिए कि नेककारी वाले काम करें, और कभी इबादत न करें किसी दूसरे खुदा की सिवाय उसके रब के•"

****

सुरह 19: मरयम
(मरयम)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

**18:94-98 अल्लाह के वादे के रसूल कि तरह मेरी ज़िम्मेदारियों में से एक है बयान करना कि याजूज और माजूज, आखरी निशानी दुनिया के खत्म होने से पहले, दोबारा दिखाई देंगे 2270 एडी (1700 हिजरी) में, बस खत्म होने से 10 सालों पहले• ध्यान दो कि याजूज और माजूज वाकै होते हैं सुरतें 18 और 21 में, सही सही 17 आयतों पहले हर सुरह के खत्म होने के, नुमाइंदगी करते हुए 17 चाँद कि सदियाँ• (देखें 72:27 और अपेन्डिक्स 25)•*

1599 *92726*

385. क• ह• य• ऐ• सा•* *(काफ हा या ऐन साद)*

ज़करिया

386. एक बयान तुम्हारे रब कि रहमत के बारे में उनके बंदे ज़करिया कि तरफ•

387. उसने पुकारा उसके रब को, एक खुफिया पुकार•

388. उसने कहा, "मेरे रब, हड्डियाँ कमज़ोर हो चुकी हैं मेरे जिस्म में, और मेरे बाल शिद्दत से सफेद हैं• जब मैं आप से इल्तेजा करता हूँ मेरे रब, मैं कभी नाउम्मीद नहीं होता•

389. "मैं फिक्र करता हूँ मेरे बाद मुझपर आसरा रखने वालों के बारे में, और मेरी बिवी है बांझ• अता करिये मुझको, आप की तरफ से, एक वारिस•

390. "उसे मेरा वारिस और याकूब के कुम्बे का वारिस होने दीजिए, और बनाईये उसे, मेरे रब, काबिले कबूल•"

याहया

391. "ऐ ज़करिया, हम देते हैं तुझको अच्छी खबर; एक बेटा जिसका नाम होगा याहया• हमने कभी पैदा नहीं किया किसी को पहले उसके जैसा•"

392. उसने कहा, "मेरे रब, क्या मुझे होगा एक बेटा मेरी बीवी के बांझ होने के बावजूद, और मेरे बुढ़ापे के बावजूद?"

393. उसने कहा, "ऐसा कहा तुम्हारे रब ने: 'ये आसान है मेरे लिए करना• मैंने पैदा किया तुमको उससे पहले, और तुम थे कुछ भी नहीं •'"

394. उसने कहा, "मेरे रब, दीजिए मुझे एक निशानी•" उन्होंने कहा, "तुम्हारी निशानी है कि तुम लोगों से बात नहीं करोगे तीन लगातार रातों के लिए•"

395. वो बाहर आया उसके कुम्बे कि तरफ, मेहराब से, और उनको इशारा किया: "ध्यान करो *(अल्लाह पर)* दिन और रात•"

396. "ऐ याहया, तुम्हें आसमानी किताब को मज़बूती से, बरकरार रखना चाहिए•" हमने बक्शा उसे हिकमत के साथ, उसकी जवानी में भी•

397. और *(हमने बक्शा उसे साथ)* नर्म दिली और पाकीज़गी हमारी तरफ से, इसलिए कि वो था नेक•

398. उसने उसके वालिदैन कि इज़्जत किया, और नहीं था कभी एक नाफरमान ज़ालिम•

399. सलामती हो उसपर जिस दिन वो पैदा हुआ था, जिस दिन वो मरता है, और जिस दिन वो दोबारा ज़िंदा किया जाता है जिंदगी को•

मरयम

400. बयान करो आसमानी किताब में मरयम• उसने अपने आप को अलग किया उसके कुम्बे से, एक मशरिकी जगह में•

401. जबकी एक आड़ ने अलग किया उसे उनसे, हमने भेजा उसकी तरफ हमारी रूह• वो गया उसकी तरफ एक इंसान के रूप में•

402. उसने कहा, "मैं सबसे महेरवान में पनाह चाहती हूँ, ताके तुम नेक हो सको•"

403. उसने कहा, "मैं रसूल हूँ तुम्हारे रब का, तुम्हे अता करने के लिए एक पाक बेटा•"

404. उसने कहा, "मुझे कैसे एक बेटा हो सकता है, जबकी मुझे किसी मर्द ने नहीं है छुआ; मैं नहीं रही हूँ कभी बदचलन•"

405. उसने कहा, "ऐसा कहा तुम्हारे रब ने, 'ये आसान है मेरे लिए• हम बनायेंगे एक निशानी उसको लोगों के लिए,

और रहमत हमारी तरफ से। ये है एक पहले से तय किया गया मामला।'"

**19:1 यह है सबसे ज़्यादा तादाद कुरानी इनिशियलों की, इसलिए कि ये सुरह ताल्लुकात रखते हैं ऐसे एहम मामलों के साथ जैसा करामाती पैदाईश याहया की और बिन ब्याही पैदाइश ईसा की, और मज़बूती से मलामत करता है बड़ी बेअदबी जो मानते हैं ईसा को अल्लाह का बेटा। पाँच इनिशियलें मुहय्या करते हैं एक ताकतवर जिस्मानी सबूत इन मसलों कि मदद करने के लिए (देखें अपेन्डिक्स 1 और 22)।*

ईसा की पैदाइश

406. जब उसने हमल में लिया उसे, उसने अपने आप को अलग किया एक दूर जगह को।

407. जनने का वक्त उसको आया एक नख्ल के दरख्त के तने के पास। उसने कहा, *"(मैं इतनी शर्मिंदा हूँ;)* काश मैं मर जाती, और पूरी तरह भुला दी जाती यह होने से पहले।"

408. *(मासूम बच्चे ने)* पुकारा उसे उसके नीचे से, कहते हुए, "गमज़दा न हो। तुम्हारे रब ने मुहय्या किया है तुम्हें एक नहर के साथ।

409. "अगर तुम इस नख्ल के दरख्त के तने को हिलाओ, वो गिरायेगा पके खजूरें तुम्हारे लिए।*

410. "खाओ और पियो, और रहो खुश। जब तुम देखो किसी को, कहो, 'मैंने एक खामोशी का एहद किया है; मैं किसी से बात नहीं कर रही आज।'"

411. वो आई उसके कुम्बे कि तरफ, उसे लिये हुए। उन्होंने कहा, ऐ मरयम, तुमने किया है कुछ जो है पूरी तरह खिलाफे उम्मीद।

412. "ऐ हारून की औलाद, तुम्हारे वालिद नहीं थे एक बुरे आदमी, नाहीं तुम्हारी माँ थी बदचलन।"

मासूम बच्चा देता है
एक बयान

413. उसने उसकी तरफ इशारा किया। उन्होंने कहा, "हम कैसे बात कर सकते हैं पालने में एक मासूम बच्चे से?"

414. *(मासूम बच्चे ने बात किया और)*, कहा, "मैं हूँ **अल्लाह** का एक बंदा। उन्होंने दिया है मुझे आसमानी किताब, और मुकर्रर किया है मुझे एक नबी।

415. "उन्होंने मुझे मुबारक बनाया है जहाँ भी मैं जाऊँ, और ताकीद किया मुझको रावता नमाजें *(सलात)* और ज़रूरी खैरात *(ज़कात)* कायम करने के लिए जब तक मैं ज़िंदा रहूँ।

416. "मैं मेरी वालिदा की इज़्जत करूँ; उन्होंने मुझको नहीं बनाया एक नाफरमान बागी।

417. "और सलामती हो मुझपर जिस दिन मैं पैदा हुआ था, जिस दिन मैं मरता हूँ, और जिस दिन मैं दोबारा ज़िंदा किया जाता हूँ।"

साबित सच्चाई

418. वो था ईसा, मरयम का बेटा, और यह इस मामले कि सच्चाई है, जिसके बारे में वो जारी रहते हैं शक करने के लिए।

419. ये नहीं जचता **अल्लाह** को कि वो जनें एक बेटा, उनकी बड़ाई हो। कोई चीज़ करने के लिए, वो सिर्फ उसे कहते हैं, "हो," और वो हो जाता है।

420. उसने यह भी ऐलान किया, "**अल्लाह** हैं मेरे रब और तुम्हारे रब; तुम्हें सिर्फ उनकी इबादत करनी चाहिए। यह है सही रास्ता।"*

421. मुख्तलिफ जमातों ने बहेस किया उनके आपस में *(ईसा की पहचान के मुताल्लिक)*। इसलिए, हाय हो उनके लिए जो कुफ्र करते हैं एक भयानक दिन के मनज़र से।

422. इंतेज़ार करो उस वक्त तक जब तुम उन्हें देखोगे और उन्हें सुनोगे जब वो आयेंगे हमारा सामना करने के लिए। खतावारें उस दिन पर होंगे पूरी तरह गुम।

423. खबरदार करो उनको नदामत वाले दिन के बारे में, जब फैसला जारी किया जायेगा। वो हैं पूरी तरह गाफिल; वो ईमान नहीं रखते।

424. हम हैं जो कब्ज़ा करते हैं ज़मीन और हर एक को उसपर; हमारी तरफ हर एक लौटाये जायेंगे।

इब्राहीम

425. बयान करो आसमानी किताब में इब्राहीम; वो थे एक बुर्जुग, एक नबी।

*19:25 इस तरह, ईसा पैदा हुए थे आखीर सितम्बर या अक्तूबर कि शुरूआत में• ये वक्त है जब खजूरें पकते हैं मशरिकी मुमालिकों में पेड़ से गिरने कि हद तक•

*19:36 यह वैसा ही जुमला है जो इंजील के जॉन 20:17 में ईसा को मनसूब किया गया है•

426. उन्होंने उनके वालिद से कहा, "ऐ मेरे वालिद, आप क्यों इबादत करते हैं जो नाहीं सुन सकता है, नाहीं देख, नाहीं मदद कर सकता है आपकी किसी राह में?

427. "ऐ मेरे वालिद, मैंने पाया है कुछ इल्म जो आपने नहीं पाया• मेरी पैरवी करिये, और मैं आपकी हिदायत करूंगा एक सीधी राह में•

428. "ऐ मेरे वालिद, शैतान कि इबादत न करिये• शैतान ने बगावत की है **सबसे मेहरबान** के खिलाफ•

429. "ऐ मेरे वालिद, मैं डरता हूँ ताके आप न पाओ आज़ाब **सबसे मेहरबान** कि तरफ से, फिर बन जाओ एक साथी शैतान के•"

430. उसने कहा, "क्या तुमने तर्क कर दिया है मेरे खुदाओं को, ऐ इब्राहीम? अगर तुम नहीं थमते, मैं तुम्हें पत्थर मारूंगा• मुझे छोड़ दो अकेला•"

431. उसने कहा, "तुम पर सलामती हो• मैं इल्तेजा करूंगा मेरे **रब** से आप को माफ करने के लिए; **वो** रहे हैं **सबसे रहीम** मेरी तरफ•

432. "मैं छोड़ दूंगा आप को और खुदाओं को जिनकी आप इबादत करते हैं **अल्लाह** के सिवाए• मैं इबादत करूंगा सिर्फ मेरे **रब** की• सिर्फ मेरे **रब** से इल्तेजा करते हुए, मैं कभी गलत नहीं हो सकता•"

433. इसलिए कि उसने छोड़ दिया उनको और खुदाओं को जिनकी वो इबादत करते थे **अल्लाह** के सिवाए, हमने अता किया उसे इसहाक और याकूब, और हमने उनमें से हर एक को बनाया एक नबी•

434. हमने बरसाया उनको हमारी रहमत से, और हमने अता किया उनको एक इज़्जत वाला मकाम तारीख में•

मूसा

435. बयान करो आसमानी किताब में मूसा• वो थे सावित कदम, और वो थे एक रसूल नबी•

436. हमने पुकारा उसे कोहेतूर की दाहिनी तरफ से• हम लाये उसे करीब, उससे बात करने के लिए•

437. और हमने अता किया उसे, हमारी रहमत से, उसके भाई हारून को एक नबी जैसा•

438. और बायन करो आसमानी किताब में इस्माईल• वो थे सच्चे जब उन्होंने किया एक वादा, और वो थे एक रसूल नबी•

439. वो ताकीद किया करता थे उनके कुम्बे को रावता नमाज़े *(सलात)* और ज़रूरी खैरात *(ज़कात)* कायम करने के लिए; वो थे काबिले कबूल उनके **रब** कि तरफ•

440. और बयान करो आसमानी किताब में इदरीस• वो थे एक बुजुर्ग, एक नबी•

441. हमने बुलंद किया उन्हें एक इज़्जत वाले दरजे को•

442. ये हैं कुछ नबियें जिनको **अल्लाह** ने बक्शा• वो चुने गये थे आदम कि औलादों में से, और औलादें उनकी जिनको हम ले गये नुह के साथ, और औलादें इब्राहीम और इस्राईल की, और उनमें से जिनको हमने हिदायत किया और चुना• जब **सबसे मेहरबान** कि आयतें पढ़ी जाती हैं उनके लिए, वो गिर जाते हैं सजदे में, रोते हुए•

खोते हुए
रावता नमाजें
(सलात)

443. उनके बाद, उन्होंने बदला नस्लों को जिन्होंने खोया रावता नमाज़ें *(सलात),* और पीछा किया उनकी हवसों का• वो झेलेंगे अंजामों को•

444. सिर्फ वो जो तौवा करते हैं, ईमान रखते हैं, और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं दाखिल होंगे जन्नत में, बगैर ज़रा सी भी नाइंसाफी के•

445. अदन कि बागें उनका इंतेज़ार कर रहें हैं, जैसा वादा किया गया है **सबसे मेहरबान** कि तरफ से उनके लिए

जो उनकी इबादत करते हैं, तन्हाई में भी• यकीनन, उनका वादा ज़रूरी है हो गुज़रे•

446. वो नहीं सुनेंगे उसमें कोई खुराफात, सिर्फ सलाम• वो पाते हैं उनकी नियामतें उसमें, दिन और रात•

447. ऐसी है जन्नत; हम अता करते हैं उसे हमारे बंदों में से उनको जो हैं नेककार•

448. हम नहीं आते नीचे सिवाए तुम्हारे रब के हुक्म से• उनके पास है हमारा माज़ी, हमारा मुस्तकबिल, और सारी चीज़ उनके दरमियान• तुम्हारे रब कभी नहीं भूलते•

449. आसमानों और ज़मीन, और उनके दरमियान सारी चीज़ों के रब; तुम्हे चाहिए उनकी इबादत करना और साबित कदमि से कायम रहना उनकी इबादत करने में• क्या तुम जानते हो किसी को जो है बराबर उनके?

450. इंसान पूछता है, "मेरे मरने के बाद, क्या मैं वापस ज़िंदगी को आऊंगा?"

451. क्या इंसान भूल गया कि हमने उसे पैदा किया पहले से, और वो था कुछ नहीं?

खास ताकीद
रहबरों के लिए

452. तुम्हारे रब कि कसम, हम यकीनन उनको हाज़िर करेंगे, शयातीनों के साथ, और जमा करेंगे उनको जहन्नम के आसपास, रूसवा किये गये•

453. फिर हम सबसे मेहरबान के सबसे संगीन मुखालिफ को चुन कर निकालेंगे हर गिरोह से•

454. हम पूरी तरह जानते हैं उन्हें जो हैं सबसे ज़्यादा मुस्तेहिक उसमें जलाये जाने के•

*हर कोई देखता है जहन्नम**

455. तुम में से हर एक ज़रूरी है देखे उसे; यह है एक न बदलने वाला फैसला तुम्हारे रब का•

456. फिर हम बचाते हैं नेककार को, और छोड़ते हैं खतावारों को उसमें, रूसवा किये गये•

ज़्यादा तादाद

457. जब हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जातीं हैं उनको, साफ साफ, वो जो कुफ़्र करते हैं कहते हैं उनको जो ईमान रखते हैं, "हममें से कौन है ज़्यादा तरक्कीयाफ्ता? हममें से कौन है ज़्यादा तादाद में?"

458. कई एक नस्ल हमने किया है फनाह उनसे पहले; वो थे ज़्यादा ताकतवर, और ज़्यादा तरक्कीयाफ्ता•

459. कहो, "जो कोई चुनें गुमराह होने के लिए, सबसे मेहरबान रहनुमाई करेंगे उनकी उसपर, जब तक वो देख न लें जो वादा किया गया है उनके लिए — या आज़ाब या वक्त• वही है जब वो जानेंगे कौन है असल में सबसे ज़्यादा बुरा, और ज़्यादा ताकत में कमज़ोर•"

460. **अल्लाह** उनकी हिदायत को बढ़ाते हैं जो चुनते हैं हिदायतयाफ्ता होने के लिए• इसलिए कि अच्छी आमालें हमेशा के लिए इनाम दिये गये हैं तुम्हारे रब कि तरफ से, और लाते हैं कहीं बेहतर बदले•

461. क्या तुमने ध्यान दिया है उसे जो ठुकराता है हमारी आयतों को फिर कहता है, "मुझे दिया जायेगा दौलत और औलाद"?!

462. क्या उसने देखा है मुस्तकबिल? क्या उसने लिया है ऐसा एक वादा सबसे मेहरबान कि तरफ से?

463. वाकई, हम दर्ज करेंगे जो वो कहता है, फिर हवाले करेंगे उसे हमेशा बढ़ती आज़ाब कि तरफ•

464. फिर हम कब्ज़ा करते हैं सारी चिज़ें जिसका वो मालिक था, और वो आता है वापस हमारे पास बिल्कुल अकेला•

**19:71 जैसा तफसील किया गया है अपेन्डिक्स 11 में, अल्लाह के जिस्मानी पहुँचने से पहले हमारे कायनात को हम दोबारा ज़िंदा किये जायेंगे• वो होगा एक आरज़ी जहन्नम का चखना, चुँकी अल्लाह कि गैरमौजूदगी है जहन्नम• जब अल्लाह आयेंगे (89:22), नेककार बचा लिये जायेंगे• देखें 19:72•*

1. वो **अल्लाह** के सिवाए दूसरे खुदाओं कि इबादत करते हैं ताके हो सकें उनके लिए मदद करने वाले॰

बुतें ठुकराते हैं
उनकी इबादत करने वालों को

2. बिल्कुल नहीं; वो ठुकरायेंगे उनकी बुतपरस्ती, और होंगे उनके दुश्मनें॰

3. क्या तुम नहीं देखते कैसे हम आज़ाद करते हैं शयातीनों को कुफ्र करने वालों पर उनको परेशान करने के लिए?

4. बेसब्र न हो; हम तैयार कर रहे हैं उनके लिए कुछ तैयारी॰

5. दिन आयेगा जब हम हाज़िर करेंगे नेककारों को सबसे मेहरबान के सामने एक गिरोह में॰

6. और हम हांकेंगे मुजरिम को जहन्नम कि तरफ, उनका दाईम ठिकाना होने के लिए॰

7. कोई भी ताकत नहीं रखेगा शिफाअत के लिए, सिवाए उनके जो सबसे मेहरावान के कानूनों के मुताबिक होंगे॰

बड़ी बेअदबी

8. उन्होंने कहा, "सबसे मेहरबान ने जना है एक बेटा!"

9. तुमने कहा है एक बड़ी बेअदबी॰

10. आसमानें तकरीबन फूटने को हैं, ज़मीन तकरीबन अलहायदा फटने को है, और पहाड़ें तकरीबन रेज़ा रेज़ा होने को हैं॰

11. क्योंकि वो दावा करते हैं कि सबसे मेहरबान ने जना है एक बेटा॰

12. यह नहीं जचता सबसे मेहरबान को कि वो जनें एक बेटा॰

13. आसमानों और ज़मीन में हर एक है एक बंदा सबसे मेहरबान का॰

14. उन्होंने उनको घेरे में लिया है, और गिना है उनको एक के बाद एक॰

15. वो सारे आयेंगे उनके सामने हश्र के दिन पर जैसे तन्हा॰

16. यकीनन, जो कोई ईमान रखें और एक नेक ज़िंदगी बसर करें, सबसे मेहरबान बरसायेंगे उनको चाहत के साथ॰

17. हमने इस तरह वाज़े किया हुआ बनाया इसे *(कुरान)* तुम्हारी ज़बान में, ताके पहुँचायें अच्छी खबरें ईमानवालों को, और मुखालिफों को उससे खबरदार करने के लिए॰

18. कई एक नस्ल हमने फनाह किया उनसे पहले; क्या तुम महसूस कर सकते हो उनमें से किसी को, या सुन सकते हो उनसे कोई आवाज़?

****

सुरह 20: त॰ ह॰
(ता हा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. त॰ ह॰*

2. हमने नाज़िल नहीं किया कुरान तुम्हारी तरफ, तुम्हें कोई मेहनत कशी का सबब होने के लिए॰

3. सिर्फ अदब करने वाले को याद दिलाने के लिए॰

4. एक वही ज़मीन और ऊंचे आसमानों के पैदा करने वाले कि तरफ से॰

5. सबसे मेहरबान; उन्होंने लिया है सारे इकतेदार को॰

6. उनकी हैं सारी चीज़ें आसमानों, और ज़मीन में, और सारी चीज़ें उनके दरमियान, और सारी चीज़ें ज़मीन के तले॰

7. चाहे तुम ऐलान करो तुम्हारे इरादों को *(या नहीं)* वो जानते हैं राज़, और जो है उससे भी ज़्यादा छिपा॰

*20:1 किरदार इन कुरानी इनिशियलों का जैसे कुरान के ज़बरदस्त रियाज़ी मौजज़े जैसा दिया गया है तफसील में अपेन्डिक्स 1 में॰

8. **अल्लाह**; कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए उनके॰ उनके हैं सबसे खूबसुरत नामें॰

9. क्या तुमने ध्यान दिया है मूसा कि तारीख?

10. जब उसने देखा एक आग, उसने उसके कुम्बे से कहा, “ठहरो यहाँ॰ मैंने देखा है एक आग॰ हो सकता है मैं लाऊं तुमको उसका कुछ, या पाऊं कुछ हिदायत आग के पास॰”

11. जब वो उसके पास आया, उसे पुकारा गया था, “ऐ, मूसा॰

12. “मैं हूँ तुम्हारा रब; तुम्हारे चप्पलों को निकालो॰ तुम हो तुवा, कि मुकद्दस वादी में॰

13. “मैंने तुमको चुना है, तो सुनो जो नाज़िल किया जा रहा है॰

14. “मैं हूँ **अल्लाह**; कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए मेरे॰ तुम्हें सिर्फ मेरी इबादत करनी चाहिए, और रावता नमाज़ें *(सलात)* कायम करो मुझको याद करने के लिए॰

दुनिया का खत्म होना
*छुपा नहीं है**

15. “वक्त *(दुनिया का खत्म)* यकीनन आ रहा है; मैं उसे तकरीबन छुपा रखूंगा॰ इसलिए कि हर रूह को ज़रूरी है अदा किया जाना उसके कामों के लिए॰

16. “उससे फिर न जाओ उनकी वजह से जो उसमें ईमान नहीं रखते — जो कोई पीछा करते हैं उनके खुद के रायों का—ताके तुम गिर न पड़ो॰

17. “ये क्या है तुम्हारे दाहिने हाथ मे, मूसा?”

18. उसने कहा, “यह आसा है मेरा॰ मैं उसपर सहारा लेता हूँ, उससे मेरे भेड को हांकता हूँ, और मैं इस्तेमाल करता हूँ उसे दूसरे कामों के लिए॰

19. उन्होंने कहा, “फेंको उसे नीचे, मूसा॰”

20. उसने उसे नीचे फेंका, जिसपर वो बन गया एक हरकत करता हुआ सांप॰

21. उन्होंने कहा, “उसे उठाओ; खौफज़दा न हो॰ हम लौटायेंगे उसे उसके असल हालत को॰

22. “और थामों तुम्हारे हाथ को तुम्हारे बाजु के नीचे; वो बाहर आयेगा सफेद बगैर एक दाग के; एक और सबूत॰

23. “इस तरह हम दिखाते हैं तुम्हें हमारी बड़ी निशानियों से कुछ॰

24. “जाओ फिरऔन कि तरफ, इसलिए कि वो हद से निकल गया है॰”

25. उसने कहा, “मेरे रब, मेरे मिज़ाज को ठंडा करिये॰

26. “और करिये ये मामला आसान मेरे लिए॰

27. “और मेरी ज़बान से एक गाँठ को खोलिये॰

28. “ताके वो मेरी बोली समझ सकें॰

29. “और मुकर्रर करिये एक मददगार मेरे लिए मेरे कुंबे से॰

30. “मेरा भाई हारून॰

31. “मज़बूत करिये मुझे उसके साथ॰

32. “उसे मेरा शरीक होने दीजिये इस मामले में॰

33. “ताके हम आपकी बड़ाई कर सकें लगातार॰

34. “और ज़िक्र करें आपका लगातार॰

35. “आप हैं देखने वाले हमारे॰”

36. उन्होंने कहा, “तुम्हारी अर्ज़ी मंजूर कर ली गई है, ऐ मूसा॰

37. “हमने बक्शा है तुम्हें एक और बार॰

38. “जब हमने इल्हाम किया तुम्हारी माँ को जो हमने इल्हाम किया॰

39. कहते हुए: 'फेंको उसे बक्से में, फिर फेंको उसे नदी में॰ नदी फेंकेगी उसे किनारे पर, उठाये जाने के लिए मेरे एक दुश्मन और उसके एक दुश्मन के ज़रिये॰' मैंने बरसाया मेरी तरफ़ से तुमको चाहत, और मैंने तुम्हें बनने दिया मेरी निगेहबान नज़र के सामने॰

**20:15 दुनिया का खत्म होना दिया गया है कुरान में, अल्लाह का आखरी पैगाम (15:87)॰*

40. "तुम्हारी बहन चलकर गई उनकी तरफ और बोली, 'मैं तुमको एक दूध पिलाती माँ के बारे में बता सकती हूँ जो उसका अच्छा ख्याल रख सकती है॰' हमने इस तरह तुम्हें तुम्हारी माँ को लौटाया, ताके वो खुश हो सके और परेशान होना बंद करे॰ और जब तुमने एक रूह को कत्ल किया, हमने बचाया तुमको संगीन अंजामों से; हमने वाकई तुमको पूरी तरह आज़माया॰ तुम सालों तक रहे मिदयन के लोगों के साथ, और अब तुम आये हो वापस एक दुरूस्त मनसूबे के मुताबिक में॰

41. "मैंने बनाया है तुमको बस मेरे लिए॰

42. "जाओ तुम्हारे भाई के साथ, मदद किये गये मेरी निशानियों से, और न डगमगाओ मुझे याद करने में॰

43. "जाओ फिरऔन कि तरफ, इसलिए कि वो हद से निकल गया॰

44. "उससे अच्छे से बात करो; हो सकता है वो तवज्जो दे, या एहतराम करने वाला बन जाये॰"

45. उन्होंने कहा, "हमारे रब, हम डरते हैं ताके वो हम पर हमला न कर दे, या खता कर बैठे॰"

46. उन्होंने कहा, "खौफज़दा न हो, इसलिए कि मैं तुम्हारे साथ रहूंगा, सुनते हुए और देखते हुए॰

47. "जाओ उसके पास और कहो, 'हम हैं दो रसूलें तुम्हारे रब कि तरफ से॰ इस्राईल की औलाद को जाने दो॰ तुम्हें उनको ऐज़ा देने से बाज़ आना चाहिए॰ हम लाते हैं एक निशानी तुम्हारे रब कि तरफ से, और अमन है हिस्सा उनका जो हिदायत को तवज्जो देते हैं॰

48. " 'हमें इल्हाम किया गया है कि आज़ाब यकीनन परेशान करेगा उनको जो कुफ़्र करते हैं और पलट जाते हैं॰' "

49. उसने कहा, "कौन है तुम्हारा रब, ऐ मूसा॰"

50. उसने कहा, हमारे रब हैं वाहिद जिन्होंने अता किया सारी चीज़ों को उनका वजूद, और उनकी हिदायत॰"

51. उसने कहा, "पिछली नस्लों के बारे में क्या?"

52. उसने कहा, "उसका इल्म है मेरे रब के पास एक दफ्तर में॰ मेरे रब कभी गलती नहीं करते, नाहीं वो भूलते हैं॰"

53. वो हैं वाहिद जिन्होंने बनाया तुम्हारे लिए ज़मीन को रहने के काबिल, और सड़कों को बिछाया तुम्हारे लिए उसमें॰ और वो भेजते हैं नीचे आसमान से पानी जिससे हम पैदा करते हैं कई किस्मों के दरख्तें॰

54. खाओ और पालो तुम्हारे मवेशी को॰ ये हैं काफी सबूतें उनके लिए जो अक्ल रखते हैं॰*

55. उससे हमने तुमको पैदा किया, उसमें हम तुमको लौटाते हैं, और उससे हम तुमको बाहर निकालते हैं एक और बार॰

56. हमने दिखाया उसे हमारे सारे सबूतों को, लेकिन उसने कुफ़्र किया और इंकार किया॰

57. उसने कहा, "क्या तुम यहाँ आये हो हमें हमारी ज़मीन से बाहर निकालने को तुम्हारे जादू से, ऐ मूसा?

58. "हम यकीनन दिखायेंगे तुमको वैसा ही जादू॰ इसलिए, कायम करो एक मुलाकात का वक्त जो नाहीं हम, नाहीं तुम तोड़ोगे; एक इंसाफ कि जगह में॰"

59. उसने कहा, "तुम्हारा मुकर्रर किया गया वक्त होगा दिन जश्नों का॰ चलें हम सब मिले दोपहर से पहले॰"

**20:54 जो कोई अक्ल रखते हैं दाद देते हैं हकीकत को कि हम हैं ऐस्ट्रोनॉट जो डाले गये थे फ़िज़ा में इस 'फ़िज़ाई कश्ती ज़मीन' पर॰ अल्लाह ने मुहय्या किया हमें काबिले ताज़ा किया जाना वाला खाना, पानी, पालतुऐं, कुदरत, और मवेशी, जैसे हम सवार होते हैं इस आरज़ी फ़िज़ाई सफर पर॰ मुकाबला करो अल्लाह कि नियामतें 'फ़िज़ाई कश्ती ज़मीन' को साथ नियामतों के हम देते हैं हमारे एस्ट्रोनॉटस को (अपेन्डिक्स 7)॰*

60. फिरऔन ने उसकी ताकतों को हाज़िर किया, फिर आया॰

61. मूसा ने उनसे कहा, “हाय हो तेरे लिए॰ क्या तुम झूठों को गढ़ते हो **अल्लाह** से लड़ने के लिए और इसतरह पाओ उनका आज़ाब? ऐसे गढ़ने वाले यकीनन नाकामयाब होंगे॰”

62. उन्होंने आपस में बहेस किया, जब उन्होंने ज़ाती तौर पर गुफतुगु किया॰

63. उन्होंने कहा, “ये दो जादूगरों से ज़्यादा कुछ नहीं जो चाहते हैं तुमको ज़मीन से बाहर ले जाने के लिए उनके जादू से, और तुम्हारी ज़िंदगी के सही तरीके को तबाह करने के लिए॰

64. “चलें हम राज़ी हों एक मनसूबे पर और सामना करें उनका जैसे एक मुत्तफिक सामना॰ जीतने वाले के पास आज होगा गलबाह॰”

65. उन्होंने कहा, “ऐ मूसा, या तुम फेंको, या हम होंगे पहले फेंकने के लिए॰”

66. उसने कहा, “तुम फेंको॰” जिसपर, उनकी रस्सियाँ और लकड़ियाँ उसे पेश आई, उनके जादू के वजह से, ऐसे जैसे वो हरकत कर रहे थे॰

67. मूसा ने पनाह दिया कुछ डर को॰

68. हमने कहा, “न डरो॰ तुम कामयाब होगे॰

69. “फेंको जो तुम थामते हो तुम्हारे दाहिने हाथ में, और वो निगल जायेगा जो उन्होंने गढ़ा॰ जो उन्होंने गढ़ा है एक जादूगर कि साज़िश से ज़्यादा कुछ नहीं॰ जादूगर के आमाल कामयाब नहीं होंगे॰

माहिरें पहचानते हैं सच को

70. जादूगरें सजदे में गिर गये, कहते हुए, “हम हारून और मूसा के रब में ईमान रखते हैं॰”

71. उसने कहा, “क्या तुम उसमें ईमान लाये मेरी इजाज़त के बगैर? वो तुम्हारा सरदार होना चाहिए; जिसने तुमको जादू सिखाया॰ मैं यकीनन तुम्हारे हाथों और पैरों को उल्टी तरफों से कलम करूंगा॰ मैं तुमको नख्ल के तनों पर सूली चढ़ा दूंगा॰ तुम जान जाओगे हममें से कौन डालता है सबसे बुरा आज़ाब, कौन किस से ज़्यादा ज़िंदा रहता है॰”

72. उन्होंने कहा, “हम तुम्हें तर्जी नहीं देंगे साफ सबूतों पर जो आये हमारी तरफ, और वाहिद पर जिन्होंने हमें पैदा किया॰ इसलिए, जारी करो जो कुछ फैसला तुम जारी करना चाहते हो॰ तुम सिर्फ इस निचली ज़िंदगी में हुक्म कर सकते हो॰

73. “हम ईमान लायें हैं हमारे रब में, ताके वो हमें माफ करें हमारे गुनाहों को, और जादू जो तुमने ज़ोर दिया हमें करने के लिए॰ **अल्लाह** हैं कहीं बेहतर और हमेशा रहने वाले॰”

74. जो कोई आता है उसके रब के पास मुजरिम पायेगा जहन्नम, जहाँ वो कभी नहीं मरता, नाहीं जिंदा रहता है॰

75. जहाँ तक वो जो आते हैं उनके पास ईमानवालों जैसे जिन्होंने एक नेक ज़िंदगी बसर की, वो पाते हैं ऊँचे दरजे॰

76. अदन के बागें, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, होगा उनका ठिकाना हमेशा के लिए॰ ऐसा है इनाम उनके लिए जो अपने आप को पाक करते हैं॰

77. हमने मूसा को इल्हाम किया: “ले जाओ बाहर मेरे बंदो को, और एक सूखा रास्ता मारो उनके लिए समंदर के पार॰ तुम्हें डरना नहीं चाहिए कि तुम हो सकता है पकड़े जाओ, नाहीं तुम्हें परेशान होना चाहिए॰”

78. फिरऔन ने उसके लश्करों के साथ उनका पीछा किया, लेकिन समंदर ने उनको बरबाद कर दिया, जैसा वो मुकर्रर किया गया था उनको बरबाद करने के लिए॰

79. इसतरह, फिरऔन ने उसके लोगों को बहकाया; उसने उनकी हिदायत नहीं की॰

80. ऐ इस्राईल कि औलाद, हमने बचाया तुमको तुम्हारे दुश्मन से, हाज़िर किया तुमको कोहे तूर कि दाहिनी तरफ, और हमने भेजा नीचे तुमको मन्ना और बटेरें•

81. खाओ अच्छी चीज़ों से हमने मुहय्या किया तुम्हारे लिए, और हद से न गुज़रो, ताके तुम न पाओ मेरा कहर• जिस किसी ने मेरा कहर पाया गिरा हुआ है•

82. मैं यकीनन उनके लिए माफी दे रहा हूँ जो तौबा करते हैं, ईमान रखते हैं, एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, और साबित कदमी से रहते हैं हिदायतयाफ्ता•

इस्राईल के औलाद बगावत करते है

83. "क्यों तुम दौड़ आये तुम्हारे लोगों कि तरफ से, ऐ मूसा?"

84. उसने कहा, वो मेरे पीछे पड़े हैं• मैं दौड़ा हूँ आप की तरफ मेरे रब, ताके आप खुश हो सकें•"

85. उन्होंने कहा, "तुम्हारे जाने के बाद हमने डाला है तुम्हारे लोगों को आज़माईश में, लेकिन सामरी ने उनको बहकाया•"

86. मूसा लौटा उसके लोगों कि तरफ, गुस्सा और मायूस, कहते हुए, "ऐ मेरे लोगों, क्या तुम्हारे रब ने वादा नहीं किया तुमसे एक अच्छा वादा? क्या तुम इंतेज़ार नहीं कर सकते थे? क्या तुमने चाहा कहेर पाने के लिए तुम्हारे रब कि तरफ से? क्या इस वजह से तुमने तोड़ा तुम्हारा इकरार नामा मुझसे?"

87. उन्होंने कहा, "हमने नहीं तोड़ा हमारा इकरार नामा तुमसे जानबूझ कर• लेकिन हम ज़ेवर के बोझ से लदे थे, और फैसला किया हमारे बोझों को उसमें फेंकने का• यह है जो सामरी ने मशवरा दिया•"

88. उसने पैदा किया उनके लिए एक तराशा हुआ बछड़ा, कामिल एक बछड़े कि आवाज़ के साथ•* उन्होंने कहा, "यह है तुम्हारा खुदा, और मूसा का खुदा•" इसतरह, वो भूल गया•

89. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उसने नाहीं जवाब दिया उनको, नाहीं रखा कोई ताकत उनको नुकसान पहुँचाने, या उनको फायदा पहुँचाने का?

90. और हारून ने उनको कहा था, "ऐ मेरे लोगों, यह एक आज़माईश है तुम्हारे लिए• तुम्हारे सिर्फ रब हैं सबसे मेहरबान, तो मेरी पैरवी करो, और मेरे हुक्मों कि अताअत करो•"

91. उन्होंने कहा, "हम जारी रहेंगे उसकी इबादत करने के लिए, जब तक मूसा वापस नहीं आ जाता•"

92. *(मूसा ने)* कहा, "ऐ हारून, क्या है वो जिसने तुमको रोका, जब तुमने उनको गुमराह होते देखा,

93. "मेरे हुक्मों कि पैरवी करने से? क्या तुमने बगावत किया है मेरे खिलाफ?"

94. उसने कहा, "ऐ मेरी माँ के बेटे, न खींचों मुझको मेरी दाढ़ी और मेरे सर से• मैं खौफज़दा था कि तुम शायद कहो, 'तुमने इस्राईल कि औलाद को तकसीम कर दिया, और नाफरमानी किया मेरे हुक्मों की•'"

95. उसने कहा, "क्या है माजरा तेरे साथ, ऐ सामरी?"

96. उसने कहा, "मैंने देखा जो वो नहीं देख सके• मैंने पकड़ा एक मुट्ठी भर *(धूल का)* उस जगह से जहाँ रसूल खड़ा था, और इस्तेमाल किया उसे *(सुनहरे बछड़े में मिलाने के लिए)*• यह है जो मेरे ज़हेन ने इल्हाम किया मुझे करने के लिए•"*

97. उसने कहा, "फिर जाओ, और, तेरी तमाम ज़िंदगी, करीब भी न आना• तेरे पास है मुकर्रर किया गया वक्त *(तेरे आखरी फैसले के लिए)* जो तू कभी टाल नहीं सकता• देख तेरे खुदा कि तरफ जिसे तूने इस्तेमाल किया इबादत के लिए; हम उसे जलायेंगे और उसे समंदर में फेंक देंगे, वहाँ नीचे हमेशा रहने के लिए•"

तुम्हारे पास है
लेकिन एक अल्लाह

98. तुम्हारे सिर्फ खुदा हैं **अल्लाह**; वाहिद जिनके सिवाए नहीं है दूसरा खुदा• उनका इल्म सारी चीज़ों को हाते में लेता है•

**20:88 & 96 सामरी गया उस जगह कि तरफ जहाँ अल्लाह ने बात किया मूसा से, और लिया एक मुट्ठी भर धूल का जिसपर अल्लाह कि आवाज़ गूंजी थी॰ ये धूल, जब मिलाया गया पिघले सोने के साथ सबब बना सुनहरे मुर्ती को एक बछड़े कि आवाज़ हासिल करने के लिए॰*

99. हम इस तरह बयान करते हैं तुमको कुछ खबरें पिछली नस्लों से॰ हमने नाज़िल किया है तुमको एक पैगाम हमारी तरफ से॰

100. जो कोई उसे नज़रअंदाज़ करते हैं उठायेंगे एक बोझ *(गुनाहों का)* हश्र के दिन पर॰

101. वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए; क्या एक अफसोसनाक बोझ हश्र के दिन पर!

102. वो है दिन जब सुर फूंका जाता है, और हम हाज़िर करते हैं हर मुजरिम को उस दिन पर नीला॰

103. आपस में कानाफुसी करते, वो कहेंगे, "तुम रहे हो *(पहली ज़िंदगी में)* दस दिनों से ज़्यादा नहीं!"

104. हम पूरी तरह वाकिफ हैं उनके बयानों से॰ उनमें से सबसे सही कहेगा, "तुम रहे हो एक दिन से ज़्यादा नहीं॰"

हश्र के दिन पर

105. वो पूछते हैं तुमसे पहाड़ों के बारे में॰ कहो, "मेरे रब उनको मिटा देंगे॰

106. "वो छोड़ देंगे उनको जैसे एक बंज़र, सपाट ज़मीन॰

107. "तुम यहाँ तक नहीं देखोगे ज़रा सा भी टिला उसमें, नहीं एक गहराई॰"

108. उस दिन पर, हर कोई पुकारने वाले के पीछे जायेगा, बगैर ज़रा सा भी हेर फेर के॰ सारी आवाजें चुप की जायेंगीं सबसे मेहरबान के सामने; तुम कुछ नहीं सुनोगे सिवाए काना फुसियों के॰

109. उस दिन पर, शिफाअत बेकार होगी, सिवाए उनके लिए जिनको इजाज़त दिया गया होगा सबसे मेहरबान कि तरफ से, और जिनके बयानें मुवाफिक होंगे उनकी मरज़ी के॰

110. वो जानते हैं उनके माज़ी और उनके मुस्तकबिल को, जबकी कोई उनके इल्म को घेरे में नहीं ले सकता॰

111. सारे चेहरे अपने आप को हवाले करेंगे ज़िंदा, सदा रहने वाले को, जो कोई दबे हैं उनकी खताओं से होंगे नाकामयाब॰

112. जहाँ तक वो जिन्होंने नेक आमाल किया, ईमान रखते हुए, उनको नहीं होगा कोई डर नाइंसाफी या मुसीबत का॰

113. हमने इसतरह नाज़िल किया उसे, एक अरबी कुरान, और हमने बयान किया उसमें सारे किस्मों कि पेशीनगोईयों को, ताके वो बचाये जा सकें, या वो सबब बने उनके तवज्जो लेने का॰

114. सबस आला हैं **अल्लाह**, सिर्फ सच्चे बादशाह॰ न जल्दी करो कुरान को बोलने में इससे पहले कि वो तुम्हें नाज़िल किया जाता है, और कहो, "मेरे रब, बढ़ाईये मेरा इल्म॰"

*इंसानें नाकामयाब होते हैं एक पुख्ता फैसला लेने के लिए**

115. हमने आज़माया आदम को माज़ी में, लेकिन वो भूल गया, और हमने पाया उसे हिचकिचाने वाला॰

116. याद करो कि हमने कहा फरिश्तों से, "गिर जाओ आदम के सामने सजदे में॰" वो सजदे में गिर गये, सिवाए शैतान के; उसने इंकार किया॰

117. हमने फिर कहा, "ऐ आदम, यह है एक दुश्मन तुम्हारा और तुम्हारी बिवी का॰ उसे तुमको निकालने न दो जन्नत से बाहर, ताके तुम आफत ज़दा न हो जाओ॰

118. "तुम्हें ज़मानत दी गई है उसमें कभी न तो भूखा, नाहीं बगैर पनाह के रहने का॰

119. "नाहीं तुम्हें प्यास लगेगी, नाहीं झेलोगे कोई गर्मी उसमें॰"

120. लेकिन शैतान ने उसको वसवसे किया, कहते हुए, "ऐ आदम, मुझे तुमको दिखाने दो हमेशगी और न खत्म होने वाली बादशाहत का दरख्त॰"

**20:115 जब शैतान ने दावा किया अल्लाह के मुकम्मल इक्तेदार को (38:69), तुम और मैं नहीं ले पाये एक पुख्ता फैसला शैतान के खिलाफ• अल्लाह हमें दे रहे हैं एक मौका, इस ज़मीन पर, हमें खुदको बक्शवाने के लिए ठुकराते हुए शैतान को और बरकरार रखते हुए अल्लाह के मुकम्मल इक्तेदार को (अपेन्डिक्स 7)•*

121. उन्होंने उससे खाया, जिसपर उनके जिस्में ज़ाहिर हो गये उनको, और उन्होंने अपने आप को ढाकने कि कोशिश की जन्नत के पत्तों से• आदम इस तरह उसके रब का नाफरमान हुआ, और गिर गया•

122. उसके बाद, उसके रब ने उसे चुना, उसकी मगफरत की, और उसे हिदायतयाफ्ता किया•

123. उन्होंने कहा, "नीचे जाओ वहाँ से, तुम सारे• तुम दुश्मन हो एक दूसरे के• जब हिदायत आये तुम्हारे पास मेरी तरफ से, जो कोई मेरे हिदायत की पैरवी करेगा गुमराह नहीं होगा, नाहीं झेलेगा कोई मुसीबत•

काफिरों के लिए:
मुसीबत ज़दा ज़िंदगी
लाज़िम

124. "जहाँ तक वो जो नज़रअंदाज़ करते हैं मेरे पैगाम को, उस के पास होगी एक मुसीबत ज़दा ज़िंदगी, और हम उसे दोबारा ज़िंदा करते हैं हश्र के दिन पर, अंधा•"

125. वो कहेगा, "मेरे रब, आपने मुझे क्यों अंधा हाज़िर किया, जबकि मैं हुआ करता था एक देखने वाला?"

126. वो कहेंगे, "क्योंकि तुम भूल गये हमारी आयतों को जब वो तुम्हारे पास आये, अब तुम भुला दिये गये हो•"

127. हम इस तरह बदला देते हैं उनको जो हद से गुज़र जाते हैं और इंकार करते हैं ईमान लाने को उनके रब कि आयतों में• आज़ाब अगली ज़िंदगी में है कहीं बुरा और दाईम•

128. क्या कभी उनको सूझता है कैसे हमने फनाह किया कई पिछली नस्लों को? वो चल रहें हैं अब उनसे पहलों के घरों में• ये निशानियाँ हैं उनके लिए जो इल्म रखते हैं•

129. अगर वो तुम्हारे रब के पहले से तय किये गये मनसूबे के लिए न होता, उनका इंसाफ कर दिया गया होता फौरन•

130. इसलिए, सब्र करो उनके बयानों कि सूरत में, और तारीफ और बड़ाई करो तुम्हारे रब की सूरज के निकलने से पहले और सूरज के डूबने से पहले• और रात के दरमियान उनकी बड़ाई करो, इसके अलावा दिन के दोनों छोरों पर, ताके तुम खुश रह सको•

131. और हिरसा न करो जो हमने इनायत किया है किसी दूसरे लोगों पर• ऐसे हैं आरज़ी गहने इस ज़िंदगी के, जिससे हम उनको आज़माईश में डालते हैं• जो तुम्हारे रब मुहय्या करते हैं तुम्हारे लिए है कहीं बेहतर, और दाईम•

वालिदैन कि ज़िम्मेदारी

132. तुम्हें ताकीद करनी चाहिए तुम्हारे कुम्बे को राबता नमाज़ें *(सलात)* कायम करने के लिए, और साबित कदमी से जमें रहें ऐसा करने में• हम नहीं पूछते तुमसे किसी नियामतों के लिए; हम हैं जो मुहय्या करते हैं तुम्हारे लिए• आखिरकार जीत होती है नेककारों की•

रसूलें क्यों?

133. उन्होंने कहा, "अगर सिर्फ वो दिखा सकता एक मौजेज़ा हमें उसके रब कि तरफ से!" क्या उन्होंने काफी मौजज़ों को नहीं पाया पिछले पैगामों के साथ?

134. अगर हम फनाह कर देते उनको इससे पहले, उन्होंने कहा होता, "हमारे रब, अगर आपने भेजा होता एक रसूल हमारी तरफ, हमने आपकी आयतों कि पैरवी की होती, और बचे होते इस शर्म और ज़िल्लत से•"

135. कहो, "हम सब इंतेजार कर रहे हैं, तो इंतेज़ार करो; तुम यकीनन जान जाओगे कौन हैं सही राह पर, और कौन हैं सही तौर पर हिदायतयाफ्ता•

सुरह 21: नबियें
(अल अंबिया)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

136. तेज़ करीब आ रहा है हिसाब लेना लोगों के लिए, लेकिन वो हैं गाफिल, नफरत करने वाले•

नये सबूत कि तरफ मुखालिफत

137. जब एक सबूत आता है उनकी तरफ उनके रब कि तरफ से, जो है नया, वो सुनते हैं उसे बेपरवाही से•

138. उनके ज़हने हैं बेपरवाह • और खतावारें खुफिया तौर पर गुफ्तुगू करते हैं: "क्या वो सिर्फ एक इंसान नहीं तुम्हारी तरह? क्या तुम कबूल करोगे जादू जो तुमको पेश किया गया है?" *

139. उसने कहा, "मेरे रब जानते हैं सारी सोच आसमान और ज़मीन में• वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•"

140. उन्होंने यहाँ तक कहा, "नज़रों के धोखे," "उसने उसे बना लिया," और, "वो है एक शायर• उसे दिखाने दो पिछले रसूलों के जैसा एक मौजज़ा•"

141. हमने कभी फनाह नहीं किया एक ईमान रखने वाली कौम को माज़ी में• क्या ये लोग हैं ईमान वालें?

142. हमने नहीं भेजा तुमसे पहले सिवाए मर्दो को जिनको हमने इल्हाम किया• पूछो उनसे जो आसमानी किताब जानते हैं, अगर तुम नहीं जानते•

143. हमने नहीं दिया उनको जिस्में जो खाते नहीं थे, नाहीं वो थे हमेशा ज़िंदा रहने वाले•

144. हमने उनकी तरफ हमारा वादा पूरा किया; हमने बचाया उनको एक साथ जिस किसी को हमने चाहा, और फनाह किया खतावारों को•

145. हमने भेजा है नीचे तुम्हारी तरफ एक आसमानी किताब लिये हुए तुम्हारा पैगाम• क्या तुम नहीं समझते?

146. कई एक कौम हमने खत्म किया उनके खता कि वजह से, और हमने बदल दिया दूसरे लोगों को उनकी जगह में•

147. जब हमारा सिलाह गुज़र गया, उन्होंने शुरू कर दिया दौड़ना•

148. न दौड़ो, और वापस आओ तुम्हारे ऐशों और तुम्हारे महलों कि तरफ, इसलिए कि ज़रूरी है तुम्हें ज़िम्मेदार ठहराया जाना•

149. उन्होंने कहा, "हाय हो हमें• हम थे वाकई गुनाहगार•"

150. यह जारी रहा होने का उनका ऐलान, जब तक हमने उनको पूरी तरह मिटा नहीं दिया•

151. हमने पैदा नहीं किया आसमानों और ज़मीन को, और सारी चीज़ें उनके दरमियान सिर्फ तमाशे के लिए•

152. अगर हमें तमाशे कि ज़रूरत होती, हमने उसे शुरू किया होता बगैर इनमें से किसी के, अगर वो होता जो हम चाहते करने के लिए•

153. बलिके, वो है हमारा मनसूबा सच की मदद करने का झूठ के खिलाफ, ताके उसे शिकस्त दें• तुमको हाय हो बयानों के लिए जो तुम बोलते हो•

154. उनके हैं हर कोई आसमानों और ज़मीन में, और जो हैं उनके पास नहीं हैं कभी ज़्यादा मगरूर उनकी इबादत करने के लिए, नाहीं वो कभी डगमगाते हैं•

155. वो बड़ाई करते हैं रात और दिन, बगैर कभी थकते हुए•

**21:3 हाँलाकि इंजील (मलाकाई 3:1) और कुरान (3:81) पेशीनगोई करते हैं अल्लाह के वादे के रसूल कि आमदगी का, जब वो वाकई पेश हुआ, मदद किये गये 'सबसे बड़े मौजज़ों में से एक' के ज़रिये (74:30-35), उसका सामना किया गया था बेपरवाहीपन*

एक अल्लाह

156. क्या उन्होंने खुदाओं को पाया हैं ज़मीन पर जो पैदा कर सकते हैं?

157. अगर उनमें होते *(आसमानों और ज़मीन में)* दूसरे खुदाएं सिवाए **अल्लाह** के, वहाँ होती अफरा तफरी• बड़ाई हो **अल्लाह** की; रब जिनके पास है मुकम्मल इक्तेदार• वो हैं आला उनके दावों से•

कभी सवाल न करो अल्लाह कि हिकमत पर

158. वो कभी पूछे नहीं जाते किसी चीज़ के लिए जो वो करते हैं, जबके दूसरे सारे सवाल किये जाते हैं•

159. क्या उन्होंने दूसरे खुदाओं को पाया सिवाए उनके? कहो, "दिखाओ मुझे तुम्हारा सबूत• ये पैगाम है मेरी नस्ल कि तरफ, पिछले सारे पैगामों को पूरा करते हुए•" वाकई, उनमें से ज़्यादातर सच को नहीं पहचानते; इस वजह से वो हैं इतने दुश्मनाना•

एक अल्लाह /
एक पैगाम /
एक मज़हब

160. हमने नहीं भेजा किसी रसूल को तुमसे पहले सिवाए इल्हाम के साथ: "कोई खुदा नहीं है सिवाए मेरे; तुम्हें सिर्फ मेरी इबादत करनी चाहिए•"

161. इसके बावजूद, उन्होंने कहा, "सबसे मेहरबान ने जना है एक बेटा!" बड़ाई हो उनकी• सारे *(रसूलें)* हैं *(उनके)* अज़ीज बंदे•

162. वो कभी नहीं बोलते उनके खुद कि मरज़ी से, और वो सख्ती से पैरवी करते हैं उनके हुक्मों की•

वहेम शिफाअत का

163. वो जानते हैं उनका मुस्तकबिल और उनका माज़ी• वो शिफाअत नहीं करते, सिवाए उनके लिए जो पहले से कबूल किये जा चुके हैं उनकी तरफ से, और वो हैं परेशान उनके खुदके गर्दनों के बारे में•*

164. अगर उनमें से कोई दावा करता है उनके सिवाए एक खुदा होने का, हम बदला देते हैं उसे जहन्नम से; हम इस तरह बदला देते हैं गुनहगार को•

बिग बैंग थ्योरी
*तसदीक की गई है**

165. क्या ईमान नहीं रखने वालों ने एहसास नहीं किया कि आसमान और ज़मीन हुआ करता था एक ठोस अंबार जिसे हमने फोड़ा वजूद में? और पानी से हमने बनाये सारी जानदार चीज़ें• क्या वो ईमान लायेंगे?

166. और हमने रखा ज़मीन पर तवाजुनों को, ताके वो लुढ़क न जायें उसके साथ, और हमने रखा सीधी सड़कें उसमें, ताके वो हो सकें हिदायतयाफ्ता•

167. और हमने बनाया आसमान को एक महफूज़ छत• इसके बावजूद, वो उसमें सारी निशानियों से हैं पूरी तरह गाफिल •

168. और वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया रात और दिन, और सूरज और चाँद; हर एक तैर रहा है उसके खुदके दायरे में•

169. हमने कभी मुकर्रर नहीं किया तुमसे पहले किसी के लिए दाईम ज़िंदगी; अगर तुम मर जाओ, क्या वो हैं हमेशा के लिए ज़िंदा रहने वाले?

170. हर रूह चखेगा मौत, इसके बाद कि हम तुम्हें डालते हैं आज़माईश में मुसीबत और तरक्की के ज़रिये, फिर हमारी तरफ तुम आखिरकार लौटते हो•

सारे रसूलों का मज़ाक उड़ाया जाता है

171. जब वो जो कुफ्र करते हैं तुमको देखते हैं, वो तुम्हारा मज़ाक उड़ाते हैं: "क्या ये हैं वो जो ललकारता है तुम्हारे खुदाओं को?" इस दौरान में, वो रहते हैं पूरी तरह बेपरवाह सबसे मेहरबान कि तरफ से पैगाम के•

*21:28 शैतान का सबसे ज़्यादा असरदार झासा है शिफाअत का वहेम (देखें अपेन्डिक्स 8)•

*21:30 बिग बैंग थ्योरी अब मदद की गई है पैदाकरने वाले के बिलाखता रियाज़ी कोड के ज़रिये (अपेन्डिक्स 1)• इस तरह, वो अब एक थ्योरी नहीं; वो है एक कानून, एक साबित की गई हकीकत•

172. इंसान बेसब्र है कुदरती तौर पर• मैं यकीनन दिखाऊंगा तुम्हें मेरी निशानियाँ; इतनी जल्दी में न रहो•

173. वो ललकारते हैं: "कहाँ हैं वो *(आज़ाब)*, अगर तुम हो सच्चे?"

174. अगर सिर्फ वो जिन्होंने कुफ्र किया खुदको तसव्वुर कर सकते जब वो आग से अपने आप को बचाने कि कोशिश करेंगे; उनके चेहरों से और उनके पीठों से! कोई भी मदद नहीं करेगा उनकी तब•

175. वाकई, वो आयेगा उनकी तरफ अचानक, और वो होंगे पूरी तरफ हैरत ज़दा• वो नाहीं उससे बच सकेंगे, नाहीं वो पा सकते हैं कोई मोहलत•

176. रसूलें तुमसे पहले मज़ाक उड़ाये गये, और, इस वजह से, जिन्होंने उनका मज़ाक उड़ाया पाया आज़ाब उनके मज़ाक उड़ाने के लिए•

धुंधली अव्वलियतें

177. कहो, "कौन हिफाज़त कर सकता है तुम्हारी सबसे मेहरबान से रात के दरमियान या दिन के दरमियान?" वाकई, वो हैं पूरी तरह गाफिल उनके रब के पैगाम कि तरफ से•

178. क्या उनके पास हैं खुदाएं जो हिफाज़त कर सकते हैं उनकी हम से? वो यहाँ तक कभी उनकी खुदकी मदद नहीं कर सकते• नाहीं वो साथ दे सकते हैं एक दूसरे का जब वो हाज़िर किये जायेंगे हमारा सामना करने के लिए•

179. हमने मुहय्या किया है इन लोगों और उनके पुरखों के लिए, उनके बुढ़ापे तक• क्या वो नहीं देखते कि हर दिन ज़मीन पर लाता है उनको करीब अंजाम कि तरफ? क्या वो पलट सकते हैं इस निज़ाम को?

180. कहो, "मैं खबरदार कर रहा हूँ तुम्हें साथ खुदाई इल्हाम के मुताबिक में•" हाँलाकि, बहरा कभी नहीं सुन सकता पुकार, जब उनको खबरदार किया जाता है•

181. जब एक नमूना तुम्हारे रब के आज़ाब का मारता है उनको, वो फौरन कहते हैं, "हम थे वाकई गुनहगार•"

182. हम कायम करेंगे फैसले कि मिज़ानें हश्र के दिन पर• कोई रूह नहीं झेलेगी ज़रा सी भी नाइंसाफी• यहाँ तक के एक राई के बराबर दाना भी हिसाब किया जायेगा• हम सबसे ज़्यादा काबिल हैं हिसाब लेने वाले•

नबियें मूसा और हारून

183. हमने दिया मूसा और हारून को कानून कि किताब, एक रौशनाई, और एक ताकीद नेककारों के लिए•

184. वो जो एहतराम करते हैं उनके रब का, जब अकेले उनकी तन्हाई में भी, और वो फिक्र करते हैं घड़ी के बारे में•

185. यह भी है एक मुबारक ताकीद जो हमने भेजा नीचे• क्या तुम इंकार कर रहे हो इसे?

इब्राहीम

186. उससे पहले, हमने अता किया इब्राहीम को उसकी हिदायत और समझदारी, क्योंकि हम थे उससे पूरी तरह वाकिफ•*

187. उसने उसके वालिद और उसके लोगों से कहा, "क्या हैं ये मुर्तियाँ जिसकि तरफ तुम अपने आप को मनसूब कर रहे हो?"

188. उन्होंने कहा, "हमने पाया हमारे वालिदैन को उनकी इबादत करते हुए•"

189. उसने कहा, "वाकई, तुम और तुम्हारे वालिदैन हो गये हैं पूरी तरह गुमराह•"

*21:51 क्या इब्राहीम इतना चालाक था अल्लाह कि खोज करने के लिए, या, क्या अल्लाह ने अता किया उसे अक्ल इसलिए कि वो जानते थे कि वो मुस्तेहिक था बचाये जाने के लिए? जैसा पता चलता है, यह पूरी दुनिया पैदा की गई थी बक्शवाने के लिए हममें से उन्हें जो मुस्तेहिक हैं बक्शे जाने के लिए• जब फरिश्तों ने मशवरा दिया कि सारे बागियें, इंसाने और जिनें, ज़रूरी है जिलावतन किये जाये अल्लाह कि सल्तनत के बाहर, 'मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते' (2:30)• उसी वक्त, ये दुनिया साबित करती है शैतान के नाकाबिलियत एक खुदा जैसे की (अप• 7)•

190. उन्होंने कहा, "क्या तुम हमसे सच बोल रहे हो, या तुम खेल रहे हो?"

191. उसने कहा, "तुम्हारे सिर्फ रब हैं आसमानों और ज़मीन के रब, जिन्होंने उनको पैदा किया• यह है शहादत जिसकी मैं गवाही देता हूँ•

192. "मैं **अल्लाह** कि कसम खाता हूँ, जैसे ही तुम चले जाओ, मेरे पास है एक मनसूबा तुम्हारे मुर्तियों से बरताव करने का•"

193. उसने तोड़ दिया उनको टुकड़ों में, सिवाए एक बड़े वाले के, ताके वो उसको मुखातिब करें•

194. उन्होंने कहा, "जिसकिसी ने यह हमारे खुदाओं को किया वाकई है एक खतावार•"

195. उन्होंने कहा, "हमने एक नौजवान को सुना उनको धमकाते हुए; वो पुकारा जाता है इब्राहीम•"

196. उन्होंने कहा, "लाओ उसे सारे लोगों कि नज़रों के सामने, ताके वो गवाही दे सकें•"

197. उन्होंने कहा, "क्या तुमने यह किया हमारे खुदाओं को, ऐ इब्राहीम?"

इब्राहीम साबित करते हैं उनका नज़रिया

198. उसने कहा, "ये वो बड़ा वाला है जिसने यह किया• जाओ उनसे पूछो, अगर वो बोल सकते हैं•"

199. वो ताज्जुब में पड़ गये, और खुद से कहा, "वाकई, तुम हो जो खता कर रहे थे•"

200. इसके बावजूद, वो उनके पुराने नज़रियों कि तरफ पलट गये: "तुम अच्छे से जानते हो कि ये कभी नहीं बोल सकते•"

201. उसने कहा, "क्या तुम फिर इबादत करते हो **अल्लाह** के सिवाए जो नहीं रखता है ताकत तुम्हें फायदा या तुम्हें नुकसान पहुँचाने का?

202. "तुमने पा लिया है शर्म **अल्लाह** के सिवाए बुतों कि इबादत करते हुए• क्या तुम नहीं समझते?"

गहरा मौजज़ा

203. उन्होंने कहा, "उसे जला दो और मदद करो तुम्हारे खुदाओं की, अगर यह है जो तुम फैसला करते हो करने के लिए•"

204. हमने कहा, "ऐ आग, ठंड़ा और महफूज़ हो जा इब्राहीम के लिए•"*

205. इस तरह, उन्होंने उसके खिलाफ साज़िश किया, लेकिन हमने उनको बनाया हारने वाला•

206. हमने उसे बचाया, और हमने बचाया लूत को, उस ज़मीन कि तरफ जिसे हमने मुबारक किया सारे लोगों के लिए•

207. और हमने अता किया उसे इसहाक और याकूब एक तोहफे जैसा, और हमने बनाया उन दोनों को नेककार•

इब्राहीम ने:
पहुँचाये सारे
इस्लाम के मज़हबी फराएज़ों को

208. हमने बनाया उनको इमामें जिन्होंने हिदायत किया हमारे हुक्मों के मुताबिक में, और हमने सिखाया उनको कैसे नेककारी वाले काम किया जाये, और कैसे राबता नामाज़ों *(सलात)* और ज़रूरी खैरात *(ज़कात)* को कायम किया जाये•* हमारी तरफ, वो थे पुरजोश इबादत करने वाले•

लूत

209. जहाँ तक लूत के लिए, हमने अता किया उसे हिकमत और इल्म, और हमने बचाया उसे उस कौम से जो करती थी हकारत वाले कामों को, वो थे गुनाहगार और बुरे लोग•

210. हमने दाखिल किया उसे हमारी रहमत में; इसलिए कि वो था नेककार•

नुह

211. और, उससे पहले, नुह ने पुकारा और हमने उसको जवाब दिया• हमने बचाया उसे और उसके कुम्बे को बड़ी तबाही से•

**21:69 "और महफूज़" बगैर "ठंड़ा," सबब बना होता इब्राहीम के जम जाने का•*

**21:73 जब कुरान नाज़िल हुआ था, सारे मज़हवी फराएज़ पहले से कायम किये गये थे इब्राहीम के ज़रिये (2:128, 16:123, 22:78)•*

212. हमने मदद किया उसकी लोगों के खिलाफ जिन्होंने ठुकराया हमारी आयतें• वो थे बुरे लोग, इसलिए हमने डुबो दिया उन सारों को•

दाऊद और सुलैमान

213. और दाऊद और सुलैमान, जब उन्होंने एक बार फैसला किया किसी के अनाज के मुताल्लिक जो तबाह कर दिया गया था दूसरे के भेड़ से• हमने देखा उनका इंसाफ•

214. हमने अता किया सुलैमान को सही समझ, हाँलाकि हमने बक्शा वो दोनों को हिकमत और इल्म के साथ• हमने हवाले किया पहाड़ों को खिदमत करने के लिए दाऊद की *(अल्लाह की)* बड़ाई करने में, साथ साथ परिंदे• यह है जो हमने किया•

215. और हमने उसे ढालों को बनाने का हुनर सिखाया तुम्हें जंग में हिफाज़त करने के लिए• क्या तुम फिर शुक्रगुज़ार हो?

216. सुलैमान के लिए, हमने हवाले किया हवा के तेज़ी से चलने और बहने का उसके मर्ज़ी के मुताबिक• वो रूख कर सकता था उसकी जैसे उसने चाहा, जिसकिसी ज़मीन कि तरफ उसने चुना, और हमने मुबारक किया उसके लिए ऐसी ज़मीन• हम हैं सारी चीज़ों से पूरी तरफ वाकिफ•

217. और शयातीनों में से वहाँ थे वो जो डुबकी लगाते थे उसके लिए *(समंदर से फसल हासिल करने के लिए)*, या करते कुछ भी दूसरा वो हुक्म देता उनको करने के लिए• हमने हवाले किया उनको उसकी खिदमत में•

याकूब

218. और याकूब ने इल्तेजा कि उसके रब से: "मुसीबत पड़ गई मुझ पर, और, सारे रहम करने वालों से, आप हैं सबसे रहम वाले•"

219. हमने जवाब दिया उसका, हल्का किया उसकी मुसीबत, और बहाल किया उसके लिए उसका कुम्बा, यहाँ तक के दुगने बरावर• वो थी रहमत हमारी तरफ से, और एक ताकीद इबादत करने वालों के लिए•

220. इसके अलावा, इस्माईल, इदरीस, जुल किफ्ल; सारे थे सावित कदम, सब्र करने वाले•

221. हमने दाखिल किया उनको हमारी रहमत में, इसलिए कि वो थे नेककार•

युनुस

222. और ज़न्नून *(युनुस, "वो जो है एक 'न' के साथ उसके नाम में")*, छोड़ दिया उसका काम ऐतराज़ में, सोचते हुए कि हम काबू नहीं कर सकते थे उसे• वो खत्म हुआ इल्तेजा करते हुए अंधेर से *(बड़ी मछली के पेट से)*: "कोई खुदा नहीं सिवाए आपके• आपकी बड़ाई हो• मैंने किया है एक बड़ा गुनाह•"

223. हमने जवाब दिया उसका, और बचाया उसे आफत से; हम इस तरह बचाते हैं ईमानवालों को•

ज़करिया और याहया

224. और ज़करिया ने उसके रब से इल्तेजा किया: "मेरे रब, न रखिये मुझे बगैर एक वारिस के, हाँलाकि आप हैं सबसे अच्छे वारिस•"

225. हमने* जवाब दिया उसका और अता किया उसे याहया, हमने ठीक किया उसकी बिवी को उसके लिए• वो इसलिए कि वो जल्दबाज़ी करते थे नेककारी वाले काम करने के लिए, और हमसे इल्तेजा करते खुशीं, साथ साथ डर की हालातों में• हमारी तरफ, वो थे एहतराम करने वाले•

मरयम और ईसा

226. जहाँ तक वो जिसने बरकरार रखा उसके पाक दामनपन को, हमने फुंका उसमें हमारी रूह से, और इस तरह, हमने बनाया उसे और उसके बेटे को एक निशानी पूरी दुनिया के लिए•

एक अल्लाह/ एक मज़हब

227. तुम्हारी जमात है लेकिन एक जमात, और सिर्फ मैं हूँ तुम्हारा रब; तुम्हें सिर्फ मेरी इबादत करनी चाहिए•

**21:90 पूरे कुरान में एक से ज़्यादा वाले हाल का इस्तेमाल होना इशारा करता है फरिश्तों का शामिल होना• यह साफ है 3:39 से और इंजील से कि फरिश्तों ने कसरत से वरताव किया ज़करिया के साथ, जब उन्होंने दिया उसे खुशखबरी याहया के बारे में• देखें अपेन्डिक्स 10•*

228. बहेरहाल, उन्होंने बांटा अपने आप को हुज्जत करते हुए मज़हबों में• वो सारे आयेंगे वापस हमारी तरफ *(इंसाफ के लिए)*•

229. जहाँ तक वो जो नेककारी वाले काम करते हैं, ईमान रखते हुए, उनके आमाल ज़ाया नहीं जायेंगे; हम ज़प्त कर रहें हैं उसे•

230. यह मना है लौटने के लिए किसी कौम को हमने जिसे फनाह किया•

*दुनिया का खत्म होना**

231. नहीं जब तक याजूज और माजूज दोबारा ज़ाहिर न हों,* वो फिर लौटेंगे—वो आयेंगे हर तरफ से•

232. तब है जब अटल पेशीनगोई गुज़र जायेगी, और काफिरें घूरेंगे दहशत में: "हाय हो हमारे लिए; हम रहें हैं गाफिल• वाकई हम रहें हैं गुनाहगार•"

अगली ज़िंदगी

233. तुम और बुतें जिनकी तुम इबादत करते हो **अल्लाह** के सिवाए इंधन होंगे जहन्नम के लिए; ये है तुम्हारी न बदलने वाली तकदीर•

234. अगर वो खुदाएं होते, वो खत्म नहीं होते जहन्नम में• उसके सारे बाशिंदे रहते हैं उसमें हमेशा के लिए•

235. वो उसमें आहें भरेंगे और कराहेंगे , और उनके पास नहीं होगी इजाज़त किसी खबर के लिए•

236. जहाँ तक वो जो मुस्तेहिक हुए हमारे शानदार इनामों के, वो महफूज़ रखे जायेंगे उससे•

नेककार

237. वो नहीं सुनेंगे उसकी सनसनाहट• वो मज़े लेंगे एक ठिकाने का जहाँ वो पा सकते हैं सारी चीज़ जिसकी वो तमन्ना करते हैं, हमेशा के लिए•

238. बड़ी दहशत उनको परेशान नहीं करेगी, और फरिश्ते इस्तेकबाल करेंगे उनका खुशी से: "यह है तुम्हारा दिन जो तुमसे वादा किया गया है•"

हश्र का दिन

239. उस दिन पर, हम मोड़ देंगे आसमान को, एक किताब के मोड़ने जैसा• जैसे हमने शुरू किया पहली खिलकत, हम उसे दोहरायेंगे• यह है हमारा वादा; हम यकीनन उसे अंजाम देंगे•

240. हमने फरमान किया है ज़बूर में, साथ साथ दूसरी आसमानी किताबों में, कि मेरे नेक इबादत करने वाले वारिस होंगे ज़मीन के•

241. यह है एक ऐलान लोगों के लिए जो हैं इबादत करने वाले•

242. हमने भेजा है तुम्हें हमारी रहमत कि वजह से पूरी दुनिया की तरफ•

243. ऐलान करो, "मुझे दिया गया है खुदाई इल्हाम कि तुम्हारे खुदा हैं एक खुदा• क्या तुम फिर फरमानबरदारी करते हो?"

244. अगर वो पलट जायें, तो कहो, "मैंने तुमको अच्छे से खाबरदार किया है, और मुझे कोई इल्म नहीं कितनी जल्दी या देर से *(आज़ाब)* आयेगा तुम्हारी तरफ•

245. "वो हैं पूरी तरह वाकिफ तुम्हारे ऐलानियां बातों से, और वो हैं पूरी तरह वकिफ सारी चीज़ें तुम छिपाते हो•

246. "मैं तो बस इतना जानता हूँ, यह दुनिया है एक आज़माईश तुम्हारे लिए, और एक आरज़ी मज़ा•

247. कहो, "मेरे रब, आपका फैसला है कामिल इंसाफ• हमारे रब हैं सवसे मेहरबान; सिर्फ उनकी मदद तलाश की जाती है तुम्हारे दावों कि सूरत में•"

**21:96 साल 2270 ऐडी होते ही, शुक्र है कुरान में अल्लाह के रियाज़ी मौजज़े के लिए (अपेन्डिक्स 1), अमेरिका मरकज़ होगा इस्लाम का, और पूरी दुनिया में करोड़ों ईमान ला चुके होंगे कुरान में (9:33, 41:53, 48:28, 61:9)• याजूज और माजूज (मिसाल्या नामें खवीस कौमों की), होंगे सिर्फ गढ़ें वहशीपन के, और वो हमला करेंगे फरमानबरदारों पर• वो है जब दुनिया खत्म हो जायेगी*

सुरह 22: ज़ियारत
(अल हज)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

248. ऐ लोगों, तुम्हे तुम्हारे रब का एहतराम करना चाहिए, इसलिए कि वक्त का लरज़ना है बहुत दहशतनाक•

249. जिस दिन तुम देखोगे उसे, एक दूध पिलाती माँ भी तर्क कर देगी उसके मासूम बच्चे को, और एक हामिला औरत गिरा देगी उसके जनीन को• तुम दखोगे लोगों को लड़खड़ाते हुए, ऐसे जैसे कि वो नशे में हैं, इसके बावजूद कि वो नशे में नहीं हैं• यह है इसलिए कि अल्लाह का आज़ाब है इतना ज़बरदस्त•

250. लोगों के दरमियान, वहाँ हैं वो जो बहेस करते हैं अल्लाह के बारे में बगैर इल्म के, और पैरवी करते हैं हर बागी शैतान की•

251. ये फरमान किया गया है कि जो कोई जोड़ता है अपने आप को उसके साथ, वो बहकायेगा उसे और हिदायत करेगा उसकी जहन्नम के आज़ाब कि तरफ•

कहाँ से आये हम?

252. ऐ लोगों, अगर तुम्हें कोई शक है दोबारा ज़िंदा किये जाने के बारे में; *(याद रखो कि)* हमने पैदा किया तुमको धूल से, और उसके बाद एक छोटी बूंद से, जो बदल जाता है एक झूलते हुए *(एमब्रियो)* में, फिर वो बन जाता है एक जनीन जिसे ज़िंदगी दी जाती है या माना जाता है मुर्दा• हम इस तरह वाज़े करते हैं चीज़ों को तुम्हारे लिए• हम बसाते हैं कोखों में जो कुछ हम चाहते हैं एक पहले से तय किये गये मुद्दत के लिए•* हम फिर लाते हैं तुमको बाहर मासूम बच्चों जैसा, फिर तुम पहुँचते हो बुलुगत को• जबके तुममें से कुछ जवान मरते हैं, दूसरे जीते हैं सबसे बुरी उम्र के लिए, सिर्फ जानने के लिए कि और ज़्यादा इल्म हासिल नहीं किया जा सकता एक मुकर्रर हद के पार• इसके अलावा, तुम देखते हो एक ज़मीन जो है मुर्दा, फिर हम जैसे ही बौछार करते हैं उसे पानी से, वो थरथराने लगती है जिंदगी से और उगाती है सारे किस्मों के खुबसूरत पौधे•

253. यह साबित करता है कि अल्लाह हैं सच, और ये कि वो दोबारा ज़िंदा करते हैं मुर्दे को, और ये कि वो हैं कादिरे मुतलक•

254. और ये कि वक्त आ रहा है, कोई शक नहीं उसके बारे में, और ये कि अल्लाह फिर से ज़िंदा करते हैं उनको जो है कब्रों में•

एक आम किस्सा

255. लोगों के दरमियान वहाँ है वो जो बहेस करता है अल्लाह के बारे में बगैर इल्म के, और बगैर हिदायत के, और बगैर एक रौशन करती हुई किताब के•

256. तकब्बुर से वो कोशिश करता है लोगों को अल्लाह कि राह से फेरने का• वो इस तरह पाता है रूसवाई इस ज़िंदगी में, और हश्र के दिन पर हम हवाले करते हैं उसे जलते हुए आज़ाब कि तरफ•

257. यह है जो तुम्हारे हाथों ने तुम्हारे लिए आगे भेजा है• अल्लाह कभी नाइंसाफ नहीं हैं लोगों कि तरफ•

थाली के बैंगनें

258. लोगों के दरमियान वहाँ है वो जो इबादत करता है अल्लाह कि शर्ती तौर पर• अगर चीज़ें उसके मुताबिक होती हैं, वो मुतमईन होता है• लेकिन अगर कोई अज़ियत पड़ती है उसपर, वो उल्टे पलट जाता है• इस तरह, वो खोता है यह ज़िंदगी और अगली ज़िंदगी दोनो• ऐसा है असल नुकसान•

259. वो बुतपरस्ती करता है अल्लाह के सिवाए जो नहीं रखता है कोई ताकतउसे नुकसान या उसे फायदा पहुँचाने का; ऐसी है असल गुमराही•

*22:5 कुरान का रियाज़ी मौजज़ा बुनियाद है नम्बर 19 पर• जैसा पता लगता है, यह नम्बर नुमाइंदगी करता है खालिक के दस्तखत का उनकी खिलकतों पर• इसतरह, तुम्हारे और मेरे पास हैं 209 हड्डीयाँ हमारे जिस्मों में (209 = 19x11)• हमल कि मुद्दत एक पूरे जनीन अरसे के लिए है 266 दिनें (19x14) (लैंगमेन्स मेडिकल एमब्रियोलॉजी, टी• डब्ल्यु• सैडलर, पेज 88, 1985)•

260. वो बुत बनाता है उसे जो है ज़्यादा लायक उसे फायदे के बजाये उसे नुकसान देने के• क्या एक अफसोसनाक रब! क्या एक अफसोसनाक साथी!

261. अल्लाह दाखिल करते हैं उन्हें जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं बहती हुई नहरों के साथ बागों में• सारी चीज़ें हैं अल्लाह कि मर्ज़ी के मुताबिक में•

खुशी अभी,
और हमेशा के लिए

262. अगर कोई भी सोचता है कि अल्लाह कभी मदद नहीं कर सकते हैं उसकी इस ज़िंदगी में और अगली ज़िंदगी में, उसे रूजु होने दो पूरी तरह आसमान *(में उसके खालिक)* कि तरफ, और तोड़ देने दो *(उसका आसरा किसी और पर)*• वो फिर देखेगा कि ऐसा मनसूबा खारिज करता है कोई चीज़ जो उसे परेशान करती है•

263. हमने इस तरह नाज़िल किया है साफ आयतें इसमें, फिर अल्लाह हिदायत करते हैं जिसकिसी को वो चाहते हैं•

अल्लाह: सिर्फ मुंसिफ

264. जो कोई ईमान रखते हैं, जो कोई यहूदी हैं, तबदील हुए, ईसाईयें, पारसियें, और बुतपरस्ती करने वाले, अल्लाह हैं वाहिद जो इंसाफ करेंगे उनके दरमियान हश्र के दिन पर• अल्लाह गवाह होते हैं सारी चीज़ों के•

265. क्या तुम एहसास नहीं करते कि अल्लाह को सजदा करते हैं हर कोई आसमानों और ज़मीन में, और सूरज, और चाँद, और सितारे, और पहाड़ें, और दरख्तें, और जानवरें, और कई लोग? कई दूसरे लोगों में से हवाले किये गये हैं तबाह होने के लिए• जिसकिसी को अल्लाह शर्मसार करते हैं, कोई भी उसकी इज़्जत नहीं करेगा• सारी चीज़ें हैं अल्लाह कि मर्ज़ी के मुताबिक में•

कितना दहशतनाक
*है जहन्नम!**

266. यहाँ हैं दो जमातें जो लड़ रहे हैं उनके रब के मुताल्लिक• जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, उनके पास होंगे आग के सिले कपड़े उनके लिए• जहन्नमी सय्याल उंडेला जायेगा उनके सरों के ऊपर•

267. वो सबब बनेगा उनके अंदरूनियों के पिघलने का, साथ साथ उनके चमड़ियों का•

268. वो कैद किये जायेंगे लोहे के लोटों में•

269. जब भी वो कोशिश करेंगे ऐसी मुसीबत से निकलने की, वो ज़बरदस्ती उसमें वापस कर दिये जायेंगे: "चखो जलने का आज़ाब•"

जन्नत की
खुशी

270. अल्लाह दाखिल करेंगे उन्हें जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं बहती हुई नहरों के साथ बागों में• उन्हें सजाया जायेगा उसमें सोने, और मोतियों के कड़ों से, और उनके लिबासे उसमें होंगे रेशम के•

271. उनकी हिदायत की गई है अच्छे लफ्जों कि तरफ; उनकी हिदायत की गई है सबसे तारीफ किये गये की राह में•

272. यकीनन, जो कोई कुफ्र करते हैं और पलटते हैं दूसरों को अल्लाह कि राह से, और मुकद्दस मस्जिद से जिसे हमने चुना सारे लोगों के लिए—चाहे वो बाशिंदे हों या ज़ियारत करने वाले—और तलाश करते हैं उसे खराब करने और उसे बिगाड़ने का, हम उनको तकलीफ में डालेंगे दर्दनाक आज़ाब के साथ•

*22:19-22 लोग जिन्होंने इसरार किया है जहन्नम को जाने का यकीनी तौर पर गिला करेंगे: 'अगर हमें पता होता यह कितना बुरा है, हम दूसरी तरह से पेश आते•' उनसे कहा जायेगा कि जहन्नम की वहशतें इशारा किये गये थे उनको सबसे ज़्यादा साफ, हाँलाकि मिसाल्या, तरीकों में• यह गौर किया जाना चाहिए कि जन्नत और जहन्नम तकरीबन बिलाकसर बयान किये गये हैं कुरान में एक साथ•

इस्लाम में सारे फराइज़ों कि तरह, हज,
*मुकर्रर किया गया इब्राहीम के ज़रिये**

273. हमने मुकर्रर किया इब्राहीम को मुकद्दस जगह को कायम करने के लिए: "तुम्हें बुतपरस्ती नहीं करनी चाहिए किसी दूसरे खुदा की सिवाए मेरे, और पाक करो मेरे मुकद्दस जगह को उनके लिए जो उसकी ज़ियारत करते हैं, जो कोई उसके करीब रहते हैं, और वो जो झुकते और सजदा करते हैं•

274. "और ऐलान करो कि लोगों को हज ज़ियारत कायम करना चाहिए•* वो आयेंगे तुम्हारे पास चलते हुए या सवारी करते हुए मुखतलिफ थके हुए *(सवारी करने के ज़रियों)* पर• वो आयेंगे सबसे दूर वाली जगहों से•"

275. वो तलाश कर सकते हैं तिजारती फायदों को, और उन्हें अल्लाह के नाम का ज़िक्र करना चाहिए मखसूस किये गये दिनों के दरमियान उनको साथ मवेशी मुहय्या किये जाने के लिए• "खाओ उससे और खिलाओ मायूस और गरीब को•"

276. उन्हें उनके फराइज़ों को पूरा करना, उनके कसमों को पूरा करना, और पुराने मुकद्दस जगह का ज़ियारत करनी चाहिए•

277. जो कोई एहतराम करते हैं अल्लाह कि तरफ से मुकर्रर किये गये तरीकों का मुस्तेहिक हुए हैं एक अच्छे इनाम के उनके रब के पास• सारे मवेशी हलाल किये गये हैं तुम्हारे खाने के लिए, सिवाए उनके जो खास तौर पर मना किये गये हैं तुम्हारे लिए• तुम्हें बुतपरस्ती के घिनौनेपन से बचना, और झूठी गवाही देने से बचना चाहिए•

278. तुम्हें तुम्हारी बंदगी को पूरी तरह सिर्फ अल्लाह के लिए बरकरार रखना चाहिए• जो कोई कायम करता है किसी बुत को अल्लाह के सिवाए है उसकी तरह जो गिर गया आसमान से, फिर झपट लिया जाता है गिदों से, या उड़ा दिया जाता है दूर हवा के ज़रिये एक गहरी खाई में•

279. वाकई, जो कोई अल्लाह कि तरफ से मुकर्रर किये गये तरीकों का एहतराम करते हैं इज़हार करते हैं उनके दिलों कि नेककारी•

मवेशी कुरबानियाँ
*हज के दौरान**

280. *(मवेशी)* मुहय्या करते हैं तुम्हें कई फायदों से एक मुद्दत के लिए, पुराने मुकद्दस जगह को हदिया दिये जाने से पहले•

281. हर जमात के लिए हमने मुकर्रर किये हैं तरीके जिससे वो ज़िक्र करते अल्लाह के नाम का उनको साथ मवेशी मुहय्या किये जाने के लिए• तुम्हारे खुदा हैं एक और वही खुदा; तुम सारों को उनका फरमानबरदार होना चाहिए• अच्छी खबर दो ताबेदार को•

282. ये वो हैं जिनके दिलें लरज़ जाते हैं अल्लाह बयान किये जाने पर, वो साबित कदमी से जमे रहते हैं मुसीबत के दौरान, वो राबता नमाज़ों *(सलात)* को कायम करते हैं, और उनकी तरफ हमारी नियामतों से, वो खैरात को देते हैं•

283. जानवर कि कुरबानियाँ हैं अल्लाह के मुकर्रर किये गये तरीकों में से तुम्हारे खुदके अच्छे के लिए•* तुम्हें अल्लाह का नाम लेना चाहिए उनपर जब वो खड़े होते हैं कतार में• जब वो भेंट कर दिये जाते हें कुरबान करने के लिए, तुम्हें उससे खाना और गरीबों और ज़रूरतमंद को खिलाना चाहिए• यह है जिस के लिए हमने ज़ेर किया उनको तुम्हारे लिए, ताके तुम तुम्हारे शुक्र को ज़ाहिर कर सको•

284. ना तो उनका गोश्त, नाहीं उनका खून पहुँचता है अल्लाह को• जो पहुँचता है उनको है तुम्हारी नेककारी• उन्होंने ज़ेर किया है उनको तुम्हारे लिए, ताके तुम तुम्हारे शुक्र को ज़ाहिर कर सको अल्लाह कि बड़ाई करते हुए तुम्हारी हिदायत करने के लिए• अच्छी खबर दो खैरात करने वाले को•

22:26-27 इब्राहीम थे पहले रसूल फरमानबरदारी (इस्लाम) का• देखें 22:78 और अपेन्डिक्स 9•

22:36 जानवर कि कुरबानियाँ हाजियों कि तरफ से महफ़ूज़ रखते हैं फराहमियों को ज़ियारत के जगह के पास• ध्यान दें कि तकरीबन 2,000,000 हाजियें मक्के पर जमा होते हैं हज के दौरान•

अल्लाह हिफाज़त करते हैं ईमानवालों की

285. अल्लाह हिफाज़त करते हैं उनकी जो ईमान रखते हैं• अल्लाह नहीं चाहते किसी गद्दार, नाकद्रदान को•

यहूदियों कि मस्जिदें, गिरजाघरें और मस्जिदें

286. इजाज़त दी गई है उनको जिनको ऐज़ा दिया जाता है, चुंकि नाइंसाफी गिर पड़ी है उनपर, और अल्लाह यकीनन काबिल हैं उनकी मदद करने के लिए•

287. वो निकाले गये थे उनके घरों से बेइंसाफी से, किसी दूसरी वजह से नहीं बलिके, "हमारे रब हैं अल्लाह" कहने के लिए• अगर वो अल्लाह का मदद करना कुछ लोगों को दूसरों के खिलाफ के लिए न होता, खानगाहें, गिरजाघरें, यहूदियों कि मस्जिदें, और मस्जिदें—जहाँ अल्लाह का नाम कसरत से ज़िक्र किया जाता है—तबाह कर दिये गये होते• बेशक, अल्लाह मदद करते हैं उनकी जो उनकी मदद करते हैं• अल्लाह हैं ताकतवर, कादिरे मुतलक•

288. ये हैं वो जो, अगर हमने मुकर्रर किया उनको हाकीमों जैसा ज़मीन पर, वो कायम करेंगे राबता नमाज़ें *(सलात)* और ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, और वकालत करेंगे नेककारी की और मना करेंगे बुराई•अल्लाह हैं असल हाकिम•

289. अगर वो तुमको ठुकरायें, नुह, आद, और तमूद के लोगों ने भी कुफ्र किया उनसे पहले•

290. इब्राहीम के लोग, और लूत के लोग भी•

291. और रहने वाले मिदयन के• मूसा भी ठुकराये गये थे• मैंने उन सारे लोगों को बढ़ने दिया, फिर मैंने पुकारा उनको हिसाब के लिए; कैसा *(बरबाद करने वाला)* था मेरा बदला!

292. कई एक कौम को हमने फनाह किया उनके गुनाहगारी कि वजह से• उनका खात्मा हुआ खंडरों, थमे हुए कुओं, और बड़े सूने महलों के साथ•

293. क्या वो ज़मीन पर नहीं फिरे, फिर इस्तेमाल किया उनके ज़हनों को समझने के लिए, और इस्तेमाल किया उनके कानों को सुनने के लिए? वाकई, असल अंधापन नहीं है आँखों का अंधापन, लेकिन सीनों के अंदर दिलों का अंधापन•

294. वो तुम्हें ललकारते हैं आज़ाब लाने के लिए, और अल्लाह कभी नाकामयाब नहीं होते हैं उनकी पेशीनगोई को पूरा करने के लिए• तुम्हारे रब का एक दिन है जैसे एक हज़ार तुम्हारे सालों का•

295. कई एक कौम ने माज़ी में किया बुराई, और मैंने उनको बढ़ने दिया कुछ देर के लिए, फिर मैंने उनको सज़ा दिया• मेरी तरफ है असल मुकद्दर•

अल्लाह के वादे का रसूल

296. कहो, "ऐ लोगों, मैं भेजा गया हूँ तुम्हारी तरफ एक गहरा खबरदार करने वाले जैसा•"*

297. जो कोई ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं मुस्तेहिक हुए हैं मगफरत और एक फरागदिल वाले बदले का•

298. जहाँ तक वो जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों को ललकारने के लिए, वो हासिल करते हैं जहन्नम•

**22:49 यह हुक्म खासतौर पर अल्लाह के वादे के रसूल कि तरफ इशारा किया गया है• यह हकीकत, और दुरुस्त नाम रसूल का रियाज़ी तौर पर कोड किया गया है कुरान में• देखें तफसीलें, साथ नाकाबिले रद सबूतों के, अपेन्डिक्स 2 और 26 में•*

*निज़ाम**

299. हमने नहीं भेजा तुमसे पहले किसी रसूल, नाहीं एक नबी को, बगैर शैतान को उसके इरादों में दखल देते हुए• अल्लाह फिर ज़ाया करते हैं जो शैतान ने किया है• अल्लाह दुरूस्त करते हैं उनकी आयतें• अल्लाह हैं सब कुछ जानने वाले सबसे हकीम•*

मुनाफिकीन निकल जाते हैं

300. वो इस तरह कायम करते हैं शैतान कि तजवीज़ एक आज़माईश जैसा उनके लिए जो पनाह देते हैं शकों को उनके दिलों में, और उनके जिनके दिलें हो गये हैं सख्त• गुनाहगार ज़रूरी है रहें मुखालिफत के साथ•

301. जो कोई बक्शे गये हैं इल्म के साथ पहचानेंगे सच तुम्हारे रब कि तरफ से, फिर ईमान लायेंगे उसमें, और उनके दिलें आसानी से उसे कवूल करेंगे• विला शक, अल्लाह हिदायत करते हैं ईमानवालों को सही राह में•

302. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, वो जारी रहेंगे शकों को पनाह देने के लिए जब तक वक्त आ नहीं जाता उनकी तरफ अचानक, या जब तक एक हौलनाक दिन का आज़ाव आ नहीं जाता उनकी तरफ•

शैतान कि आरज़ी बादशाहत

303. सारी सल्तनत उस दिन पर होगी अल्लाह के लिए, और वो इंसाफ करेंगे उनके दरमियान• जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो मुस्तेहिक हुए हैं मुसर्रत वाले बागों के•

304. जबकी वो जिन्होंने कुफ्र किया और ठुकराया हमारी आयतों को पाया है एक शर्मनाक आज़ाव•

कोशिश करते रहना अल्लाह के वास्ते

305. जो कोई हिजरत करते हैं अल्लाह के वास्ते, फिर मारे जाते, या मरते हैं, अल्लाह यकीनन बरसायेंगे उनको अच्छी नियामतों के साथ• अल्लाह हैं यकीनी तौर पर सबसे अच्छे राज़िक•

306. बिला शक, वो दाखिल करेंगे उनको एक दाखला जो उनको खुश करेगा• अल्लाह हैं सब कुछ जानने वाले, रहम वाले•

खुदाई मदद मज़लूम के लिए

307. यह मुकर्रर किया गया है कि अगर कोईबदला लेता है बराबरी से, एक नाइंसाफी का जो उस पर डाला गया था, फिर सताया जाता है इस वजह से, अल्लाह यकीनन उसकी मदद करेंगे• अल्लाह हैं माफ करने वाले, रहीम•

अल्लाह की इक्तेदारी

308. यह एक हकीकत है कि अल्लाह मिलाते हैं रात को दिन से, और मिलाते हैं दिन को रात से, और यह की अल्लाह हैं सुनने वाले, देखने वाले•

309. यह एक हकीकत है कि अल्लाह हैं सच, जबकि कायम करना किसी बुतों को सिवाए उनके नुमाइंदगी करता है एक झूठ का, और यह कि अल्लाह हैं सबसे ऊँचे, आला•

310. क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह भेजते हैं नीचे आसमान से पानी जो बदल देता है ज़मीन को हरा? अल्लाह हैं बुलंद, सब कुछ जानने वाले•

311. उनकी हैं सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर• बेशक, अल्लाह हैं सबसे अमीर, सबसे तारीफ के काबिल•

**22:52 इस पूरी दुनियावी आज़माईश में, शैतान को इजाज़त दिया गया है उसके नज़रिये को पेश करने के लिए (हम पैदा हुए हैं शैतान के एक नुमाइंदे के साथ हमारे जिस्मों में)• यह इजाज़त देता है लोगों को एक फैसला करने का अल्लाह के सबूत और शैतान के*

सबूत के दरमियान• शैतान का सबूत यकीनी तौर पर बना है झूठों पर• यह निज़ाम समझाता है हकीकत कि शैतान के नुमाइंदे लगातार आते हैं सबसे बेहुदे झूठों, तौहीनों और इल्ज़ामों के साथ हर रसूल के खिलाफ (देखें 6:33-34, 8:30, 17:76-77, 27:70)•

312. क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने हवाले किया है सारी चीज़ों को तुम्हारी खिदमत में ज़मीन पर? जहाजें दौड़ते हैं समंदर में उनके हुक्म से• वो रोकते हैं आसमानी अंबारों को ज़मीन से टकराते हुए, सिवाए उनके हुक्म के मुताबिक में• अल्लाह हैं सबसे करीम लोगों कि तरफ, सबसे रहम वाले•

313. वो हैं वाहिद जिन्होंने अता किया तुम्हें ज़िंदगी, फिर वो देते हैं तुम्हें मौत, फिर वो लाते हैं वापस तुम्हें ज़िंदगी कि तरफ• यकीनन, इंसान है नाकद्रदान•

314. हर जमात के लिए, हमने मुकर्रर किया एक जत्था रस्मों का जिसे ज़रूरी है उनको बरकरार रखना• इसलिए, उन्हें तुम्हारे साथ बहेस नहीं करना चाहिए• तुम्हें चाहिए जारी रहना हर किसी को तुम्हारे रब कि तरफ दावत देने के लिए• बिला शक, तुम हो सही राह पर•

315. अगर वो तुमसे बहेस करें, तो कहो, "अल्लाह हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीजें तुम करते हो•"

316. अल्लाह इंसाफ करेंगे तुम्हारे दरमियान हश्र के दिन पर तुम्हारे सारी बहेसों के मुताल्लिक•

317. क्या तुम एहसास नहीं करते कि अल्लाह जानते हैं सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर? ये सब ज़प्त किये गये हैं एक दफ्तर में• यह आसान है करना अल्लाह के लिए•

318. इसके बावजूद, वो बुतपरस्ती करते हैं बुतों कि अल्लाह के सिवाए जिसमें उन्होंने नहीं रखा कोई ताकत, और वो कुछ नहीं जानते उनके बारे में• खतावरों के पास नहीं है मददगार•

फसाद और गरम मिज़ाजी:
निशानियाँ कुफ्र कि

319. जब हमारी आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं, साफतौर पर, तुम पहचानोगे गुनाहगारी चेहरों पर उनके जो कुफ्र करते हैं• वो तकरीबन हमला करते हैं उनको जो पढ़ते हैं हमारी आयतों को उनके लिए• कहो, "क्या मैं इत्तेला करूँ तुम्हें कोई चीज़ उससे ज़्यादा बुरा? जहन्नम वादा किया गया है अल्लाह कि तरफ से उनके लिए जो कुफ्र करते हैं; क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर•"

क्या वो एक मक्खी पैदा कर सकते हैं?

320. ऐ लोगों, यहाँ है एक मिसाल जिसपर तुम्हें संभल कर गौर करना चाहिए: बुतें जिनको तुम कायम करते हो अल्लाह के सिवाए कभी पैदा नहीं कर सकते एक मक्खी, अगर वो जमा होते एक साथ ऐसा करने के लिए तब भी• इसके अलावा, अगर मक्खी छीन ले कोई चीज़ उनसे, वो उसे कभी वापस हासिल नहीं कर सकते; कमज़ोर है पीछा करने वाला और पीछा किये जाने वाला•

321. वो एहमियत नहीं देते अल्लाह को जैसी उनको एहमियत दी जानी चाहिए• अल्लाह हैं सबसे ताकतवर, कादिरे मुतलक•

322. अल्लाह चुनते हैं फरिश्तों में से रसूलें, इसके अलावा लोगों में से• अल्लाह हैं सुननेवाले, देखने वाले•

323. वो जानते हैं उनका माज़ी और उनका मुस्तकबिल• अल्लाह के पास हैं असल काबू सारे मामलों का•

324. ऐ ईमानवालो, तुम्हें झुकना, सजदा करना, तुम्हारे रब कि इबादत करना, और नेककारी वाले काम करना चाहिए, ताके तुम कामयाब हो सको•

इब्राहीम: पहले
*रसूल इस्लाम के**

325. तुम्हें कोशिश करना चाहिए **अल्लाह** के सबब के लिए जैसा तुम्हें उनके सबब के लिए कोशिश करना चाहिए• उन्होंने चुना है तुम्हें और रखा नहीं है मेहनतकशी तुमपर तुम्हारे मज़हब पर अमल करने में— मज़हब तुम्हारे वालिद इब्राहीम का• वो है जिसने तुम्हें पहले नाम दिया "फरमानबरदारें"• इस तरह, रसूल एक गवाह का काम करे तुम्हारे दरमियान, और तुम्हें गवाहों जैसा काम करना चाहिए लोगों के दरमियान• इसलिए, तुम्हें रावता नमाजें *(सलात)* और ज़रूरी खैरात *(ज़कात)* कायम करना, और **अल्लाह** को मज़बूती से पकड़े रहना चाहिए; वो हैं तुम्हारे रब, सबसे अच्छे रब और सबसे अच्छे मददगार•

****

सुरह 23: ईमानवाले (अल मूमिनून)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कामयाब हैं वाकई ईमानवाले;
2. जो हैं बाअदब उनकी रावता नमाज़ों *(सलात)* के दौरान•
3. और वो बचते हैं खोकली बात से•
4. और वो देते हैं उनके ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*•
5. और वो बरकरार रखते हैं उनकी आबरू•
6. सिर्फ उनके जोड़ों के साथ, या वो जो हैं हकीकीतौर पर उनके, वो रखते हैं शहवती ताल्लुकात; उनको इल्ज़ाम नहीं दिया जाना है•
7. जो कोईकरते हैं इन हदों को पार हैं खतावारें•
8. जब बात आती है उनको अमानत सुर्पुद किये जाने की, इसके अलावा कोई मुहायदे वो करते हैं, वो हैं काबिले ऐतमाद•
9. और वो कायम करते हैं उनकी रावता नमाजें *(सलात)* हस्बे मामूल•
10. ऐसे हैं वारिसें•
11. वो पायेंगे जन्नत, जिसमें वो रहते हैं हमेशा के लिए•

सही एमब्रियोलॉजी

12. हमने पैदा किया इंसान को एक खास किस्म की मिट्टी से•
13. उसके बाद, हमने पैदा किया उसे एक छोटी बूंद से, जो रखी जाती है एक अच्छे से महफूज़ किये गये मखज़न में•
14. फिर हमने बढ़ाया बूंद को एक झूलते हुए *(एमब्रियो)* में, फिर बढ़ाया झूलते हुए *(एमब्रियो)* को एक दांत कटे बराबर *(जनीन)* में, फिर पैदा किया दांत कटे बराबर *(जनीन)* को हड्डीयों में, फिर ढांका हड्डीयों को गोश्त के साथ• हम इस तरह पैदा करते हैं एक नई मखलूक• सबस मुबारक हैं **अल्लाह**, सबसे अच्छे पैदा करने वाले•
15. फिर, उसके बाद, तुम मरते हो•
16. फिर, हश्र के दिन पर, तुम दोबारा ज़िंदा किये जाओगे•

सात आसमानें

17. हमने पैदा किया तुम्हारे ऊपर सात आसमनें परतों में, और हम नहीं हैं कभी गाफिल उनमें एक भी मखलूक से•

बेशुमार रहमतें अल्लाह की तरफ से

18. हमने भेजा आसमान से नीचे पानी, सही नाप में, फिर हम ठहराते हैं उसे ज़मीन में• यकीनन, हम उसे जाने दे सकते हैं•

**22:78 हांलाकि सारे रसूलों ने एक और वही पैगाम की नसीहत की, "सिर्फ अल्लाह कि इबादत करो," इब्राहीम थे पहले रसूल "फरमानबरदारी" (इस्लाम) और "फरमानबरदार" (मुसलिम) लफ्ज़ों को गढ़ने के लिए (2:128)• इब्राहीम ने क्या इमदाद किया फरमानबरदारी (इस्लाम) कि तरफ? हम सीखते हैं 16:123 से कि सारे मज़हबी फराइज़ें फरमानबरदारी में नाज़िल किये गये थे इब्राहीम के ज़रिये (अपेन्डिक्स 9 और 26)•*

19. उससे, हम पैदा करते हैं तुम्हारे लिए बागीचे खजूर के नख्लों की, अंगूरों, सारे किस्मों के फलों, और मुख्तलिफ खानो के•

20. इसके अलावा, एक दरख्त जो है कोहेतूर की पैदाईश पैदा करता है तेल, साथ साथ लिज़्जत खानें वालों के लिए•

21. और मवेशी मुहय्या करना चाहिए तुम्हें एक सबक के साथ• हम पीने देते हैं तुम्हें *(दूध)* उनके मादों से, तुम हासिल करते हो दूसरे फायदे उनसे, और उनमें से कुछ तुम इस्तेमाल करते हो खाने के लिए•

22. उनपर, और जहाज़ों पर, तुम सवार होते हो•

नुह

23. हमने भेजा नुह को उसके लोगों की तरफ, कहते हुए, "ऐ मेरे लोगों, **अल्लाह** कि इबादत करो• तुम्हारे पास कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• क्या तुम नहीं होगे नेककार?"

24. रहबरें जिन्होंने कुफ्र किया उसके लोगों में से कहा, "ये तुम्हारी तरह एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं, जो चाहता है मशहूर होना तुम्हारे दरमियान• अगर **अल्लाह** ने चाहा होता, उन्होंने भेजा होता नीचे फरिश्ते• हमने कभी नहीं सुना ऐसा कुछ भी हमारे पुरखों से•

25. "वो है सिर्फ एक आदमी हो गया दिवाना• बस नज़र अंदाज़ करो उसे थोड़ी देर के लिए•"

26. उसने कहा, "मेरे रब, अता करिये मुझको फतेह, इसलिए कि वो मुझ पर ईमान नहीं लाये•"

27. हमने फिर उसे इल्हाम किया: "बनाओ कश्ती* हमारी निगेहबान आँखो के नीचे, और हमारे इल्हाम के मुताबिक में• जब हमारा हुक्म आयेगा, और फिज़ा उबल जायेगी, रखो उसपर एक जोड़ा हर किस्म का *(तुम्हारे घरेलू जानवरों का)*, और तुम्हारा कुम्बा, सिवाए उनके जो मलामत किये गये हैं बरबाद होने के लिए• मुझ से बात न करो उनकी तरफ से जो हद से गुज़र गये; वो डुबो दिये जायेंगे•

28. "जब तुम बैठ जाओ, एक साथ उनके जो हैं तुम्हारे साथ, कश्ती पर, तुम्हें कहना चाहिए, "**अल्लाह** की तारीफ हो हमें बचाने के लिए बुरे लोगों से•'

29. "और कहो, ' मेरे रब, मुझे उतरने दीजिये एक मुबारक जगह पर; आप हैं सबसे अच्छे बचाने वाले•'"

30. ये मुहय्या करना चाहियें काफी सबूतें तुम्हारे लिए• हम यकीनन तुमको आज़माईश को डालेंगे•

31. उसके बाद, हमने कायम किया दूसरी नस्ल उनके बाद•

32. हमने भेजा उनकी तरफ एक रसूल उनमें से, कहते हुए, "तुम्हें **अल्लाह** की इबादत करनी चाहिए• तुम्हारे पास नहीं कोई खुदा सिवाए उनके• क्या तुम नही होगे नेककार ?"

33. रहबरें उसके लोगों में से जिन्होंने कुफ्र किया और ठुकराया अगली ज़िंदगी का खयाल—हांलाकी हमने उनको मुहय्या किया फरागदिली से इस ज़िंदगी में—कहा, "ये तुम्हारी तरह एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं• वो खाता है उससे जो तुम खाते हो, और पीता है जैसे तुम पीते हो•

34. "अगर तुम पैरवी करो तुम्हारी तरह एक इंसान की, तब तुम वाकई हारने वाले हो•

35. क्या वो तुमसे वादा करता है कि, इसके बाद कि तुम मर जाओ और धूल और हड्डीयों में बदल जाओ, तुम बाहर आओगे फिर से?

36. नामुमकिन, नामुमकिन है वाकई जो तुम को वादा किया गया है•

**23:27 कहानी बोलने वालों ने बनाया एक मज़ाक नुह की तारीख का• नुह कि कश्ती थी एक सपाट कश्ती बनाई गई लटठों से, बांधी गई इब्तेदाई रस्सियों से (54:13), सैलाब था मकामी, मुर्दा समंदर के इलाके के आस पास, और जानवरें थे नुह के घरेलू जानवरें•*

37. "हम सिर्फ जीते हैं ये ज़िंदगी—हम जीते हैं और मरते हैं—और हम कभी दोबारा ज़िंदा नहीं किये जायेंगे•

38. "वो है सिर्फ एक इंसान जिसने गढ़ा है झूठों को और मनसूब किया है उन्हें **अल्लाह** को• हम कभी उसमें ईमान नहीं लायेंगे•"

39. उसने कहा, "मेरे रब, अता करिये मुझे फतेह, इसलिए कि वो मुझमें ईमान नहीं लाये•"

40. उन्होंने कहा, "जल्दी ही वो अफसोस ज़दा होंगे•"

41. आज़ाब ने मारा उनको, बराबरी से, और इस तरह, हमने बदल दिया उनको खंडरों में• गुनाहगार लोग हलाक हो गये•

42. उसके बाद, हमने दूसरी नस्लों को कायम किया उनके बाद•

43. कोई कौम आगे नहीं बढ़ा सकती है उसकी पहले से मुकर्रर की गई तकदीर, नाहीं मुलतवी कर सकती है उसे•

44. फिर हमने भेजा हमारे रसूलों को एक के बाद एक• जब भी एक रसूल गया उसके कौम कि तरफ, वो उसमें ईमान नहीं लाये• इस वजह से, हमने उनको फनाह कर दिया, एक के बाद के एक, और बना दिया उनको तारीख• लोग जिन्होंने कुफ्र किया हलाक हो गये हैं•

मूसा और हारून

45. फिर हमने भेजा मूसा और उसके भाई हारून को हमारी आयतों और एक गहरे सबूत के साथ•

46. फिरऔन और उसके बुर्जुगों कि तरफ, लेकिन वो बन गये मगरूर• वो थे ज़ालिम लोग•

47. उन्होंने कहा, "क्या हम ईमान लायें दो आदमियों के लिए जिनके लोग हैं हमारे गुलामें?"

48. उन्होंने दो को ठुकराया, और इस वजह से, वो फनाह कर दिये गये थे•

49. हमने दिया मूसा को आसमानी किताब, ताके वो हिदायतयाफ्ता हो सकें•

50. हमने बनाया मरयम के बेटे और उसकी माँ को एक निशानी, और हमने दिया उनको पनाह एक मिसा पर खाने और पीने के साथ•

एक अल्लाह/एक मज़हब

51. ऐ रसूलों, खाओ अच्छी नियामतों से, और नेककारी वाले काम करो• मैं हूँ पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो तुम करते हो•

52. ऐसी है तुम्हारी जमात—एक जमात—और मैं हूँ तुम्हारा रब; तुम्हें मेरा एहतराम करना चाहिए•

53. लेकिन उन्होंने चीर दिया अपने आप को बहेस करती हुई फिरकों में; हर एक जमात खुश उससे जो था उनके पास•

54. इसलिए, बस छोड़ दो उनको उनके उलझन में, कुछ देर के लिए•

55. क्या वो सोचते हैं कि, चुँकी हमने मुहय्या किया उनको पैसे और औलाद से,

56. हम बरसाते होंगे उनको रहमतों के साथ? वाकई, उनको कोई गुमान नहीं•

57. यकीनन, जो कोई अदब से होशमंद हैं उनके रब के,

58. और जो ईमान रखते हैं उनके रब की आयतों में,

59. और जो कभी भी कायम नहीं करते हैं किसी बुतों को सिवाए उनके रब के,

60. जब वो देते हैं उनकी खैरातें, उनके दिलें हैं पूरी तरह बाअदब• इसलिए कि वो पहचानते हैं कि वो हाज़िर किये जायेंगे उनके रब के सामने,

61. वो ख्वाहिशमंद हैं नेककारी वाले कामों को करने के लिए; वो मुकाबला करते हैं उनको करने में•

काफिरें
नाकद्रदान

62. हम कभी बोझ नहीं डालते किसी रूह पर उसकी ताकत से ज़्यादा, और हम रखते हैं एक दफतर जो बोलता है सच• कोई भी नाइंसाफी नहीं झेलेगा•

63. क्योंकि उनके ज़हनें गाफिल हैं इससे• वो करते हैं कामों को जो मुताबिक नहीं है इसके; उनके आमालें हैं बुरे•

64. फिर, जब हम बदला चुकाते हैं उनके रहबरों को आज़ाब से, वो शिकायत करते हैं•

65. अब शिकायत न करो; तुमने छोड़ दिया है हमारी तरफ से सारी मदद•

66. मेरी सबूतें पेश किये गये हैं तुमको, लेकिन तुम पीछे पलट गये तुम्हारे एड़ियों पर•

67. तुम थे बहुत मगरूर उन्हें कबूल करने के लिए, और तुमने दिलेरी से उन्हें नज़रअंदाज़ किया•

68. क्यों वो गौर नहीं करते इस आसमानी किताब पर? क्या वो एहसास नहीं करते कि उन्होंने पाया है कुछ जो उनके पुरखों ने कभी हासिल नहीं किया?

69. क्या वो नाकामयाब हुए उनके रसूल को पहचानने के लिए? क्या इस वजह से वो उसे नज़रअंदाज़ कर रहे हैं?

70. क्या उन्होंने फैसला किया है कि वो है दिवाना? वाकई, उसने लाया है सच उनकी तरफ, लेकिन उनमें ज़्यादातर सच से नफरत करते हैं•

71. वाकई, अगर सच उनके ख्वाहिशों के मुताबिक होता, वहाँ होती अफरातफरी आसमानों और ज़मीन में; उनमें हर चीज़ बिगड़ जाती• हमने दिया है उन्हें उनका सबूत, लेकिन वो नज़रअंदाज़ कर रहे हैं उनका सबूत•

72. क्या तुम उनसे एक मज़दूरी मांग रहे हो? तुम्हारे रब की मज़दूरी है कहीं बेहतर• वो हैं सबसे अच्छे राज़िक•

73. बिला शक, तुम उनको एक सीधी राह कि तरफ दावत दे रहे हो•

74. जो कोई कुफ्र करते हैं अगली ज़िंदगी में यकीनन भटकेंगे सही रास्ते से•

75. जब हमने बरसाया उनको रहमत से, और हल्का किया उनकी मुश्किलों को तब भी, वो गिर गये और गहरी खता में, और जारी रहे बहकने के लिए•

76. जब हमने मारा उनको आज़ाब से तब भी, वो कभी नहीं पलटे उनके रब की तरफ इल्तेजा करते हुए•

77. उसके बाद, जब हमने बदला दिया उनको सख्त आज़ाब से जो उन्होंने हासिल किया था, वो हो गये हैरतज़दा•

78. वो हैं वाहिद जिन्होंने अता किया तुमको सुनाई, नज़र, और ज़हने• कभी कभार हि तुम कद्रदान होते हो•

79. वो हैं वाहिद जिन्होंने कायम किया तुमको ज़मीन पर, और उनके सामने हाज़िर किये जाओगे•

80. वो हैं वाहिद जो ज़िंदगी और मौत को काबू करते हैं, और वो हैं वाहिद जो बारी बारी करते हैं रात और दिन को• क्या तुम नहीं समझते?

81. उन्होंने कहा जो उनके पुरखों ने कहा•

82. उन्होंने कहा, "इसके बाद कि हम मर जायें और बन जायें धूल और हड्डियाँ, हम दोबारा ज़िंदा किये जाते हैं?

83. "ऐसे वादे दिये गये थे हमें और हमारे वालिदैन को माज़ी में• ये माज़ी से कहानियों के अलावा कुछ नहीं है•"

ज़्यादातर ईमानवाले
मुकर्रर किये गये हैं जहन्नम के लिए*

84. कहो, "किसकी है ज़मीन और उसपर हर कोई, अगर तुम जानते?"

85. वो कहेंगे, "**अल्लाह** की•" कहो, "फिर क्यों तुम तवज्जो नहीं देते?"

86. कहो, "कौन रब है सात आसमानों का; रब बड़े सल्तनत का?"

87. वो कहेंगे, "**अल्लाह**•" कहो, "फिर क्यों तुम नेककार नहीं बनते?"

**23:84-89 अल्लाह में अकीदा दुरुस्त है सिर्फ अगर कोई अल्लाह की खूबियों को पहचानता है, ऐसी हकीकत जैसे कि अल्लाह काबू करते हैं सारी चीज़ें (8:17)• ईमानवाले जो नहीं जानते अल्लाह को असल में ईमानवाले नहीं• ज़्यादातर ईमानवाले ज़ाया करते हैं उनका अकीदा ऐसे कमज़ोर बुतें जैसे नबियों और बुज़ुर्गों कि इबादत करते हुए (6:106)•*

88. कहो, "किसके हाथ में है सारी बादशाहत सारी चीज़ों पर, और वो हैं सिर्फ वाहिद जो मदद मुहय्या कर सकते हैं, लेकिन ज़रूरत नहीं रखते किसी मदद की, अगर तुम जानो?"

89. वो कहेंगे, "**अल्लाह**•" कहो, "तुम कहाँ गलत हुए?"

90. हमने दिया है उनको सच, जबकी वो हैं झूठे•

91. **अल्लाह** ने कभी नहीं जना है एक बेटा• नाहीं वहाँ था कभी कोई दूसरा खुदा सिवाए उनके• वरना, हर खुदा ने ऐलान कर दिया होता आज़ादी उसकी मखलूकों के साथ, और उन्होंने एक दूसरे के साथ मुकाबला किया होता फौकियत के लिए• **अल्लाह** की बड़ाई हो; कहीं ऊपर उनके दावों से•

92. सारे राजों और ऐलानों के जानने वाले; उनकी बुलंदी हो, कहीं ऊपर रखते हुए एक शरीक•

93. कहो, "मेरे रब, चाहे आप दिखाईये मुझको *(आज़ाब)* जो उन्होंने हासिल किया है,

94. "मेरे रब, मुझको खता करने वाले लोगों में से एक न होने दीजिए•"

95. तुमको *(आज़ाब)* दिखाना जो हमने मखसूस किया है उनके लिए है कुछ जो हम कर सकते हैं आसानी से•

96. इसलिए, सामना करो उनके बुरे आमालों का अच्छाई के साथ; हम हैं पूरी तरह वाकिफ उनके दावों से•

शैतान से
बचाए जाने के लिए

97. कहो, "मेरे रब, मैं पनाह तलाश करता हूँ आप में शयातीनों के वसवसों से•

98. "और मैं पनाह चाहता हूँ आप में, मेरे रब, ताके वो मेरे करीब न आयें•"

मुर्दा कभी वापस नहीं आते
हश्र के दिन तक

99. जब मौत आती है उनमें से एक कि तरफ, वो कहता है, "मेरे रब, मुझे वापस भेजिये•

100. "मैं फिर नेककारी वाले काम करूंगा सारी चीज़ों में जो मैंने छोड़ा•" सच नहीं• यह है एक झूठा दावा जो वो करता है• एक आड़ अलग करेगी उसकी रूह को इस दुनिया से हश्र तक•

101. जब सुर फूंका जायेगा, कोई रिश्ते वजूद में नहीं रहेंगे उनके दरमियान उस दिन पर, नाहीं वो फिक्र करेंगे एक दूसरे के बारे में•

102. जहाँ तक वो जिनके वज़ने होंगे भारी, वो होंगे जीतनेवाले•

103. वो जिनके वज़ने होंगे हल्के हैं वो जो खोयेंगे उनकी रूहों को; वो रहते हैं जहन्नम में हमेशा के लिए•

104. आग बेबस कर देगा उनके चेहरों को, और वो जारी रहेंगे आफतज़दा उसमें•

105. क्या मेरी आयते पढ़ी नहीं गई थीं तुम्हारे लिए, और तुम जारी रहे उनको ठुकराने पर?

106. वो कहेंगे, "हमारे रब, हमारी बदकारी ने बेबस कर दिया हमें, और हम गुमराह हुए लोग थे•

107. "हमारे रब, निकालिये हमें इससे बाहर; अगर हम लौटें *(हमारे पुराने रवय्ये कि तरफ)*, तो हम हैं वाकई बदकार•"

108. वो कहेंगे, "रहो उसमें, बेइज़्ज़त किये गये, और मुझ से बात न करो•

उन्होंने मज़ाक उड़ाया ईमानवालों का

109. "मेरे बंदों का एक गिरोह कहा करता था, 'हमारे रब, हम ईमान लाये हैं, इसलिए हमें माफ करिये और बरसाईये हमें रहमत से• सारे रहम वालों से, आप हैं सबसे रहम वाले•'

110. "लेकिन तुमने हंसी और मज़ाक उड़ाया उनका, इस हद तक कि तुम मूझको भूल गये• तुम उनपर हंसा करते थे•

111. "मैंने इनाम दिया है उनको आज, बदले में उनकी साबितकदमी के लिए, बनाते हुए उनको जीतने वाले•"

112. उन्होंने कहा, “तुम ज़मीन पर कितनी देर तक रहे हो? कितने सालों तक?”

113. उन्होंने कहा, “हम रहे एक दिन या एक दिन का हिस्सा॰ पूछो उनसे जिन्होंने गिनती किया॰”

114. उन्होंने कहा, “असल में, तुम रहे लेकिन एक मुख्तसर दरमियानी वक्फा, अगर सिर्फ तुम जानते॰

115. “क्या तुमने सोचा कि हमने तुमको फुजूल में पैदा किया; कि तुम हमारी तरफ नहीं लौटाये जाओगे?”

116. सबसे बुलंद हैं **अल्लाह**, सच्चे बादशाह॰ कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए उनके; सबसे इज़्जतवाले रब, रखने वाले सारे इक्तेदार का॰

117. कोई भी जो बुतपरस्ती करता है **अल्लाह** के सिवाए किसी दूसरे खुदा की, और बगैर किसी किस्म के सबूत के, उसका हिसाब लेना रहता है उसके रब के पास॰ काफिरे कभी कामयाब नहीं होते॰

118. कहो, “मेरे रब, बरसाईये हमें मगफरत और रहमत के साथ॰ सारे रहमवालों से, आप हैं सबसे से रहम वाले॰”

****

सुरह 24: रौशनी (अल नूर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. एक सुरह जो हमने भेजा है नीचे, और हमने मुकर्रर किया कानून जैसा॰ हमने नाज़िल किया है उसमें साफ आयतें, ताके तुम तवज्जो दे सको॰

ज़िना

2. उनमें से हर एक ज़िना करने वाली और ज़िना करने वाले को तुम्हें चाहिए मारना एक सौ कोड़े॰ न डगमगाओ तरस कि वजह से **अल्लाह** के कानून को पूरा करने से, अगर तुम वाकई ईमान रखते हो **अल्लाह** और आखरी दिन में॰ और ईमानवालों के एक गिरोह को गवाह होने दो उनकी सज़ा का॰*

3. ज़िना करने वाला खत्म होगा शादी करते हुए एक ज़िना करने वाली या एक बुतपरस्त से, और ज़िना करने वाली खत्म होगी शादी करते हुए एक ज़िना करने वाले या एक बुतपरस्त से॰ यह है हराम ईमानवालों के लिए॰

4. जो कोई तोहमत लगाये शादीशुदा औरतों को ज़िना का, फिर नाकामयाब हों चार गवाहों को पेश करने के लिए, तुम्हें चाहिए मारना उनको अस्सी कोड़े, और कबूल न करो कोई शहादत उनसे; वो हैं बदकार॰

5. अगर वो तौबा करें और इस्लाह करें बाद में, फिर **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, रहम वाले॰

6. जहाँ तक वो जो तोहमत लगाते हैं उनके खुदके जोड़ों पर, बगैर किसी दूसरे गवाहों के, फिर उसकी शहादत कबूल की जा सकती है अगर वो **अल्लाह** की कसम खाये चार बार कि वो साच बोल रहा है॰

7. पाँचवी कसम होनी चाहिए उस पर **अल्लाह** की लानत का मार होने के लिए, अगर वो झूठ बोल रहा था॰

8. वो बेकसूर समझी जानी चाहिए और अगर वो **अल्लाह** की कसम खाये चार बार कि वो है एक झूठा॰

9. पाँचवी कसम उस पर मारना चाहिए **अल्लाह** का गज़ब अगर वो सच बोल रहा था॰

10. यह है **अल्लाह** का फज़्ल और रहमत तुम्हारी तरफ॰ **अल्लाह** हैं निजात देने वाले, सबसे हकीम॰

**23:2 सामाजी दबाव, यानी, आवाम के सज़ा का गवाह होना, है असल सज़ा (देखें 5:38 भी)॰ कोड़े इशारती होने चाहिए, सख्त नहीं॰*

कैसे निपटा जाये अफवाओं और साबित न किये गये इल्ज़ामों से

11. तुममें से एक गिरोह ने पैदा किया एक बड़ा झूठ•* न सोचो के वो था बुरा तुम्हारे लिए; बलिके, वो था अच्छा तुम्हारे लिए• इस दौरान में, उनमें से हर एक ने कमाया है उसके जुर्म का हिस्सा• जहाँ तक वो जिसने शुरू किया पूरा वाक्या, उसने पा लिया है एक खौफनाक आज़ाब•

12. जब तुमने उसे सुना, ईमान रखते मर्दों ने और ईमान रखती औरतों ने रखा होता बेहतर सोचों को अपने आप के बारे में, और कहा होता, "यह बेशक है एक बड़ा झूठ•"

13. सिर्फ अगर वो पेश करें चार गवाहों को *(तुम मान सकते हो उनको)*• अगर वो नाकामयाब हों गवाहों को पेश करने के लिए, फिर वो हैं, **अल्लाह** के मुताबिक, झूठे•

14. अगर वो तुम्हारी तरफ **अल्लाह** के फ़ज़्ल के लिए न होता, और उनकी रहमत इस दुनिया में और अगली ज़िंदगी में, तुमने झेला होता एक बड़ा आज़ाब इस वाक्ये कि वजह से•

15. तुमने गढ़ा उसे तुम्हारे खुद की ज़बानों से, और तुममें से बाकी ने दोहराया उसे तुम्हारे मुंहों से बगैर सबूत के• तुमने सोचा वो था सादा, जबकी वो था, **अल्लाह** के मुताबिक, बड़ा•

क्या करना चाहिए

16. जब तुमने उसे सुना, तुम्हें कहना चाहिए था, "हम इसे नहीं दोहरायेंगे• बड़ाई हो आपकी• यह है एक बड़ी झूठ•"

17. **अल्लाह** तुम्हें नसीहत करते हैं कि तुम कभी नहीं करोगे उसे दोबारा, अगर तुम हो ईमानवाले•

18. **अल्लाह** इस तरह समझाते हैं आयतों को तुम्हारे लिए• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, हकीम•

19. जो कोई ईमानवालों के दरमियान बदचलनी फैला देखना पसंद करते हैं पा लिया है एक दर्दनाक आज़ाब इस ज़िंदगी में और अगली ज़िंदगी में• **अल्लाह** जानते हैं, जबकी तुम नहीं जानते•

20. **अल्लाह** बरसाते हैं तुम्हें उनके फ़ज़्ल और रहमत के साथ• **अल्लाह** हैं सबसे महेरबान ईमानवालों की तरफ, सबसे रहीम•

शैतान हौसला अफज़ाई करता है बेबुनियाद इल्ज़ामों का

21. ऐ ईमानवालो, शैतान के कदमों कि पैरवी न करो• जो कोई पैरवी करता है शैतान के कदमों की, जानना चाहिए कि वो वकालत करता है बुराई और बदइख्लाकी का• अगर वो तुम्हारी तरफ **अल्लाह** के फ़ज़्ल के लिए न होता, और उनकी रहमत, तुममें से कोई भी पाक नहीं किया गया होता• लेकिन **अल्लाह** पाक करते हैं जिसकिसी को वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, जाननेवाले•

22. तुम्हारे दरमियान वो जो बक्शे गये हैं फराहिमों और दौलत से खैराती होना चाहिए उनके रिश्ते दारों, गरीब, कि तरफ और वो जिन्होंने हिजरत किया **अल्लाह** के वास्ते• उनको चाहिए नर्मदिली और सब्र से पेश आयें उनके साथ; क्या तुम नहीं चाहते हासिल करना **अल्लाह** की मगफरत? **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

बड़ा गुनाह

23. यकीनन, जो कोई झूठेतौर से इल्ज़ाम लगाये शादी शुदा औरतों पर जो हैं नेक ईमानवाले पा लिया है मलामत इस ज़िंदगी में और अगली ज़िंदगी में; उन्होंने पा लिया है एक हौलनाक आज़ाब•

**24:11 यह मुखातिब करता है एक तारीखी वाक्ये कि तरफ जहाँ नबी की बिवी आयशा छूट गई थी रेगिस्तान में गलती से, और बाद में बरामद की गई एक जवान मर्द कि तरफ से जिसने मदद की उसकी नबी के कारवाँ के साथ होने के लिए• इसने शुरू किया मशहूर 'बड़ी झूठ' आयशा के खिलाफ•*

24. दिन आयेगा जब उनके खुदकी ज़बानें, हाथें, और पैरें गवाही देंगे सारी चीज़ों का जो उन्होंने किया था॰

25. उस दिन पर, **अल्लाह** बदला देंगे उनको पूरी तरह उनके कामों के लिए, और वो जान जायेंगे कि **अल्लाह** हैं सच॰

26. बूरी औरते बुरे मर्दो के लिए, और बुरे मर्दे बूरी औरतों के लिए, और अच्छी औरतें अच्छे मर्दो के लिए, और अच्छे मर्दे अच्छी औरतों के लिए॰ इनमें से आखीर वाले बेगुनाह हैं ऐसे इल्ज़ामों के॰ उन्होंने हासिल किया है मग्फरत और एक फरागदिली वाला इनाम॰

खुदाई इख्लाक

27. ऐ ईमानवालों, खुदके घरों के अलावा दूसरे में न दाखिल हो उसके रहने वालों से इजाज़त लिए बगैर, और बगैर उनको सलाम करते हुए॰ यह बेहतर है तुम्हारे लिए, ताके तुम तवज्जो ले सको॰

28. अगर तुम उनमें किसी को भी न पाओ, उनमें दाखिल न हो जब तक तुम हासिल न करो इजाज़त॰ अगर तुमसे कहा जाता है, "लौट जाओ," तुम्हें लौट जाना चाहिए॰ यह ज़्यादा पाक है तुम्हारे लिए॰ **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से तुम करते हो॰

29. तुम कोई गलती नहीं करते दाखिल होते हुए विरान घरों में जिसमें वहाँ है कुछ जो है तुम्हारे लिए॰ **अल्लाह** जानते हैं सारी चीज़ें तुम ज़ाहिर करते हो, और सारी चीज़ें तुम छुपाते हो॰

*लिबास का कानून ईमानवालों के लिए**

30. कहो ईमान रखते मर्दो को कि वो उनकी नज़रों को काबू करें *(और न तको औरतों को)*, और बरकरार रखें उनकी पाकीज़गी॰ यह ज़्यादा पाक है उनके लिए॰ अल्लाह हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें वो करते हैं॰

31. और कहो ईमान रखती औरतों को उनकी नज़रों को काबू करें, और बरकरार रखें उनकी पाकीज़गी॰ वो ज़ाहिर न करें उनके जिस्मों के किसी हिस्सों को, सिवाए उसके जो है ज़रूरी॰ उन्हें चाहिए ढाकें उनके सीनों को, और हल्का न करें इस कानून को दूसरे की मौजूदगी में सिवाए उनके शौहरों, उनके वालिदों, उनके शौहरों के वालिदें, उनके बेटों, उनके शौहरों के बेटों, उनके भाईयों, उनके भाईयों के बेटों, उनकी बहनों के बेटों, दूसरी औरतें, मर्दाना खादिमें या काम करने वाले जिनकी शहवती ताकत ज़ाया हो गई है, या बच्चे जो नहीं पहुँचे हैं शबाब को॰ उन्हें चाहिए न मारें उनके पैरों को जब वो चलें ताके हिलायें और ज़ाहिर करें कुछ तफसीलें उनके जिस्मों के॰ तुम सारों को अल्लाह से तौबा करना चाहिए, ऐ ईमानवालों, ताके तुम कामयाब हो सको॰*

शादी की हौसलाअफज़ाई
करो
बदचलनी पस्त करने के लिए

32. तुम्हें हौसलाअफज़ाई करना चाहिए शादी करने के लिए तुम में से उनकी जो हैं कुंवारे॰ वो शादी कर सकते हैं तुम में से नेक मर्द और ज़नाना खादिमों से, अगर वो हैं गरीब॰ **अल्लाह** बढ़ायेंगे उनको उनके फज़्ल से॰ **अल्लाह** हैं करम वाले, जाननेवाले॰

**24:30-31 बाहया तौर पर लिबास पहनना, इसलिए, है एक सिफत ईमान रखते मर्दो और औरतों की॰ कम से कम ज़रूरतें एक औरत के लिबास के लिए है लम्बा करने का उसका लिबास (33:59) और ढाकने का उसके सीने को॰ ज़्यादती वाले अरबी रिवाजों ने दिया है झूठी समझ कि एक औरत को ज़रूरी है ढके रहना सर से पंजे तक; ऐसा नहीं है कुरानी या इस्लामी लिबास॰*

33. वो जो हैसियत नहीं रखते शादी करने के लिए चाहिए बरकरार रखें नेक चलनी को जब तक **अल्लाह** मुहय्या नहीं कर देते उनके फ़ज़्ल से उनके लिए• तुम्हारे खादिमों में से वो जो चाहते हैं आज़ाद किये जाने के लिए ताके शादी करें, तुम्हें उनको अता करना चाहिए उनकी ख्वाहिश, जब तुम एहसास करो कि वो हैं ईमानदार• और दो उनको **अल्लाह** के पैसे से जो उन्होंने इनायत किया है तुम पर• तुम्हें ज़ोर नहीं देना चाहिए तुम्हारी लड़कियों को असमत फरोशी करने के लिए, तलाश करते हुए इस दुनिया की चीज़ें, अगर वो नेक चलन रहना चाहें• अगर कोई भी ज़ोर दे उनको, फिर **अल्लाह**, देख रहे हैं कि उनको ज़ोर दिया गया है, हैं माफकरने वाले, रहमवाले•

34. हमने नाज़िल किया है तुम्हारे लिए वाज़े करती हुई आयतें, और मिसालें पिछली कौमों से, और एक रौशन ख्याल नेककारों के लिए•

अल्लाह

35. **अल्लाह** हैं रौशनी आसमानों और ज़मीन के• मिसाल उनकी रौशनी की है जैसे कमान नुमा शीशा चिराग के पीछे जो रखा गया है एक कांच के बर्तन में• कांच का बर्तन है जैसे एक चमकदार, मोती जैसा सितारा• उसका इंधन फराहिम किया गया है एक मुबारक किये गये तेल पैदा करते पेड़ से, जो है नाहीं मशरिकी, नाहीं मगरिबी• उसका तेल है तकरीबन खुदसे चमकता हुआ; उसे ज़रूरत नहीं आग सुलगाने के लिए• रौशनी के ऊपर रौशनी• **अल्लाह** हिदायत करते हैं उनकी रौशनी की तरफ जिसकिसी को वो चाहते हैं• **अल्लाह** इस तरह लोगों के लिए मिसालों को बयान करते हैं• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

36. *(अल्लाह कि हिदायत पाई जाती है)* **अल्लाह** की तरफ से बुलंद किये गये घरों में, इसलिए कि उनका नाम याद किया जाता है उसमें• बड़ाई करते हुए उनकी उसमें, दिन और रात—

वो जो दौरा करते हैं मस्जिद का

37. लोग जो फिरते नहीं **अल्लाह** को याद करने से कारोबार या तिजारत की वजह से; वो कायम करते हैं रावता नमाज़ें *(सलात)*, और देते हैं ज़रूरी खैरात *(ज़कात)* और वो हैं होशमंद उस दिन से जब ज़हने और आँखें होंगे खौफज़दा•

38. **अल्लाह** यकीनन ईनाम देंगे उनको उनके अच्छे कामों के लिए, और बरसायेंगे उनको उनके फ़ज़्ल के साथ• **अल्लाह** मुहय्या करते हैं जिसकिसी के लिए वो चाहते हैं बगैर हदों के•

एक सराब का पीछा करते हुए

39. जहाँ तक वो जो कुफ़्र करते हैं, उनके आमालें हैं रेगिस्तान में एक सराब की तरह• एक प्यासा शक्स समझता है उसे पानी• लेकिन जब वो पहुँचता है उसके पास, वो पाता है कि वो कुछ नहीं है, और वो पाता है **अल्लाह** को वहाँ बलिके, उसे बदला देने के लिए पूरी तरह उसके आमालों के लिए• **अल्लाह** हैं सबसे काबिल हिसाब लेने वाले•

अल्लाह से जिला वतन:
पूरा अंधेरा

40. दूसरी मिसाल है जैसे होना पूरे अंधेरे में एक ज़बरदस्त समंदर के बीच में, साथ लहरों के ऊपर लहरें, मोटे कोहरे के साथ में• अंधेरेपन के ऊपर अंधेरापन—अगर उसने देखा उसके खुदके हाथ की तरफ, वो उसे मुश्किल से देख सकता• जिसकिसी को **अल्लाह** महरूम करते हैं रौशनी से, नहीं पायेगा रौशनी•

41. क्या तुम एहसास नहीं करते कि हर कोई आसमानों और ज़मीन में बड़ाई करते हैं **अल्लाह** की, चिड़ियें भी जब वो उड़ती हैं एक सफ में? हर कोई जानता है उसकी इबादत और उसकी हम्दोसना• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें वो करते हैं•

42. **अल्लाह** की हैं आसमानों और ज़मीन की सल्तनत, और **अल्लाह** की तरफ है आखरी तकदीर•

43. क्या तुम एहसास नहीं करते कि **अल्लाह** चलाते हैं बादलों को, फिर जमा करते हैंउनको एक साथ, फिर ढ़ेर करते हैं उनको एक दूसरे पर, फिर तुम देखते हो बारिश आते हुए उनमें से बाहर? वो भेजते हैं आसमान से नीचे बर्फ की वज़नें ढ़ाकने के लिए जिसकिसी को वो चाहते हैं, जबकी फेरते हुए उसे जिस किसी कि तरफ से वो

चाहते हैं• बर्फ का उजालापन तकरीबन आँखों को अंधा कर देता है•

44. **अल्लाह** काबू करते हैं रात और दिन• ये होना चाहिए एक सबक उनके लिए जो आँखें रखते हैं•

45. और **अल्लाह** नें पैदा किया सारी ज़िंदा मखलूकों को पानी से• कुछ चलते हैं उनके पेठों पर, कुछ दो पैरों पर चलते हैं, और कुछ चलते हैं चार पर• **अल्लाह** पैदा करते हैं जो कुछ वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

46. हमने भेजा है नीचे तुम्हारी तरफ साफ करती आयतें, फिर **अल्लाह** हिदायत करते हैं जिसकिसी को चाहते हैं एक सीधी राह में•

अल्लाह भेजते हैं फरमानों को
उनके रसूल के ज़रिये

47. वो कहते हैं, "हम ईमान रखते हैं **अल्लाह** में और रसूल में, और हम अताअत करते हैं," लेकिन फिर उनमें से कुछ बादमें वापस फिसल जाते हैं• ये ईमानवाले नहीं•

48. जब उनको **अल्लाह** और उनके रसूल की तरफ दावत दिया जाता है उनके दरमियान फैसला करने के लिए, उनमें से कुछ हो जाते हैं नाराज•

49. बहेरहाल, अगर फैसला है उनके हक में, वो फौरन उसे कबूल करते हैं!

50. क्या एक बिमारी है उनके दिलों में? क्या वो हैं शक्की? क्या डरते हैं कि **अल्लाह** और उनके रसूल हो सकता है उनके साथ बेइंसफी से बरताव करेंगे? असल में, ये हैं वो जो हैं बेइंसाफ•

ईमानवाले बगैर हिचकिचाते हुए
अताअत करते हैं अल्लाह और उनके रसूल की

51. सिर्फ कहना ईमानवालों का, जब भी दावत दिये गये **अल्लाह** और उनके रसूल कि तरफ फैसला किए जाने के लिए उनके मामलों में, है कहने को, "हम सुनते हैं और हम अताअत करते हैं•" ये हैं जीतनेवाले•

52. जो कोई अताअत करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल की, और एहतराम करते हैं **अल्लाह** का और उनका ध्यान करते हैं, ये हैं गालिब होने वाले•

53. वो कसम खाते हैं **अल्लाह** की, संजीदगी से, कि अगर तुम हुक्म देते उनको तैयारी करने के लिए, वो तैयारी करते• कहो, "कसम न खाओ• अताअत है एक फर्ज• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें तुम करते हो•"

54. कहो, "**अल्लाह** की अताअत करो, और अताअत करो रसूल की•" अगर वो इंकार करें, तो वो ज़िम्मेदार है उसके फराईजों के लिए, और तुम ज़िम्मेदार हो तुम्हारे फराईज़ों के लिए• अगर तुम उसकी अताअत करो, तुम होगे हिदायतयाफ्ता• सिर्फ काम रसूल का है पहुँचाना *(पैगाम)*•

अल्लाह वादा करते हैं
मलिकें और मलिकायें ज़मीन पर

55. **अल्लाह** वादा करते हैं तुममें से उनको जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, कि वो उनको बादशाहें बनायेंगे ज़मीन पर, जैसा उन्होंने किया उनसे पहलों के लिए और कायम करेंगे उनके लिए मज़हब जो उन्होंने चुना है उनके लिए, और तबदील कर देंगे अमन और हिफाज़त उनके लिए खौफ की जगह में• ये सब इसलिए कि उन्होंने सिर्फ मेरी इबादत की; उन्होंने कभी कायम नहीं किया किसी बुतों को सिवाए मेरे• जो कोई कुफ्र करते हैं इसके बाद हैं असल में बदकार•

कामयाबी का नुस्खा

56. तुम्हें चाहिए कायम करना राबता नमाज़ें *(सलात)* और देना ज़रूरी खैरात *(ज़काात)* और अताअत करो रसूल की, ताके तुम हासिल कर सको रहमत•

57. यह न सोचो कि जो कोई कुफ्र करते हैं कभी उससे बच पायेंगे• उनका आखरी ठिकाना है जहन्नम; क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर•

इख्लाक
दो नमाज़ें बयान की गई नाम से

58. ऐ ईमानवालो, ज़रूरी है इजाज़त मांगी जाए तुम्हारे खादिमों कि तरफ से और बच्चें जिन्होंने शवाब हासिल नहीं किया *(तुम्हारे कमरों में दाखिल होने से पहले)*• ये किया जाता है तीन मौकों में—सुबह कि नमाज़ से पहले, दोपहर को जब तुम बदलते हो तुम्हारे लिबासों को आराम करने के लिए, और रात कि नमाज़ के बाद• ये तीन ज़ाती वक्ते हैं तुम्हारे लिए• दूसरे वक्तों पर, ये तुम्हारे या उनके लिए गलत नहीं है एक दूसरे के साथ घुलने मिलने के लिए• **अल्लाह** इस तरह वाज़े करते हैं आयतों को तुम्हारे लिए• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

59. जब बच्चे शवाब को पहुँच जायें, उनको ज़रूरी है इजाज़त मांगना *(दाखिल होने से पहले)* जैसे वो जो जवान हुए उनसे पहलो ने मांगी इजाज़त *(दाखिल होने से पहले)*• **अल्लाह** इस तरह वाज़े करते हैं उनकी आयतों को तुम्हारे लिए• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

तुम्हें बाहया तौर पर पहनना चाहिए

60. बूड़ी औरतें जो उम्मीद नहीं रखतीं शादी करने का कुछ भी गलत नहीं करतीं हैं उनके लिबास के कानून को हल्का करते हुए, बर्शते की वो ज़ाहिर न करें बहुत ज़्यादा उनके जिस्मों का• हया बरकरार रखना बेहतर है उनके लिए• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, जानने वाले•

ख्याल रखो कि तुम्हारा खाना हलाल है

61. अंधे को इल्ज़ाम न दिया जाये, लंगड़े को इल्ज़ाम न दिया जाये, नाहीं माजूर को इल्ज़ाम दिया जाये, जैसे तुम पर इल्ज़ाम नहीं तुम्हारे घरों पर खाने के लिए, या तुम्हारे वालिदों के घरों, या तुम्हारी वालिदाओं के घरों, या तुम्हारें भाईयों के घरों, या तुम्हारे बहनों के घरों, या तुम्हारे वालिद के भाईयों के घरों, या तुम्हारे वालिद कि बहनों के घरों, या तुम्हारे वालिदा के भाईयों के घरों, या तुम्हारे वालिदा कि बहनों के घरों, या घरें जो हैं तुम्हारे और तुम रखते हो उनकी चाबियाँ, या तुम्हारे दोस्तों के घरों पर• तुम कुछ गलती नहीं करते एक साथ खाते या तन्हाओं जैसे• जब तुम दाखिल हो किसी घर में, तुम्हें सलाम करना चाहिए एक दूसरे को एक सलाम **अल्लाह** की तरफ से जो है मुबारक और अच्छा• **अल्लाह** इस तरह समझाते हैं आयतें तुम्हारे लिए, ताके तुम समझ सको•

62. सच्चे ईमानवाले हैं वो जो ईमान रखते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल में,* और जब वो हैं उसके साथ एक सामाजी मजलिस में, वो नहीं छोड़ते हैं उसे बगैर इजाज़त के• जो कोईमांगते हैं इजाज़त हैं वो जो वाकई ईमान रखते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल में• अगर वो मांगे तुम्हारी इजाज़त, ताके मुतवज्जह हों उनके कुछ मामलों की तरफ, तुम इजाज़त दे सकते हो जिसकिसी को तुम चाहो, और **अल्लाह** से मांगो उनको माफ करने के लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले सबसे रहम वाले•

63. रसूल की दरख्वास्तों से वैसा बरताव न करो जैसा तुम एक दूसरे कि दरख्वास्तों से बरताव करते हो• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ तुम में से उनसे जो खिसक जाते हैं कमज़ोर बहानों को इस्तेमाल करते हुए• उनको खबरदार होने दो—जो कोई नाफरमानी करता है उसकी हुक्मों की—हो सकता है एक मुसीबत मारे उनको, या एक सख्त आज़ाब•

64. बेशक, **अल्लाह** की हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में• वो पूरी तरह जानते हैं सारे हालात को तुम हो सकते हो जिसमें• दिन जब तुम उनको लौटाये जाते हो, वो इत्तेला करेंगे उनको सारी चीज़ों का उन्होंने किया था• **अल्लाह** हैं सारी चीज़ों से पूरी तरह वाकिफ•

****

**24:62 ये आयत मुखातिब करती है अल्लाह के वादे के रसूल की तरफ; जमा करते हुए जिमेटरिकल वेल्यू "रशाद" की (505) साथ वेल्यू "खलीफा" की (725), साथ आयत नम्बर (62), हम पाते हैं 1292, एक 19 का ज़रप (1292=19x68)• देखें अपेन्डिक्स 2•*

सुरह 25: कानून की किताब (अल फुरकान)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

326. सबसे मुबारक हैं वाहिद जिन्होंने नाज़िल किया कानून की किताब उनके बंदे की तरफ, ताके वो खिदमत कर सके एक खबरदार करने वाले जैसा पूरे जहान के लिए•

327. वाहिद जिनकी है सारी बादशाहत आसमानों और ज़मीन की• उनके पास कभी न था एक बेटा, नाहीं है उनके पास कोई शरीकें बादशाहत में• उन्होंने पैदा किया सारी चीज़ों को ठीक ठीक नाप में; उन्होंने दुरूस्ती से नक्शकारी की सारी चीज़ें•*

328. इसके बावजूद, वो कायम करते हैं उनके अलावा खुदाओं को जो पैदा नहीं करते किसी चीज़ को—वो खुद पैदा किये गये हैं—और जो ताकत नहीं रखते यहाँ तक के खुद को नुकसान या फायदा पहुँचाने का, नाहीं वो रखते हैं कोई ताकत काबू करने के लिए ज़िंदगी, या मौत, या दोबारा ज़िंदा किया जाना•

कुरान के रियाज़ी कोड से
काफिरें दूर कर दिये गये

329. जिन्होंने कुफ्र किया कहा, "ये है बनावट जो उसने पैदा किया, कुछ दूसरे लोगों कि मदद से•" उन्होंने कहा है एक बेअदबी और एक झूठ•

330. उन्होंने ये भी कहा, "कहानियाँ माज़ी से जो उसने नीचे लिख लिया; वो इमला किये जाते हैं उसे दिन और रात•"*

331. कहो, "ये नाज़िल किया गया था वाहिद की तरफ से जो जानते हैं राज़* आसमानों और जमीन में• वो माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•"

एक जैसी बयानें काफिरों के

332. और उन्होंने कहा, "कैसे यह रसूल खाता है खाना और चलता है बाज़ारों में? अगर सिर्फ एक फरिश्ता आ सकता नीचे उसके साथ, खिदमत करने के लिए उसके साथ एक नसीहत करने वाले जैसा!"

333. या, "अगर सिर्फ एक खज़ाना दिया जाता उसको!" या, "अगर सिर्फ वो रखता एक बाग जिससे वो खाता!" खतावारों ने यह भी कहा, "तुम एक जादू किये गये आदमी कि पैरवी कर रहे हो•"

334. ध्यान दो वो कैसे तुम्हें सारे किस्मों के नामों से पुकारते हैं, और कैसे इसने गुमराह कर दिया उनको, कभी न पाने के लिए उनके वापसी का रास्ता•

335. सबसे मुबारक हैं वाहिद जो कर सकते हैं, अगर वो चाहें, दे सकते हैं तुमको कहीं बेहतर उनकी मांगों से—बागें बहती हुई नहरों के साथ, और कई महलें•

असल वजह

336. असल में, उन्होंने कुफ्र किया है वक्त *(हश्र के दिन)* में, और हमने तैयार किया है उनके लिए जिन्होंने कुफ्र किया वक्त में एक जलता हुआ जहन्नम•

**25:2 जब हम भेजते हैं ऐसट्रोनॉटस को फिज़ा में, हम पूरे सफर के दौरान दुरूस्ती से नापते हैं खाना, पानी, ऑक्सीज़न, और दूसरे ज़रूरतों के मिकदार को• उसी तरह, अल्लाह ने भेजा है हमें फिज़ा में—फिज़ाई कश्ती ज़मीन पर सवार—और उन्होंने नक्शकारी किया सारे किस्मों के दोबारा ताज़ा किये जाने वाले फराहिमों को हमारे और दूसरी मखलूकों के लिए, एक मुकम्मल नक्शकारी• सोचो, मिसाल के तौर पर आपसी हयाती ताल्लुकात हमारे और पौधों के बीच; हम इस्तेमाल करते हैं ऑक्सीज़न वो फोटोसिन्थेसिस में पैदा करते हैं, जबकी वो इस्तेमाल करते हैं कार्बन डाईआक्साइड हम पैदा करते हैं सांस लेने में•*

**25:5 मुहम्मद के साथ वाले जानते थे कि वो थे एक पढ़े लिखे आदमी जो पढ़ और लिख सकते थे; उन्होने लिखा अल्लाह की आयतों को उनके खुदके हाथ से (देखें अपेन्डिक्स 28)•*

**25:6 कुरान का हैरतअंगेज़ रियाज़ी कोड, बिला हुज्जत जवाब काफिरों के दावों के लिए, रहा एक खुदाई महफूज़ राज़ 1400 सालों के लिए• अल्लाह के वादे का रसूल मुकर्रर किया गया था उसे बेनकाब करने के लिए (अपेन्डिक्स 1, 2, और 26) •*

आज़ाब काफिरों के लिए

337. जब वो देखता है उनको दूर से, वो सुनेंगे उसके जुनून और तैश को•

338. और जब वो फेके जाते हैं उसमें, एक तंग जगह से, सारे जकड़े गये, वो ऐलान करेंगे उनकी नदामत•

339. तुम ऐलान नहीं करोगे बस सिर्फ एक नदामत, उस दिन पर; तुम झेलोगो एक बड़ें तादाद नदामतों के ज़रिये•

नेककारों के लिए इनाम

340. कहो, "क्या यह बेहतर है या दायम जन्नत जो वादा किया गया है नेककारों के लिए? वो है उनका वाजिब इनाम; एक वाजिब मुकद्दर•"

341. वो पाते हैं उसमें जो कुछ वो चाहते हैं, हमेशा के लिए• यह है तुम्हारे रब का अटल वादा•

342. उस दिन पर जब वो उनको हाज़िर करते हैं, एक साथ बुतों के जिनको उन्होंने कायम किया सिवाए **अल्लाह** के, वो कहेंगे, क्या तुमने बहकाया मेरे इन बंदों को, या वो बहक गये अपने आप?"

343. वो कहेंगे, "आपकी बड़ाई हो, यह हमारे लिए सही नहीं था कायम करना किसी रबों को सिवाए आपके• लेकिन आपने इजाज़त दिया उनको मज़े लेने के लिए, एक साथ उनके वालिदैन के• इस वजह से, उन्होंने नज़रअंदाज़ किया पैगाम को और इस तरह बन गये बदकार लोग•"

344. उन्होंने कुफ्र किया है पैगाम में जो आपने दिया है उनको, और, इस वजह से, तुम नाहीं हिफाज़त कर सकते उनकी आज़ाब से जो उन्होंने हासिल किया है, नाहीं तुम मदद कर सकते हो उनकी किसी राह में• जो कोई तुम में से करता है बुरा, हम हवाले करेंगे उसे सख्त आज़ाब को•

रसूलें हैं सिर्फ इंसान

345. हमने नहीं भेजा किसी रसूलों को तुम से पहले जिन्होंने नहीं खाया खाना और चले बाज़ारों में• हम इस तरह आज़माते हैं तुम्हें एक दूसरे से; क्या तुम साबित कदमी से जमें रहोगे? तुम्हारे रब हैं देखने वाले•

346. जो कोई उम्मीद नहीं रखते हमसे मिलने का कहा, "अगर सिर्फ फरिश्ते नीचे आ सकते हमारी तरफ, या हम देख सकते हमारे रब को *(हम फिर ईमान लाते)*!" वाकई, उन्होंने किया है एक बड़ा तकब्बुर, और पैदा किया है एक बड़ी बेअदबी•

347. जिस दिन वो देखेंगे फरिश्तों को, वो अच्छी खबर नहीं होगी मुजरिम के लिए; वो कहेंगे, "अब, हम हमेशा के लिए कैद किये गये हैं•"

348. हम देखेंगे सारे कामों कि तरफ जो उन्होंने किया है, और कर देंगे उनको रद्द और बेअसर•

349. जन्नत के रहने वाले हैं कहीं बेहतर उस दिन पर; वो सुनेंगे बेहतर खबरें•

350. आसमान फट जायेगा, बादलों के अंबारों में, और फरिश्ते उतरेंगे बड़ी तादादों में•

351. सारी बादशाहत उस दिन पर होगी सबसे रहम वाले की• काफिरों के लिए वो होगा एक मुश्किल दिन•

अल्लाह के
*वादे का रसूल**

352. दिन आयेगा जब खतावार चबाएगा उसके हाथों को *(बेचैनी में)* और कहेगा, "काश, मैंने रास्ते कि पैरवी की होती रसूल के साथ•

353. "काश, हाय हो मुझको, मैंने काश नहीं लिया होता उस शक्स को एक दोस्त जैसा•

354. "उसने रहबरी की मेरी पैगाम से दूर इसके बाद कि वो आया मेरी तरफ• वाकई, शैतान मायूस करता है उसके इंसानी शिकारों को•

355. रसूल* ने कहा, "मेरे रब, मेरे लोगों ने छोड़ दिया है इस कुरान को•"

356. हम इसके अलावा कायम करते हैं हर रसूल के खिलाफ दुश्मनों को मुजरिम के बीच से• तुम्हारे **रब** काफी हैं एक हिदायत करने वाले जैसे, एक मालिक•

357. जिन्होंने कुफ्र किया कहा, "क्यों कुरान नहीं आया उसके ज़रिये से पूरा एक साथ?" हमने आज़ाद किया उसे तुम्हारी तरफ आहिस्ता से, ताके उसे जमा दें तुम्हारी याददाश्त में• हमने बयान किया है उसे एक खास सिलसिले में•

अल्लाह का सबूत है बेइंतेहा

358. जो कुछ बहेस वो लाते हैं, हम मुहय्या करते हैं तुम्हें सच के साथ, और एक बेहतर समझ•

359. जो कोई ज़बरदस्ती हाज़िर किये जाते हैं जहन्नम को हैं सबसे बुरे मकाम में, वो हैं सबसे दूर सही राह से•

360. हमने दिया है मूसा को आसमानी किताब, और मुकर्रर किया उसके भाई हारून को उसका मददगार होने का•

361. हमने कहा, "जाओ, तुम दोनो, लोगों कि तरफ जिन्होंने ठुकराया हमारी आयतों को," और उसके बाद, हमने पूरी तरह फनाह कर दिया ठुकराने वालों को•

362. इसी तरह, जब नुह के लोगों ने कुफ्र किया रसूलों में, हमने डुबो दिया उनको, और हमने कायम कर दिया उनको एक निशानी जैसा लोगों के लिए• हमने तैयार कर रखा है खतावारों के लिए एक दर्दनाक आज़ाब•

363. आद, तमूद, अल रूस के रहने वाले भी, और कई नस्ले उनके बीच•

364. इनमें से हर एक गिरोह के लिए, हमने पहुँचाये काफी मिसालें, इससे पहले कि हमने उनको फनाह किया•

365. वो गुज़रे हैं उस कौम से जो बरसाए गये थे एक अफसोसनाक बौछार के साथ *(सोडोम)*• क्या उन्होंने नहीं देखा उसे? हकीकत ये है कि, उन्होंने कभी ईमान नहीं रखा हश्र में•

रसूलें मज़ाक उड़ाये गये

366. जब उन्होंने देखा तुमको, उन्होंने हर बार तुम्हारा मज़ाक उड़ाया: "क्या यही है वो जो चुना गया है **अल्लाह** कि तरफ से एक रसूल होने के लिए?

367. "उसने तकरीबन फेर दिया हमें हमारे खुदाओं से, अगर वो हमारे उनके साथ साबित कदमी से जमे रहने के लिए न होता•" वो यकीनन जान जायेंगे, जब वो देखेंगे आज़ाब, कौन हैं असल बहके हुए सही राह से•

अना एक खुदा जैसा

368. क्या तुमने देखा है उसे जिसका खुदा है उसके खुद का अना? क्या तुम होगे उसके वकील?

**25:27-30 यह आयत अल्लाह के वादे के रसूल को भी मुखातिब करती है जिसका नाम रियाज़ी तौरपर कोड किया गया कुरान में "रशाद खलीफा" जैसा• अगर तुम लिखो "रशाद" कि जिमेटरिकल वेल्यू (505), उसके बाद "खलीफा" कि जिमेटरिकाल वेल्यू (725), उसके बाद यह सुरह नंबर (25), उसके बाद आयतें 27, 28, 29 और 30, आखरी नंबर है (5057252527282930) है एक 19 का ज़रप (देखें अपन्डिक्सें 2 और 26 तफसीलों के लिए)• नबी मुहम्मद भी जारी करेंगे ऐसा एक जुमला जैसा 25:30 में इंसाफ के दिन पर•*

1789 *98400*

369. क्या तुम सोचते हो कि उनमें से ज़्यादा सुनते, या समझते हैं? वो हैं बिल्कुल जानवरों की तरह; नहीं, वो हैं कहीं बुरे•

लामहदूद नियामतें
अल्लाह की तरफ से

370. क्या तुमने नहीं देखा कैसे तुम्हारे रब ने परछाई की नक्शकारी की? अगर वो चाहते, उन्होंने उसे कायम बनाया होता, फिर हमने सूरज की नक्शकारी की होती मुताविक से•

371. लेकिन हमने नक्शकारी की उसकी आहिस्ता से चलने के लिए•

372. वो हैं वाहिद जिन्होंने नक्शकारी की रात को एक गिलाफ होने का, और तुम्हारे लिए सोने और आराम करने के लिए• उन्होंने बनाया दिन को एक हश्र•

373. वो हैं वाहिद जो भेजते हैं हवाओं को साथ अच्छी अलामतों के उनकी रहमत से, और हम भेजते हैं आसमान से नीचे पाक पानी•

374. उसके साथ, हम ताज़ा करते हैं मुर्दा ज़मीनों को और पीना मुहय्या करते हैं हमारी मखलूकों—जानवरें और इंसानों कि बड़ी तादाद के लिए•

375. हमने बांटा है उसे उनके दरमियान दुरूस्त नाप में, ताके वो तवज्जो लें• लेकिन ज़्यादातर लोग इसरार करते हैं कुफ्र करने पर•

376. अगर हमने चाहा होता, हमने भेजा होता हर कौम कि तरफ एक खबरदार करने वाला•

377. इसलिए, काफिरों कि अताअत न करो, और जद्दोजेहद करो उनके खिलाफ इसके साथ, एक बड़ी जद्दोजेहद•

378. वो हैं वाहिद जो मिलाते हैं दो समंदरों को, एक है ताज़ा और लज़ीज, जबकी दूसरा है खारा और पीने के लिए नाकाबिल• और उन्होंने अलग किया उन्हें एक ज़बरदस्त, न तोड़ी जा सकने वाली आड़ से *(इवापोरेशन)*•

379. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया पानी से एक इंसान, फिर बनाया उसे पैदा करने के लिए शादी और सोहबत के ज़रिये• तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक•

380. इसके बाद भी, वो फिर भी कायम करते हैं **अल्लाह** के सिवाए बुतों को जो कभी उनको फायदा नहीं दे सकते हैं, नाहीं उनको नुकसान पहुँचा सकते हैं• वाकई, काफिर है एक दुश्मन उसके रब का•

381. हमने भेजा है तुम्हे *(रशाद)* एक खुशखबरी पहुँचाने वाला, साथ साथ एक आगाह करने वाले जैसा•*

382. कहो, "मैं नहीं पूछता तुमसे किसी पैसे के लिए• मैं सिर्फ तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ तुम्हारे रब की तरफ का सही रास्ता पाने के लिए, अगर ये है जो तुम चुनो•

नबियें और बुज़ुर्गें
हैं मुर्दा

383. तुम्हें रखना चाहिए तुम्हारे भरोसे को वाहिद में जो हैं ज़िंदा—वाहिद जो कभी नहीं मरते—और उनकी तारीफ करो और बड़ाई करो उनकी• वो हैं पूरी तरह वाकिफ उनके मखलूकों के गुनाहों से•

384. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और सारी चीज़ें उनके दरमियान, छ: दिनों में, फिर लिया सारे इक्तेदार को• सबसे महेरबान; पूछो उनके बारे में जो हैं इल्म में पुख्ता•

नाकद्रदान इंसान

385. जब उनसे बोला जाता है, "सबसे महेरबान के सामने सजदा करो," वो कहते हैं, "क्या है सबसे महेरबान? क्या हम सजदा करें सामने उसके जिसकी तुम वकालत करते हो?" इस तरह, वो सिर्फ बढ़ाता है उनकी नफरत•

386. सबसे मुबारक हैं वाहिद जिन्होंने रखा सितारों के गुच्छों को आसमान में, और रखा उसमें एक चिराग को, और एक चमकते हुए चाँद को•

387. वो हैं वाहिद जिन्होंने नक्शकारी की रात और दिन की तबदील होने के लिए: एक काफी सबूत उनके लिए जो चाहते हैं तवज्जो लेने के लिए, या कद्रदान बनने के लिए•

**25:56 "रशाद खलीफा" कि जिमेटरिकल वेल्यू (1230), जमा सुरेह और आयत नंबर (25+56) देता है एक टोटल 1230+25+56=1311=19x69 का•*

सिफतें
नेककारों की

388. **सबसे मेहरबान** की इबादत करने वाले वो हैं जो चलते हैं ज़मीन पर नर्मी से• और जब नासमझ बात करते हैं उनसे, वो कहते हैं सिर्फ अमन•

389. रात की तन्हाई में, वो ध्यान करते हैं उनके रब पर, और गिरते हैं सजदे में•

390. और वो कहते हैं, "हमारे रब, बचाईये हमें जहन्नम की तकलीफ से; उसका आज़ाब है दहशतनाक•

391. "वो है सबसे बुरा ठिकाना; सबसे बुरा मुकद्दर•"

392. जब वो देते हैं, वो नाहीं हैं फुज़ूल खर्च, नाहीं कंजूस; वो देते हैं मियाना रवाई में•

393. वो कभी इल्तेजा नहीं करते **अल्लाह** के सिवाए किसी दूसरे खुदा से, नाहीं वो कत्ल करते हैं किसी रूह को—इसलिए कि **अल्लाह** ने बनाया ज़िंदगी को मुकद्दस—सिवाए इंसाफ कि राह में• नाहीं वो करते हैं ज़िना• जो कोई करते हैं इन जुर्मों को देना होगा मुआवज़ा•

394. आज़ाब दुगना किया जाता है उनके लिए हश्र के दिन पर, और वो रहते हैं उसमें रूसवा किये गये•

395. माफ किये गये हैं वो जो तौबा करते हैं, ईमान रखते हैं, और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं• **अल्लाह** तबदील कर देते हैं उनके गुनाहों को कद्र में• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहेम वाले•

396. जो कोई तौबा करते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, **अल्लाह** उनको निजात देते हैं; एक मुकम्मल निजात•

और भी सिफतें नेककारों की

397. वो नहीं देते हैं झूठी गवाही• जब वो सामना करते हैं फुज़ूल बात का, वो उसे नज़रअंदाज़ करते हैं•

398. जब उनके रब कि आयतें याद दिलायी जाती हैं, वो कभी बरताव नहीं करते उनकी तरफ ऐसे जैसे वो थे बहरे और अंधे•

399. और वो कहते हैं, "हमारे रब, होने दीजिये हमारे जोड़ों और औलाद को हमारे लिए खुशी का एक ज़रिया, और रखिये हमें नेककारी के अगले दस्ते में•"

400. ये हैं वो जो हासिल करते हैं बदले में जन्नत उनके साबित कदमी के लिए; वो इस्तेकबाल किये जाते हैं उसमें पुर मुसर्रत सलामतियों और अमन के साथ•

401. वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए; क्या एक खुबसूरत मुकद्दर; क्या एक खूबसूरत ठिकाना•

402. कहो, "तुम हासिल करते हो कीमत मेरे रब के पास सिर्फ तुम्हारी इबादत के ज़रिये• लेकिन अगर तुम कुफ्र करो, तुम पाते हो यकीनी अंजामों को•

****

सुरह 26: शायरें (अल शुअरा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. त• स• म•*

2. ये *(हुरूफें)* कायम करते हैं इस वाज़े करती किताब की सबूतें•

3. हो सकता है तुम अपने आप को इल्ज़ाम दो कि वो ईमानवाले नहीं हैं•

**26:1 देखें अपेन्डिक्स 1 पहले से पोशीदा रहे इन हुरूफों के मायने के लिए•*

1795 *98664*

4. अगर हम चाहें, हम भेज सकते हैं आसमान से एक निशानी जो मजबूर कर दे उनके गर्दनों को झुकने के लिए•

कुरान का
रियाज़ी कोड

5. जब भी एक ताकीद आती है सबसे महेरबान कि तरफ से उनकी तरफ, जो है नया, वो पलट जाते हैं नफरत में•

6. चुँकी उन्होंने कुफ़्र किया, उन्होंने हासिल किया उनके बेपरवाहीपन के नतीजों को•

7. क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा, और कितने किस्मों के खुबसूरत पौधे हमने उगाये हैं उसपर?

8. ये एक काफी सबूत होना चाहिए उनके लिए, लेकिन ज़्यादातर उनमें ईमानवाले नहीं•

9. बिला शक, तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहम वाले•

मूसा

10. याद करो कि तुम्हारे रब ने पुकारा मूसा को: "जाओ खता करने वाले लोगों की तरफ•"

11. "फिरऔन के लोग; शायद वो इसलाह करें•"

12. उसने कहा, "मेरे रब, मैं डरता हूँ कहीं वो मुझमें कुफ़्र न करें•

13. "हो सकता है मैं अपने गुस्से को खो दूँ• मेरी ज़बान वंध जाती है; भेजिये मेरे भाई हारून को•

14. "इसके अलावा, वो मुझको एक भागा हुआ समझते हैं; मैं डरता हूँ कहीं वो मुझको कत्ल न कर दें•"

15. उन्होंने कहा, "नहीं, *(वो नहीं करेंगे)*• जाओ मेरे सबूतों के साथ• हम तुम्हारे साथ होंगे, सुनते हुए•

16. "जाओ फिरऔन की तरफ और कहो, 'हम हैं रसूलें कायनात के रब कि तरफ से•' "

17. " 'बनी इस्राईल को जाने दो•' "

18. उसने कहा, "क्या हमने परवरिश नहीं किया तुम्हारी बचपन से, और तुमने गुज़ारे कई सालें हमारे साथ?

19. "फिर तुमने किया जुर्म जो तुमने किया, और तुम थे एहसान फरामोश•"

20. उसने कहा, "वाकई, मैंने किया वो जब मैं था गुमराह•

21. "फिर मैं भाग गया, जब मैं तुमसे डरा, और मेरे रबने बक्शा मुझे हिकमत से और बनाया मुझे रसूलों में से एक•

22. "तुम शेखी कर रहे हो कि तुमने किया मुझपर एक एहसान, जबकी गुलाम बनाते हुए बनी इस्राईल को!"

23. फिरऔन ने कहा, "क्या है कायनात का रब?"

24. उसने कहा, "रब आसमानों और ज़मीन के, और सारी चीज़ें उनके बीच• तुम्हें इसके बारे में यकीन होना चाहिए•"

25. उसने उसके आसपास वालों से कहा, "क्या तुमने ये सुना?"

26. उसने कहा, "रब तुम्हारे और रब तुम्हारे पुरखों के•"

27. उसने कहा, "तुम्हारा रसूल जो भेजा गया है तुम्हारी तरफ है दिवाना•"

28. उसने कहा, "रब मगरिब और मशरिक के, और सारी चीज़ें उनके बीच, अगर तुम समझों•"

29. उसने कहा, "अगर तुम कबूल करो किसी खुदा को, मेरे बजाये, मैं फेंक दूंगा तुम्हें कैदखाने में•"

30. उसने कहा, "क्या मैं अगर दिखाऊं तुमको कोई गहरी चीज?"

31. उसने कहा, "तो पैदा करो उसे, अगर तुम हो सच्चे•"

32. उसने फेंका उसका आसा, जिसपर वो बन गया एक बड़ा सांप•

33. और उसने निकाला उसका हाथ, और वो था सफेद देखने वालों के लिए•

34. उसने कहा उसके आस पास बुर्जुगों से, "यह है एक तर्जुबेकार जादूगर•

35. "वो चाहता है तुमको तुम्हारे ज़मीन से बाहर लेजाने के लिए, उसके जादू के साथ• तुम क्या मशवरा करते हो?"

36. उन्होंने कहा, "मोहलत दो उसे और उसके भाई को, और भेजो हाज़िर करने वालों को हर शहर कि तरफ•

37. "उन्हें हर एक तर्जुबेकार जादूगर को हाज़िर करने दो•"

38. जादूगरें जमा किये गये थे मुकर्रर किये गये वक्त पर, मुकर्रर किये गये दिन पर•

39. लोगों से कहा गया था: "आओ सारे; चलें हम जमा होयें एक साथ यहाँ•"

40. हो सकता है हम जादूगरों के पीछे हो लें, अगर वो हैं जीतने वाले•"

41. जब जादूगरें आये, उन्होंने फिरऔन से कहा, "क्या हमें मुआवज़ा दिया जायेगा, अगर हम हैं जीतने वाले?"

42. उसने कहा, "हाँ वाकई; तुम यहाँ तक के आ जाओगे मेरे करीब•"

43. मूसा ने उनसे कहा, फेंको जो तुम फेंकने वाले हो•"

44. उन्होंने उनकी रस्सियों और लकड़ियों को फेंका, और कहा, "फिरऔन कि अज़मत से, हम होंगे जीतने वाले•"

45. मूसा ने उसके आसे को फेंका, जिसपर वो निगल गया जो उन्होंने गढ़ा था•

माहिरें
पहचान लेते हैं सच को

46. जादूगरें सजदे में गिर गये•

47. उन्होंने कहा, "हम ईमान रखते हैं कायनात के रब में•

48. "मूसा और हारून के रब•"

49. उसने कहा, "क्या तुम उसके साथ ईमान लाये इससे पहले कि मैं तुमको इजाज़त देता? वो तुम्हारा उस्ताद होना चाहिए, जिसने तुमको जादू सिखाया• तुम यकीनन जान जाओगे• मैं काटूंगा तुम्हारे हाथों और पैरों को अलग अलग तरफों से• मैं तुम सारों को सूली पर चड़ा दूंगा•

50. उन्होंने कहा, "यह नहीं बदलेगा हमारे फैसले को; हमारे रब कि तरफ हम लौटेंगे•"

51. हम उम्मीद करते हैं कि हमारे रब माफ करेंगे हमें हमारे गुनाहों को, खासतौर पर जब हम हैं सबसे पहले ई मानवाले•"

52. हमने मूसा को इल्हाम किया: "सफर करो मेरे बंदों के साथ; तुम पीछा किये जाओगे•"

53. फिरऔन ने भेजा ऐलान करने वालों को शहर कि तरफ•

54. *(ऐलान करते हुए,)* "यह है एक छोटी टोली•

55. "वो अब हमारी मुखालिफत कर रहे हैं•

56. "चलें हम सारे खबरदार रहे उन से•"

यकीनी
आज़ाब

57. इस वजह से, हमने महरूम किया उनको बागों और नहरों से•

58. और खज़ानो और एक इज़्जत वाली मकाम•

59. फिर हमने बनाया उसे एक वारिस बनी इस्राईल के लिए•

60. उन्होंने मशरिक कि तरफ उनका पीछा किया•

61. जब दोनों जमातों ने देखा एक दूसरे को, मूसा के लोगों ने कहा, "हम पकड़े जायेंगे•"

62. उसने कहा, "बिल्कुल नहीं• मेरे रब हैं मेरे साथ; वो हिदायत करेंगे मेरी•"

63. हमने फिर मूसा को इल्हाम किया: "तुम्हारे आसे से मारो समंदर को," जिसपर वो अलग हो गया• हर हिस्सा था एक बड़े पहाड़ कि तरह•

64. हमने फिर सारों को बचाया•

65. हमने इस तराह हिफाज़त की मूसा और सारे जो थे उसके साथ•

66. और हमने डुबो दिया दूसरों को•

67. यह होना चाहिए एक काफी सबूत, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमानवाले नहीं हैं•

68. बिला शक, तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहम वाले•

इब्राहीम

69. बयान करो उनके लिए इब्राहीम की तारीख•

70. उसने कहा उसके वालिद और उसके लोगों से, “क्या है ये जिसकी तुम इबादत कर रहे हो?”

71. उन्होंने कहा, “हम इबादत करते हैं मूर्तियों कि; हम हैं पूरी तरह मनसूब उनकी तरफ•”

72. उसने कहा, “क्या वो तुम्हें सुन सकते हैं जब तुम उनको इल्तेजा करते हो?

73. “क्या वो तुम्हें फायदा, या तुम्हें नुकसान दे सकते हैं?”

74. उन्होंने कहा, “नहीं; लेकिन हमने हमारे वालिदैन को ऐसा करते पाया•”

75. उसने कहा, “क्या तुम देखते हो इन बुतों को जिनकी तुम इबादत करते हो•

76. “तुम और तुम्हारे पुरखें•

77. “मैं उनके खिलाफ हूँ, इसलिए कि मैं मनसूब हूँ सिर्फ कायनात के रब की तरफ•

78. “वाहिद जिन्होंने मुझको पैदा किया, और मुझको हिदायतयाफ्ता किया•

79. “वाहिद जो खिलाते हैं मुझे और पिलाते हैं मुझे•

80. “और जब मैं बिमार होता हूँ, वो दते हैं मुझे शिफा•

81. “वाहिद जो मुझको मौत देते हैं, फिर मुझे वापस जिंदगी को लाते हैं•

82. “वाहिद जो उम्मीद करता हूँ माफ करेंगे मेरे गुनाहों को इंसाफ के दिन पर•

83. “मेरे रब, अता करिये मुझे हिकमत, और शामिल करिये मुझे नेककारों के साथ•

84. “मैं जो मिसाल कायम करूं आने वाली नस्लों के लिए होने दीजिये एक अच्छा वाला•

85. “बनाईये मुझे मुसर्रत भरे जन्नत के वारिसों में से एक•

86. “और माफ करिये मेरे वालिद को, इसलिए कि वो गुमराह हो गये हैं•

87. “और तर्क न करिये मुझे हश्र के दिन पर•”

88. वो है दिन जब नातो पैसा, नाहीं औलाद, मदद कर सकते हैं•

89. सिर्फ वो जो आते हैं **अल्लाह** की तरफ उनके पूरे दिल के साथ *(बचाये जायेंगे)*•

90. जन्नत पेश की जायेगी नेककारों के लिए•

91. जहन्नम कायम की जायेगी बहके हुओं के लिए•

वो ठुकरायेंगे
उनके बुतों को

92. वो पूछे जायेंगे, “कहाँ हैं बुते जिनकी तुम इबादत किया

93. “**अल्लाह** के सिवाए? क्या वो अब तुम्हारी मदद कर सकते हैं? क्या वो खुदकी मदद कर सकते हैं?”

94. वो उसमें फेंके जायेंगे, साथ इकट्ठे बहके हुओं के•

95. और सारे शैतान के सिपाहियें•

96. वो कहेंगे जैसे वो झगड़ेंगे उसमें,

97. “**अल्लाह** कि कसम, हम थे कहीं ज़्यादा बहके हुए•

98. “हम कैसे तुम्हें कायम कर सकते थे कायनात के रब के बराबर होने के लिए?

99. “जिन्होंने हमें गुमराह किया थे बदकार•

100. “अब हमारे पास कोई शिफाअत करने वाले नहीं•

101. “नाहीं एक करीबी दोस्त•

102. “अगर सिर्फ हमें एक दूसरा मौका मिले, हम फिर ईमान लायेंगे•”

103. यह एक अच्छा सबक होना चाहिए• लेकिन ज़्यादातर लोग ईमानवाले नहीं हैं•

104. तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहमवाले•

नुह

105. नुह के लोगों ने कुफ्र किया रसूलों में•

106. उनके भाई नुह ने उनको कहा, “क्या तुम नेककार नहीं बनोगे?

107. “मैं एक ईमानदार रसूल हूँ तुम्हारी तरफ•

108. “तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम और मेरी पैरवी करना•

109. “मैं नहीं मांगता तुमसे किसी मुआवज़े के लिए• मेरा मुआवज़ा आता है कायनात के रब कि तरफ से•

110. “तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम और मेरी पैरवी करना•

111. उन्होंने कहा, “हम कैसे तुम्हारे साथ ईमान ला सकते हैं, जबकी हममें से सबसे बुरों ने तुम्हारी पैरवी की है?”

112. उसने कहा, “मैं कैसे जानता उन्होंने क्या किया?”

113. “उनका फैसला रहता है सिर्फ मेरे रब के पास, अगर तुम समझ सकते•

114. “मैं कभी ईमानवालों को बरखास्त नहीं करूंगा•

115. “मैं एक वाज़े करता हुआ खबरदार करने वाले से ज़्यादा कुछ नहीं•”

116. उन्होंने कहा, “जब तक तुम बाज़ न आओ, ऐ नुह, तुम पत्थर मारे जाओगे•”

117. उसने कहा, “मेरे रब, मेरे लोगों ने कुफ़्र किया मुझमें•

118. “अता करिये मुझे फतेह उनके खिलाफ, और बचाईये मुझे और मेरे ईमानवाले गिरोह को•”

119. हमने बचाया उसे और वो जो साथ हुए उसके लदी हुई कश्ती में•

120. फिर हमने डुबो दिया दूसरों को•

121. यह एक सबक होना चाहिए, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमानवाले नहीं हैं•

122. बिलाशक, तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहमवाले•

हूद

123. ‘आद ने रसूलों में कुफ़्र किया•

124. उनके भाई हूद ने उनको कहा, “क्या तुम नेककार नहीं बनोगे?

125. “मैं एक ईमानदार रसूल हूँ तुम्हारी तरफ•

126. “तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम और, मेरी पैरवी करना•

127. “मैं नहीं मांगता तुमसे किसी मुआवज़े के लिए; मेरा मुआवज़ा आता है कायनात के रब कि तरफ से•

128. “तुम तामीर करते हो हर पहाड़ पर एक महल गुरूर के लिए•

129. “तुम कायम करते हो इमारतों को जैसे तुम रहोगे हमेशा के लिए•

130. “और जब तुम वार करते हो, तुम वार करते हो बेरहमी से•

131. “तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम और मेरी पैरवी करना•

132. “एहतराम करो वाहिद का जिन्होंने मुहय्या किया तुम्हें सारी चीज़ों से जो तुम जानते हो•

133. “उन्होंने मुहय्या किया तुम्हें मवेशी और औलाद से•

134. “और बागों और नहरों•

135. “मैं डरता हूँ तुम्हारे लिए एक ज़बरदस्त दिन के आज़ाब से•”

136. उन्होंने कहा, “यह तुम्हारे लिए एक सा है चाहे तुम नसीहत करो, या नसीहत न करो•

137. “वो आफत थी महदूद हमारे पुरखों के लिए•

138. “कोई आज़ाब नहीं गिरेगा हम पर कभी•”

139. उन्होंने इस तरह कुफ़्र किया और, इस वजह से, हमने उनको फनाह कर दिया• यह एक सबक होना चाहिए, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमानवाले नहीं हैं•

140. बिलाशक, तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहमवाले•

सालेह

141. तमूद ने कुफ़्र किया रसूलों में•

142. उनके भाई सालेह ने उनको कहा, “क्या तुम नेककार नहीं बनोगे?

143. “मैं एक ईमानदार रसूल हूँ तुम्हारी तरफ•

144. “तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम और मेरी पैरवी करना•

145. “मैं नहीं मांगता तुमसे किसी मुआवज़े के लिए; मेरा मुआवज़ा आता है सिर्फ कायनात के रब कि तरफ से•

146. क्या तुम तसव्वुर करते हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे हमेशा के लिए, महफूज़ इस हालत में?

147. तुम लुत्फ उठाते हो बागों और नहरों•

148. “और अनाजों और नख्ल के दरख्तों के साथ ज़ायकेदार फलों का•

149. “तुम तराशते हो पहाड़ों से अरामदेह महलों को•

150. “तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम और मेरी पैरवी करना•

151. “खतावारों कि अताअत न करो•

152. “जो बुराई करते हैं, अच्छे कामों को नहीं•”

153. उन्होंने कहा, “तुम जादू किये गये हो•

154. “तुम हमारी तरह एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं• पेश करो एक मौजेज़ा, अगर तुम हो सच्चे•”

155. उसने कहा, “यहाँ है एक ऊँठनी जो पियेगी सिर्फ एक दिन पर जो मुकर्रर किया गया है उसके लिए; एक दिन जो मुख्तलिफ है तुम्हारे मुकर्रर किये गये पीने के दिनों से•

156. “न छुओ उसे किसी तकलीफ से, ताके तुम न झेलो आज़ाब एक ज़बरदस्त दिन पर•”

157. उन्होंने उसे ज़बा कर दिया, और इस तरह हासिल किया गम•

158. आज़ाब ने उनको गालिब कर दिया• यह एक सबक होना चाहिए, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमानवाले नहीं हैं•

159. बिलाशक, तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहमवाले•

लूत

160. लूत के लोगों ने रसूलों में कुफ्र किया•

161. उनके भाई लूत ने उनको कहा, “क्या तुम नेककार नहीं बनोगे?

162. “मैं एक ईमानदार रसूल हूँ तुम्हारी तरफ•

163. “तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम और मेरी पैरवी करना•

164. “मैं नहीं मांगता तुमसे किसी मुआवज़े के लिए; मेरा मुआवज़ा आता है सिर्फ कायनात के रब कि तरफ से•

165. “क्या तुम सारे लोगों में से; मर्दों के साथ शहवत करते हो?

166. “तुम तर्क करते हो बिवीयों को जिनको तुम्हारे रब ने पैदा किया है तुम्हारे लिए! वाकई, तुम हो खता करने वाले लोग•”

167. उन्होंने कहा, “जब तक तुम बाज़ न आओ, ऐ लूत, तुम कर दिये जाओगे जिलावतन•”

168. उसने कहा, “मैं मज़म्मत करता हूँ तुम्हारी हरकतों की•”

169. “मेरे रब, बचाईये मुझे और मेरे कुम्बे को उनके कामों से•”

170. हमने बचाया उसे और उसके सारे कुम्बे को•

171. लेकिन बूढ़ी औरत को नहीं; वो बरबाद कर दी गई थी•

172. हमने फिर बरबाद कर दिया दूसरों को•

173. हमने बरसाया उनको एक काबिले अफसोस बौछार से; क्या एक हौलनाक बौछार उनके लिए जो खबरदार किये गये थे!

174. यह एक सबक होना चाहिए, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमानवाले नहीं हैं•

175. बिलाशक, तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहमवाले•

शुऐब

176. जंगल के लोगों ने रसूलों में कुफ्र किया•

177. शुऐब ने उनको कहा, “क्या तुम नेककार नहीं बनोगे?

178. “मैं एक ईमानदार रसूल हूँ तुम्हारी तरफ•

179. “तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम और मेरी पैरवी करना•

180. “मैं नहीं मांगता तुमसे किसी मुआवज़े के लिए; मेरा मुआवज़ा आता है सिर्फ कायनात के रब कि तरफ से•

181. “तुम्हें पूरा नाप देना चाहिए जब तुम तिजारत करो; न करो बेईमानी•

182. “तुम्हें एक बराबरी वाले तराजू से नापना चाहिए•

183. “बेईमानी न करो लोगों से उनके हकों में से, और न फिरो ज़मीन पर खराबी से•

184. “एहतराम करो वाहिद का जिन्होंने पैदा किया तुम्हें और पिछली नस्लों को•”

185. उन्होंने कहा, “तुम जादू किये गये हो•

186. “तुम हमारी तरह एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं हो• हकीकत में, हम समझते हैं तुम हो एक झूठे•

187. “गिरने दो आसमान से अंबारों को हमपर, अगर तुम हो सच्चे•”

188. उसने कहा, “मेरे रब हैं वाहिद जो जानते हैं सारी चीज़ें तुम करते हो•”

189. उन्होंने उसे नहीं माना और, इस वजह से, उन्होंने हासिल किया शामियाने के दिन का आज़ाब• वो था एक ज़बरदस्त दिन का आज़ाब•

190. यह एक सबक होना चाहिए, लेकिन ज़्यादा तर लोग ईमानवाले नहीं हैं•

191. बिलाशक, तुम्हारे रब हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहम वाले•

कुरान

192. यह है एक वही कायनात के रब की तरफ से•

193. ईमानदार रूह *(जिब्राईल)* आये नीचे उसके साथ•

194. उसे तुम्हारे दिल में नाज़िल करने के लिए, ताके तुम खबरगर करने वालों में से एक हो सको•

195. एक सही सही अरबी ज़बान में•

196. वो पेशीनगोई की गई है पिछली नस्लों की किताबों में•

197. क्या वो नहीं है एक काफी निशानी उनके लिए कि वो पता था बनी इस्राईल में से आलिमों को?

ज़रूरी है कुरान का
तर्जुमा किया जाये

198. अगर हमने नाज़िल किया इसे लोगों को जो नहीं जानते अरबी•

199. और उसे पढ़ने दें *(अरबी में)*, मुमकिन नहीं के वो उसमें ईमान रखें•

200. हम इस तरह बनाते है उसे *(जैसे एक गैर मुल्की ज़बान)* मुजरिम के दिलों में•

201. इसतरह, वो कभी उसमें ईमान नहीं ला सकते; उस वक्त तक जब वो देख न लें दर्दनाक आज़ाब•

202. वो आयेगा उनकी तरफ अचानक, जब वो उसकी सबसे कम उम्मीद कर रहे हों•

203. वो फिर कहेंगे, “क्या हम पा सकते हैं एक राहत?”

204. क्या उन्होंने नहीं ललकारा हमारे आज़ाब को•

205. जैसा तुम देखते हो, हमने इजाज़त दिया उनको सालों तक मज़े लेने के लिए•

206. फिर आज़ाब आया उनकी तरफ, वैसा ही जैसा वादा किया गया था•

207. उनकी कुशादा मिलकियतों ने मदद नहीं किया उनकी ज़रा सी भी•

208. हमने कभी फनाह नहीं किया किसी कौम को बगैर खबरदार करने वालों को भेजते हुए•

209. इसलिए, यह है एक ताकीद, इसलिए कि हम कभी नहीं हैं बेइंसाफ•

झूठे रसूलें
नाकाबिल नसीहत करने के लिए
सिर्फ अल्लाह की इबादत*

210. शयातीन कभी नाज़िल नहीं कर सकते इसे•

211. वो कभी नहीं करेंगे, नाहीं कर सकते हैं•

212. इसलिए कि वो रोके गये हैं सुनने से•

213. इसलिए, बुत न बनाओ किसी दूसरे खुदा को सिवाए **अल्लाह** के, ताके तुम हासिल न करो आज़ाब•

अल्लाह के बाद
*का रसूल**

214. तुम्हें नसीहत करनी चाहिए लोगों को जो है तुम्हारे सबसे करीब•

215. और नीचा करो तुम्हारे बाज़ू को ईमानवालों के लिए जो तुम्हारी पैरवी करते हैं•

216. अगर वो तुम्हारी नाफरमानी करें, तो कहो, "मैं ठुकराता हूँ जो तुम करते हो•"

217. और रखो तुम्हारे भरोसे को कादिरे मुतलक, सबसे रहम वाले में•

218. जो देखते हैं तुम्हें जब तुम रात के दरमियान ध्यान करते हो•

219. और तुम्हारे बार बार सजदे•

220. वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

221. क्या मैं इत्तेला करूँ तुम्हें किस पर शयातीने उतरते हैं?

222. वो उतरते हैं हर गढ़ने वाले मुजरिम पर•

223. वो सुनने का ढोंग करते हैं, लेकिन उनमें ज़्यादातर हैं झूठे•

224. जहाँ तक शायरें, वो पैरवी किये जाते हैं सिर्फ गुमराहों की तरफ से•

225. क्या तुम नहीं देखते कि उनकी वफादारी बदलती है मौके के मुताबिक?

226. और वो कहते हैं जो वो नहीं करते?

227. माफ किये गये हैं वो जो ईमान रखते हैं, बसर करते हैं एक नेक ज़िंदगी, याद करते हैं **अल्लाह** को लगातार, और खड़े होते हैं उनके हकों के लिए• यकीनन, खतावारें जान जायेंगे क्या है उनका आखरी मुकद्दर•

****

सुरह 27: चींटी (अल नमल)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. त•स•* ये *(हुरूफें)* कायम करते हैं सबूतें कुरान के; एक गहरी आसमानी किताब•

2. एक रहनुमाई, और खुश खबरी, ईमानवालों के लिए•

3. जो कायम करते हैं राबता नमाज़ें *(सलात)*, देते हैं ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, और वो हैं, अगली ज़िंदगी के मुताल्लिक, बिल्कुल यकीनी•

4. जो कोई ईमान नहीं रखते अगली ज़िंदगी में, हम सजाते हैं उनके कामों को उनकी आँखों में• इस तरह, वो जारी रहते हैं खता करने के लिए•

5. ये हैं वो जो हासिल करते हैं सबसे बुरा आज़ाब, और अगली ज़िंदगी में, वो होंगे सबसे बुरे खोने वाले•

**26:210 एक झूठा रसूल है एक रसूल शैतान का, इसलिए कि वो है सबसे हैरतअंगेज़ झूठ का गढ़ने वाला• ऐसा एक रसूल कभी नहीं ठुकरा सकता बुतपरस्ती, या नसीहत कर सकता है सिर्फ अल्लाह कि इबादत•*

**26:214-223 ये आयतें मुखातिब करते हैं अल्लाह के वादे के रसूल की तरफ: जमा "रशाद खलीफा" कि जिमेटरिकल वेल्यू (1230), साथ आयत नंबर (214) है 1230+214=1444=19x76=19x19x4, और आयत नंबरों का जमा 214 से 223 तक है 2185=19x115 (देखें अपेन्डिक्स 1)•*

**27:1 देखें अपेन्डिक्स 1 इन कुरानी इनिशियलों के मायने के लिए•*

6. यकीनन, तुम पा रहे हो कुरान एक सबसे हकीम, सब कुछ जानने वाले की तरफ से•

मूसा

7. याद करो कि मूसा ने कहा उसके कुम्बे को, "मैं देख रहा हूँ एक आग; मुझको लाने दो उसमें से खबरें, या एक मशाल तुम्हें गर्म करने के लिए•"

8. जब वो आये उसकी तरफ, वो पुकारे गये थे: "मुबारक हैं वहिद आग में *(से जो बात कर रहे हैं)*, और वो जो हैं उसके इर्दगिर्द•" तारीफ हो **अल्लाह** की, कायनात के रब•

9. "ऐ मूसा, ये मैं हूँ, **अल्लाह**, कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

10. "फेंको नीचे तुम्हारे आसे को," जब उसने देखा उसे एक देव की तरह हरकत करते हुए, वो पलट गया और भाग गया• "ऐ मूसा, खौफज़दा न हो• मेरे रसूलों को डरना नहीं चाहिए•

11. "सिवाए वो जो करते हैं एक खता, फिर बदल देते हैं नेककारी को गुनाह करने के बाद; मैं हूँ माफ करने वाला, सबसे रहम वाला•

12. "डालो तुम्हारे हाथ को तुम्हारे जेब में; वो आयेगा बाहर सफेद, बगैर किसी दाग के• ये हैं नौ मौजज़े फिरऔन और उसके लोगों की तरफ, इसलिए कि वो हैं बदकार लोग•"

13. जब हमारे मौजज़े पेश किये गये थे उनको साफ और गहरे, उन्होंने कहा, "ज़ाहिर है ये जादू है•"

14. उन्होंने उनको ठुकराया और पूरी तरह कायल थे उनके गलत रास्तों से, उनके जहालत की वजह से• ध्यान दो बुरा करने वालों के लिए नतीजे•

दाऊद और सुलैमान

15. हमने इनायत किया दाऊद और सुलैमान को इल्म के साथ, और उन्होंने कहा, "तारीफ है **अल्लाह** की हमें बक्शने के लिए उनके ईमान रखने वाले बंदो से कहीं ज़्यादा•"

16. सुलैमान था दाऊद का वारिस• उसने कहा, "ऐ लोगों, हम इनायत किये गये हैं परिंदों कि ज़बान की समझ से, और सारे किस्मों की चीजें इनायत की गईं हैं हम पर• यह है वाकई एक असल रहमत•"

17. सुलैमान कि खिदमत में तैनात किये गये थे उसके वफादार लश्करें जिनों और इंसानों के, साथ साथ परिंदे; सारे उसकी सुर्पुदगी पर•

18. जब वो चींटियों की वादी के करीब हुए, एक चींटी ने कहा, "ऐ चींटियों, जाओ तुम्हारे घरों में, ताके तुम कुचल न दिये जाओ सुलैमान और उसके लश्करों के ज़रिये, बगैर समझते हुए•"*

19. वो मुस्कुराया और हंसा उसके जुमले पर,* और कहा, "मेरे रब, हिदायत करिये मेरी कद्रदान होने के लिए जो आपने इनायत किया है नियामतें मेरे और मेरे वालिदैन पर, और नेककारी वाले कामों को करने के लिए जो आप को खुश करें• दाखिल करिये मुझे आप की रहमत से आप के नेक बंदों की सोहबत में •"

20. उसने परिंदों का मुआयना किया, और कहा; "मैं क्यों नहीं देख रहा हुदहुद को? वो क्यों गायब है?

21. "मैं उसे सज़ा दूंगा सख्ती से या ज़बा कर दूंगा उसे, जब तक वो नहीं देगा मुझे एक अच्छी वजह•"

22. उसने लम्बा इंतेज़ार नहीं किया• *(हुदहुद)* ने कहा, "मेरे पास है खबर जो नहीं है तुम्हारे पास• मैं लाया तुम्हारे लिए शीवा की तरफ से, कुछ एहम इत्तेला•

**27:18-19 किसी एक सुरेह में जितना गैरमामूली वाक्या, उतना मज़बूत होता है रियाज़ी सबूत उनकी मदद करते हुए• यह मदद करता है हमें यकीन दिलाने के लिए कि ऐसी अजीब कुदरत हैं अलामत अल्लाह के इक्तेदार की• इस सुरेह कि इनिशियलें, त•स•, कायम करते हैं एक पेचीदा हिस्सा कुरानी इनिशियलों से मुताल्लिक रियाज़ी मौजज़े का• गैरमामूली पैदाईश और मौजज़े ईसा के हैं सुरेह 19 में, जो शुरू होता है पांच कुरानी इनिशियलों से• देखें अपेन्डिक्स 1 तफसीलों के लिए•*

23. "मैंने पाया एक औरत को उनपर हुक्मरानी करते हुए, जो बक्शी गई है सारी चीज़ों से, और रखती है एक ज़बरदस्त महल•

24. "मैंने पाया उसे और उसके लोगों को सूरज के सामने सजदा करते हुए, बजाए **अल्लाह** के• शैतान ने सजाया है उनके कामों को उनकी आँखों में, और दूर कर दिया है उनको राह से; इस वजह से वो नहीं हैं हिदायतयाफ्ता•"

25. उनको **अल्लाह** के सामने सजदा करना चाहिए था, वाहिद जो वाज़े करते हैं सारे राज़ों को आसमानों और ज़मीन में, और वाहिद जो जानते हैं सारी चीजें तुम छुपाते हो और सारी चीज़ें तुम ऐलान करते हो•

26. **अल्लाह**: कोई खुदा नहीं सिवाए उनके; रब बड़ी सल्तनत के साथ•

27. *(सुलैमान ने)* कहा, "हम देखेंगे अगर तुमने सच बोला, या तुम हो एक झूठे•

28. "लो यह खत मेरी तरफ से, दो इसे उनको, फिर उनके जवाब के लिए इंतेज़ार करो•"

वापस शीवा में

29. उसने कहा, "ऐ मेरे सलाहकारों, मैंने पाया है एक काबिले इज़्जत खत•

30. "वो है सुलैमान की तरफ से, और वो है, **'अल्लाह के नाम से, सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले•'***

31. "ऐलान करता हुआ: 'मगरूर न बनो; आओ मेरी तरफ फरमानबरदारों की तरह•'"

32. उसने कहा, "ऐ मेरे सलाहकारों, मशवरा दो मुझे इस मामले में• मैं फैसला नहीं कर रही जब तक तुम मुझको सलाह नहीं देते•"

33. उन्होंने कहा, "हम रखते हैं ताकत, हम रखते हैं लड़ने की हुनरें, आखिरकार कयादत है तुम्हारे हाथ में• तुम फैसला करो क्या करना है•"

34. उसने कहा, "बादशाहें बिगाड़ते हैं किसी भी ज़मीन को वो हमला करते हैं, और गुलाम बनाते हैं उसके अज़मत वाले लोगों को• यह है जो वो उमूमन करते हैं•

35. "मैं भेज रही हूँ एक तोहफा उनकी तरफ; चलें हम देखें रसूलें किसके साथ वापस आते हैं•"

36. जब हुदहुद लौटा सुलैमान की तरफ *(उसने बताया उसे खबर)*, और उसने जवाब दिया *(शीबा के लोगों के लिए)*: "क्या तुम मुझे दे रहे हो पैसा? जो **अल्लाह** ने दिया है मुझको है कहीं बेहतर उससे जो उन्होंने दिया है तुम्हें• तुम हो जिसे जश्न मनाना चाहिए ऐसे तोहफों में•"

37. *(उसने कहा, हुदहुद को,)* "जाओ वापस उनकी तरफ *(और उनको जानने दो कि)* हम आयेंगे उनकी तरफ ताकतों के साथ जिसका वो कभी तसव्वुर नहीं कर सकते• हम निकाल देंगे उनको, बेइज़्जत और ज़लील किये गये•"

रौशनी की रफ्तार से तेज़

38. उसने कहा, "ऐ बुर्जुगों, तुम में से कौन ला सकता है मुझे उसका महल, इससे पहले वो आयें यहाँ फरमानबरदारों की तरह?"

39. जिनों में से एक अफरीत ने कहा, मैं ला सकता हूँ उसे तुम्हारे लिए इससे पहले कि तुम खड़े हो• मैं काफी ताकतवर हूँ ऐसा करने के लिए•"

40. एक वो जो रखता था इल्म किताब से कहा, "मैं ला सकता हूँ उसे तुम्हारे लिए तुम्हारी आँख झपकने में•" जब उसने देखा उसे जमा हुआ उसके सामाने, उसने कहा, "यह है एक रहमत मेरे रब की तरफ से, जिससे वो मुझे आज़माते हैं, दिखाने के लिए कि मैं कद्रदान या नाकद्रदान हूँ• जो कोई है कद्रदान है कद्रदान उसके खुदके अच्छे के लिए, और अगर कोई बदल जाये नाकद्रदान, फिर मेरे रब, सबसे इज़्जतवाले को उसकी ज़रूरत नहीं•"

**27:30 'बिस्मिल्लाह' शामिल किया गया इस आयत में भरपाया करता है 'बिस्मिल्लाह' का जो है गायब सुरेह 9 से, 19 सूरतें पहले• ये लौटाता है तमाम वाके होना 'बिस्मिल्लाह' का 114 को, 19x6• देखें अपेन्डिक्स 29 ज़बरदस्त और गहरा मौजज़ा इस 'बिस्मिल्लाह' से जुड़े तफसील के लिए•*

41. उसने कहा, "दूसरी शक्ल दो उसके महल को• चलें हम देखें अगर वो हिदायतयाफ्ता होती है, या जारी रहती है गुमराह के साथ•"

42. जब वो पहुँची, उससे कहा गया था, "क्या तुम्हारा महल दिखता है ऐसा?" उसने कहा, "ऐसा लगता है यही है वो•" *(सुलैमान ने कहा,)* "हम पहले से जानते थे वो क्या करने वाली थी, और हम थे पहले से फरमानबरदारें•"

43. वो फेरी गई थी बुतों की इबादत करने की वजह से बजाए **अल्लाह** के; वो थी कुफ्र करने वाले लोगों के साथ•

44. उसे कहा गया था, "जाओ महल के अंदर•" जब उसने उसके अंदरूनी को देखा, उसने सोचा वो था पानी का एक हौज़, और उसने *(खींचा ऊपर उसका लिबास,)* ज़ाहिर करते हुए उसके पैरों को• उसने कहा, "यह अंदरूनी अब बिछाया गया है शीशानुमा पत्थर से•" उसने कहा, "मेरे रब, मैंने अपनी रूह पर किया है गलत• मैं अब सुलैमान के साथ हवाले करती हूँ **अल्लाह** को, कायनात के रब•"

सालेह

45. हमने भेजा है तमूद की तरफ उनके भाई सालेह को, कहते हुए, "तुम्हें **अल्लाह** की इबादत करनी चाहिए•" लेकिन वो बदल गये दो झगड़ते हुए फिरकों में•

46. उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, क्यों तुम जल्दबाज़ी करते हो बुराई करने के लिए बजाए अच्छे कामों के? अगर तुम

सिर्फ **अल्लाह** से इल्तेजा करो मगफरत के लिए, तुम हासिल कर सकते हो रहमत•"

47. उन्होंने कहा, "हम समझते हैं तुम्हें एक बुरी अलामत हमारे लिए, तुम और वो जो जुड़ें हैं तुम्हारे साथ •" उसने कहा, "तुम्हारी अलामत है पूरी तरह काबू की गई **अल्लाह** की तरफ से• वाकई, तुम हो भटके हुए लोग•"

48. वहाँ थे नौ उचक्के शहर में जो थे बदकार, और कभी नहीं किया कोई चीज़ अच्छा•

49. उन्होंने कहा, "चलो हम **अल्लाह** की कसम खायें कि हम कत्ल कर दें उसे और उसके लोगों को, फिर बोलें उसके कबीले को, 'हम नहीं जानते उनकी मौत के बारे में• हम हैं सच्चे•'"

अल्लाह हिफाज़त करते हैं
ईमानवालों की

50. उन्होंने किया साज़िश और मनसूबा बनाया, लेकिन हमने भी साज़िश किया और मनसूबा बनाया, जबकी वो नहीं समझे•

51. ध्यान दो उनके साज़िश बनाने के नतीजों को; हमने फनाह किया उनको और उनके सारे लोगों को•

52. यहाँ हैं उनके घरें पूरी तरह तबाह किये गये, उनके खता करने की वजह से• यह होना चाहिए एक सबक लोगों के लिए जो जानते हैं•

53. हम बचाते हैं उनको जो ईमान रखते हैं और बसर करते हैं एक नेक ज़िंदगी•

लूत

54. लूत ने कहा उसके लोगों से, "तुम कैसे कर सकते हो ऐसा एक घिनौनापन, खुलेआम, जबकी तुम देखते हो?

55. "तुम शहवत करते हो मर्दो के साथ, शहवानी तौर पर, बाजाए औरतों के• वाकई, तुम हो जाहिल लोग•"

56. सिर्फ जवाब उसके लोगों कि तरफ से था कहना उनका, "निकाल दो लूत के कुम्बे को तुम्हारे शहर से; वो हैं लोग जो चाहते हैं पाक बनने के लिए" •

57. इस वजह से, हमने बचाया उसे और उसके कुंबे को, सिवाए उसकी बिवी के; हमने गिना उसे बरबाद हुओं में से•

58. हमने बरसाया उनको एक खास बौछार से• वो था एक अफसोसनाक बौछार लोगों पर जो खबरदार किय गये थे•

फर्क न करो
अल्लाह के रसूलों के बीच

59. कहो, "तारीफ हो **अल्लाह** की और अमन हो उनके बंदो पर जिनको उन्होंने चुना• क्या **अल्लाह** बेहतर हैं, या बुतें जिनको कुछ लोग कायम करते हैं?"

सिर्फ अल्लाह हैं मुस्तेहिक इबादत के

60. कौन है वाहिद जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को? कौन है वाहिद जो भेजते हैं नीचे तुम्हारी तरफ आसमान से पानी, जिससे हम पैदा करते हैं बागें खूबसूरती से भरे—मुमकिन नहीं तुम बना सकते उसके दरख्तें? क्या वो दूसरा खुदा है **अल्लाह** के साथ? वाकई, वो हैं लोग जो बहेक गये हैं•

ईसा, मरयम, मुहम्मद
बुर्जुगें, वगैराह कभी शरीक नहीं हुए

61. कौन है वाहिद जिसने बनाया ज़मीन को रहने के काबिल, सबब बनाया नदियों को उससे दौड़ने के लिए, रखा उसपर पहाड़ें, और पैदा किया एक आड़ दो पानियों के दरमियान? क्या वो दूसरा खुदा है **अल्लाह** के साथ? वाकई,उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते•

62. कौन है वाहिद जो बचाते हैं उनको जो परेशान होते हैं और पुकारते हैं उनको, हटाते हैं मुसीबत, और बनाते हैं तुमको ज़मीन के वारिसें? क्या वो दूसरा खुदा है **अल्लाह** के साथ? कभी कभार ही तुम गौर करते हो•

63. कौन है वाहिद जो हिदायत करते हैं तुम्हें ज़मीन और समंदर के अंधेरेपन में? कौन हैं वाहिद जो भेजते हैं हवाओं को साथ अच्छी खबरों के, इशारा करते हुए उनकी रहमत? क्या वो दूसरा खुदा है **अल्लाह** के साथ, सबसे आला हैं **अल्लाह**, किसी शरीक को रखने से परे•

64. कौन है वाहिद जो शुरू करते हैं खिलकत, फिर दोहराते हैं उसे? कौन है वाहिद जो मुहय्या करते हैं तुम्हारे लिए आसमान और ज़मीन से? क्या वो दूसरा खुदा है **अल्लाह** के साथ? कहो, दिखाओ मुझे तुम्हारा सबूत, अगर तुम हो सच्चे।"

65. कहो, "कोई भी आसमानों और ज़मीन में नहीं जानता मुस्तकबिल सिवाए **अल्लाह** के। वो यहाँ तक नहीं समझते कैसे और कब वो दोबारा ज़िंदा किये जायेंगे।"

अगली ज़िंदगी में ईमान रखना:
बड़ी रूकावट
ज़्यादातर लोगों के लिए

66. असल में, उनका इल्म अगली ज़िंदगी के मुताल्लिक है उल्झा हुआ। असल में, वो पालते हैं शकों को उसके बारे में। असल में, वो हैं पूरी तरह बेपरवाह उससे।

67. वो जिन्होंने कुफ्र किया कहा, "इसके बाद की हम धूल में बदल जायें, और हमारे वालिदैन भी, क्या हम बाहर निकाले जायेंगे?

68. "हमें दिया गया है ऐसा ही वादा माज़ी में। ये कुछ नहीं हैं सिवाए माज़ी से कहानियाँ।"

69. कहो, "फिरो ज़मीन पर और ध्यान दो मुजरिम के लिए नतीजों को।"

70. उनपर गमज़दा न हो, और नाराज़ न हो उनके मनसूबा बनाने से।

71. वो कहते हैं, "कब गुज़रेगा वो वादा, अगर तुम सच्चे हो?"

72. कहो, "तुम पहले से झेल रहो हो आज़ाब में से कुछ जिसे तुम ललकारते हो।"

73. तुम्हारे रब रहमत से भरे हैं लोगों की तरफ, लेकिन उनमें से ज़्यादातर है नाकद्रदान।

74. तुम्हारे रब पूरी तरह जानते हैं उनके सीने क्या छिपाते हैं, और क्या वो ऐलान करते हैं।

75. वहाँ कुछ नहीं है आसमानों और ज़मीन में जो है छुपा *(अल्लाह से)*; सारी चीज़ें हैं एक गहरे दफ्तर में।

76. ये कुरान हल करता है कई मसलों को बनी इस्राईल के लिए; मसले जो अब भी वो बहेस कर रहे हैं।

77. और बिला शक, वो है एक हिदायत और रहमत ईमानवालों के लिए।

78. तुम्हारे रब हैं वाहिद जो उनके दरमियान फैसला करते हैं उनके कानूनों के मुताबिक। वो हैं कादिरे मुतलक, सब कुछ जानने वाले।

79. इसलिए, रखो तुम्हारे भरोसे को **अल्लाह** में; तुम पैरवी कर रहे हो वाज़े सच की।

80. तुम कभी मुर्दे, नाहीं बहरे को, पुकार सुना सकते हो, अगर वो पलट जायें।

81. नाहीं तुम हिदायत कर सकते हो अंधे कि उनके बहकने कि वजह से। सिर्फ वो जो सुनेंगे तुम्हें हैं वो जो ईमान रखते हैं हमारी आयतों में, और तय करते हैं फरमानबरदारें होने को।

*कमप्यूटर है वो मखलूक**

82. सही वक्त पर, हम पैदा करेंगे उनके लिए एक मखलूक, बनाया गया ज़मीनी चीज़ों से, ऐलान करता हुआ कि लोग यकीनी नहीं हैं हमारी आयतों के बारे में।

83. दिन आयेगा जब हम हाज़िर करेंगे हर कौम से उनमें से कुछ जिन्होंने ईमान नहीं लाये हमारे सबूतों में, ज़बरदस्ती से।

जांचो
कुरान का रियाज़ी कोड

84. जब वो पहुँचेंगे, वो कहेंगे, "तुमने ठुकराया है मेरी आयतों को, उसके बारे में इल्म हासिल करने से पहले। क्या यह नहीं है जो तुमने किया?"

85. वो पायेंगे सिलाह उनके बदकारीपन के लिए; वो नहीं कहेंगे कुछ भी।

86. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने बनाया रात उनके आराम के लिए, और दिन रौशन? ये होने चाहिए काफी सबूतें लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

87. उस दिन पर जब सुर फुंका जायेगा, हर कोई आसमानो और ज़मीन में दहशत ज़दा हो जायेगा, सिवाए उनके जो चुने गये **अल्लाह** की तरफ से। सारे आयेंगे उनके सामने, ज़बरदस्ती से।

ज़मीन का चलना:
एक इल्मी मौजज़ा

88. जब तुम देखते हो पहाड़ों की तरफ, तुम सोचते हो कि वो बेहरकत खड़े हैं। लेकिन वो चल रहें हैं, बादलों कि तरह। ऐसी है कारीगरी **अल्लाह** की, जिन्होंने मुकम्मल किया हर चीज़। वो हैं पूरी तरह आगाह सारी चीज़ें तुम करते हो।

इंसाफ का दिन

89. जो कोई अच्छे कामों को लाते हैं *(उनके दफ्तरों में)* पायेंगे कहीं बेहतर इनामें, और वो होंगे पूरी तरह महफ़ूज़ उस दिन कि दहशतों से।

90. जहाँ तक वो जो बुरे कामों को लाते हैं, वो ज़बरदस्ती डाले जायेंगे जहन्नम में। क्या तुम बदला नहीं दिये जाते उसके लिए जो तुमने किया?

91. मैं सिर्फ हुक्म किया गया हूँ इस शहर के रब की इबादत करने के लिए—उन्होंने बनाया है इसे एक महफ़ूज़ मुकद्दस जगह—और वो हैं सारी चीज़ों के मालिक। मुझे हुक्म किया गया है एक फरमानबरदार होने के लिए।

92. और कुरान पढ़ने के लिए। जो कोई है हिदायतयाफ्ता है हिदायतयाफ्ता उसके खुद के अच्छे के लिए, और अगर वो गुमराह होते हैं, फिर कहो, "मैं हूँ सिर्फ एक खबरदार करने वाला।"

93. और कहो, "तारीफ हो **अल्लाह** की; वो दिखायेंगे तुम्हें उनके सबूतें, जबतक तुम पहचान न लो उनको। तुम्हारे रब कभी नहीं हैं बेखबर कोई चीज़ तुम करते हो।"

****

सुरह 28: तारीख (अल कसास)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. त॰स॰म॰*

**27:82 (2+7+8+2=19) कमप्यूटर की ज़रूरत थी कुरान के रियाज़ी मौजज़े को बेनकाब करने के लिए, और उसने साबित किया कि ज़्यादातर लोगों ने ठुकराया है अल्लाह के पैगाम को (देखें अपेन्डिक्सें 1 और 9)।*

**28:1 देखें अपेन्डिक्स 1 कुरान के मौजज़े वाले रियाज़ी कोड की तफसीलों के लिए, और मायने या एहमियत इन कुरानी इनिशियलों की।*

2. ये *(हुरूफें)* कायम करते हैं सबूतें इस गहरी किताब के।

3. हम पढ़ते हैं तुम्हारे लिए इसमें कुछ तारीख मूसा और फिरऔन की, सच्चाई से, लोगों के फायदे के लिए जो ईमान रखते हैं।

4. फिरऔन बदल गया ज़मीन पर एक ज़ालिम में, और फर्क किया कुछ लोगों के खिलाफ। उसने आज़ियत पहुँचाया उनमें से एक बेबस गिरोह को, ज़बा करते हुए उनके बेटों को, जबकी छोड़ते हुए उनकी बेटियों को। वो था वाकई बदकार।

अल्लाह मुआवज़ा देते हैं मज़लूम को

5. हमने चाहा मुआवज़ा देने का उन्हें जो जुल्म किये गये थे ज़मीन पर, और बदल देने का उनको रहबरों में, और बनाने का उनको वारिसें।

6. और कायम करने का उनको ज़मीन पर, और देने का फिरऔन, हामान, और उनकी टुकड़ियों को एक ज़ायका उनके खुदकी दवा का।

अल्लाह में यकीन

7. हमने इल्हाम किया मूसा की माँ को: "दूध पिलाओ उसे, और जब तुम डरो उसकी ज़िंदगी के लिए, फेंको उसे नदी में बगैर किसी खौफ या गम के। हम लौटायेंगे उसे तुम्हारी तरफ, और बनायेंगे उसे रसूलों में से एक।"

8. फिरऔन के कुम्बे ने उसे उठाया, सिर्फ उसे मुखालिफत कि रहबरी करने के लिए और बनने के लिए गम का एक ज़रिया उनके लिए। वो है इसलिए कि फिरऔन, हामान, और उनकी टुकड़ियाँ थीं खतावारें।

शेर कि गुफा के अंदर

9. फिरऔन की बिवी ने कहा, "यह हो सकता है एक खुशीवाला हासिल मेरे और तुम्हारे लिए। उसे कत्ल न

करो, हो सकता है वो हो हमारे कुछ फायदे के लिए, या हो सकता है हम उसे गोद ले लें हमारा बेटा होने के लिए।" उनको कोई इल्म नहीं था।

10. मूसा की माँ का ज़हेन इतना बेचैन हुआ जा रहा था कि उसने तकरीबन दे दिया उसकी पहचान। लेकिन हमने मज़बूत किया उसके दिल को, उसे एक ईमानवाला बनाने के लिए।

11. उसने कहा उसकी बहेन को, "उसके रास्ते का पता लगाओ।" उसने देखा उसे दूर से, जबकी उन्होंने नहीं समझा।

नन्हा लौटाया गया
उसकी माँ को

12. हमने मना किया उसे कबूल करने से सारी दूध पिलाने वाली माँओं को। *(उसकी बहेन ने)* फिर कहा, "मैं दिखा सकती हूँ तुमको एक कुम्बा जो पाल सकता है उसे तुम्हारे लिए, और संभाल सकता है उसे अच्छे से।"

13. इस तहर, हमने लौटाया उसे उसकी माँ को, ताके उसे खुश करें, निकालें उसकी परेशानियों को, और उसे पता लगने देने के लिए कि **अल्लाह** का वादा है सच्चा। बहेरहाल, उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते।

14. जब वो पहुँचा बुलुगत और ताकत को, हमने बक्शा उसे हिकमत और इल्म के साथ। हम इस तरह इनाम देते हैं नेककारों को।

मूसा करता है कत्ल

15. एक बार वो शहर में दाखिल हुआ अचानक तौर से, बगैर पहचाने गये लोगों की तरफ से। उसने पाया दो मर्दों को लड़ते हुए; एक था *(हीब्रू)* उसके लोगों से, और दूसरा था *(एक मिस्री)* उसके दुश्मनों से। जो था उसके लोगों में से पुकारा उसे मदद के लिए उसके दुश्मन के खिलाफ। मूसा ने उसे घूंसा मार दिया, कत्ल करते हुए उसे। उसने कहा, "यह काम है शैतान का; वो है एक असल दुश्मन, और एक गहरा गुमराह करने वाला।"

16. उसने कहा, "मेरे रब, मैंने मेरी रूह पर गलत किया है। बराए करम मुझे माफ करिये," और उन्होने उसे माफ किया। वो हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले।

17. उसने कहा, "मेरे रब, बदले में मुझपर आपकी रहमतों के लिए, मैं कभी नहीं होऊंगा एक मददगार गुनाहगारों का।"

18. सुबह में, वो था शहर में, डरा हुआ और बेदार। वो जिसने कल चाहा था उसकी मदद, मांगा उसकी मदद फिरसे। मूसा ने उससे कहा, "तुम हो वाकई एक खराबी करने वाले।"

मूसा का जुर्म फाश हुआ

19. इससे पहले वो कोशिश करता वार करने का दोनो के एक दुश्मन को, उसने कहा, "ऐ मूसा, क्या तुम मुझे कत्ल करना चाहते हो, जैसा तुमने दूसरे आदमी को किया कत्ल कल? ज़ाहिर है, तुम बनना चाहते हो एक ज़ालिम ज़मीन पर; तुम नहीं चाहते नेककार बनना।"

20. एक आदमी आया दौड़ता हुआ शहर की दूसरी तरफ से, कहते हुए, "ऐ मूसा, लोग मनसूबा बना रहे हैं तुम्हें कत्ल करने का। बेहतर है तुम निकलो फौरन। मैं दे रहा हूँ तुम्हें एक अच्छी सलाह।"

21. वो शहर से फरार हो गया, खौफज़दा और बेदार। उसने कहा, "मेरे रब, बचाईये मुझे ज़ालिम लोगों से।"

मिदयन में

22. जैसे उसने सफर किया मिदयन की तरफ, उसने कहा, "मेरे रब मेरी हिदायत करिये सही राह में।"

23. जब वो मिदयन के पानी को पहुँचा, उसने पाया एक हुजूम लोगों का पानी निकालते हुए, और देखा दो औरतों को किनारे पर इंतेज़ार करते हुए। उसने कहा, "क्या है जो तुम चाहती हो?" उन्होंने कहा, "हम काबिल नहीं पानी निकालने के लिए, जब तक हुजूम बिखर न जाये, और हमारे वालिद हैं एक बूढ़े आदमी।"

24. उसने उनके लिए पानी निकाला, फिर पलटा साये की तरफ, कहते हुए, "मेरे रब, जो कुछ नियामत आप भेजें मेरी तरफ, मैं हूँ सख्त ज़रूरतमंद उसके लिए।"

25. जल्दी ही, दो औरतों में से एक उसके करीब आयी, शर्माते हुए, और कहा, "मेरे वालिद तुम्हें मुआवज़ा देने के लिए तुम्हें दावत देते हैं हमारे लिए पानी निकालने के लिए।" जब वो उससे मिला, और बताया उसे उसकी

कहानी, उसने कहा, "न डरो• तुम बचाये गये हो ज़ालिम लोगों से•"

मूसा करते हैं शादी

26. दो औरतों में से एक ने कहा, "ऐ मेरे वालिद, मुलाज़मत दीजिये उसे• वो है सबसे अच्छा काम पर रखे जाने के लिए, इसलिए कि वो है ताकतवर और ईमानदार•"

27. उसने कहा, मैं पेश करना चाहता हूँ मेरी दो बेटियों में से एक को तुमसे शादी के लिए, बदले में मेरे लिए काम करने का आठ हज्जों के लिए, अगर तुम करो उसे दस, वो होगा खुद से तुम्हारी तरफ से• मैं नहीं चाहता इस मामले को तुम्हारे लिए ज़्यादा पेचीदा करना• तुम पाओगे मुझको, **अल्लाह** ने चाहा, नेककार•"

28. उसने कहा, "ये है एक मुहायदा मेरे और तुम्हारे बीच• जो भी मुद्दत मैं पूरा करूँ, तुम नहीं होगे नाराज़ दोनों में से एक को भी• **अल्लाह** हैं ज़ामिन उसके जो हमने कहा•"

वापस मिस्र को

29. जब उसने उसके फर्ज़ को पूरा किया, उसने सफर किया उसके कुम्बे के साथ *(मिस्र की तरफ)*• उसने देखा कोहे तूर कि ढलान से एक आग• उसने कहा उसके कुम्बे को, "रहो यहाँ• मैंने देखा है एक आग• हो सकता है मैं लाऊं तुम्हारे लिए खबरें, या आग का एक हिस्सा तुम्हें गर्म करने के लिए•"

मूसा मुकर्रर किये गये

30. जब वो उसको पहुँचे, वो पुकारे गये थे वादी के दाहिने तरफ के छोर से, मुबारक जगह में जहाँ जलती हुई घनी झाड़ी वाके थी; "ऐ मूसा, ये मैं हूँ• **अल्लाह**; कायनात का रब•

31. "फेंको नीचे तुम्हारे आसे को•" जब उसने देखा उसे एक देव की तरह चलते हुए, वो पीछे पलट गये और फरार हो गये• "ऐ मूसा, वापस आओ; खौफज़दा न हो• तुम हो पूरी तरह महफूज़•

32. "डालो तुम्हारे हाथ को तुम्हारी जेब में; वो आयेगा बाहर सफेद बगैर किसी दाग के• मोड़ो तुम्हारे बाजुओं को और तुम्हारे डर से पुरसुकून हो जाओ• ये हैं दो सबूतें तुम्हारे रब की तरफ से, दिखाए जाने के लिए फिरऔन और उसके बुर्जुगों को; वो रहे हैं बदकार लोग•"

33. उसने कहा, "मेरे रब, मैंने कत्ल किया उनमें से एक को, और मैं डरता हूँ कि कहीं वो मुझे कत्ल न कर दें•

34. "इसके अलावा, मेरा भाई हारून है मुझ से ज़्यादा फसीह• भेजिये उसे मेरे साथ एक मददगार जैसा मेरी तसदीक करने और मज़बूत करने के लिए• मैं डरता हूँ कहीं वो न माने मुझको•"

35. उन्होंने कहा, "हम मज़बूत करेंगे तुम्हें तुम्हारे भाई के साथ, और हम मुहय्या करेंगे तुम दोनों को वाज़े इक्तेदार के साथ• इस तरह, वो छू नहीं सेकेंगे तुम में से किसी को भी• हमारे मौजज़ों के साथ, तुम दोनो, इकट्ठा उनके जो तुम्हारी पैरवी करें, होंगे जीतने वाले•"

फिरऔन का तकब्बुर

36. जब मूसा गये उनकी तरफ हमारे सबूतों के साथ, साफ और गहरे, उन्होंने कहा, "यह है गढ़ा हुआ जादू• हमने कभी नहीं सुना है इसके बारे में हमारे पुराने पुरखों से•"

37. मूसा ने कहा, "मेरे रब जानते हैं सबसे बेहतर कौन लाया हिदायत उनकी तरफ से, और कौन होंगे आखिरकार जीतने वाले• यकीनन, खतावारें कभी कामयाब नहीं होते•"

38. फिरऔन ने कहा, "ऐ बुर्जुगों, मैंने कभी नहीं जाना किसी खुदा को तुम्हारे लिए सिवाए मेरे• इसलिए, जलाओ कच्ची ईटं को, ऐ हामान, ताके एक मिनार बना सके, ताके मैं देख सकूं मूसा के खुदा की तरफ• मुझे यकीन है कि वो है एक झूठा•"

39. इस तरह, वो और उसकी टुकड़ियाँ जारी रहे तकब्बुर करने के लिए ज़मीन पर, बगैर किसी हक के, और सोचा के वो नहीं लौटेंगे हमारी तरफ•

40. इस वजह से, हमने सज़ा दिया उसे और उसकी टुकड़ियों को, फेंकते हुए उनको समंदर में• ध्यान दो नतीजों को खतावारों के लिए•

41. हमने बनाया उनको इमामें जिन्होंने रहबरी की उनके लोगों कि जहन्नम की तरफ• इसके अलावा, हश्र के दिन पर, उनके पास नहीं होगी मदद•

42. उन्होंने हासिल किया इस ज़िंदगी में मलामत, और हश्र के दिन पर वो होंगे ज़लील किये गये•

*मूसा की किताब**

43. हमने दिया मूसा को आसमानी किताब—पिछली नस्लों को फनाह करने के बाद, और उनके ज़रिये मिसालों को कायम करने के बाद—लोगों के लिए रौशन ख्याल मुहय्या करने के लिए, और हिदायत, और रहमत, ताके वो तवज्जो ले सकें•

मुखातिब करते हुए अल्लाह के वादे के रसूल को

44. तुम मौजूद नहीं थे मगरिबी टीले की ढलान पर, जब हमने जारी किया हुक्म मूसा के लिए; तुम नहीं थे एक गवाह•*

45. लेकिन हमने कायम किया कई नस्लें, और, लंबे अरसे कि वजह से, *(वो बहेक गये)*• नाहीं तुम थे मिदयन के लोगों के बीच, पढ़ते हुए हमारी आयतों को उनके लिए• लेकिन हमने ज़रूर भेजा रसूलों को•

**28:43 तौरेत इस्राईल के सारे नबियों को नाज़िल की गई सारी आसमानी किताबों का मजमूआ है, शामिल करते हुए मूसा की किताब• कुरान मुसलसल बयान करता है कि मूसा को दी गई थी एक किताब, या "कानून की किताब•" कुरान में हम कहीं भी नहीं देखते कि मूसा को दिया गया था "तौरेत"• आज का ओल्ड टेस्टामेंट, इसलिए, है तौरेत (देखें 3:50, 5:46)•*

**28:44 इस रसूल का नाम रियाज़ी तौर पर तसदीक किया गया है: रखते हुए जिमेटरिकल वेल्यू "रशाद खलीफा" की (1230) साथ आयत नंबर के (44), हम पाते हैं 123044=19x6476•*

46. नाहीं तुम थे कोहे तूर कि ढ़लान पर जब हमने पुकारा *(मूसा)* को• लेकिन वो है रहमत तुम्हारे रब की तरफ से, *(लोगों की तरफ,)* ताके खबरदार करें लोगों को जिन्होंने कोई खबरदार करने वाला नहीं पाया तुमसे पहले, ताके वो तवज्जो ले सकें•

कोई बहाना नहीं

47. इसतरह, वो नहीं कह सकते, जब एक तबाही मारती है उनको उनके खुदके आमालों का एक नतीजा जैसा, "हमारे रब, अगर आपने एक रसूल भेजा होता हमारी तरफ, हमने पैरवी की होती आपकी आयतों की, और होते ईमानवाले•"

तौरेत और कुरान

48. अबकी जब सच्चाई आ चुकी है उनकी तरफ हमारी तरफ से, उन्होंने कहा, "अगर सिर्फ हमें दिया जाता जो दिया गया था मूसा को!" क्या उन्होंने कुफ्र नहीं किया उसमें जो मूसा को दिया गया था माज़ी में? उन्होंने कहा, "दोनों *(आसमानी किताबे)* हैं जादू के कामें जिन्होंने एक दूसरे कि नक्ल की•" उन्होंने यह भी कहा, "हम ईमान नहीं रखते हैं उन दोनों में•"

49. कहो, "फिर पैदा करो एक आसमानी किताब साथ अल्लाह की तरफ से दोनों से बेहतर हिदायत के, ताके मैं उसकी पैरवी कर सकूं, अगर तुम हो सच्चे•"

अल्लाह भेजते हैं उनकी तालीमों को हमारी तरफ उनके रसूलों के ज़रिये

50. अगर वो नाकामयाब होते हैं तुम्हें जवाब देने के लिए, फिर जानो कि वो सिर्फ उनके खुदके रायों की पैरवी करते हैं• कौन है ज़्यादा भटका हुआ उनसे जो पैरवी करते हैं उनके खुदके रायों की, अल्लाह की तरफ से बगैर हिदायत के? अल्लाह हिदायत नहीं करते एसे बदकार लोगों की•

सारे सच्चे ईमानवाले कबूल करते हैं कुरान

51. हमने पहुँचाया है उनकी तरफ पैगाम, ताके वो तवज्जो ले सकें•

52. जिस किसी को हमने मुबारक किया पिछली आसमानी किताबों से ईमान लायेंगे इसमें•

53. जब वो पढ़ी जाती है उनके लिए, वो कहेंगे, "हम उसमें ईमान रखते हैं• यह है सच हमारे रब की तरफ से• इस से पहले कि हम सुनते उसे, हम थे फरमानबरदारें•"

दुगना इनाम ईसाईयों और यहूदियों के लिए जो सच को पहचानते हैं

54. इनको हम अता करते हैं दुगना इनाम, इसलिए की वो सावित कदमी से जमे रहते हैं• वो सामना करते हैं बुरे कामों का अच्छे कामों से, और उनके लिए हमारी नियामतों से, वो देते हैं•

55. जब उनका खोकली बात से सामना होता है, वो उसे नज़रअंदाज करते हैं और कहते हैं, "हम ज़िम्मेदार हैं हमारे आमालों के लिए, और तुम ज़िम्मेदार हो तुम्हारे आमालों के लिए• अमन हो तुम पर• हम नहीं चाहते बरताव करना जाहिल लोगों कि तरह•"

सिर्फ अल्लाह हिदायत करते हैं

56. तुम हिदायत नहीं कर सकते जिनको तुम चाहते हो• अल्लाह हैं सिर्फ वाहिद जो हिदायत करते हैं उनके मरज़ी के मुताविक में, और उनके इल्म के मुताविक में वो जो मुस्तेहिक हैं हिदायत के•

57. उन्होंने कहा, "अगर हम पैरवी करें तुम्हारी हिदायत की, हम झेलेंगे अज़ियत•" क्या हमने नहीं कायम किया उनके लिए एक मुकद्दस महफूज़ ठिकाना, जिसकी तरफ हर किस्मों के फलें पेश किये जाते हैं, ऐसी एक नियामत हमारी तरफ से? वाकई, उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते•

58. कई एक कौम को हमने फनाह किया उनके ज़िंदगियों का नाकद्रदान बनने के लिए• इस वजह से, यहाँ हैं उनके घरें, कुछ नहीं लेकिन विरान खंडहरें उनके बाद, सिवाए कुछ के• हम थे वारिसें•

59. इसलिए की तुम्हारे रब कभी फनाह नहीं करते किसी कौम को वगैर भेजते हुए उसके मुताल्लिक एक रसूल बीच में, पढ़ने को हमारी आयतें उनके लिए• हम कभी फनाह नहीं करते किसी कौम को, जब तक उनके लोग बदकार नहीं हैं•

60. सारी चीज़ें जो दीं गई हैं तुमको हैं सिर्फ इस ज़िंदगी के सामान, और उसकी सजावट• जो है अल्लाह के पास है कहीं बेहतर, और दाईम• क्या तुम नहीं समझते?

61. क्या वो जिसे हमने वादा किया एक अच्छा वादा जो यकीनन गुज़र जायेगा, बराबर है उसके जिसे हमने मुहय्या किया इस ज़िंदगी के आरज़ी सामानों से, फिर झेलता है दाईम तवाही हश्र के दिन पर?

बुतें ठुकराते हैं उनके बुतपरस्तों को

62. दिन आयेगा जब वो पुकारेंगे उनको, कहते हुए, "कहाँ हैं वो बुतें जिनको तुमने कायम किया सिवाए मेरे?"

63. वो जिन्होंने हासिल किया इंसाफ कहेंगे, "हमारे रब, ये हैं जिन्होंने हमें गुमराह किया; हमने गुमराह किया उनको सिर्फ इसलिए कि हम खुद गुमराह हो गये थे• हम अब मनसूब करते हैं अपने आप को पूरी तरह आप के लिए• वो असल में हमारी इवादत नहीं कर रहे थे•"

64. यह कहा जायेगा, पुकारो तुम्हारे बुतों को *(तुम्हरी मदद के लिए)*•" वो पुकारेंगे उनको, लेकिन वो जवाब नहीं देंगे• वो झेलेंगे आज़ाव, और चाहेंगे कि वो होते हिदायतयाफ्ता!

हमारा जवाब रसूलों को

65. उस दिन पर, वो पूछेंगे हर किसी को, "तुमने कैसे जवाब दिया रसूलों को?"

66. वो होंगे इतने हैरतज़दा हकीकतों से उस दिन पर, वो होंगे बेलफ्ज़•

67. जहाँ तक वो जो तौबा करते हैं, ईमान रखते हैं, और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो होंगे खत्म जीतने वालों के साथ•

68. तुम्हारे रब हैं वाहिद जो कुछ वो चाहते हैं पैदा करते हैं, और चुनते हैं; दूसरा कोई भी नहीं करता किसी चुनाई को• बड़ाई हो अल्लाह की, सबसे आला• वो हैं कहीं ऊपर शरीकों कि ज़रूरत से•

69. तुम्हारे रब जानते हैंउनके सीनों में छिपे अंदरूनी ख्यालों को, साथ साथ सारी चीज़ें जो वो ऐलान करते हैं•

70. वो हैं वाहिद अल्लाह ; वहाँ नहीं हैं दूसरा खुदा सिवाए उनके। उनके लिए हैं सारी तारीफ इस पहली ज़िंदगी में, और अगली ज़िंदगी में। सारे फैसले उनके पास हैं, और उनकी तरफ तुम लौटाये जाओगे।

अल्लाह की रहमतें

71. कहो, "क्या अगर अल्लाह बना दें रात को दाईम, हश्र के दिन तक? कौन सा खुदा, बजाये अल्लाह के, मुहय्या कर सकता है तुम्हें रौशनी से? क्या तुम नहीं सुनते?"

72. कहो, "क्या अगर अल्लाह बना दें दिन के उजाले को दाईम, हश्र के दिन तक? कौन सा खुदा बजाये अल्लाह के, मुहय्या कर सकता है तुम्हें एक रात से तुम्हारे आराम के लिए? क्या तुम नहीं देखते?"

73. वो रहमत है उनकी तरफ से की उन्होंने पैदा किया तुम्हारे लिए रात और दिन ताके आराम करो *(रात के दौरान)*, फिर तलाश करो उनकी नियामतें *(दिन के दौरान)*, ताके तुम कद्रदान हो सको।

बुतें नहीं रखते कोई ताकत

74. दिन आयेगा जब वो पूछेंगे उनसे, "कहाँ हैं बुतें जिनको तुमने गढ़ा मेरी बराबरी करने के लिए?"

75. हम चुनेंगे हर कौम से एक गवाह, फिर कहेंगे, पेश करो तुम्हारा सबूत।" वो तब एहसास करेंगे की सारी सच्चाई है अल्लाह के पास, जबकी बुतें उन्होंने गढ़े थे तर्क कर देंगे उनको।

कारून

76. कारून *(गुलाम हांकने वाला)* था मूसा के लोगों में से एक जिसने उनको धोखा दिया और किया उनको मजबूर। हमने दिया इतने सारे खज़ाने कि उनकी चाबियाँ थी तकरीबन बहुत वज़नी सबसे ज़्यादा ताकतवर जत्थे के लिए। उसके लोगों ने उससे कहा, "न बनो इतने मगरूर; **अल्लाह** पसंद नहीं करते उनको जो हैं मगरूर।

77. "इस्तेमाल करो नियामतें जो इनायत किया गया है तुमपर **अल्लाह** की तरफ से अगली ज़िंदगी का ठिकाना तलाश करने के लिए, बगैर नज़रअंदाज़ करते हुए तुम्हारा हिस्सा इस दुनिया में। खैरात करने वाले बनो, जैसे **अल्लाह** हुए है खैरात करने वाले तुम्हारी तरफ। ज़मीन में खराबी न करते रहो। **अल्लाह** पसंद नहीं करते खराबी करने वालों को।"

78. उसने कहा, "मैंने हासिल किया यह सब मेरी खुदकी चालाकी की वजह से।" क्या उसने एहसास नहीं किया कि **अल्लाह** ने फनाह किया था उसे से पहले नस्लों को जो थे कहीं ताकतवर उससे, और थे बड़ी तादाद में? *(फनाह किये गये)* खतावारें नहीं पूछे गये थे उनके जुर्मों के बारे में।

79. एक दिन, वो आया बाहर उसके लोगों कि तरफ पूरी ठाट में। जिस किसी ने तरजी दिया इस दुनियावी ज़िंदगी को कहा, "आह, काश की हम रखते जो कारून ने हासिल किया है। वाकई, वो है बहुत किस्मतवाला।

असल दौलत

80. जहाँ तक वो जो बख्शे गये थे इल्म के साथ, उन्होंने कहा, हाय हो तुम्हारे लिए, **अल्लाह** का बदला है कहीं बेहतर उनके लिए जो ईमान रखते हैं और एक नेक जिंदगी बसर करते हैं।" कोई भी हासिल नहीं करता इसे सिवाए साबित कदम रहने वाले के।

ज़ालिमों कि न बदलने वाली तकदीर

81. हमने फिर ज़मीन को निगलने दिया उसे और उसके महल को। कोई फौज उसकी मदद नहीं कर सकती थी **अल्लाह** के खिलाफ; वो मुकर्रर नहीं किया गया था एक जीतने वाला होने के लिए।

82. दिन पहले वो जो थे हसद अंगेज़ उससे कहा, "अब हम एहसास करते हैं कि **अल्लाह** हैं वाहिद जो मुहय्या करते हैं जिस किसी के लिए वो चुनते हैं उनके बंदों में से, और रोके रखते हैं। अगर वो न होता हमारी तरफ

अल्लाह की रहमत के लिए, उन्होंने हमें भी ज़मीन को निगलने दिया होता। हम अब एहसास करते हैं कि काफिरें कभी कामयाब नहीं होते।"

आखिरकार जीतने वाले

83. हम मखसूस करते हैं अगली ज़िंदगी का ठिकाना उनके लिए जो नहीं चाहते तलाश करना खुशामद, ज़मीन पर नाहीं खराबी। आखिरकार जीत होती है नेककारों की।

84. जो कोई नेककारी वाले कामों को करता है पाता है एक कहीं बेहतर इनाम। जहाँ तक वो जो गुनाहों को करते हैं, आज़ाब उनके गुनाहों के लिए है बिल्कुल उनके कामों के बराबर का।

85. यकीनन, वाहिद जिन्होंने फरमान किया कुरान तुम्हारे लिए हाज़िर करेंगे तुमको एक पहले से तय किये गये मिलने के वक्त पर। कहो, "मेरे रब हैं पूरी तरह वाकिफ उनसे जो बरकरार रखते हैं हिदायत, और वो जो हो गये हैं गुमराह।"

86. तुमने कभी उम्मीद नहीं किया इस आसमानी किताब को तुम्हारी तरफ आने के लिए; लेकिन यह है एक रहमत तुम्हारे रब की तरफ से। इसलिए, तुम्हें काफिरों की तरफ नहीं होना चाहिए।

87. नाहीं तुम्हें ध्यान फेरना चाहिए **अल्लाह** की आयतों से, इसके बाद के वो आ चुकी हैं तुम्हारे पास, और दावत दो दूसरों को तुम्हारे रब की तरफ। और कभी भी न गिरो बुतपरस्ती में।

88. तुम्हें **अल्लाह** के सिवाए किसी दूसरे खुदा की इबादत नहीं करनी चाहिए। वहाँ नहीं है दूसरा खुदा सिवाए उनके। सारी चीज़ें फनाह हो जाती हैं सिवाए उनकी मौजूदगी के। उनके लिए है सारी बादशाहत, और उनकी तरफ तुम लौटाये जाओगे।

****

सुरह 29: मकड़ी (अल अनकबूत)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

403. अ॰ल॰म॰*

आज़माईश है ज़रूरी

404. क्या लोग सोचते हैं कि वो छोड़ दिये जायेंगे कहने के लिए, "हम ईमान रखते हैं," बगैर डाले गये आज़माईश को?

405. हमने आज़माया है उनको उनसे पहले, इसलिए कि **अल्लाह** को ज़रूरी है फर्क करना उन्हें जो हैं सच्चे, और उन्हें ज़रूरी है फाश करना झूठों को।

406. क्या वो जो करते हैं गुनाहों को सोचते हैं कि वो बना सकते हैं हमें बेवकूफ कभी? वाकई गलत है उनका फैसाला।

407. जो कोई उम्मीद करता है **अल्लाह** से मिलने का, *(पता होना चाहिए)* ऐसी एक मुलाकात **अल्लाह** के साथ बेशक गुज़र जायेगी। वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले।

408. जो कोई जद्दोजेहद करता है, करता है जद्दोजेहद खुद के अच्छे के लिए। **अल्लाह** को ज़रूरत नहीं किसी की।

409. जो कोई ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, हम यकीनन माफ करेंगे उनके गुनाहों को, और यकीनन इनाम देंगे उनको फरागदिली से उनके नेक कामों के लिए।

तुम्हें तुम्हारे वालिदैन का एहतराम करना चाहिए

410. हमने ताकीद किया इंसान को उसके वालिदैन का एहतराम करने के लिए। लेकिन अगर वो ज़ोर दें तुम्हें बुतों को कायम करने के लिए सिवाए मेरे, उनका कहना न मानो। मेरी तरफ है तुम्हारा आखिरकार लौटना, फिर मैं इत्तेला करूंगा तुम्हें सारी चीज़ों का जो तुमने किया था।

411. जो कोई ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, हम यकीनन दाखिल करेंगे उनको नेककारों के साथ।

थाली के बैंगन

412. लोगों के दरमियान वहाँ हैं वो जो कहते हैं, "हम **अल्लाह** में ईमान रखते हैं," लेकिन जैसे ही वो **अल्लाह** कि वजह से मेहनत कशी झेलते हैं, वो बराबरी करते हैं लोगों की अज़ियत **अल्लाह** के आज़ाब के साथ। लेकिन अगर रहमतें आतीं हैं तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी

राह, वो कहते हैं, “हम तुम्हारे साथ थे•” क्या **अल्लाह** पूरी तरह वाकिफ नहीं लोगों के अंदरूनी ख्यालों से?

413. **अल्लाह** बिला शक फरक करेंगे उन्हें जो ईमान रखते हैं, और बिला शक वो फाश करेंगे मुनाफिकीन को•

414. जिस किसी ने कुफ्र किया कहा उनको जो ईमान लाये, “अगर तुम हमारी राह चलो, हम ज़िम्मेदार होंगे तुम्हारे गुनाहों के लिए•” सच नहीं; वो कभी नहीं उठा सकते उनके किसी भी गुनाहों को• वो हैं झूठे•

415. असल में, वो उठायेंगे उनके खुदके गुनाहों को, साथ साथ दूसरे लोगों के गुनाहों के बोझों को जिनके लिए वो थे ज़िम्मेदार• बिला शक, वो पूछे जायेंगे हश्र के दिन पर उनके झूठे दावों के बारे में•

नुह

416. हमने भेजा नुह को उसके लोगों कि तरफ, और वो रहा उनके साथ एक हज़ार सालों तक, कम पचास•* उसके बाद, उन्होंने झेला सैलाब को उनके खताओं कि वजह से•

**29:1 देखें अपेन्डिक्स 1 कुरान के रियाज़ी तरतीब कि तफसीलों, और इन पहले से रहे कुरानी इनिशियलों के राज़ के मायने के लिए•*

**29:14 चुंकी कुरान का मौजेज़ा है रियाज़ी, नंबरें खास तौर पर कायम करते हैं एक एहम हिस्सा 19 पर बने कोड का• इस तरह, कुरान में बयान किये गये नंबरें जमा होते हैं 162146 को, या 19x8534 (देखें अपेन्डिक्स 1 तफसीलों के लिए)•*

---

417. हमने बचाया उसे और उनको जिन्होंने साथ दिया उसका कश्ती में, और हमने कायम किया उसे एक सबक जैसा सारे लोगों के लिए•

इब्राहीम

418. इब्राहीम ने उसके लोगों को कहा, “तुम्हें **अल्लाह** की इबादत, और उनका एहतराम करना चाहिए• यह बेहतर है तुम्हारे लिए, अगर तुम सिर्फ जानते•

419. “जिसकी तुम इबादत करते हो **अल्लाह** के सिवाए हैं बेबस बुतें; तुमने ऐजाद किया है एक झूठ•”

अल्लाह: सिर्फ ज़रिया नियामतों के

बुतें जिनकी तुम इबादत करते हो सिवाए **अल्लाह** के नहीं रखते कोई नियामतों को तुम्हारे लिए• इसलिए, तुम्हें चाहिए तलाश करना नियामतों को सिर्फ **अल्लाह** से• तुम्हें सिर्फ उनकी इबादत करनी चाहिए, और उनके कद्रदान बनो; उनकी तरफ है तुम्हारा आखिरकार लौटना•

420. अगर तुम कुफ्र करो, तुमसे पहले नस्लों ने भी कुफ्र किया है• सिर्फ मकसद है रसूल का *(पैगाम)* पहुँचाना•

*जांचो ज़िंदगी के आगाज़ को**

421. क्या उन्होंने नहीं देखा कैसे **अल्लाह** खिलकत को शुरू करते हैं, फिर उसे दोहराते हैं? यह है आसान है **अल्लाह** के लिए करना•

422. कहो, “घूमों ज़मीन पर और पता लगाओ ज़िंदगी के आगाज़ का•”* इसलिए कि **अल्लाह** इस तरह शुरू करेंगे खिलकत को अगली जिंदगी में• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

423. वो सज़ा देते हैं आज़ाब की तरफ जिसकिसी को वो चाहते हैं, और बरसाते हैं उनकी रहमत जिसकिसी पर वो चाहते हैं• आखिरकार, उनकी तरफ तुम हवाले किये जाओगे•

424. तुममें से कोई भी आज़ाद नहीं हो सकता इन हकीकतों से, ज़मीन पर या आसमान में, और तुम्हारे पास नहीं है कोई सिवाए **अल्लाह** के एक रब और मालिक जैसा•

425. जो कोई कुफ्र करते हैं **अल्लाह** की आयतों में, और उनसे मिलने में, मायूस हो गये हैं मेरी रहमत से• उन्होंने हासिल किया है एक र्दर्दनाक आज़ाब•

वापस इब्राहीम की तरफ

426. सिर्फ जवाब उसके लोगों कि तरफ से था उनका कहना, “कत्ल कर दो उसे, या जला दो उसे•” लेकिन **अल्लाह** ने बचाया उसे आग से• यह मुहय्या करना चाहिए सबकें लोगों के लिए जो ईमान रखतें हैं•

सामाजी दबाव: एक बड़ी आफत

427. उसने कहा, “तुम इबादत करते हो सिवाए **अल्लाह** के बेबस बुतों की साथियों के दबाव कि वजह से, सिर्फ कायम रखने के लिए कुछ दोस्ती तुम्हारे दरमियान इस

दुनियावी ज़िंदगी में• लेकिन फिर, हश्र के दिन पर, तुम एक दूसरे को ठुकराओगे, और एक दूसरे को कोसोगे• तुम्हारा मुकद्दर है जहन्नम, जिसमें तुम एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते•"

428. लूत ने ईमान लाया उसके साथ और कहा, "मैं हिजरत कर रहा हूँ मेरे रब की तरफ• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•"

429. हमने अता किया उसे इसहाक और याकूब, हमने मुकर्रर किया उसकी नस्लों के लिए नबूवत और आसमानी किताबें, हमने बक्शा उसे उसके हक वाले इनाम से इस ज़िंदगी में, और अगली ज़िंदगी में वो यकीनन होगा नेककारों के साथ•

लूत

430. लूत ने कहा उसके लोगों को, "तुम करते हो ऐसा एक घिनौनापन, किसी ने भी नहीं किया है उसे दुनिया में तुमसे पहले•"

431. "तुम करते हो शहवत मर्दों के साथ, तुम करते हो बड़े रास्तों की डकैती, और तुम इजाज़त देते हो हर किस्मों की बुराई तुम्हारे माशरे में•" सिर्फ जवाब उसके लोगों की तरफ से था कहने के लिए, "लाओ हमारी तरफ **अल्लाह** का आज़ाब, अगर तुम हो सच्चे•"

**29:19-20 हम सीखते हैं कुरान से कि इवॉलुशन है एक खुदाई हिदायत किया गया अमल• देखें अपेन्डिक्स 31 तफसीलों के लिए•*

432. उसने कहा, "मेरे रब, अता करिये मुझको जीत इन बदकार लोगों पर•"

फरिश्ते जाते हैं
इब्राहीम और लूत के पास

433. जब हमारे रसूलें गये इब्राहीम कि तरफ अच्छी खबर के साथ *(इसहाक के पैदाईश के बारे में)*, उन्होंने यह भी कहा, "हम जा रहे हैं उस शहर *(सोडोम)* के लोगों को फनाह करने के लिए• इसलिए कि उसके लोग रहे हैं बदकार •

434. उसने कहा, "लेकिन लूत है रहता वहाँ•" उन्होंने कहा, "हम हर किसी से हैं पूरी तरह वाकिफ जो रहते हैं उस में• हम बेशक बचायेंगे उसे और उसके कुम्बे को, सिवाए उसकी बिवी को; वो बरबाद की गई है•"

435. जब हमारे रसूलें पहुँचे लूत की जगह पर, उनसे बुरा सुलूक किया गया था, और वो शर्मिंदा था उनकी मौजूदगी की वजह से• लेकिन उन्होंने कहा, "खौफज़दा न हो, और परेशान न हो• हम बचायेंगे तुम्हें और तुम्हारे कुम्बे को, सिवाए तुम्हारी बिवी के; वो बरबाद की गई है•

436. "हम उंडेलेंगे इस शहर के लोगों पर एक तबाही आसमान से, उनके बदकारी का एक नतीजे जैसा•"

437. हमने खड़ा छोड़ा उनके कुछ खंडहरों को, लोगों के लिए एक बड़ा सबक जैसा काम देने के लिए जो समझते हैं•

शुऐब

438. मिदयन कि तरफ हमने भेजा उनके भाई शुऐब को• उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, तुम्हें **अल्लाह** की इबादत और आखरी दिन को तलाश करना चाहिए, और खराबी से न फिरों ज़मीन पर•"

439. उन्होंने उसमें कुफ्र किया और, इस वजह से, ज़मीन के ज़लज़ले ने उनको किया फनाह; वो छोड़े गये थे मुर्दा उनके घरों में सुबह को•

440. उसी तरह, आद और तमूद *(फनाह किये गये थे)*• यह वाज़े किया गया है तुमको उनके खंडहरों के ज़रिये• शैतान ने सजाया उनके कामों को उनकी नज़रों में, और फेरा उनको राह से, इसके बाजूद की उनके पास थी आँखें•

अल्लाह का अटल निज़ाम

441. उसी तरह कारून, फिरऔन, और हामान; मूसा गये उनकी तरफ साफ निशानियों के साथ• लेकिन वो जारी रहे जुल्म करने के लिए ज़मीन पर• इस वजह से, वो *(आज़ाब का)* बचाव नहीं कर सके •

442. वो सारे काफिरें बरबाद कर दिये गये थे उनके गुनाहों की वजह से• उनमें से कुछ को हमने फनाह किया तेज़ हवाओं से, कुछ फनाह किये गये थे ज़लज़ले से, कुछ को हमने निगलने दिया ज़मीन को, और कुछ को हमने डुबोया• **अल्लाह** नहीं हैं वाहिद जिन्होंने उनको किया गलत; यह तो वो हैं जिन्होंने गलत किया उनके खुदके रूहों को•

मकड़ी

443. मिसाल उनकी जो कबूल करते हैं दूसरे मालिकों को सिवाए **अल्लाह** के है वैसा जैसे मकड़ी और उसका घर; सारे घरों में से है सबसे नाजुक मकड़ी का घर, अगर सिर्फ वो जानते•*

444. **अल्लाह** जानते हैं अच्छी तरह से जो कुछ वो इबादत करते हैं उनके सिवाए हैं असल में कुछ नहीं• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•*

445. हम बयान करते हैं इन मिसालों को लोगों के लिए, और कोई भी कद्र नहीं करता उनकी सिवाए अक्लमंद के•*

446. **अल्लाह** ने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, सच्चाई से• यह मुहय्या करता है काफी सबूत ईमानवालों के लिए•

**29:41-43 ज़रूरत पड़ती है एक अक्लमंद शक्स की जानने के लिए कि काली विधवा मकड़ी कत्ल कर देती है उसके जोड़े को• ज़नाना मुखातिब मकड़ी के लिए 29:41 में इस तरह है एहम• इस हकीकत के अलावा कि मकड़ी का जाल है जिस्मानी तौर पर कमज़ोर•*

रावता नमाज़े (सलात)

447. तुम्हें पढ़ना चाहिए जो हमने नाज़िल किया है तुम्हारी तरफ आसमानी किताब से, और अदा करो रावता नमाज़ें *(सलात)*, इसलिए की रावता नमाज़ें रोकतीं हैं बुराई और ऐब से• लेकिन **अल्लाह** को याद करना *(सलात के ज़रिये)* है सबसे एहम मकसद•* **अल्लाह** जानते हैं सारी चीज़ें तुम करते हो•

एक अल्लाह / एक मज़हब

448. आसमानी किताब के लोगों *(यहूदियों, इसाईयों, और मुसलमानों)* से बहेस न करो सिवाए सबसे अच्छे मुमकिन अंदाज़ में—जब तक वो खता न करें—और कहो, "हम ईमान रखते हैं उसमें जो हम पर नाज़िल हुआ था और उसमें जो तुमको नाज़िल हुआ था, और हमारे खुदा और तुम्हारे खुदा हैं एक और वही; उनकी तरफ हैं हम फरमानबरदारें•"

449. हमने नाज़िल किया है तुम्हारी तरफ यह आसमानी किताब, और उनको जिनको हमने बक्शा पिछली आसमानी किताब से ईमान लायेंगे उसमें• तुम्हारे लोगों में से भी कुछ ईमान रखेंगे उसमें• वाकई, जो कोई नज़रअंदाज़ करते हैं हमारी आयतों को हैं असल काफिरें•

*कुरान: मुहम्मद का मौजेज़ा**

450. तुमने नहीं पढ़ा पिछली आसमानी किताबों को, नाहीं तुमने लिखा उनको तुम्हारे हाथ से• उस सूरत में, ठुकराने वालों के पास वजह होती शकों को पालने की•

451. असल में, यह आयतें हैं साफ उनके सीनों में जो रखते हैं इल्म• सिर्फ बदकार ही नज़रअंदाज़ करेंगे हमारी आयतें•

452. उन्होंने कहा, "अगर सिर्फ मौजेज़े* आते नीचे उसकी तरफ उसके रब की तरफ से!" कहो, "सारे मौजज़ें आते हैं सिर्फ **अल्लाह** की तरफ से; मैं एक वाज़े खबरदार करने वाले से ज़्यादा कुछ नहीं हूँ•"

453. क्या यह एक मौजज़ा* जैसा काफी नहीं कि हमने भेजा नीचे यह किताब तुम्हारी तरफ, उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? यह है वाकई एक रहमत और एक ताकीद लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं•

454. कहो, "**अल्लाह** काफी हैं एक गवाह जैसे मेरे और तुम्हारे बीच• वो जानते हैं सारी चीज़ों को आसमानों और ज़मीन में• यकीनन, जो कोई ईमान रखते हैं झूठ में और कुफ्र करते हैं **अल्लाह** में हैं असल हारने वाले•"

वो हैं जहन्नम में

455. वो दावा करते हैं तुम्हें आज़ाब लाने के लिए! अगर वो पहले से तय किये गये मुलाकात के लिए न होता, आज़ाब आता उनकी तरफ फौरन•* यकीनन, वो आयेगा उनकी तरफ अचानक, जब वो उसकी सबसे कम उम्मीद कर रहें होंगे•

456. वो दावा करते हैं तुमसे आज़ाब लाने के लिए! जहन्नम पहले से घेरे हुए है काफिरों को•

**29:45 तुम्हारा खुदा है जो कुछ छाया रहता है तुम्हारे ज़हेन पर ज़्यादातर वक्त (देखे 20:14 और अपेन्डिक्स 27)•*

**29:48-51 वो मर्ज़ी थी सबसे हिकमत वाले की कुरान को 1400 सालों से अलग करने का उसके ज़बरदस्त रियाज़ी मौजज़े से• देखते हुए कैसे सारे एक साथ मुसलमानों ने बुत परस्ती की है मुहम्मद की, यह ज़ाहिर है की अगर कुरान का रियाज़ी मौजेज़ा भी नाज़िल किया गया होता मुहम्मद के ज़रिये, कई लोगों ने उनकी इबादत की होती जैसे जिस्मानी अल्लाह• वो है जैसा, अल्लाह ने चाहा की बड़ा मौजेज़ा कुरान का (74:30-35) ज़रूरी था इंतेज़ार करे कम्प्युटर ज़माने का, और ताके नाज़िल हो सके उनके वादे के रसूल के ज़रिये (देखें अपेन्डिक्सें 1, 2, और 26)•*

**29:53 जो कोई मरता है 40 साल कि उम्र से पहले जाता है जन्नत को, और हर कोई मुस्तेहिक नहीं उसका• लोग कभी कभार शिकायत करते हैं फैसले की सुस्ती पर जब एक वहशी मुजरिम को फौरन फांसी नहीं दी जाती है• अल्लाह जानते हैं कौन मुस्तेहिक है जन्नत का (देखें 46:15 और अपेन्डिक्स 32)•*

457. दिन आयेगा जब आज़ाब उनको बेबस कर देगा, उनके ऊपर से और उनके पैरों के नीचे से; वो कहेंगे, "चखो तुम्हारे कामों के नतीजों को•"

हिजरत करो
अल्लाह के वासते

458. ऐ मेरे बंदो जो ईमान रखते हैं, मेरी ज़मीन है कुशादा, इसलिए मेरी इबादत करो•

459. हर रूह चखेगी मौत, फिर हमारी तरफ तुम आखिरकार लौटाये जाओगे•

460. जो कोई ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, हम यकीनन बसायेंगे उनको जन्नत में, साथ महलों और बहती हुई नहरों के• हमेशा के लिए वो रहेंगे उसमें• क्या एक खुबसूरत इनाम मुलाज़िमों के लिए•

461. वो हैं जो साबित कदमी से जमे रहते हैं, और उनके रब में भरोसा करते हैं•

462. कई एक मखलूक जो नहीं उठाती उसका रिज़्क, **अल्लाह** मुहय्या करते हैं उसे, साथ साथ तुम्हारे लिए भी• वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

ज़्यादातर ईमानवाले मुकर्रर किये गये जहन्नम के लिए

463. अगर तुम उनसे पूछो, "किसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और रखा सूरज और चाँद को तुम्हारी खिदमत में," वो कहेंगे "**अल्लाह**•" क्यों फिर वो बहेक गये?

464. **अल्लाह** हैं वाहिद जो बढ़ाते हैं रिज़्क को जिसकिसी के लिए वो चुनते हैं उनके मखलूकों में से, और थामें रखते हैं उसे• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

465. अगर तुम उनसे पूछो, "कौन भेजता है नीचे आसमान से पानी, मुर्दा ज़मीन को दोबारा ज़िन्दा करने के लिए," वो कहेंगे, "**अल्लाह**" कहो, "तारीफ हो **अल्लाह** की•" उनमें से ज़्यादातर नहीं समझते•

नये सिरे से तरतीब करो तुम्हारी एहलियतें

466. यह ज़िंदगी सजावट और खेल से ज़्यादा कुछ नहीं, जबकी अगली ज़िंदगी का ठिकाना है असल ज़िंदगी, अगर वो सिर्फ जानते•

467. जब वो सवार होते हैं एक कश्ती पर, वो इल्तेजा करते हैं **अल्लाह** से, मनसूब करते हुए उनकी दुवाओं को उनकी तरफ• लेकिन जैसे ही वो बचाते हैं उनको किनारे कि तरफ, वो पलट जाते हैं बुतपरस्ती की तरफ•

468. उन्हें कुफ्र करने दो उसमें जो हमने दिया है उनको, और उनको मज़े लेने दो आरज़ी तौर पर; वो यकीनन पता लगा लेंगे•

469. क्या उन्होंने नहीं देखा है कि हमने कायम किया एक मुकद्दस पनाहगाह को जिसे हमने बनाया महफूज़, जबकी सारे उनके इर्द गिर्द लोग हैं बराबर खतरे में? क्या वो फिरभी झूठ में ईमान रखेंगे, और ठुकरायेंगे **अल्लाह** की रहमतें?

470. कौन है ज़्यादा बुरा उससे जो झूठों को गढ़ता है और मनसूब करता है उन्हें **अल्लाह** को, या ठुकराता है सच को जब वो आता है उसकी तरफ? क्या जहन्नम नहीं है एक सही आज़ाब काफिरों को लिए?

471. जहाँ तक वो जो जद्दोजहद करते हैं हमारे वासते, हम यकीनन हिदायत करेंगे उनकी हमारी राह में• बिला शक, **अल्लाह** हैं मुत्तकी के साथ•

सुरह 30: युनानी

(अल रूम)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. अ• ल• म•*

2. यकीनन, युनानी शिकस्त दिये जायेंगे•

3. सबसे नज़दीक वाले ज़मीन में• उनके शिकस्त के बाद, वो उठेंगे दोबारा और जीतेंगे•

**30:1 देखें अपेन्डिक्स 1 तफसील की गई वज़ाहत के लिए ये पहले से रहे पोशीदाह इनिश्यिलों के लिए•*

4. चंद सालों के अंदर• ऐसा है **अल्लाह** का फैसला, पहली और दूसरी, पेशीनगोई दोनो में• उस दिन पर, ईमान वाले जश्न मनायेंगे

5. **अल्लाह** की जीत में• वो अता करते हैं जीत जिसकिसी को वो चाहते हैं• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहम वाले•

गलत ज़िंदगी के साथ मसरूफियत

6. ऐसा है **अल्लाह** का वादा—और **अल्लाह** कभी नहीं तोड़ते उनका वादा—लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते•

7. वो ध्यान करते हैं सिर्फ इस दुनिया की चीज़ों के वारे में जो उनको नज़र आती हैं, जबके अगली ज़िंदगी की तरफ पूरी तरह गाफिल होते हुए•

8. क्यों वो अपने आप पर गौर नहीं करते? क्या **अल्लाह** ने नहीं पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और सारी चीज़ें उनके दरमियान, सिवाए एक खास मकसद के लिए, और एक खास ज़िंदगी की मुद्दत के लिए• बहेरहाल, ज़्यादा तर लोग, उनके रब से मिलने के मुताल्लिक, हैं काफिरें•

9. क्या वो नहीं फिरे ज़मीन पर और ध्यान दिया नतीजों को उनके लिए जो उनसे पहले आये? वो हुआ करते थे ज़्यादा ताकतवर, ज़्यादा कामयाब, और ज़्यादा फायेदेमंद ज़मीन पर• उनके रसूलें गये उनकी तरफ साफ निशानियों के साथ• इस वजह से, **अल्लाह** नहीं थे वाहिद जिन्होंने उनको गलत किया, वो हैं खुद जिन्होंने उनकी खुदकी रूहों को गलत किया•

10. नतीजे उनके लिए जिन्होंने की बुराई ज़रूरी था बुरा होना• वो था इसलिए की उन्होंने ठुकराया **अल्लाह** की आयतें, और मज़ाक उड़ाया उनका•

बुतपरस्तें ठुकराते हैं उनके बुतों को

11. **अल्लाह** हैं वाहिद जो शुरू करते हैं खिलकत को और उसे दोहराते हैं• आखिरकार, तुम उनकी तरफ लौटाये जाओगे•

12. उस दिन पर जब वक्त गुज़र जायेगा, मुजरिम हो जायेंगे हैरतज़दा•

13. उनके बुतों के पास नहीं होगी कोई ताकत शिफाअत करने की उनकी तरफ से; बलिके, वो ठुकरायेंगे उनके बुतों को•

14. उस दिन पर जब वक्त गुज़र जायेगा, वो सोहबत से अलग हो जायेंगे•

15. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो होंगे जन्नत में, जश्न मनाते हुए•

16. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, और ठुकराते हैं हमारी आयतों और अगली ज़िंदगी कि मुलाकात को, वो रहेंगे आज़ाब में हमेशा के लिए•

याद रखो
अल्लाह को, हमेशा

17. इसलिए, तुम्हें बड़ाई करनी चाहिए **अल्लाह** की जब तुम रात को सोने जाते हो, और जब तुम उठते हो सुबह में•

18. सारी तारीफ का हक है उनको आसमानों और ज़मीन में, पूरी शाम, इसके अलावा तुम्हारे दिन के बीच में•

19. वो पैदा करते हैं ज़िंदगी को मौत से, और पैदा करते हैं मौत को ज़िंदगी से, और वो दोबारा ज़िंदा करते हैं ज़मीन को इसके बाद की वो मर चुका था; तुम भी उसी तरह दोबारा ज़िंदा किये जाते हो•

शादी:
एक खुदाई अंजुमन

20. उनके सबूतों में से है कि उन्होंने पैदा किया तुम्हें धूल से, फिर तुम बन गये पैदा करने वाले इंसानें•

21. उनके सबूतों में से है कि उन्होंने पैदा किया तुम्हारे लिए जोड़ों को तुम्हारे खुदके बीच में से, ताके तुम पा सको सुकून और चैन एक दूसरे के साथ, और उन्होंने रखा तुम्हारे दिलों में चाहत और परवाह तुम्हारे जोड़ों की तरफ• इस में, काफी सबूतें हैं लोगों के लिए जो सोचते हैं•

और सबूतें

22. उनके सबूतों में से है खिलकत आसमानों और जमीन की, और तबदिलियाँ तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों में• इनमें, वहाँ हैं निशानियाँ अक्ल रखने वालों के लिए•

23. उनके सबूतों में से है तुम्हारा सोना रात या दिन के दरमियान, और तुम्हारा काम करना उनके रिज़्क की तलाश में• इसमें, वहाँ हैं काफी सबूतें लोगों के लिए जो सुनते हैं•

24. उनके सबूतों में से है की वो दिखाते हैं तुम्हें बिजली एक डर का ज़रिया जैसा, साथ साथ एक उम्मीद जैसा, और वो भेजते हैं नीचे आसमान से पानी दोबारा ज़िंदा करने के लिए एक ज़मीन जो रही थी मुर्दा• इनमें, वहाँ हैं काफी सबूतें लोगों के लिए जो समझते हैं•

25. उनके सबूतें में से है की आसमान और ज़मीन खड़े हैं उनके सुर्पुदगी पर• आखिरकार, जब वो पुकारते हैं तुमको ज़मीन से बाहर, एक पुकार, तुम फौरन बाहर आ जाओगे•

26. उनके हैं हर कोई आसमानों और ज़मीन में; सारे हैं उनकी तरफ ताबेदार•

27. और वो हैं वाहिद जो शुरू करते हैं खिलकत, फिर उसे दोहराते हैं; ये है और आसान उनके लिए• उनके लिए हैं सबसे आला मिसाल, आसमानों और ज़मीन में, और वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

बेहूदगी बुतपरस्ती की

28. वो बयान करते हैं तुम्हारे लिए इसमें एक मिसाल तुम्हारे खुदके बीच में से; क्या तुम कभी बुलंद करते हो तुम्हारे खादिमों या कम दर्जे वालों को इस हद तक कि वो तुम्हारी मुखालिफत करें, और इस हद तक कि तुम दो उनको उतनी ताबेदारी जितना तुमको दी जाती है? हम इस तरह समझाते हैं आयतों को लोगों के लिए जो समझते हैं•

29. वाकई, खतावारें चले हैं उनके खुदके रायों पर, बगैर इल्म के• कौन फिर हिदायत कर सकता है उनकी जो गुमराह कर दिये गये हैं **अल्लाह** की तरफ से? कोई भी कभी उनकी मदद नहीं कर सकता•

*एक अल्लाह की इबादत: कुदरती फितरत**

30. इसलिए, तुम्हें सख्ती से मनसूब करना चाहिए अपने आप को मज़हब एक अल्लाह की इबादत कि तरफ• ऐसी है कुदरती फितरत रखी गई लोगों में **अल्लाह** की तरफ से• ऐसी खिलकत **अल्लाह** की कभी नहीं बदलेगी• यह है सही मज़हब, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते•

31. तुम्हें उनकी तरफ फरमानबरदार होना, उनका एहतराम करना, अता करनी चाहिए राबता नमाज़ें *(सलात)*, और—जो कुछ तुम करो— न गिरो कभी भी बुतपरस्ती में•

फिरकापरस्ती मलामत की गई है

32. *(न गिरो बुतपरस्ती में,)* जैसा उन्होंने बांटा उनके मज़हब को फिरको में; हर फिरका जश्न मनाता हुआ उसके साथ जो है उनके पास•

थाली के बैंगनें

33. जब मुसीबत मारती है लोगों को, वो पलटते हैं उनके रब की तरफ, पूरी तरह से मनसूब करते हुए अपने आप को उनके लिए• लेकिन फिर, जैसे ही वो बरसाते हैं उनको रहमत से, उनमें से कुछ बुतपरस्ती कि तरफ पलट जाते हैं•*

34. उनको ना क़द्रदान होने दो उसमें जो हमने उनको दिया है• मज़े उड़ाओ आरज़ी तौर पर; तुम यकीनन जान जाओगे•

**30:30 सिर्फ अल्लाह को पहचानना हमारे रब और मालिक जैसा है एक कुदरती फितरत• हम पैदा हुए हैं इस दुनिया में ऐसी एक फितरत के साथ• देखें 7:172-173 और अपेन्डिक्स 7•*

**30:33 आम मिसाल है सिलसिलावार इश्तेहारें हम देखते हैं अखबारों में, रखी गई लोगों कि तरफ से शुक्र अदा करते हुए सेंट जुड को उनको ठीक करने के लिए• इलाज से पहले, वो खुलूस दिल से अल्लाह से इल्तेजा करतें उनको ठीक करने के लिए• लेकिन जैसे ही इलाज कामयाब होता है, वो सेंट जुड का शुक्र अदा करते हैं!!!*

35. क्या हमने दिया है उनको इजाज़त जो जायेज़ ठहराता है उनके बुतपरस्ती को?

36. जब हम इनायत करते हैं रहमत लोगों पर, वो उसमें जश्न मनाते हैं• लेकिन जब मुसीबत पड़ती हैं उनपर, जैसा एक नतीजा उनके खुदके कामों का, वो बन जाते हैं नाउम्मीद•

37. क्या वो एहसास नहीं करते की **अल्लाह** बढ़ाते हैं रिज़्क जिसकिसी के लिए वो चाहते हैं, या उसे कम करते हैं? ये होना चाहिए सबकें लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं•

38. इसलिए, तुम्हें देना चाहिए रिश्तेदारों को उनके हक का हिस्सा *(खैरात का)*, उसी तरह गरीब और, अंजान मुसाफिर को• यह बेहतर है उनके लिए जो खुलूस दिल से तलाश करते हैं **अल्लाह** की खुशनूदगी; वो हैं जीतने वाले•

39. रिबा जो लिया जाता है कुछ लोगों कि दौलत को बढ़ाने के लिए, हासिल नहीं करता कुछ भी **अल्लाह** के पास• लेकिन अगर तुम दो खैरात को, तलाश करते हुए **अल्लाह** की खुशनूदगी, ये हैं जिन्होंने पाया उनका इनाम कई गुना•

कौन मुस्तेहिक है
इबादत का?

40. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया तुमको• वो हैं वाहिद जो मुहय्या करते हैं तुम्हारे लिए• वो हैं वाहिद जो डालते हैं तुम्हें मौत को• वो हैं वाहिद जो तुम्हें दोबारा ज़िंदा करते हैं• क्या तुम्हारे बुतों में से कोई भी कर सकता इन चीजों से कुछ? बड़ाई हो उनकी• वो हैं कहीं आला किसी शरीकों को रखने के लिए•

41. मूसीबतें फैल चुकीं हैं पूरे ज़मीन और समंदर में, लोगों ने जो किया है उसके वजह से• वो इसतरह उनको चखने देते हैं उनके कामों के कुछ नतीजों को, ताके वो लौटें *(सही कामों कि तरफ)*•

सीखना तारीख से

42. कहो, “फिरो ज़मीन पर और ध्यान दो तुमसे पहले उनके लिए नतीजों को•” उनमें से ज़्यादातर थे बुतपरस्तें•

43. इसलिए, तुम्हें मनसूब करना चाहिए अपने आप को पूरी तरह इस मुकम्मल मज़हब के लिए, इससे पहले के एक दिन आये जो बनाया गया है अटल **अल्लाह** की तरफ से• उस दिन पर, वो हो जायेंगे हैरतज़दा•

44. जो कोई कुफ्र करता है, कुफ्र करता है उसके खुदके रूह के नुकसान के लिए, जबकी वो जो एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, करते हैं ऐसा उनके खुदकी रूहों को मज़बूत और बढ़ाने के लिए•

45. इसलिए की वो फरागदिली से बदला देंगे उनको जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं उनके फज़लों से• वो नहीं चाहते काफिरों को•

46. उनके सबूतों में से है कि वो भेजते हैं हावाओं को अच्छी अलामत के साथ, तुम्हें बरसाने के लिए उनकी रहमत से, और कश्तियों को समंदर में उनके कानूनों के मुताबिक में दौड़ने कि इजाज़त देने के लिए, और तुम्हें तालाश करने के लिए उनकी फज़लें *(तिजारत के ज़रिये)*, ताके तुम क़द्रदान हो सको•

जीत की ज़मानत दी गई
ईमानवालों के लिए

47. हमने भेजा है तुमसे पहले उनके लोगों कि तरफ रसूलें, बड़ी निशानियों के साथ• उसके बाद, हमने सज़ा दिया उनको जो हद से निकल गये• वो है हमारा फर्ज़ कि हम अता करते हैं जीत ईमानवालों के लिए•

48. **अल्लाह** हैं वाहिद जो भेजते हैं हवाओं को, बादलों को चलाने के लिए, फैलाने के लिए पूरे आसमान में उनकी मर्ज़ी के मुताबिक में• वो फिर ऊपर ढ़ेर करते हैं बादलों को, फिर तुम देखते हो बारिश को उससे नीचे आते• जब वो गिरता है जिसकिसी पर वो चुनते हैं उनके बंदों में से, वो जश्न मनाते हैं•

49. इससे पहले कि वो उनपर गिरता, वो रूजू हुए थे नाउम्मीदी की तरफ•

50. **अल्लाह** की मुसलसल रहमत की तुम्हें कद्र करनी चाहिए, और कैसे वो दोबारा ज़िंदा करते हैं ज़मीन जो रही है मुर्दा• वो बिल्कुल इसी तरह यकीनन दोबारा ज़िंदा करेंगे मुर्दे को• वो हैं कादिरे मुतलक•

51. अगर हमने भेजा होता उनपर बलिके एक पीली रेत की आंधी, वो जारी रहते कुफ्र करने के लिए•

52. तुम कभी ज़ोर नहीं दे सकते मुर्दे, नाहीं बहरे को, पुकार सुनने के लिए, जब वो दूर पलट जायें•

53. नाहीं तुम हिदायत कर सकते हो अंधे की उनके बहकने कि वजह से• तुम सिर्फ सुने जा सकते हो उनकी तरफ से जो ईमान रखते हैं हमारी आयतों में, और फैसला करते हैं फरमानबरदारें होने के लिए•

यह ज़िंदगी है बहुत छोटी

54. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया तुम्हें कमज़ोर, फिर अता किया तुम्हें कमज़ोरी के बाद ताकत, फिर बदल दिया ताकत के बाद कमज़ोरी और सफेद बाल• वो पैदा करते हैं जो कुछ वो चाहते हैं• वो हैं सब कुछ जानने वाले, कादिरे मुतलक•

55. उस दिन पर जब वक्त गुज़र जायेगा, मुजरिम कसम खायेंगे कि वो रहे *(इस दुनिया में)* सिर्फ एक घंटा• इस तरह थे वो इतने गलत•

56. जो कोई बक्शे गये हैं इल्म और अकीदे के साथ कहेंगे, “तुम रहे हो, **अल्लाह** के फरमान के मुताबिक, हश्र के दिन तक• अब, यह है हश्र का दिन, लेकिन तुम नाकामयाब हुए उसे पहचानने के लिए•”

57. इसलिए, कोई माफी, उस दिन पर, फायदा नहीं पहुँचायेगी खतावारों को, नाहीं वो माफ किये जायेंगे•

58. इस तरह, हमने बयान किये हैं लोगों के लिए इस कुरान में सारे किस्मों की मिसालें• इसके बावजूद, चाहे तुम कितने ही किस्म के सबूत को पेश करो काफिरों को, वो कहेंगे, “तुम हो जालसाज़ करने वाले•”

खुदाई दखलअंदाज़ी

59. **अल्लाह** इस तरह बंद कर देते हैं उनके दिलों को जो नहीं जानते•

60. इसलिए, तुम्हें साबित कदमी से जमे रहना चाहिए— क्योंकि **अल्लाह** का वादा है सच्चा—और न डरो उनकी वजह से जिन्होंने हासिल नहीं किया है यकीन•

****

सुरह 31: लुकमान (लुकमान)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. अ•ल•म•*

2. ये *(हुरूफें)* कायम करते हैं सबूतें इस हिकमत की किताब के•

3. एक रहनुमाई और एक रहम ईमानवालों के लिए•

4. जो कायम करते हैं राबता नमाज़े *(सलात)*, देते हैं ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, और अगली ज़िंदगी के मुताल्लिक, उन्हें है बिल्कुल यकीन•

5. वो पैरवी कर रहे हैं हिदायत उनके रब की तरफ से, और वो हैं जीतने वाले•

6. लोगों में, वहाँ हैं वो जो बरकरार रखते हैं बेबुनियाद *हदीस*, और इस तरह फेरते हैं दूसरों को **अल्लाह** के रास्ते से बगैर इल्म के, और लेते हैं उसे फुजूल में• इन्होंने हासिल किया है एक शर्मनाक आज़ाब•

7. और जब हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं उनमें से एक के लिए, वो पलट जाता है तकब्बुर में जैसे कि उसने कभी नहीं सुना उनको, ऐसे जैसे के उसके कानें हैं बेहरे• वादा करो उसे एक दर्दनाक आज़ाब•

**31:1 देखें अपेन्डिक्स 1 इन इनिशियलों के एहम किरदार के लिए•*

8. यकीनन, जो कोई ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं हकदार हुए हैं मुसर्रत के बागों के•

9. हमेशा वो रहते हैं उसमें• यह है सच्चा वादा **अल्लाह** का• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

10. उन्होंने पैदा किया आसमानों को बगैर सुतूनों के जो तुम देख सकते हो• उन्होंने कायम किया ज़मीन पर तवाजुनों *(पहाड़ों)* को ताके वो लुड़क न जाये तुम्हारे साथ, और उन्होंने फैलाये उसपर सारे किस्मों के मखलूकों को• हम भेजते हैं आसमान से नीचे पानी सारे किस्मों के खूबसूरत पौधों को उगाने के लिए•

11. ऐसी है **अल्लाह** की खिलकत; दिखाओ मुझको क्या पैदा किया है बुतों ने जिनको तुम कायम करते हो उनके सिवाए• वाकई, खतावारे हैं दूर बहके हुए•

लुकमान कि हिकमत

12. हमने बक्शा है लुकमान को हिकमत के साथ: "तुम्हें **अल्लाह** का कद्रदान होना चाहिए•" जो कोई है कद्रदान है कद्रदान उसके खुदके अच्छे के लिए• जहाँ तक वो जो नाकद्रदान बन जाते हैं, **अल्लाह** को कोई ज़रूरत नहीं, काबिले तारीफ•

13. याद करो कि लुकमान ने कहा उसके बेटे से, जब उसने उसको रौशन ख्याल किया, "ऐ मेरे बेटे, कायम न करो किसी बुतों को **अल्लाह** के सिवाए; बुतपरस्ती है एक बड़ी नाइंसाफी•"*

दूसरा हुक्म

14. हमने ताकीद किया इंसान को उसके वालिदैन कि इज्जत करने के लिए• उसकी माँ ने ढोया उसे, और बोझ हुआ वज़नी और वज़नी• उसे लगते हैं दो सालें *(शदीद देखभाल का)* दूध छुड़ाने तक• तुम्हें मेरा कद्रदान होना चाहिए, और तुम्हारे वालिदैन का• मेरी तरफ है आखरी मुकद्दर•

15. अगर वो कोशिश करें ज़ोर देने के लिए तुम्हें मेरे सिवाए किसी बुतों को कायम करने के लिए, उनकी ऐतबा न करो• लेकिन जारी रहो उनके साथ अच्छे से पेश आने के लिए इस दुनिया में• तुम्हें पैरवी करनी चाहिए सिर्फ उनके रास्ते की जो फरमानबरदार हुए हैं मेरी तरफ• आखिरकार, तुम सारे लौटते हो मेरी तरफ, फिर मैं तुम्हें इत्तेला करूंगा सारी चिज़ों के बारे में तुमने किया है•

लुकमान का मशवरा

16. "ऐ मेरे बेटे, जानों की यहाँ तक के कोई चीज़ इतना छोटा जितना एक राई का दाना, एक चट्टान कि गहराई में, चाहे वो हो आसमानों या ज़मीन में, **अल्लाह** उसे लायेंगे• **अल्लाह** हैं बुलंद, आगाह•

17. "ऐ मेरे बेटे, तुम्हें कायम करना चाहिए राबता नमाजें *(सलात)*• तुम्हें नेककारी की वकालत करनी और बुराई मना करनी चाहिए, और रहो साबित कदम मुसीबत की सूरत में• ये हैं सबसे ज़्यादा बाइज्जत सीरतें•

18. "तुम्हें लोगों से तकब्बुर के साथ पेश नहीं आना चाहिए, नाहीं तुम्हें फिरना चाहिए ज़मीन पर घमंड से• **अल्लाह** पसंद नहीं करते तकब्बुर वाले दिखावों को•

19. "चलो खाकसारी से और नीचा करो तुम्हारी आवाज़—सबसे भद्दी आवाज़ है गधे की आवाज़•"

20. क्या तुम नहीं देखते की **अल्लाह** ने हवाले किया तुम्हारी खिदमत में सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में, और बरसाये हैं तुम्हें उनकी रहमतों से—ज़ाहिर और छिपा? इसके बावजूद, कुछ लोग बहेस करते हैं **अल्लाह** के बारे में बगैर इल्म, बगैर हिदायत, और बगैर रौशन ख्याल करती आसमानी किताब के•

वालिदैन के पीछे चलना आँख बंद करके:
एक आम कमबख्ती

21. जब उनसे कहा जाता है, "**अल्लाह** की इन आयतों की पैरवी करो," वो कहते हैं, "नहीं, हम पैरवी करते हैं सिर्फ उसकी जिसकी हमने पाया हमारे वालिदैन को करते हुए•" क्या अगर शैतान उनकी रहबरी कर रहा हो जहन्नम कि अज़ियत की तरफ?

**31:13 तुम्हें कैसा महसूस होगा अगर तुम करो एक बच्चे की देखभाल, दो उसे एक सबसे अच्छी तालीम, और तैयार करो उसे ज़िंदगी के लिए, सिर्फ देखने के लिए उसे किसी और का शुक्र अदा करते हुए? ये है बुतपरस्ती; नाइंसाफी•*

सबसे मज़बूत जोड़

22. जो कोई पूरी तरह से हवाले करते हैं **अल्लाह** को, एक नेक ज़िंदगी बसर करते हुए, पा लिया है पकड़ एक सबसे मज़बूत जोड़ का• इसलिए की **अल्लाह** के पास है पूरा काबू सारी चीज़ों का•

23. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, गमज़दा न हो उनके कुफ्र कि वजह से• हमारी तरफ है आखिरकार उनका लौटना, फिर हम इत्तेला करेंगे उनको सारी चीज़ों के बारे में जो उन्होंने किया था• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सबसे अंदरूनी ख्यालों से•

24. हम उनको मज़े लेने देते हैं आरज़ी तौर पर, फिर हवाले करते हैं उनको सख्त आज़ाब कि तरफ•

वो ईमान रखते हैं अल्लाह में

25. अगर तुम उनसे पूछो, "किसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को," वो कहेंगे, "**अल्लाह**•" कहो, "तारीफ हो **अल्लाह** की•" इसके बावजूद, उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते•

26. **अल्लाह** की हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में• **अल्लाह** हैं सबसे अमीर, सबसे तारीफ के काबिल•

ये हैं सारे लफ्ज़ें जिनकी हमें है ज़रूरत

27. अगर ज़मीन पर सारे दरख्तें बना दिये गये होते कलमों में, और समंदर मुहय्या करते स्याही, बढ़ाये गये सात ज़्यादा समंदरों से, **अल्लाह** की लफ्ज़ें खत्म नहीं होते• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम•

28. खिलकत और हश्र तुम सारों का है वैसा जैसा की एक शक्स का• **अल्लाह** हैं सुननेवाले, देखने वाले•

सिर्फ अल्लाह
हकदार इबादत के

29. क्या तुम एहसास नहीं करते कि **अल्लाह** मिलाते हैं रात को दिन में और मिलाते हैं दिन को रात में, और यह की उन्होंने हवाले किया है सूरज और चांद को तुम्हारी खिदमत में, हर एक दौड़ता हुआ उसके दायरे में एक खास ज़िंदगी कि मुद्दत के लिए, और कि **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें तुम करते हो?

30. यह साबित करता है कि **अल्लाह** हैं सच्च, जबकि कोई बुत वो कायम करते हैं उनके सिवाए है झूठ, और कि **अल्लाह** हैं सबसे ऊंचे, सबसे बड़े•

31. क्या तुम नहीं देखते कि जहाज़ें फिरते हैं समुंदर में, लिये हुए **अल्लाह** की नियामतें, तुम्हें दिखाने के लिए उनके कुछ सबूतों में से? वाकई ये होने चाहिए काफी सबूतें हर एक के लिए जो है साबित कदम, कद्रदान•

32. जब तेज़ लहरें घेरती है उनको, वो पुकारते हैं **अल्लाह** को, खुलूस दिल से मनसूब करते हुए उनकी दुवाओं को सिर्फ उनकी तरफ• लेकिन जैसे ही वो बचाते हैं उनको किनारे कि तरफ, उनमें से कुछ पलट जाते हैं• कोई भी तर्क नहीं करता हमारी आयतों को सिवाए उनके जो हैं दगाबाज़ें, नाकद्रदान•

33. ऐ लोगों, तुम्हें तुम्हारे रब का एहतराम करना चाहिए, और डरो उस दिन से जब एक वालिद उसके खुद के बच्चे कि मदद नहीं कर सकता, नाहीं एक बच्चा मदद कर सकता उसके वालिद की• यकीनन, **अल्लाह** का वादा है सच्चा• इसलिए, इस ज़िंदगी कि वजह से ध्यान न हटाओ; **अल्लाह** की तरफ से ध्यान न हटाओ सिर्फ वहमों कि वजह से•

चीज़ें हो सकता है हम जाने
*या हो सकता है न जाने**

34. **अल्लाह** के पास है वक्त *(दुनिया के खत्म होने)** के मुताल्लिक इल्म• वो हैं वाहिद जो भेजते हैं नीचे बारिश, और वो जानते हैं कोख के मवादों को• कोई रूह नहीं जानती क्या होगा उसके साथ कल, और कोई नहीं

जानता कौनसे ज़मीन में वो मरेगा या मरेगी• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, आगाह•

****

**31:34 अल्लाह नाज़िल करते हैं उनका इल्म जब भी वो चाहते हैं• हम सीखते हैं इस आयत से कि हम काबिल हो सकते हैं पेशीनगोई करने के लिए बारिश, और जनीन के जिन्स को• लेकिन हम कभी नहीं जान सकते वक्त या जगह मौत की• 72:27 के मुताबिक में, अल्लाह ने नाज़िल किया है दुनिया का खत्म होना उनके वादे के रसूल के ज़रिये• देखें 15:87, 20:15, और अपेन्डिक्स 25 तफसीलों के लिए•*

सुरह 32: सजदा
(अल सजदाह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

35. अ•ल•म•*

36. किताब है, बगैर किसी शक के, एक वही कायनात के रब की तरफ से•

37. उन्होंने कहा, "उसने गढ़ा है उसे•" वाकई, यह है सच तुम्हारे रब की तरफ से, खबरदार करने के लिए लोगों को जिन्होंने कभी नहीं पाया एक खबरदार करने वाला तुमसे पहले, ताके वो हो सकें हिदायतयाफ्ता•

कोई शिफाअत करने वाला नहीं
अल्लाह और तुम्हारे बीच

38. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया आसमानों और जमीन को, और सारी चीज़ें उनके दरमियान छ: दिनों में, फिर लिया सारे इक्तेदार को• तुम्हारे पास कोई नहीं उनके सिवाए रब जैसा, नाहीं है तुम्हारे पास एक शिफाअत करने वाला• क्या तुम तवज्जो नहीं लोगे?

39. आसमान से ज़मीन तक सारे मामले काबू किये जातें हैं उनकी तरफ से• उनकी तरफ, एक दिन बराबर है तुम्हारे एक हज़ार सालों के•

40. सारे राज़ों और ऐलानों के जानने वाले; कादिरे मुतलक, सबसे रहमवाले•

आदमी का आगाज़

41. वो हैं वाहिद जिन्होंने मुकम्मल किया सारी चीज़ें उन्होने पैदा किया, और शुरू किया खिलकत इंसान कि मिट्टी से•

42. फिर वो जारी रहे उसकी पैदाईश करने में एक खास निचले पानी के ज़रिये•

43. उन्होंने उसे रूप दिया और फूंका उसमें उनकी रूह से• और उन्होंने दिया तुमको सुनाई, दिखाई, और दिमागें; कभी कभार ही तुम शुक्रगुज़ार होते हो•

44. वो सोचते हैं, "इसके बाद कि हम गुम हो जाते हैं ज़मीन में, क्या हम नये पैदा होते हैं?" इसतरह, उनके रब से मिलने के मुताल्लिक, वो हैं काफिरें•

45. कहो, "तुम मौत को डाले जाओगे फरिश्तों के ज़रिये जिनकी ज़िम्मेदारी में तुम रखे गये हो, फिर तुम्हारे रब की तरफ तुम लौटाये जाओगे•"

बहुत
देर

46. अगर सिर्फ तुम देख सकते मुजरिम को जब वो झुकायेंगे नीचे उनके सरों को उनके रब के सामने: "हमारे रब, अब हमने देखा है और हमने सुना है• भेजिये हमें वापस और हम होंगे नेककारें• अब हमने हासिल कर लिया है यकीन•"*

47. अगर हमने चाहा होता, हमने दिया होता हर रूह को उसकी हिदायत, लेकिन यह पहले से तय है कि मैं भरूंगा जहन्नम को जिनों और इंसानों से, सारों को एक साथ•*

48. चखो तुम्हारे इस दिन के भूलने के नतीजों को; अब हम तुम्हें भूलते हैं• तुमने हासिल किया है दाईम आज़ाब बदले में तुम्हारे खुदके कामों के लिए•

**32:1 इन हुरूफों के मायने दिये गये हैं अगली आयत में: "यह किताब है, बगैर किसी शक के, एक वही कायनात के रब की तरफ से•" देखें अपेन्डिक्स 1 तफसीलों के लिए•*

**32:12 अगर वापस भेजे गये, वो करेंगे उन्ही खताओं को• देखें फुटनोट 6:28•*

**32:13 ज़्यादातर इंसानें "इसरार करते हैं" जहन्नम को जाने के लिए, चुनते हुए नज़र अंदाज़ करने को अल्लाह कि दावतें उनकी मगफरत के लिए• अल्लाह नहीं डालेंगे एक भी शक्स को जहन्नम में• जो कोई उनकी खुदकी मगफरत कराने के लिए नाकामयाब होते हैं बुतपरस्ती ठुकराते हुए और मनसूब करते हुए अपने आप को सिर्फ अल्लाह के लिए, और नाकामयाब होते हैं हमारे पैदा करने वाले कि तरफ से तजवीज़ किये गये तरीकों के ज़रिये उनकी रूहों को तरक्की देने के लिए, दौड़ेंगे जहन्नम कि तरफ उनकी खुदकी मर्ज़ी पर• वो बहुत कमज़ोर होंगे अल्लाह के ताकत कि जिस्मानी मौजूदगी का सामना करने के लिए•*

49. सिर्फ लोग जो वाकई में ईमान रखते हैं हमारी आयतों में हैं वो जो सजदे में गिरते हैं उनको सुनने पर• वो बड़ाई और तारीफ करते हैं उनके रब की, बगैर किसी तकब्बुर के•

50. उनकी करवटें आसानी से तर्क करतीं हैं उनके बिस्तरों को, उनके रब की इबादत करने के लिए, एहतराम और उम्मीद की वजह से, और उनकी तरफ हमारी नियामतों से, वो देते हैं•

जन्नत: नाकाबिले बयान खूबसूरत

51. तुम्हें कोई इल्म नहीं कितनी मुसर्रत और खुशी इंतेज़ार कर रही है तुम्हारे लिए एक इनाम जैसा तुम्हारे *(नेककारी वाले)* कामों के लिए•

52. क्या वो जो है एक ईमानवाला वैसा है जैसे एक वो जो है बदकार? वो नहीं हैं बराबर•

53. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो हकदार हुए हैं दाईम जन्नत के• ऐसा है उनका ठिकाना, बदले में उनके कामों के लिए•

54. जहाँ तक जो बदकार हैं, उनका मुकद्दर है जहन्नम• हर बार वो कोशिश करते हैं उससे निकलने की, वो ज़ोर दिये जायेंगे वापस• उन्हें कहा जायेगा, "चखो जहन्नम के आज़ाब को जिसमें तुम कुफ्र किया करते थे•"

लो एक इशारा

55. हम उन्हें चखने देते हैं छोटे आज़ाब *(इस दुनिया के)*, इस से पहले वो झेलते हैं और बड़ा आज़ाब *(अगली ज़िंदगी का)*, ताके वो *(लें एक इशारा और)* इसलाह करें•

56. कौन है ज़्यादा बुरा उससे जिसे याद दिलाया जाता है उसके रब की इन आयतों से, फिर इसरार करता है उनको नज़रअंदाज़ करने पर? हम यकीनन सज़ा देंगे मुजरिम को•

57. हमने दिया है मूसा को आसमानी किताब—किसी शक को पनाह न दो उनसे मिलने के बारे में—और हमने बनाया उसे एक हिदायत बनी इस्राईल के लिए•

58. हमने मुकर्रर किया उनमें से इमामों को जिन्होंने हिदायत किया हमारे हुक्मों के मुताबिक में, इसलिए कि वो साबित कदमी से कायम रहे और हासिल किया यकीन हमारी आयतों के बारे में•

59. तुम्हारे रब हैं वाहिद जो इंसाफ करेंगे उनका हश्र के दिन पर, सारी चीज़ों के मुताल्लिक उन्होंने बहेस किया•

60. क्या उनको कभी ख्याल आता है कितनी नस्लों को हमने फनाह किया उनसे पहले? वो अब रहते और चलते हैं उनके पुरखों के घरों में• यह होना चाहिए काफी सबूतें• क्या वो नहीं सुनते?

61. क्या वो एहसास नहीं करते कि हम चलाते हैं पानी को बंजर ज़मीनों की तरफ, और पैदा करते हैं उस से अनाजें उनके मवेशी को खिलाने, उसी तरह उनके खुद के लिए? क्या वो नहीं देखते?

62. वो दावा करते हैं: "कहाँ है वो जीत, अगर तुम हो सच्चे?"

63. कहो, "दिन जब ऐसी एक जीत आयेगी, ईमान लाना फायदा न देगा उनको जो ईमान नहीं लाये उस से पहले, नाहीं उनको दिया जायेगा दूसरा मौका•"

64. इसलिए, उन्हें नज़रअंदाज़ करो और इंतेज़ार करो, वो भी इंतेज़ार कर रहे हैं•

****

सुरह 33: जमातें (अल अहज़ाब)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ऐ नबी, तुम्हें चाहिए **अल्लाह** का एहतराम करना और पैरवी न करो काफिरों और मुनाफिकों की• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हकीम•

2. पैरवी करो उसकी जो नाज़िल किया जाता है तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ से• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें करते हो तुम सब•

3. और रखो तुम्हारा भरोसा **अल्लाह** में• और **अल्लाह** काफी होते हैं एक वकील जैसे•

अल्लाह के लिए बंदगी
है ना काविले तकसीम

4. **अल्लाह** ने नहीं दिया किसी मर्द को दो दिलें उसके सीने में• नाहीं उन्होंने बदल दिया तुम्हारे बिवीयों को जिनको तुम पराया कर देते हो *(तुम्हारे रिवाज के मुताविक)* तुम्हारी माँओं में•* नाहीं उन्होंने बदल दिया तुम्हारे गोद लिये बच्चों को नस्ली औलाद में• ये सारे हैं महेज़ बयानें जिनको तुमने ऐजाद किया है• **अल्लाह** कहते हैं सच, और वो हिदायत करते हैं *(सही)* राह में•

तुम्हारे नामों को न बदलो

5. तुम्हें चाहिए देना तुम्हारे गोद लिए बच्चों को नामें जो महफूज रखते हैं उनके रिश्ते को उनके नस्ली वलिदैन की तरफ• यह है ज़्यादा बराबर **अल्लाह** की नज़र में• अगर तुम न जानो उनके वालिदैन को, फिर, मज़हब में तुम्हारे हमज़ात जैसे, तुम्हें तुम्हारे कुम्बे के फरदों कि तरह उनके साथ बरताव करना चाहिए• तुम कोई गुनाह नहीं करते अगर तुम गलती करो इस मामले में: तुम ज़िम्मेदार हो तुम्हारे बामकसद इरादों के लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

6. नबी है ज़्यादा करीब ईमानवालों के बनिज़बत वो हैं एक दूसरे के, और उसकी बिवीयाँ हैं उनकी माँओं कि तरह उनके लिए• रिश्तेदारों को चाहिए ख्याल रखना एक दूसरों का **अल्लाह** की आसमानी किताब के मुताविक में• इसतरह, ईमानवालों को ख्याल रखना चाहिए उनके रिश्तेदारों का जो उनकी तरफ हिजरत करते हैं, बशर्ते के उन्होंने ख्याल रखा है उनके खुदके कुम्बों का पहले• ये हें एहकामें इस आसमानी किताब के•

मुहम्मद करते हैं एहद
मदद करने का अल्लाह के
*वादे के रसूल की**

7. याद करो कि हमने लिया नबियों से उनका वादा, शामिल करते हुए तुम्हें *(ऐ मुहम्मद)*, नुह, इब्राहीम, मूसा, और ईसा मरयम का बेटा• हमने लिया उनसे एक संजीदा वादा•*

8. उसके बाद, वो यकीनन सवाल करेंगे सच्चे को उनके सच्चाई के बारे में, और तैयार कर रखा है *(इस कुरानी हकीकत में)* काफिरों के लिए एक दर्दनाक आज़ाब•

जमातों कि लड़ाई

9. ऐ तुम जो ईमान रखते हो, याद करों **अल्लाह** की रहमत को तुम पर; जब लश्करों ने हमला किया तुम पर, हमने भेजा उनपर तेज़ हवा और गायब लश्करें• **अल्लाह** है देखने वाले सारी चीज़ें तुम करते हो•

10. जब वो आये तुम्हारे ऊपर से, और तुम्हारे नीचे से, तुम्हारी आँखें दहेल गयीं, तुम्हारे दिलें बेसब्र हो गये, और तुमने **अल्लाह** के बारे में नामुनासिब ख्यालों को पनाह दिया•

11. वो था जब ईमानवाले सही तौर पर आज़माये गये थे; वो सख्ती से हिला दिये गये थे•

12. मुनाफिकीन और वो जो थे साथ शकों के उनके दिलों में कहा, "जो **अल्लाह** और उनके रसूल ने वादा किया हम से नहीं था एक फरेब से ज़्यादा कुछ!"

**33:4 ये एक रिवाज था अरब मुल्क में बिवी को पराया कर देना ऐलान करते हुए कि वो थी शौहर की माँ जैसी• ऐसा एक नाजायेज़ तरीका रद्द किया गया है इसमें•*

**33:7 वादा तफसील किया गया है 3:81 में• अल्लाह ने एक वादा लिया नबियों से कि वो मदद करें उनके वादे के रसूल की जो आयेगा मुहम्मद के वाद पाक करने और एक करने के लिए उनके पैगामों को• वादा किया गया था ज़मीन के पैदा करने से पहले, और पूरा किया गया था मक्का में जुलहिज्जा 3, 1391 (दिसंबर 21, 1971) में• जमा इस्लामी महीना (12), साथ दिन (3), साथ साल (1391) देता है 1406, 19x74• बेपनाह सबूत शिनाख्त करता हुआ अल्लाह के वादे के रसूल का रशाद खलीफा जैसे मुहय्या किया गया है पूरे कुरान में (अपेन्डिक्स 2 और 26)•*

13. उनमें से एक गिरोह ने कहा, “ऐ याथरिब के लोगों, तुम कभी नहीं हासिल कर सकते जीत; वापस जाओ•” दूसरों ने नबी से बहाने बनाये: “हमारे घरें हैं खतरे में,” जबकी वो नहीं थे खतरे में• वो सिर्फ फरार होना चाहते थे•

14. अगर दुश्मन ने हमला किया होता और पूछा होता उनको जुड़ने के लिए, वो जुड़ गये होते दुश्मन के साथ बगैर हिचकिचाहट के•

15. उन्होंने माज़ी में वादा किया था **अल्लाह** से कि वो नहीं पलटेंगे पीछे और फरार होंगे; **अल्लाह** से एक वादा करना शामिल करता है एक बड़ी ज़िम्मेदारी•

16. कहो, “अगर तुम फरार होते हो, तुम कभी फरार नहीं हो सकते मौत से या कत्ल होने से• चाहे कुछ भी हो जाये, तुम सिर्फ रहते हो एक छोटी मुद्दत और•”

17. कहो, “कौन हिफाज़त कर सकता है तुम्हारी **अल्लाह** से अगर वो चाहें कोई मुसीबत, या चाहे कोई रहमत तुम्हारे लिए?” वो कभी नहीं पा सकते, सिवाए **अल्लाह** के, कोई दूसरा रब और मालिक•

18. **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ तुम्हारे बीच रोकने वालों से, और वो जो कहते हैं उनके साथियों को, “चलो हम सब पीछे रहें•” कभी कभार ही वो तैयारी करते हैं बचाव के लिए•

19. इसके अलावा, वो हैं बहुत कंजूस तुम्हारे साथ बरताव करते वक्त• अगर कोई चीज़ डराती है कौम को, तुम देखते हो उनकी आँखों को खौफ से घूमते हुए ऐसे जैसे मौत आ चुकी है उनकी तरफ• जब आफत गुज़र जाती है, वो मारते हैं तुम्हें तेज़ ज़बानों से• वो हैं बहूत कंजूस उनके माल से• ये ईमानवाले नहीं हैं, और, इस वजह से, **अल्लाह** ने ज़ाया किया है उनके कामों को• यह है आसान **अल्लाह** के लिए करना•

20. उन्होंने सोचा कि जमातें हो सकता है वापस आयें• उस सूरत में, वो चाहेंगे कि वो गुम रहते रेगिस्तान में, पूछते हुए तुम्हारे बारे में खबरें दूर से• अगर जमातों ने तुम पर हमला किया होता जब वो थे तुम्हारे साथ, वो कभी कभार ही तुम्हारी मदद करते•

*नबी की बहादूरी**

21. **अल्लाह** के रसूल ने कायम किया है एक अच्छा मिसाल उनके लिए तुम्हारे बीच जो तलाश करते हैं **अल्लाह** और आखरी दिन को, और मुसलसल सोचते हैं **अल्लाह** के बारे में•

22. जब सच्चे ईमानवालों ने देखा जमातों को *(तैयार हमला करने के लिए)*, उन्होंने कहा, “यह है जो **अल्लाह** और उनके रसूल ने वादा किया है हमसे, और **अल्लाह** और उनके रसूल हैं सच्चे•” इस *(खतरनाक हाल ने)* सिर्फ मज़बूत किया उनके अकीदे और बढ़ाया उनकी फरमानबरदारी को•

23. ईमानवालों के बीच वहाँ हैं लोग जो पूरा करते हैं **अल्लाह** के साथ उनके वादों को• उनमें से कुछ मर गये जबकी दूसरे तैयार खड़े रहते हैं, कभी न डगमगाते हुए•

24. **अल्लाह** यकीनन बदला देंगे सच्चे को उनके सच्चाई के लिए, और सज़ा देंगे मुनाफिकीनों को, अगर वो ऐसा चाहें, या माफ करें उनको• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहमवाले•

मुहम्मद के दौर में

25. **अल्लाह** ने दूर कर दिया उनको जिन्होंने उनके गुस्से के साथ कुफ्र किया, और गये खाली हाथ• **अल्लाह** ने इस तरह बचाया ईमानवालों को किसी लड़ाई से• **अल्लाह** हैं ताकतवर, कादिरे मुतलक•

**33:21 शैतान ने लिया यह आयत को मज़मून के बाहर, और भरोसा किया लोगों के नबी मुहम्मद की बुतपरस्ती करने पर ऐजाद करने के लिए “नबी कि सुन्नत” पुकारी जाने वाली एक पूरी किस्म नाजायेज़ और बेतुके कायदों की• इसने पैदा किया एक पूरी तरह अलहायदा मज़हब (देखें 42:21 और अपेन्डिक्स 18)•*

26. उन्होंने आसमानी किताब के लोगों में से उनके साथियों को भी नीचे उतारा उनके महफ़ूज़ ठिकानों से, और फेंका दहशत उनके दिलों में• उनमें से कुछ को तुमने किया कत्ल, और कुछ को तुमने लिया बंदी•

27. उन्होंने बनाया तुम्हें उनकी ज़मीन का वारिस, उनके घरें, उनके पैसे, और ज़मीनें जिनपर तुमने कभी नहीं रखा था पैर• **अल्लाह** के पूरे काबू में है सारी चीज़ें•

खास ज़िम्मेदारी
करीब होने के लिए

28. ऐ नबी, कहो तुम्हारी बिवीयों को, "अगर तुम तालाश कर रही हो ये ज़िंदगी और उसकी सजावटें, फिर मुझे तुमको मुआवाज़ा देने दो और इजाज़त दो तुम्हें अच्छी तरह से जाने देने के लिए•

29. "लेकिन अगर तुम तलाश कर रही हो **अल्लाह** और उनके रसूल की, और अगली ज़िंदगी का ठिकाना, फिर **अल्लाह** ने तैयार कर रखा है तुम में से नेककारों के लिए एक बड़ा बदला•"

खास ज़िम्मेदारी

30. ऐ नबी कि बिवीयों, अगर तुम में से कोई करती है एक बड़ा गुनाह, अज़ाब दुगना किया जायेगा उसके लिए• यह है आसान **अल्लाह** के लिए करना•

31. तुम में से कोई जो ऐतबा करती है **अल्लाह** और उनके रसूल की, और एक नेक ज़िंदगी बसर करती है, हम अता करेंगे उसे दुगना बदला, और हमने तैयार कर रखा है उसके लिए एक फरागदिली वाली नियामत•

कायम करते हुए मिसाल

32. ऐ नबी कि बिवीयों, तुम किसी दूसरी औरतों कि तरह नहीं, अगर तुम नेककारी कायम रखो• *(तुम्हारे पास है एक बड़ी ज़िम्मेदारी•)* इसलिए, तुम्हें बहुत नर्मी से बात नहीं करनी चाहिए, ताके वो जिनके दिलों में है बिमारी न पायें गलत ख्यालें; तुम्हें सिर्फ नेककारी कहनी चाहिए•

33. तुम्हें तुम्हारे घरों में रहना चाहिए, और न घुलो मिलो लोगों से हद से ज़्यादा, जैसा तुम किया करते थे गफलत के पुराने दिनों में• तुम्हें कायम करनी चाहिए रावता नमाजें *(सलात)*, और दो ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, और ऐतबा करो **अल्लाह** और उनके रसूल की• **अल्लाह** चाहते हैं निकालना सारी नापाकीज़गी को तुमसे, ऐ तुम जो रहतो हो मुकद्दस मस्जिद के इर्दगिर्द, और तुम्हें पूरी तरह पाक करने के लिए•

34. याद रखो जो पढ़ी जाती हैं तुम्हारे घरो में **अल्लाह** की आयतें और उसमें रखी गई हिकमत• **अल्लाह** है आला, आगाह•

बराबरी मर्दों और औरतों की

35. फरमानबरदार मर्दे, फरमानबरदार औरतें, ईमानवाले मर्दे, ईमानवाली औरतें, ताबेदार मर्दे, ताबेदार औरतें, सच्चे मर्दे, सच्ची औरतें, साबित कदम मर्दे, साबित कदम औरतें, एहतराम करने वाले मर्दे, एहतराम करने वाली औरतें, खैरात करने वाले मर्दे, खैरात करने वाली औरतें, रोज़ेदार मर्दे, रोज़ेदार औरतें, नेकचलन मर्दे, नेकचलन औरतें, और मर्दे जो ज़िक्र करते हैं **अल्लाह** का बार बार, और जिक्र करने वाली औरतें; **अल्लाह** ने तैयार कर रखा है उनके लिए माफी और एक बड़ा बदला•

बड़ी खता की गई
मुहम्मद कि तरफ से
मुहम्मद शक्स नाफरमानी करता है
रसूल मुहम्मद की

36. किसी ईमान रखने वाले मर्द या ईमान रखने वाली औरत, के पास कोई इखतियार नहीं उस हुक्म के मुताल्लिक, अगर **अल्लाह** और उनके रसूल जारी करें कोई हुक्म• जो कोई नाफरमानी करे **अल्लाह** और उनके रसूल की चला गया है बहुत दूर•

37. याद करो कि तुमने कहा उस से जो बक्शा गया था **अल्लाह** की तरफ से, और बक्शा गया था तुम्हारी तरफ से, "रखो तुम्हारी बिवी को और **अल्लाह** का एहतराम करो," और तुमने छिपाया तुम्हारे खुदके अंदर जिसे **अल्लाह** ने चाहा ऐलान करने का• इसतरह, तुम डरे लोगों से, जबकि तुम्हें चाहिए था सिर्फ **अल्लाह** से डरना• जब ज़ाएद पूरी तरह खत्म हो चुका था उसकी बिवी से, हमने तुम्हें उस से शादी होने दिया, ताके कायम करें मिसाल कि एक मर्द उसके गोद लिये बेटे कि तलाकशुदा बिवी से शादी कर सकता है• **अल्लाह** के हुक्मों को पूरा किया जाना चाहिए•

38. नबी कोई खता नहीं करता करते हुए कोई चीज़ जो बनाई गई है हलाल **अल्लाह** की तरफ से• ऐसा है **अल्लाह** का निज़ाम पहली नस्लों से• **अल्लाह** का हुक्म है एक मुकद्दस फर्ज़•

39. जो कोई पहुँचाते हैं **अल्लाह** के पैगामों को, और जो सिर्फ उनका एहतराम करते हैं, चाहिए नहीं डरें किसी से लेकिन **अल्लाह** से• **अल्लाह** हैं सबसे काबिल हिसाब लेने वाले•

*आखरी रसूल नहीं**

40. मुहम्मद तुम में से किसी शक्स के वालिद नहीं थे• वो थे **अल्लाह** के एक रसूल और आखरी नबी• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

41. ऐ ईमानवालो, तुम्हें **अल्लाह** को बार बार याद करना चाहिए•*

42. तुम्हें उनकी बड़ाई करनी चाहिए दिन और रात•

43. वो हैं वाहिद जो मदद करते हैं तुम्हारी, एक साथ उनके फरिश्तों के, तुम्हारी रहबरी करने के लिए अंधेरे से बाहर रौशनी में• वो हैं सबसे रहम वाले ईमानवालों की तरफ•

44. दिन जब उनसे वो मिलते हैं उनका आदाब है, "अमन," और उन्होंने तैयार कर रखा है उनके लिए एक फरागदिली वाला बदला•

45. ऐ नबी, हमने भेजा है तुम्हें एक गवाह जैसा, एक ले जानेवाला खुशखबरियों का, साथ साथ एक खबरदार करने वाले जैसा•

46. दावत देते हुए **अल्लाह** की तरफ, उनके मर्ज़ी के मुताबिक में, और एक हिदायत करने वाला रहनुमा•

47. पहुँचाओ अच्छी खबरें ईमानवालों की तरफ, कि वो हकदार हुए हैं **अल्लाह** की तरफ से एक बड़ी रहमत के•

48. काफिरों और मुनाफिकीनों कि ऐतबा न करो, नज़रअंदाज़ करो उनके ज़िल्लतों को, और रखो तुम्हारे भरोसे को **अल्लाह** में; **अल्लाह** काफी होते हैं एक वकील जैसे•

शादी के कानूने

49. ऐ ईमानवालो, अगर तुमने शादी किया ईमानवाली औरतों से, फिर उनको तलाक दिया उनके साथ हम बिस्तरी करने से पहले, उनपर ज़िम्मा नहीं तुम्हारी तरफ किसी दरमियानी इंतेज़ार का *(दूसरे मर्द से शादी करने से पहले)*• तुम्हें चाहिए उनको मुआवज़ा देना बराबरी से, और जाने दो उनको अच्छी तरह से•

**33:40* मुहम्मद कि इस साफ मायने के बावजूद, ज़्यादातर मुसलमानें इसरार करते हैं कि वो थे आखरी नबी और आखरी रसूल भी• यह है एक अफसोस नाक इंसानी सिफत जैसा हम देखते हैं 40:34 में• जो कोई आसानी से अल्लाह में ईमान रखते हैं समझते हैं कि अल्लाह ने भेजा उनके पाक करने वाले और एक करने वाले वादे के रसूल को आखरी नबी मुहम्मद के बाद (3:81, 33:7)•*

**33:41-42* तुम्हारा खुदा है जोकुछ छाया रहे तुम्हारे ख्यालों में ज़्यादातर वक्त• इसलिए एहकाम ज़िक्र करना अल्लाह का और बड़ाई करना उनकी दिन और रात• देखें अपेन्डिक्स 27•*

50. ऐ नबी, हमने जायेज़ किया तुम्हारे लिए तुम्हारी बिवीयों को जिनको तुमने दिया है उनके हक का महर, या जो है पहले से तुम्हारे पास, जैसा अता किया गया तुम्हारे लिए **अल्लाह** की तरफ से• इसके अलावा जायेज़ हैं तुम्हारे लिए शादी में तुम्हारे वालिद के भाईयों कि बेटियाँ, तुम्हारे वालिद के बहनों कि बेटियाँ, तुम्हारे माँ के भाईयों कि बेटियाँ, तुम्हारे माँ के बहनों कि बेटियाँ, जिन्होंने हिजरत किया तुम्हारे साथ• इसके अलावा, अगर एक ईमानवाली औरत दे दे अपने आप को नबी को—छोड़ते हुए महर—नबी उस से शादी कर सकता है बगैर एक महर के, अगर वो ऐसा चाहे• लेकिन, उसका महर छोड़ देना लागू होता है सिर्फ नबी के लिए, और दूसरे ईमानवालों के लिए नहीं• हमने पहले से फरमान कर रखा है उनके हकूकों को उनके जोड़ों के मुताल्लिक में या जो है उनके पास पहले से• यह है तुम्हें किसी शर्मिंदगी से बचाने के लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहमवाले•

51. तुम नर्मी से बाज़ रह सकते हो उनमें से किसी एक से, और तुम करीब ला सकते हो उनमें से किसी एक को तुम्हारी तरफ• अगर तुम सुलाह करो किसी एक के साथ जिसको तुमने पराया कर दिया था, तुम नहीं करते कोई खता• इस तरह से, वो खुश होंगे, नही होगा कोई गम, और होंगे मुतमईन जिससे तुम देते हो बराबरी से उन सारों के लिए• **अल्लाह** जानते हैं क्या है तुम्हारे दिलों में• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, रहीम•

52. तुमको बयान किये गये किस्मों से परे, तुम्हें ताकीद की गई है शादी करने से किसी दूसरी औरतों से, नाहीं तुम बदल सकते हो एक नई बिवी *(मना किये गये किस्मों में से)*, चाहे तुम कितना ही पसंद करो उनकी खूबसूरती• तुम्हें मुतमईन होना चाहिए उन से जो पहले से जायेज़ किये गये हैं तुम्हारे लिए• **अल्लाह** हैं निगेहबान सारी चीज़ों पर•

इख्लाक

53. ऐ ईमानवालों, नबी के घरों में दाखिल न हो जब तक तुम्हें इजाज़त नहीं दिया जाता खाने के लिए, नाहीं तुम्हें ज़ोर देना चाहिए ऐसी एक दावत का किसी अंदाज़ में• अगर तुम्हें दावत दी जाती है, तुम दाखिल हो सकते हो• जब तुम खाना खत्म कर लो, तुम्हें जाना चाहिए; उसे मसरूफ न करो लम्बी बातों में• यह तकलीफ दिया करता था नबी को, और वो था बहुत शर्मीला तुम्हें कहने को• लेकिन **अल्लाह** नहीं शर्माते सच से• अगर तुम्हें पूछना हो उसकी बिवीयों से किसी चीज़ के लिए, पूछो उनसे एक आड़ के पीछे से• यह पाक है तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के लिए• तुम्हें **अल्लाह** के रसूल को तकलीफ नहीं देनी चाहिए• तुम्हें उसकी बिवीयों से शादी नहीं करनी चाहिए उसके बाद, इसलिए कि यह होगा एक बड़ा जुर्म **अल्लाह** कि नज़र में•*

54. चाहे तुम ऐलान करो कोई चीज़, या छिपाओ उसे, **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

55. औरतें हल्का कर सकती हैं *(उनके लिबास के कायदे को)* उनके वालिदों, उनके बेटों, उनके भाईयों, उनके भाईयों के बेटे, उनकी बहनों के बेटे, दूसरी औरतें, और उनके *(ज़नाना)* खादिमों के इर्दगिर्द• उन्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए• **अल्लाह** होते हैं गवाह सारी चीज़ों के•

**33:53 हमें 4:22 में ताकीद किया गया है औरतों से शादी करने से जो पहले हमारे वालिदों को ब्याही गई थीं• नाहीं वालिद शादी कर सकता है उसके बेटे कि तलाकशुदा बिवी से (4:23)• यह खुदाई हुक्म महफ़ूज़ रखता है हमारे वलिदों के लिए हमारी इज्ज़त और उनके सबसे ज़्यादा ज़ाती मामलों को• उसी तरह, नबी थे एक वालिद जैसे शक्स उसके वक्त के ईमानवालों के लिए• उन ईमानवालों के अच्छे के लिए, अल्लाह ने ताकीद किया उनको उन औरतों से शादी करना जो पहले ब्याही गई थीं नबी को• शादी है एक मुकद्दस और बिल्कुल ज़ाती ताल्लुकात, और नबी कि ज़ाती ज़िंदगी बेहतर थी ज़ाती रखी जाती•*

*नबी कि ज़िंदगी के दौरान**

56. **अल्लाह** और उनके फरिश्ते मदद और सहारा देते हैं नबी को• ऐ ईमानवालो, तुम्हें चाहिए उसकी मदद और सहारा देना, और एहतराम करो उसका जैसा उसका एहतराम किया जाना चाहिए•*

57. यकीनन, जो कोई मुखालिफत करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल की, **अल्लाह** देते हैं उनको ऐज़ा और एक लानत इस ज़िंदगी में, और अगली ज़िंदगी में; उन्होंने तैयार कर रखा है उनके लिए एक शर्मनाक आज़ाव•

58. जो कोई हैरान करते हैं ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को, जिन्होंने नहीं किया कोई गलत, किया है नाहीं सिर्फ एक झूठ, बलिके एक बड़ा गुनाह भी•

लिबास का कायदा औरतों के लिए

59. ऐ नबी, कहो तुम्हारी बिवीयों, तुम्हारी बेटियों, और ईमानवालों की बिवीयों से कि वो लम्बा करें उनके लिबासों को• इसतरह, वो पहचानी जायेंगी *(नेककार औरतों कि तरह)* और बचे तौहीन किये जाने से• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहीम•

60. जब तक मुनाफिकीन, और वो उनके दिलों में साथ बिमारी के, और शहर के ऐबी झूठे बाज़ न आयें *(तुम्हें हैरान करने से)*, हम यकीनन अता करेंगे तुम्हें मुसल्लत, फिर उनको ज़ोर दिया जायेगा निकलने के लिए एक छोटे अरसे के अंदर•

61. उन्होंने हासिल किया है लानत जहाँ भी वो जायें; *(जब तक वो न रूके तुम को हमला करने से,)* उनको पकड़ा और कत्ल किया जा सकता है•

62. यह है **अल्लाह** का दाईम निज़ाम, और तुम पाओगे कि **अल्लाह** का निज़ाम है न बदलने के काबिल•

दुनिया का खत्म होना
*नाज़िल किया गया**

63. लोग पूछते हैं तुमसे वक्त *(दुनिया के खत्म होने)* के बारे में• कहो, "उसका इल्म है सिर्फ **अल्लाह** के पास• तुम बस इतना जानो, वक्त हो सकता है करीब•"

पैरवी करने वाले पलटते हैं
उनके रहबरों कि तरफ

64. **अल्लाह** ने मलामत किया है काफिरों को, और तैयार कर रखा है उनके लिए जहन्नम•

65. रहते हैं वो उसमें हमेशा के लिए• वो नहीं पायेंगे कोई रब, नाहीं एक मदद करने वाला•

66. जिस दिन वो फेंके जायेंगे जहन्नम में, वो कहेंगे; "आह, काश हमने माना होता **अल्लाह** का कहना, और माना होता रसूल का कहना•"

67. वो यह भी कहेंगे, "हमारे रब, हमने माना है हमारे मालिकों और रहबरों का कहना, लेकिन उन्होंने हमें गुमराह किया•

68. "हमारे रब, दीजिये उनको दुगना आज़ाव, और लानत दीजिये उनको एक ज़बरदस्त लानत•"

69. ऐ ईमानवालो, उनकी तरह न हो जिन्होंने तकलीफ दिया मूसा को, फिर **अल्लाह** ने बरी किया उसे उस से जो उन्होंने कहा• वो थे, **अल्लाह** की नज़र में, काबिले इज़्ज़त•

70. ऐ ईमानवालो, एहतराम करो **अल्लाह** का और कहो सिर्फ सही बातें•

**33:56 लफ्ज़ "नबी" मुसलसल मुखातिब करता है मुहम्मद के लिए सिर्फ जब तक वो ज़िंदा थे• शैतान ने इस्तेमाल किया इस आयत को लुभाने के लिए मुसलमानों को मुहम्मद का ज़िक्र करने में, मुसलसल, बजाये अल्लाह का ज़िक्र करने के जैसा ताकीद किया गया है 33:41-42 में•*

33:63 पिछली एक सदी से कम, सिर्फ अल्लाह इल्म रखते थे टेलीविज़न और स्पेस सैटेलाईट के बारे में, मिसाल के तौर पर• उन्होंने नाज़िल किया इस इल्म को पहले से मुकर्रर किये वक्त पर• उसी तरह, अल्लाह ने नाज़िल किया है मुकर्रर किया गया वक्त इस दुनिया के खत्म होने का (अपेन्डिक्स 25)•

2047 106966

71. वो फिर ठीक करेंगे तुम्हारे कामों को, और माफ करेंगे तुम्हारे गुनाहों को• जो कोई ऐतबा करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल की जीत गये हैं एक बड़ी जीत•

चुनने की
आज़ादी

72. हमने पेश किया ज़िम्मेदारी *(चुनने की आज़ादी)* आसमानों और ज़मीन को, और पहाड़ों को, लेकिन उन्होंने इंकार किया उसे उठाने से, और उस से थे खौफज़दा• लेकिन इंसान ने उसे कबूल किया; वो था खता करने वाला, गाफिल•*

73. इसलिए कि **अल्लाह** यकीनी तौर पर सज़ा देंगे मुनाफिक मर्दो और मुनाफिक औरतों को, और बुतपरस्ती करने वाले मर्दो और बुतपरस्ती करने वाली औरतों को• **अल्लाह** बक्शते हैं ईमान रखने वाले मर्दो और ईमान रखने वाली औरतों को• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

****

सुरह 34: शीबा (सबा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. तारीफ हो **अल्लाह** की— जिनकी हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में; सारी तारीफ का हक है सिर्फ उनके लिए अगली जिंदगी में• वो हैं सबसे हिकमत वाले, आगाह•

2. वो जानते हैं सारी चीजें जो जातीं हैं ज़मीन में, और सारी चीज़ें जो आतीं हैं बाहर उससे, और सारी चीज़ें जो आतीं हैं नीचे आसमान से, और सारी चीज़ें जो चढ़ते हैं उसमें• वो हैं सबसे रहम वाले, माफ करने वाले•

3. वो जो कुफ्र करते हैं कहा है, "वक्त कभी नहीं गुज़रेगा!" कहो, "बेशक—मेरे रब कि कसम—वो यकीनी तौर पर आयेगा तुम्हारी तरफ• वो हैं जाननेवाले मुसतकबिल के• यहाँ तक के एक ज़र्रा बराबर वज़न भी नहीं छिपा है उनसे, चाहे वो हो आसमानों या ज़मीन में• नाहीं उस से छोटा भी, या बड़ा *(है छिपा)*• सारे हैं एक ज़बरदस्त दफ्तर में•"

4. यकीनी तौर पर, वो इनाम देंगे उनको जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं• ये हकदार हुए हैं मगफरत और एक फरगदिली वाले नियामत के•

5. जहाँ तक वो जो मुसलसल दावा करते हैं हमारी आयतों का, उन्होंने हासिल किया है एक आज़ाब दर्दनाक रूसवाई का•

6. ये वाज़े है उनके लिए जो बक्शे गये हैं इल्म के साथ कि यह वही तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ से है सच, और यह की वो हिदायत करती है कादिरे मुतलक, सबसे काबिले तारीफ के राह की तरफ•

7. वो जो कुफ्र करते हैं कहा है, "हमें दिखाने दो तुम्हें एक आदमी जो कहता है तुम्हें कि इसके बाद कि तुम अलग फाड़ दिये जाते हो तुम पैदा किये जाओगे दोबारा•

8. "या तो उसने गढ़ा है झूठों को **अल्लाह** के बारे में, या तो वो है दिवाना•" वाकई, जो कोई कुफ्र करते हैं अगली ज़िंदगी में हासिल किया है सबसे बुरा आज़ाब; वो बहुत दूर गुमराह हो गये हैं•

9. क्या उन्होंने नहीं देखा सारी चीज़ों को उनके सामने और उनके पीछे, आसमान और ज़मीन में? अगर हम चाहें, हमने उन्हें ज़मीन को निगलने दिया होता, और गिरने दिया होता अंवारों को उनपर आसमान से• ये होना चाहिए एक काफी सबूत हर ताबेदार बंदे के लिए•

33:72 जानवरें, दरख्तें, सितारे, वगैराह ने लिया फायदा इस सबसे महेरबान पेशकश का• देखें अपेन्डिक्स 7•

दाऊद और सुलैमान

10. हमने बक्शा दाऊद को हमारी तरफ से रहमतों के साथ: "ऐ पहाड़ो, हवाले करो उसके साथ, और तुम भी, ऐ परिंदों•" हमने उसके लिए लोहे को किया नर्म•

11. "तुम बना सकते हो ढालों को जो बैठें सही तौर पर, और नेककारी वाले काम करो• जो कुछ तुम करो, मैं हूँ उसका देखने वाला•"

पहला तेल का कुंआ

12. सुलैमान के लिए हमने हवाले किया हवा को उसकी सुपुर्दगी पर, सफर करते हुए एक महीना आते और एक महीना जाते• और हमने उसके लिए एक तेल के चश्मे को फूट निकलने दिया• इसके अलावा, जिनों ने काम किया उसके लिए, उसके रब की मर्ज़ी से• उनमें से जिसकिसी ने नज़रअंदाज़ किया हमारे हुक्मों को, हमने सुपुर्द किया उसे एक सख्त आज़ाब कि तरफ•

13. उन्होने बनाया उसके लिए जो कुछ वो चाहते थे—मुजस्समों के ताकें, मूर्तियाँ, गहरे हौज़ें, और वज़नी पकाने की देगें• ऐ दाऊद का कुम्बा, *(नेककारी वाले)* काम करो तुम्हारा कद्र दिखाने के लिए• सिर्फ मेरे कुछ ही बंदे हैं कद्रदान•

जिनों का इल्म है महदूद

14. जब उसके मौत का मुकर्रर किया गया वक्त आया, उनके पास कोई सुराग न था कि वो मर चुके थे• उस वक्त तक नहीं जब जानवरों में से एक ने कोशिश किया उसके आसे को खाने की, और वो नीचे गिर पड़े, कि जिनों ने एहसास किया कि वो मर चुके थे• उन्होंने इस तरह एहसास किया कि अगर वो वाकई अंदेखे को जानते, उन्होंने रोक दिया होता इतना सख्त काम करना जैसे ही वो मर गये•

15. शीबा का वतन हुआ करता था एक अजूबा, साथ दो बागों के दाहिनी और बाई• खाओ तुम्हारे रब की नियामतों से, और उनका कद्रदान रहो—अच्छी ज़मीन, और एक माफ करने वाले रब•

16. वो पलट गये और, इस वजह से, हमने उंडेला उनपर एक आफतअंगेज़ सैलाब, और हमने उनके दो बागों को बदल दिया बुरे ज़ायके वाले फलों, कांटेदार पौधों, और एक नाकाफी फसल के दो बागों में•

17. हमने इस तरह बदला दिया उनको उनके कुफ्र के लिए• क्या हम बदला नहीं देते सिर्फ काफिरों को?

18. हमने रखा उनके दरमियान और कौमें जिनको हमने बक्शा दूसरे नख्लिसतानें, और हमने सफर को महफूज़ किया उनके बीच: "सफर करो उनमें दिनों और रातों को पूरी हिफाज़त में•"

19. लेकिन वो *(नाकद्रदान बन गये और)* दावा किया: "हमारे रब, हमें कोई परवाह नहीं अगर आप बढ़ा दें हमारे सफरों का फासला *(बगैर किसी पड़ाओं के)*•" उन्होंने इस तरह गलत किया उनकी खुदकी रूहों को• इस वजह से, हमने बना दिया उनको तारीख, और बिखेर दिया उनको छोटी कौमों में पूरी ज़मीन पर• यह मुहय्या करना चाहिए सबकें उनके लिए जो हैं साबितकदम, कद्रदान•

शैतान दावा करता है
ज़्यादा तादाद का

20. शैतान ने पाया उनको आसानी से पूरा करते हुए उसके उम्मीदों को• उन्होंने उसकी पैरवी की, सिवाए कुछ ईमानवालों के•

मकसद:
*क्या हम ईमान रखते हैं अगली ज़िंदगी में?**

21. उसके पास नहीं थी कभी कोई ताकत उनपर• लेकिन हम इस तरह फर्क करते हैं उनको जो ईमान रखते हैं अगली ज़िंदगी में उनसे जो शक्की है उसके बारे में•* सारी चीज़ें हैं तुम्हारे रब के पूरे काबू में•

*34:21 मयार जो हमें इत्तेला करता है कि हम ईमान रखते हैं अगली ज़िंदगी में या नहीं है 6:113, 17:45 और 39:45 में• ये तीन मयारें बाहर लाते हैं हमारे असल इरादों को, चाहे कुछ भी हो हमार ज़बानी बयानें•

22. कहो, "पुकारो बुतों को जिनको तुमने कायम किया है **अल्लाह** के सिवाए• वो कब्ज़ें में नहीं रखते यहाँ तक की एक तन्हा ज़र्रा भी आसमानों, या ज़मीन में• वो कब्ज़ा नहीं रखते किसी साझेदारी का उसमें• नाहीं वो इजाज़त देते हैं उनको उनकी मददगारें होने के लिए•"

शफाअत नहीं

23. उनके साथ शफाअत होगी फुज़ूल, जब तक वो मेल न खाये उनके मर्ज़ी के• जब उनके ज़हने आखिरकार ठहर जायेंगे, और वो पूछेंगे, "तुम्हारे रब ने क्या कहा, "वो कहेंगे, "सच•" वो हैं सबसे आला, सबसे बड़े•

24. कहो, "कौन मुहय्या करता है तुम्हारे लिए, आसमानों और ज़मीन से?" कहो, "**अल्लाह,**" और "या तो हम या तुम हो हिदायतयाफ्ता, या बहुत दूर गुमराह हो गये हैं•"

25. कहो, "तुम नहीं हो ज़िम्मेदार हमारे जुर्मो के लिए, नाहीं हम हैं ज़िम्मेदार उसके लिए जो तुम करते हो•"

26. कहो, "हमारे रब जमा करेंगे हम सारों को एक साथ उनके सामने, फिर वो इंसाफ करेंगे हमारे बीच बराबरी से• वो हैं मुनसिफ, सब कुछ जानने वाले•"

27. कहो, "दिखाओ मुझें बुतें जिनको तुमने कायम किया है उनके साथ शरीकों जैसा!" कहो, "नहीं; वो हैं वाहिद **अल्लाह**, कादिरे मुतलक, सबसे हिकमत वाले•"

अल्लाह के वादे का रसूल

28. हमने भेजा है तुम्हें *(ऐ रशाद)** सारे लोगों की तरफ, लिए हुए खुशखबरियों को, साथ साथ एक खबरदार करने वाले जैसा, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते•

29. वो दावा करते हैं, "कब यह वादा पूरा होगा, अगर तुम हो सच्चे?"

30. कहो, "तुम्हारे पास है एक खास वक्त, एक खास दिन पर, जो तुम मुलतवी नहीं कर सकते एक घंटे के लिए भी, नाहीं आगे कर सकते हो•"

31. वो जिन्होंने कुफ्र किया कहा है, "हम ईमान नहीं लायेंगे इस कुरान में, नाहीं पिछली आसमानी किताबों में•" अगर सिर्फ तुम तसव्वुर कर सकते इन खतावारों को जब वो खड़े होते हैं उसके रब के सामने! वो एक दूसरे के साथ बहेस करेंगे आगे और पीछे• पैरवी करने वाले कहेंगे उनके रहबरों को, "अगर वो तुम्हारे वजह से न होता, हम होते ईमानवाले•"

हश्र के दिन पर

32. रहबरें कहेंगे उनको जिन्होंने उनकी पैरवी की, "क्या हम हैं वो जिसने फेरा तुमको हिदायत से जब वो आई तुम्हारी तरफ? नहीं; ये तो तुम हो जो थे बदकार•"

33. पैरवी करने वाले कहेंगे उनके रहबरों से, "वो तुम थे जिसने साज़िश किया रात और दिन, फिर हमें हुक्म दिया **अल्लाह** का नाकद्रदान होने के लिए, और कायम करने के लिए बुतों को उनकी बराबरी करने के लिए•" वो अफसोस से भरे होंगे, जब वो देखेंगे आज़ाब, इसलिए कि हम रखेंगे ज़ंज़ीरें उनके गर्दनों के इर्द गिर्द जिन्होंने कुफ्र किया• क्या वो बराबरी से बदला नहीं दिये जाते उसके लिए जो उन्होंने किया?

हर बार!

34. हर बार जब हमने भेजा एक खबरदार करने वाले को एक कौम की तरफ, उस कौम के रहबरों ने कहा, "हम इंकार करते हैं पैगाम तुम भेजे गये हो जिसके साथ•"

*34:28 जैसा तफसील किया गया है अपेन्डिक्स 2 में, इस रसूल का नाम रियाज़ी तौर पर कोड किया गया है कुरान में "रशाद खलीफा" जैसा• जोड़ते हुए अददी वेल्यु नाम "रशाद" का (505), साथ अददी वेल्यु नाम "खलीफा" का (725), साथ सुरेह का नंबर (34), साथ आयत का नंबर (28), हमें मिलता हैं एक टोटल जो मुताबिक है कुरान के 19-पर बुनियाद रियाज़ी मौजज़े के साथ, जो

बेनकाब किया गया था रशाद खलीफा के ज़रिये• (505+725+34+28=1292= 19x68)• ज़्यादा इत्तेला दिये गये हैं (5:19) और उसके फुटनोट में•

2057 *107225*

35. उन्होंने यह भी कहा, "हम हैं ज़्यादा ताकतवर, साथ ज़्यादा पैसे और औलाद के, और हम सज़ा नहीं दिये जायेंगे•"

36. कहो, "मेरे रब हैं वाहिद जो काबू करते हैं सारी नियामतें; वो अता करते हैं नियामतें जिसकिसी के लिए वो चाहते हैं, या उन्हें कम करते हैं, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते•"

37. वो तुम्हारा पैसा या तुम्हारी औलाद नहीं जो लाती है तुमको हमारे करीब• सिर्फ वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं पायेंगे ईनाम उनके कामों के लिए, ज़रप किये गये कई गुना• जन्नत के ठिकाने में वो रहेंगे मुकम्मल अमन में•

38. जहाँ तक वो जो मुसलसल दावा करते हैं हमारी आयतों का, वो रहेंगे आज़ाब में•

39. कहो, "मेरे रब हैं वाहिद जो काबू करते हैं सारी नियामतें; वो बढ़ाते हैं नियामतों को उनके लिए जिनको वो चुनते हैं उनके बंदो में से, या कम करते हैं उन्हें• जो कुछ तुम खर्च करो *(अल्लाह के वास्ते)*, वो इनाम देंगे तुम्हें उसके लिए; वो हैं सबसे अच्छे मुहय्या करने वाले•"

40. उस दिन पर जब वो हाज़िर करेंगे उन सारों को, वो कहेंगे फरिश्तों को, "क्या इन लोगों ने तुम्हारी इबादत किया?"

41. वो जवाब देंगे, "आप की बड़ाई हो• आप हैं हमारे रब और मालिक, वो नहीं• बलिके, वो इबादत कर रहे थे जिनो की; ज़्यादातर उनमें थे उसमें ईमान रखने वाले•"

42. उस दिन पर, तुम नहीं रखते कोई ताकत एक दूसरे की मदद या नुकसान करने के लिए, और हम कहेंगे खतावारों को, "चखो जहन्नम का आज़ाब जिसका तुम इंकार किया करते थे•"

रियाज़ी मौजेज़ा
*कुरान का**

43. जब हमरे सबूतें पढ़े जाते थे उनके लिए, बिल्कुल साफ, उन्होंने कहा, "यह है सिर्फ एक आदमी जो फेरना चाहता है तुमको उस राह से जैसे तुम्हारे वालिदैन इबादत कर रहे हैं•" उन्होंने यह भी कहा, "यह हैं गढ़ी हुई झूठें•" वो जिन्होंने कुफ्र किया यह भी कहा सच के बारे में जो आया उनकी तरफ, "ज़ाहिर है यह है जादू•"

44. हमने नहीं दिया उनको कोई दूसरी किताबें पढ़ने के लिए, नाहीं हमने भेजा उनकी तरफ तुमसे पहले दूसरा खबरदार करने वाला•

45. उनसे पहले उन्होंने कुफ्र किया, और यहाँ तक की उन्होंने नहीं देखा दसवाँ* हिस्सा *(मौजज़े)* का हमने दिया इस नस्ल को, जब उन्होंने कुफ्र किया मेरे रसूलों में, कितना सख्त था मेरा आज़ाब!

*अल्लाह के वादे का रसूल**

46. कहो, "मैं पूछता हूँ तुमसे सिर्फ एक चीज़ करने के लिए: मनसूब करो अपने आप को **अल्लाह** के लिए, जोड़ों में या तन्हा जैसे, फिर गौर करो• तुम्हारा दोस्त *(रशाद)* नहीं है दिवाना• वो है एक वाज़े खबरदार करने वाला तुम्हारी तरफ, बस एक खौफनाक आज़ाब की आमदगी से पहले•"

**34:43 जोड़ते हुए जिमेटरिकल वेल्यु "रशाद" की (505), साथ "खलीफा" की वेल्यु (725), साथ इस आयत का नंबर (43), हम पाते हैं 505+725+43=1273= 19x67• देखें अपेन्डिक्सें 1 और 2•*

**34:45 बड़े मौजज़े दिये गये मूसा और ईसा को थे महदूद वक्त और जगह में; वो देखे गये थे चंद लोगों कि तरफ से जो थे वजूद में उस जगह में उस वक्त पर• लेकिन कुरान का रियाज़ी मौजज़ा है दाईम (देखें 74:30-35 और अपेन्डिक्स 1)•*

**34:46 रखते हुए जिमेटरिकल वेल्यु "रशाद" की (505) "खलीफा" कि वेल्यु (725) के पास, फिर सुरेह नंबर (34), और आयत नंबर (46), हम पाते हैं 5057253446= 19x266171234•*

47. कहो, "मैं नहीं पूछता तुमसे किसी मज़दूरी के लिए; तुम रख सकते हो उसे• मेरी मज़दूरी आती है सिर्फ **अल्लाह** की तरफ से• वो गवाह होते हैं सारी चीज़ों के•"

48. कहो, "मेरे रब सच को तारी होने देते हैं• वो हैं जानने वाले सारे राज़ों के•"

49. कहो, "सच्चाई आ चुकी है; जबकी झूठ ना तो शुरू कर सकता है कोई चीज़, नाहीं दोहरा सकता है उसे•"

50. कहो, "अगर मैं गुमराह हो जाऊँ, मैं गुमराह होऊंगा मेरी खुदकी खामीयों कि वजह से• अगर मैं हूँ हिदायतयाफ्ता, वो है मेरे रब के इल्हाम की वजह से• वो हैं सुनने वाले, करीब•"

51. अगर सिर्फ तुम उनको देख सकते जब बड़ी दहशत मारेगी उनको; वो बच नहीं सकेंगे तब, और वो ले लिये जायेंगे जबरन•

52. वो कहेंगे तब, "हम अब उसमें ईमान रखते हैं," लेकिन वो बहुत देर हो चुकी होगी•

53. उन्होंने ठुकराया है उसे माज़ी में; उन्होंने बलिके फैसला किया है तुक्केबाज़ी और अंदाज़े को बरकरार रखने का•*

54. इस वजह से, वो महरूम कर दिय गये थे सारी चीज़ों से जिनकी उन्होंने तमन्ना की• यह है वही अंजाम पहली नस्लों में उनके बराबर वालों जैसा• उन्होंने बहुत सारे शकों को पनाह दिया•

****

सुरह 35: शुरू करने वाले (फातिर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. तारीफ हो **अल्लाह** की, शुरू करने वाले आसमानों और ज़मीन के, और मुकर्रर करने वाले परों के साथ फरिश्तों को रसूलें होने के लिए—दो, तीन, और चार *(परें)*• वो बढ़ाते हैं खिलकत को जैसा वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

2. जब **अल्लाह** बरसाते हैं लोगों को रहमत के साथ, कोई ताकत उसे रोक नहीं सकती• और अगर वो उसे थामें रखें, कोई ताकत, उनके अलावा, नहीं भेज सकता है उसे• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे हिकमत वाले•

3. ऐ लोगों, याद करो **अल्लाह** की रहमतों को तुम पर• क्या वहाँ है कोई दूसरा पैदा करने वाला सिवाए **अल्लाह** के जो मुहय्या करता है तुम्हारे लिए आसमान और ज़मीन से? कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए उनके• तुम कैसे भटक सकते हो?

4. अगर वो तुममें कुफ्र करें, तुमसे पहले रसूलों में कुफ्र किया गया है• **अल्लाह** के काबू में हैं सारी चीज़ें•

5. ऐ लोगों, **अल्लाह** का वादा है सच्चा; इसलिए, इस निचली ज़िंदगी कि वजह से ध्यान न फेरो• **अल्लाह** की तरफ से न पलटो महेज़ फरेबों कि वजह से•

6. शैतान है तुम्हारा दुश्मन, तो उसके साथ एक दुश्मन कि तरह पेश आओ• वो सिर्फ दावत देता है उसके जमात को जहन्नम के रहने वाले होने के लिए•

7. वो जिन्होंने कुफ्र किया हासिल किया है एक सख्त आज़ाब, और वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं हकदार हुए हैं मगफरत और एक बड़े बदले के•

8. ध्यान दो उसको जिसके बुरे काम सजाये गये हैं उसकी आँखों में, जब तक वो सोचता है की वो है नेककारी• **अल्लाह** इस तरह गुमराह करते हैं जिसकिसी को चाहते हैं *(गुमराह होने के लिए)*, और वो हिदायत करते हैं

जिसकिसी को चाहते हैं *(हिदायतयाफ्ता होने के लिए)*• इसलिए, उनपर गमज़दा न हो• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें वो करते हैं•

**34:53 सारे मज़हबों के लोग झुकते हैं तर्क करने के लिए अल्लाह के लफ्ज़ को और बरकरार रखने के लिए आदमियों के लफ्ज़ों को• यहूदियें और मुसलमानें बरकरार रखते हैं मिशनाह (हदीस) और जिमाराह (सुन्नत), जबकी ईसाईयें बरकरार रखते हैं ट्रिनिटी ऐजाद किया गया निसीन इज़्तेमा के ज़रिये, ईसा के 325 सालों बाद•*

9. **अल्लाह** हैं वाहिद जो भेजते हैं हवाएं बादलों को हिलाने क लिए, फिर हम चलाते हैं उनको बंजर ज़मीनों की तरफ, और दोबारा ज़िंदा करते हैं ऐसी ज़मीनें इसके बाद की वो मर चुकी थीं• इस तरह है हश्र•

सारी अज़मत है
अल्लाह के पास

10. जो कोई तलाश कर रहा है अजमत मालूम होना चाहिए कि **अल्लाह** के पास है सारी अजमत• उनकी तरफ चड़ते हैं अच्छे लफ्ज़ें, और वो बुलंद करते हैं नेककारी वाले कामों को• जहाँ तक वो जो साज़िश करते हैं बुरे कामों की, वो हासिल करते हैं सख्त आज़ाब; साज़िश बनाना ऐसे लोगों का मुकर्रर किया गया है नाकामयाब होने के लिए•

अल्लाह के पास है पूरा काबू

11. **अल्लाह** ने पैदा किया तुमको धूल से, फिर एक छोटी बूंद से, फिर वो पैदा होने देते हैं तुम्हारे जोड़ों के ज़रिये से• कोई औरत नहीं बनती है हामिला, नाहीं देती है जनम, बगैर उनके इल्म से• कोई भी नहीं बचता है एक लंबे ज़िंदगी के लिए, और किसी की ज़िंदगी नहीं काटी जाती है छोटी, सिवाए एक पहले से मौजूद दफ्तर के मुताबिक में• यह है आसान **अल्लाह** के लिए•

*कद्र करना अल्लाह की अज़मत का**

12. दो समंदरें नहीं हैं एक जैसे; एक है ताज़ा और ज़ायकेदार, जबकी दूसरा है खारा और पीने के नाकाबिल• उनमें से हर एक से तुम खाते हो नर्म गोश्त, और निकालते हो ज़ेवर पहनने के लिए• और तुम देखते हो जहाज़ों को उनपर तैरते हुए, तलाश करते हुए उनकी नियामतें, ताके तुम कद्रदान हो सको•

13. वो मिलाते हैं रात को दिन में, और मिलाते हैं दिन को रात में• उन्होंने हवाले किया है सूरज और चांद को चलने का एक पहले से तय किये गये वक्त के मुद्दत के लिए• ऐसे हैं **अल्लाह** तुम्हारे रब; उनकी हैं सारी बादशाहत• कोई भी बुतें तुम कायम करते हो उनके सिवाए नहीं रखते कोई ताकत यहाँ तक कि एक बीज के छिलके जैसा•

*बुतें बिल्कुल बेताकत**

14. अगर तुम उनको पुकारो, वो तुम्हें कभी नहीं सुन सकते• अगर वो तुम्हें सुने तब भी, वो कभी जवाब नहीं दे सकते तुमको• हश्र के दिन पर, वो तुमको ठुकरायेंगे• कोई भी तुमको इत्तेला नहीं दे सकता सबसे आगाह की तरह•

15. ऐ लोगों, तुम हो वो जिन्हें है ज़रूरत **अल्लाह** की, जबकी **अल्लाह** को किसी की ज़रूरत नहीं, सबसे काबिले तारीफ•

16. अगर वो चाहें, वो तुम्हें खत्म कर सकते हैं और तबदील कर सकते हैं एक नई खिलकत से•

17. यह नहीं है ज़्यादा मुश्किल **अल्लाह** के लिए•

18. कोई रूह नहीं उठा सकती दूसरी रूह के गुनाहों को• अगर एक रूह जो दबी है गुनाहों से इल्तेजा करती है दूसरी से उसके बोझ का हिस्सा होने के लिए, कोई दूसरी रूह नहीं उठा सकती उसका कोई हिस्सा, अगर वो थे रिश्तेदार तब भी• सिर्फ लोग जो तवज्जोह देते हैं तुम्हारी तकीदों को हैं वो जो एहतराम करते हैं उनके रब का, जब अकेले उनकी तन्हाई में तब भी, और कायम करते हैं राबता नमाज़ें *(सलात)*• जो कोई पाक करता है उसकी रूह को, करता है ऐसा उसके खुद के अच्छे के लिए• **अल्लाह** की तरफ है आखरी मुकद्दर•

**35:12-13 जब हम भेजते हैं हमारे एसट्रोनॉटस को फिज़ा में, हम उनको उनके सबसे कम खाना, पानी, और ऑक्सीज़न की ज़रूरतों से उनको मुहय्या करते हैं• जब हमने तरफदारी की शैतान की बेअदबी का करोड़ों सालों पहले (अपेन्डिक्स 7), अल्लाह ने डाला हमें फिज़ा में फिज़ाई कश्ती ज़मीन पर• लेकिन अल्लाह ने मुहय्या किया है हमारी फिज़ाई कश्ती को ज़बरदस्त ताज़ा किये जाने के काबिल निज़ामों से जो मुहय्या करता है एक बड़ी किस्म ताज़े खाने, पानी, ऑक्सीज़न की, और यहाँ तक की हम एसट्रोनॉटस की पैदाईश•*

**35:14 लोग बुत बनाते हैं ईसा, मरयम, मुहम्मद, अली, और/या बुर्जुगों को; ऐसे बुतें हैं मुर्दा, नावाकिफ, और बिल्कुल बेताकत• यहाँ तक की जब वो थे ज़िंदा, वो थे बेताकत•*

19. नहीं है बराबर अंधा और देखने वाला•

20. नाहीं है अंधेरा और रौशनी•

21. नाही है छांव की ठंडक और सूरज की गरमी•

22. नाहीं हैं ज़िंदा और मुर्दा, **अल्लाह** जिसकिसी को वो चाहें सुनने देते हैं• तुम नहीं सुना सकते उनको जो हैं कब्रों में•

23. तुम एक खबरदार करने वाले से ज़्यादा कुछ नहीं•

अल्लाह के
*वादे का रसूल**

24. हमने भेजा है तुमको* सच के साथ, खुशखबरियों का एक लेजाने वाला, साथ साथ एक खबरदार करने वाले जैसा• हर कौम ज़रूरी है पाये एक खबरदार करने वाला•

25. अगर वो कुफ्र करें तुम में, उनसे पहले उन्होंने भी किया है कुफ्र• उनके रसूलें गये उनकी तरफ साफ सबूतों, और ज़बूरों, और रौशन करती आसमानी किताबों के साथ•

26. उसके बाद, मैंने सज़ा दिया उनको जिन्होंने कुफ्र किया; कैसा हौलनाक था मेरा आज़ाब!

अल्लाह की रंगों भरी खिलकतें

27. क्या वो एहसास नहीं करते कि **अल्लाह** भेजते हैं नीचे आसमान से पानी, जिससे वो पैदा करते हैं फलें मुख्तलिफ रंगों के? यहाँ तक की पहाड़ों के पास है मुख्तलिफ रंगें; चोटियाँ हैं सफेद, या लाल, या कुछ दूसरा रंग• और पहाड़ी कौवे हैं काले•

28. इसके अलावा, लोग, जानवरें, और मवेशी आते हैं मुख्तलिफ रंगों में• इसलिए जो लोग वाकई एहतराम करते हैं **अल्लाह** का हैं वो जो हैं इल्मवाले• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, माफ करने वाले•

29. यकीनन, जो कोई पढ़ते हैं **अल्लाह** की किताब, कायम करते हैं रावता नमाज़ें *(सलात)*, और उनके लिए हमारी नियामतों से वो खर्च करते हैं—खुफिया तौर पर और ऐलानिया तौर पर—मशगूल हुए हैं एक सरमायाकारी में जो कभी नुकसान में नहीं रहती•

30. वो बदला देंगे उनको फरागदिली से, और ज़रप करेंगे उनपर उनकी रहमतों को• वो हैं माफ करने वाले, कद्रदान•

कुरान; मुकम्मल करता है
सारी आसमानी किताबों को

31. जो हमने नाज़िल किया तुम्हारी तरफ इस आसमानी किताब में है सच, मुकम्मल करता हुआ पिछली सारी आसमानी किताबों को• **अल्लाह** हैं पूरी तरह आगाह उनके बंदों से, देखने वाले•

32. हमने आगे बढ़ाया आसमानी किताब को नस्ल से नस्ल कि तरफ, और हमने इजाज़त दिया जिसकिसी को हमने चुना हमारे बंदों में से उसे पाने के लिए• उसके बाद, उनमें से कुछ ने गलत किया उनकी रूहों को, दूसरों ने बरकरार रखा उसे वक्त के कुछ हिस्से के लिए, जबकी दूसरे थे ख्वाहिशमंद **अल्लाह** की मर्ज़ी के मुताबिक में नेककारी वाले काम करने के लिए; यह है सबसे बड़ी फतेह•

ईमानवाले

33. वो दाखिल होंगे अदन के बागों में, जहाँ वो सजाये जायेंगे सोने और मोतियों के कड़ों से, और उनके लिबासे उसमें बनाये जायेंगे रेशम के•

34. वो कहेंगे, "तारीफ हो **अल्लाह** की निकालने के लिए हमारी सारी परेशानियाँ• हमारे रब हैं माफ करने वाले, कद्रदान•

35. "उन्होंन दाखिल किया है हमें दाईम मुसर्रत वाले ठिकाने में, उनके करम की वजह से• हम बेज़ार नहीं आते इसमें कभी, नाहीं हम कभी थकते हैं•"

**34:24 जिमेटरिकिल वेल्यु "रशाद खलीफा" की (1230), साथ आयत नंबर (24) देता हैं हमें एक टोटल जो है 19 का एक ज़रप (1230+24= 1254=19x66)•*

काफिरें

36. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, उन्होंने हासिल किया है जहन्नम की आग, जहाँ वो कभी खत्म नहीं होते मौत से, नाहीं आज़ाब कभी बदला जाता है उनके लिए॰ हम इस तरह बदला चुकाते हैं नाकद्रदान को॰

37. वो चिल्लायेंगे उसमें, "हमारे रब, अगर आप हमें बाहर निकालें यहाँ से, हम करेंगे नेककारी वाले काम, बजाये कामों के हम किया करते थे॰" क्या हमने नहीं दिया तुमको एक ज़िंदगी भर का मौका, साथ मुसलसल ताकीदों के उनके लिए जो तवज्जो देते हैं? क्या तुमने नहीं पाया खबरदार करने वाला? इसलिए, चखो *(नतीजों को)*॰ खतावारों के पास उनकी मदद करने के लिए कोई नहीं होगा॰

38. **अल्लाह** हैं आसमानों और ज़मीन के मुसतकबिल के जानने वाले • वो हैं जानने वाले सारे सबसे अंदरूनी ख्यालों के॰

जीतने वाले और हारने वाले

39. वो हें वाहिद जिन्होंने तुमको बनाया वारिसे ज़मीन का॰ उसके बाद, जो कोई चुनता है कुफ्र करने के लिए करता है ऐसा उसके खुदके नुकसान के लिए॰ काफिरों का कुफ्र सिर्फ बढ़ाता है उनके रब की नफरत उनकी तरफ॰ काफिरों का कुफ्र डुबोता है उनको और गहरे नुकसान में॰

40. कहो, "जांचो बुतों को जिनको तुमने कायम किया है **अल्लाह** के सिवाए; दिखाओ मुझको क्या पैदा किया है उन्होंने ज़मीन पर॰" क्या उनके पास है कोई साझेदारी आसमानों में? क्या हमने दिया है उनको एक किताब जिसमें नहीं है कोई शक? वाकई, जो खतावारे वादा करते हैं एक दूसरे को एक धोखे से ज़्यादा कुछ नहीं॰

41. **अल्लाह** हैं वाहिद जो थामते हैं आसमानों और ज़मीन को, ताके वो फनाह न हो जायें॰ अगर कोई दूसरा उसे थामे, वो यकीनन फनाह हो जायेगा॰ वो हैं रहम वाले, माफ करने वाले॰

उनको आज़माईश में डालते हुए

42. उन्होंने संजीदगी से **अल्लाह** की कसम खाई कि अगर एक खबरदार करने वाला जाता उनकी तरफ, वो होते बेहतर हिदायतयाफ्ता एक खास जमात के मुकाबले! बहेरहाल, अबकी जब खबरदार करने वाला वाकई आया उनकी तरफ, उसने सिर्फ डुबो दिया उनको नफरत की और गहराई में॰

43. उन्होंने ज़मीन पर तकब्बुर, और बुरी साज़िश करने को चुना, और बुरी साज़िशें सिर्फ उल्टा नतीजा देती है उनको जो उन्हें बनाते हैं॰ क्या उनको फिर उम्मीद करनी चाहिए कुछ अंजाम उनके सिवा जिन्होंने वैसी चीज़ों को किया माज़ी में? तुम पाओगे कि **अल्लाह** का निज़ाम नहीं है कभी बदलने के काबिल; तुम पाओगे की **अल्लाह** का निज़ाम है अटल॰

44. क्या वो नहीं फिरे ज़मीन पर और ध्यान दिया नतीज़ों को उनके लिए जो उनसे पहले आये? वो थे उनसे भी ज़्यादा ताकतवर॰ कुछ नहीं छुपाया जा सकता है **अल्लाह** से आसमानों में, नाहीं ज़मीन पर॰ वो हैं सब कुछ जानने वाले, कादिरे मुतलक॰

45. अगर **अल्लाह** सज़ा दें लोगों को उनके गुनाहों के लिए, वो नहीं छोड़ेंगे एक भी खलक ज़मीन पर॰ लेकिन वो मोहलत देते हैं उनको एक पहले से तय किये गये दरमियानी वक्त के लिए॰ जब उनका दरमियानी वक्त हो जाता है पूरा, फिर **अल्लाह** हैं उनके बंदों के देखने वाले॰

****

सुरह 36: य॰ स॰ (या सीन)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. य॰ स॰*

2. और कुरान जो भरा है हिकमत से॰

**36:1 देखें अपेन्डिक्स 1 इन इनिशीयलों कि तफसील की गई वज़ाहत के लिए॰*

3. बिला शक, तुम *(रशाद)* हो रसूलों में से एक॰*

4. एक सीधी राह पर॰

5. यह वही है कादिरे मुतलक, सबसे रहम वाले की तरफ से॰

6. खबरदार करने के लिए लोगों को जिनके वालिदैन कभी खबरदार नहीं किये गये थे, और इसलिए, वो हैं बेखबर॰

7. ये पहले से तय किया गया है कि उनमें से ज़्यादातर ईमान नहीं रखते॰

8. इसलिए कि हम रखते हैं ज़ंज़ीरों को उनके गर्दनों के इर्दगिर्द, उनके टोड़ियों तक॰ इस वजह से, वो बंद हो जाते हैं उनके कुफ़्र में॰

9. और हम रखते हैं एक आड़ उनके सामने, और एक आड़ उनके पीछे, और इसतरह, हम उनको पर्दा कर देते हैं; वो कभी नहीं देख सकते॰

10. यह एक जैसा है चाहे तुम उनको खबरदार करो या न करो, वो कभी ईमान नहीं ला सकते॰*

11. तुम तवज्जो दिये जाओगे सिर्फ उनकी तरफ से जो बरकरार रखते हैं इस पैगाम को, और सबसे करम वाले का एहतराम करते हैं—जब वो अकेले होते हैं उनकी तन्हाई में तब भी॰ दो उनको अच्छी खबरें मगफरत और एक फरागदिली वाले बदले का॰

12. हम यकीनन दोबारा ज़िंदा करेंगे मुर्दे को, और हमने दर्ज कर रखा है सारी चीज़ें उन्होंने किया है इस ज़िंदगी में, साथ साथ नतीजे जो जारी रहते हैं उनके मरने के बाद॰ हर चीज़ हमने गिना है एक जबरदस्त दफ्तर में॰

रसूलों को ठुकराना:
*एक अफसोसनाक इंसानी फितरत**

13. बयान करो उनके लिए एक कौम में लोगों की मिसाल जिसने पाया रसूलों को॰

14. जब हमने भेजा उनकी तरफ दो *(रसूलों)* को, उन्होंने उन में कुफ़्र किया॰ फिर हमने मदद की उनकी एक तीसरे से॰ उन्होंने कहा, "हम हैं *(अल्लाह के)* रसूलें तुम्हारी तरफ॰"

15. उन्होंने कहा, "तुम हमारी तरह एक इंसानों से ज़्यादा कुछ नहीं हो॰ सबसे करम वाले ने नहीं भेजा है नीचे कुछ॰ तुम हो झूठे॰"

16. उन्होंने कहा, "हमारे रब जानते हैं कि हम भेजे गये है तुम्हारी तरफ॰

17. "हमारा सिर्फ मकसद है पैगाम पहुँचाना॰"

18. उन्होंने कहा, "हम समझते हैं तुम्हें बुरी अलामतें॰ जब तक तुम बाज़ न आओ, हम यकीनन तुम को पत्थर मारेंगे, या अज़ियत देंगे तुम्हें दर्दनाक आज़ाब से॰"

19. उन्होंने कहा, "तुम्हारी अलामत वाबस्ता होती है तुम्हारे जवाब पर, अबकी जब तुम याद दिलाये जा चुके हो॰ वाकई, तुम हो खता करने वाले लोग॰"

20. एक आदमी आया शहर के दूसरी तरफ से, कहते हुए, "ऐ मेरे लोगों, रसूलों की पैरवी करो॰

21. "पैरवी करो उनकी जो नहीं मांगते तुमसे किसी मज़दूरी के लिए, और हैं हिदायतयाफ्ता॰

22. "मुझे क्यों उस वाहिद की इबादत नहीं करनी चाहिए जिन्होंने शुरू किया मुझको, और उनकी तरफ है तुम्हारा आखिरकार लौटना?

23. "क्या मैं कायम करूँ उनके सिवाए खुदाओं को? अगर सबसे करम वाले चाहे कोई तकलीफ मेरे लिए, उनकी शिफाअत मदद नहीं कर सकती कभी मेरी ज़रा सा भी, नाहीं वो मुझे बचा सकते हैं॰

24. "उस सूरत में, मैं होऊंगा पूरी तरह गुमराह॰

**36:3 देखें अपेन्डिक्स 2 और 26 नाकाबिले रद जिस्मानी सबूत के लिए॰*

**36:10 हर कोई पहले से मोहर लगाया गया है एक ईमानवाला या एक काफिर जैसा॰ देखें अपेन्डिक्स 14॰*

**36:13-27 अल्लाह के रसूलों के पास है सबूत, वकालत करते हैं सिर्फ अल्लाह की, और नहीं पूछते हैं पैसे के लिए॰*

25. “मैं ईमान लाया हूँ तुम्हारे रब में; बराये करम मेरी सुनो॰”

नेककार जाते हैं
*सीधे जन्नत को**

26. *(उसके मौत के वक्त)* उससे कहा गया था, “दाखिल हो जन्नत में॰” उसने कहा, “ओह, काश मेरे लोग जानते॰

27. “कि मेरे रब ने मुझे किया है माफ, और बनाया मुझे काबिले इज़्जत॰”

28. हमने नहीं भेजा नीचे उसके लोगों कि तरफ, उसके बाद, लश्करें आसमान से; हमे ज़रूरत नहीं थी उनको नीचे भेजने की॰

29. उसे लगा सिर्फ एक मार, जिससे वो बेहरकत कर दिये गये थे॰

मज़ाक उड़ाना रसूलों का:
*एक अफसोसनाक इंसानी फितरत**

30. कितनी अफसोसज़दा है लोगों कि हालत! जब भी एक रसूल गया उनकी तरफ, उन्होंने हर बार उसका मज़ाक उड़ाया॰

31. क्या उन्होंने नहीं देखा हमने कितनी नस्लों को फनाह किया उनसे पहले, और कैसे वो कभी नहीं लौटे उनकी तरफ?

32. उनमें से हर कोई हाज़िर किया जायेगा हमारे सामने॰

अल्लाह की निशानियाँ

33. एक निशानी उनके लिए है मुर्दा ज़मीन: हम उसे दोबारा ज़िंदा करते हैं और पैदा करते हैं उससे अनाजे उनके खाने के लिए॰

34. हम उगाते हैं उसमें बागें खजूर के नख्लों, और अंगूरों के, और हम चश्मों को फूट निकलने देते हैं उसमें से बाहर॰

35. यह है उनको फलें मुहय्या करने के लिए, और उनके खुदके हाथों से बनाने देने के लिए जो कुछ वो चाहते हैं॰ क्या वो शुक्रगुज़ार होंगे?

36. बड़ाई हो वाहिद की जिन्होंने पैदा किया सारे किस्मों के पौधों को ज़मीन से, उसी तरह उनको खुद को, और यहाँ तक दूसरी मखलूके जिनको वो जानते भी नहीं॰

37. दूसरी निशानी है उनके लिए रात: हम निकालते हैं रौशनी को उससे, जिसपर वो हैं अंधेरे में॰

38. सूरज डूबता है एक खास मकाम में, कादिरे मुतलक, सब कुछ जानने वाले की नक्शकारी के मुताबिक॰

39. चाँद हमने बनाया मरहलों में नज़र आने के लिए, जब तक वो बन नहीं जाता एक पुराने मोड़े गये गिलाफ कि तरह॰

40. सूरज कभी नहीं पकड़ सकता चाँद को—रात और दिन कभी राह से नहीं हटते—उनमें से हर एक तैरता है उसके खुदके दायरे में॰

एजाद सबसे पहली जहाज़ की

41. उनके लिए दूसरी निशानी है कि हमने लिया उनके पुरखों को लदी कश्ती पर॰

42. फिर पैदा किया वैसा ही उनके सवारी करने के लिए॰

43. अगर हम चाहते हमने डुबो दिया होता उनको, ताके उनका चिल्लाना सुनाई नहीं देता, नाहीं वो बचाये जा सकते॰

44. बलिके, हमने बरसाया उनको रहमत के साथ, और मज़ा लेने दिया उनको कुछ अरसे के लिए॰

45. इसके बावजूद, जब उनसे कहा जाता है, “सीखो तुम्हारे माज़ी से, तुम्हारे मुस्तकबिल के लिए नेककारी करने के लिए, ताके तुम रहमत हासिल कर सको॰”

**36:26 नेककार असल में मरते नहीं; वो सिर्फ आगे बड़ते हैं उसी जन्नत की तरफ जहाँ आदम और हव्वा रहे थे॰ वो जुड़ते हैं नबियों, बुर्ज़गों, और शहीदों के साथ एक काम करती और खुशगवार ज़िंदगी में (देखें अप॰ 17)॰*

**36:30 अगर रसूल पेश करता है पुख्ता सबूत रिसालत का, वकालत करता है सिर्फ अल्लाह कि इबादत की, और नहीं पूछता है हमसे पैसे के लिए, हमें क्यों ईमान नहीं लाना चाहिए? (देखें अपेन्डिक्स 2)*

46. चाहे किसी भी किस्म का सबूत दिया जाता है उनको उनके रब की तरफ से, वो मुसलसल तौर पर उसे नज़रअंदाज़ करते हैं॰

47. जब उनसे कहा जाता है, "तुम्हारे लिए **अल्लाह** की नियामतों से दो," वो जो कुफ्र करते हैं कहते हैं उनको जो ईमान रखते हैं, "हम क्यों दें उन्हें जिनको **अल्लाह** खिला सकते हैं, अगर वो ऐसा चाहें? तुम हो वाकई दूर बहके हुए॰"

48. वो यह भी दावा करते हैं, "वो वादा कब गुज़रेगा, अगर तुम हो सच्चे?"

49. वो सिर्फ देखेंगे एक मार जो उनको मजबूर कर देगा, जब वो बहेस कर रहे होंगे॰

50. उनके पास यहाँ तक के वक्त नहीं होगा एक वसीहत बनाने के लिए, नाहीं वो होंगे काबिल उनके लोगों कि तरफ लौटने के लिए॰

51. सुर फूंका जायेगा, जिसपर वो निकलेंगे कब्र से और जायेंगे उनके रब की तरफ॰

52. वो कहेंगे, "हाय हो हमारे लिए॰ किसने हमें दोबारा ज़िंदा किया हमारी मौत से? यह है जो सबसे करम वाले ने किया है वादा॰ रसूलें थे सही॰"

53. उसे लगेगा सिर्फ एक मार, जिसपर वो हाज़िर किये जायेंगे हमारे सामने॰

54. उस दिन पर, कोई रूह पर गलत नहीं किया जायेगा ज़रासा भी॰ तुम्हें मुआवज़ा दिया जायेगा सही सही जो कुछ तुमने किया उसके लिए॰

55. जन्नत के रहने वाले होंगे, उस दिन पर, खुशी से मसरूफ॰

56. वो रहते हैं उनके जोड़ों के साथ खूबसूरत छांव में, मज़ा लेते हुए आरामदेह बिछौनों का॰

57. उनके पास होंगे फलें उसमें; उनके पास होगा जो कुछ वो चाहें॰

58. अमन की मुबारकबादियाँ एक सबसे रहमवाले रब की तरफ से॰

59. जहाँ तक तुम, ऐ मुजरिमों, तुम अलग कर दिये जाओगे॰

शैतान है दूसरा रास्ता

60. क्या मैने तुमसे वादा नहीं किया, ऐ बनी आदम, कि तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए शैतान की? कि वो है तुम्हारा सबसे संगीन दूश्मन?

61. और यह कि तुम्हें सिर्फ मेरी इबादत करनी चाहिए? यह है सही रास्ता॰

62. उसने गुमराह किया है तुम में से कईयों को॰ क्या तुमने नहीं रखा कोई समझ?

63. यह है जहन्नम जो वादा किया गया था तुम्हारे लिए॰

64. तुम जलाये जाओगे आज उसमें, तुम्हारे कुफ्र का एक नतीजा जैसा॰

65. उस दिन पर हम बंद कर देंगे उनके मुंहों को; उनके हाथें और पैरें गवाही देंगे हर चीज़ के लिए जो उन्होंने किया था॰

66. अगर हम चाहें, हम पर्दा कर सकते हैं उनकी आँखों को और, इस वजह से, जब वो तलाश करते हैं रास्ते की, वो नहीं देखेंगे॰

67. अगर हम चाहें, हम जमा सकते हैं उनको जगह में; इस तरह, वो नाहीं बढ़ सकते हैं आगे, नाहीं जा सकते हैं पीछे॰

68. जिस किसी को हम इजाज़त देते हैं एक लंबे वक्त के लिए ज़िंदा रहने के लिए, हम लौटा देते हैं उसे कमज़ोरी की तरफ॰ क्या वो नहीं समझते?

69. जो हमने सिखाया उसे *(रसूल को)* नहीं थी शायरी, नाहीं है वो *(एक शायर)*॰ यह है बलिके एक ज़बरदस्त सबूत,* और एक गहरा कुरान॰

36:69 लफ्ज़ "ज़िक्र" बार बार मुखातिब करता है कुरान के बड़े रियाज़ी कोड कि तरफ॰ जो है यकीनन नाहीं अदबी, नाही शायरी॰ बराये करम जायज़ा लें 38:1,8; 15:6,9; 16:44; 21:2,24; 26:5; और 36:11॰

70. नसीहत करने के लिए उनको जो हैं ज़िंदा, और काफिरों को फाश करने के लिए॰

71. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने पैदा किया उनके लिए, हमारे खुदके हाथों से, मवेशी जिनके वो हैं मालिक?

72. और हमने मध्धम किया उनको उनके लिए; कुछ कि वो सवारी करते हैं, और कुछ को वो खाते हैं॰

73. वो हासिल करते हैं दूसरे फायदों को उनसे, साथ साथ पीने की चीज़ें॰ क्या वो कद्रदान नहीं होंगे?

बेताकत बुतें

74. वो कायम करते हैं **अल्लाह** के सिवाए दूसरे खुदाओं को, शायद वो हो सकते हैं मददगार उनके लिए!

75. बलिके, वो कभी मदद नहीं कर सकते उनकी; वो खत्म होते हैं खिदमत करते हुए उनकी मनसूब किये गये सिपाहियों जैसे॰

76. इसलिए, गमज़दा न हो उनके बातों कि वजह से॰ हम हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें वो छिपाते हैं और सारी चीज़ें वो ऐलान करते हैं॰

77. क्या इंसान नहीं देखता कि हमने पैदा किया उसे एक छोटी बूंद से, फिर वो बदल जाता है एक संगीन दुश्मन में?

78. वो उठाता है हमारी तरफ एक सवाल—जबकी भूलते हुए उसकी पहली पैदाईश—"कौन दोबारा ज़िंदा कर सकता है हड्डीयों को इसके बाद कि वो सड़ गये थे?"

79. कहो, "वाहिद जिन्होंने सबसे पहले तो शुरू किया उनको करेंगे ज़िंदा उन्हें दोबारा॰ वो हैं पूरी तरह वाकिफ हर खिलकत से॰"

80. वो हैं वाहिद जो पैदा करते हैं तुम्हारे लिए, हरे दरख्तों से, इंधन जिसे तुम जलाते हो रौशनी के लिए॰

81. क्या वाहिद जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को काबिल नहीं वैसा ही दोबारा पैदा करने के लिए? हाँ बिल्कुल; वो हैं पैदा करने वाले, सब कुछ जानने वाले॰

82. किसी हुक्म को पूरा करने के लिए उनको सिर्फ ज़रूरत पड़ती है उसे कहना, "हो," और वो हो जाता है॰

83. इसलिए, बड़ाई हो वाहिद की जिनके हाथ में है बादशाहत सारी चीज़ों पर, और उनकी तरफ तुम लौटाये जाओगे॰*

****

सुरह 37: इंतेज़ाम करने वाले (अल सफ्फात)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. इंतज़ाम करने वाले कतारों में॰

2. इल्ज़ाम देने वाले उनके जिनको इल्ज़ाम दिया जाना है॰

3. पैगामों के पढ़ने वाले॰

4. तुम्हारे खुदा हैं सिर्फ एक॰

5. रब आसमानों और ज़मीन के, और सारी चीज़ें उनके दरमियान, और रब मशरिकों के॰*

6. हमने सजाया है सबसे निचले आसमान को सजे हुए नजमों के साथ॰*

7. हमने हिफाज़त की उसकी हर बुरे शैतान से॰

8. वो कभी जासूसी नहीं कर सकते ऊंचे माशरे पर; वो गोलाबारी किये जाते हैं हर तरफ से॰

**36:83 यह काबिले गौर है कि जिमेटरिकल वेल्यू "रशाद" का (505), साथ जिमेटरिकल वेल्यू "खलीफा" का (725), साथ सुरेह नंबर (36), साथ आयतों का नंबर (83), पैदा करता है एक जमा जो है एक 19 का ज़रप (505+725+36+83= 1349= 19x71)॰ इसके अलावा, सुरेह 36 है 19 वां नंबर 29 इनिशीयल किये गये सूरतों के बीच॰*

**37:5 हर आसमानी चीज़ निकलती है नजम ज़मीन पर, और डूबती है॰ हर निकलने को कहा जाता है "मशरिक॰"*

9. वो मलामत किये गये हैं; उन्होंने हासिल किया है एक दाईम आज़ाब•

10. अगर उनमें से कोई जुर्रत करता है बाहरी हदों को लपकने की, वो मारा जाता है एक हैबतनाक गोले से•

11. पूछो उनसे, "क्या वो ज़्यादा मुश्किल है पैदा किये जाने के लिए, या दूसरी खिलकतें?" हमने पैदा किया उनको गीली मिट्टी से•

12. जबकी तुम हो हैरतज़दा, वो उड़ाते हैं मज़ाक•

13. जब याद दिलाया जाता है, वो तवज्जो नहीं लेते•

14. जब वो देखते हैं सबूत, वो खिल्ली उड़ाते हैं उसकी•

15. वो कहते हैं, "यह है ज़ाहिरी तौर पर जादू!

16. "इसके बाद कि हम मर जायें और बन जायें धूल और हड्डीयाँ, क्या हम दोबारा ज़िंदा किये जाते हैं?

17. "हमारे पुराने पुरखें भी?"

18. कहो, "हाँ, तुम जबरन हाज़िर किये जाओगे•"

19. उसे लगता है सिर्फ एक ठोक, जिसपर वो *(खड़े होते हैं)* देखते हुए•

20. वो कहेंगे, "हाय हो हमको; यह है इंसाफ का दिन•"

21. यह है फैसले का दिन जिसमें तुम कुफ्र किया करते थे•

22. हाज़िर करो खतावारों को, और उनके जोड़ों को, और बुतें जिनकी उन्होंने इबादत की

23. **अल्लाह** के सिवाए, और हिदायत करो उनकी जहन्नम के रास्ते की तरफ•

24. रोको उनको, और पूछो उनको:

25. "तुम एक दूसरे कि मदद क्यों नहीं करते?"

26. वो होंगे, उस दिन पर, पूरी तरह फरमानबरदारी करते हुए•

आपसी
इल्ज़ाम लगाना

27. वो आयेंगे एक दूसरे की तरफ, सवाल करते हुए और एक दूसरे को इल्ज़ाम लगाते हुए•

28. वो कहेंगे *(उनके रहबरों को),* "तुम आया करते थे हमारी तरफ दाहिनी तरफ से•"

29. वो जवाब देंगे, "वो तुम हो जो नही थे ईमान वाले•

30. "हमारे पास नहीं थी कोई ताकत तुमपर; वो तुम हो जो थे बदकार•

31. "हमने बराबरी से हासिल किया हमारे रब का इंसाफ; अब हमें झेलना होगा•

32. "हमने बहकाया तुमको, सिर्फ इसलिए कि हम थे गुमराह•"

33. इसतरह, एक साथ वो सारे हिस्सा लेंगे आज़ाब का उस दिन पर•

34. इस तरह हम बदला चुकाते हैं मुजरिम को•

पहला हुक्म

35. जब उनसे कहा गया था, "*ला इलाहा इल अल्लाह* [कोई खुदा नहीं सिवाए **अल्लाह** के]," वो बन गये मगरूर•

36. उन्होंने कहा, "क्या हम छोड़ दें हमारे खुदाओं को एक दिवाने शायर के वासते?"

37. हकीकत में, वो लाया है सच, और तसदीक किया है रूसूलों की•

38. बिला शक, तुम चखोगे सबसे दर्दनाक आज़ाब•

39. तुम बदला दिये जाते हो सिर्फ उसके लिए जो तुमने किया है•

40. सिर्फ **अल्लाह** के बंदे जो पूरी तरह सिर्फ उनकी बंदगी करते हैं *(बचाये जायेंगे)*•

41. वो हकदार हुए हैं नियामतों के जो मखसूस किये गये हैं खासतौर से उनके लिए•

42. सारे किस्मों के फलें• उनकी इज़्जत की जायेगी•

43. मुसर्रत के बागों में•

44. एक दूसरे के करीब बिछौनों पर•

45. प्याले खालिस शरबतों के पेश किये जायेंगे उनके लिए•

46. साफ और ज़ायकेदार पीनेवालों के लिए•

47. कभी खराब नहीं किये गये, और कभी खाली न किये गये•

48. उनके साथ होंगे शानदार साथियें•

49. हिफाजत किये गये नाजुक अंड़ों कि तरह•

जन्नत के रहने वाले मुलाकात करते हैं
जहन्नम के रहनेवालों से

50. वो आयेंगे एक दूसरे कि तरफ, और बात करेंगे एक दूसरे के साथ•

51. उनमें से एक कहेगा, “मेरे पास हुआ करता था एक दोस्त•

52. “वो मज़ाक उड़ाया करता था: ‘क्या तुम मानते हो यह सब?

53. “ ‘इसके बाद हम मर जायें और बदल जायें धूल और हड्डीयों में, क्या हम पुकारे जायेंगे हिसाब के लिए?’”

54. वो कहेगा, “ज़रा डालो एक नज़र!”

55. जब वो देखता है, वो देखेगा उसके दोस्त को जहन्नम के दिल में•*

56. वो *(जायेगा उसकी तरफ और)* कहेगा, “**अल्लाह** की कसम, तुमने तकरीबन बरबाद कर दिया मुझको•

57. “अगर वो मेरे रब की रहमत के लिए न होता, मैं होता तुम्हारे साथ अब•

58. “*(क्या तुम अब भी मानते हो)* कि हम मरते हैं,

59. “सिर्फ पहली मौत, और हम कभी नहीं पाते कोई बदला?"

मगफरत: सबसे बड़ी फतेह

60. ऐसी है सबसे बड़ी फतेह•

61. यह है जिसके लिए हर कामकरने वाले को चाहिए काम करे•

62. क्या यह है एक बेहतर मुकद्दर, या दरख्त कड़वेपन का?

63. हमने बनाया है उसे एक सज़ा खतावारों के लिए•

64. वो है एक दरख्त जो उगता है जहन्नम के दिल में•

65. उसके फूलें दिखते हैं शयातीनों के सरों जैसे•

66. वो खायेंगे उससे जब तक उनके पेटें भर नहीं जाते•

67. फिर वो भरेंगे उसे एक जहन्नमी पीने की चीज़ से•

68. फिर वो लौटेंगे जहन्नम कि तरफ•

उन्होंने पैरवी की
उनके वालिदैन की आँख बंद करके

69. उन्होंने पाया उनके वालिदैन को गुमराह•

70. और वो आँख बंद करके चले उनके नक्शोकदम पर•

71. ज़्यादातर पिछली नस्लों से गुमराह हुए हैं उसी अंदाज़ में•

72. हमने भेजा है उनकी तरफ खबरदार करने वालों को•

73. वो जिनको खबरदार किया गया था उनके लिए नतीजों को ध्यान दो•

74. सिर्फ **अल्लाह** के बंदे जो पूरी तरह सिर्फ उनकी बंदगी करते हैं *(बचाये जाते हैं)*•

नुह

75. इसतरह, नुह ने हमे पुकारा, और हम थे सबसे अच्छे जवाब देने वाले•

76. हमने बचाया उसे और उसके कुम्बे को बड़ी मुसीबत से•

77. हमने बनाया उसके साथियों को बचाये जाने वाले•

78. और हमने महफूज़ रखा उसकी तारीख बाद वाली नस्लों के लिए•

79. लोगों में से अमन हो नुह पर•

**37:55 लोग जो पहुँचते हैं जन्नत को काबिल होंगे उनके रिश्तेदारों और दोस्तों से मिलने के लिए जहन्नम में, बगैर बुरे नतीजों के• अगली ज़िंदगी में, कोई भी नीचे की तरफ बढ़ सकता है, लेकिन ऊपर कि तरफ एक खास हद के पार नहीं• हद तय किया जाता है किसी के बढ़ने का दरजा और तरक्की पर (अप• 5)•*

80. हम इस तरह इनाम देते हैं नेककारों को•

81. वो है हमारे ईमान रखने वाले बंदों में से एक•

82. हमने डुबो दिया दूसरे सारों को•

इब्राहीम

83. उसकी पैरवी करने वालों में से था इब्राहीम•

84. वो आया उसके रब की तरफ पूरे दिल से•

85. उसने उसके वालिद से और उसके लोगों से कहा, "तुम क्या इबादत कर रहे हो?

86. "क्या ये बनाये हुए खुदाऐं हैं, जिनको तुम चाहते हो, बजाये **अल्लाह** के?

87. "तुम क्या सोचते हो कायनात के रब के बारे में?"

88. उसने गौर से देखा सितारों कि तरफ•

89. फिर हार मान लिया और कहा, "मैं थक चुका हूँ इस से!"

90. वो पलट गये उसकी तरफ से•

91. वो फिर पलटा उनके बुतों पर, कहते हुए, "क्या तुम खाना चाहोगे?

92. "तुम क्यों बात नहीं करते?

93. उसने फिर उनको तबाह कर दिया•

94. वो गये उसकी तरफ बड़े गुस्से में•

95. उसने कहा, "तुम कैसे इबादत कर सकते हो उसकी जिसको तराशते हो?

96. "जबकी **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया है, और सारी चीज़ें तुम बनाते हो!"

97. उन्होंने कहा, "चले हम तामीर करें एक बड़ी आग, और फेंके उसे उसमें•"

98. उन्होंने साज़िश किया उसके खिलाफ, लेकिन हमने बनाया उनको हारने वाले•"

99. उसने कहा, "मैं जा रहा हूँ मेरे रब की तरफ; वो हिदायत करेंगे मेरी•"

100. "मेरे रब, अता करिये मुझे नेक बच्चे•"

101. हमने दिया उसे खुश खबरी एक अच्छे बच्चे की•

*शैतानी सपना**

102. जब वो काफी बड़ा हो गया उसके साथ काम करने के लिए, उसने कहा, "मेरे बेटे, मैं देखता हूँ एक सपने में की मैं तुम्हें कुरबान कर रहा हूँ• तुम क्या सोचते हो?" उसने कहा, "ऐ मेरे वालिद, करिये जो आपको हुक्म किया गया है करने के लिए• आप पायेंगे मुझ को, **अल्लाह** ने चाहा, सब्र करने वाला•"

103. उन दोनों ने अपने आप को हवाले किया, और उसने उसके माथे को नीचे रखा *(उसे कुरबान करने के लिए)*•

अल्लाह दखलअंदाज़ी करते हैं बचाने के लिए इब्राहीम और इस्माईल को

104. हमने पुकारा उसे: "ऐ इब्राहीम•

105. "तुमने माना सपने को•" हम इस तरह इनाम देते हैं नेककार को•

106. वो थी वाकई एक सख्त आज़माईश•

107. हमने *(इस्माईल)* को रिहा किया बदलते हुए एक जानवर की कुरबानी से•

108. और हमने महफूज़ रखा उसकी तारीख बाद वाली नस्लों के लिए•

109. अमन हो इब्राहीम पर•

110. हम इस तरह इनाम देते हैं नेककारों को•

111. वो है हमारे ईमान रखने वालों बंदों में से एक•

इसहाक की पैदाईश

112. फिर हमने दिया उसे खुशखबरी इसहाक की पैदाईश के बारे में, नेककार नबीयों में से एक होने के लिए•

113. हमने बक्शा उसे और इसहाक को• उनके नस्लों से, कुछ हैं नेककार, और कुछ हैं बदकार खता करने वाले•

*37:102 सबसे रहम वाले कभी बुराई की वकालत नहीं करते (7:28)• जैसा अय्यूब के साथ, शैतान ने दावा किया की इब्राहीम बहुत ज़्यादा चाहते थे उनके बेटे को, और इजाज़त दिया गया था इब्राहीम को सख्त आज़माईश में डालने के लिए•

मूसा और हारून

114. हमने मूसा और हारून को भी बक्शा•

115. हमने बचाया उनको और उनके लोगों को बड़ी मुसीबत से•

116. हमने मदद की उनकी, जबतक वो जीतने वाले नहीं बन गये•

117. हमने दिया दोनो को गहरी आसमानी किताब•

118. हमने हिदायत किया उनकी सही राह में•

119. हमने महफ़ूज़ रखा उनकी तारीख को बाद वाली नस्लों के लिए•

120. अमन हो मूसा और हारून पर•

121. हम इस तरह इनाम देते हैं नेककारों को•

122. दोनो थे हमारे नेक बंदों में से•

इल्यास

123. इल्यास था रसूलों में से एक•

124. उसने उसके लोगों से कहा, “क्या तुम नेककारी वाले काम नहीं करोगे?

125. “क्या तुम एक मूर्ती कि इबादत करते हो, बजाये आला पैदा करने वाले के?

126. “**अल्लाह**; तुम्हारे रब, और रब तुम्हारे बाप दादाओं के!”

127. उन्होंने उसमें कुफ्र किया• इस वजह से, ज़रूरी था उनको हिसाब के लिए बुलाया जाना•

128. सिर्फ **अल्लाह** के बंदे जो पूरी तरह सिर्फ उनकी बंदगी करते हैं *(बचाये जाते हैं)*•

129. हमने महफ़ूज़ रखा उसकी तारीख बाद वाली नस्लों के लिए•

130. अमन हो इल्यास, और वो सारे इल्यास जैसों पर•

131. हम इस तरह इनाम देते हैं नेककारों को•

132. वो था हमारे ईमानरखने वाले बंदो से एक•

लूत

133. लूत था रसूलों में से एक•

134. हमने बचाया उसे और उसके कुम्बे को•

135. सिर्फ बूढ़ी औरत फनाह कर दी गई थी•

136. हमने दूसरे सारों को फनाह कर दिया•

137. तुम अब भी गुज़रते हो उनके खंडहरों से दिन को•

138. और रात को• क्या तुम समझोगे?

युनुस

139. युनुस था रसूलों में से एक•

140. वो फरार हुआ लदे हुए जहाज़ कि तरफ•

141. उसने बगावत की और इस तरह, वो जुड़ गया हारने वालों के साथ•

142. इस वजह से, मछली ने उसे निगल लिया, और वो खुद था ज़िम्मेदार•

143. अगर वो नहीं चुनता *(अल्लाह पर)* ध्यान देने का,

144. वो रहता उसके पेट में हश्र के दिन तक•

145. हमने फेकवाया उसे रेगिस्तान में, थका हुआ•

146. हमने उगने दिया उसके लिए खाने के काबिल फल का एक दरख्त•

147. फिर हमने भेजा उसकी तरफ एक लाख,* या ज़्यादा•

148. वो ज़रूर ईमान लाये, और हमने उनको इस ज़िंदगी का मज़ा लेने दिया•

149. पूछो उनसे क्या तुम्हारे रब के पास हैं बेटियाँ, जबके उनके पास है बेटे!

150. क्या हमने पैदा किया फरिश्तों को ज़नाने होने के लिए? क्या वो थे उसके गवाह?

**37:147 कुरान बयान करता है 30 नंबरें: 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 19, 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 99, 100, 200, 300, 1000, 2000, 3000, 5000, 50000, और 100000॰ इन नंबरों का जमा है 162146, या 19x8534 (देखें अपेन्डिक्स 1)॰*

2108 *108817*

151. वाकई, वो बेहुदे तौर पर बेअदबी करते हैं जब वो कहते हैं—

152. "**अल्लाह** ने जना है एक बेटा॰" वाकई, वो हैं झूठे॰

153. क्या उन्होंने चुना लड़कियों को लड़कों के बदले?

154. क्या माजरा है तुम्हारे अक्ल के साथ?

काफिरों को मुखातिब करते हुए

155. तुम तवज्जो क्यों नहीं लेते?

156. क्या है तुम्हारे पास कोई सबूत?

157. दिखाओ हमें तुम्हारी किताब, अगर तुम हो सच्चे॰

158. उन्होंने यहाँ तक की एक खास रिश्ते को ऐजाद किया उनके और जिनों के बीच॰ जिनें खुद जानते हैं की वो हैं ताबेदार॰

159. **अल्लाह** की बड़ाई हो; कहीं ऊपर उनके दावों से॰

160. सिर्फ **अल्लाह** के बंदे जो सिर्फ उनकी बंदगी करते हैं *(बचाये जाते हैं)*॰

161. वाकई, तुम और जिसकी तुम इबादत करते हो॰

162. कभी लागू नहीं कर सकते कोई चीज़ उनपर॰

163. सिर्फ तुम जलोगे जहन्नम में॰

फरिश्ते

164. हम में से हर एक के पास है एक खास काम॰

165. हम हैं इंतेज़ाम करने वाले॰

166. हम ने मुनासिब तौर पर *(हमारे रब)* की बड़ाई की है॰

पैरवी करना वालिदैन की आँख बंद करके

167. वो कहा करते थे,

168. "अगर हमने पाया होता सही ताकीदों को हमारे वालिदैन की तरफ से,

169. "हम होते इबादत करने वाले; मनसूब करते हुए सिर्फ **अल्लाह** को॰"

170. लेकिन उन्होंने कुफ्र किया, और वो यकीनन जान जायेंगे॰

जीत रसूलों के लिए लाज़िम

171. हमारा फैसला पहले से मुकर्रर किया गया है हमारे बंदे रसूलों के लिए॰

172. वो हैं यकीनन जीतने वाले॰

173. हमारे सिपाहियें हैं जीतने वाले॰

174. इसलिए नज़रअंदाज़ करो उनको कुछ वक्त के लिए॰

175. निगरानी करो उनकी; वो भी निगरानी करेंगे॰

176. क्या वो ललकारते हैं हमारे आज़ाब को?

177. जब वो मारेगा उनको एक दिन, वो होगा एक अफसोसनाक दिन; उनको अच्छी तरह से ताकीद की गई है॰

178. नज़रअंदाज़ करो उनको कुछ वक्त के लिए॰

179. निगरानी करो उनकी; वो भी निगरानी करेंगे॰

180. बड़ाई हो तुम्हारे रब की, अज़ीम रब; कहीं ऊपर उनके दावों से॰

181. अमन हो रसूलों पर॰

182. तारीफ हो **अल्लाह** की, कायनात के रब॰

****

सुरह 38: स (साद)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. स॰ *(साद)*, * और कुरान जो रखता है सबूत॰**

2. जो कोई कुफ्र करते हैं गिर गये हैं तकब्बुर और नाफरमानी में॰

3. उनसे पहले हमने कई एक नस्ल को फनाह किया॰ उन्होंने पुकारा मदद के लिए; फुज़ूल में॰

*38:1 *यह इनीशियल (साद) 7, 19, और 38 में वाके होता है टोटल 152 दफा, 19x8 (अपेन्डिक्स 1)•*

**38:1 *लफ्ज़ "ज़िक्र" वाज़े किया गया है कुरान से और साफ तौर पर इशारा करता है कुरान के अजूबे रियाज़ी कोड की तरफ• देखें 15:6, 9; 16:44; 21:2, 24; 26:5; और 36:11, 69•*

4. उन्होंने ताज्जुब किया कि एक खबरदार करने वाला आता उनकी तरफ, उनमें से• काफिरों ने कहा, "एक जादूगर; एक झूठा•

5. "क्या उसने बनाया खुदाओं को एक खुदा में? यह है वाकई अजीब•"

6. रहबरों ने ऐलान किया, "जाओ और साबितकदमी से जमे रहो तुम्हारे खुदाओं कि इबादत करने में• यह है जो है ज़रूरी•

7. "हमने कभी नहीं सुना इसके बारे में हमारे वालिदों के मज़हब से• यह है एक झूठ•"

8. "क्या सबूत आया नीचे उसकी तरफ, बजाये हमारे? वाकई, वो शक्की हैं मेरे सबूत के बारे में• वाकई, उन्होंने अब तक नही चखा है मेरा आज़ाब•

9. क्या वो मालिक हैं तुम्हारे रब कादिरे मुतलक, अता करने वाले, की रहमत के खज़ानों के?

10. क्या वो रखते हैं बादशाहत आसमानों और ज़मीन की, और सारी चीज़ें उनके दरमियान? उन्हें खुदकी मदद करने दो•

11. बलिके, जो कुछ ताकते वो जमा कर सकते हैं—उनकी सारी जमातें अगर एक साथ जमा भी हो जायें तब भी—हरा दिये जायेंगे•

12. उनसे पहले कुफ्र करने वाले लोग थे नुह, आद, और ताकतवर फिरऔन के•

13. इसके अलावा, तमूद, लूत के लोग, जंगल *(मिदयन के)* रहने वाले; वो थे मुखालिफत करने वाले•

14. उनमें से हर एक ने रसूलों में कुफ्र किया और इस तरह, मेरा आज़ाब था अटल•

15. यह लोग उम्मीद कर सकते हैं सिर्फ एक वार, जिस से वो कभी संभल नहीं सकते•

16. उन्होंने ललकारा; "हमारे रब, आप क्यों जल्दी नहीं करते आज़ाब हमारे लिए, हिसाब किये जाने के दिन से पहले•"

17. सब्र करो उनकी बातों की सूरत में, और याद करो हमारे बंदे दाऊद को, सूझ बूझ वाला; वो था ताबेदार•

18. हमने हवाले किया उसकी खिदमत में पहाड़ों को, बड़ाई करते हुए उसके साथ रात और दिन•

19. इसके अलावा परिंदें हवाले किये गये थे उसकी खिदमत के लिए; सारे थे उसके ताबेदार•

20. हमने मज़बूत किया उसकी बादशाहत, और बक्शा उसे हिकमत और अच्छी अक्ल के साथ•

21. क्या तुमने झगड़ते हुए मर्दों की खबर पाई है जो चुपके से घुस गये उसके इबादतगाह में?

22. जब वो दाखिल हुए उसके कमरे में, वो चौंक गया• उन्होंने कहा, खौफज़दा न हो• हम झगड़ रहे हैं एक दूसरे से, और हम चाहते हैं तुम्हारा साफ इंसाफ• हमे गलत न करिये, और हिदायत करिये हमे सही राह में•

23. "यह भाई मेरा मालिक है निन्नेयानवे* भेड़ का, जबकी मैं मालिक एक भेड़ का• वो चाहता है मेरे भेड़ को उसके साथ मिलाने का, और जारी रहता है मुझपर ज़ोर डालने के लिए•"

*38:23 *यह है सिर्फ जगह जहाँ नंबर 99 वाके होता है• तीस मुखतलिफ नंबरें बयान किये गये हैं कुरान में, और उनका टोटल आता है 162146, 19x8534 को• देखें अपेन्डिक्स 1•*

दाऊद का सबक आमोज़ तकवा

24. उसने कहा, "वो हो रहा है बेइंसाफ तुम्हारी तरफ पूछते हुए तुम्हारे भेड़ को उसके साथ मिलाने के लिए॰ ज़्यादातर लोग जो मिलाते हैं उनकी मिलकियतों को एक दूसरे के साथ नाइंसाफी से बरताव करते हैं, सिवाए उनके जो ईमान रखते हैं और नेककारी करते हैं, और ये हैं कितने कम॰" उसके बाद, दाऊद ने सोचा क्या उसने सहीं इंसाफ किया॰ उसने सोचा कि हम उसकी आज़माईश कर रहे थे॰ उसने फिर इल्तेजा की उसके रब से माफी के लिए, झुक गया, और तौबा किया॰*

25. हमने माफ किया उसे इस मामले में॰ हमने अता किया है उसे एक इज़्जत का मकाम हमारे पास, और एक खूबसूरत ठिकाना॰

26. ऐ दाऊद, हमने बनाया है तुम्हे एक हाकिम ज़मीन पर॰ इसलिए, तुम्हे लोगों के बीच बराबरी से इंसाफ करना चाहिए, और न चलो तुम्हारे खुद के राय पर, ताके वो फेर न दे तुम्हें **अल्लाह** के रास्ते से॰ यकीनन, जो कोई बहकते हैं **अल्लाह** कि राह से पाते हैं सख्त आज़ाब हिसाब किये जाने के दिन को भूलने के लिए॰

27. हमने नहीं पैदा किया आसमान और ज़मीन, और सारी चीज़ें उनके दरमियान, फुज़ूल में॰ ऐसा है सोचना उनका जो कुफ्र करते हैं॰ इसलिए, हाय हो उनके लिए जो कुफ्र करते हैं; वो झेलेंगे जहन्नम में॰

28. जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं क्या हम उनके साथ बरताव करें जैसा हम बरताव करते हैं उनके साथ जो बुराई करते हैं ज़मीन पर? क्या हम बरताव करें नेककार से जैसा हम बरताव करते हैं बदकार के साथ?

29. यह है एक आसमानी किताब जो हमने भेजा नीचे तुम्हारी तरफ, जो है मुकद्दस—शायद वो गौर करें उसकी आयतों पर॰ जो कोई अक्ल रखते हैं तवज्जो लेंगे॰

सुलैमान की
सबक आमोज़ बंदगी

30. दाऊद को हमने अता किया सुलैमान; एक अच्छा और ताबेदार बंदा॰

31. एक दिन वो मसरूफ हो गया खूबसूरत घोड़ों के साथ, जब तक रात नहीं पड़ गई॰

32. उसने फिर कहा, "मेरे रब कि इबादत करने के मज़े से ज़्यादा मैंने लुत्फ उठाया जिस्मानी चीज़ों का, जब तक सूरज जा चुका था॰*

33. "लाओ उनको वापस॰" *(विदा करने के लिए,)* उसने मसला उनके पैरों और गर्दनों को॰

34. हमने इस तरह सुलैमान को डाला आज़माईश में; हमने बक्शा उसे ज़बरदस्त जिस्मानी दौलत से, लेकिन उसने साबित कदमी से फरमानबरदारी की॰*

35. उसने कहा, "मेरे रब, माफ करिये मुझे, और मुझे अता करिये एक बादशाहत कभी हासिल न की गई किसी और की तरफ से॰ आप हैं अता करने वाले॰"

36. हमने *(जवाब दिया उसकी दुआ का और)* हवाले किया हवा को उसकी मर्ज़ी पर, उंडेलते हुए बारिश जहाँ वो चाहता था॰

37. और शैताने, तामीर करते और गोता लगाते॰
38. दूसरे रखे गये थे उसकी मर्ज़ी पर॰

39. "यह है हमारी नियामत तुम्हारे लिए; तुम दे सकते हो फरागदिली से, या थामे रहो बगैर हदों के॰"

**38:24 इस साफ मिसाल में, 99 एक तरफ मुकाबले में 1 दूसरी तरफ॰ दाऊद के इंतेहाई फिक्र सही इंसाफ करने के लिए सबब बना उसे माफी मांगने का॰ क्या हम हैं इतने फिक्रमंद?*

**38:32 सुलैमान ने खो दिया उसकी असर की नमाज़ उसके घोड़ों की वजह से॰ शैतान के मुमकिन दावे को ज़ाया करने के लिए कि सुलैमान चाहता था उसके घोड़ों को अल्लाह को चाहने से ज़्यादा, उसने आज़ाद कर दिया उसके घोड़ो को॰*

*38:34 और 41 सुलैमान और अय्यूब नुमाइंदगी करते हैं आज़मायें जाने के किस्मों के दोनों किनारें॰ हम डाले जाते हैं आज़माईश को दौलत, सेहत, या उनकी कमी के ज़रिये, देखने के लिए की हम इबादत करते हैं सिर्फ अल्लाह की सारे हालातों में॰

40. वो हकदार हुआ है काबिले इज़्जत वाले मकाम का हमारे पास, और एक शानदार ठिकाने का॰

*शैतान मुसीबत डालता है अय्यूब को**

41. याद करो हमारे बंदे अय्यूब को: उसने पुकारा उसके रब को, "शैतान ने मुसीबत दिया है मुझको मेहनतकशी और दर्द के साथ॰"

42. "मारो ज़मीन को तुम्हारे पैर से॰ एक चश्मा देगा तुम्हें शिफा और एक शरबत॰"

अल्लाह छोड़ देते हैं
ईमानवालों पर

43. हमने लौटाया उसके लिए उसके कुंबे को; दुगने बराबर॰ ऐसी है हमारी रहमत; एक ताकीद उनके लिए जो अक्ल रखते हैं॰

44. "अब, तुम्हें ज़मीन में सफर करना और पैगाम की नसीहत करनी चाहिए, तुम्हारे वादे को पूरा करने के लिए॰" हमने पाया उसे साबित कदम॰ क्या एक अच्छा बंदा! वो था एक फरमानबरदार॰

45. याद करो हमारे बंदो इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को भी॰ वो थे सूझ बूझ वाले, और रखते थे बसारत॰

46. हमने इनायत किया उन पर एक बड़ी रहमत: अगली ज़िंदगी की वाकफियत॰

47. वो चुने गये थे, इसलिए कि वो थे सबसे ज़्यादा नेककारों में से॰

48. याद करो इस्माईल, इल्यास, और जुलकिफ्ल को; सबसे ज़्यादा नेककारों में से॰

नेककार

49. यह है एक ताकीद: नेककार हकदार हुए हैं एक शानदार मुकद्दर के॰

50. अद्न के बागें खोलेंगे उनके दरवाज़ों को उनके लिए॰

51. आराम करते हुए उसमें, उनको दिये जायेंगे कई किस्मों के फलें और शरबतें॰

52. उनके पास होंगे शानदार जोड़े॰

53. यह है जिसके तुम हकदार हुए हो हिसाब किये जाने के दिन पर॰

54. हमारी नियामतें हैं बेइंतेहा॰

काफिरें:
झगड़ते हुए एक दूसरों के साथ

55. जहाँ तक खतावारें, उन्होंने हासिल किया है एक अफसोसनाक मुकद्दर॰

56. जहन्नम है जहाँ वो जलते हैं; क्या एक अफसोसनाक ठिकाना!

57. जो वो चखेंगे उसमें होंगे जहन्नमी शरबतें और कड़वा खाना॰

58. और बहुत कुछ उसी किस्म के॰

59. "यह है एक गिरोह तुम्हारे साथ जहन्नम में फेंके जाने के लिए॰" उनका इस्तेकबाल नहीं किया जायेगा *(जहन्नम के रहने वालो कि तरफ से)*॰ वो हकदार हुए हैं जहन्नम कि आग में जलने के लिए॰

60. नये आने वाले जवाब देंगे, "नाहीं तुम्हारा इस्तेकबाल किया जा रहा है॰ तुम हो जो हमारे आगे आये और किया हमें गुमराह॰ इसलिए, झेलो इस अफसोसनाक अंजाम को॰"

61. वो ये भी कहेंगे, "हमारे रब, ये हैं जिन्होंने रहबरी की हमारी इसमें: दुगना कीजिये जहन्नम की आग का आज़ाब उनके लिए॰"

हैरानी!

62. वो कहेंगे, "हम कैसे नहीं देखते *(जहन्नम में)* लोग जिनको हम बदकार में से गिना करते थे?

63. "हम उनका मज़ाक उड़ाया करते थे; हम पलटते थे हमारी नज़रों को उनकी तरफ से दूर॰"

64. यह है एक पहले से तय की गई हकीकत: जहन्नम के लोग झगड़ेंगे एक दूसरे के साथ॰

65. कहो, “मैं तुम्हें खबरदार करता हूँ; कोई खुदा नहीं सिवाए **अल्लाह** के, वाहिद, आला•

*38:41 देखें फुटनोट के लिए 38:34 और 41•

66. “आसमानों और ज़मीन के रब, और सारी चीज़ें उनके दरमियान; कादिरे मुतलक, माफ करने वाले•”

बड़ी झड़प

67. कहो, “यहाँ है ज़बरदस्त खबर•
68. “जिससे तुम हो पूरी तरह बेखबर•
69. “मेरे पास नहीं था इल्म पहले, ऊँचे माशरे में झड़प के बारे में•*
70. “मुझे इल्हाम किया गया है कि मेरा सिर्फ मकसद है ताकीदों को पहुँचाना तुम्हारी तरफ•”
71. तुम्हारे रब ने कहा फरिश्तों को, “मैं पैदा कर रहा हूँ एक इंसान मिट्टी से•
72. “जब में नक्शकारी कर लूँ उसकी, और फूंक दूँ उसमें मेरी रूह से, तुम्हें चाहिए सजदे में गिरना उसके सामने•”
73. फरिश्ते गिर गये सजदे में, वो सारे,
74. सिवाए शैतान के; उसने इंकार किया, और था बहुत मगरूर, नाकद्रदान•
75. उन्होंने कहा, “ऐ शैतान, किस चीज़ ने रोका तुझे सजदा करने से उसके सामने जिसे मैंने पैदा किया मेरे हाथों से? क्या तू है बहुत मगरूर? क्या तूने बगावत कर लिया है?”
76. उसने कहा, “मैं हूँ उससे बेहतर; आपने पैदा किया मुझे आग से, और पैदा किया उसे मिट्टी से•”
77. उन्होंने कहा, “इसलिए, तुझे जिलावतन किया जाना चाहिए, तू निकाल दिया जायेगा•
78. “तूने हासिल किया है मेरी लानत इंसाफ के दिन तक•”
79. उसने कहा, “मेरे रब, मोहलत दीजिये मुझ को हश्र के दिन तक•”
80. उन्होंने कहा, तुझे मोहलत दी गई है•
81. “मुकर्रर किये गये दिन तक•”
82. उसने कहा, “मैं कसम खाता हूँ आपकी अज़मत की, कि मैं भेजूंगा उन सारों को गुमराह•
83. “सिवाए आपकी इबादत करने वालों के जो बंदगी करते हैं पूरी तरह सिर्फ आपकी•”
84. उन्होंने कहा, “यह है सच, और सच है जो सिर्फ मैं बोलता हूँ•
85. “मैं भरूंगा जहन्नम को तेरे साथ और उन सारों को जो तेरी पैरवी करते हैं•”
86. कहो, “मैं नहीं मांगता तुमसे कोई मज़दूरी, और नाहीं मैं हूँ एक बहरूपिया•
87. “यह है एक ताकीद दुनिया के लिए•
88. “और तुम यकीनन जान जाओगे कुछ वक्त में•”

****

सुरह 39: हुजूमें (अल जुमर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. यह है एक नुज़ूल आसमानी किताब का **अल्लाह** की तरफ से, कादिरे मुतलक, हिकमत वाले•
2. हमने भेजा नीचे तुम्हारी तरफ यह आसमानी किताब, सच्चाई से; तुम्हें **अल्लाह** की इबादत करनी चाहिए, मनसूब करते हुए तुम्हारे मज़हब को सिर्फ उनके लिए•

बुतें शिफाअत करने वाले जैसे एक आम वहेम

3. बेशक, मज़हब मनसूब किया जाना चाहिए सिर्फ **अल्लाह** के लिए• जो कोई कायम करते हैं बुतों को उनके सिवाए कहते हैं, “हम बुतपरस्ती करते हैं उनकी सिर्फ हमें **अल्लाह** के करीब लाने के लिए; इसलिए कि वो हैं एक बेहतर मकाम में!” **अल्लाह** उनका इंसाफ करेंगे उनके झगड़ों के मुताल्लिक• **अल्लाह** हिदायत नहीं करते ऐसे झूठे, काफिरों की•

4. अगर **अल्लाह** चाहते एक बेटा रखने का, उन्होंने चुना होता जिसकिसी को वो चाहते उनकी खिलकतों में से• उनकी बड़ाई हो; वो हैं **अल्लाह**, वाहिद, आला•

**38:69 झड़प ऊँचे माशरे में शुरू की गई थी शैतान के ललकारने की वजह से अल्लाह के मुकम्मल इक्तेदार को• यह है यकीनन सबसे ज़्यादा एहम हादसा इंसानी नस्ल की तारीख में• हम नाकामयाब हुए एक पुख्ता फैसला करने के लिए अल्लाह के मुकम्मल इक्तेदार के मुताल्लिक• यह ज़िंदगी नुमाइंदगी करती है तीसरा और आखरी मौका अपने आपकी मगफरत कराने के लिए (देखें तार्रूफ और अपेन्डिक्स 7)•*

*ज़मीन कि शक्ल**

5. उन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को सच्चाई से• वो घुमाते हैं रात को दिन पर, और घुमाते हैं दिन को रात पर•* उन्होंने हवाले किया सूरज और चाँद को, हर एक दौड़ रहा है एक महदूद मुद्दत के लिए• बेशक, वो हैं कादिर मुतलक, माफ करने वाले•

6. उन्होंने पैदा किया तुम्हें एक शक्स से, फिर पैदा किया उससे उसके जोड़े को• उन्होंने भेजा नीचे तुम्हारी तरफ आठ किस्मों के मवेशी• वो पैदा करते हैं तुम्हें तुम्हारी माँओं के कोखों में, खिलकत बाद खिलकत, तीन जुज़ें अंधेरेपन के• ऐसे हैं **अल्लाह** तुम्हारे रब• उनके पास है सारी बादशाहत• कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• तुम कैसे भटक सकते हो?

ईमान रखो तुम्हारे खुदके अच्छे के लिए

7. अगर तुम कुफ्र करो, **अल्लाह** को ज़रूरत नहीं किसी की• लेकिन वो नापसंद करते हैं देखना उनके बंदों को गलत फैसला करते हुए• अगर तुम तय करो कद्रदान बनने के लिए, वो खुश होते हैं तुम्हारे लिए• कोई रूह नहीं उठाती किसी दूसरी रूह के गुनाहों को• आखिरकार, तुम्हारे रब कि तरफ है तुम्हारा लौटना, फिर वो इत्तेला करेंगे तुम्हें सारी चीज़ों के बारे में जो तुमने किया• वो हैं पूरी तरह वाकिफ सबसे अंदरूनी ख्यालों से•

8. जब इंसान होता है मुसीबतज़दा, वो इल्तेजा करता है उसके रब से, खुलूसी से उनको मनसूब करते हुए• लेकिन जैसे ही वो बक्शते हैं उसे, वो भूल जाता है उसके पिछले इल्तेजा करने को, कायम करता है बुतों को **अल्लाह** के साथ बराबरी करने के लिए और फेरने के लिए दूसरों को उनके रास्ते से• कहो, "तुम्हारे कुफ्र का मज़ा लो आरज़ी तौर पर; तुमने हासिल किया है जहन्नम की आग•"

9. क्या यह बेहतर नहीं उनमें से होने के लिए जो ध्यान करते हैं रात में, सजदा करते हुए और जागते हुए, रहते हुए बाखबर अगली ज़िंदगी के बारे में, और तलाश करते हुए उनके रब की रहमत? कहो, "क्या वो जो जानते हैं बराबर हैं उनके जो नहीं जानते हैं? सिर्फ वो जो अक्ल रखते हैं तवज्जो लेंगे•

10. कहो, "ऐ मेरे बंदों जो ईमान रखते हो, तुम्हें चाहिए तुम्हारे रब का एहतराम करना•" इसलिए कि वो जिन्होंने नेककारी किया इस दुनिया में, एक अच्छा इनाम• **अल्लाह** की ज़मीन है कुशादा, और जो कोई साबित कदमी से जमे रहते हैं पायेंगे उनका बदला फरागदिली से, बगैर हदों के•

सिर्फ अल्लाह

11. कहो, "मैं हुक्म किया गया हूँ **अल्लाह** की इबादत करने के लिए, मनसूब करते हुए मज़हब पूरी तरह सिर्फ उनके लिए•

12. "और मूझे हुक्म किया गया था सबसे बड़ा फरमानदार होने के लिए•"

13. कहो, "मैं डरता हूँ अगर मैंने नाफरमानी की मेरे रब की, आज़ाब एक बड़े दिन का•"

14. कहो, "**अल्लाह** हैं सिर्फ वाहिद जिनकी मैं इबादत करता हूँ, मनसूब करते हुए मेरा मज़हब पूरी तरह सिर्फ उनके लिए•

15. "इसलिए, इबादत करो जिसकिसी की तुम चाहो बजाये उनके•" कहो, "असल खोने वाले हैं वो जो खोते हैं उनकी रूहों को, और उनके कुंबों को, हश्र के दिन पर•" बिला शक, यह है असल नुकसान•

16. उनके पास होंगे आग के अंबारें उनके ऊपर, और उनके नीचे• **अल्लाह** इस तरह होशियार करते हैं उनके बंदों को: ऐ मेरे बंदों, तुम्हें मेरा एहतराम करना चाहिए•

39:5 यह आयत साफ तौर से हमें इत्तेला करती है कि ज़मीन है गोल• अरबी के लिए "वो घुमाते हैं" (यूकव्विर) हासिल किया गया है "गेंद" (कूराह) के लिए अरबी लफ्ज़ से• चूंकी ज़मीन सही सही गोल नहीं हैं, एक मखसूस हवाला उसकी शक्ल के लिए दिया गया है 79:30 में• कुरान भरा हुआ है साइंसी इत्तेला से जो हमें पता लगा कुरान के नाज़िल होने के सदियों बाद• देखें अपेन्डिक्स 20•

17. जहाँ तक वो जो नज़रअंदाज़ करते हैं इबादत करना सारे बुतों की, और मनसूब करते हैं अपने आप को पूरी तरह सिर्फ **अल्लाह** के लिए, वो हकदार हुए हैं खुशी के• दो खुश खबरी मेरे बंदों को•

अल्लाह के लफ्ज़ की पैरवी करो

18. वो हैं जो जांचते हैं सारे लफ़्ज़ों को, फिर सबसे अच्छे की पैरवी करते हैं• ये हैं जिनको **अल्लाह** ने हिदायत किया है; ये हैं वो जो रखते हैं अक्ल•

19. उनके मुताल्लिक जो हकदार हुए हैं आज़ाब का, क्या तुम बचा सकते हो उन्हें जो पहले से हैं जहन्नम में?

नेककार

20. जहाँ तक वो जो एहतराम करते हैं उनके रब का, उनके पास होंगे उनके लिए तामीर किये गये महलों पर महलें, बहते हुए झरनों के साथ• यह है **अल्लाह** का वादा, और **अल्लाह** कभी नहीं तोड़ते उनका वादा•

21. क्या तुम नहीं देखते कि **अल्लाह** भेजते हैं नीचे आसमान से पानी, फिर रखते हैं उसे ज़मीन के नीचे कुओं में, फिर पैदा करते हैं उससे पौधे मुख्तलिफ रंगों के, फिर वो उगते हैं जब तक वो पीले नहीं पड़ जाते, फिर वो बदल देते हैं उनको सूखी घांस में? यह होना चाहिए एक ताकीद उनके लिए जो अक्ल रखते हैं•

22. अगर **अल्लाह** बनाते हैं किसी के दिल को मुतमईन फरमानबरदारी से, वो पैरवी करेगा उसके रब की तरफ से एक रौशनी की• इसलिए, हाय हो उनके लिए जिनके दिलें सख्त हो गये हैं **अल्लाह** के पैगाम के खिलाफ: वो हो गये हैं दूर गुमराह•

सबसे अच्छी हदीस

23. **अल्लाह** ने नाज़िल किया है इसमें सबसे अच्छी *हदीस*; एक किताब जो है काबिले ऐतमाद, और इशारा करती है दोनों रास्ते *(जन्नत और जहन्नम कि तरफ)*• उनकी चमड़ियें जो एहतराम करते हैं उनके रब का दुबक जाते हैं उससे, फिर उनकी चमड़ियें और उनके दिलें नर्म हो जाते हैं **अल्लाह** के पैगाम के लिए• ऐसी है **अल्लाह** की हिदायत; वो इनायत करते हैं उसे जिसकिसी पर वो चाहते हैं• जहाँ तक वो जो भेजे गये हैं गुमराह **अल्लाह** की तरफ से, कुछ भी हिदायत नहीं कर सकता उनकी•

24. क्या है बेहतर किसी के चेहरे को बचाने से हौलनाक आज़ाब से हश्र के दिन पर? खतावारों को बोला जायेगा, "चखों नतीज़ों को जो तुमने कमाया•"

25. उनसे पहले दूसरों ने कुफ्र किया है और, इस वजह से, आज़ाब ने परेशान किया उनको जिस जगह से उन्होंने कभी उम्मीद नहीं की•

26. **अल्लाह** ने सज़ा दिया है उनको रूसवाई का इस ज़िंदगी में, और आज़ाब अगली ज़िंदगी में होगा कहीं बुरा, अगर वो सिर्फ जानते•

कुरान: कोई शुबाह नहीं

27. हमने बयान किया है लोगों के लिए हर किस्म के मिसाल इस कुरान में, ताके वो तवज्जो लें•

28. एक अरबी कुरान बगैर किसी शक के, ताके वो नेककार हों•

29. **अल्लाह** बयान करते हैं मिसाल एक आदमी की जो सौदा करता है बहेस करने वाले शरीकों *(हदीस)* के साथ, मुकाबले एक आदमी के जो सौदा करता है सिर्फ एक ऐतमाद वाले जरिये *(कुरान)* से• क्या वो एक जैसे हैं? तारीफ हो **अल्लाह** की; उनमें से ज़्यादा तर नहीं जानते•

हदीस: एक बड़ी बेअदबी

30. तुम *(मुहम्मद)* यकीनन मरोगे, जैसे वो मरेंगे•

31. हश्र के दिन पर, तुम्हारे रब के सामने, तुम लोग झगड़ोगे एक दूसरे के साथ•

32. कौन है ज़्यादा बुरा उससे जो थौंपता है झूठों को **अल्लाह** के लिए, जबकी कुफ्र करते हुए सच्चाई में जो आया है उसकी तरफ? क्या जहन्नम एक बराबरी वाला बदला नहीं काफिरों के लिए?

कुरान: मुकम्मल सच

33. जहाँ तक वो जो सच को बढ़ाते हैं, और ईमान रखते हैं उसमें, वो हैं नेककार•

34. जो वो चाहेंगे वो पायेंगे सारी चीज़ें, उनके रब के पास• ऐसा है इनाम नेककार के लिए•

35. **अल्लाह** माफ करते हैं उनके गुनाहगारी वाले कामों को, और इनाम देते हैं उनको फरागदिली से उनके अच्छे कामों के लिए•

गहरा सवाल

36. क्या **अल्लाह** काफी नहीं उनके बंदे के लिए? वो डराते हैं तुम्हें उनके बुतों से जिनको वो कायम करते हैं उनके साथ• जिसकिसी को **अल्लाह** गुमराह करते हैं, कुछ भी हिदायत नहीं कर सकती उसकी•

37. और जिसकिसी की **अल्लाह** हिदायत करें, कुछ भी उसे गुमराह नहीं कर सकता• क्या **अल्लाह** नहीं हैं कादिरे मुतलक, बदला लेने वाले?

वो ईमान रखते हैं अल्लाह में
इसके बावजूद, वो जायेंगे जहन्नम को

38. अगर तुम उनसे पूछो, “किसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को?” वो कहेंगे, “**अल्लाह**•” कहो, “फिर क्यों तुम कायम करते हो **अल्लाह** के सिवाए बुतों को? अगर **अल्लाह** चाहें कोई मुसीबत मेरे लिए, क्या वो हल्का कर सकते हैं ऐसी एक मुसीबत? और अगर वो चाहें एक रहमत मेरे लिए, क्या वो रोक सकते हैं ऐसी एक रहमत?” कहो, “**अल्लाह** हैं काफी मेरे लिए•” उनमें भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए•

39. कहो, “ऐ मेरे लोगों, तुम करो जो कर सकते हो, और मैं करूंगा जो मैं कर सकता हूँ; तुम यकीनन जान जाओगे•

40. “*(तुम जान जाओगे)* किसने पाया है शर्मनाक सज़ा, और हकदार हुए हैं एक दाईम आज़ाब का•”

41. हमने नाज़िल किया है आसमानी किताब तुम्हारे ज़रिये लोगों के लिए, सच्चाई से• फिर, जो कोई है हिदायतयाफ्ता है हिदायतयाफ्ता उसके खुदके अच्छे के लिए, और जोकोई गुमराह होता है होता है गुमराह उसके खुदके नुकसान के लिए• तुम नहीं हो उनके वकील•

42. **अल्लाह** डालते हैं रूहों को मौत के लिए जब खात्मा उनकी ज़िंदगी का आता है, और सोते वक्त भी• इसतरह, वो कुछ को वापस ले लेते हैं उनके सोने के दौरान, जबकी दूसरे इजाज़त दिये जाते हैं जिंदा रहने के लिए उनके पहले से तय किये गये दरमियानी वक्त के खत्म तक• यह मुहय्या करना चाहिए सबकें लोगों के लिए जो गौर करते हैं•

शिफाअत का वहेम

43. क्या उन्होंने ऐजाद किया है शिफाअत करने वालों को उनके और **अल्लाह** के बीच शिफाअत करने के लिए? कहो, क्या अगर वो नहीं रखते कोई ताकत, नाहीं समझ?”

44. कहो, “सारी शिफाअत है **अल्लाह** के पास•” उनके पास है सारी बादशाहत आसमानों और ज़मीन की, फिर उनकी तरफ तुम लौटाये जाओगे•

*सबसे बड़ी मयार**

45. जब सिर्फ **अल्लाह** बयान किये जाते हैं, दिलें उनके जो ईमान नहीं रखते अगली ज़िंदगी में सिकुड़ जाते हैं नफरत से• लेकिन जब दूसरे बयान किये जाते हैं उनके साथ, वो मुतमईन हो जाते हैं•*

46. ऐलान करो: “हमारे खुदा, शुरू करने वाले आसमानों और ज़मीन के, जानने वाले सारे राज़ों और ऐलानों के, आप हैं सिर्फ वाहिद जो इंसाफ करते हैं आपके बंदों के बीच उनके झगड़ों के मुताल्लिक•”

**39:45 3:18 में साफ एहकाम के बावजूद कि पहला सुतून इस्लाम का है ऐलान करना: “अश हदू अन ला इलाहा इल अल्लाह (कोई खुदा नहीं सिवाए अल्लाह के),” ज़्यादातर “मुसलमानें” मुहम्मद का नाम जोड़ने पर ज़ोर देते हैं• यह सबसे बड़ा मयार होशियार करता है हमें कि जश्न मनाना मुहम्मद का नाम जोड़ने में, या कोई दूसरा नाम, ज़ाहिर करता है कुफ्र अगली ज़िंदगी में• देखें फुटनोट 17:46 भी•*

47. अगर वो जिन्होंने खता किया मालिक होते सारी चीज़ों के ज़मीन पर, यहाँ तक की दुगना बराबर, वो दे देंगे उसे आसानी से हौलनाक आज़ाब को दफा करने के लिए हश्र के दिन पर• वो दिखाये जायेंगे **अल्लाह** की तरफ से जो उन्होंने कभी उम्मीद नहीं किया•

48. उन्होंने जो कमाया था गुनाहगारी वाले कामों को दिखाये जायेंगे उनको, और जिन चीज़ों की वो मज़ाक उड़ाया करते थे आयेंगे उनकी तरफ परेशान करने के लिए•

इंसान की बेइतमादी

49. अगर इंसान परेशानी से छुआ जाता है, वो पुकारता है हमें, लेकिन जैसे ही हम इनायत करते हैं एक रहमत उसपर, वो कहता है, "मैंने यह हासिल किया मेरी चालांकी की वजह से!" वाकई, यह है सिर्फ एक आज़माईश, लेकिन उनमें से ज़्यादा नहीं जानते•

50. उनसे पहले दूसरों ने वैसा ही कहा है, और उनकी आमदनीयों ने मदद नहीं किया उनकी ज़रासी भी•

51. उन्होंने झेला उनके बुरे कामों के नतीजों को• उसी तरह, खतावारें मौजूदा नस्ल से झेलेंगे उनके बुरे कामों के नतीजों को; वो कभी फरार नहीं हो सकते•

52. क्या वो एहसास नहीं करते कि **अल्लाह** हैं वाहिद जो बढ़ाते हैं नियामत को जिसकिसी के लिए वो चुनते हैं, और थामे रहते हैं? ये हैं सबकें लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं•

अल्लाह की लामहदूद रहमत

53. ऐलान करो: "ऐ मेरे बंदों जो हदों को पार कर गये, कभी मायूस न हो **अल्लाह** की रहमत से• इसलिए कि **अल्लाह** माफ करते हैं सारे गुनाहों को• वो हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•"

54. तुम्हें तुम्हारे रब का कहना मानना चाहिए, और फरमानबरदारी करो उनकी पूरी तरह से, इससे पहले कि आज़ाब पा ले तुमको, फिर तुम्हारी मदद नहीं की जायेगी•

55. और सबसे अच्छे रास्ते की पैरवी करो जो बताया गया है तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ से, इससे पहले की आज़ाब पा ले तुमको अचानक जब तुम उसकी सबसे कम उम्मीद करो•

56. ताके एक रूह न कह सके, "मैं कितना शर्मिंदा हूँ **अल्लाह** के एहकामों को नज़रअंदाज़ करने के लिए; मैं यकीनन था मज़ाक उड़ाने वालों में से एक•"

57. या कहे, "अगर **अल्लाह** ने मेरी हिदायत की होती, मैं होता नेककारों के साथ•"

58. या कहे, जब वो देखता है आज़ाब को, "अगर मैं पाऊं दूसरा मौका, मैं करूंगा नेककारी वाले काम•"

59. हाँ वाकई *(तुमने ज़रूर पाया काफी मौकों को)*• मेरे सबूत आये तुम्हारी तरफ, लेकिन तुमने उनको ठुकराया, मगरूर बन गये, और बन गये एक कुफ्र करने वाले•

60. हश्र के दिन पर तुम देखोगे चेहरों को उनके जिन्होंने झूठ कहा **अल्लाह** के बारे में ढ़ाके गये मूसीबत से• क्या जहन्नम सही बदला नहीं मगरूर लोगों के लिए?

61. और **अल्लाह** बचायेंगे उनको जो नेककारी बरकरार रखते हैं; वो इनाम देंगे उनको• कोई तकलीफ उनको नहीं छुयेगी, नाहीं उनको होगा कोई गम•

62. **अल्लाह** हैं पैदा करने वाले सारी चीज़ों के, और उनके पूरे काबू में है सारी चीज़ें•

63. उनके हैं सारे फैसले आसमानों और ज़मीन में, और जो कोई कुफ्र करते हैं **अल्लाह** की आयतों में हैं असल खोने वाले•

64. कहो, "क्या वो है **अल्लाह** के अलावा दूसरा जिसकी तुम नसीहत करते हो मुझे इबादत करने के लिए, ऐ तुम गाफिल लोगों?"

बुतपरस्ती ज़ाया करती है सारा काम

65. यह नाज़िल किया गया है तुम्हारे लिए, और तुमसे पहले उनके लिए कि अगर तुम कभी करो बुतपरस्ती, तुम्हारे सारे कामों को ज़ाया कर दिया जायेगा, और तुम होगे हारने वालों के साथ•

66. इसलिए, तुम्हें सिर्फ **अल्लाह** की इबादत करनी चाहिए, और कद्रदान रहो•

*अल्लाह की अज़मत**

67. तुम कभी समझ नहीं सकते **अल्लाह** की अज़मत• पूरी ज़मीन है उनकी मुट्ठी में हश्र के दिन पर• असल में, कायनातें मुड़ें हैं उनके दाहिने हाथ के अंदर•* उनकी तारीफ हो; वो हैं बहुत ज़्यादा ऊपर किसी शरीकों की ज़रूरत से•

इंसाफ का दिन

68. सुर फूंका जायेगा, जिसपर हर कोई आसमानों और ज़मीन में बेहोश कर दिये जायेंगे, सिवाए उनके जो बचाये जायेंगे **अल्लाह** की तरफ से• फिर वो फूंका जायेगा दूसरी बार, जिसपर वो सारे उठ खड़े होंगे, देखते हुए•*

69. फिर ज़मीन चमकेगी उसके रब की रौशनी से• दफतर ऐलान किया जायेगा, और नबियें और गवाहें सामने लाये जायेंगे• हर किसी का फिर बराबरी से इंसाफ किया जायेगा, बगैर ज़रा सी भी नाइंसाफी के•

70. हर रूह को मुआवज़ा दिया जायेगा जो कुछ उसने किया, इसलिए कि वो हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो उन्होंने किया है•

काफिरें

71. जो कोई कुफ्र करते हैं रहवरी किये जायेंगे जहन्नम कि तरफ हुजूमों में• जब वो पहुँचेंगे उसकी तरफ, और उसके दरवाज़े खोले जायेंगे, उसके पहरेदारें कहेंगे, "क्या तुमने नहीं पाया रसूलों को तुम्हारे बीच में से, जिन्होंने पढ़ा तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की आयतें, और खबरदार किया तुमको इस दिन कि मुलाकात के बारे में?" वो जवाब देंगे, "हाँ वाकई• लेकिन 'लफ्ज़' आज़ाब पहले से मुहर लगा दिया जा चुका था कफिरों पर•"

72. यह कहा जायेगा, "दाखिल हो जहन्नम के दरवाज़ों में, जिसमें तुम रहोगे हमेशा के लिए•" क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर मगरूर के लिए•

ईमानवाले

73. जो कोई एहतराम करते हैं उनके रब का रहबरी किये जायेंगे जन्नत की तरफ हुजूमों में• जब वो पहुँचेंगे उसके पास, और उसके दरवाज़े खोले जायेंगे, उसके पहरेदारें कहेंगे, "अमन हो तुम पर; तुम जीत गये• इसलिए, तुम रहते हो इसमें हमेशा के लिए•"

74. वो कहेंगे, "तारीफ हो **अल्लाह** की, जिन्होंने पूरा किया उनका वादा हमारे लिए, और हमें ज़मीन का वारिस बनाया, मज़े लेते हुए जन्नत का जैसा हम चाहें•" क्या एक खूबसूरत बदला मुलाज़िमों के लिए!

75. तुम देखोगे फरिश्तों को तख्त के इर्दगिर्द तैरते हुए, बड़ाई करते हुए और तारीफ करते हुए उनके रब की• इसके बाद की बरावरी वाला फैसला जारी कर दिया गया है सारों के लिए, वो ऐलान किया जायेगा; "तारीफ हो **अल्लाह** की, कायनात के रब•"

****

**39:67 हमारी कायनात, उसके सौ करोड़ कहकशाओं के साथ, एक सौ करोड़ दस खरब सितारे, अनगिनत सौ करोड़ दस खरब दस खरबें आसमानी अंबारों के, फैलते हुए कई सौ करोड़ों रौशनी के सालें, है सबसे छोटा और सबसे अंदर वाला सात कायनातों के• यह ना काबिले तसव्वुर कुशादगी सात कायनातों की है अल्लाह के हाथ के अंदर• ऐसी है अल्लाह की अज़मत• देखें अपेन्डिक्स 6•*

**39:68 सिलसिला हादसों का हश्र के दिन पर शुरू होता है मिसाल्या तौर पर सुर के फूंके जाने से• दूसरा फूंका जाना सुर का—एक मखलूक की तरफ से जो बचाया गया था बेहोशीपन से—अलामत करता है सारे लोगों का हश्र; वो दोबारा ज़िंदा किये जायेंगे आजके ज़मीन पर• यह ज़मीन फिर तबाह कर दी जायेगी अल्लाह के जिस्मानी आने से, फिर एक नई ज़मीन और नये आसमानें पैदा किये जायेंगे (14:48)• हम फिर तह ब तह किये जायेंगे हमारी तरक्की के दर्जे के मुताबिक (अपेन्डिक्स 11)•*

सुरह 40: माफ करने वाले (गाफिर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

76. हा॰ म॰*

77. यह नुज़ूल आसमानी किताब का है **अल्लाह**, कादिरे मुतलक, सब कुछ जानने वाले की तरफ से॰

78. गुनाहों के माफ करने वाले, कबूल करने वाले तौबा के, सख्त आज़ाब नाफिज़ करने में, और रखने वाले सारे ताकत के॰ कोई खुदा नहीं सिवाए उनके॰ उनकी तरफ है आखिरी मुकद्दर॰

79. कोई बहेस नहीं करता **अल्लाह** की आयतों के खिलाफ सिवाए उनके जो कुफ्र करते हैं॰ मुतास्सिर न हो उनके ऊपरी कामयाबी से॰

80. उनसे पहले कुफ्र करने वाले थे नुह के लोग, और कई दूसरे मुखालिफत करने वाले उनके बाद॰ हर कौम नेउनके रसूल को सताया उसे बेअसर करने के लिए॰ और उन्होंने बहेस किया झूठ के साथ, सच को मात देने के लिए॰ इस वजह से, मैंने सज़ा दिया उनको; कितना खौफनाक था मेरा आज़ाब!

81. इस तरह, फैसला तुम्हारे रब का पहले से मुहर लगा दिया गया है उनपर जो कुफ्र करते हैं, कि वो हैं जहन्नम के रहने वाले॰

फरिश्ते दुआ करते हैं ईमानवालों के लिए

82. वो जो तख्त की खिदमत करते हैं और उसके इर्द गिर्द वो सारे बड़ाई और तारीफ करते हैं उनके रब की, और उनमें ईमान रखते हैं॰ और वो माफी मांगते हैं उनके लिए जो ईमान रखते हैं: "हमारे रब, आपकी रहमत और आपका इल्म घेरे में लेता है सारी चीज़ों को॰ माफ करिये उन्हें जो तौबा करते हैं और चलते हैं आपकी राह पर, और बचाईये उनको जहन्नम के आज़ाब से॰

83. "हमारे रब, और दाखिल करिये उनको अदन के बागों में जिसका आपने उनसे वादा किया और उनके वालिदैन, जोड़े, और बच्चों में से नेक को॰ आप हैं कादिरे मुतलक, सबसे हकीम॰

84. "और बचाईये उनको गुनाह में गिरने से॰ जिसकिसी को आप बचायें गुनाह में गिरने से, उस दिन पर, हासिल किया है रहमत आप की तरफ से॰ यह है सबसे बड़ी फतेह॰

सिर्फ अल्लाह:
काफिरें इकरार करते हैं

85. वो जो कुफ्र करते हैं बोले जायेंगे, "**अल्लाह** की नफरत तुम्हारी तरफ है कहीं बुरी तुम्हारे खुदकी नफरत तुम्हारे खुदकी तरफ से॰ इसलिए कि तुम्हें दावत दिया जाता था ईमान लाने के लिऐ, लेकिन तुमने चुना कुफ्र करने के लिए॰"

सिर्फ अल्लाह: काफिरें
*झेलते हैं दो मौतें**

86. वो कहेंगे, "हमारे रब, आपने डाला हैं हमें मौत को दो बार,* और आपने दिया हमें दो ज़िंदगियाँ; अब हमने इकरार किया है हमारे गुनाहों को॰ क्या है कोई रास्ता बाहर कि तरफ?"

सिर्फ अल्लाह:
वजह को ध्यान दो

87. यह है इसलिए की जब सिर्फ **अल्लाह** की वकालत की जाती थी, तुमने कुफ्र किया, लेकिन जब दूसरे बयान किये जाते थे उनके साथ, तुमने ईमान रखा॰ इसलिए, **अल्लाह** का फैसला जारी हो चुका है; वो हैं सबसे ऊँचे, अज़ीम॰

**40:1 इनिशियलें "हा मीम" वाकै होते हें 40-46 सूरतों में॰ "हा" और "मीम" हुरूफों के वाकै होने की टोटल फ्रिक्युन्सी सात सूरतों में है 2147, या 19x113 (अपेन्डिक्स 1)॰*

**40:11-12 काफिरें गुज़रते हैं दो मौतों से, जबकी नेक ईमानवाले मौत नहीं चखते, उस मौत के बाद जो हम पहले तर्जुबा कर चुके हैं (44:56)• बराये करम देखें अपेन्डिक्स 17• वजह जहन्नम को जाने के लिए है वाज़े; यहाँ तक के जो ईमान रखते हैं अल्लाह में दूसरों को शरीक करते हैं उनके साथ (देखें 39:45)•*

88. वो हैं वाहिद जो मुसलसल दिखाते हैं तुम्हें उनके सबूतों को, और भेजते हैं नीचे तुम्हारी तरफ नियामतें आसमान से• सिर्फ वो जो पूरी तरह से फरमानबरदारी करते हैं काबिल होंगे तवज्जो लेने के लिए•

89. इसलिए, तुम्हें मनसूब करना चाहिए तुम्हारी इबादत को सिर्फ **अल्लाह** के लिए, अगर काफिरें नापसंद करें उसे तब भी•

90. सबसे ऊँचे दर्जो के रखने वाले, और पूरी बादशाहत के हाकिम• वो भेजते हैं इल्हाम, उठाते हुए उनके हुक्मों को, जिसकिसी को वो चुनते हैं उनके बंदों में से, खबरदार करने के लिए जमा किये जाने के दिन के बारे में•

91. वो है दिन जब हर कोई पूरी तरह बेनकाब किया जायेगा; उनमें से कोई भी नहीं छिपायेगा कोई चीज़ **अल्लाह** से• जिनके लिए है सारी बादशाहत उस दिन पर, **अल्लाह**, वाहिद, आला के लिए•

बड़े दिन के लिए तैयारी करो

92. उस दिन पर, हर रूह बदला दी जायेगी जो कुछ उसने कमाया था उसके लिए• उस दिन पर कोई नाइंसाफी नहीं होगी• **अल्लाह** हैं सबसे काबिल हिसाब लेने में•

शिफाअत नहीं

93. खबरदार करो उनको अंकरीब दिन के बारे में, जब दिलें होंगे दहशतज़दा, और कई होंगे अफसोसज़दा• खतावारों के पास नहीं होगा कोई दोस्त नाहीं एक शिफाअत करने वाला पैरवी किये जाने के लिए•

94. वो हैं पूरी तरह वाकिफ जो आँखें देख नहीं सकतीं, और सारी चीज़ें जो ज़हनें छिपाते हैं•

95. **अल्लाह** बराबरी से इंसाफ करते हैं, जबकी बुतें जिनको वो पुकारते हैं उनके साथ इंसाफ नहीं कर सकते कुछ भी• **अल्लाह** हैं वाहिद जो हैं सुनने वाले, देखने वाले•

96. क्या वो नहीं फिरे ज़मीन पर और ध्यान दिया उनसे पहलों के लिए नतीजों को? वो उनसे ज़्यादा ताकतवर हुआ करते थे, और ज़्यादा पैदा करने के काबिल ज़मीन पर• लेकिन **अल्लाह** ने सज़ा दिया उनको उनके गुनाहों के लिए, और कुछ भी हिफाज़त नहीं कर सकती थी उनकी **अल्लाह** से•

97. वो इसलिए कि उनके रसूलें गये उनकी तरफ साफ सबूतों के, लेकिन उन्होंने कुफ्र किया• इस वजह से, **अल्लाह** ने उनको सज़ा दिया• वो हैं ताकतवर, आज़ाब नाफिज़ करने में सख्त•

मूसा

98. हमने भेजा मूसा को हमारी निशानियों और एक गहरे इखतियार के साथ•

99. फिरऔन, हामान, और कारून कि तरफ• लेकिन उन्होंने कहा, "एक जादूगर; एक झूठा•"

100. और जब उसने दिखाया उनको हमारी तरफ से सच, उन्होंने कहा, "कत्ल कर दो उनके बेटों को जो ईमान लाये उसके साथ, और छोड़ दो उनकी बेटियों को•" इस तरह, मंसूबा बनाना काफिरों का है हर बार बदकार•

मूसा का मुकाबला
फिरऔन से

101. फिरऔन ने कहा, "मुझे कत्ल करने दो मूसा को, और पुकारने दो उसे उसके रब को• मैं डरता हूँ कि वो बिगाड़ न दे तुम्हारे मज़हब को, या फैलाये बुराई पूरी ज़मीन पर•"

102. मूसा ने कहा, "मैं पनाह चाहता हूँ मेरे रब और तुम्हारे रब में, हर तकब्बुर वाले से जो ईमान नहीं रखता हिसाब किये जाने के दिन में•"

अल्लाह हिदायत नहीं करते
झूठों की

103. एक ईमान रखने वाला आदमी फिरऔन के लोगों में से, जो छिपा रहा था उसका अकीदा, कहा, "तुम कैसे कत्ल कर सकते हो एक अदमी को सिर्फ कहने के लिए, 'मेरे

रब हैं **अल्लाह** ,' और उसने दिखाया है तुमको साफ सबूतें तुम्हारे रब की तरफ से? अगर वो है एक झूठा, वो है उसका मसला, और अगर वो है सच्चा, तुम फायदा उठाओगे उसके वादों से• यकीनन, **अल्लाह** हिदायत नहीं करते किसी खतावार, झूठे की•

2191 *111431*

104. "ऐ मेरे लोगों, आज तुम्हारे पास है बादशाहत और बरतरी• लेकिन कौन हमारी मदद कर सकता है **अल्लाह** के फैसले के खिलाफ, अगर वो आये हमारी तरफ?" फिरऔन ने कहा, "तुम्हें पैरवी करनी है सिर्फ उसकी जो मुझ को सही लगे; मैं हिदायत करूंगा तुम्हारी सिर्फ सही राह में•"

105. वो जिसने ईमान लाया कहा, "ऐ मेरे लोगों, पिछले मुखालिफों की तरह मैं तुम्हारे लिए वैसे अंजाम से डरता हूँ•

106. "मुखालिफें नुह, और आद, तमूद, और दूसरे जो आये उनके बाद• **अल्लाह** कोई नाइंसाफी नहीं चाहते लोगों के लिए•

107. "ऐ मेरे लोगों, मैं डरता हूँ तुम्हारे लिए जमा किये जाने के दिन से•

108. "वो है दिन जब तुम चाहोगे पीछे पलटने और फरार होने को• लेकिन कुछ भी हिफाज़त नही करेगी तुम्हारी तब **अल्लाह** से• जिसकिसी को **अल्लाह** गुमराह करते हैं, कुछ भी हिदायत नहीं कर सकता उसकी•"

*कौन है आखरी रसूल?**
एक अफसोसनाक इंसानी सिफत

109. युसूफ आये थे तुम्हारी तरफ उस से पहले साथ साफ आयतों के, लेकिन तुम जारी रहे उसके पैगाम पर शक करने के लिए• फिर, जब वो मर गया तुमने कहा, "**अल्लाह** नहीं भेजेंगे कोई दूसरा रसूल उसके बाद• *(वो था आखरी रसूल)*!"** **अल्लाह** इस तरह गुमराह करते हैं उनको जो हैं खतावारें, शक्की•

110. वो बहेस करते हैं **अल्लाह** की आयतों के खिलाफ, बगैर किसी बुनियाद के• यह है एक सिफत जो है सबसे नफरतअंगेज़ **अल्लाह** के पास और उनके पास जो ईमान रखते हैं• **अल्लाह** इसतरह बंद कर देते हैं हर मगरूर ज़ालिम के दिलों को•

111. फिरऔन ने कहा, "ऐ हामान, तामीर करो मेरे लिए एक ऊँची मिनार, ताके मैं बढ़ संकू और पता लगा संकू•

112. "मैं चाहता हूँ आसमान को पहुँचना, और देखूं मूसा के खुदा की तरफ• मैं समझता हूँ वो है एक झूठा•" इस तरह बुरे आमाल फिरऔन के सजाये गये थे उसकी आँखों में, और इस तरह वो रोका गया था पैरवी करने के लिए *(सही)* रास्ते से• फिरऔन का मंसूबा था वाकई बुरा•

113. वो जिसने ईमान लाया कहा, "ऐ मेरे लोगों, पैरवी करो मेरी, और मैं हिदायत करूंगा तुम्हारी सही राह में•

114. "ऐ मेरे लोगों, यह पहली ज़िंदगी है एक आरज़ी फरेब, जबकी अगली ज़िंदगी है दाईम ठिकाना•

सबसे बेहतर सौदा

115. जो कोई करता है एक गुनाह बदला दिया जाता है सिर्फ उसके लिए, और जो कोई करता है नेककारी—मर्द या औरत—ईमान रखते हुए, ये दाखिल होंगे जन्नत में जिसमें वो पायेंगे नियामतें बगैर किसी हदों के•

ईमानवाला मिस्री बहेस करता है
उसके लोगों के साथ

116. "ऐ मेरे लोगों, जबकी मैं दावत देता हूँ तुम्हें बचाये जाने के लिए, तुम दावत देते हो मुझ को जहन्नम की आग कि तरफ•

**40:34 यहूदियों ने इंकार किया मसीहा में ईमान लाने का जब वो आये उनकी तरफ, ईसाईयों ने इंकार किया मुहम्मद में ईमान लाने का जब वो आये उनकी तरफ, और ज़्यादातर आज के मुसलमानें ईमान रखते हैं कि मुहम्मद थे आखरी रसूल• उस गलत बुनियाद पर, वो इंकार करते हैं कबूल करने को अल्लाह के वादे के रसूल को• हम सीखते हैं 3:81-90 और 33:7 से कि जो कोई नाकामयाब होते हैं कबूल करने को कुरानी हुक्म "ईमान रखो और मदद करो अल्लाह के वादे के रसूल की" इसके बाद ईमानवाले नहीं• देखें अपेन्डिक्स 2 और 26•*

***40:34 यह काबिले गौर है की हम पाते हैं नाम "रशाद" अरबी मत्न में सही सही चार आयतें हुक्म के आगे "आखरी रसूल" कहने के खिलाफ, और इसके अलावा चार आयतें उसके बाद•*

117. "तुम दावत देते हो मुझको **अल्लाह** का नाकद्रदान होने के लिए, और कायम करने के लिए उनके साथ बुतों को जिनको मैं नहीं पहचानता॰ मैं दावत देता हूँ तुमको कादिरे मुतलक, माफ करने वाले की तरफ॰

118. "कोई शक नहीं कि जिसको करने के लिए तुम मुझे दावत देते हो नहीं है कोई बुनियाद इस दुनिया में, नाहीं अगली ज़िंदगी में, के हमारा आखरी लौटना है **अल्लाह** की तरफ, और यह की खतावारों ने हासिल किया है जहन्नम की आग॰

119. "कोई दिन तुम याद करोगे जो मैं बोल रहा हूँ तुम्हें अब॰ मैं छोड़ता हूँ इस मसले का फैसाला **अल्लाह** पर; **अल्लाह** हैं देखने वाले सारे लोगों के॰"

120. **अल्लाह** ने हिफाज़त किया उसकी उनके बुरे मंसूबों से, जबकी फिरऔन के लोगों ने हासिल किया है सबसे बुरा आज़ाब॰

जब कब्र में:
एक मुसलसल डरावना ख्वाब

121. जहन्नम दिखाया जायेगा उनको दिन और रात, और हश्र के दिन पर: "दाखिल करो फिरऔन के लोगों को सबसे बुरे आज़ाब में॰"

122. जैसे वो बहेस करते हैं जहन्नम में, पैरवी करने वाले कहेंगे उनके रहबरों को, "हम हुआ करते थे तुम्हारे पैरवी करने वाले, क्या तुम बचा सकते हो हमें इस जहन्नम के किसी हिस्से से?"

123. रहबरें कहेंगे, "हम हैं सारे इसमें एक साथ॰ **अल्लाह** ने इंसाफ कर दिया है लोगों के दरमियान॰"

बहुत देर

124. जो होंगे जहन्नम के आग में कहेंगे जहन्नम के निगेहबानों को, "पुकरो तुम्हारे रब को कम करने के लिए हमारे लिए आज़ाब, एक दिन के लिए भी॰"

125. वो कहेंगे, "क्या तुमने नहीं पाया तुम्हारे रसूलों को जिन्होंने पहुँचाया तुम्हारी तरफ साफ पैगामों को?" वो जवाब देंगे, "हाँ पाया॰" वो कहेंगे, "तो इल्तेजा करो *(जितना ज़्यादा तुम चाहो)*; काफिरों का इल्तेजा करना हरबार है फुज़ूल में॰"

यकीनन फतेह;
यहाँ और हमेशा के लिए

126. बिला शक, हम देंगे फतेह हमारे रसूलों को और उनको जो ईमान रखते हैं, दोनों इस दुनिया में और उस दिन पर जब गवाहें हाज़िर किये जाते हैं॰

127. उस दिन पर, काफिरों कि माफियाँ फायदा नहीं देंगे उनको॰ उन्होंने हासिल किया है मलामत; उन्होंने हासिल किया है सबसे बुरा मुकद्दर॰

सीखो तारीख से

128. हमने दिया है मूसा को हिदायत, और बनाया बनी इस्राईल को आसमानी किताब का वारिस॰

129. *(उनकी तारीख)* है एक सबक और एक ताकीद उनके लिए जो अक्ल रखते हैं॰

130. इसलिए, सब्र करो, इसलिए कि **अल्लाह** का वादा है सच्चा, और मांगो माफी तुम्हारे गुनाह के लिए, और बड़ाई और तारीफ करो तुम्हारे रब की रात और दिन॰

131. यकीनन, जो कोई बहेस करते हैं **अल्लाह** की आयतों के खिलाफ बगैर सबूत के ज़ाहिर कर रहे हैं तकब्बुर जो छिपा है उनके सीनों के अंदर, और वो यहाँ तक वाकिफ नहीं हैं उससे॰ इसलिए, **अल्लाह** में पनाह तलाश करो; वो हैं सुनने वाले, देखने वाले॰

ज़बरदस्त तामीर
कायनात की

132. पैदाईश आसमानों और ज़मीन की है और ज़्यादा ज़बरदस्त इंसान की पैदाईश से, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते॰

133. बराबर नहीं हैं अंधा और देखने वाला॰ नाहीं हैं वो जो ईमान रखते हैं और नेककारी वाले काम करते हैं बराबर गुनाहगारों के॰ कभी कभार ही तुम तवज्जो लेते हो॰

134. यकीनी तौर पर, वक्त *(इंसाफ का दिन)* आ रहा है, कोई शक नहीं उसके बारे में, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमान नहीं रखते•

दुआ मांगना:
*इबादत का एक तरीका**

135. तुम्हारे रब कहते हैं, "इल्तेजा करो मुझसे, और मैं जवाब दूंगा तुम्हारा• यकीनन, वो जो हैं बहुत मगरूर मेरी इबादत करने के लिए दाखिल होंगे जहन्नम में, जबरन•"

136. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने नक्शकारी की रात की ताके तुम उसमें आराम कर सको, और दिन को रौशन• **अल्लाह** इनायत करते हैं कई रहमतों को लोगों पर, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्रगुज़ार नहीं•

137. ऐसे हैं **अल्लाह** तुम्हारे रब, पैदा करने वाले सारी चीज़ों के• कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• तुम कैसे बहेक सकते हो?

138. बहेकते हैं वो जो नज़रअंदाज़ करते हैं **अल्लाह** की आयतों को•

139. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने बनाया ज़मीन को तुम्हारे लिए रहने के काबिल, और आसमान को एक काबिले गौर ढांचा, और उन्होंने नक्शकारी की तुम्हारी, और नक्शकारी की तुम्हारी अच्छे से• वो हैं वाहिद जो मुहय्या करते हैं तुम्हें अच्छी नियामतों से•* ऐसे हैं **अल्लाह** तुम्हारे रब; सबसे बुलंद हैं **अल्लाह** , कायनात के रब•

140. वो हैं ज़िंदा; कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• तुम्हें सिर्फ उनकी इबादत करनी चाहिए, मनसूब करते हुए तुम्हारा मज़हब पूरी तरह सिर्फ उनके लिए• तारीफ हो **अल्लाह** की, कायनात के रब•

उनके ऊपर अल्लाह की रहमत
से पहले, मुहम्मद
बुतों की इबादत किया करते थे

141. कहो, "मुझे को ताकीद की गई है बुतों की इबादत करने से जिनकी तुम इबादत करते हो **अल्लाह** के सिवाए, जब साफ आयतें आई मेरे पास मेरे रब की तरफ से• मुझे कायनात के रब की फरमानबारदारी करने का हुक्म किया गया था •"*

142. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया तुम्हें धूल से, और उसके बाद एक छोटी बूंद से, फिर लटकते हुए एमब्रियो से, फिर वो लाते हैं बाहर तुम्हें एक बच्चे की तरह, फिर वो तुम्हें बुलुगत को पहूँचने देते हैं, फिर तुम बुढ़े बन जाते हो—कुछ तुम में से पहले मर जाते हैं• तुम हासिल करते हो एक पहले से मुकर्रर की गई उम्र, ताके तुम समझ सको•

143. वो हैं सिर्फ वाहिद जो काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत• कोई चीज़ करने के लिए, वो सिर्फ उसे कहते हैं, "हो," और वो हो जाता है•

144. क्या तुमने ध्यान दिया है उनको जो **अल्लाह** की सबूतों के खिलाफ बहेस करते हैं, और कैसे वो बहेक गये हैं?

145. वो हैं जिन्होंने कुफ्र किया है आसमानी किताब में, और पैगामों में हमने भेजा है साथ हमारे रसूलों के•

146. ज़ंज़ीरे होंगे उनके गर्दनों के इर्द गिर्द, और बेड़ियाँ इस्तेमाल की जायेंगीं उनको घसीटने के लिए•

**40:60 दुआ मांगना, इल्तेजा करना अल्लाह से किसी भी चीज़ के लिए, यहाँ तक की सामानी शानो शौकतें, है एक इबादत का तरीका• इसलिए हुक्म इल्तेजा करने का अल्लाह को जब भी हमें कोई ज़रूरत हो• एक बेदीन कभी अल्लाह को नही पुकारेगा किसी चीज़ के लिए•*

**40:64 देखें फुटनोटस 15:20, 20:54, 25:2, और 35:12-13•*

**40:66 अरबी लफ्ज़ "नाहा" इस्तेमाल किया गया इस आयत में ज़ाहिर करता है रोकने को किसी चीज़ का जो चल रहा था• देखें मिसाल के तौर पर यही लफ्ज़ 4:171• देखें 93:7 भी•*

147. भट्टी में,* फिर आग में, वो जलेंगे•

148. उनसे पूछा जायेगा, "कहाँ हैं बुतें जिनकी तुम इबादत किया करते थे,

उन्होंने किसी की इबादत नहीं की

149. "**अल्लाह** के सिवाए?" वो कहेंगे, "उन्होंने हमें छोड़ दिया• असल में, जब हमने इबादत की उनकी, हम किसी की इबादत नहीं कर रहे थे•" इस तरह **अल्लाह** गुमराह करते हैं काफिरों को•

150. यह इसलिए है कि तुम जश्न मनाया करते थे झूठे अकीदों में, ज़मीन पर, और तुम उनको बढ़ाया करते थे•

151. दाखिल हो जहन्नम के दरवाज़ों में, जिसमें तुम रहोगे हमेशा के लिए• क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर मगरूर लोगों के लिए•

152. तुम्हें होना चाहिए सब्र करने वाला, इसलिए कि **अल्लाह** का वादा है सच्चा• चाहे हम दिखायें *(आज़ाब)* से कुछ तुम्हें हमने वादा किया है उनके लिए, या खत्म कर दें तुम्हारी ज़िंदगी उस से पहले, वो लौटाये जायेंगे हमारी तरफ•

*अल्लाह की इजाज़त कुरान के रियाज़ी मौजज़े के लिए**

153. हमने भेजा है रसूलों को तुमसे पहले—उनमें से कुछ को हमने बयान किया तुम्हारे लिए, और कुछ को हमने बयान नहीं किया तुम्हारे लिए• कोई रसूल पेश नहीं कर सकता किसी मौजज़े को **अल्लाह** कि इजाज़त के बगैर•* जब **अल्लाह** का फैसला जारी हो जाता है, सच हावी होता है, और झूठ गढ़ने वाले फाश हो जाते हैं और रूसवा किये जाते हैं•

154. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया मवेशी को तुम्हारे लिए: कुछ तुम सवारी करते हो, और कुछ तुम खाते हो•

155. वो इसके अलावा मुहय्या करते हैं तुम्हें ज़्यादा फायदों के साथ जो मुतमईन करता है तुम्हारे कई ज़रूरतों को• उनपर, इसके अलावा जहाज़ों पर, तुम लिये जाते हो•

156. वो इस तरह दिखाते हैं तुम्हें उनके सबूतों को• **अल्लाह** की कौनसी सबूतें तुम इंकार कर सकते हो?

157. क्या वो नहीं फिरे ज़मीन पर और ध्यान दिया नतीजों को उनके लिए जो उनसे पहले आये? वो हुआ करते थे बड़ी तादाद में, ज़्यादा ताकत में, और रखते थे एक बड़ी विरासत ज़मीन पर• इसके बावजूद, उनके सारी कामयाबियाँ मदद नहीं की उनकी ज़रा सा भी•

158. जब उनके रसूलें गये उनकी तरफ साफ सबूतों के साथ, उन्होंने जश्न मनाया इल्म में जिसे उन्होंने विरासत में पाया था, और जिन चीज़ों का उन्होंने मज़ाक उड़ाया था थे सबब उनके गिरने का•

सिर्फ अल्लाह

159. उसके बाद, जब उन्होंने देखा हमारे आज़ाब को उन्होंने कहा, "हम अब ईमान रखते हैं सिर्फ **अल्लाह** में, और अब हम कुफ्र करते हैं बुतपरस्ती में जिसे हम किया करते थे•"

बहुत देर

160. उनका अकीदा मदद नहीं कर सका उनकी ज़रा सा भी, जब उन्होंने देखा हमारा आज़ाब• ऐसा है **अल्लाह** का निज़ाम जो कायम किया गया है उनके मखलूकों के साथ बरताव करने के लिए; काफिरें हर बार तबाह किये जाते हैं•

****

**40:72 वो जिन्होंने तैयारी नहीं की खुदकी बुरी तरह झेलेंगे अल्लाह की मौजूदगी में, इंसाफ के दिन पर• वो बर्दाश्त नहीं कर सकते अल्लाह की नज़दीकी उनके रूह की बढ़ने और तरक्की की कमी की वजह से• मैं इस्तेमाल कर रहा हूँ "भट्टी" बयान करने के लिए यह खास हालत (55:44)• रूह की तैयारी पूरी होती है अल्लाह की तरफ से मुकर्रर किये गये तरीकों के ज़रिये, जैसे राबता नमाज़•*

**40:78 हम सीखते हैं 17:45-46, 18:57, और 56:79 से की काफिरों को कुरान का दाखला नहीं; सिर्फ ईमानवाले और संजीदा तलाश करने वाले इजाज़त दिये जाते हैं अल्लाह की तरफ से उसे समझने के लिए• कुरान का रियाज़ी कोड, "बड़े मौजज़ो में से एक"*

(74:30-35), इजाज़त दिया गया था अल्लाह की तरफ से, और नाज़िल किया गया था उनके वादे के रसूल की तरफ से (अपेन्डिक्स 2)•

2228 *112934*

सुरह 41: तफसील किया गया (फुस्सिलत)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

161. हा• म•*

162. एक नुज़ूल सबसे मेहरबान, सबसे रहमवाले कि तरफ से•

163. एक आसमानी किताब जिसकी आयतें मुहय्या करतीं हैं पूरी तफसीलें, एक अरबी कुरान में, लोगों के लिए जो जानते हैं•

164. अच्छी खबरों को लिये हुए, साथ एक खबरदार करने वाले जैसा• बहेरहाल, ज़्यादातर उनमें से पलट जाते हैं; वो सुनते नहीं•

165. उन्होंने कहा, "हमने फैसला कर लिया है, हमारे कानें बहरे हैं तुम्हारे पैगाम के लिए, और एक आड़ अलग करती है हमें तुमसे• करो तुम्हें जो करना है, और उसी तरह हम भी•"

166. कहो, "मैं तुम्हारी तरह एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं, जो इल्हाम किया गया है कि तुम्हारे खुदा हैं एक खुदा• तुम्हें उनकी बंदगी करनी चाहिए, और मांगो उनकी मगफरत• हाय हो बुतपरस्तों के लिए•

167. "जो नहीं देते हैं ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, और अगली ज़िंदगी के मुताल्लिक, वो हैं काफिरें•"

168. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो पाते हैं एक अच्छे से लायक हुए अज्र का•

169. कहो "तुम कुफ्र करते हो वाहिद में जिन्होंने पैदा किया ज़मीन को दो दिनों में,* और तुम कायम करते हो बुतों को उनके साथ बराबरी करने के लिए, जबकी वो हैं कायनात के रब•"

170. उन्होंने रखा उस पर तवाजुनों *(पहाड़ो को)*, बनाया उसे पैदा करने के काबिल, और उन्होंने हिसाब किया उसकी नियामतों का चार दिनों में, उसके सारे रहने वालों कि ज़रूरतों को पूरा करने के लिए•

171. फिर वो पलटे आसमान कि तरफ, जब वो था अब भी गैस, और कहा उसको, और ज़मीन को, "आओ वजूद में, मर्ज़ी से या बगैर मर्ज़ी से•" उन्होंने कहा, "हम आते हैं मर्ज़ी से•"

172. इस तरह, उन्होंने* पूरा किया सात आसमानों को दो दिनों में, और कायम किया कानूनों को हर कायनात के लिए• और हमने* सजाया सबसे नीचे वाले कायनात को चिरागों से, और रखा पहरेदारों को उसके इर्दगिर्द• ऐसी है नक्शकारी कादिरे मुतलक, सब कुछ जानने वाले की•

खबरदार

173. अगर वो पलट जायें, तो कहो, "मैं खबरदार कर रहा हूँ तुम्हें एक तबाही का वैसी तबाही जिसने फनाह किया आद और तमूद को•"

174. उनके रसूलें गये उनकी तरफ, इसके अलावा उनके पहले और उनके बाद, कहते हुए, "तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए सिवाए **अल्लाह** की•" उन्होंने कहा, "अगर हमारे रब चाहते, उन्होंने फरिश्तों को भेजा होता• हम ईमान नहीं रखते उसमें जो तुम कहते हो•"

**41:1 इन कुरानी इनिशियलों की एहमियत के लिए, देखें फुटनोट 40:1•*

**41:9-10 "दिनें" खिलकत के नुमाइंदगी करते हैं एक मयार की• इसतरह, जिस्मानी कायनात पैदा की गई थी दो दिनों में, जबकी ज़मीन पर सारे मखलूकों के लिए नियामतों का हिसाब करना ज़रूरत पड़ा चार का• यह हमें ये भी सिखाता है कि ज़िंदगी है सिर्फ इस नज़म ज़मीन पर•*

**41:12 सिर्फ अल्लाह ने पैदा किया कायनात को (18:51), लेकिन फरिश्ते शामिल हुए कुछ कामों को पूरा करने के लिए निचले कायनात में• हमारी कायनात सामना नहीं कर सकती अल्लाह के जिस्मानी मौजूदगी का (7:143)• एक से ज़्यादा वाला हाल इकरार करता है फरिश्तों का किरदार हमारे कायनात में (अपेन्डिक्स 10)•*

175. जहाँ तक के आद, वो बन गये मगरूर ज़मीन पर, मुखालिफत किया सच का, और कहा, "कौन है ज़्यादा ताकतवर हम से?" क्या उन्होंने एहसास नहीं किया कि **अल्लाह**, जिन्होंने उनको पैदा किया, हैं ज़्यादा ताकतवर उनसे? वो थे नाकद्रदान हमारी आयतों के•

176. इस वजह से, हमने भेजा उनपर तेज़ हवा, कुछ अफसोसनाक दिनों के लिए• हमने इस तरह तकलीफ दिया उनको रूसवा करने वाली आज़ाब के साथ इस ज़िंदगी में, और आज़ाब अगली ज़िंदगी का है ज़्यादा रूसवा करने वाला; वो कभी नहीं जीत सकते•

177. जहाँ तक तमूद, हमने मुहय्या किया उनको हिदायत के साथ, लेकिन उन्होंने पसंद किया अंधेपन को हिदायत पर• इस वजह से, मुसीबतअंगेज़ और शर्मनाक आज़ाब ने फनाह कर दिया उनको, जो उन्होंने कमाया उसके लिए•

178. हम हमेशा बचाते हैं उनको जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं•

179. दिन आयेगा जब **अल्लाह** के दुश्मनें हाज़िर किये जायेंगे जहन्नम की आग को, जबरन•

180. जब वो वहाँ पहुँचेंगे, उनके खुदकी सुनाई, आँखें, और चमड़ियाँ गवाही देंगे हर चीज़ के लिए जो उन्होंने किया था•

विडियो रिकॉर्ड

181. वो कहेंगे उनकी चमड़ियों को, "क्यों तुमने गवाही दी हमारे खिलाफ?" वो जवाब देंगे, "**अल्लाह** ने बनाया हमें बोलने के लिए; वो हैं वाहिद जो वजह बनते हैं हर चीज़ के बोलने का• वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया तुमको पहली बार, और अब तुम लौटाये गये हो उनकी तरफ•"

182. वहाँ कोई रास्ता नहीं जहाँ तुम छुप सकते हो तुम्हारे खुदकी सुनाई, तुम्हारे आँखों, या तुम्हारी चमड़ियों से• असल में, तुमने सोचा कि **अल्लाह** थे बेखबर उस से ज़्यादा तर तुम जो करते हो•

183. इस किस्म की सोच तुम्हारे रब के बारे में सबब बनेगी तुम्हारे गिरने का, और फिर तुम बन जाओगे खोने वाले•

184. अगर वो जारी रहें जैसे वो हैं, जहन्नम होगा उनका मुकद्दर, और अगर वो बनाये बहाने, वो माफ नहीं किये जायेंगे•

जिन साथियें

185. हम मुकर्रर करते हैं उनके लिए साथियें जो सजाते हैं सारी चीज़ों को उनकी आँखों में जो वो करते हैं• इसतरह, वो खत्म होते हैं हासिल करते हुए वैसा ही अंजाम जैसा पिछली कौमों के जिनें और इंसानें, जो भी थे खोने वाले•

186. वो जिन्होंने कुफ्र किया कहा, "न सुनो इस कुरान को और बिगाड़ो उसे, ताके तुम जीत सको•"

187. हम यकीनन इन काफिरों को परेशान करेंगे एक सख्त आज़ाब के साथ• हम यकीनन बदला देंगे उनके बुरे कामों के लिए•

188. ऐसा है बदला जो इंतेज़ार कर रहा है **अल्लाह** के दुश्मनों का• जहन्नम होगा उनका दाईम ठिकाना; एक बराबर बदला हमारी आयतों को नज़रअंदाज़ करने के लिए•

इंसाफ के दिन पर

189. वो जिन्होंने कुफ्र किया कहेंगे, "हमारे रब, दिखाईये हमें दो किस्मों में—जिनों और इंसानों से—जिन्होंने हमें गुमराह किया, ताके हम रौंद सकें उनको हमारे पैरों के नीचे, और करें उनको सबसे नीचा•

मुकम्मल खुशी:
अब और हमेशा के लिए

190. वो जो ऐलान करते हैं: "हमारे रब हैं **अल्लाह**," फिर बसर करते हैं एक नेक जिंदगी, फरिश्ते उतरते हैं उनपर: "तुम्हें कोई डर नहीं होगा, नाहीं होगा तम्हें कोई गम• जश्न मनाओ अच्छी खबरों में कि जन्नत मखसूस की गई है तुम्हारे लिए•

191. "हम हैं तुम्हारे साथियें इस ज़िंदगी में, और अगली ज़िंदगी में• तुम्हारे पास होगा उसमें जिस चीज़ के लिए तुम इरादा करो; तुम्हारे पास होगा जो कुछ तुम चाहो•

192. "*(ऐसा है तुम्हारा)* आखरी ठिकाना, माफ करने वाले, सबसे रहमवाले कि तरफ से•

फरमानबरदारें

193. कौन बेहतर लफ्ज़ों को कह सकता है उससे जो दावत देता है **अल्लाह** की तरफ, नेककारी वाले काम करता है, और कहता है, "मैं फरमानबरदारों में से एक हूँ"?

194. बराबर नहीं है अच्छा जवाब और बुरा जवाब• तुम्हें चुनना चाहिए सबसे अच्छा मुमकिन जवाब• इसतरह, एक जो हुआ करता था तुम्हारा दुश्मन, हो सकता है बन जाये तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त•

195. कोई भी इसे हासिल नहीं कर सकता सिवाए वो जो सावित कदमी से जमे रहते हैं• कोई भी इसे हासिल नहीं कर सकता सिवाए उनके जो हैं बेहद नसीबवाले•

जब शैतान लुभाता है तुम्हें

196. जब शैतान तुमको वसवसे करता है एक ख्याल से, तुम्हें **अल्लाह** में पनाह तलाश करनी चाहिए• वो हैं सुनने वाले, जानने वाले•

अल्लाह के सबूतें

197. उनके सबूतों में से हैं रात और दिन, और सूरज और चाँद• सूरज के सामने सजदा न करो, नाहीं चाँद के; तुम्हें **अल्लाह** के सामने सजदा करना चाहिए जिन्होंने उनको पैदा किया, अगर तुम वाकई सिर्फ उनकी इबादत करते हो•

198. अगर वो हैं बहुत मगरूर ऐसा करने के लिए, तो वो जो हैं तुम्हारे रब के पास बड़ाई करते हैं उनकी रात और दिन, बगैर कभी थकते हुए•

199. उनके सबूतों में से है कि तुम देखते हो ज़मीन को थमा, फिर, जैसे ही हम बरसाते हैं उसे पानी के साथ, वो पनपने लगता है ज़िंदगी से• यकीनन, वाहिद जिन्होंने उसे दोबारा ज़िंदा किया दोबरा ज़िंदा कर सकते हैं मुर्दे को• वो हैं कादिरे मुतलक•

200. यकीनन, जो कोई बिगाड़ते हैं हमारी आयतों को छिपे नहीं हैं हमसे• क्या वो जो फेंका जाता है जहन्नम के अंदर है बेहतर, या वो जो आता है महफूज़ हश्र के दिन पर? करो जो कुछ तुम चाहते हो; वो हैं देखनेवाले सारी चीज़ें तुम करते हो•

रियाज़ी मौजेज़ा
*कुरान का**

201. वो जिन्होंने ठुकराया है कुरान का सबूत* जब वो आया उनकी तरफ, ठुकराया है एक बाइज़्जत किताब को भी•

202. कोई झूठ दाखिल नहीं हो सकता उसमें, माज़ी में या मुस्तकविल में;* एक नुज़ूल सबसे हिकमत वाले, काबिले तारीफ की तरफ से•

अल्लाह के वादे
*का रसूल**

203. जो कहा गया है तुम्हें है ठीक ठीक जो कहा गया था पिछले रसूलों को• तुम्हारे रब रखते हैं मगफरत, और वो रखते हैं दर्दनाक आज़ाब भी•

**41:41 लफ्ज़ "ज़िक्र" मुखातिव करता है कुरान के रियाज़ी कोड कि तरफ, जैसा साफ किया गया है 38:1 में•*

**41:42 बड़े कामों में से एक कुरान के रियाज़ी मौजज़े का है हिफाजत करना हर हुरूफ और कुरान के हर पेहलू का• इसतरह, कोई भी दखल अंदाज़ी फौरन पहचान ली जाती है (अपस• 1 और 24)•*

*41:43 रियाज़ी सबूत दिखाता है कि यह आयत मुखातिब करता है अल्लाह के वादे के रसूल कि तरफ• जमा करते हुए "रशाद" की जिमेटरिकल वेल्यु (505), साथ "खलीफा" की वेल्यु (725), साथ यह आयत नंबर (43), हम पाते हैं 505+725+43=1273=19x67• देखें अपेन्डिक्स 2•

ज़बान की कोई एहमियत नहीं

204. अगर हम बनाते उसे एक गैर अरबी कुरान उन्होंने कहा होता, "वो क्यों आया नीचे उस ज़बान में?" चाहे वो हो अरबी या गैर अरबी, कहो, "उनके लिए जो हैं ईमानवाले, वो है एक हिदायत करने वाला और शफा• जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं, वो होंगे बहरे और अंधे उसके लिए, ऐसे जैसे वो बहुत दूर से मुखातिब किये जा रहे हो•"

205. हमने दिया है मूसा को आसमानी किताब और वो भी बहेस की गई थी• अगर वो तुम्हारे रब की तरफ से पहले से मुकर्रर किये गये फैसले के लिए न होता, उनका इंसाफ कर दिया गया होता फौरन• वाकई, वो पनाह देते हैं बहुत सारे शकों को•

206. जो कोई नेककारी वाले कामों को करता है, करता है उसके खुदके अच्छे के लिए, और जो कोई बुरे कामों को करता है करता है उसके खुदके नुकसान के लिए• तुम्हारे रब नहीं हैं कभी नाइंसाफ लोगों की तरफ•

बुतें उनकी पैरवी करने वालों को ठुकराते हैं

207. उनके पास है इल्म वक्त (*दुनिया के खत्म होने*)* के बारे में• कोई फलें उभरते नहीं है उनके गिलाफों से, नाहीं कोई औरत हामिला होती है या देती है जनम, बगैर उनके इल्म के• वो दिन आयेगा जब वो उनको पूछेंगे: "कहाँ हैं वो बुतें जिनको तुम कायम करते हो मेरे सिवाए? वो कहेंगे, "हम ऐलान करते हैं आपको कि हम में से कोई भी गवाही नहीं देता उसकी•"

208. बुतें जिनको उन्होंने बुत बनाया ठुकरा देंगे उनको, और वो एहसास करेंगे कि वहाँ कोई छुटकारा नहीं होगा•

थाली के बैंगनें

209. इंसान अच्छी चीज़ों की इल्तेजा करने के लिऐ कभी नहीं थकता • और जब मुसीबत पड़ती है उसपर, वो हो जाता है नाउम्मीद, परेशान•

210. और जब हम बक्शते हैं उसे कुछ मुसीबत के बाद, वो कहता है, "यह मेरा है• मैं नहीं मानता की वक्त कभी भी गुज़र जायेगा• अगर मैं लौटाया भी जाता हूँ मेरे रब की तरफ, मैं पाऊंगा उनके पास बेहतर चीज़ें•" बिला शक, हम इत्तेला करेंगे काफिरों को उनके कामों के बारे में, और हवाले करेंगे उनको सख्त आज़ाब कि तरफ•

211. जब हम बक्शते हैं इंसान को, वो पलट जाता है, वो दूर और बहुत दूर बहता जाता है, और जब वो झेलता है कोई आफत, वो इल्तेजा करता है ज़ोर से•

212. ऐलान करो: "क्या अगर वाकई यह है **अल्लाह** की तरफ से, फिर तुम तय करो उसे ठुकराने का? कौन है ज़्यादा दूर बहका हुआ उस से जो तय करता है इसकी मुखालिफत करने का?"

*एक बड़ी पेशीनगोई**

213. हम दिखायेंगे उनको हमारे सबूतें आफाकों, और उनके खुदके अंदर में, जब तक वो एहसास न कर लें कि यह है सच•* क्या तुम्हारे रब काफी नहीं हैं, एक गवाह जैसे सारी चीज़ों के?

214. वाकई, वो हैं शक से भरे उनके रब से मिलने के बारे में• वो हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

****

सुरह 42: मशवराह
(अल शूरा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

*41:47 अल्लाह ने नाज़िल किया है यह इल्म उनके वादे के रसूल के जरिये से (अपेन्डिक्स 25)•

*41:53 हुरूफें जो बनाते हैं इन आयतों को हैं 19, और उनका जिमेटरिकल वेल्यु जमा होता है 1387 को, 19x73• यह बड़ी पेशीनगोई, एक साथ 9:33, 48:28, 61:9 और 110:2 के, हमें इत्तेला करते हैं की पुरी दुनिया मुकर्रर की गई है कबूल करने के लिए कुरान को अल्लाह का ना बदला हुआ पैगाम (देखें अपेन्डिक्स 38)•

1. हा• म•*

2. ऐ• स• कॅ•*

3. इल्हाम करने वाले तुम्हें, और तुमसे पहले उनको हैं **अल्लाह**, कादिरे मुतलक, सबसे हिकमत वाले•

4. उनकी हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन पर, और वो हैं सबसे ऊँचे, बड़े•

5. आसमानें उनके ऊपर तकरीबन रेज़ा रेज़ा हो जाते हैं उनके लिए एहतराम कि वजह से, और फरिश्ते तारीफ और बड़ाई करते हैं उनके रब की, और वो जो ज़मीन पर हैं उनके लिए माफी मांगते हैं• बेशक, **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहमवाले•

6. जो कोई दूसरे रबों को कायम करते हैं उनके अलावा, **अल्लाह** हैं वाहिद जो हैं उनके ज़िम्मेदार; तुम नहीं हो उनके वकील•

7. हम इस तरह नाज़िल करते हैं तुम्हारी तरफ एक अरबी कुरान मरकज़ी जमात को खबरदार करने के लिए और सारे उसके इर्द गिर्द, और खबरदार करने के लिए हाज़िर किये जाने के दिन के बारे में जो है अटल• कुछ होंगे खत्म जन्नत में, और कुछ जहन्नम में•

8. अगर **अल्लाह** ने चाहा होता, उन्होंने बनाया होता उनको एक जमात• लेकिन वो आज़ाद करते हैं उनकी रहमत में जिसकिसी को वो चाहते हैं• जहाँ तक खतावारें, उनके पास कोई मालिक नहीं, नाहीं एक मददगार•

9. क्या उन्होंने पाया दूसरे रबों को उनके सिवाए? **अल्लाह** हैं सिर्फ रब और मालिक• वो हैं वाहिद जो दोबारा ज़िंदा करते हैं मुर्दे को, और वो हैं जो हैं कादिरे मुतलक•

10. अगर तुम इस पैगाम के किसी हिस्से पर बहेस करो, इसके लिए इंसाफ करना रहता है **अल्लाह** के पास• ऐसे हैं **अल्लाह** मेरे रब• उनमें मैं भरोसा करता हूँ, और उनकी तरफ मैं हूँ फरमानबरदार•

कोई बराबरी नहीं करता अल्लाह की

11. शुरू करने वाले आसमानों और ज़मीन के• उन्होंने पैदा किया तुम्हारे लिए तुम्हारे खुद में से जोड़ों को—और जानवरों के लिए भी• वो इस तरह मुहय्या करते हैं तुम्हें ज़रप करने के लिए ज़रियों के साथ• वहाँ कुछ भी नहीं जो बराबरी करता है उनकी• वो हैं सुनने वाले, देखने वाले•

12. उनके पास है मुकम्मल काबू आसमानों और ज़मीन का• वो हैं वाहिद जो बढ़ाते हैं नियामत को जिसकिसी के लिए वो चाहते हैं, या कम करते हैं उसे• वो हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

सिर्फ एक मज़हब

13. उन्होंने फरमान किया तुम्हारे लिए वही मज़हब जो फरमान किया गया था नूह के लिए, और जो हमने तुमको इल्हाम किया, और जो हमने फरमान किया इब्राहीम, मूसा, और ईसा के लिए: "तुम्हें इस वाहिद मज़हब को बरकरार रखना चाहिए, और न बांटो उसे•"

तौहीद परस्तों के मुकाबले बुतपरस्ती करने वाले

बुत परस्ती करने वाले बहुत ज़्यादा नापसंद करेंगे जिसकी तरफ तुम उनको दावत देते हो करने को• **अल्लाह** आज़ाद करते हैं खुद की तरफ जिसकिसी को वो चाहते हैं; वो हिदायत करते हैं खुदकी तरफ सिर्फ उनको जो पूरी तरह से फरमानबरारी करते हैं•

14. अफसोसके, वो बट गये फिरकों में सिर्फ इसके बाद की इल्म आ चुका था उनकी तरफ, उनके आपस में जलन और नाराज़गी कि वजह से• अगर वो पहले से तय किये

गये फैसले के लिए न होता तुम्हारे रब कि तरफ से उनको मोहलत देने का एक पक्के दरमियानी वक्त के लिए, उनका इंसाफ कर दिया गया होता फौरी तौर पर•

वाकई, बाद कि नस्लें जिन्होंने विरासत में पाया आसमानी किताब हैं शकों से भरे•

**42:1 ये इनिशियलें कायम करते हैं एक एहम हिस्सा कुरान के मौजज़े का (फुटनोट 40:1)•*

**42:2 यह है सिर्फ सुरह जहाँ हम देखते हैं इनिशियलें ऐ•स•कॅ• (ऐन सीन कॉफ), और टोटल वाकेयात इन तीन हुरूफों का इस सुरह में है 209, 19x11• इस के अलावा, हुरूफ "कॅ" वाकै होता है इस सुरह में 57 बार, 19x3• दूसरी सिर्फ सुरह जहाँ हम देखते हैं इनिशियल "कॅ" है सुरह 50, और यह हुरूफ उसे सुरह में वाकै होता है 57 बार (देखें अपेन्डिक्स 1)•*

पैगाम ईसाईयों और
यहूदियों के लिए

15. यह है जो तुम्हें नसीहत करना चाहिए, और साबित कदमी से कायम रहो जिसका तुम्हें हुक्म किया गया है करने के लिए, और न चलो उनके ख्वाहिशों पर• और ऐलान करो: "मैं **अल्लाह** कि तरफ से नीचे भेजी गई सारी आसमानी किताबों में ईमान रखता हूँ• मुझे हुक्म किया गया था तुम्हारे बीच बराबरी से इंसाफ करने के लिए• **अल्लाह** हैं मेरे रब और तुम्हारे रब• हमारे पास हैं हमारे आमालें और तुम्हारे पास है तुम्हारे आमालें• कोई बहेस नहीं है हमारे और तुम्हारे बीच• **अल्लाह** जमा करेंगे हम सारों को एक साथ; उनकी तरफ है आखरी मुकद्दर•"

16. जो कोई **अल्लाह** के बारे में बहेस करते हैं, उनका पैगाम पाने के बाद, उनकी बहेस रद्द की गई है उनके रब के पास• उन्होंने हासिल किया है मलामत, और हकदार हुए हैं एक सख्त आज़ाब के•

17. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने भेजा नीचे आसमानी किताब, पहुँचाने के लिए सच्चाई और कानून• तुम सिर्फ इतना जानो, वक्त *(इंसाफ का दिन)* हो सकता है बहुत करीब•

ईमानवाले बाखबर
इंसाफ के दिन से

18. ललकारते हैं उसे हैं वो जो ईमान नहीं रखते उस में• जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं, वो फिक्रमंद हैं उसके बारे में, और वो जानते हैं कि वो है सच• बेशक, जो कोई वक्त को इंकार करते हैं वो दूर गुमराह हो गये हैं •

19. **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ उनके सारे मखलूकों से; वो मुहय्या करते हैं जिसकिसी के लिए वो चाहते हैं• वो हैं ताकतवर, कादिरे मुतलक•

20. जो कोई तलाश करता है अगली ज़िंदगी के इनामों को, हम ज़रप करते हैं इनामों को उसके लिए• और जो कोई तलाश करता है इस दुनिया कि चीज़ों को, हम देते हैं उसे उसमें से, फिर वो नहीं पाता है कोई हिस्सा अगली ज़िंदगी में•

बुतें:
*ऐजाद करते हैं नये मज़हबों के कानूनें**

21. वो पैरवी करते हैं बुतों की जो फरमान करते हैं मज़हबी कानूनों को उनके लिए जो कभी भी इजाज़त नहीं दिया गया **अल्लाह** की तरफ से• अगर वो पहले से मुकर्रर किये गये फैसले के लिए न होता, उनका इंसाफ कर दिया गया होता फौरी तौर पर• वाकई, खतावारों ने हासिल किया है एक र्दरनाक आज़ाब•*

22. तुम देखोगे खतावारों को परेशान सारी चीज़ों के बारे में जो उन्होंने किया था; सारी चीज़ें वापस आयेंगीं और परेशान करेंगीं उनको• जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, वो होंगे जन्नत के बागों में• वो पायेंगे जो कुछ वो चाहते हैं उनके रब की तरफ से• यह है बड़ी रहमत•

23. यह है अच्छी खबरें **अल्लाह** की तरफ से उनके बंदों के लिए जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं• कहो, "मैं नहीं पूछता तुमसे किसी मज़दूरी के लिए• मैं तुम में से हर एक को ज़रूर पूछता हूँ ख्याल रखने को तुम्हारे खुदके रिश्तेदारों का•" जो कोई करे एक नेककारी वाला काम, हम ज़रप करते हैं उसका इनाम उसके लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, कद्रदान•

**42:21 आज के मुस्लिम दुनिया का इस्लाम इतना बिगाड़ दिया गया है, वो बन चुका है एक शैतानी फिरका• उलमा, या मज़हबी आलिमों ने, जोड़ा है कई बेतुके कानूनें, मनाईयाँ, लिबास के तरीके, गिज़ाई कायदे, और मज़हबी तरीके जो कभी इजाज़त नहीं दिये गये अल्लाह की तरफ से• यह है एहम वजहों में से एक अल्लाह के वादे के रसूल को भेजने के लिए (9:31, 33:67, और अपेन्डिक्स 33)•*

अल्लाह मिटाते हैं झूठ को और
*कायम करते हैं सच को**

24. क्या वो कहते हैं, "उसने *(रशाद ने)** झूठों को गढ़ा है **अल्लाह** के बारे में!"? अगर **अल्लाह** चाहते, उन्होंने बंद कर दिया होता उनके ज़हन को, लेकिन **अल्लाह** मिटाते हैं झूठ और कायम करते हैं सच उनके लफ्ज़ों से• वो हैं पूरी तरह वाकिफ सबसे अंदरूनी ख्यालों से•

25. वो हैं वाहिद जो कबूल करते हैं उनके बंदों कि तरफ से तौबा, और माफ करते हैं गुनाहों को• वो हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें तुम करते हो•

26. उनका जवाब देने वाले वो हैं जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं• वो बरसायेंगे उनको उनकी रहमतों से• जहाँ तक काफिरें, उन्होंने हासिल किया है एक सख्त आज़ाब•

27. अगर **अल्लाह** बढ़ा दें उनके बंदों के लिए नियामत को, वो करेंगे खता ज़मीन पर• इस वजह से वो भेजते हैं उसे सही सही नपा हुआ जिसकिसी की तरफ वो चाहते हैं• वो हैं पूरी तरह वाकिफ और देखने वाले उनके बंदों के•

28. वो हैं वाहिद जो भेजते हैं नीचे बारिश इसके बाद कि वो नाउम्मीद हो चुके थे, और फैलाते हैं उनकी रहमत• वो हैं सिर्फ मालिक, सबसे काबिले तारीफ•

29. उनके सबूतों में से है पैदाईश आसमानों और ज़मीन की, और वो फैलाते हैं उनमें मखलूकों को• वो हैं काबिल उनको हाज़िर करने के लिए, जब वो चाहें•

सिर्फ एक अंजाम

30. कोई चीज़ जो होती है बुरी तुम्हारे लिए है तुम्हारे खुदके आमालों का एक नतीजा, और वो नज़रअंदाज़ करते हैं कई*(गुनाहों को तुम्हारे)*•

31. तुम कभी बच नहीं सकते, और तुम्हारे पास नहीं है कोई सिवाए **अल्लाह** के एक रब और मालिक जैसा•

32. उनके सबूतों में से एक हैं जहाज़ें जो तैरते हैं समंदर पर तैरना जैसे परचमों का•

33. अगर वो चाहते, उन्होंने ठहरा दिया होता हवाओं को, छोड़ते हुए उनको बेहरकत पानी के ऊपर• ये हैं सबूतें उनके लिए जो साबित कदमी से जमे रहते हैं, कद्रदान•

34. वो फनाह कर सकते हैं उनको, उनके खुद के कामों का एक नतीजा जैसा• बलिके, और वो नज़रअंदाज़ करते हैं कई *(गुनाहों को उनके)*•

35. जो कोई बहेस करते हैं हमारे सबूतों के खिलाफ पायेंगे कि उनके पास नहीं है कोई बुनियाद•

36. जो कुछ तुम्हें दिया गया है इस ज़िंदगी की आरज़ी चीज़ों से ज़्यादा कुछ नहीं• जो **अल्लाह** रखते हैं है कहीं बेहतर और दाईम, उनके लिए जो ईमान रखते हैं और उनके रब में भरोसा करते हैं•

सिफतें
ईमानवालों की

37. वो बचते हैं बड़े गुनाहों और बद इख्लाकी से, और जब गुस्सा किये जाते हैं वो करते हैं माफ•

38. वो उनके रब का जवाब देते हैं अदा करते हुए राबता नमाज़ें *(सलात)*• उनके मसले उनके आपस में तय किये जाते हैं वाजिब मशवरों के बाद, और हमारी नियामतों में से वो देते हैं *(खैरात को)*•

39. जब बड़ी नाइंसाफी पड़ती है उनपर, वो खड़े होते हैं उनके हकों के लिए•

40. हालांकी बराबरी वाला बदला एक नाइंसाफी के लिए है एक बराबरी वाला आज़ाब, जो कोई माफ करते हैं और नेककारी कायम रखते हैं इनाम दिये जाते हैं **अल्लाह** की तरफ से• वो बेइंसाफ को पसंद नहीं करते•

42:24 काफिरों ने जोड़ा 2 झूठे बयानों को सुरह 9 के आखीर में उनके बुत नबी मुहम्मद, को याद करने के लिए• अल्लाह ने नाज़िल किया है ज़बरदस्त सबूत इस बेअदबी को मिटाने और सच कायम करने के लिए• जोड़ते हुए जिमेटरिकल वेल्यू "रशाद खलीफा" (1230) की, साथ आयत नंबर (24), हम पाते हैं 1254, 19x66 (बराये करम देखें अपेन्डिक्सें 2 और 24 तफसीलों के लिए)•

2263 *113564*

41. यकीनन, जो कोई खड़े होते हैं उनके हकों के लिए, जब नाइंसाफी पड़ती है उनपर, नहीं कर रहे हैं कोई खता•

42. गलत वो हैं जो लोगों के साथ नाइंसाफी से पेश आते हैं, और चुनते हैं गुस्सा दिलाये जाने के बगैर अदावत• इन्होंने हासिल किया है एक दर्दनाक आज़ाब•

43. सब्र और माफी को चुनना झलकाता है सीरत कि एक सच्ची पुख्तगी•

44. जिसकिसी को **अल्लाह** गुमराह करते हैं नहीं पायेगा कभी कोई दूसरा रब, और तुम देखोगे ऐसे खतावारों को, जब वो देखेंगे आज़ाब, कहते हुए, "क्या हमें दूसरा मौका मिल सकता है?"

45. तुम देखोगे उनको उसका सामना करते हुए, बेइज़्जत किये गये और ज़लील किये गये, और देखते हुए, इसके बावजूद कोशिश करते हुए नज़र चुराने की• वो जिन्होंने ईमान रखा ऐलान करेंगे: "असल खोने वाले हैं वो जिन्होंने खो दिया उनकी रूहों को और उनके कुम्बों को हश्र के दिन पर• खतावारें हकदार हुए हैं एक दाईम आज़ाब का•"

46. वहाँ नहीं होंगे साथियें उनकी मदद करने के लिए **अल्लाह** के खिलाफ• जिसकिसी को **अल्लाह** गुमराह करते हैं नहीं किये जा सकते कभी हिदायतयाफ्ता•

47. तुम्हें तुम्हारे रब का जवाब देना चाहिए इस से पहले कि एक दिन आये जो मुकर्रर किया गया है अटल **अल्लाह** की तरफ से• वहाँ नहीं होगी पनाह तुम्हारे लिए उस दिन पर, नाहीं एक वकील•

सिर्फ मकसद रसूल का

48. अगर वो पलट जायें, हमने नहीं भेजा तुम्हें उनका निगेहबान जैसा• तुम्हारा सिर्फ मकसद है पैगाम को पहुँचाना• जब हम बरसाते हैं इंसानों को रहमत के साथ, वो बन जाते हैं मगरूर, और जब मुसीबत अज़ियत देती है उनको, उनके खुदके आमालों का एक नतीजा जैसा, इंसानें बदल जाते हैं काफिरों में•

49. **अल्लाह** की है बादशाहत आसमानों और ज़मीन की• वो पैदा करते हैं जो कुछ वो चाहते हैं, अता करते हुए बेटियाँ जिसकिसी के लिए वो चाहते हैं, और अता करते हुए बेटे जिस किसी के लिए वो चाहते हैं•

50. या, वो मर्दों और औरतों को एक दूसरे से शादी करने दें, फिर कर दें जिसकिसी को वो चाहें बेऔलाद• वो है सब कुछ जानने वाले, कादिरे मुतलक•

कैसे अल्लाह राबता कायम करते हैं हमारे साथ

51. कोई इंसान राबता कायम नहीं कर सकता **अल्लाह** के साथ सिवाए इल्हाम के ज़रिये, या एक आड़ के पीछे से, या भेजते हुए एक रसूल जिसके ज़रिये वो नाज़िल करते हैं जो वो चाहते हैं• वो हैं सबसे ऊँचे, सबसे हिकमत वाले•

52. इस तरह, हमने इल्हाम किया तुम्हारे लिए एक वही ऐलान करते हुए हमारे एहकामात• तुम्हें कोई इल्म नहीं था आसमानी किताब, या अकीदे के बारे में• इसके बावजूद हमने बनाया इसे एक रहनुमा हिदायत करने के लिए जिसकिसी को हम चुने हमारे बंदों में से• यकीनन, तुम हिदायत करते हो एक सीधे रास्ते में•

53. रास्ता **अल्लाह** का, जिनकी है सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर• बेशक, सारे मामले काबू किये गये है **अल्लाह** की तरफ से•

****

सुरह 43: गहने (अल ज़ुखरूफ)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ह• म•*

2. और वाज़े करती आसमानी किताब•

*43:1 देखें फुटनोट 40:1• फ्रिक्युन्सी वाके होने की हुरूफों "ह" (हा) और "म" (मीम) की सात ह•म•-इनिशियल की गई सूरतों में है 292, और 1855, उस तरतीब में• यह जुड़ते हैं 2147 को, या 19x113•

2271 113854

3. हमने बनाया है उसे एक अरबी कुरान, ताके तुम समझ सको•*

4. वो महफूज़ रखा गया है हमारे पास असल नक्ल में, काबिले इज़्जत और हिकमत से भरा•

5. क्या हम बस नज़रअंदाज़ करें हकीकत को कि तुम गुज़र गये हो हदों से?*

निजात के लिए मनसूबा

6. हमने भेजा है कई एक नबी को पिछली नस्लों कि तरफ•

7. हर बार एक नबी गया उनकी तरफ, उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया•

8. इस वजह से, हमने फनाह किया लोगों को जो थे इनसे भी ज़्यादा ताकतवर• हम इस तरह कायम करते हैं मिसालों को पिछली कौमों से•

9. अगर तुम उनसे पूछो, "किसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को," वो कहेंगे, "कादिरे मुतलक, सब कुछ जानने वाले ने पैदा किया है उनको•"

10. वो हैं वाहिद जिन्होंने ज़मीन को रहने के काबिल बनाया तुम्हारे लिए, और बनाया सड़कों को उसमें तुम्हारे लिए, ताके तुम चलो सही रास्ते पर•

11. वो हैं वाहिद जो भेजते हैं आसमान से नीचे पानी, सही नाप में, दोबारा ज़िंदा करने के लिए मुर्दा ज़मीनों को उस से• उसी तरह, तुम भी दोबारा ज़िंदा किये जाओगे•

12. वो है वाहिद जिन्होंने पैदा किया सारी किस्मों को, जोड़ों में *(मर्दाना और ज़नाना)*, और उन्होंने पैदा किया तुम्हारे लिए जहाज़ें और मवेशी सवारी के लिए•

13. जब तुम बैठते हो उन पर, तुम्हें कद्र करना चाहिए ऐसी एक रहमत का तुम्हारे रब की तरफ से, और कहो, "बड़ाई हो वाहिद की जिन्होंने काबू किया इसे हमारे लिए• हम उसे काबू नहीं कर सकते थे हमारे खुद की तरफ से•

14. "हम आखिरकार लौटते हैं हमारे रब की तरफ•"

फरिश्ते बेटियों जैसे: एक बेअदबी

15. वो यहाँ तक हवाले करते हैं उनके लिए एक हिस्सा उनके खुदकी खिलकत से! यकीनन, इंसान है जबरदस्त तौर पर नाकद्रदान•

16. क्या उन्होंने चुना है उनकी खिलकतों में से बेटियाँ खुद के लिए, जबकी बक्शते हुए तुम्हें बेटों से?

17. जब उनमें से एक को दी जाती है खबर *(एक बेटी की)* जैसा वो दावा करते हैं सबसे रहमवाले के लिए, उसका चेहरा पड़ जाता है सियाह अफसोस और गुस्से से!

18. *(वो कहते हैं,)* "क्या अच्छा है एक औलाद के बारे में जिसकी परवरिश की जाती है खुबसूरत होने के लिए, और मदद नहीं कर सकती जंग में?"

19. उन्होंने दावा किया की फरिश्ते, जो हैं बंदे सबसे रहमवाले के, हैं ज़नाने! क्या वो गवाह हुए हैं उनकी खिलकत के? उनके दावे ज़प्त किये जाते हैं, और उनसे पूछा जायेगा•

20. उन्होंने यहाँ तक कहा, "अगर सबसे रहम वाले चाहते, हमने उनकी इबादत नहीं की होती•" उनके पास नहीं है कोई बुनियाद ऐसे एक दावे के लिए; वो सिर्फ अंदाज़ा लगाते हैं•"*

21. क्या हमने दिया है उनको एक किताब इससे पहले, और वो बरकरार रखते हैं उसे?

43:3 अरबी सबसे काबिल ज़बान है, खास तौर पर इज़्हार करने में एहकामात, फरमाने और कामिल कानूनें• इस वजह से नुज़ूल कुरान का अरबी में सारे लोगों के साफ समझ के लिए, बावजूद उनकी ज़बानों के• देखें अपेन्डिक्स 4 तफसीलों के लिए•

43:5 यह मुखातिब करता है हमारी असल गुनाह कि तरफ जैसा तफसील किया गया है तार्रुफ और अपेन्डिक्स 7 में•

**43:20 बुतपरस्ती करने वाले कभी अल्लाह को इल्ज़ाम नही दे सकते उनकी बुतपरस्ती के लिए, चूँकी हमारे पास है पूरी आज़ादी चुनने की सिर्फ अल्लाह की इबादत करना, या नहीं•*

विरासत में पाये रिवाजों कि मलामत की गई

22. असलियत है: उन्होंने कहा, "हमने हमारे वालिदैन को पाया जारी रखते हुए कुछ तरीके, और हम चल रहे हैं उनके नक्शो कदम पर•"

23. हर बार, जब हमने भेजा है एक खबरदार करने वाले को किसी कौम की तरफ,उस कौम के रहबरें कहते, "हमने पाया हमारे वालिदैन को चलते हुए कुछ तरीकों पर, और हम जारी रहेंगे उनके नक्शो कदम में•"

24. *(रसूल)* कहता, "क्या अगर मैं लाया बेहतर हिदायत उस से जिसे तुमने विरासत में पाया तुम्हारे वालिदैन से?" वो कहते, "हम काफिरें हैं पैगाम में जो तुम लाये•"

25. इस वजह से, हमने बदला चुकाया उनको• ध्यान दो ठुकराने वालों के लिए नतीजों को•

इब्राहीम की मिसाल

26. इब्राहीम ने कहा उसके वालिद और उसके लोगों को, "मैं ठुकराता हूँ उसे जिसकी तुम इबादत करते हो•

27. "सिर्फ वाहिद जिन्होंने शुरू किया मुझ को हिदायत कर सकते हैं मेरी•"

28. मिसाल *(इब्राहीम का)* बनाया गया था एक सदा रहने वाला सबक आने वाली नस्लों के लिए; शायद वो निजात दिला सकें उनकी रूहों को•

29. वाकई, मैंने दिया इन लोगों और उनके पुरखों को काफी मौके, फिर सच्चाई आई उनकी तरफ, और एक वाज़ें करने वाला रसूल•

30. जब सच्चाई आई उनकी तरफ, उन्होंने कहा, "यह है जादू, और हम काफिरें हैं उस में•"

मुहम्मद का मज़ाक उड़ाया गया

31. उन्होंने कहा, "अगर सिर्फ यह कुरान भेजा जाता नीचे दो कौमों *(मक्का या यातरिब)* से दूसरे आदमी के ज़रिये, जो है मशहूर!"

32. क्या वो हैं जो मुकर्रर करते हैं तुम्हारे रब की रहमत? हमने मुकर्रर किया है उनके हिस्से इस ज़िंदगी में, ऊँचा करते हुए उनमें से कुछ दूसरों के ऊपर दर्जो में, ताके उनको एक दूसरे कि खिदमत करने दें• तुम्हारे रब की तरफ से रहमत है कहीं बेहतर किसी चीज़ से वो जमा करते हों•

इस दुनिया की चीज़ें:
बस है जो काफिरें पाते हैं

33. अगर यह ना होता कि सारे लोग बन जाते एक *(कुफ्र करने वाली)* जमात, हर किसी को जो कुफ्र करता है सबसे रहमवाले में हमने अता किया होता महलें चांदी की छतों, और सीड़ियाँ के साथ जिसपर वो चढ़ सकते•

34. उनके महलों को होते गैरमामूली दरवाज़े, और आराम देह बिछौने•

35. इसके अलावा कई गहने• ये सारे है आरज़ी चीज़े इस निचली ज़िंदगी के• अगली ज़िंदगी—तुम्हारे रब के पास—है कहीं बेहतर नेककर के लिए•

*न दिखने वाले, शैतानी, साथियें**

36. जो कोई नज़रअंदाज़ करता है सबसे रहमवाले का पैगाम, हम मुकर्रर करते हैं एक शैतान उसका मुसलसल साथी होने के लिए•*

37. ऐसे साथियें फेरेंगे उनको रास्ते से, फिर भी मानने देंगे उनको कि वो हैं हिदायतयाफ्ता•

**43:36-39 हम में से हर एक के पास है एक मुसलसल साथी जैसा शैतान का एक नुमाइंदा (अपे• 7)•*

38. जब वो हमारे सामने आयेगा वो कहेगा, "आह काश तुम इतना दूर होते मुझसे जितना दो मशरिकें।* क्या एक अफसोसनाक साथी!"

39. वो दिलासा नहीं दिलायेगा तुम्हें उस दिन पर, खतावारें जैसे, कि तुम दोनों हिस्सा लोगे आज़ाब में।

अल्लाह के वादे
का रसूल

40. क्या तुम बहरे को सुना सकते हो; क्या तुम अंधे को दिखा सकते हो, या उनको जो दूर गुमराह हैं?

41. चाहे हम तुमको मरने दें उस से पहले या नहीं, हम यकीनन बदला देंगे उनको।

42. या, हम दिखायें तुम्हें *(आज़ाब)* हमने वादा किया उनके लिए। हम हैं पूरे काबू में उनपर।

43. तुम्हें साबित कदमी से नसीहत करना चाहिए जो नाज़िल हुआ है तुम्हारी तरफ; तुम हो सही राह में।*

44. यह एक पैगाम है तुम्हारे और तुम्हारे लोगों के लिए; तुम सारे सवाल किये जाओगे।

45. जांचो रसूलों को हमने भेजा तुमसे पहले: "क्या हमने कभी मुकर्रर किया है किसी दूसरे खुदाओं को— सबसे रहमवाले के सिवाए—इबादत किये जाने के लिए?"

46. मिसाल के लिए, हमने भेजा मूसा को हमारे सबूतों के साथ फिरऔन और उसके बुर्जुगों कि तरफ, ऐलान करते हुए: "मैं हूँ एक रसूल कायनात के रब की तरफ से।"

47. जब उसने दिखाया उनको हमारे सबूतें, वो उनपर हंसे।

मूसा और
फिरऔन

48. हर निशानी हमने दिखाया उनको थी उससे बड़ी जो थी उससे पहले। हमने मारा उनको प्लेगों से, शायद वो तौबा करें।

49. उन्होंने कहा, "ऐ तुम जादूगर, इल्तेजा करो तुम्हारे रब से हमारी तरफ से, चूँकी तुम्हारे पास है एक मुहायदा उनके साथ *(इस प्लेग को हटाने के लिए)*; हम फिर होंगे हिदायतयाफ्ता।"

50. लेकिन जैसे ही हमने हटाया उनकी मूसीबत को, वो पलट गये।

51. फिरऔन ने ऐलान किया उसके लोगों को, "ऐ मेरे लोगों, क्या मैं नहीं रखता बादशाहत मिस्र पर, और ये बेहती हुई नदियें हैं मेरे लिए? क्या तुम नहीं देखते?

52. "कौन है बेहतर; मैं या वो जो है निचला और मुश्किल से बात कर सकता है?

53. "क्यों वो नहीं रखता है एक खज़ाना सोने का; क्यों फरिश्ते साथ नहीं होते हैं उसके?"

54. उसने इस तरह बेवकूफ बनाया उसके लोगों को, और उन्होंने उसकी अताअत की; वो थे बदकार लोग।

55. जब वो इसरार करते रहे हमारी मुखालिफत करने में, हमने सज़ा दिया उनको और डुबो दिया उन सारों को।

56. हमने बनाया उनको एक मिसाल और एक मिसाल दूसरों के लिए।

ईसा:
एक और मिसाल

57. जब मरयम का बेटा बयान किया गया था एक मिसाल जैसा, तुम्हारे लोगों ने उसे नज़रअंदाज़ किया।

58. उन्होंने कहा, "क्या हमारे खुदाओं कि इबादत करना बेहतर है, या उनकी इबादत करना?" उन्होंने यह कहा सिर्फ बहेस करने के लिए तुम्हारे साथ। वाकई, वो हैं लोग जो जुड़ गये हैं मुखालिफों के साथ।

**43:38* "मशरिकें" के मायने है सूरज के निकलने, चाँद के निकलने, और आसमानी अंबारों के निकलने के जगहें।*

**43:43 जमा "रशाद खलीफा" का जिमेटरिकल वेल्यु (1230) साथ 43 है 1273, 19x67।*

59. वो एक बंदे से ज़्यादा कुछ नहीं था जिसे हमने बक्शा, हमने भेजा उसे एक मिसाल जैसा बनी इस्राईल के लिए•

60. अगर हम चाहते, हमने बनाया होता तुम्हें फरिश्ते जो आबाद होते और औलाद पैदा करते ज़मीन पर•

*ईसा और दुनिया का खत्म होना**

61. वो निशानी होना चाहिए दुनिया के खत्म होने का जानने के लिए,* ताके तुम अब किसी शक को पनाह न दे सको उसके बारे में• तुम्हें मेरी पैरवी करनी चाहिए; यह है सही रास्ता•

62. शैतान को तुम्हें पलटने न दो; वो है तुम्हारा सबसे संगीन दुश्मन•

63. जब ईसा गया सबूतों के साथ, उसने कहा, "मैं लाता हूँ तुम्हारे लिए हिकमत, और कुछ मामलों को वाज़े करने के लिए जिसमें तुम बहेस करते हो• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना और मेरी अताअत करनी चाहिए•

64. "**अल्लाह** हैं मेरे रब और तुम्हारे रब, तुम्हें सिर्फ उनकी इबादत करनी चाहिए• यह है सही रास्ता•"

65. मुखालिफों ने बहेस किया आपस में• हाय हो उनको जो हद से निकलते हैं एक र्दनाक दिन के आज़ाब से•

66. क्या वो इंतेज़ार कर रहे हैं वक्त *(इंसाफ के दिन)* का उनकी तरफ आने के लिए अचानक जब वो उसकी सबसे कम उम्मीद कर रहे हैं?

67. करीब दोस्तें उस दिन पर होंगे दुश्मनें एक दूसरे के, सिवाए नेककारों के•

नेककार

68. ऐ मेरे बंदों, तुम्हें नहीं होगा कोई खौफ उस दिन पर, नाहीं तुम होंगे गमज़दा•

69. ये हैं वो जिन्होंने ईमान रखा हमारी आयतों में, और थे फरमानबरदारें•

70. दाखिल हो जन्नत में, एक साथ तुम्हारे जोड़ों के, और जश्न मनाओ•

71. उनको पेश किये जायेंगे सोने की सीनियाँ और प्याले, और वो पायेंगे सारी चीज़ें जो दिलें आरज़ू करें और आँखें जिसके लिए ख्वाहिशमंद हो• तुम रहते हो उसमें हमेशा के लिए•

72. ऐसी है जन्नत जिसे तुम पाओगे, तुम्हारे कामों के लिए बदले में•

73. तुम पाओगे उसमें सारे किस्मों के फलें, जिस से तुम खाओगे•

74. यकीनन, मुजरिम रहेंगे जहन्नम कि आज़ाब में हमेशा के लिए•

75. कभी भी आज़ाब उनके लिए कम नहीं किया जायेगा; वो उसमें महदूद कर दिये जायेंगे•

76. वो हम नहीं हैं जिसने उनको गलत किया; ये वो हैं जिन्होंने गलत किया उनके खुदके रूहों को•

77. वो इल्तेजा करेंगे: "ऐ मालेक, तुम्हारे रब को हमें पूरा खत्म करने दो•" वो कहेंगा, "तुम रह रहे हो हमेशा के लिए•

वो सच से नफरत करते हैं

78. "हमने दिया है तुमको सच, लेकिन तुम में से ज़्यादा सच से नफरत करते हैं•"

79. क्या उन्होंने साज़िश किया है कोई साज़िश? हम भी साज़िश कर रहे हैं•

80. क्या वो सोचते हैं हम नहीं सुनते उनके राज़ों और साज़िशों को? हाँ वाकई; हमारे रसूलें हैं उनके साथ, ज़प्त करते हुए•

81. ऐलान करो: "अगर सबसे रहमवाले को वाकई होता एक बेटा, मैं फिर भी होता सबसे पहला इबादत करने वाला•"

**43:61 जैसा अपेन्डिक्स 25 में तफसील किया गया है, दुनिया का खत्म होना दिया गया है कुरान में, और ईसा कि पैदाईश ने मुहय्या किया एहम निशानियों में से एक कि हिसाबें हैं सही• हम सीखते हैं की दुनिया खत्म होगी साल 2280 (19x120) में ईसा कि पैदाईश के बाद (देखें 47:18)• इसके अलावा, दोनों चांद का साल (1710) और सूरज का साल (2280) तकसीम होते हैं 570 (19x30) से, सालों का अदद ईसा की पैदाईश से मुहम्मद की पैदाईश तक• इस तरह, ईसा की पैदाईश कि तारीख है एक निशानी•*

82. उनकी बड़ाई हो; वो हैं रब आसमानों और ज़मीन के, रब बड़ी सलतनत के साथ, कहीं ऊपर उनके दावों से•

83. उन्हें गलती करने और खेलने दो जब तक वो मिले उनके दिन से जो उनका इंतेज़ार कर रहा है•

84. वो हैं सिर्फ वाहिद जो हैं एक खुदा आसमान में और एक खुदा ज़मीन पर• वो हैं सबसे हकीम, सब कुछ जाने वाले•

85. सबसे आला हैं वाहिद जो रखते हैं सारी बादशाहत आसमानों और ज़मीन की, और सारी चीज़ें उनके दरमियान• उनके पास है इल्म वक्त *(दुनिया के खत्म होने)* के बारे में, और उनकी तरफ तुम लौटाये जाओगे•

86. उनमें से कोई भी नहीं जिनको वो बुत बनाते हैं उनके अलावा रखते हैं कोई ताकत शिफाअत करने की, जब तक उनकी शिफाअत मुताबिक नहीं होती सच के साथ, और वो पूरी तरह जानते हैं•

87. अगर तुम उनसे पूछो किसने पैदा किया उनको, वो कहेंगे, "**अल्लाह•**" क्यों फिर वो बहेकते हैं?

88. यह ऐलान किया जायेगा: "ऐ मेरे रब, ये लोग ईमान नहीं रखते•"

89. तुम्हें उनको नज़रअंदाज़ करना और कहना चाहिए, "अमन;" वो यकीनन जान जायेंगे•

****

सुरह ४४: धुआं
(अल दुखान)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ह• म•

2. और यह रौशन ख्याल करती आसमानी किताब•

3. हमने भेजा है इसे नीचे एक मुबारक रात में, इसलिए के हम हैं खबरदार करने वाले•

4. उस *(आसमानी किताब)* में, सारे मामले हिकमत के वाज़े किये गये हैं•

5. वो है एक पहले से तय किया गया हुक्म हमारी तरफ से कि हम भेजते हैं रसूलों को•

6. यह है एक रहमत तुम्हारे रब कि तरफ से• वो हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

7. रब आसमानों और ज़मीन के, और सारी चीज़ें उनके दरमियान• अगर सिर्फ तुम मुतमईन होते!

8. कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए उनके• वो काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत; तुम्हारे रब और तुम्हारे पुरखों के रब•

9. वाकई, वो हैं शक्की, बेपरवाह•

*धुआं: एक बड़ी पेशीनगोई**

10. इसलिए, निगरानी करो दिन के लिए जब आसमान लाता है एक ज़बरदस्त धुआं•*

11. वो ढांक लेगा लोगों को; यह है एक दर्दनाक आज़ाब•

12. "हमारे रब, हटाईये इस आज़ाब को हमारे लिए; हम हैं ईमानवाले•"

*अल्लाह के वादे का रसूल**

13. अबकी जब देर हो चुकी है, वो याद करेंगे! एक वाज़े करने वाला रसूल आया था उनकी तरफ•*

14. लेकिन वो पलट गये उसकी तरफ से दूर, कहते हुए, "अच्छा पढ़ा लिखा, लेकिन दिवाना!"

15. हम हटायेंगे आज़ाब को कुछ देर के लिए; तुम जल्द ही पलटोगे•

16. दिन जब हम मारेंगे एक बड़ी मार, हम लेंगे बदला•

17. हमने आज़माया है फिरऔन के लोगों को उनसे पहले; एक इज़्ज़त वाला रसूल गया उनकी तरफ•

*44:10 सिर्फ दो निशानियाँ अभी बाकी हैं पूरी होने के लिए, यह धुंआ और याजूज और माजूज (अपेन्डिक्स 25)•

*44:13 जमा सुरह और आयत नंबरों का (44+13) है 57, 19x3, और यह कुरानी कोड ऐलान किया गया था अल्लाह के वादे के रसूल के ज़रिये (अपेन्डिक्सें 1, 2, और 26)•

18. ऐलान करते हुए: "मुझे सुनो, **अल्लाह** के बंदों• मैं हूँ एक ईमानदार रसूल तुम्हारी तरफ•"

19. और, "**अल्लाह** के खिलाफ खता न करो• मैं लाता हूँ तुम्हारी तरफ ताकतवर सबूतें•

20. "मैं पनाह तलाश करता हूँ मेरे रब और तुम्हारे रब में, अगर तुम मेरी मुखालिफत करो•

21. "अगर तुम ईमान रखने का इरादा न करो, तो बस छोड़ दो मुझे अकेला•"

22. उसके बाद, उसने इल्तेजा की उसके रब से: "ये हैं बदकार लोग•"

23. *(अल्लाह ने कहा,)* "सफर करो मेरे बंदों के साथ रात के दौरान; तुम्हारा पीछा किया जायेगा•

24. "पार करो समंदर को जल्दी से; उनके लश्करें डुबो दिये जायेंगे•"

25. इस तरह, उन्होंने छोड़ा पीछे कई बागें और चश्में•

26. अनाजें और एक आरामदेह ज़िंदगी•

27. नियामतें जिनका उन्होंने लुत्फ उठाया•

28. ये सब हमने कब्ज़ा लेने दिया दूसरे लोगों को•

29. नाहीं आसमान, नाहीं ज़मीन रोया उनपर, और उनको मोहलत नहीं दी गई थी•

30. इस दौरान में, हमने बचाया बनी इस्राईल को बेइज़्जत करने वाली एज़ारसानी से•

31. फिरऔन से; वो था एक ज़ालिम•

32. हमने चुना है उनको सारे लोगों में से, जानबूझकर•

33. हमने दिखाया उनको कितने सारे सबूतें, जिसने कायम किया एक बड़ी आज़माईश•

उम्मीद करो वैसे ही नतीजे

34. मौजूदा नस्लें कहती हैं,

35. "हम सिर्फ मरते हैं पहली मौत; हम कभी दोबारा ज़िंदा नहीं किये जायेंगे!

36. "लाओ हमारे पुरखों को वापस, अगर तुम हो सच्चे•"

37. क्या वो तूबा और उस से पहले दूसरे लोगों से बेहतर हैं? हमने फनाह किया उनको उनके जुर्मों के लिए•

38. हमने पैदा नहीं किया आसमानें और ज़मीन, और सारी चीज़ें उनके दरमियान, सिर्फ खेलने के लिए•

39. हमने पैदा किया उनको एक खास मकसद के लिए, लेकिन ज़्यादातर उनमें से नहीं जानते•

40. फैसले का दिन इंतेज़ार कर रहा है उन सारों का•

41. वो है दिन जब कोई दोस्त मदद नही कर सकता उसके दोस्त की किसी तरह से; किसी कि मदद नहीं होगी•

42. सिर्फ वो जो हासिल करते हैं रहमत **अल्लाह** कि तरफ से• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे रहम वाले•

काफिरें

43. यकीनन, कड़वेपन का दरख्त—

44. मुहय्या करेगा खाना गुनेहगार के लिए•

45. तेज़ाब कि तरह, वो उबलेगा पेटों में•

46. उबलना जैसे जहन्नमी शरबतों का•

47. लो उसे और फेंको उसे जहन्नम के बीच में•

48. फिर उंडेलो उसके सर पर भट्टी का आज़ाब•

49. "चखो इसे; तुम कितने ताकतवर थे, कितने इज़्जतदार•"

50. यह है जिसके लिए तुम शक करते थे•

नेककार

51. नेककार होंगे एक महफूज़ मकाम में•

52. लुत्फ उठाते हुए बागों और झरनों का•

53. पहनते हुए मखमल और साटिन; एक दूसरे के करीब•

54. हम अता करते हैं उनको शानदार जोड़े•

55. वो मज़े लेते हैं उस में सारे किस्मों के फलों का, पूरे अमन में•

*नेककार असल में मरते नहीं**

56. वो नहीं चखते मौत उसमें—पहली मौत के बाद*—और उन्होंने बचा लिया है उनको जहन्नम के आज़ाब से•

57. ऐसी है रहमत तुम्हारे रब की तरफ से• ऐसी है बड़ी फतेह•

58. हमने इस तरह वाज़े किया है उसे तुम्हारी ज़बान में, ताके वो तवज्जोह ले सकें•

59. इसलिए, इंतेज़ार करो; उनको भी इंतेज़ार करना होगा•

****

सुरह 45: घुटने के बल झुकते हुए (अल जासिया)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हा• म•

2. नुज़ूल इस आसमानी किताब का है **अल्लाह** की तरफ से, कादिरे मुतलक, सबसे हिकमत वाले•

3. आसमानें और ज़मीन हैं सबूतों से भरे ईमानवालों के लिए•

4. तुम्हारी खिलकत में भी, और खिलकत सारे जानवरों की, वहाँ हैं सबूतें लोगों के लिए जो हैं यकीनी•

5. इसके अलावा, तबदीली रात और दिन की, और नियामतें जो **अल्लाह** भेजते हैं नीचे आसमान से दोबारा ज़िंदा करने के लिए मुर्दा ज़मीनों को, और इंतेज़ाम हवाओं का; ये सब हैं सबूतें लोगों के लिए जो समझते हैं•

*कौनसी हदीस?**

6. ये हैं **अल्लाह** की आयतें जो हम बयान करते हैं तुम्हारे लिए सच्चाई से• कौनसी *हदीस* में बजाय **अल्लाह** और उनकी आयतों के वो ईमान रखते हैं?

7. हाय हो हर गढ़ने वाले, मुजरिम के लिए•*

8. एक वो जो उसके लिए बयान की गई **अल्लाह** की आयतों को सुनता है, फिर इसरार करता है तकब्बुर से उसकी राह पर, ऐसे जैसे उसने कभी नहीं सुना उनको• वादा करो उसे एक दर्दनाक आज़ाब•

9. जब वो सीखता है कोई चीज़ हमारी आयतों के बारे में, वो उनका मज़ाक उड़ाता है• इन्होंने हासिल किया है एक शर्मनाक आज़ाब•

10. इंतेज़ार कर रही है उनका जहन्नम• उनकी कमाईयाँ मदद नहीं करेंगी उनकी, नाही बुतें जिनको उन्होंने कायम किया था **अल्लाह** के सिवाए• उन्होंने हासिल किया है एक हौलनाक आज़ाब•

11. ये है एक रहनुमा, और जो कोई कुफ्र करते हैं उनके रब की इन आयतों में हासिल किया है लानत और एक दर्द नाक आज़ाब•

12. **अल्लाह** हैं वाहिद जिन्होंने हवाले किया समंदर को तुम्हारी खिदमत में, ताके जहाज़ें फिर सकें उस में उनके कानूनों के मुताबिक• तुम इस तरह तलाश करते हो उनकी नियामतें, ताके तुम कद्रदान हो सको•

13. उन्होंने हवाले किया तुम्हारी खिदमत में सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में; सारे उनकी तरफ से• ये हैं सबूतें लोगों के लिए जो गौर करते हैं•

14. कहो उनसे जो ईमान रखते हैं माफ करने के लिए उनको जो **अल्लाह** के दिनों की उम्मीद नहीं करते• वो अदा करेंगे हर किसी को पूरी तरह उसके लिए जो कुछ उन्होंने कमाया है•

**44:56 जैस तफसील किया गया है अपेन्डिक्स 17 में, नेककार असल में मरते नहीं; वो बढ़ते हैं सीधा उसी जन्नत को जहाँ आदम और हव्वा एक बार रहे थे• मुकाबला करो इस जुमले के साथ काफिरों का जुमला 40:11 में•*

**44:13 अल्लाह मलामत करते हैं "हदीस" नाम से, और इत्तेला करते हैं हमें कि वो हैं एक बेअदबी वाली झूट•*

15. जो कोई करता है नेककारी वाले कामों को करता है ऐसा उसके खुदके अच्छे के लिए, और जो कोई करता है बुरे कामों को करता है ऐसा उसके खुदके नुकसान के लिए• तुम्हारे रब की तरफ तुम लौटाये जाओगे•

16. हमने दिया है बनी ईस्राईल को आसमानी किताब, हिकमत, और नबूवत, और मुहय्या किया उनको अच्छी नियामतों के साथ; हमने इनायत किया उनपर ज़्यादा रहमतें किसी दूसरे लोगों से•

17. हमने दिया है इसमें उनके लिए साफ एहकामें• अफसोसके, उन्होंने बहेस नहीं किया इसपर जब तक इल्म नहीं आया था उनकी तरफ• यह है उनकी तरफ से जलन कि वजह से• यकीनन, तुम्हारे रब इंसाफ करेंगे उनका हश्र के दिन पर सारी चीज़ों के मुताल्लिक जो उन्होंने बहेस किया•

18. हमने फिर मुकर्रर किया तुमको सही कानूनों को कायम करने के लिए; तुम्हें इसकी पैरवी करनी चाहिए, और पैरवी न करो उनके इरादों की जो नहीं जानते•

19. वो कभी तुम्हारी बिल्कुल मदद नहीं कर सकते **अल्लाह** के खिलाफ• ये हैं खतावारें जो जोड़ते हैं खुदको एक दूसरे के साथ, जबकी **अल्लाह** हैं रब नेककारों के•

20. ये मुहय्या करता है वज़ाहतों को लोगों के लिए, और हिदायत और रहमत उनके लिए जो हैं यकीनी•

21. क्या वो जो बुरे काम करते हैं उम्मीद करते हैं की हम बरताव करेंगे उनके साथ उसी अंदाज़ में जैसा वो जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं? क्या उनकी ज़िंदगी और उनकी मौत हो सकती है एक सी?* वाकई गलत है उनका फैसला•

22. **अल्लाह** ने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को एक खास मकसद के लिए, ताके अदायगी करें हर रूह को जो कुछ उसने कमाया उसके लिए, बगैर ज़रासी भी नाइंसाफी के•*

आम किस्म की बुतपरस्ती:
अना एक खुदा जैसा

23. क्या तुमने ध्यान दिया है उसे जिसका खुदा है उसकी अना? इस वजह से, **अल्लाह** उसे गुमराह कर देते हैं, उसके इल्म के बावजूद, बंद कर देते हैं उसकी सुनाई और उसका ज़हन, और रखते हैं एक पर्दा उसकी आँखों पर• कौन फिर उसकी हिदायत कर सकता है, **अल्लाह** की तरफ से ऐसे एक फैसले के बाद? क्या तुम तवज्जो नहीं लोगे?

24. उन्होंने कहा, "हम सिर्फ ये ज़िंदगी जीते हैं, हम जीते और मरते हैं और सिर्फ वक्त सबब बनता है हमारी मौत का!" उनके पास कोई यकीनी इल्म नहीं है इसके बारे में; वो सिर्फ अंदाज़ा लगाते हैं•

25. जब हमारी आयतें पढ़ी जातीं हैं उनके लिए, साफ तौर पर, उनका सिर्फ बहेस है कहने के लिए, "वापस लाओ हमारे बाप दादाओं को, अगर तुम हो सच्चे•"

26. कहो, "**अल्लाह** ने अता किया है तुमको ज़िंदगी, फिर वो डालते हैं तुम्हें मौत को, फिर वो हाज़िर करेंगे तुमको हश्र के दिन, जो है अटल• लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते•"

27. **अल्लाह** की हैं सारी बादशाहत आसमानों और ज़मीन की• दिन जब वक्त *(इंसाफ का)* गुज़र जायेगा, वो वक्त है जब झूठ गढ़ने वाले हारेंगे•

घुटने के बल झुकते हुए

28. तुम देखोगे हर कौम को घुटने के बल झुकते हुए• हर कौम को पुकारा जायेगा उनके दफ्तर को देखने के लिए• आज, तुम अदा किये जाते हो सारी चीज़ों के लिए जो तुमने किया है•

**45:21 हम अब एहसास करते हैं कि नेककार असल में मरते नहीं—वो जाते हैं सीधे जन्नत को (16:32)—जबकी बदकारें मारे जाते हैं मौत के फरिश्तों के ज़रिये (8:50 और 47:27)•*

**45:22 अल्लाह ने अता किया हमें यह ज़िंदगी एक कीमती मौका जैसा अपने आप कि मगफरत कराने, शैतान के साथ हमारे पुराने जोड़ को ठुकराने, और फिर से अल्लाह कि बादशाहत से जुड़ने के लिए• देखें तार्रुफ और अपेन्डिक्स 7•*

29. यह है हमारा दफ्तर; वो कहता है सच तुम्हारे बारे में• हम दर्ज कर रहे थे सारी चीज़ें जो तुमने किया•

30. जहाँ तक वो जो ईमान रखते हैं और नेककारी वाले काम करते हैं, उनके रब दाखिल करेंगे उनको उनकी रहमत में• यह है बड़ी फतेह•

31. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं: "क्या मेरी आयतें पढ़ी नहीं गई थी तुम्हारे लिए, लेकिन तुम मगरूर बन गये और थे बदकार लोग?"

32. जब यह ऐलान किया जाता है कि **अल्लाह** का वादा है सच्चा और ये कि वक्त *(इंसाफ का)* है अटल, तुमने कहा, "हम नहीं जानते क्या है वक्त! हम उसके बारे में अंदाज़े से भरे हैं; हम नहीं हैं मुतमईन•"

33. बुराईयाँ उनके कामों की साबित हो जायेगी उनके लिए, और जिस चीज़ का उन्होंने मज़ाक उड़ाया आयेगा वापस उनको परेशान करने•

34. ये ऐलान किया जायेगा: "हम आज तुमको भूल जाते हैं, जैसा तुम भूल गये इस दिन के मिलने के बारे में• तुम्हारा ठिकाना है जहन्नम कि आग, और तुम्हारे पास नहीं होंगे मदद करने वाले•

35. "यह है इसलिए कि तुमने लिया **अल्लाह** कि आयतों को फुज़ूल में, और थे मसरूफ पहली ज़िंदगी से•" इस वजह से, वो कभी नहीं निकलेंगे उसमें से, नाहीं वो माफ किये जायेंगे•

36. **अल्लाह** की है सारी तारीफ; आसमानों के रब, ज़मीन के रब, कायनात के रब•

37. उनकी है सारी फौकियत आसमानों और ज़मीन में• वो हैं कादिरे मुतलक, सबसे हिकमत वाले•

****

सुरह 46: रेत के टीले (अल अहकाफ)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हा• म•

2. नुजूल इस आसमानी किताब का है **अल्लाह** की तरफ से, कादिरे मुतलक, सबसे हिकमत वाले•

3. हमने नहीं पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और सारी चीज़ें उनके दरमियान सिवाए एक खास मकसद के लिए, और एक महदूद दरमियानी वक्फे के लिए• जो कोई करते हैं कुफ्र हैं पूरी तरह गाफिल उनको दी गई ताकीदों कि तरफ•

4. कहो, "जांचो बुतों को जिनको तुमने कायम किया है **अल्लाह** के सिवाए• दिखाओ मुझको उन्होंने क्या पैदा किया ज़मीन पर• क्या वो आसमानों के हिस्से के मालिक हैं? दिखाओ मुझको कोई दूसरी आसमानी किताब इस से पहले, या कायम किये गये इल्म का कोई हिस्सा जो हिमायत करता है तुम्हारी बुतपरस्ती का, अगर तुम हो सच्चे•"

बुतें पूरी तरह से बेखबर

5. कौन है दूर बहका हुआ उनसे जो बुतपरस्ती करते हैं **अल्लाह** कि सिवाय बुतों की जो कभी जवाब नहीं दे सकते उनको हश्र के दिन तक, और हैं पूरी तरफ से बेखबर उनकी इबादत से?

*बुतें ठुकराते हैं उनके बुतपरस्तों को**

6. और जब लोग हाज़िर किये जायेंगे *(इंसाफ के दिन पर)*, उनके बुतें बन जायेंगे उनके दुश्मनें, और ठुकरायेंगे उनकी बुतपरस्ती•*

7. जब हमारी आयतें पढ़ी जाती थी उनके लिए, बिल्कुल साफ, वो जिन्होंने कुफ्र किया कहा सच के बारे में जो आया उनकी तरफ, "यह है ज़ाहिरी तौर पर जादू!"

**46:6 देखें मैथ्यू 7:21-23 भी: ईसा साफ तौर से ठुकराते है उन्हें जो उसे पुकारते हैं "रब•"*

8. जब वो कहें, “उसने गढ़ा है इसे,” कहो, “अगर मैंने गढ़ा इसे, तो तुम कभी हिफाज़त नहीं कर सकते मेरी **अल्लाह** से॰ वो हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से तुम तजवीज़ करते हो॰ वो काफी होते हैं एक गवाह जैसे मेरे और तुम्हारे बीच॰ वो हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले॰”

9. कहो, “मैं दूसरे रसूलों से अलग नहीं हूँ॰ मुझे कोई इल्म नहीं क्या होगा मेरे साथ या तुम्हारे साथ॰ मैं सिर्फ पैरवी करता हूँ जो नाज़िल होता है मेरी तरफ॰ मैं एक गहरा खबरदारा करने वाले से ज़्यादा कुछ नहीं हूँ॰”

*दीनदार रब्बी जुडाह**

10. कहो, “क्या अगर वो है **अल्लाह** की तरफ से और तुमने कुफ्र किया उसमें? बनी ईस्राईल से एक गवाह ने गवाही दी है एक वैसी ही कुदरत के लिए,* और वो ईमान लाया, जबकी तुम मगरूर बन गये हो॰ यकीनन, **अल्लाह** बदकार लोगों को हिदायत नहीं करते॰”

11. वो जिन्होंने कुफ्र किया कहा उनके बारे में जो ईमान लाये, “अगर वो होता कुछ अच्छा, उन्होंने उसे हमसे पहले कबूल नहीं किया होता॰” क्योंकि वो उसकी तरफ हिदायतयाफ्ता नहीं थे, उन्होंने कहा, “यह है एक पुरानी झूठ!”

12. इस से पहले मूसा कि किताब ने मुहय्या किया हिदायत और रहमत॰ ये भी है एक आसमानी किताब जो तसदीक करती है, अरबी में, खबरदार करने के लिए उन्हें जो हद से निकल गये, और देने के लिए अच्छी खबरें नेककारों को॰

अच्छी खबरें

13. यकीनन, वो जो कहते हैं, “हमारे रब हैं **अल्लाह**,” फिर एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, नहीं होगा कोई खौफ, नाहीं वो गमज़दा होंगे॰

14. वो मुस्तेहिक हुए हैं जन्नत के, जहाँ वो रहते हैं हमेशा के लिए; एक इनाम उनके कामों के लिए॰

*40: फैसले कि उम्र**

15. हमने ताकीद किया इंसान को उसके वालिदैन की इज़्जत करने के लिए॰ उसकी माँ ने उसे ढोया तकलीफ से, जनम दिया उसे तकलीफ से, और अच्छे से ख्याल रखा उसका तीस महीनों तक॰ जब वो पहुँचता है बुलुगत को, और पहुँचता है चालीस की उम्र को,* उसे कहना चाहिए, “मेरे रब, हिदायत करिये मेरी रहमतों का कद्रदान होने के लिए जो आपने इनायता किया मुझपर और मेरे वालिदैन पर, और नेककारी वाले कामों को करने के लिए जो खुश करते हैं आपको॰ मेरी औलाद को भी नेककार होने दीजिये॰ मैंने तौबा किया है आपको; मैं हूँ एक फरमान बरदार॰”

16. ये हैं जिनसे हम कबूल करते हैं नेककारी वाले कामों को, और नज़रअंदाज़ करते हैं उनके गुनाहों को॰ वो मुस्तेहिक हुए हैं जन्नत के॰ यह है सच्चा वादा जो किया गया है वादा उनसे॰

17. फिर वहाँ है वो जो कहता है उसके वालिदैन को, “हाय हो तुम्हारे लिए; क्या तुम मुझसे कह रहे हो कि *(मौत के बाद)* मैं वापस आऊंगा ज़िंदगी की तरफ? कैस फिर वो जो मर गये हम से पहले कभी नहीं आते वापस?” वालिदैन फिर पुकारेंगे **अल्लाह** की मदद के लिए और कहेंगे, “हाय हो तुम्हारे लिए; बराये करम ईमान लाओ! **अल्लाह** का वादा है सच॰” वो कहेगा, कहानियाँ माज़ी से!”

18. ऐसे हैं जिनको काफिरों जैसा मोहर लगाया गया है हर कौम में से जिनों और इंसानों की; वो हैं हारने वाले॰

**46:10 यह गवाह है दीनदार रब्बी जुडाह (11वीं सदी ए॰डी॰), जिसने वही 19 पर बुनियाद रियाज़ीं कोड का पता लगाया आसमानी किताब के सालिम टुकड़ों में (देखें अपेन्डिक्स 1)॰*

**46:15 अल्लाह अच्छी तरह से जानते हैं कौन मुस्तेहिक है जन्नत को जाने के लिए और कौन मुस्तेहिक है दोज़ख को जाने के लिए॰ यह है उनका कानून कि जिस किसी को वो मौत देते हैं 40 कि उम्र से पहले जायेगा जन्नत को॰ अल्लाह की बेइंतेहा रहमत झलकती है इस हकीकत में कि ज़्यादातर लोगों को दिक्कत होती है कबूल करना यह खुदाई रहमत; वो वहेस करते हैं: “डालो उनको जहन्नम में!” देखें अपेन्डिक्स 32॰*

19. वो सारे हासिल करते हैं दर्जे जिसके वो मुस्तेहिक हुए हैं, उनके कामों के मुताबिक में• वो अदा करेंगे उनको उनके कामों के लिए, बगैर ज़रासी भी नाइंसाफी के•

20. दिन आयेगा जब वो जिन्होंने कुफ्र किया पेश किये जायेंगे जहन्नम कि आग को: "तुमने ज़ाया किया है तुमको दिये गये अच्छे मौके तुम्हारी दुनियावी जिंदगी के दौरान, और तुमने जश्न मनाया उन में• इस वजह से, आज तुम हासिल करते हो दर्दनाक आज़ाब एक बदला जैसा तुम्हारे गुरूर के लिए तुमने किया ज़मीन पर बगैर किसी बुनियाद के, और तुम्हारे बुरे कामों के लिए•"

हूद

21. याद करो कि आद के भाई ने खबरदारा किया उसके लोगों को रेत के टीले के पास—कई ताकीदें भी पहुँचाई गई थी उससे पहले और उसके बाद: "तुम्हें इबादत नहीं करनी चाहिए सिवाए **अल्लाह** के• मैं डरता हूँ तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के आज़ाब से•"

22. उन्होंने कहा, "क्या तुम आये हो फेरने के लिए हमें हमारे खुदाओं से? हम ललकारते हैं तुम्हें *(आज़ाब)* लाने के लिए जिससे तुम धमकाते हो, अगर तुम हो सच्चे•"

23. उसने कहा, "इसके बारे में इल्म है **अल्लाह** के पास; मैं सिर्फ पहुँचाता हूँ तुमको जिसे मैं भेजा गया था पहुँचाने के लिए• बहेरहाल, मैं देखता हूँ कि तुम लोग हो गाफिल•"

24. जब उन्होंने देखा तूफान को उनकी तरफ आते हुए, उन्होंने कहा, "यह तूफान लायेगा हमारे लिए बहुत ज़रूरी बारिश•" बलिके, यह है जो तुमने ललकारा *(हूद)* को लाने के लिए; तेज़ हवा जिसमें है दर्दनाक आज़ाब•

25. उसने सारी चीज़ों को तबाह कर दिया, जैसा हुक्म किया गया था उसके रब कि तरफ से• सुबह को, कुछ भी खड़ा नहीं था सिवाए उनके घरों के• हम इस तरह बदला देते हैं मुजरिम लोगों को•

उन्होंने मज़ाक उड़ाया
रसूल की ताकीदों का

26. हमने कायम किया था उनको उसी तरह जैसे हमने तुमको कायम किया, और मुहय्या किया उनको सुनाई, आँखों, और ज़हनों के साथ• लेकिन उनकी सुनाई, आँखें, और जहनें बिल्कुल मदद नहीं कर सके उनकी• यह है इसलिए कि उन्होंने फैसला किया **अल्लाह** की आयतों को नज़रअंदाज़ करने का• इसतरह, पेशीनगोईयाँ और ताकीदें जिनका उन्होंने मज़ाक उड़ाया सबब बना है उनकी तबाही का•

27. हमने फनाह किया है कई कौमों को तुम्हारे इर्द गिर्द, इसके बाद की हमने समझाया सबूतों को, ताके वो तौबा कर सकें•

28. क्यों फिर बुतें जिनको उन्होंने कायम किया उनको **अल्लाह** के करीब लाने के लिए नाकामयाब हुए उनकी मदद करने के लिए? बलिके, उन्होंने छोड़ दिया उनको• ऐसे थे झूठे खुदाऐं जिनकी उन्होंने बुतपरस्ती की; ऐसी थी बिदातें जिनको उन्होंने गढ़ा•

*जिनों के बीच ईमानवाले**

29. याद करो कि हमने हिदायत किया कुछ जिनों को तुम्हारी तरफ, ताके उनको सुनने दें कुरान• जब वो वहाँ पहुँचे, उन्होंने कहा, "सुनो•" जैसे ही वो खत्म हो चुका था, वो दौड़े उनके लोगों कि तरफ, खबरदार करते हुए•*

30. उन्होंने कहा, "ऐ हमारे लोगों, हमने सुना है एक किताब जो नाज़िल हुआ था मूसा के बाद, और तसदीक करता है पिछली आसमानी किताबों की• वो सच कि तरफ हिदायत करता है; सही रास्ते कि तरफ•

31. "ऐ हमारे लोगों, जवाब दो **अल्लाह** की पुकार का, और उनमें ईमान रखो• वो फिर माफ करेंगे तुम्हारे गुनाहों को, और बचायेंगे तुम्हें एक दर्दनाक आज़ाब से•"

**46:29 जिन मखलूकें हैं जिन्होंने पूरी तरह इत्तेफाक किया शैतान के साथ जब उसने शुरू किया उसका मशहूर बिदाअत करोड़ों सालों पहले• वो लाये जाते हैं इस दुनिया में शैतान कि औलादों जैसे• एक जिन पैदा होता है हर बार जब एक इंसान पैदा होता है• नया पैदा हुआ जिन मुकर्रर किया जाता है उसी जिस्म को जैसा नया पैदा हुआ इंसान, और मुसलसल तौर पर धकेलता है शैतान के नज़रिये की तरफ (अपेन्डिक्स 7)•*

32. जो कोई नाकामयाब होते हैं **अल्लाह** की पुकार का जवाब देने के लिए फरार नहीं हो सकते, और नहीं पायेंगे कोई रब उनके अलावा; वो बहुत दूर गुमराह हो गये हैं•

33. क्या वो एहसास नहीं करते कि **अल्लाह**, जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को ज़रासी भी मेहनत के बगैर काबिल हैं दोबारा मुर्दे को ज़िंदा करने के लिए? हाँ वाकई; वो हैं कादिरे मुतलक•

34. दिन जब काफिरें पेश किये जायेंगे जहन्नम कि आग को, उनसे पूछा जायेगा, "क्या यह सच नहीं है? वो जवाब देंगे, "हाँ वाकई, हमारे रब कि कसम•" वो कहेंगे, "फिर झेलो आज़ाब तुम्हारे कुफ्र के लिए•"

*अल्लाह के वादे का रसूल**

35. इसलिए, सब्र करो तुमसे पहले रसूलों कि तरह जिन्होंने रखा कूवत और चुना सब्र को• जल्दबाज़ी में न रहो आज़ाब देंखने के लिए जो अटल तौर पर आयेगा उनकी तरफ• दिन जब वो उसे देखेंगे, वो ऐसा लगेगा जैसे वो रहे एक घंटा दिन का• यह है एक ऐलान: क्या वो बदकार नहीं हैं जो मुसलसल तौर पर फनाह किये जाते हैं?

****

सुरह 47: मुहम्मद

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. वो जो कुफ्र करते हैं और पलटते हैं **अल्लाह** के रास्ते से, वो ज़ाया कर देते हैं उनके कामों को•

2. वो जो ईमान रखते हैं और नेककारी वाले काम करते हैं, और ईमान रखते हैं उसमें जो भेजा गया था नीचे मुहम्मद कि तरफ—जो है सच उनके रब की तरफ से—वो माफ करते हैं उनके गुनाहों को, और बक्शते हैं उनको चैन से•

3. यह इसलिए है की वो जो कुफ्र करते हैं पैरवी कर रहे हैं झूठ की, जबकी वो जो ईमान रखते हैं पैरवी कर रहे हैं सच की उनके रब कि तरफ से• **अल्लाह** इस तरह बयान करते हैं लोगों के लिए, उनकी मिसालें•

4. अगर तुम *(जंग में)* सामना करो उनका जो कुफ्र करते हैं तुम उनके गर्दनों पर वार कर सकते हो• अगर तुम लो उनको बंदियों जैसा तुम उनको आज़ाद या उनका फिदया ले सकते हो, जब तक जंग नहीं खत्म हो जाता• अगर **अल्लाह** ने चाहा होता, उन्होंने अता किया होता तुम्हें जीत, बगैर जंग के• लेकिन वो इस तरह आज़माते हैं तुम्हें एक दूसरे से• जहाँ तक वो जो कत्ल हो जाते हैं **अल्लाह** की राह में, वो कभी ज़ाया नहीं करेंगे उनकी कुरबानी•

5. वो हिदायत करेंगे उनकी, और बक्शेंगे उनको चैन के साथ•

6. वो दाखिल करेंगे उनको जन्नत में, जो उन्होंने बयान किया उनके लिए•

7. ऐ ईमानवालो, अगर तुम मदद करो **अल्लाह** की, वो तुम्हारी मदद करेंगे, और मज़बूत करेंगे तुम्हारी पकड़ को•

8. वो जो कुफ्र करते हैं हासिल करते हैं मुसीबत; वो सबब बनते हैं उनके कामों को पूरी तरह फुजूल में होने का•

9. वो इसलिए है कि उन्होंने नफरत किया जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया और इस वजह से, वो ज़ाया करते हैं उनके कामों को•

10. क्या वो नहीं घुमें ज़मीन पर और देखा नतीजों को उनसे पहलों के लिए? **अल्लाह** ने बरबाद किया उनके कामों को; सारे काफिरें झेलेंगे वैसा अंजाम•

11. यह इसलिए है कि **अल्लाह** हैं रब उनके जो ईमान रखते हैं, जबकी काफिरों के पास नहीं है रब•

**46:35 कुरानी और रियाज़ी सबूत साबित करते हैं कि मुखातिब किया गया रसूल यहाँ है रशाद खलीफा• जोड़ते हुए जिमेटरिकल वेल्यू "रशाद खलीफा" की (1230), साथ सुरह नंबर (46), साथ आयत नंबर (35), हम पाते हैं 1311, या 19x69• यह तसदीक करता है कुरान के कोड के साथ (अप 2)•*

12. **अल्लाह** दाखिल करते हैं उनको जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं बहती हुई नहरों के साथ बागों में• जहाँ तक वो जो कुफ़्र करते हैं, वो रहते हैं और खाते हैं जैसा जानवरें खाते हैं, फिर खत्म होते हैं जहन्नम की आग में•

13. कई एक कौम थी ज़्यादा ताकतवर कौम से जिसने तुमको निकाला तुम्हारे शहर से; जब हमने उनको फनाह किया, कोई उनकी मदद न कर सका•

14. क्या जो समझाये गये हैं उनके रब कि तरफ से बराबर हैं उनके जिनके बुरे आमालें सजाये गये हैं उनकी आँखों में, और वो चलते हैं उनके खुदके रायों पर?

15. मिसाल जन्नत की जो वादा किया गया है नेककारों के लिए है ऐसा: उसके पास हैं नदियें नाखराब की गई पानी की, और नदियें दूध की, और नदियें फलों के शराब की—लज़ीज़ पीने वालों के लिए—और नदियें साफ किये गये शहद की• वो पायेंगे सारे किस्मों के फलें उसमें, और मगफरत उनके रब कि तरफ से• *(क्या वो बेहतर हैं)* या वो जो रहते हमेशा के लिए जहन्नम की आग में, और पीते हैं जहन्नमी पानी जो फाड़ देता हैं उनकी अतड़ियों को?

16. उनमें से कुछ सुनते हैं तुम्हें, फिर जैसे ही वो जाते हैं वो पूछते हैं उनको जो समझाये गये थे, "उसने अभी क्या कहा?" **अल्लाह** इस तरह बंद कर देते हैं उनके दिलों को, और इस वजह से, वो चलते हैं सिर्फ उनके रायों पर•

17. जहाँ तक वो जो हिदायतयाफ्ता हैं, वो बड़ाते हैं उनकी हिदायत, और अता करते हैं उनको उनकी नेककारी•

*दुनिया का खत्म**

18. क्या वो इंतेज़ार कर रहे हैं जब तक वक्त न आ जाये उनकी तरफ अचानक? उसकी सारी निशानियाँ पहले ही आ चुकी हैं•* जब वक्त आयेगा उनकी तरफ, कैसे वो फायदा उठायेंगे उनके पैगाम से?

ला इलाहा इल्ल अल्लाह:
पहला हुक्म

19. तुम्हें मालूम होना चाहिए की: "**कोई खुदा नहीं सिवाए अल्लाह** के,"* और मांगो मगफरत तुम्हारे गुनाहों के लिए और सारे ईमान वाले मर्दो और औरतों के गुनाहों के लिए• **अल्लाह** पूरी तरह वाकिफ हैं तुम्हारे फैसलों से और तुम्हारे आखरी तकदीर से•

बेनकाब करते हुए मुनाफिकीन

20. वो जिन्होंने ईमान रखा कहा: "कब नाज़िल होगी एक सुरेह?" जब एक साफ सुरेह नाज़िल की गई थी, जिसमें लड़ना बयान किया गया था, तुम देखोगे उनको जो फनाह देते हैं शकों को उनके दिलों में तुम्हारी तरफ देखते हुए, ऐसे जैसे मौत आ चुकी थी पहले से उनकी तरफ• वो इस तरह बेनकाब किये गये थे•

अकीदे का सबूत
मुहम्मद के ज़माने में

21. तावेदारी और नेककारी वाली बातें उम्मीद की जाती हैं उनसे• अगर सिर्फ वो दिखाते ऐतबार **अल्लाह** में, जब जंग की तैयारी के लिए पुकारा गया था, वो होता बेहतर उनके लिए•

22. क्या यह भी है तुम्हारा इरादा की जैसे ही तुम निकलो तुम करो बुराई और बदसुलूकी तुम्हारे रिश्तेदारों के साथ?

23. ये वो हैं जिन्होंने एक लानत हासिल किया **अल्लाह** की तरफ से, जिससे उन्होंने बनाया उनको बहरा और अंधा•

**47:18 कुरान, आखरी किताब होने की वजह से, मुहय्या करता है सारी ज़रूरी निशानियाँ इशारा करने के लिए दुनिया का खत्म होना; एडी 2280• देखें अपेन्डिक्स 25 तफसीलों के लिए•*

**47:19 खासतौर पर, "पहला सुतून" मज़हब का बयान किया गया है सुरेह नाम दिया गया मुहम्मद में, और पूरी तरह सिर्फ अल्लाह को मनसूब किया गया है• मुहम्मद का नाम जोड़ा गया था उनकी बुतपरस्ती करने वालों कि तरफ से, उनकी मर्ज़ी के खिलाफ•*

सीखो कुरान

24. क्यों वो कुरान नहीं सीखते ध्यान से? क्या उनके ज़हनों पर ताले हैं?

25. यकीनन, जो कोई पीछे फिसलते हैं, इसके बाद की हिदायत ज़ाहिर कर दी जा चुकी है उनके लिए, शैतान ने लुभाया है उनको और रहबरी की है उनकी आगे•

26. यह है इसलिए कि उन्होंने कहा उनको जिन्होंने नफरत किया जो **अल्लाह** ने भेजा है नीचे, "हम पैरवी करेंगे तुम्हारी कुछ मामलों में•" **अल्लाह** पूरी तरह जानते हैं उनके खुफिया साज़िशें•

27. वो कैसा होगा उनके लिए जब फरिश्ते डालेंगे उनको मौत के लिए? वो मारेंगे उनको उनके चेहरों और पीछे के हिस्सों पर•

28. यह है इसलिए की उन्होंने पैरवी किया उसकी जिसने गुस्सा दिलाया **अल्लाह** को और नफरत किया चीज़ों से जो खुश करते हैं उनको• इस वजह से, उन्होंने ज़ाया कर दिया है उनके कामों को•

29. क्या वो जिन्होंने पनाह दिया शकों को उनके दिलों में सोचते हैं कि **अल्लाह** नहीं लायेंगे बाहर उनके बुरे ख्यालों को?

30. अगर हम चाहें, हम बेनकाब कर सकते हैं उनको तुम्हारे लिए, ताके तुम उनको पहचान सको बस उनको देखते हुए• बहेरहाल, तुम पहचान सकते हो उनको जिस तरह से वो बात करते हैं• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ तुम्हारे सारे कामों से•

31. हम यकीनन डालेंगे तुम्हें आज़माईश को, ताके पहचानें तुम में से वो जो जद्दोजेहद करते हैं, और साबित कदमी से जमे रहते हैं• हमे ज़रूरी है बेनकाब करना तुम्हारे सही खूबियों को•

32. वो जो कुफ्र करते हैं और पलटते हैं **अल्लाह** के रास्ते से, और मुखालिफत करते हैं रसूल की इसके बाद कि हिदायत ज़ाहिर कर दी जा चुकी है उनके लिए, कभी ठेस नहीं पहुँचायेंगे **अल्लाह** को ज़रासा भी• बलिके, वो ज़ाया करते हैं उनके कामों को•

33. ऐ ईमानवालो, तुम्हें **अल्लाह** कि अताअत, और रसूल की अताअत करनी चाहिए• वरना, तुम्हारे सारे काम होंगे फुजूल में•

बड़ी तबाही

34. वो जो कुफ्र करते हैं और पलटते हैं **अल्लाह** के रास्ते से, फिर मरते हैं काफिरों जैसे, **अल्लाह** कभी उनको माफ नहीं करेंगे•

35. इसलिए, तुम्हें डगमगाना और हथियार नहीं डालना चाहिए अमन की तलाश में, इसलिए की तुम्हें ज़मानत दी गई है जीत की, और **अल्लाह** हैं तुम्हारे साथ• वो कभी ज़ाया नहीं करेंगे तुम्हारी कोशिशों को•

36. यह दुनियावी ज़िंदगी खेल और सजावट से ज़्यादा कुछ नहीं है• लेकिन अगर तुम ईमान रखो और एक नेक ज़िंदगी बसर करो, वो इनाम देंगे तुम्हें, बगैर मांगते हुए तुमसे कोई पैसा•

37. अगर वो पैसे के लिए पूछते तुमसे, इस हद तक के तुम्हारे लिए एक मेहनतकशी पैदा करें, तुम बन जाते बखील, और तुम्हारी खुफिया बुराई बेनकाब हो जाती•

38. तुम्हें दावत दिया जाता है **अल्लाह** के वास्ते खर्च करने के लिए, लेकिन तुम में से कुछ बन जाते हैं कंजूस• कंजूस हैं उनकी खुदकी रूहों की तरफ कंजूस• **अल्लाह** हैं अमीर, जबकी तुम हो गरीब•

*धमकी अरबियों के लिए **

अगर तुम पलट जाओ, वो तबदील कर देंगे तुम्हारी जगह में दूसरे लोगों को, और वो नहीं होंगे तुम्हारी तरह•

****

सुरह 48: फतेह
(अल फत)

**47:38 कुरान अरबियों को दिया गया था, उनकी ज़बान में, 1400 सालों के लिए, लेकिन उन्होंने उसे साफ तौर पर ठुकरा दिया और इंकार किया मानने के लिए कि वो है मुकम्मल; उन्होंने गढ़ा हदीस और सुन्नत•*

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हमने इनायत किया है तुम पर *(ऐ रसूल)* एक बड़ी फतेह•*

2. जिससे **अल्लाह** माफ करते हैं तुम्हारे पिछले गुनाहों को, साथ साथ मुस्तकबिल गुनाहों को, और मुकम्मल करते हैं उनकी रहमतें तुम पर, और हिदायत करते हैं तुम्हें एक सीधी राह में•

3. इसके अलावा, **अल्लाह** मदद करेंगे तुम्हारी एक न डगमगानेवाली मदद के साथ•

4. वो हैं वाहिद जो रखते हैं चैन ईमान वालों के दिलों में बढ़ाने के लिए ज़्यादा अकीदा, उनके अकीदे के अलावा• **अल्लाह** की हैं सारी ताकतें आसमानों और ज़मीन की• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हिकमत वाले•

5. वो यकीनन दाखिल करेंगे ईमानवाले मर्दों और औरतों को बहती हुई नहरों के साथ बागों में, जिसमें वो रहते हैं हमेशा के लिए• वो माफ करेंगे उनके गुनाहों को• यह है, **अल्लाह** की नज़र में, एक बड़ी फतेह•

6. और वो बदला चुकायेंगे मुनाफिक मर्दों और औरतों को और बुतपरस्ती करने वाले मर्दों और औरतों को, इसलिए की उन्होंने पनाह दिया है **अल्लाह** के बारे में बुरे ख्यालों को• उनकी बुराई उल्टा नतीजा देगी उनके खिलाफ• इसलिए की **अल्लाह** हैं नाराज़ उनसे, मलामत करते हैं उनको, और तैयार कर रखा है उनके लिए जहन्नम• क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर!

7. **अल्लाह** की हैं सारी ताकतें आसमानों और ज़मीन में• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हिकमत वाले•

8. हमने भेजा है तुम्हें एक गवाह जैसा, एक रखने वाला अच्छी खबरों का, और एक खबरदार करने वाला•

9. ताके तुम लोग ईमान रखो **अल्लाह** और उनके रसूल में, और एहतराम करो उनका, और इज़्जत करो उनकी, और बड़ाई करो उनकी, दिन और रात•

तुम्हें चाहिए
मदद करना
अल्लाह के रसूल की

10. यकीनन, जो कोई एहद करते हैं तुम्हारी ताबेदारी करने का, एहद कर रहे हैं **अल्लाह** की ताबेदारी करने का• **अल्लाह** मंज़ूर करते हैं उनका एहद; वो रखते हैं उनका हाथ उनके हाथों के ऊपर• जो कोई ऐसे एक एहद को तोड़ें, करते हैं खिलाफ वर्ज़ी उनके खुदके नुकसान के लिए• जहाँ तक वो जो पूरा करते हैं उनका एहद **अल्लाह** के साथ, वो अता करेंगे उनको एक बड़ा इनाम•

11. काहिल अरबियें जो पीछे रहते हैं कहेंगे, "हम मसरूफ रहे हैं हमारे पैसे और हमारे कुम्बों के साथ, इसलिए मांगिये हमारे लिए मगफरत!" वो कहते हैं उनकी ज़बानों से जो नहीं है उनके दिलों में• कहो, "कौन हिफाज़त कर सकता है तुम्हारी **अल्लाह** से, अगर वो चाहे कोई तकलीफ तुम्हारे लिए, या अगर वो चाहें कोई रहमत तुम्हारे लिए?" **अल्लाह** हैं पूरी तरह आगाह सारी चीज़ें तुम करते हो•

12. तुमने खुफिया तौर पर माना कि रसूल और ईमानवाले शिकस्त दिये जायेंगे और कभी नहीं आयेंगे वापस उनके कुम्बों की तरफ, और यह था पूरी तरह तय तुम्हारे दिलों में• तुमने पनाह दिया बुरे ख्यालों को और बन गये बदकार लोगों में•

13. जो कोई इंकार करता है **अल्लाह** और उनके रसूल में ईमान लाने के लिए, हमने तैयार किया है काफिरों के लिए एक जहन्नम की आग•

**48:1 यह भारी जुमला रखता है 19 हुरूफें, इशारा करते हुए की हमारी नस्ल है फतेह की नस्ल अल्लाह के पाक किये गये, एक किये गये, और मज़बूत किये गये मज़हब—फरमानबरदारी के लिए (3:19, 85)• यह है हमारी नस्ल जिसने देखा अल्लाह के बड़े मौजज़े का नुज़ूल कुरान में (अपेन्डिक्स 1)•*

14. **अल्लाह** की है सलतनत आसमानों और ज़मीन की• वो माफ करते हैं जिसकिसी को वो चाहें, और सज़ा देते हैं जिसकिसी को वो चाहें• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

15. काहिल जो रहता है पीछे कहेगा, जब तुम उम्मीद करो माले जंग का जमा करने के लिए, "हमें तुम्हारे पीछे आने दो ताके हिस्सा लें उस में!" वो इस तरह चाहते हैं **अल्लाह** के लफ्ज़ों को बदलने का• कहो, "तुम हमारे पीछे नहीं आओगे• यह है **अल्लाह** का फैसला•" वो फिर कहेंगे, "तुम हमसे जलते होगे *(पीछे रहने के लिए)*•" वाकई, वो कभी कभार ही समझते हैं कोई चीज़•

आज़माईश पहली नस्लों के लिए

16. कहो काहिल अरबियों को जो रहते हैं पीछे, "तुम दावत दिये जाओगे सामना करने के लिए ताकतवर लोगों का और उनसे लड़ने के लिए, जब तक वो अपने आप को हवाले न कर दें• अगर वो तुम्हारी अताअत करें, **अल्लाह** तुम्हें इनाम देंगे एक फरागदिल इनाम के साथ• लेकिन अगर तुम फिर से पलट जाओ, जैसा तुमने माज़ी में किया, वो बदला चुकायेंगे तुम्हें एक दर्दनाक आज़ाब के साथ•

17. अंधे को इल्ज़ाम नहीं दिया जाना है, लंगड़े को इल्ज़ाम नहीं दिया जाना है, और बिमार को इल्ज़ाम नहीं दिया जाना है• जो कोई अताअत करें **अल्लाह** और उनके रसूल की, वो दाखिल करेंगे उनको बहती हुई नहरों के साथ बागों में• जहाँ तक वो जो पलट जायें, वो बदला चुकायेंगे उनको एक दर्दनाक आज़ाब से•

18. **अल्लाह** खुश हैं ईमानवालों से जिन्होंने तावेदारी का एहद किया तुमसे पेड़ के नीचे• वो जानते थे क्या था उनके दिलों में और, इस वजह से, उन्होंने बक्शा उनको चैन के साथ, और इनाम दिया उनको एक फौरन फतेह से•

19. इसके अलावा, उन्होंने हासिल किया कई माले जंग• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, सबसे हिकमत वाले•

20. **अल्लाह** ने वादा किया है तुम्हें कई माले गनीमत जो तुम हासिल करोगे• वो इस तरह बढ़ाते हैं कुछ फायदे तुम्हारे लिए इस ज़िंदगी में, और उन्होंने थामे रखा तुम्हारे खिलाफ अदावत वाले लोगों के हाथों को, और बनाया है इसे एक निशानी ईमानवालों के लिए• वो इसतरह हिदायत करते हैं तुम्हारी एक सीधी राह में•

21. जहाँ तक गिरोह जिसे तुम शिकस्त नहीं दे पाये, **अल्लाह** ने ख्याल रखा उनका; **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

फतेह की
ज़मानत दी गई है
ईमानवालों के लिए

22. अगर काफिरें कभी लड़े तुम से, वो पीछे पलट जायेंगे और फरार हो जायेंगे• उनके पास नहीं है रब और मालिक; उनके पास नहीं है मददगार•

23. ऐसा है **अल्लाह** का निज़ाम पूरे तारीख में, और तुम पाओगे कि **अल्लाह** का निज़ाम है ना बदलने के काबिल•

24. वो हैं वाहिद जिन्होंने थामें रखा उनके अदावत वाले हाथों को तुम्हारे खिलाफ, और थामे रखा तुम्हारे अदावत वाले हाथों को उनके खिलाफ मक्के की वादी में, इसके बाद की उन्होंने अता किया था तुम्हें फतेह उनपर• **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ें तुम करते हो•

25. यह वो हैं जिन्होंने कुफ्र किया और रोका तुम्हें मुकद्दस मस्जिद से, और यहाँ तक रोका तुम्हारी कुरबानियों को उनके मंज़िल को पहुँचने से• वहाँ थे ईमानवाले मर्दें और औरतें *(दुश्मन के खैमे के अंदर)* जिनको तुम नहीं जानते थे, और तुम तकरीबन थे उनको तकलीफ देने के लिए, अंजाने में• **अल्लाह** इसतरह दाखिल करते हैं उनकी रहमत में जिसकिसी को वो चाहते हैं• अगर वो इसरार करें, वो बदला चुकायेंगे उनमें से उनको जो कुफ्र करते हैं एक दर्दनाक आज़ाब के साथ•

26. जबकी वो जिन्होंने कुफ्र किया खफा हो गये, और उनके दिलें भर गये थे गफलत के दिनों के गुरूर से, **अल्लाह** ने बक्शा उनके रसूल और ईमानवालों को अमनवाले चैन के साथ, और हिदायत किया उनकी नेककारी के लफ्ज़ को बरकरार रखने के लिए• यह है जिसके वो अच्छे से हकदार हुए• **अल्लाह** है पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

27. **अल्लाह** ने पूरा किया है उनके रसूल का सच्चा ख्वाब: "तुम दाखिल होगे मुकद्दस मस्जिद में, **अल्लाह** ने चाहा, बिल्कुल महफूज़, और तुम काटोगे तुम्हारे बालों को या छोटा करोगे उसे *(जैसे तुम पूरा करते हो हज के रस्मों को)* वहाँ• तुम्हें नहीं होगा कोई डर• चुँकी वो जानते थे जो तुम नहीं जानते, उन्होंने इसे जोड़ दिया है एक फौरन फतेह के साथ•"

*बड़ी पेशीनगोई**

28. वो हैं वाहिद जिन्होंने भेजा उनके रसूल को हिदायत और मज़हब के सच के साथ, उसे सारे दूसरे मज़हबों पर कामयाब करने के लिए• **अल्लाह** काफी होते हैं एक गवाह जैसे•*

खूबियाँ ईमानवालों की

29. मुहम्मद— **अल्लाह** के रसूल—और वो जो हैं उनके साथ हैं सख्त और कड़े काफिरों के खिलाफ, लेकिन नर्म और शफीक आपस में• तुम देखोगे उनको झुकते और सुजूद करते हुए, जैसे वो तालाश करते हैं **अल्लाह** की रहमतें और रज़ामंदी• उनकी निशानियाँ हैं उनके चेहरों पर, सजदा करने की वजह से• यह है वैसी ही मिसाल जैसा है तौरेत में• उनकी मिसाल इंजील में है पौधों कि तरह जो उगता है और ऊँचा और ज़्यादा मज़बूत, और खुश करता है किसानों को• वो इस तरफ नाराज़ करते हैं काफिरों को• **अल्लाह** वादा करते हैं उनमें से उनको जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं मगफरत और एक बड़ा इनाम•

****

सुरह 49: दिवारें
(अल हुजुरत)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ऐ ईमानवालो, न रखो तुम्हारी राय को **अल्लाह** और उनके रसूल के ऊपर• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले•

2. ऐ ईमानवालो, ऊँचा न करो तुम्हारी आवाज़ों को नबी की आवाज़ से ऊपर,* नाहीं तुम्हें चिल्लाना चाहिए उसकी तरफ जैसा तुम चिल्लाते हो एक दूसरे कि तरफ, ताके तुम्हारे कामें ज़ाया न हो जायें जब तुम एहसास न करो•

3. यकीनन, वो जो नीचा करते हैं उनकी आवाज़ें **अल्लाह** के रसूल की तरफ हैं वो जिनके दिलें तैयार किये गये हैं **अल्लाह** की तरफ से नेककार बनने के लिए•* वो हकदार हुए हैं मगफरत और एक बड़े इनाम का•

**48:28 यह एहम पेशीनगोई इत्तेला करती है हमे कि फरमानबरदारी अटल तौरपर हावी होगा पूरी दुनिया पर• यह, साथ साथ आयतें 9:33, 41:53, और 61:9 नहीं छोड़ता है कोई शक कि अल्लाह का रियाज़ी मौजेज़ा कुरान का लेगा एक बड़ा हिस्सा इस पेशीनगोई में• पुख्ता कुरानी रियाज़ी सबूत इशारा करते हैं अल्लाह के वादे के रसूल कि तरफ पूरा करते हुए इस पेशीनगोई को• देखें अपेन्डिक्सें 2 और 26 सबूत और खास तफसीलों के लिए•*

**49:2 जब भी लफ्ज़ "नबी" इस्तेमाल किया गया है मुहम्मद का हवाला देने के लिए, वो बिला तबदील मुखातिब करता है उन्हें उनकी ज़िंदगी के दौरान, उनकी मौत के बाद नहीं• ज़ाहिर है, हम कभी ऊँचा नहीं कर सकते हैं हमारी आवाज़ों को मुहम्मद कि आवाज़ के ऊपर, अबकी जब वो मर चुके हैं• 33:56 भी देखें•*

**49:3 इज़्जत करना रसूल की मदद करता है बाहर वालों और मुलाकात करने वालों को अल्लाह के पैगाम कि तरफ आने में•*

4. जहाँ तक वो जो पुकारते हैं तुम्हें दिवारों के बाहर से, उनमें से ज़्यादा नहीं समझते•

5. अगर वो होते सब्र करने वाले जब तक तुम बाहर नहीं आ जाते उनकी तरफ, वो होता बेहतर उनके लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

तहकिकात करो अफवाहों की उनको मानने से पहले

6. ऐ ईमानवालो, अगर एक बदकार शक्स लाये कोई खबर तुम्हारी तरफ, तुम्हें पहले तहकिकात करनी चाहिए, ताके तुम नाइंसाफी न करो कुछ लोगों कि तरफ, गफलत कि वजह से, फिर बन जाओ अफसोस ज़दा और पशेमान उसके लिए जो तुमने किया•

7. और जानो कि **अल्लाह** का रसूल आ चुका है तुम्हारे बीच• अगर वो सुनता तुम्हें कई चीज़ों में, तुमने किया होता कई चीज़ों को मुश्किल तुम्हारे खुदके लिए• लेकिन **अल्लाह** ने तुम्हें अकीदे को चाहने वाला बनाया और सजाया उसे तुम्हारे दिलों में, और उन्होंने बनाया तुम्हें नफरत करने वाला कुफ्र, बदकारी, और नाफरमानी• ये हैं जो हिदायतयाफ्ता हैं•

8. ऐसी है फज़्ल **अल्लाह** की तरफ से और उनकी रहमतें• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हिकमत वाले•

सुलह कराओ ईमानवालों का

9. अगर दो गिरोह ईमानवालों के लड़ें एक दूसरे से, तुम्हें चाहिए उनका सुलह कराओ• अगर एक गिरोह अदावत करे दूसरे के खिलाफ, तुम्हें अदावत करने वाले गिरोह के साथ लड़ना चाहिए जबतक वो हवाले न करें **अल्लाह** के हुक्म को• जब वो हवाले करें, तुम्हें दो गिरोह का सुलह कराना चाहिए बराबरी से• तुम्हें इंसाफ बरकरार रखना चाहिए; **अल्लाह** पसंद करते हैं उनको जो हैं इंसाफ पसंद•

असल कुम्बा

10. ईमानवाले हैं एक कुम्बे के फर्दें; तुम्हें अमन रखना चाहिए तुम्हारे कुम्बे के अंदर और **अल्लाह** का एहतराम करो, ताके तुम रहमत हासिल करो•

ईमानवाले कायम करते हैं मिसाल

11. ऐ ईमानवालो, लोगों को दूसरे लोगों का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए, इसलिए की हो सकता है वो बेहतर हो उनसे• नाहीं कोई औरतों को दूसरी औरतों का मज़ाक उड़ाना चाहिए, इसलिए की हो सकता है वो बेहतर हो उनसे• नाहीं तुम्हें एक दूसरे को चिड़ाना चाहिए, या तुम्हारे नामों का मज़ाक उड़ाना चाहिए• बुरा है वाकई पलटना बदकारी कि तरफ अकीदा हासिल करने के बाद• कोइ भी जो तौबा नहीं करता है इस के बाद, ये हैं खतावारें•

शक करना है गुनाह

12. ऐ ईमानवालो, तुम्हें बचना चाहिए किसी भी शक से, इसलिए की यहाँ तक के ज़रा सा भी शक करना है गुनाह• तुम्हें एक दूसरे पर जासूसी नहीं करनी चाहिए, नाहीं तुम्हें एक दूसरे की गीबत करनी चाहिए; यह है घिनौना जैसे तुम्हारे मुर्दा भाई का गोश्त खाना• तुम यकीनन इस से नफरत करते हो• तुम्हें **अल्लाह** को ध्यान में रखना चाहिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

सिर्फ मयार लोगों के दरमियन फर्क करने के लिए

13. ऐ लोगों, हमने पैदा किया तुम्हें एक ही मर्द और औरत से, और बनाया तुम्हें मुखतलिफ लोगों और कबीले, ताके तुम पहचानो एक दूसरे को• तुम में से सबसे अच्छा **अल्लाह** की नज़र में वो है जो है सब से नेक• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, वाकिफ•

मुसलिम के मुकाबले मोमिन

14. अरबियों ने कहा, “हम हैं *मोमिनें (ईमानवाले)*•” कहो, “तुम ईमान नहीं लाये; तुम्हें जो कहना चाहिए है, ‘हम हैं *मुसलमानें (फरमानबरदारें)*,’ जब तक अकीदा कायम नहीं हो जाता तुम्हारे दिलों में•” अगर तुम **अल्लाह** और उनके रसूल की अताअत करो, वो ज़ाया नहीं करेंगे तुम्हारे किसी कामों को• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

15. मोमिनें *(ईमानवाले)* हैं वो जो ईमान रखते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल में, फिर किसी भी शक को न रखने का मकाम हासिल करते हैं, और जद्दोजहेद करते हैं उनके पैसे और उनकी ज़िंदगियों से **अल्लाह** की राह में• ये हैं जो हैं सच्चे•

16. कहो, "क्या तुम इत्तेला करते हो **अल्लाह** को तुम्हारे मज़हब के बारे में? **अल्लाह** जानते हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले•"

कौन किस पर कर रहा है एक एहसान?

17. वो दिखावा करते हैं ऐसे जैसे वो तुम पर एक एहसान कर रहे हैं फरमानबरदारी कबूल करते हुए! कहो, "तुम नहीं कर रहे हो मुझपर कोई एहसानें फरमानबदारी कबूल करते हुए• **अल्लाह** है वाहिद जो कर रहे हैं तुमपर एक बड़ा एहसान हिदायत करते हुए तुम्हारी अकीदे की तरफ, अगर तुम हो संजीदा•"

18. **अल्लाह** जानते हैं सारे राज़ों को आसमानों और ज़मीन में; **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ें तुम करते हो•

****

सुरह 50: कॅ (कॉफ)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कॅ., और शानदार कुरान•*

2. उन्होंने पाया उसे अजीब कि एक खबरदार करने वाला आया उनकी तरफ उनमें से! काफिरों ने कहा, ये है वाकई अजीब•

3. "इसके बाद कि हम मर जायें और बन जायें धूल; यह है नामुमकिन•"

4. हम हैं पूरी तरह वाकिफ उनमें हर एक से जो ज़मीन से निगल लिया जाता है; हमारे पास है एक दुरूस्त दफ्तर•

5. उन्होंने सच को ठुकराया जब वो आया उनकी तरफ; वो हैं पूरी तरह परेशान•

6. क्या उन्होंने उनके ऊपर आसमान कि तरफ नहीं देखा, और कैसे हमने तामीर किया उसे और सजाया उसे, बगैर एक नुक्स के?

7. और हमने पैदा किया ज़मीन को, और फैलाया उसपर पहाड़ों को, और उगाये उसमें हर किस्म के खुबसूरत पौधे•

8. यह है एक बसारत, और एक ताकीद हर एक मुत्तकी इबादत करने वाले के लिए•

9. और हमने भेजा आसमान से मुबारक पानी, उससे उगाने के लिए बागें और अनाजों की फसल के लिए•

10. ऊँचे खजूर के दरख्तें, साथ गुच्छेदार फल के•

11. नियामतें लोगों के लिए• और हम दोबारा ज़िंदा करते हैं उससे मुर्दा ज़मीनों को! तुम उसी तरह दोबारा ज़िंदा किये जाते हो•

12. उनसे पहले कुफ्र करने वाले थे नुह के लोग, रूस के रहने वाले, और तमूद•

13. और आद, फिरऔन, और लूत के हमज़ात•

14. और जंगलों के रहने वाले, और तुब्बा के लोग• वो सारों ने कुफ्र किया रसूलों में और, इस वजह से, मेरा अज़ाब आ गिरा उनपर•

15. क्या हम बहुत लदे हुए थे पहली खिलकत से? क्या इस वजह से वो शक करते हैं हश्र के बारे में?

16. हमने इंसान को पैदा किया, और हम जानते हैं वो खुद कि तरफ क्या वसवसे करता है• हम उसके ज़्यादा करीब हैं उसके गर्दन की नस से•

17. दो दर्ज करते हुए *(फरिश्ते)*, दाहिने और बायें, हैं लगातार दर्ज करते हुए•

**50:1 देखें अपेन्डिक्स 1 इनिशियल "कॅ" के साथ जुड़े जबरदस्त मौजज़ों के लिए•*

18. कोई बोल वो नहीं बोलता है बगैर एक होशियार गवाह के•

19. आखिरकार, अटल मौत की बेहोशी आती है; यह है जिससे तुमने बचने कि कोशिश की•

20. सुर फूंका गया है; यह है वादा किया गया दिन•

21. हर रूह आता है एक जमा करने वाले और एक गवाह के साथ•

22. तुम इस से गाफिल हुआ करते थे• हम अब निकालते हैं तुम्हारे नकाब को; आज, तुम्हारी नज़र हैं *(इतनी मज़बूत जैसे)* फौलाद•

23. साथी ने कहा, "यहाँ हैं मेरी ज़बरदस्त गवाही•"*

24. फेंको जहन्नम में हर ज़िद्दी काफिर को•

25. खैरात का मना करने वाला, हमलावर, शक से भरा•

26. उसने कायम किया **अल्लाह** के सिवाए दूसरे खुदा को• फेंको उसे सख्त आज़ाब के अंदर•"

27. उसके साथी ने कहा, "हमारे रब, मैंने गुमराह नहीं किया उसे; वो था दूर बहका हुआ•"

28. उन्होंने कहा, "न झगड़ो मेरे सामने; मैंने काफीतौर पर खबरदार किया तुम्हें•

29. "कुछ भी बदला नहीं जा सकता है अब• मैं कभी बेइंसाफ नहीं हूँ लोगों की तरफ•"

30. वो दिन है जब हम पूछेंगे जहन्नम को, "क्या तुमने पाया है काफी?" वो कहेगा, "मुझे दो और•"

31. जन्नत पेश की जायेगी नेककारों के लिए, फौरन•

32. यह है जो वादा किया गया था हर तौबा करने वाले, साबित कदम के लिए•

33. उन्होंने एहतराम किया सबसे रहम वाले का, उनकी तन्हाई में, और आये पूरे दिल से•

34. उसमें दाखिल हो अमन में; यह है हमेशगी का दिन•

35. वो पाते हैं कुछ भी वो चाहते हैं उसमें, और हमारे पास है उस से भी ज़्यादा•

36. कई एक नस्ल उनसे पहले, जो थे ज़्यादा ताकतवर, हमने फनाह किया• उन्होंने तलाश किया ज़मीन; क्या उन्होंने पाया एक छुटकारा?

37. यह एक सबक होना चाहिए हर एक के लिए जो रखता है एक दिमाग, या काबिल है सुनने और गवाह होने का•

38. हमने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और सारी चीज़ें उनके दरमियान छ: दिनों में, और किसी थकान ने नहीं छुआ हमें•

39. इसलिए, सब्र करो उनके बातों की सूरत में, और तारीफ और बड़ाई करो तुम्हारे रब की सूरज निकलने से पहले, और सूरज डूबने से पहले•

40. रात के दौरान तुम्हें ध्यान करना चाहिए उनके नाम पर, और सजदा करने के बाद•

41. तैयारी करो दिन के लिए जब पुकारने वाला पुकारेगा एक जगह से जो है करीब•

42. जब वो सुनेंगे अटल पुकार; वो है दिन तुम आते हो बाहर•

43. हम हैं वो जो काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत; हमारी तरफ है आखरी मुकद्दर•

44. दिन आयेगा जब ज़मीन फटेगी जल्दबाज़ी में, उनको उठाते हुए• ऐसा हाज़िर करना है हमारे लिए आसान•

45. हम हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से जो वो कहते हैं, जबकी तुम्हारे पास नहीं है ताकत उनपर• इसलिए, ताकीद करो इस कुरान से, उन्हें जो एहतराम करते हैं मेरे ताकीदों का•

****

*50:23-28 *तुम्हारा ज़िंदगी भर का साथी गवाही देता है सारी चीज़ों का जो तुम करते हो• देखें अपेन्डिक्स 7•*

सुरह 51: हवाओं के चलाने वाले (अल धारियात)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. बहती हुई हवाएं•
2. ढोते हुए बारिश•
3. लाते हुए नियामतें•
4. बांटते हुए जैसा उनको हुक्म किया गया•
5. जो वादा किया गया है तुमको यकीनन गुज़र जायेगा•
6. इंसाफ का दिन है अटल•
7. बावजूद सही तौर पर बनाये गये आसमान के•
8. तुम जारी रहते हो सच को बहेस करने के लिए•
9. उस से बहकते हैं बहकने वाले•
10. हाय हो झूठ गढ़ने वालों के लिए•
11. उनके गलत करते रहने में, वो हैं पूरी तरह गाफिल•
12. वो सवाल करते हैं इंसाफ का दिन•
13. दिन वो पेश किये जायेंगे आग कि तरफ•
14. चखो आज़ाब; यह है जिसे तुम ललकारते थे•
15. नेककार मुस्तेहिक हुए हैं बागों और नहरों के•
16. वो पाते हैं उनके रब के इनामें, इसलिए की वो मुत्तकी हुआ करते थे•
17. कभी कभार ही वो सोते थे पूरी रात•
18. सुबह को, वो दुआ करते थे मगफरत के लिए•
19. एक हिस्सा उनके पैसे का रखा जाता था मांगने वाले और ज़रूरतमंद के लिए•
20. ज़मीन भरी है निशानियों से उनके लिए जो हैं मुतमईन•
21. और तुम्हारे खुदके अंदर; क्या तुम देख सकते हो?
22. आसमान में है तुम्हारी नियामत, और सारी चीज़ें जो वादा की गई हैं तुम्हारे लिए•
23. कसम आसमान और ज़मीन के रब की, यह है इतना सच जैस हकीकत के तुम बात करते हो•
24. क्या तुमने ध्यान दिया है इब्राहीम के इज़्जतवाले मेहमानों की तारीख?
25. वो मिले उससे, कहते हुए, "अमन•" उसने कहा, "अमन हो तुमपर, अजनबियों!"
26. उसने कहा उसके कुम्बे को तैयार करने के लिए एक मोटा बछड़ा•
27. जब उसने पेश किया उसे उनको, उसने कहा, "क्या तुम नहीं खाते?"
28. वो डर गया उनकी तरफ से• उन्होंने कहा, "खौफज़दा न हो," और उन्होंने दिया खुशखबरी एक इल्मवाले बेटे की•
29. उसकी बिवी थी हैरतज़दा• ध्यान देते हुए उसके झुररी वाले चेहरे को: "मैं हूँ एक बांझ बूढ़ी औरत•"
30. उन्होंने कहा, "इसतरह कहते हैं तुम्हारे रब• वो हैं सबसे हिकमत वाले, सब कुछ जानने वाले•"
31. उसने कहा, "तुम्हारा क्या इरादा है, ऐ रसूलों?"
32. उन्होंने कहा, "हम भेजे गये हैं मुजरिम लोगों की तरफ•
33. हम बरसायेंगे उनको मिट्टी के पत्थरों से•
34. "निशान किये गये तुम्हारे रब की तरफ से खतावारों के लिए•"
35. हमने फिर बचाया सारे ईमानवालों को•
36. हमने नहीं पाया उसमें सिवाए एक घर फरमानबरदारों का•
37. हम कायम करते हैं एक सबक कि तरह उनके लिए जो डरते हैं दर्दनाक आज़ाब से•
38. मूसा में *(वहाँ है एक सबक)*• हमने भेजा उसे फिरऔन की तरफ वाज़े निशानियों के साथ•
39. लेकिन वो पलट गया, तकब्बुर में, और कहा, "जादूगर, या दिवाना•"

40. इस वजह से, हमने सज़ा दिया उसे और उसके लश्करों को• हमने फेंका उनको समंदर में, और वो है जो हैं ज़िम्मेदार•

41. आद में *(वहाँ है एक सबक)*• हमने भेजा उनपर तबाही वाली हवा•

42. जो कुछ आया उसके सामने पूरी तरह बरबाद कर दिया गया था•

43. तमूद में *(वहाँ है एक सबक)*• उन्हें कहा गया था, "मज़े लो आरज़ी तौर पर•"

44. उन्होंने बगावत किया उनके रब के हुक्म के खिलाफ• इस वजह से, बिजली ने मारा उनको जब वो देखते रहे•

45. वो कभी उठ नहीं पाये, नाहीं उनकी मदद की गई थी•

46. और नुह के लोग उस से पहले; वो थे बदकार लोग•

"कायनात के बढ़ते रहने की थ्योरी" तसदीक की गई

47. हमने तामीर किया आसमान को हमारे हाथों से, और हम जारी रहेंगे उसे बढ़ाने के लिए•

48. और हमने बनाया ज़मीन को रहने के काबिल; एक सही नक्शकारी•

49. हमने पैदा किया एक जोड़ा *(मर्द और औरत का)* सारी चीज़ों का, ताके तुम तवज्जो ले सको•

50. तुम्हें **अल्लाह** की तरफ फरार होना चाहिए• मैं भेजा गया हूँ उनकी तरफ से तुम्हारे लिए एक वाज़े खबरदार करने वाला जैसा•

51. **अल्लाह** के सिवाए कायम न करो किसी दूसरे खुदा को• मैं भेजा गया हूँ उनकी तरफ से तुम्हारे लिए एक वाज़े खबरदार करने वाला जैसा•

52. इस वजह से, जब एक रसूल गया पिछली नस्लों की तरफ, उन्होंने कहा, "जादूगर," या, "दिवाना•"

53. क्या उन्होने एक मुहायदा किया एक दूसरे के साथ? वाकई, वो हैं खता करने वाले•

54. तुम उनको नज़रअंदाज़ कर सकते हो; तुमको इल्ज़ाम नहीं दिया जा सकता•

55. और ताकीद करो, इसलिए की ताकीद करना फायदा देता है ईमानवालों को•

हमारे वजूद का मकसद

56. मैंने पैदा नहीं किया जिनों और इंसानों को सिवाए सिर्फ मेरी इबादत करने के लिए•

57. मुझे ज़रूरत नहीं नियामतों की उनकी तरफ से, नाहीं मुझ को चाहिए कि वो मुझे खिलायें•

58. **अल्लाह** हैं मुहय्या करने वाले, रखने वाले सारी ताकत, आला•

59. खतावारों ने हासिल किया है वही तकदीर जैसा उनके पिछले बराबर वालों ने; उन्हें ललकारना नहीं चाहिए•

60. हाय हो उनके लिए जो कुफ्र करते हैं उस दिन से जो उनका इंतेज़ार कर रहा है•

****

सुरह 52: कोहे तूर (अल तूर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कोहे तूर•
2. दर्ज की गई आसमानी किताब•
3. छपी गई किताबों में•
4. ज़ियारत की गई जगह•
5. बुलंद की गई छत•
6. समंदर जो भड़का दी गई है•
7. तुम्हारे रब का बदला है अटल•
8. कोई ताकत कायनात में रोक नहीं सकती उसे•
9. दिन आयेगा जब आसमान तेज़ गरजेगा•
10. पहाड़ें मिटा दिये जायेंगे•

11. हाय हो काफिरों के लिए उस दिन पर—

12. जो हैं गाफिल, उनके गलत करते रहने में•

13. वो हांके जायेंगे जहन्नम के अंदर, जबरन•

14. यह है आग जिसमें तुम कुफ्र किया करते थे•

15. क्या यह जादू है, या तुम देख नहीं सकते?

16. झेलो जलन• चाहे तुम हो सब्र वाले या बेसब्र, वो होगा एक जैसा तुम्हारे लिए• यह है बराबर बदला उसके लिए जो तुमने किया•

17. नेककार मुस्तेहिक हुए हैं बागों और मुसर्रत के•

18. वो मज़े लेते हैं जो उनके रब ने मखसूस किया है उनके लिए; उनके रब ने बचाया है उनको जहन्नम के आज़ाब से•

19. खाओ और पियो खुशीसे, बदले में तुम्हारे कामों के लिए•

20. वो आराम करते हैं आरामदेह बिछौनों पर, और हम मेल करते हैं उनका खूबसूरत जोड़ों के साथ•

21. उनके लिए जो ईमान लाये, और उनके बच्चों ने भी पैरवी की उनकी अकीदे में, हम उनके बच्चों को उनसे जुड़ने देंगे• हम कभी नाकामयाब नहीं होते इनाम देने के लिए उनको किसी काम के लिए• हर शक्स मुआवज़ा दिया जाता है उसके लिए जो उसने किया•

22. हम उनको फराहम करेंगे फलों और गोश्तों के साथ जो वो पसंद करते हैं•

23. वो मज़े लेंगे शरबतों के जो कभी खराब नहीं किये जाते, और कभी नहीं बुरा पीने के लिए•

24. उनकी खिदमत करते हुए होंगे खादिमें महफूज़ रखे गये मोतियों कि तरह•

25. वो मिलेंगे एक दूसरे से और आपस में याद दिलायेंगे•

26. वो कहेंगे, "हम हुआ करते थे नर्मदिल और खाकसार हमारे लोगों के दरमियान•

27. "**अल्लाह** ने बक्शा है हमें, और बचाया है हमें बुरी हवाओं के आज़ाब से•

28. "हम इल्तेजा किया करते थे उनको; वो हैं सबसे महेरबान, सबसे रहम वाले•"

रसूल

29. तुम्हें लोगों को याद दिलाना चाहिए• तुम पर तुम्हारे रब कि रहमतों के साथ, तुम नाहीं हो एक ज्योतिशी, नाहीं दिवाने•

30. वो कहेंगे, "वो है एक शायर; हमें बस इंतेज़ार करने दो जब तक वो मर नहीं जाता•"

31. कहो, "इंतेज़ार करते रहो; मैं इंतेज़ार करूंगा तुम्हारे साथ•"

32. क्या वो उनके सपने हैं जो हुक्म करते हैं उनका रवय्या, या वो हैं कुदरतन बदकार?

33. क्या वो कहते हैं, "उसने यह सब बना लिया है?" बलिके, वो हैं फकत काफिरें•

"मुहम्मदनस" ललकारते हैं अल्लाह को
और पेश करते हैं ***हदीस***

34. उनको पेश करने दो एक *हदीस* इसकी तरह, अगर वो हैं सच्चे•

35. क्या वो कुछ नहीं से पैदा किये गये थे? क्या वो हैं पैदा करने वाले?

36. क्या उन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को? वाकई, उनके पास नहीं हैं कोई यकीन•

37. क्या वो मालिक हैं तुम्हारे रब के खज़ानों के? क्या वो हैं काबू में?

38. क्या वो एक सीढ़ी चढ़ते हैं जो काबिल करता है उनको सुनने के लिए? उनके सुनने वालों को दिखाने दो उनका सबूत•

39. क्या उनके पास हैं बेटियाँ जबकी तुम्हारे पास है बेटे?

40. क्या तुम मांग रहे हो उनसे कोई मज़दूरी, और वो उस से लदे हुए हैं?

41. क्या वो जानते हैं मुस्तकबिल, और उसे दर्ज करवाते हैं?

42. क्या वो साज़िश कर रहे हैं और मनसूबा बना रहे हैं? काफिरों के मनसूबे पलटकर आते हैं उनके खिलाफ•

43. क्या उनके पास है दूसरा खुदा **अल्लाह** के सिवाए? **अल्लाह** की बड़ाई हो, कहीं ऊपर शरीकों को रखने से•

44. जब वो देखेंगे अम्बारों को आसमान से गिरते हुए, वो कहेंगे, “अम्बार बादलों के!”

45. नज़रअंदाज़ करो उनको जब तक वो नहीं मिलते दिन से जिसमें वो मारे जायेंगे•

46. उस दिन पर, उनके मनसूबे हिफाज़त नहीं करेंगे उनकी, नाहीं उनकी मदद की जायेगी•

47. वो जो हद से गुज़र जाते हैं झेलते हैं आज़ाब यहाँ, लेकिन उनमें से ज़्यादा नहीं जानते•

48. तुम्हें साबित कदमी से जमे रहना चाहिए तुम्हारे रब का हुक्म पूरा करने में—तुम हो हमारी नज़रों में—और बड़ाई और तारीफ करो तुम्हारे रब की जब तुम उठते हो•

49. रात के दरमियान भी उनकी बड़ाई करो, और सुबह को जब सितारे मध्धम होते हैं•

****

सुरह 53: सितारे
(अल नजम)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. जब सितारे गिर गये•*

2. तुम्हारा दोस्त *(मुहम्मद)* गुमराह नहीं था, नाहीं वो धोखा दिया गया था•

3. नाहीं वो बोल रहा था खुदके चाहत पर•

4. वो थी एक खुदाई इल्हाम•

5. इमला किये गये सबसे ताकतवर की तरफ से•

6. सारे इक्तेदार के रखने वाले• उनके सबसे ऊँची ऊँचाई से•

7. सबसे ऊँची उफाक के पास•

8. वो करीब आये नीचे चलते हुए•

9. जब तक वो मुमकिन उतना करीब नहीं हो गये•

10. उन्होंने फिर नाज़िल किया उनके बंदे को जो नाज़िल किया जाना था•

11. ज़हन ने कभी नहीं बनाया जो उसने देखा•

12. क्या तुम शक कर रहे हो जो उसने देखा?

13. उन्होंने उसे देखा दूसरी नुज़ूल में•

14. सबसे ऊंचे मकाम पर•

15. जहाँ दाईम जन्नत रखी गई है•

16. पूरी जगेह थी मुतास्सिर•

17. नज़रें नहीं डगमगाये, नाहीं हुए अंधे•

18. उसने देखा उसके रब की बड़ी निशानियाँ•

कमज़ोर बुतें

19. मुकाबला करो इसका ज़नाना बुतें अल्लात और अल उज़्ज़ा के साथ•

20. और मन्नात, तिसरी वाली•

21. क्या तुम्हारे पास बेटें हैं, जबकी उनके पास हैं ये बिटियों जैसे?

22. क्या एक ज़िल्लत भरी तकसीम!

23. ये हैं लेकिन नामें जिसे तुमने बनाया है, तुम और तुम्हारे पुरखें• **अल्लाह** ने कभी इजाज़त नहीं दिया ऐसी एक बेअदबी• वो अंदाज़े पर चलते हैं, और खुदके चाहत पर, जब सच्ची हिदायत आ चुकी है उनकी तरफ इसमें उनके रब की तरफ से•

**53:1-18 मुहम्मद हाज़िर किये गये थे सबसे ऊँची कायनात को पाने के लिए यह कुरान उनके दिल के अंदर• सितारे गिर पड़े जब उन्होंने सफर किया उनके आरपार मिलयनों दफा रौशनी के रफ्तार से• उसके बाद, कुरान आहिस्ता से आज़ाद किया गया था उनकी याददाश्त को• अपे• 28•*

24. क्या है वो जो इंसान चाहता है?

25. **अल्लाह** के हैं दोनों अगली ज़िंदगी और यह दुनिया॰

26. यहाँ तक के आसमान में फरिश्ते भी नहीं रखते हैं इकतेदार शिफाअत के लिए॰ सिर्फ वो इजाज़त दिये जाते हैं **अल्लाह** कि तरफ से हैं वो जो अमल करते हैं उनके मर्ज़ी और उनके मंज़ूरी के मुताबिक में॰

27. जो कोई कुफ्र करते हैं अगली ज़िंदगी में दिया है फरिश्तों को ज़नाने नामें॰

28. उनको कोई इल्म नहीं था इसके बारे में; उन्होंने सिर्फ अंदाज़ा लगाया॰ अंदाज़ा जगह नहीं ले सकता सच का॰

चुनों तुम्हारे दोस्तों को
ध्यान से

29. तुम्हें नज़रअंदाज़ करना चाहिए उनको जो पलट जाते हैं हमारे पैगाम से, और मसरूफ हो जाते हैं इस दुनियावी ज़िंदगी के साथ॰

30. यह हद है उनके इल्म का॰ तुम्हारे रब हैं पूरी तरह वाकिफ उनसे जो बहेक गये उनके रास्ते से, और वो हैं पूरी तरह वाकिफ उनसे जो हैं हिदायतयाफ्ता॰

31. **अल्लाह** की हैं सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर॰ वो बदला चुकायेंगे उनको जो बुरा करते हैं उनके कामों के लिए, और हम इनाम देंगे नेककारों को उनकी नेककारी के लिए॰

32. वो बचते हैं बड़े गुनाहों और खताओं से, सिवाए छोटे जुर्मों के॰ तुम्हारे रब की मगफरत है बेइंतेहा॰ वो रहें हैं पूरी तरह वाकिफ तुमसे जबसे उन्होंने तुमको शुरू किया ज़मीन से॰ और जब तुम एमब्रियो थे तुम्हारी मांओं के कोखों में॰ इसलिए, अपने आप को बुलंद न करो; वो हैं पूरी तरह वाकिफ नेककारों से॰

33. क्या तुमने ध्यान दिया है उसको जो पलट गया?

34. कभी कभार ही उसने दिया खैरात को, और फिर बहुत थोड़ा॰

35. क्या उसने रखा इल्म मुस्तकबिल का? क्या वो देख सकता था उसे?

36. क्या वो इत्तेला नहीं किया गया था मूसा की आसमानी किताब में तालीमों के बारे में?

37. और इब्राहीम जिसने पूरा किया?

38. कोई रूह नहीं झेलती है दूसरी रूह के गुनाहों को॰

39. हर इंसान ज़िम्मेदार है उसके खुदके कामों के लिए॰

40. और हर किसी के कामों को दिखाया जायेगा॰

41. फिर वो पूरी तरफ से मुआवज़ा दिये जायेंगे ऐसे कामों के लिए॰

42. तुम्हारे रब कि तरफ है आखरी मुकद्दर॰

43. वो हैं वाहिद जो तुम्हे हँसाते या रूलाते हैं॰

44. वो हैं वाहिद जो काबू करते हैं मौत और ज़िंदगी॰

शौहर तय करता है
बच्चे का जिन्स

45. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया दो किस्में मर्दाना और ज़नाना—

46. मनी की एक छोटी बूंद से॰

47. वो पूरा करेंगे दोबारा खिलकत॰

48. वो हैं वाहिद जो तुम्हें अमीर या गरीब बनाते हैं॰

49. वो हैं रब कहकशाओं के॰

50. वो हैं वाहिद जिन्होंने फनाह किया पुराने आद को॰

51. और मिटा दिया तमूद को॰

52. इसके अलावा नुह के लोग उस से पहले, वो थे बुरे खता करने वाले॰

53. बुरी कौमें *(सुडोम और गोमोराह की)* थे सबसे निचले॰

54. इस वजह से, वो पूरी तरह गायब हो गये•

55. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो•

56. यह है पुराने वालों जैसी एक ताकीद•

57. अटल है अनकरीब•

58. कोई भी **अल्लाह** के सिवाए उसे हटा नहीं सकता•

59. क्या तुम इस मामले के बारे में सवाल कर रहे हो?

60. क्या तुम हँस रहे हो, बजाये रोने के?

61. क्या तुम इसरार कर रहे हो तुम्हारे राहों पर?

62. तुम्हें **अल्लाह** के सामने सजदे में गिरना, और इबादत करना चाहिए•

****

सुरह 54: चाँद
(अल कमर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. वक्त करीब आ चुका है, और चाँद फट चुका है•*

2. फिर उन्होंने देखा एक मौजेज़ा; लेकिन वो पलट गये और कहा, "पुराना जादू•"

3. उन्होंने कुफ़्र किया, पैरवी की उनके रायों की, और लगे रहे उनके पुराने रिवाज़ों की तरफ•

4. काफी ताकीदें पहुँचा दी गई हैं उनको होशियार करने के लिए•

5. बड़ी हिकमत; लेकिन सारी ताकीदें रहीं हैं फुज़ूल में•

6. नज़र अंदाज़ करो उनको; दिन आयेगा जब पुकारने वाला ऐलान करेगा एक हौलनाक तबाही•

7. रूसवा हुई उनकी आँखें, वो आते हैं कब्रों से बाहर जैसे बिखरे टिड्डे•

8. जैसे वो जवाब देते हैं पुकराने वाले को, काफिरें कहेंगे, "यह है एक तकलीफ का दिन?"

9. नुह के लोगों ने उनसे पहले कुफ़्र किया• उन्होंने कुफ़्र किया हमारे बंदे पर और कहा, "दिवाना!" वो परेशान किया गया था•

10. उसने इल्तेजा किया उसके रब से, "मैं मजबूर किया गया हूँ; अता करिये मुझे फतेह•"

11. हमने फिर आसमान के दरवाज़ों को खोला उंडेलते हुए पानी•

12. और हमने चश्मों को फूंट निकलने दिया ज़मीन से बाहर• पानी मिले एक पहले से तय किये गये फैसले को अंजाम देने के लिए•

कश्ती

13. हमने उठाया उसे एक पानी कि कश्ती पर बनाया गया लठ्ठों और रस्सियों से•

14. वो चला हमारी खबरदार नज़रों के तहेत, एक इनाम उसके लिए जो ठुकराया गया था•

15. हमने कायम किया है उसे एक सबक जैसा• क्या तुम में से कोई समझना चाहता है?

16. कितना हौलनाक था मेरा आज़ाब बाद ताकीदों के•

17. हमने बनाया कुरान को आसान समझने के लिए• क्या तुम में से कोई चाहता है समझना?

18. आद ने कुफ़्र किया• इस वजह से, कितना हौलनाक था मेरा आज़ाब ताकीदों के बाद•

**54:1 एहम निशानी दुनिया के खत्म होने के करीब होने का गुज़र गया 1969 में जब इंसाने उतरे चाँद पर और लाये चाँद के टुकड़ों को ज़मीन पर• उसी वक्त, अल्लाह का रियाज़ी मौजेज़ा कुरान का आहिस्ता से बेनकाब किया जा रहा था• रवायती मुसलमानों ने इसकी मुखालिफत की, चुँकी उसने बेनकाब किया उनके तरीकों का धोखा (अपे• 25)•*

19. हमने भेजा है उनपर तेज़ हवाऐं, मुसलसल आफत के एक दिन पर।

20. उसने उछाला लोगों को इधर उधर वो थे मुरझाये हुए नख्ल के दरख्त के तने जैसे।

21. कितना हौलनाक था मेरा आज़ाब ताकीदों के बाद!

22. हमने बनाया कुरान को आसान समझने के लिए। क्या तुम में से कोई चाहता है समझना?

23. तमूद ने ताकीदों को ठुकराया।

24. उन्होंने कहा, "क्या हम पैरवी करें हम में से एक; इंसान की? हम फिर हो जायेंगे गुमराह, फिर खत्म होंगे जहन्नम में।

25. "क्या पैगाम आया नीचे उसकी तरफ, बजाये हमारे? वो है एक खुला झूठा।"

26. वो पता करेंगे कल कौन है खुला झूठा।

27. हम भेज रहे हैं ऊँठनी एक आज़माईश जैसा उनके लिए। उनकी निगरानी और सब्र करो।

28. इत्तेला करो उनको कि पानी बांटा जायेगा उनके बीच; *(ऊँठनी)* इजाज़त दी जानी चाहिए पीने के लिए उसके मुकर्रर किये गये दिन पर।

29. लेकिन उन्होंने उकसाया उनके दोस्त को *(ऊँठनी)* को कत्ल करने के लिए, और उसने पूरा किया।

30. इस वजह से, कितना हौलनाक था मेरा आज़ाब! वो खबरदार किये गये थे।

31. हमने भेजा उनपर एक मार, जिसपर वो बन गये जैसे कटी हुई सूखी घांस।

32. हमने बनाया कुरान को आसान समझने के लिए। क्या तुम में से कोई चाहता है समझना?

33. लूत के लोगों ने ठुकराया ताकीदों को।

34. हमने बरसाया उनको पत्थरों से। सिर्फ लूत का कुम्बा बचाया गया था सुबह को।

35. हमने बक्शा उसे और उसके कुम्बे को; हम इस तरह इनाम देते हैं कद्रदान को।

36. उसने खबरदार किया उनको हमारे बदले के बारे में, लेकिन उन्होंने मज़ाक उड़ाया ताकीदों का।

37. उन्होंने सौदा किया उससे उसके मेहमानों के बारे में; हमने अंधा किया उनको। झेलो मेरा आज़ाब; तुम खबरदार किये गये थे।

38. अगली सुबह जल्दी, एक गारत करने वाले आज़ाब ने मारा उनको।

39. झेलो मेरा आज़ाब; तुम खबरदार किये गये थे।

40. हमने बनाया कुरान को आसान समझने के लिए। क्या तुम में से कोई चाहता है समझना?।

41. फिरऔन के लोग खबरदार किये गये थे।

42. उन्होंने हमारी सारी निशानियों को ठुकराया। इस वजह से, हमने बदला चुकाया उनका जैसा एक सारी ताकत रखने वाले, कादिरे मुतलक को चुकाना चाहिए।

43. क्या तुम काफिरें बेहतर हो उन काफिरों से? क्या तुम आसमनी किताब कि तरफ से बरी किये गये हो।

44. शायद वो सोचते हैं, "हम होंगे जीतने वाले।"

45. वो सारे हरा दिये जायेंगे; वो उल्टा पलट जायेंगे और फरार हो जायेंगे।

46. वक्त इंतेज़ार कर रहा है उनका, और वक्त है कहीं बुरा और कहीं ज़्यादा दर्दनाक।

47. यकीनन, मुजरिम हैं बहके हुए, और खत्म होंगे जहन्नम में।

48. वो घसीटे जायेंगे जहन्नम के आग के अंदर, जबरन। झेलो दर्द आज़ाब का।

49. सारी चीज़ हमने पैदा किया नापा गया है सही सही।

50. हमारे हुक्मों को पूरा किया जाता है एक आँख की पलक के झपकने के अंदर।

51. हमने तुम्हारे बराबर वालों को फनाह किया। क्या तुम में से कोई चाहता है समझना?

52. सारी चीज़ें जो उन्होंने किया दर्ज किया गया है आसमानी किताबों में•

53. सारी चीज़ें, छोटी या बड़ी, लिखी जा चुकी है•

54. यकीनन, नेककार मुस्तेहिक हुए हैं बागों और नदियों के•

55. एक इज़्जत वाले मकाम में, एक कादिरे मुतलक बादशाह के पास•

****

सुरह 55: सबसे मेहरबान (अल रहमान)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. सबसे मेहरबान•

2. सिखाने वाले कुरान के•

3. पैदा करने वाले इंसानों के•

4. उन्होंने सिखाया उनको कैसे तमीज़ किया जाये•

5. सूरज और चाँद सही तौर पर हिसाब किये गये हैं•

6. सितारे और दरख्ते सजदा करते हैं•

7. उन्होंने तामीर किया आसमान को और कायम किया कानून•

8. तुम्हें कानून को पार नहीं करना चाहिए•

9. तुम्हें इंसाफ कायम करना चाहिए; कानून को न तोड़ो•

10. उन्होंने ज़मीन को सारे मखलूकों के लिए पैदा किया•

11. उसमें हैं फलें, खजूर के नख्लें उनके लटकते हुए फल के साथ•*

12. दाने और मसाले भी•

13. *(ऐ इंसानों और जिनों)* तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

14. उन्होंने पैदा किया इंसान को पुरानी मिट्टी से, जैसे कुम्हार कि मिट्टी•

15. और पैदा किया जिनों को लहकती हुई आग से•

16. *(ऐ इंसानों और जिनों)* तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

17. रब दो मशरिकों और दो मगरिबों के•

18. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

19. वो अलग करते हैं दो समंदरों को जहाँ वो मिलते हैं•

20. एक आड़ रखी जाती है उनके बीच, उनको पार करने से रोकने के लिए•

21. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

22. दोनो से तुम पाते हो मातियाँ और मूंगे•

23. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

24. उन्होंने दिया तुम्हें जहाज़ें जो फिरते हैं समंदर पर परचमों कि तरह•

25. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

26. हर कोई ज़मीन पर खत्म हो जाता है•

27. सिर्फ तुम्हारे रब कि मौजूदगी जारी रहती है• रखने वाले अज़मत और इज़्जत के•

28. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

29. हर कोइ इल्तेजा कर रहा है उनसे आसमानों और ज़मीन में• हर दिन वो हैं पूरे काबू में•

30. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

*55:11 *मुकाबला करो फिज़ाई कश्ती ज़मीन के दोबारा ताज़ा करने वाले निज़ामों और पैदा करने वाले ऐस्ट्रोनॉट्स का, साथ सबसे पेचीदा फिज़ाई कश्तियों के जो हम छोड़ते हैं फिज़ा में• अल्लाह की बड़ाई हो•*

2417 *116118*

31. हम पुकारेंगे तुम्हें हिसाब के लिए, ऐ इंसानों और जिनों•

32. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

33. ऐ जिनों और इंसानों, अगर तुम घुस सको आसमानों और ज़मीन के बाहरी हदों को, जाओ आगे और घुसो• तुम घुस नहीं सकते बगैर इजाज़त के•

34. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

35. तुम बमबारी किये जाते हो आग और धात के गोलों से, और तुम कभी जीत नहीं सकते•

36. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

37. जब आसमान पुरज़ा पुरज़ा होता है, और बदल जाता है गुलाब के रंग जैसा रंगा हुआ•

38. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

39. उस दिन पर, नाहीं इंसान, नाहीं एक जिन, पूछा जायेगा उसके गुनाहों के बारे में•

40. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

41. *(यह है इसलिए कि)* मुजरिम पहचाने जायेंगे उनके शक्लों से; वो पकड़े जायेंगे माथे के बालों और पैरों से•

42. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

43. यह है जहन्नम जिसे मुजरिम ठुकराया करते थे•

44. वो फिरेंगे उसके और एक नाकाबिले बरदाश्त भट्टी के बीच•*

45. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

46. उनके लिए जो एहतराम करते हैं उनके रब की अज़मत, दो बागें *(एक जिनों को लिए और एक इंसानों के लिए)*•

47. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

48. नियामतों से भरा•

49. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

50. दो चश्में हैं उनमें, बहते हुए•

51. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

52. सारे फल की उनमें, दो किस्में•

53. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

54. जब आराम करते हुए बिछौने पर गिलाफ किये गये साटिन से, फलें हैं पहुँच के अंदर•

55. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

56. उनके खुबसूरत जोड़े कभी नहीं छुए गये थे किसी इंसान या जिन से•

57. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

58. वो दिखते हैं कीमती पत्थरों और मुंगे जैसे•

59. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

60. क्या इनाम अच्छाई का है कुछभी लेकिन अच्छाई?

61. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

62. उनके नीचे हैं दो बागें *(एक जिनों के लिए औए एक इंसानों के लिए)*•

63. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

64. पास पास•

*55:44 पूरी तफसीलें ऊँची जन्नत, निचली जन्नत, आराफ, जहन्नम, और नाकाबिले बरदाश्त भट्टी के बारे में, दिया गया है अपेन्डिक्सें 5 और 11 में•

65. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

66. उनमें, कुएं पम्प किये जाने के लिए•

67. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

68. उनमें हैं फलें, खजूर के नख्लें, और अनार•

69. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

70. उनमें हैं खूबसूरत साथियें•

71. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

72. पाबंद किये गये खेमों में•

73. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

74. किसी इंसान ने कभी नहीं छुआ उनको, नाहीं एक जिन•

75. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

76. आराम करते हुए हरे कालीनों पर, खूबसूरत माहौलों में•

77. तुम्हारे रब की कौनसी अनोखी चीज़ों को तुम ठुकरा सकते हो?

78. सबसे आला है नाम तुम्हारे रब का, रखने वाले अज़मत और इज़्जत के•

****

सुरह 56: अटल
(अल वाकेया)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. अटल जब गुज़र जायेगा•
2. कुछ भी नहीं रोक सकता है उसे होने से•
3. वो नीचा करेगा कुछ को, और ऊँचा दूसरों को•
4. ज़मीन हिला दी जायेगी•
5. पहाड़े मिटा दिये जायेंगे•
6. ऐसे जैसे वो कभी वजूद में न थे•
7. तुम तह ब तह किये जाओगे तीन किस्मों में•
8. जो हकदार हुए मुसर्रत के होंगे मुसर्रत में•
9. जो हकदार हुए मुसीबत के होंगे मुसीबत में•
10. फिर वहाँ हैं ऊँचे दर्जे के ऊँचे दर्जे•
11. यह वो हैं जो होंगे सबसे करीब *(अल्लाह के)*•
12. मुसर्रत के बागों में•
13. कई पहली कौमों से•*
14. कुछ बादकी नस्लों से•
15. आरामदेह बिछौनों पर•
16. मज़ा लेते हुए सारी चीज़ों का, वो होंगे पड़ोसियें•
17. खिदमत करते होंगे उनका न मिटने वाले खादिमें•
18. साथ प्यालों, घड़ों और खालिस शरबतों के•
19. वो कभी खत्म नहीं होते, नाहीं वो कभी बेज़ार होते हैं•
20. फलें उनकी पसंद के•
21. परिंदों का गोश्त जिसे वो चाहते हैं•
22. खूबसूरत साथियें•
23. हिफाज़त किय गये मोतियों जैसे•
24. इनामें उनके कामों के लिए•

*56:13-40 लोग जो ईमान रखते हैं और परवरिश करते हैं उनके रूहों की सिर्फ अल्लाह कि इबादत करने के ज़रिये तय किये गये हैं ऊँची जन्नत के लिए• हर रसूल के दौर के पैरवी करने वाले बिला कसर झेलते हैं अज़ार सानी रिवाज पर चलने वाले और बिगड़े

मज़हब के पाबंद रहने वालों की तरफ से• इस तरह, उनके पास है एक खास जगह मखसूस की गई उनके लिए ऊँची जन्नत में• सारे लोग जो मरते हैं 40 कि उम्र से पहले जाते हैं निचली जन्नत को, कमसे कम (46:15)•

2417 *116118*

25. वो कभी नहीं सुनते हैं कोई खुराफात उसमें, नाहीं गुनाहगारी वाली बातें•

26. सिर्फ बात: “अमन, अमन•”

निचली जन्नत

27. दाहिनी तरफ वाले, होंगे दाहिनी तरफ पर•

28. हरे भरे बागों में•

29. खुशबुदार फलें•

30. बड़ाये गये छांव•

31. ढ़ेर सारा पानी•

32. कई फलें•

33. कभी खत्म न होने वाले; कभी मना नहीं किये गये•

34. आरामदेह बिछौने•

35. हम पैदा करते हैं उनके लिए साथियें•

36. कभी पहले छुए नहीं गये•

37. सही सही मेल किये गये•

38. उनके लिए जो हैं दाहिनी तरफ पर•

39. कई पहली नस्लों से•

40. कई बाद की नस्लों से•*

जहन्नम

41. बांई तरफ वाले, होंगे बांई तरफ पर•

42. मुसीबत और भट्टी में•

43. यहाँ तक के उनकी छांव है गरम•

44. कभी नहीं ठंडा, कभी बरदाश्त के काबिल नहीं•

45. वो हुआ करते थे अमीर•

46. उन्होंने इसरार किया बड़ी बेअदबी पर•

47. उन्होंने कहा, “इसके बाद कि हम मर जायें और बदल जायें धूल और हड्डीयों में, हम दोबारा ज़िंदा किये जाते हैं?

48. “क्या यह शामिल करता है हमारे बाप दादाओं को?”

49. कहो, “पहली नस्लें और बादकी नस्लें•

50. “हाज़िर किये जायेंगे एक मुलाकात के लिए एक पहले से तय किये गये दिन पर•

51. “फिर तुम, ऐ कुफ्र करने वाले बहके हुओं•

52. “खायेंगे कड़वेपन के दरख्तों से•

53. “भरते हुए तुम्हारे पेटों को उस से•

54. “फिर पीते हुए उस के ऊपर जहन्नमी शरबतें•

55. “फिर इज़ाफा करते हुए शरबतें रेत के•”

56. ऐसा है उनका हिस्सा इंसाफ के दिन पर•

गौर करना

57. हमने तुमको पैदा किया है अगर सिर्फ तुम मान सकते!

58. क्या तुमने ध्यान दिया है मनी जो तुम पैदा करते हो?

59. क्या तुमने उसकी खिलकत की, या हमने किया?

60. हमने पहले से तय किया है मौत तुम्हारे लिए• कुछ नहीं रोक सकता हमें—

61. तबदील करते हुए तुम्हारी जगह में नई नस्लों से, और कायम करते हुए जो तुम नहीं जानते•

62. तुम जानते हो पहली खिलकत के बारे में• क्या तुम्हें याद नहीं?

63. क्या तुमने ध्यान दिया है फसलें तुम काटते हो?

64. क्या तुमने उगाया उनको, या हमने उगाया?

65. अगर हम चाहें, हम बदल सकते हैं उसे सूखी घांस में• फिर तुम मातम करोगे:

66. “हमने खो दिया•

67. “हम महरूम किये गये हैं•”

68. क्या तुमने ध्यान दिया है पानी तुम पीते हो•

69. क्या तुमने भेजा उसे नीचे बादलों से, या हमने भेजा?

70. अगर हम चाहें, हम बना सकते हैं उसे खारा• तुम्हें शुक्रगुज़ार होना चाहिए•

**56:40 देखें फुटनोट के लिए 56:13-40•*

71. क्या तुमने ध्यान दिया है आग तुम जलाते हो?

72. क्या तुमने शुरू किया उसके दरख्त को, या हमने किया?

73. हमने बनाया उसे एक ताकीद, और एक फायदेमंद औज़ार इस्तेमाल करने वालों के लिए•

74. तुम्हें बड़ाई करनी चाहिए तुम्हारे रब, अज़ीम के नाम की•

सिर्फ सच्चा
समझ सकता है कुरान को

75. मैं कसम खाता हूँ सितारों के ठिकानों की•

76. यह है एक एहद, अगर तुम सिर्फ जानते, जो है ज़बरदस्त•*

77. यह है एक बाइज़्जत कुरान•

78. एक महफूज़ रखे गये किताब में•

79. कोई भी समझ नहीं सकता उसे सिवाए सच्चे के•*

80. एक नुज़ूल कायनात के रब की तरफ से•

81. क्या तुम नज़रअंदाज़ कर रहे हो यह बयान?

82. क्या तुम बनाते हो उसे तुम्हारा कारोबार कि तुम कुफ्र करो?

83. जब वक्त आयेगा और वो *(तुम्हारी रूह)* पहुँचेगी तुम्हारे हलक को—

84. तुम फिर देखोगे आसपास•

85. हम तुमसे ज़्यादा हैं उसके करीब, लेकिन तुम नहीं देखते•

86. अगर वो है सच कि तुम ज़िम्मेदार नहीं होते किसी हिसाब का—

87. तुम क्यों ठीक नहीं करते *(तुम्हारी रूह को)*, अगर तुम हो सच्चे?

88. अगर वो है उनमें से एक मेरे करीब—

89. फिर खुशी, फूलें, और मुसर्रत के बागें•

90. और अगर वो है दाहिने में से एक—

91. अमन है उनका हिस्सा जो हैं दाहिने पर•

92. लेकिन अगर वो है काफिरों में से एक, जो हैं बहके हुए—

93. फिर एक ठिकाना भट्टी का—

94. और जलना जहन्नम में•

95. यह है कामिल सच•

96. तुम्हें बड़ाई करनी चाहिए तुम्हारे रब, अज़ीम के नाम की•

****

सुरह 57: लोहा
(अल हदीद)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. **अल्लाह** की बड़ाई कर रही है सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में• वो हैं सारी ताकत रखने वाले, सबसे हिकमत वाले•

2. उनकी हैं बादशाहत आसमानों और ज़मीन की• वो काबू करते हैं ज़िंदगी और मौत• वो हैं कादिरे मुतलक•

3. वो है अव्वल और आखीर• वो हैं सबसे बाहरी और सबसे अंदरूनी• वो पूरी तरह वाकिफ हैं सारी चीज़ों से•

**56:75-76 हमारी कायनात, सबसे छोटी और सबसे अंदर वाली सात कायनातों की, रखती है एक बिलयन कहकशायें, एक बिलयन ट्रिलयन सितारे, फैलते हुए रौशनी के बिलयनस सालें• यह अनगिनत डेसिलयनस आसमानी अम्बारें कायम रखते हैं उनके दायरे एक खुदाई तौर पर काबू किये दुरुस्ती में• जितना ज़्यादा हम सीखते हैं, और ज़्यादा हम एहसास करते हैं कितना ज़बरदस्त यह एहद है• देखें अपेन्डिक्स 6•*

**56:79 झूठे जो मुतमईन नहीं हैं सिर्फ कुरान से खुदाई तौर पर रोके गये हैं कुरान को समझने से• यह सोच दोहराई गई है पूरे कुरान में (17:45, 18:57)• इस वजह से, वो कभी समझ नहीं सकते यह आयत• मिसाल के तौर पर, मुकाबला किजिये इस तर्जुमे का 7:3, 17:46, 41:44, और 56:79 दूसरे तर्जुमों के साथ•*

4. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में,* फिर लिया सारे इकतेदार को• वो जानते हैं सारी चीज़ें जो दाखिल होती हैं ज़मीन में, और सारी चीज़ जो बाहर आती है उसे से, और सारी चीज़ जो आती है नीचे आसमान से, और सारी चीज़ जो चढ़ती है उसमें• वो हैं तुम्हारे साथ जहाँ भी तुम रहो• **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ें तुम करते हो•

5. उनकी है बादशाहत आसमानों और ज़मीन की• सारे मामले काबू किये गये हैं **अल्लाह** की तरफ से•

6. वो मिलाते हैं रात को दिन में, और मिलाते हैं दिन को रात में• वो हैं पूरी तरह वाकिफ सबसे अंदरूनी ख्यालों से•

7. ईमान रखो **अल्लाह** और उनके रसूल में, और दो उस से जो उन्होंने इनायत किया है तुम्हारे ऊपर• तुम में से वो जो ईमान रखते हैं और देते हैं *(खैरात को)* मुस्तेहिक हुए हैं एक बड़े बदले का•

8. क्यों तुम्हें **अल्लाह** में ईमान नहीं रखना चाहिए जब रसूल दावत दे रहा है तुम्हें उनके रब में ईमान रखने के लिए? उसने लिया है एक एहद तुमसे, अगर तुम हो ईमानवाले•

9. वो हैं वाहिद जो भेजते हैं नीचे उनके बंदे की तरफ साफ आयतें, ताके तुम्हारी रहबरी करें अंधेरे से बाहर रौशनी में• **अल्लाह** हैं शफीक तुम्हारी तरफ, सबसे रहम वाले•

10. तुम क्यों खर्च नहीं करते **अल्लाह** कि राह में, जबकी **अल्लाह** रखते हैं सारी मिलकियत आसमानों और ज़मीन में?

खास इज़्जत

सबसे नुमाया हैं वो तुम में से जो खर्च करते हैं फतेह से पहले और जद्दोजेहद करते हैं• वो हासिल करते हैं एक बड़कर दर्जा उनसे जो खर्च करते हैं फतेह के बाद और जद्दोजेहद करते हैं• हर एक के लिए, **अल्लाह** वादा करते हैं निजात• **अल्लाह** हैं आगाह सारी चीज़ें तुम करते हो•

11. कौन चाहेगा **अल्लाह** को उधार देना एक उधार नेककारी का, उसे उसके लिए कई गुना ज़रप किये जाने, और खत्म होने के लिए एक फरागदिल वाले बदले के साथ?

बड़ी फतेह

12. दिन आयेगा जब तुम देखोगे ईमान रखने वाले मर्दो और औरतों को साथ उनकी चमकती हुई रौशनीयों के उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ• तुम्हारी है अच्छी खबरें कि, उस दिन पर, तुम्हारे पास होंगे बागें बहती हुई नहरों के साथ• तुम रहोगे उसमें हमेशा के लिए• यह है बड़ी फतेह•

सबसे बुरा हारने वाले

13. उस दिन पर, मुनफिक मर्दे और औरतें कहेंगे उनको जिन्होंने ईमान रखा, "बराये करम हमें जज़्ब करने दो तुम्हारी रौशनी से कुछ•" ये कहा जायेगा, "जाओ तुम्हारे पीछे, और तलाश करो रौशनी•" एक आड़ कायम की जायेगी उनके दरमियान, जिसका दरवाज़ा अलग करता है अंदरूनी तरफ पर रहमत, बाहरी तरफ पर आज़ाब से•

14. वो पुकारेंगे उनको, "क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे?" वो जवाब देंगे, "हाँ, लेकिन तुमने दगा दिया तुम्हारी रूहों को, हिचकिचाया, शक किया, और बहेक गये आरज़ूमंद सोच से, जब तक **अल्लाह** का इंसाफ नहीं आया• तुम फेरे गये थे **अल्लाह** कि तरफ से फरेबों से•

15. "इसलिए, आज कोई फिदया नहीं लिया जा सकता है तुम्हारी तरफ से, नाहीं उनकी तरफ से जिन्होंने कुफ़्र किया• तुम्हारा ठिकाना है आग; वो है तुम्हारा रब, और एक अफसोसनाक ठिकाना•"

**57:4 छः दिनें खिलकत की हैं महेज़ एक मयार हमें इत्तेला करने के लिए निसबती एहमियात मुखतलिफ हिस्सों की, झलकाने के लिए नज़म ज़मीन की एहमियत, और हमे पता लगने देने के लिए की ज़मीन है सिर्फ बसाई गई नजम• देखें फुटनोट 41:9-10•*

बिगड़ना मज़हब का

16. क्या यह वक्त नहीं है उनके लिए जिन्होंने ईमान रखा **अल्लाह** के पैगाम के लिए उनके दिलों को खोलना, और सच्चाई जो नाज़िल की गई है इसमें? उन्हें पिछली आसमानी किताबों कि पैरवी करने वलों कि तरह नहीं होना चाहिए जिनके दिलें बन गये सख्त वक्त के साथ और, इस वजह से, उनमें से कई बन गये बदकार•

17. जानो कि **अल्लाह** दोबारा ज़िंदा करते हैं ज़मीन इसके बाद की वो मर चुकी थी• हम इस तरह समझाते हैं आयतों को तुम्हारे लिए• ताके तुम समझ सको•

18. यकीनन, खैरात करने वाले मर्दों और औरतों ने उधार दिया है **अल्लाह** को एक उधार अच्छाई का• वो पायेंगे उनका इनाम ज़रप किये गये कई गुना; वो मुस्तेहिक हुए हैं एक फराग दिल बदले के•

19. वो जिन्होंने ईमान रखा **अल्लाह** और उनके रसूलों में हैं बुर्जुगें और शहीदें• मखसूस उनके लिए उनके रब के पास हैं इनामें और उनकी रौशनी• जहाँ तक वो जिन्होंने कुफ्र किया और ठुकराया हमारी आयतों को, उन्होंने हासिल किया है जहन्नम•

यह ज़िंदगी के साथ मसरूफियत
मलामत की गई

20. जानों कि यह दुनियावी ज़िंदगी खेलना और खेलों, और तुम्हारे बीच शेखी मारने, और पैसा और बच्चे बटोरने से ज़्यादा कुछ नहीं है• वो है जैसा बहुत बरिश जो पैदा करता है पौधे और खुश करता है काफिरों को• लेकिन फिर पौधे बदल जाते हैं फुजूल सूखी घांस में, और फूंक दिये जाते हैं दूर हवा से• अगली ज़िंदगी में वहाँ है यातो सख्त आज़ाब, या मगफरत **अल्लाह** कि तरफ से और मंज़ूरी• यह दुनियावी ज़िंदगी एक आरज़ी धोखे से ज़्यादा कुछ नहीं है•

अकलमंदी वाला
रास्ता

21. इसलिए, तुम्हें दौड़ना चाहिए तुम्हारे रब कि तरफ से मगफरत कि तरफ, और जन्नत जिसकी चौड़ाई घेरे में लेती है आसमान और ज़मीन• वो इंतेज़ार कर रही है उनका जो ईमान रखते हैं **अल्लाह** और उनके रसूलों में• ऐसी है **अल्लाह** कि रहमत जो वो इनायत करते हैं जिसकिसी पर वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं मालिक लामहदूद फज़्ल के•

गहरी
*हकीकत**

22. जो कुछ होता है ज़मीन पर, या तुम्हें, पहले से दर्ज किया जा चुका है, यहाँ तक के खिलकत से पहले• यह है आसान **अल्लाह** के लिए करना•

23. इस तरह, तुम्हें गमज़दा नहीं होना चाहिए किसी चीज़ पर तुम खोते हो, नाहीं फर्क करना चाहिए किसी चीज़ से उन्होंने इनायत किया है तुम पर• **अल्लाह** नहीं चाहते उनको जो हैं शेखीखोर, मगरूर•

24. वो हैं कंजूस, और हिदायत करते हैं लोगों को कंजूस होने के लिए• अगर एक पलट जाता है, फिर **अल्लाह** हैं अमीर, काबिले तारीफ•

लोहा:
सबसे फायदे मंद धात

25. हमने भेजा हमारे रसूलों को मदद किये गये साफ सबूतों से, और हमने भेजा नीचे उनके लिए आसमानी किताब और कानून, ताके लोग बरकरार रखें इंसाफ• हमने भेजा नीचे लोहा, जिसमें है ताकत, और कई फायदे लोगों के लिए• ये सब ताके **अल्लाह** को पहचानने के लिए वो जो उन्हें और उनके रसूलों कि मदद करेंगे, अकीदे पर• **अल्लाह** हैं ताकतवर, सारी ताकत वाले•

**57:22 हम बिल्कुल आज़ाद हैं अल्लाह कि तरफ, या शैतान कि तरफ होने के लिए• अल्लाह होते हैं जानने के लिए दुरूस्ती से किस किस्म का फैसला हम में से हर एक लेगा• विडियो टेप तुम्हारी ज़िंदगी का, पैदाईश से मौत तक, पहले से दर्ज किया जा चुका है• देखें अपेन्डिक्स 14•*

नबियें

26. हमने भेजा नुह और इब्राहीम को, और हमने अता किया उनके आलो औलादों को नबूवत और आसमानी किताब• उनमें से कुछ थे हिदायतयाफ्ता, जबके कई थे बदकार•

बिगड़ना मज़हब का

27. उनके बाद, हमने भेजा हमारे रसूलों को• हमने भेजा मरयम के बेटे ईसा को, और हमने दिया उसे **इंजील** *(गोसपेल)*, और उसकी पैरवी करने वालों के दिलों में हमने रखा नर्मदिली और रहम• लेकिन उन्होंने ऐजाद किया बनवासपन जिसे हमने कभी मुकर्रर नहीं किया उनके लिए• हमने सिर्फ पूछा था उनको करने के लिए था बरकरार रखना **अल्लाह** की तरफ से मंज़ूर किये गये हुक्मों को• लेकिन उन्होंने बरकरार नहीं रखा पैगाम को जैसा उनको रखना चाहिए था• इस वजह से, हमने दिया उनको जिन्होंने ईमान रखा उनमें से उनका बदला, जबकी उनमें से कई थे बदकार•

28. ऐ ईमानवालो, तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना और उनके रसूल में ईमान रखना चाहिए • वो फिर अता करेंगे तुम्हें दुगना इनाम उनकी रहमत से, बक्शेंगे तुम्हें रौशनी के साथ तुम्हारी हिदायत करने, और तुम्हें माफ करने के लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

29. इस तरह, पिछली आसमानी किताब की पैरवी करने वाले को मालूम होना चाहिए कि उन्होंने काबू नहीं किया **अल्लाह** कि रहमत और फज़्ल, और यह की सारा फज़्ल है **अल्लाह** के हाथ में• वो इनायत करते हैं उसे जिसकिसी पर वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं मालिक लामहदूद फज़्ल के•

****

सुरह 58: बहेस (अल मुजादलह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. **अल्लाह** ने सुना है औरत को जिसने बहेस किया तुम्हारे साथ उसके शौहर के बारे में, और शिकायत की **अल्लाह** से• **अल्लाह** ने सुना सारी चीज़ें तुम दोनों ने बात किया• **अल्लाह** हैं सुनने वाले, देखने वाले•

2. तुम में से जो पराया करते हैं उनकी बिवीयों को *(उनको शहवत में हराम ऐलान करते हुए)* जैसे उनकी मायें अच्छे से जानते हैं कि वो नहीं हैं उनकी मायें•* उनकी मायें हैं औरतें जिन्होंने उनको जनम दिया• वाकई, वो कर रहे हैं एक बेअदबी और एक झूठ• **अल्लाह** हैं बक्शने वाले, माफ करने वाले•

3. जो कोई पराया करते हैं उनकी बिवीयों को इस अंदाज़ में फिर दोबारा इसलाह करते हैं उसके बाद, चाहिए कफ्फारा अदा करें एक गुलाम आज़ाद करते हुए दोबारा शुरू करने से पहले उनके शहवती ताल्लुकों को• यह है तुम्हें समझाने के लिए• **अल्लाह** हैं आगाह सारी चीज़ें तुम करते हो•

4. अगर तुम नहीं पा सको एक गुलाम आज़ाद करने के लिए, तुम्हें लगातार दो महीनों तक रोज़ा रखना चाहिए शहवती ताल्लुकों को दोबारा शुरू करने से पहले• अगर तुम रोज़ा न रख सको, फिर तुम्हें खिलाना चाहिए साठ गरीब लोगों को• तुम्हें **अल्लाह** और उनके रसूल में ईमान रखना चाहिए• ये हैं **अल्लाह** के कानूनें• काफिरों ने हासिल किया है एक दर्दनाक आज़ाब•

5. यकीनन, जो कोई लड़ते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल से हवाले किये गये हैं शिकस्त को, जैसा उनके पिछले बराबर वाले हवाले किये गये थे शिक्सत को• हमने भेजा है नीचे साफ सबूतें, और ठुकराने वालों ने हासिल किया है एक शर्मनाक आज़ाब•

6. दिन आयेगा जब **अल्लाह** दोबारा ज़िंदा करेंगे उन सारों को, फिर इत्तेला करेंगे उनको सारी चीज़ों का उन्होंने किया था• **अल्लाह** ने दर्ज किया है सारी चीज़ें, जबकी वो उसे भूल गये हैं• **अल्लाह** सारी चीज़ों के गवाह होते हैं•

*58:2 पराया करना एक बिवी को ऐलान करते हुए कि वो है उसकी माँ जैसी था एक पुराना रिवाज अरब में• यह है सिर्फ सुरह जहाँ "अल्लाह" लफ्ज़ वाकै होता है हर आयत में•

अल्लाह हैं तुम्हारे साथ अभी

7. क्या तुम एहसास नहीं करते कि **अल्लाह** जानते हैं सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन पर? कोई तीन लोग साज़िश नहीं कर सकते खुफियातौर पर बगैर उनके होते हुए चौथा, नाहीं पाँच बगैर उनके होते हुए छठा, नाहीं उससे कम, नाहीं ज़्यादा, बगैर वो होते हुए वहाँ उनके साथ जहाँ भी वो रहें• फिर, हश्र के दिन पर, वो इत्तेला करेंगे उनको सारी चीज़ें उन्होंने किया था• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

साज़िश न करो

8. क्या तुमने ध्यान दिया है उन्हें जो ताकीद किये गये थे खुफिया तौर पर साज़िश करने से, फिर इसरार करते हैं साज़िश करने पर? वो साज़िश करते हैं गुनाह, खता, और रसूल की नाफरमानी करने के लिए• जब वो आते हैं तुम्हारी तरफ, वो सलाम करते हैं तुम्हें **अल्लाह** कि तरफ से फरमान किये गये एक खैरमकदम के अलावा दूसरे के साथ• वो कहते हैं खुद के अंदर, "**अल्लाह** सज़ा नहीं देंगे हमें हमारी कलामों के लिए•" उनका सिर्फ बदला है जहन्नम, जिसमें वो जलते हैं; क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर•

9. ऐ ईमानवालो, अगर तुम्हें खुफियातौर पर गुफ्तगु करनी हो, तुम्हें गुफ्तगु नही करना चाहिए गुनाह, खता, और रसूल की नाफरमानी करने के लिए• तुम्हें गुफ्तगु करनी चाहिए नेककारी और तकवई काम करने के लिए• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, जिनके सामने तुम हाज़िर किये जाओगे•

10. खुफिया साज़िश है शैतान का ख्याल, जिस के ज़रिये वो तलाश करता है ठेस पहुँचाना उनको जो ईमान रखते हैं• बहेरहाल, वो कभी उनको ठेस नहीं पहुँचा सकता **अल्लाह** की मर्ज़ी के बगैर• **अल्लाह** में ईमानवालों को भरोसा रखना चाहिए•

11. ऐ ईमानवालो, अगर तुम्हें कहा जाता है, "बराये करम जगह बनाओ," तुम्हें एक दूसरे के बैठने के लिए जगह बनानी चाहिए• **अल्लाह** फिर जगह बनायेंगे तुम्हारे लिए• अगर तुमको कहा जाता है खड़े होने और बढ़ने के लिए, उठो और बढ़ो• **अल्लाह** ऊँचा करते हैं तुम में से उनको जो ईमान रखते हैं, और वो जो हासिल करते हैं इल्म ऊँचे दरजों को• **अल्लाह** हैं पूरी तरह आगाह सारी चीज़ें तुम करते हो•

12. ऐ ईमानवालो, जब तुम गुफ्तगु करना चाहो रसूल के साथ, तुम ऐसा करो उससे पहले तुम्हें एक खैरात अदा करना चाहिए *(गरीब को)*• यह बेहतर है तुम्हारे लिए, और ज़्यादा पाक• अगर तुम उसकी हैसियत नहीं रख सकते, फिर **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

13. अगर तुम गुफ्तगु करने से पहले नाकामयाब हुए खैरात करने के लिए, फिर तौबा किया उसके बाद, **अल्लाह** कबूल करते हैं तुम्हारा तौबा• तुम्हें राबता नमाजें *(सलात)* कायम करना, ज़रूरी खैरात *(ज़कात)* देना, और **अल्लाह** और उनके रसूल की ऐतबा करनी चाहिए• **अल्लाह** हैं पूरी तरह आगाह सारी सारी चीज़ें तुम करते हो•

चुनों तुम्हारे दोस्तों को

14. क्या तुमने ध्यान दिया है उनको जिन्होंने लोगों को दोस्त बनाया जिनसे **अल्लाह** हैं गुस्सा? नाहीं वो तुम्हारे साथ होते हैं, नाहीं उनके साथ• वो जानबूझ कर झूठी कसम खाते हैं!

15. **अल्लाह** ने तैयार किया है उनके लिए एक सख्त आज़ाब• अफसोसनाक है वाकई जो वो किया करते थे•

16. उन्होंने इस्तेमाल किया उनके कसमों को एक ज़रिया जैसा **अल्लाह** के रास्ते से पलटने के लिए• इस वजह से, उन्होंने हासिल किया है एक शर्मनाक आज़ाब•

17. नाहीं उनका पैसा, नाहीं उनकी औलाद मदद करेंगी उनका **अल्लाह** के खिलाफ• उन्होंने हासिल किया है जहन्नम की आग, जिसमें वो रहते हैं हमेशा के लिए•

18. दिन आयेगा जब **अल्लाह** उनसब को दोबारा ज़िंदा करेंगे• वो कसम खायेंगे उनसे फिर, जिस तरह वो कसम खाते हैं तुमसे अभी, सोचते हुए कि वो हैं असलमें सही! वाकई, वो हैं असल झूठे•

19. शैतान ने काबू किया है उनको, और उनके **अल्लाह** के पैगाम को नज़रअंदाज़ करने का वजह बना है• ये हैं शैतान की जमात• बिल्कुल, शैतान की जमात हैं हारने वाले•

20. यकीनन, जो कोई मुखालिफत करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल की होंगे सबसे निचले•

21. **अल्लाह** ने फरमान किया है: "मैं और मेरे रसूलें बिला शक जीतेंगे•" **अल्लाह** हैं ताकतवर, सारी ताकत वाले•

अपनी जान बचाओ

22. तुम नहीं पाओगे लोगों को जो ईमान रखते हैं **अल्लाह** और आखरी दिन में दोस्त बनाते हुए उनको जो मुखालिफत करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल की, अगर वो होते उनके वालिदैन, या उनकी औलाद, या उनके भाईयें बहनें, या उनका कबीला तब भी• इनके लिए, वो मुकर्रर करते हैं अकीदा उनके दिलों में, और मदद करते हैं उनकी उनके इल्हाम के साथ, और दाखिल करते हैं उनको बागों में बहती हुई नहरों के साथ जिसमें वो रहते हैं हमेशा के लिए• **अल्लाह** खुश हैं उनसे, और वो हैं खुश उनसे• ये हैं **अल्लाह** की जमात• बिला शक, **अल्लाह** की जमात हैं जीतने वाले•

****

सुरह 59: खुरूज (अल हश्र)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. बड़ाई कर रही है **अल्लाह** की सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में, और वो हैं सारी ताकत वाले, सबसे हिकमत वाले•

अल्लाह हिफाज़त करते हैं ईमानवालों की

2. वो हैं वाहिद जिन्होंने निकाला उनको जिन्होंने कुफ्र किया आसमानी किताब के लोगों में से उनके घरों से एक ढ़ेर खुरूज में• तुमने कभी नहीं सोचा कि वो निकलेंगे, और उन्होंने सोचा कि उनकी तैयारियाँ हिफाज़त करेंगी उनकी **अल्लाह** से• लेकिन फिर **अल्लाह** आये उनकी तरफ जहाँ से उन्होंने कभी उम्मीद नहीं किया, और फेंका दहशत उनके दिलों में• इस तरह, उन्होंने छोड़ दिया उनके घरों को उनकी खुदकी मर्ज़ी पर, ईमानवालों कि तरफ से दवाव के अलावा• तुम्हें इस से सीखाना चाहिए, ऐ तुम जो सोच रखते हो•

3. अगर **अल्लाह** ज़ोर नहीं देते उनको निकलने के लिए, उन्होंने बदला चुकाया होता उनको इस ज़िंदगी में *(यहाँ तक के उनको ज़ोर देते हुए निकलने से ज़्यादा बुरा)*• अगली ज़िंदगी में वो हवाले करेंगे उनको जहन्नम के आज़ाब की तरफ•

4. यह है इसलिए कि उन्होंने मुखालिफत किया **अल्लाह** और उनके रसूल की• इसलिए की जो कोई मुखालिफत करता है **अल्लाह** और उनके रसूल की **अल्लाह** हैं सबसे सख्त आज़ाब नाफिज़ करने में•

5. चाहे तुम काटो एक दरख्त, या छोड़ दो उसे खड़ा रहने के लिए उसके तने पर, है **अल्लाह** की मर्ज़ी के मुताबिक• वो यकीनन रूसवा करेंगे बदकार को•

6. जो कुछ **अल्लाह** ने लौटाया उनके रसूल के लिए नहीं था नतीजा तुम्हारी जंगी कोशिशों का, चाहे तुमने लड़ाई की घोड़ों पर या पैर पर• **अल्लाह** हैं वाहिद जो भेजते हैं उनके रसूलों को जिसकिसी के खिलाफ वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक•

जंग का
मालेगनीमत

7. जो कुछ **अल्लाह** ने लौटाया उनके रसूल को *(शिकस्त दिये गये)* कौमों से जाना चाहिए **अल्लाह** और उनके रसूल की तरफ *(एक खैरात की सूरत में)*• तुम्हें उसे देना चाहिए रिश्तेदारों, यतीमों, गरीब, और अंजान मुसाफिर को• इस तरह, वो काबू किया गया नहीं रहेगा तुम में से ताकतवर की तरफ से• रसूल की तरफ से तुमको दिये गये मालेगनीमत को तुम रख सकते हो, लेकिन तुम न लो जो वो तुमको ताकीद करता है लेने से• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए• **अल्लाह** हैं सख्त आज़ाब नाफिज़ करने में•

8. *(तुम्हें देना चाहिए)* ज़रूरतमंद को जिन्होंने हिजरत किया• वो निकाले गये थे उनके घरों से और महरूम किये गये थे उनकी मिलकियतों से, इसलिए कि उन्होंने चाहा **अल्लाह** का फ़ज़्ल और ख़ुशी, और इसलिए कि उन्होंने मदद किया **अल्लाह** और उनके रसूल की• वो हैं सच्चे•

9. जहाँ तक वो जिन्होंने मुहय्या किया उनको एक घर और एक पनाह के साथ, और थे ईमानवाले उनसे पहले, वो चाहते हैं उनको जिन्होंने उनकी तरफ हिजरत किया, और नहीं पाते हैं कोई हिचकिचाहट उनके दिलों में उनकी मदद करने में• असल में, वो आसानी से एहलियत देते हैं उनको खुदके ऊपर, यहाँ तक के जब उनको खुदको ज़रूरत है जो वो देते हैं• वाकई, जो कोई गालिब होते हैं उनके कुदरती कंजूसीपन पर हैं कामयाब•

10. जो कोई ईमानवाले बने उनके बाद कहते हैं, “हमारे रब, माफ करिये हमें और हमारे भाईयों को जो हमारे आगे चले अकीदे की तरफ, और बाज़ रखिये हमारे दिलों को किसी नफरत को पनाह देने से उनकी तरफ जो ईमान लाये• हमारे रब, आप हैं शफीक, सबसे ज़्यादा वाले•

11. क्या तुमने ध्यान दिया है उनको जो मारे गये हैं निफाक से, और कैसे उन्होंने आसमानी किताब के लोगों में से कुफ्र में उनके साथियों को कहा, “अगर तुम निकाले जाते हो हम निकलेंगे तुम्हारे साथ, और कभी ऐतबा नहीं करेंगे किसी की जो तुम्हारी मुखालिफत करे• अगर कोई भी लड़े तुमसे, हम लड़ेंगे तुम्हारी तरफ से•” **अल्लाह** गवाही देते हैं कि वो हैं झूठे•

12. असल में, अगर वो निकाले जाते, वो नहीं निकले होते उनके साथ, अगर कोई भी लड़ता उनसे, उन्होंने मदद नहीं किया होता उनकी• अगर उन्होंने मदद भी किया होता उनकी, वो पलट जाते पीछे और फरार हो जाते• वो कभी जीत नहीं सकते•

13. वाकई, तुम देते हो ज़्यादा दहशत उनके दिलों में उनके **अल्लाह** के खौफ से• यह है इसलिए कि वो हैं लोग जो समझते नहीं•

14. वो आपस में जमा नहीं होते तुमसे लड़ने के लिए जबतक वो नहीं हैं अच्छे से हिफाजत की गई इमारतों में, या दिवारों के पीछे• उनकी ताकत ज़बरदस्त नज़र आती है उनके आपस में• तुम सोचोगे कि वो मुत्तफिक हैं, जबकि असल में उनके दिलें हैं बटे• यह है इसलिए कि वो हैं लोग जो नहीं समझते•

15. उनका अंजाम वैसा ही है जैसे उनके साथ वाले जो आगे आये उनसे• उन्होंने झेला उनके फैसलों के नतीजे• उन्होंने हासिल किया है एक दर्दनाक आज़ाब•

16. वो हैं शैतान की तरह; वो कहता है इंसान को, “कुफ्र करो,” फिर जैसे ही वो कुफ्र करता है, वो कहता है, “मैं ठुकराता हूँ तुझे• मैं **अल्लाह**, कायनात के रब से डरता हूँ•”

17. मुकद्दर उन दोनों का है जहन्नम की आग, जिसमें वो रहते हैं हमेशा के लिए• यह है बदला खता करने वालों के लिए•

18. ऐ ईमानवालो, तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, और हर रूह को जांचने दो उसने क्या भेजा है आगे कल के लिए• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए; **अल्लाह** हैं पूरी तरह आगाह सारी चीज़ें तुम करते हो•

19. न बनो उनकी तरह जो भूल गये **अल्लाह** को, इसलिए उन्होंने भूलने दिया उनको खुदको• ये हैं बदकार•

20. बराबर नहीं जहन्नम की आग के रहने वाले और जन्नत के रहने वाले; जन्नत के रहने वाले हैं जीतने वाले•

बुलंदी कुरान की

21. अगर हमने यह कुरान नाज़िल किया होता एक पहाड़ को, तुम देखते उसे कपकपाते, चूरचूर होते हुए, **अल्लाह** के लिए एहतराम की वजह से• हम बयान करते हैं इन मिसालों को लोगों के लिए, ताके वो गौर कर सकें•

अल्लाह

22. वो हैं वाहिद **अल्लाह**; कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• जानने वाले सारे राज़ों और ऐलानों के• वो हैं सबसे महेरबान, सबसे रहम वाले•

23. वो हैं वाहिद **अल्लाह**; कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• बादशाह, सबसे मुकद्दस, अमन, सबसे भरोसे वाले, आला, सारी ताकत वाले, सबसे ताकतवर, सबसे इज़्जत वाले• **अल्लाह** की बड़ाई हो; कहीं ऊपर शरीकों को रखते हुए•

24. वो हैं वाहिद **अल्लाह**; पैदा करने वाले, शुरू करने वाले, नक्शकारी करने वाले• उनके हैं सबसे ज़्यादा खूबसूरत नामें• बड़ाई कर रही है उनकी सारी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में• वो हैं सारी ताकत वाले, सबसे हिकमत वाले•

****

सुरह 60: आज़माईश (अल मुमताहनाह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ऐ ईमानवालो, तुम्हें दोस्त नहीं बनाना चाहिए मेरे दुश्मनों और तुम्हारे दुश्मनों को, बढ़ाते हुए चाहत और दोस्ती उनकी तरफ, इसके बावजूद के उन्होंने कुफ्र किया है सच्चाई में जो आया है तुम्हारी तरफ• वो सताते हैं रसूल को, और तुम्हें सिर्फ इसलिए की तुम ईमान रखते हो **अल्लाह**, तुम्हारे रब में• अगर तुम तैयारी करो मेरी राह में मेहनत करने के लिए, तालाश करते हुए मेरी रहमतें, तुम कैसे खुफिया तौर पर उनको चाह सकते हो? मैं हूँ पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ें तुम छुपाते, और सारी चीज़ें तुम ऐलान करते हो• तुम में से वो जो यह करते हैं वाकई बहेक गये हैं सही राह से•

2. जब भी वो सामना करते हैं तुम्हारा, वो तुमसे दुश्मनों जैसा बरताव करते हैं, और ज़ख्म देते हैं उनके हाथों और ज़बानों से• वो चाहते हैं तुम कुफ्र करो•

3. तुम्हारे रिश्तेदारें और तुम्हारा पैसा कभी मदद नहीं कर सकता तुम्हारी• हश्र के दिन पर, वो इंसाफ करेंगे तुम्हारे दरमियान• **अल्लाह** हैं देखने वाले सारी चीज़ें तुम करते हो•

इब्राहीम: एक मिसाल

4. एक अच्छी मिसाल कायम की गई है तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथ वालों के ज़रिये• उन्होंने उनके लोगों से कहा, "हम ठुकराते हैं तुम्हें और बुतों को जिनकी तुम इबादत करते हो **अल्लाह** के सिवाए• हम मलामत करते हैं तुम्हारी, और तुम कुछ नहीं देखोगे हमारी तरफ से सिवाए दुश्मनी और नफरत के जब तक तुम न ईमान लाओ सिर्फ **अल्लाह** में•"* बहेरहाल, एक गलती की गई थी इब्राहीम की तरफ से जब उसने कहा उसके वालिद से, "मैं दुआ करूंगा तुम्हारी मगफरत के लिए,** लेकिन मैं नहीं रखता कोई ताकत तुम्हारी हिफाज़त करने के लिए **अल्लाह** कि तरफ से•" "हमारे रब, हम आप में भरोसा, और आप की फरमानबरदारी करते हैं; आप की तरफ है आखरी मुकद्दर•

**60:4 "सिर्फ" (वाहदहू) अरबी लफ़्ज़ के लिए वाके होता है सिर्फ छ: बार कुरान में, उनमें से एक मुखातिब करता है सिर्फ कुरान को बरकरार रखने के लिए (17:46)• हवाला सिर्फ अल्लाह के लिए वाके होता है 7:70, 39:45, 40:12, और 84, और 60:4 में• इन नंबरों का जमा (7+70+39+45+40+12+84+60+4) बराबर होता है 361, या 19x19 के• यह ज़ोर देता है कि एहम मौज़ू कुरान का है "सिर्फ अल्लाह की इबादत•" अपेन्डिक्स 1•*

***60:4 हम बुतपरस्तों की हिदायत के लिए दुआ कर सकते हैं, मगफरत के लिए नहीं, चुँकी अल्लाह का कानून है कि बुतपरस्ती है सिर्फ नाकाबिले माफ जुर्म (4:48 और 116)•*

5. "हमारे रब, हमें मजबूर किया न जाने दीजिये उनकी तरफ से जिन्होंने कुफ्र किया, और हमें माफ करिये• आप हैं सारी ताकत वाले, सबसे हिकमत वाले•"

6. एक अच्छी मिसाल कायम की गई है उनकी तरफ से उनके लिए जो तालाश करते हैं **अल्लाह** और आखरी दिन को• जहाँ तक वो जो पलट जाते हैं, **अल्लाह** को कोई ज़रूरत नहीं *(उनकी)*, सबसे काबिले तारीफ•

7. हो सकता है **अल्लाह** तुम्हारे और उनके बीच दुश्मनी को बदल दें चाहत में• **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहमवाले•

काफिरों के साथ ताल्लुकों को
पाबंद करने वाला बुनियादी कानून

8. **अल्लाह** ताकीद नहीं करते तुम्हें दोस्त बनाने से उनको जो नहीं लड़ते तुमसे मज़हब कि वजह से, और नहीं निकालते तुम्हें तुम्हारे घरों से• तुम उनके साथ दोस्ती कर सकते हो और मुनसिफ रहो उनकी तरफ• **अल्लाह** मुनसिफ को पसंद करते हैं•

9. **अल्लाह** ताकीद करते हैं तुम्हें सिर्फ दोस्त बनाने से उनको जो लड़ते हैं तुमसे मज़हब कि वजह से, निकालते हैं तुम्हें तुम्हारे घरों से, और जमा होते हैं इकट्ठा दूसरों के साथ तुम्हें जिलावतन करने के लिए• तुम्हें उनसे दोस्ती नहीं करनी चाहिए• जो कोई दोस्ती करते हैं उनके साथ हैं खतावारें•

जंग कि
हालत में

10. ऐ ईमानवालो, जब ईमानवाली औरतें *(छोड़ दें दुश्मनों को और)* मांगें पनाह के लिए तुमसे, तुम्हें उनको आज़माना चाहिए• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ उनके अकीदे से• जब तुम कायम कर लो कि वो हैं ईमानवालीं, तुम्हें उनको काफिरों के पास नहीं लौटाना चाहिए• वो जायेज़ नहीं हैं शादी शुदा रहने के लिए उनके साथ, नाहीं काफिरों को इजाज़त दी जानी चाहिए उनसे शादी करने के लिए• वापस करदो महरों को जो काफिरों ने अदा किया है• तुम कोई खता नहीं करते उनसे शादी करते हुए, बशर्ते के तुम उनको दो उनके हक के महरें• न रखो कुफ्र करने वाली बिवीयाँ *(अगर वो चाहें काफिरों से जुड़ना)*• तुम मांग सकते हो उनसे महर के लिए तुमने अदा किया था, और वो मांग सकते हैं उसके लिए जो उन्होंने अदा किया• यह है **अल्लाह** का कानून; वो हुकूमत करते हैं तुम्हारे बीच• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ, सबसे हिकमत वाले•

11. अगर तुम्हारी बिवीयों में से कोई जुड़े दुश्मनों के खेमे से, और तुम्हें ज़ोर दिया जाता है लड़ने के लिए, तुम्हें दुश्मन को ज़ोर देना चाहिए मर्दों को मुआवज़ा देने के लिए जिन्होंने खोया उनकी बिवीयों को, देते हुए उनको जो उन्होंने खर्च किया उनकी बिवीयों पर• तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, जिनमें तुम ईमान रखते हो•

12. ऐ नबी, जब ईमानवाली औरतें *(जिन्होंने छोड़ दिया काफिरों को)* तुमसे पनाह तलाश करने के लिए एहद करें तुमको कि वो कभी कायम नहीं करेंगीं किसी बुतों को **अल्लाह** के सिवाए, नाहीं चोरी करेंगीं, नाहीं ज़िना करेंगीं, नाहीं कत्ल करेंगीं उनके बच्चों को, नाहीं गढ़ेंगीं कोई झूठ, नाहीं नाफरमानी करेंगीं तुम्हारे नेककारी वाले हुक्मों की, तुम्हें काबूल करना चाहिए उनका एहद, और दुआ करो **अल्लाह** से उनको माफ करने के लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

13. ऐ ईमानवालो, दोस्ती न करो लोगों के साथ जिनसे **अल्लाह** हैं नाराज़, और जो हैं नाउम्मीदी से चिपके कुफ्र में; वो उतने हीं नाउम्मीद हैं जितने काफिरें जो हैं पहले से कब्रों में•

****

सुरह 61: सफ
(अल सफ)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. बड़ाई कर रही है **अल्लाह** की सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर• वो हैं सारी ताकत वाले, सबसे हिकमत वाले•

2. ऐ ईमानवालो, तुम क्यों कहते हो जो तुम नहीं करते?

3. सबसे घिनौना **अल्लाह** की नज़र में है वो तुम कहते हो जो तुम नहीं करते•

4. **अल्लाह** चाहते हैं उनको जो लड़ते हैं उनके वास्ते एक होकर एक सफ में, जैसे ईंटें एक दिवार में•

5. याद करो मूसा ने कहा उसके लोगों को, "ऐ मेरे लोगों, तुम क्यों मुझ को तकलीफ देते हो, इसके बावजूद के तुम जानते हो कि मैं हूँ **अल्लाह** का रसूल तुम्हारी तरफ?" जब वो बहेक गये, **अल्लाह** ने फेर दिया उनके दिलों को• इसलिए की **अल्लाह** हिदायत नहीं करते बदकार लोगों की•

रसूल
ईसा के बाद

6. याद करो ईसा, मरयम के बेटे ने, कहा, "ऐ बनी इस्राईल, मैं हूँ **अल्लाह** का रसूल तुम्हारी तरफ, तसदीक करते हुए तौरेत और लाते हुए अच्छी खबर एक रसूल के आने की मेरे बाद जिसका नाम होगा और ज़्यादा तारीफ किया गया *(अहमद)*•" फिर, जब उसने दिखाये उनको साफ सबूतें, उन्होंने कहा, "यह है एक ज़बदस्त जादू•"

7. कौन है ज़्यादा बुरा उस से जो गढ़ता है झूठों को **अल्लाह** के बारे में, और वो दावत दिया जाता है फरमानबरदारी कि तरफ? **अल्लाह** हिदायत नहीं करते बुरे लोगों की•

8. वो चाहते हैं **अल्लाह** की रौशनी को उनके मुंहों से बुझाने की• लेकिन **अल्लाह** इसरार करते हैं मुकम्मल करने का उनकी रौशनी, बावजूद काफिरों के•

बड़ी
पेशीनगोई

9. उन्होंने भेजा है उनके रसूल* को हिदायत और सच्चे मज़हब के साथ, और उसे मुसल्लत होने देंगे सारे मज़हबों पर, बावजूद बुतपरस्तों के•

सबसे अच्छा सौदा

10. ऐ ईमानवालो, मुझे तुम्हें एक तिजारत की इत्तेला करने दो जो बचायेगा तुम्हें दर्दनाक आज़ाब से•

11. ईमान रखो **अल्लाह** और उनके रसूल में और जद्दोजहेद करो **अल्लाह** कि राह में तुम्हारे पैसे और तुम्हारी ज़िंदगियों से• यह है सबसे अच्छा सौदा तुम्हारे लिए, अगर तुम सिर्फ जानते•

12. बदले में, वो माफ करते हैं तुम्हारे गुनाहों को, और दाखिल करते हैं तुम्हें बहती हुई नहरों के साथ बागों में, खूबसूरत महलों के साथ अद्न के बागों में• यह है सबसे बड़ी फतेह•

13. इसके अलावा, तुम पाते हो कुछ जो तुम वाकई चाहते हो: मदद **अल्लाह** की तरफ से और लाज़ीमी जीत• दो अच्छी खबरें ईमानवालों को•

14. ऐ ईमानवालो, बनो **अल्लाह** की हिमायत करने वाले, ई सा, मरमयम के बेटे की पैरवी करने वालों कि तरह• जब उसने कहा उनको, "कौन हैं मेरी हिमायत करने वाले **अल्लाह** की तरफ," उन्होंने कहा, "हम हैं **अल्लाह** की हिमायत करने वाले•" इस तरह, एक गिरोह बनी इस्राईल से ईमान लाये, और दूसरे गिरोह ने कुफ्र किया• हमने मदद किया उनकी जो ईमान लाये उनके दुश्मन के खिलाफ, जब तक वो जीत नहीं गये•

****

सुरह 62: जुमा (अल जुमुआह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. बड़ाई कर रही है **अल्लाह** की सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर; बादशाह, सबसे मुकद्दस, सारी ताकत वाले, सबसे हिकमत वाले•

**61:9 सही नाम इस रसूल का हिज्जे किया गया है रियाज़ी तौर पर (अपेन्डिक्स 2)•*

2. वो हैं वाहिद जिन्होंने भेजा उम्मियों को एक रसूल उन्हीं में से, पढ़ने के लिए उनको उनकी आयतें, उनको पाक करने, और सिखाने के लिए उनको आसमानी किताब और हिकमत• इस से पहले, वो दूर बहेक गये थे•

3. और कई नस्लें उनके बाद• वो हैं सारी ताकत वाले, सबसे हिकमत वाले•

4. ऐसा है **अल्लाह** का फज़्ल जो वो इनायत करते हैं जिसकिसी पर वो चाहते हैं• **अल्लाह** हैं रखने वाले लामहदूद फज़्ल के•

5. मिसाल उनकी जिनको दिया गया था तौरेत फिर नाकामयाब हुए उसे बरकरार रखने के लिए वो है गधे कि तरह उठाता हुआ बड़े अदबी कामों को• अफसोसनाक है मिसाल लोगों का जिन्होंने ठुकराया **अल्लाह** की आयतें• **अल्लाह** हिदायत नहीं करते बदकार लोगों की•

6. कहो, "ऐ यहूदीयों, अगर तुम दावा करते हो कि तुम हो **अल्लाह** के चुने हुए, अलग रखते हुआ दूसरे सारे लोगों को, फिर तुम्हें मौत कि तमन्ना करनी चाहिए अगर तुम हो सच्चे!"

7. वो कभी उसकी तमन्ना नहीं करेंगे, इसलिए कि उन्होंने जो किया है• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ बदकार से•

8. कहो, "मौत जिस से तुम बचने कि कोशिश कर रहो हो आकर पकड़ लेगी तम्हें जल्दी या बाद में• फिर तुम लौटाये जाओगे सारे राज़ों और ऐलानों के जानने वाले की तरफ, फिर वो इत्तेला करेंगे तुम्हें सारी चीज़ें तुमने किया था•"

एहम हुक्में सारे
ईमानवालों के लिए

9. ऐ ईमानवालो, जब जमात कि नमाज़ *(सलातुल जुमुआह)* ऐलान की जाती है जुमे पर, तुम्हें जल्दी करना चाहिए **अल्लाह** को याद करने के लिए, और छोड़ दो सारा कारोबार• यह है बेहतर तुम्हारे लिए, अगर तुम सिर्फ जानते•

10. जब नमाज़ पूरी कर दी जाती है, तुम फैल सकते हो ज़मीन पर **अल्लाह** कि नियामतों को तलाश करने के लिए, और जारी रहो **अल्लाह** को याद करने के लिए मुसलसल तौर पर, ताके तुम कामयाब हो सको•

11. जब उनमें से कुछ का सामना होता है एक कारोबरी सौदे, या कुछ तमाशे का, वो दौड़ते हैं उसकी तरफ और छोड़ देते हैं तुम्हें खड़ा हुआ! कहो, "जो **अल्लाह** रखते हैं कहीं बेहतर है तामाशे या करोबार से• **अल्लाह** हैं सबसे अच्छे मुहय्या करने वाले•"

****

सुरह 63: मुनाफिकीन (अल मुनाफिकून)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. जब मुनाफिकीन आते हैं तुम्हारी तरफ वो कहते हैं, "हम गवाही देते हैं कि आप हैं **अल्लाह** के रसूल•* **अल्लाह** जानते हैं कि तुम हो उनके रसूल, और **अल्लाह** गवाही देते हैं कि मुनाफिकीन हैं झूठे•

2. उनके ऊपरी अकीदे के भेस के तहेत, वो हटाते हैं लोगों को **अल्लाह** के रास्ते से• अफसोस नाक है वाकई जो वो करते हैं•

**63:1 "सबसे पहला सुतून इस्लाम का," जैसा बयान किया गया 3:18 में है गवाही देना कि अल्लाह हैं सिर्फ खुदा• लेकिन बिगड़े "मुस्लिम" आलिमों ने जोड़ा "मुहम्मद है अल्लाह का रसूल," और यह तोड़ता है कई हुक्मों को (देखें 2:285) आयत 63:1 है सिर्फ जगह कुरान में जहाँ ऐसा एक बयान किया गया है• सिर्फ मुनाफिकीन करते हैं ऐसा एक बयान•*

3. यह है इसलिए कि वो ईमान लाये, फिर कुफ्र किया• इसलिए, उनके ज़हने बंद किये गये हैं; वो नहीं समझते•

वो गिला करते हैं
और बेइज़्ज़ती मानते हैं

4. जब तुम उनको देखते हो, तुम मुतास्सिर हो सकते हो उनकी शक्ल से• और जब वो बात करते हैं, तुम सुनोगे उनके सुखन को• वो हैं जैसे खड़े हुए लट्ठे• वो समझते हैं की हर पुकार का इरादा किया गया है उनके खिलाफ• ये हैं असल दुश्मनें; उनसे खबरदार रहो• **अल्लाह** मलामत करते हैं उनको, वो भटक गये हैं•

5. जब उनसे कहा जाता है, "आओ **अल्लाह** के रसूल को दुआ मांगने दो तुम्हारी मगफरत के लिए," वो मज़ाकिया तौर पर फेर लेते हैं उनके सरों को, और तुम देखोगे उनको हटाते हुए दूसरों को और तकब्बुर से पेश आते हुए•

शिफाअत का वहेम
*चकनाचूर हो गया**

6. वो एक जैसा है उनके लिए, चाहे तुम दुआ मांगो उनकी मगफरत के लिए, या दुआ न मांगो उनकी मगफरत के लिए; **अल्लाह** उनको माफ नहीं करेंगे• इसलिए कि **अल्लाह** हिदायत नहीं करते बदकार लोगों की•

7. वो हैं जो कहते हैं, "न दो कोई पैसा उनको जिन्होंने **अल्लाह** के रसूल कि पैरवी किया, शायद वो उसे छोड़ दें!" बहेरहाल, **अल्लाह** रखते हैं खज़ाने आसमानों और ज़मीन के, लेकिन मुनाफिकीन नहीं समझते•

8. वो कहते हैं, "अगर हम जायें वापस शहर कि तरफ, ताकतवर उसमें निकाल देंगे कमज़ोर को *(और हम ज़ुल्म किये जायेंगे)*•" *(उनको पता होना चाहिए कि)* सारी अज़मत हैं **अल्लाह** और उनके रसूल, और ईमानवालों की• बहेरहाल, मुनाफिकीन नहीं जानते•

9. ऐ ईमानवालों, गुम न हो जाओ तुम्हारे पैसे और तुम्हारी औलाद के ज़रिये **अल्लाह** को याद करने से• जो कोई करते हैं ऐसा हैं हारने वाले•

10. तुम्हें हमारी तरफ से तुम्हारे लिए नियामतों में से देना चाहिए इस से पहले कि मौत आ जाये तुम्हारी तरफ, फिर तुम कहो, "मेरे रब, अगर सिर्फ आप मुलतवी कर सकते इसे एक छोटे वक्त के लिए! मैं होऊंगा फिर खैरात करने वाला और जुड़ जाऊंगा नेककारों के साथ!"

11. **अल्लाह** कभी मुलतवी नहीं करते मुकर्रर किया गया मौत का वक्त किसी रूह के लिए• **अल्लाह** हैं पुरी तरफ वाकिफ सारी चीज़ों से तुम करते हो•

****

सुरह 64: आपसी इल्ज़ाम लगाना (अल तघाबुन)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. बड़ाई कर रही है **अल्लाह** की सारी चीज़ें आसमानों में और सारी चीज़ें ज़मीन पर• उनकी है सारी बादशाहत, और उनकी है सारी तारीफ, और वो हैं कादिरे मुतलक•

2. वो हैं वाहिद जिन्होंने तुमको पैदा किया, फिर तुम में से वहाँ है कुफ्र करने वाला, और ईमानवाला• **अल्लाह** हैं पूरी तरह देखने वाले सारी चीज़ें तुम करते हो•

3. उन्होंने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को एक खास मकसद के लिए,* तुम्हारी नक्शकारी की और मुकम्मल किया तुम्हारा नक्शा, फिर उनकी तरफ तुम्हारा है आखरी मुकद्दर•

4. वो जानते हैं सारी चीज़ों को आसमानों और ज़मीन में, और वो जानते हैं सारी चीज़ें तुम छिपाते हो और सारी चीज़ें तुम ऐलान करते हो• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सबसे अंदरूनी ख्यालों से•

**63:6 मिलियनों लोग बुत बनाते हैं उनके नबियों को इस वहेम कि वजह से (अपेन्डिक्स 8)•*

**64:3 हम हैं इस दुनिया में अल्लाह के बेइंतेहा रहमत की वजह से• सबसे महेरबान ने दिया है हमें एक मौका हमारी खुदकी मगफरत करवाने के लिए• देखें तार्रुफ और अपेन्डिक्स 7•*

2585 117201

5. क्या तुमने ध्यान दिया है उनको जिन्होंने कुफ्र किया माज़ी में, फिर झेला उनके फैसले के नतीज़ों को? उन्होंने हासिल किया है एक दर्दनाक आज़ाब•

6. यह है क्योंकि उनके रसूलें गये उनकी तरफ साफ सबूतों के साथ, लेकिन उन्होंने कहा, "क्या हम पैरवी करें हमारी तरह एक इंसान की?" उन्होंने कुफ्र किया और पलट गये• **अल्लाह** को उनकी ज़रूरत नहीं; **अल्लाह** ज़रूरतमंद नहीं, काबिले तारीफ•

7. वो जिन्होंने कुफ्र किया दावा करते हैं कि वो दोबारा ज़िंदा नहीं किये जायेंगे! हाँ वाकई, मेरे रब कि कसम, तुम दोबारा ज़िंदा किये जाओगे, और तुम ज़िम्मेदार ठहराये जाओगे सारी चीज़ों के लिए तुमने किया है• यह है आसान **अल्लाह** के लिए करना•

8. इसलिए, तुम्हें चाहिए ईमान रखना **अल्लाह** और उनके रसूल में, और रौशनी जो हमने नाज़िल किया है इसमें• **अल्लाह** हैं पूरी तरफ वाकिफ सारी चीज़ों से तुम करते हो•

9. दिन आयेगा जब वो हाज़िर करेंगे तुम्हें हाज़िर किये जाने के दिन को• वो है दिन आपसी इल्ज़ाम लगाने का• जो कोई ईमान रखता है **अल्लाह** में और एक नेक ज़िंदगी बसर करता है, वो माफ करेंगे उनके गुनाहों को, और दाखिल करेंगे उनको बागों में बहती हुई नहरों के साथ• वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए• यह है सबसे बड़ी फतेह•

10. जहाँ तक वो जो कुफ्र करते हैं और ठुकराते हैं हमारी वहियों को, वो हैं रहने वाले जहन्नम कि आग के; वो रहते हैं उसमें हमेशा के लिए• क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर!

खुदाई कानून

11. कुछ नहीं होता है तुम्हें सिवाए **अल्लाह** की मर्ज़ी के मुतबिक में• जो कोई ईमान रखता है **अल्लाह** में, वो रहनुमाई करेंगे उसके दिल की• **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

12. तुम्हें **अल्लाह** की अताअत करनी चाहिए और तुम्हें रसूल की अताअत करनी चाहिए• अगर तुम पलट जाओ, तब सिर्फ मकसद हमारे रसूल का है पैगाम पहुँचाना•

13. **अल्लाह**: कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• ईमानवालों को **अल्लाह** में भरोसा करना चाहिए•

14. ऐ ईमानवालों, तुम्हारे जोड़े और तुम्हारे बच्चे हो सकते हैं तुम्हारे दुश्मनें; खबरदार• अगर तुम दरगुज़र करो, भूल जाओ, और माफ करो, फिर **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहमवाले•

15. तुम्हारा पैसा और औलाद हैं एक आज़माईश, और **अल्लाह** रखते हैं एक बड़ा इनाम•

16. इसलिए, तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए जितना ज़्यादा तुम कर सको, और सुनो, और अताअत करो, और दो *(खैरात को)* तुम्हारे खुद के अच्छे के लिए• जो कोई हिफाज़त किया जाता है उसके खुदके कंजूसपन से, ये हैं जो हैं कामयाब•

17. अगर तुम उधार दो **अल्लाह** को एक उधार नेककारी का, वो ज़रप करेंगे इनाम तुम्हारे लिए कई गुना, और माफ करेंगे तुम्हें• **अल्लाह** हैं तारीफ करने वाले, रहमवाले•

18. जानने वाले सारे राजों और ऐलानों के; सारी ताकत वाले, सबसे हिकमत वाले•

****

सुरह 65: तलाक
(अल तलाक)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ऐ नबी, जब तुम लोग तलाक दो तुम्हारी औरतों को, तुम्हें यकीन करना चाहिए कि एक तलाक की मुद्दत पूरी की गई है• तुम्हें नापना चाहिए ऐसी एक मुद्दत को दुरूस्ती से•* तुम्हें **अल्लाह** तुम्हारे रब का एहतराम करना चाहिए• न निकालो उन्हें उनके घरों से, नाहीं तुम्हें उनकी ज़िंदगियों को उनके लिए आफतज़दा बनाना चाहिए, उनको ज़ोर देने के लिए उनके खुद के निकलने पर, जब तक वो एक साबित ज़िना न करें• ये हैं **अल्लाह** के कानूनें• जो कोई **अल्लाह** के कानूनों को पार करता है करता है एक नाइंसाफी उसके खुदके खिलाफ• तुम नहीं जानते; हो सकता है **अल्लाह** चाहते हों इससे कुछ अच्छा पेश आने के लिए•

2. जब मुद्दत पूरी हो जाती है, तुम उनके साथ इसलाह कर सकते हो बराबरी से, या बराबरी से अलेहदा हो जाओ• तुम्हें दो गवाहों को तलाक का गवाह होने देना चाहिए **अल्लाह** के सामने• यह है वाज़े करने के लिए उनको जो ईमान रखते हैं **अल्लाह** और आखरी दिन में• जो कोई **अल्लाह** का एहतराम करता है, वो उसके लिए एक निकलने का रास्ता पैदा करेंगे•

3. और मुहय्या करेंगे उसके लिए जहाँ से उसने कभी उम्मीद नहीं किया• जो कोई **अल्लाह** में भरोसा करता है, वो काफी होते हैं उसके लिए• **अल्लाह** के हुक्में हो कर रहते हैं• **अल्लाह** ने मुकर्रर किया है हर चीज़ के लिए उसका मुकद्दर•

4. जहाँ तक औरतें जो हैज के बंद होने की हालत को पहुँचती हैं, अगर तुम्हें हो कोई शक, उनकी मुद्दत होनी चाहिए तीन महीने• जहाँ तक वो जिनको हैज नहीं होता, और पता लगायें कि वो हैं हमल से, उनकी मुद्दत खत्म होती हैं जनम देने पर• जो कोई एहतराम करता है **अल्लाह** का, वो बनाते हैं सारी चीज़ें आसान उसके लिए•

5. यह है **अल्लाह** का हुक्म जो वो भेजते हैं नीचे तुम्हारे लिए• जो कोई एहतराम करते हैं **अल्लाह** का, वो माफ करते हैं उसके गुनाहों को, और इनाम देते हैं उसे फरागदिली से•

6. तुम्हें इजाज़त देना चाहिए उनको उसी घर में रहने के लिए जिसमें वो रहे तुम्हारे साथ, और न बनाओ ज़िंदगी इतनी आफतज़दा उनके लिए की वो निकल जाये खुद से• अगर वो हैं हमल से, तुम्हें उनपर खर्च करना चाहिए जब तक वो जनम न दे दें• अगर वो बच्चे को दूध पिलायें, तुम्हें मुआवज़ा देना चाहिए उनको इस खिदमत के लिए• तुम्हें कायम रखना चाहिए खुश इख्लाक रिश्तों को तुम्हारे बीच• अगर तुम राज़ी न हो, तुम किराये पर ले सकते हो दूसरी औरत बच्चे को दूध पिलाने के लिए•

7. अमीर शौहर को सहारा मुहय्या करना चाहिए उसके ज़रिये के मुताबिक में, और गरीब को मुहय्या करना चाहिये जो **अल्लाह** ने उसपर इनायत किया है उसके ज़रिये के मुताबिक• **अल्लाह** आएद नहीं करते किसी रूह पर उस से ज़्यादा उन्होंने दिया हैं उसे• **अल्लाह** मुहय्या करेंगे राहत तकलीफ के बाद•

8. कई एक कौम ने बगावत किया उनके रब के हुक्मों के खिलाफ और उनके रसूलों के खिलाफ• इस वजह से, हमने सख्ती से उनको ज़िम्मेदार ठहराया, और बदला चुकाया उनको एक खौफनाक बदला•

9. उन्होंने झेला उनके फैसलों के नतीज़ों को; एक ज़बरदस्त नुकसान•

10. **अल्लाह** ने उनके लिए तैयार किया है सख्त आज़ाब• इसलिए, तुम्हें **अल्लाह** का एहतराम करना चाहिए, ऐ तुम जो अक्ल और ईमान रखते हो• **अल्लाह** ने भेजा है नीचे तुम्हारी तरफ एक पैगाम—*

**65:1 तलाकशुदा कि मुद्दत, इससे पहले कि काबिल हो जाये दोबारा शादी करने के लिए, है इंतेज़ार करने कि मुद्दत तीन हैजों की• यह यकीन दिलाता है कि तलाकशुदा हमल से नहीं थी (2:228)•*

**65:10-11 "रसूल" यहाँ साफ तौर पर है कुरान• आयत 10 बात करती है "नीचे एक पैगाम भेजने" के बारे में, और यह इशारा करता है कुरान कि तरफ रसूल जैसा 65:11 में (अप•20)•*

11. एक रसूल* जो तिलावत करता है तुम्हारे लिए **अल्लाह** कि वहियों को, साफ तौर पर, रहबरी करने के लिए उनकी जो ईमान रखते हैं और नेककारी वाले काम करते हैं अंधेरे से बाहर रौशनी में• जो कोई **अल्लाह** में ईमान रखता है और एक नेक ज़िंदगी बसर करता है, वो दाखिल करेंगे उसको बागों में बहती हुई नहरों के साथ; वो रहता है उसमें हमेशा के लिए• **अल्लाह** फरागदिली से इनाम देंगे उसको•

सात कायनातें
*और सात ज़मीनें**

12. **अल्लाह** ने पैदा किया सात कायनातों और उतने ही अदद ज़मीनों को• हुक्में बहते हैं उनके बीच• यह है तुम्हें बताने के लिए कि **अल्लाह** हैं कादिरे मुतलक, और कि **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ सारी चीज़ों से•

****

सुरह 66: मनाई (अल-तहरीम)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ऐ नबी, तुम क्यों मना करते हो उसे जिसे **अल्लाह** ने हलाल किया है तुम्हारे लिए, सिर्फ तुम्हारी बीवियों को खुश करने के लिए? **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, रहम वाले•*

2. **अल्लाह** ने मुकर्रर किया तुम्हारे लिए कानूने तुम्हारे कसमों के मुताल्लिक• **अल्लाह** हैं तुम्हारे रब, और वो हैं सब कुछ जानने वाले, सबसे हिकमत वाले•

3. नबी ने ऐतबार किया था उसकी कुछ बीवियों को एक खास बयान से, फिर उनमें से एक ने उसे फैला दिया, और **अल्लाह** ने उसे उसके बारे में पता लगने दिया• उसने फिर इत्तेला किया उसकी बीवी को मसले के हिस्से का, और नज़रअंदाज़ किया हिस्सा• उसने उससे पूछा, "किसने इत्तेला किया आपको इसके बारे में?" उसने कहा, "मैं इत्तेला किया गया था सब कुछ जानने वाले, सबसे खबरदार कि तरफ से•"

4. अगर तुम दोनो तौबा करो **अल्लाह** को, फिर तुम्हारे दिलों ने सुना है• लेकिन अगर तुम एक साथ गिरोह बनाओ उसके खिलाफ, फिर **अल्लाह** हैं उसके साथी, और उसी तरह है जिब्राईल और नेक ईमानवाले• इसके अलावा फरिश्ते हैं उसकी मदद करने वाले•

5. अगर वो तुम्हें तलाक देता है, उसके रब तबदील कर देंगे दूसरी बीवियाँ तुम्हारी जगह में जो हैं तुमसे बेहतर; फरमानबरदारें *(मुसलमानें)*, ईमानवालीं *(मोमिनें)*, ताबेदार, तौबा करने वालीं, इबादत करने वालीं, मुत्तकी, या तो पहले ब्याही गई, या कुंआरियाँ•

6. ऐ ईमानवालों, हिफाजत करो तुम्हारी खुदकी और तुम्हारे कुम्बों की जहन्नम की आग से जिसका इंधन है लोग और चट्टानें• हिफाज़त कर रहे हैं उसकी सख्त और ताकतवर फरिश्ते जो कभी नाफरमानी नहीं करते **अल्लाह** की; वो करते हैं जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है करने के लिए•

7. ऐ काफिरों, आज माफी न मांगो• तुम बदला दिये जाते हो सिर्फ उसके लिए जो तुमने किया•

ईमानवाले तौबा करते हैं

8. ऐ ईमानवालों, तुम्हें **अल्लाह** से तौबा करना चाहिए एक पुख्ता तौबा• तुम्हारे रब फिर माफ करेंगे तुम्हारे गुनाहों को और दाखिल करेंगे तुम्हें बहती हुई नहरों के साथ बागों में• उस दिन पर, **अल्लाह** मायुस नहीं करेंगे नबी और वो जो ईमान लाये उसके साथ• उनकी रौशनी फैलेगी उनके आगे और उनके दाहिने• वो कहेंगे, "हमारे रब, मुकम्मल करिये हमारी रौशनी हमारे लिए, और हमें माफ करिये; आप हैं कादिरे मुतलक•"

**65:11 देखें फुटनोट के लिए 65:10-11•*

**65:12 हालांकी अल्लाह ने पैदा किया छ: दूसरे नजमें जो हैं हूबहू हमारी ज़मीन के, ज़िंदगी है सिर्फ हमारे नजम पर• इस तरफ, इवॉलियुशनिस्ट दिखाये जायेंगे इंसाफ के दिन पर कि ज़िदगी सिर्फ "इवॉल्व" नहीं हुई नजम पर उसके खास हालातों की वजह से•*

**66:1 मुहम्मदन्स पूरी दुनिया में मानते हैं कि मुहम्मद थे बेखता• यह आयत हमें सिखाती है कि वो थे एक काबिले खता इंसान (18:110, 33:37, 40:66, 80:1)•*

9. ऐ नबी, जद्दोजहेद करो काफिरों और मुनाफिकीन के खिलाफ और सख्त रहो उनके साथ• उनका ठिकाना है जहन्नम, और एक अफसोसनाक मुकद्दर•

शिफाअत का वहेम चकनाचूर किया गया

10. **अल्लाह** मिसालों कि तरह बयान करते हैं उनका जिन्होंने कुफ्र किया नुह की बिवी और लूत की बिवी• वो ब्याही गई थीं हमारे नेक बंदो में से दो को, लेकिन उन्होंने उनको धोखा दिया और, इस वजह से, वो उनकी बिल्कुल मदद नहीं कर सके **अल्लाह** के खिलाफ• उन दोनो से कहा गया था, "दाखिल हो जाओ जहन्नम कि आग में उनके साथ जो उसके हकदार हुए•"

ईमानवालों की मिसालें

फिरऔन की बिवी

11. और **अल्लाह** एक मिसाल कि तरह बयान करते हैं उनका जिन्होंने ईमान रखा फिरऔन की बिवी• उसने कहा, "मेरे रब, तामीर करिये मेरे लिए एक घर आप के पास जन्नत में, और बचाईये मुझे फिरऔन और उसके कामों से; बचाईये मुझे खता करने वाले लोगों से•"

मरयम

12. इसके अलावा मरयम, इमरान के कुम्बे से• उसने कायम रखा उसके आबरू को, फिर हमने फूंका उसके अंदर हमारी रूह से• उसने ईमान रखा उसके रब के लफ्ज़ों और उनकी आसमानी किताब में; वो थी ताबेदार•

****

सुरह 67: बादशाहत (अल-मुल्क)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. सबसे आला हैं वाहिद जिनके हाथों में है सारी बादशाहत, और वो हैं कादिरे मुतलक•

*मकसद हमारी ज़िंदगी का**

2. वाहिद जिन्होंने पैदा किया ज़िंदगी और मौत इस मकसद के लिए कि जांचे उनको तुम में से कौन बेहतर करेंगे•* वो हैं सारी ताकत वाले, माफ करने वाले•

3. उन्होंने पैदा किया सात कायनातों को परतों में• तुम सबसे महेरबान की तरफ से खिलकत में कोई खामी नहीं देखते• देखते रहो; क्या तुम देखते हो कोई ऐब?

4. देखो बार बार; तुम्हारी नज़रें आयेंगी वापस हैरान और काबू की गई•

5. हमने सजाया सबसे निचली कायनात को चिरागों से, और हिफाजत किया उसके किनारों को गोलों से शयातीन के खिलाफ; हमने तैयार किया उनके लिए एक आज़ाब जहन्नम में•

6. उनके लिए जो कुफ्र करते हैं उनके रब में, आज़ाब जहन्नम का• क्या एक अफसोसनाक मुकद्दर•

7. जब वो फेंके जाते हैं उसमें, वो सुनते हैं उसका जोश जैसे वो दहेकता है•

8. वो तकरीबन फूंटता है तैश से• जबभी एक गिरोह फेंका जाता है उसमें, उसके पहरेदारें पुछेंगे उससे, "क्या तुमने नहीं पाया एक खबरदार करने वाला?"

9. वो जवाब देंगे, "हाँ वाकई; एक खबरदार करने वाला ज़रूर आया हमारी तरफ, लेकिन हमने कुफ्र किया और कहा, '**अल्लाह** ने नाज़िल नहीं किया कोई चीज़• तुम हो पूरी तरह गुमराह•'"

10. वो यह भी कहते हैं, "अगर हम सुनते या समझते, हम नहीं होते जहन्नम के रहने वालों के बीच!"

11. इस तरह, उन्होंने कबूल किया उनके गुनाहों को• हाय हो जहन्नम के रहने वालों के लिए•

12. जहाँ तक वो जो एहतराम करते हैं उनके रब का, जब अकेले उनकी तनहाई में, उन्होंने हासिल किया है मगफरत और एक बड़ा इनाम•

**67:2 देखें तार्रुफ और अपेन्डिक्स 7 इस दुनिया के पीछे मकसद की तफसीलों के लिए•*

13. चाहे तुम रखो तुम्हारे बातों को खुफिया, या ऐलान करो उन्हें, वो हैं पूरी तरह वाकिफ सबसे अंदरूनी ख्यालों से•

14. क्या उन्हें पता नहीं होना चाहिए जो उन्होंने पैदा किया? वो हैं बुलंद, सबसे आगाह•

15. वो हैं वाहिद जिन्होंने रखा ज़मीन को तुम्हारी खिदमत में• फिरो उसके गोशों में, और खाओ उनकी नियामतों से• उनकी तरफ है आखरी हाज़िर किया जाना•

16. क्या तुमने ज़मानत दिया है कि वाहिद आसमान में नहीं करेंगे वार ज़मीन को और लुड़कने देंगे उसे?

17. क्या तुमने ज़मानत दिया है की वाहिद आसमान में नहीं भेजेंगे तुम्हारे ऊपर एक तेज़ तूफान? क्या तुम फिर कद्र करोगे मेरे ताकीद करने की एहमियत?

18. दूसरे उनसे पहलों ने कुफ्र किया है; कैसा हौलनाक था मेरा बदला!

19. क्या उन्होंने नहीं देखा परिंदों को उनके ऊपर कतार लगाये सफों में और फैलाते हुए उनके पंखों को? सबसे मेहरबान हैं वाहिद जो थामते हैं उनको हवा में• वो हैं देखने वाले सारी चीज़ों के•

20. कहाँ हैं वो लश्करें जो मदद कर सकते हैं तुम्हारी सबसे मेहरबान के खिलाफ? वाकई, काफिरें धोखा दिये गये हैं•

21. कौन है वहाँ तुमको मुहय्या करने के लिए, अगर वो थामें रखें उनकी नियामतें? वाकई, वो डूब गये हैं खता और नफरत की गहराई में•

22. क्या वो जो चलता है उसके औंधे मुह पर है बेहतर हिदायतयाफ्ता, या वो जो चलता है सीधे सही रास्ते पर?

23. कहो, "वो हैं वाहिद जिन्होंने शुरू किया तुम्हें, और अता किया तुम्हें सुनाई, आखें, और दिमागें• कभी कभार ही तुम हो कद्रदान•"

24. कहो, "वो हैं वाहिद जिन्होंने रखा तुम्हें ज़मीन पर, और उनके आगे तुम हाज़िर किये जाओगे•"

25. वो ललकारते हैं; "कब वो पेशीनगोई गुज़र जायेगी, अगर तुम हो सच्चे?"

26. कहो, "ऐसा इल्म है **अल्लाह** के पास; मैं एक वाज़े खबरदार करने वाले से ज़्यादा कुछ नहीं हूँ•"

27. जब वो देखेंगे उसे होता हुआ, चेहरें उनके जिन्होंने कुफ्र किया बदल जायेंगे अफसोसज़दा, और ये ऐलान किया जायेगा: "यह है जिसका तुम मज़ाक उड़ाया करते थे•"

28. कहो, "चाहे **अल्लाह** फैसला करें मुझे और मेरे साथ उनको फनाह करने के लिए , या हमें उनकी रहमत से बौछार करने के लिए, कौन है वहाँ हिफाज़त करने के लिए काफिरों की एक दर्दनाक आज़ाब से?"

29. कहो, "वो हैं सबसे मेहरबान; हम उनमें ईमान रखते हैं, और हम उनमें भरोसा करते हैं• तुम यकीनन जान जाओगे कौन है असल में दूर बहका हुआ•"

30. कहो, "क्या अगर तुम्हारा पानी धंस जाये, कौन मुहय्या करेगा तुम्हें साफ पानी से?"

****

सुरह 68: कलम
(अल-कलम)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. नून,* कलम, और जो वो *(लोग)* लिखते हैं•

2. तुमने हासिल किया है एक बड़ी रहमत तुम्हारे रब की तरफ से; तुम नहीं हो दिवाने•

**68:1 "नून" है तनहा कुरान के हैरतअंगेज़ इनिशियलों में से• देखें अपेन्डिक्स 1•*

3. तुमने हासिल किया है एक इनाम जिसके हो पूरे हकदार•

4. तुम बक्शे गये हो एक उमदा इख्लाकी सीरत से•

5. तुम देखोगे, और वो देखेंगे•

6. तुम में से कौन मलामत किया गया है•

7. तुम्हारे रब हैं पूरी तरह वाकिफ उनसे जो बहेक गये हैं उनके रास्ते से, और वो हैं पूरी तरह वाकिफ उनसे जो हैं हिदायतयाफ्ता•

8. ऐतबा न करो ठुकराने वालों की•

9. वो चाहते हैं कि तुम समझौता करो, ताके वो भी समझौता कर सकें•

10. ऐतबा न करो हर निचले कसम खाने वाले की•

11. एक रूसवा करने वाला, एक चुगलखोर•

12. मना करने वाला खैरात का, एक खता करने वाला, एक गुनाहगार•

13. नाकद्रदान, और लालची•

14. इसके बावजूद की वो रखता है काफी पैसा और औलाद•

15. जब हमारी वहियें पढ़कर सुनाई जाती है उसे, वो कहता है, “कहानियाँ माज़ी से!”

16. हम निशान करेंगे उसका चेहरा•

17. हमने आज़माया है उनको जैसा हमने आज़माया बाग के मालिकों को जिन्होंने कसम खाया कि वो फसल काटेंगे उससे सुबह में•

18. वो थे इतनी पूरी तरह यकीनी•

19. एक गुज़रने वाला *(तूफान)* तुम्हारे रब कि तरफ से गुज़रा उस से जब वो सो रहे थे•

20. सुबह को, वो था बंजर•

21. उन्होंने एक दूसरे को पुकारा सुबह में•

22. “चलें हम फसल काटें अनाज•”

23. उनके रास्ते पर, उन्होंने राज़दार बनाया एक दूसरे को•

24. कि उस दिन के बाद, उनमें से कोई भी गरीब नहीं होगा•

25. वो थे इतने पूरी तरह यकीनी उनके फसल से•

26. लेकिन जब उन्होंने उसे देखा, उन्होंने कहा, “हम थे कितने गलत!”

27. “अब, हमारे पास कुछ नहीं!”

उनको कहना चाहिए था:
“अल्लाह ने चाहा•”

28. उनमें से नेककार ने कहा, “अगर सिर्फ तुमने बड़ाई की होती *(अल्लाह की)*!”

29. उन्होंने कहा, “बड़ाई हो तुम्हारे रब की• हमने खता किया है•”

30. वो एक दूसरे को इल्ज़ाम देने लगे•

31. उन्होंने कहा, “हाय हो हमको• हमने गुनाह किया•

32. “हमारे रब हमें अता करें एक बेहतर वाला• हम तौबा करते हैं हमारे रब को•”

33. ऐसा था बदला• लेकिन आज़ाब अगली ज़िंदगी का है कहीं बुरा, अगर वो सिर्फ जानते•

34. नेककार मुस्तेहिक हुएं हैं, उनके रब के पास, मुसर्रत के बागें•

35. क्या हम बरताव करें फरमानबरदारों से मुजरिमों कि तरह?

36. क्या माजरा है तुम्हारे समझ के साथ?

37. क्या तुम्हारे पास है दूसरी किताब बरकरार रखने के लिए?

38. उसमें, क्या तुम पाते हो जो कुछ तुम चाहते हो?

39. या, तुमने पाया है हमारी तरफ से संजीदा ज़मानतें जो अता करता है तुम्हें जो कुछ तुम चाहते हो हश्र के दिन पर?

40. पूछो उनसे, “कौन ज़मानत देता है इसके लिए तुम्हें?”

41. क्या उनके पास हैं बुतें? उनके बुतों को उनकी मदद करने दो, अगर वो हैं सच्चे•

42. दिन अयेगा जब वो बेनकाब किये जायेंगे, और उनको ज़रूरत होगा सजदे में गिरने का, लेकिन वो काबिल नहीं होंगे करने के•

43. ज़ेर की गई उनकी आँखें, रूसवाई ढाक लेगी उनको• उन्हें दावत दिया जाता था सजदे में गिरने के लिए जब वो थे पूरे और काबिल•

44. इसलिए, मुझे बरताव करने दो उनके साथ जो ठुकराते हैं इस *हदीस* को; हम उनको आगे बड़ने देंगे जहाँ से वो कभी एहसास नहीं करते•

45. मैं दूंगा उनको काफी रस्सी; मेरी साज़िश है ज़बरदस्त•

46. क्या तुम पूछ रहे हो उनसे पैसे के लिए, इसलिए वो लदे हैं जुर्माने से?

47. क्या वो जाानते हैं मुस्तकबिल? क्या वो उसे दर्ज करवाते हैं?

48. तुम्हें साबित कदमी से जमे रहना चाहिए तुम्हारे रब के हुक्मों को पूरा करने में• *(युनूस)* कि तरह न हो जिसने पुकारा मछली के अंदर से•

49. अगर वो उसके रब के फ़ज़्ल के लिए न होता, वो फेंक दिया गया होता रेगिस्तान में एक गुनाहगार जैसा•

50. लेकिन उसके रब ने उसे बक्शा, और बनाया उसे नेककार•

51. जो कोई कुफ्र करते हैं दिखाते हैं उनका मज़ाक उनकी आखों में जब वो सुनते हैं पैगाम और कहते हैं, "वो है दिवाना!"

52. यह है असल में एक पैगाम दुनिया के लिए•

****

सुरह 69: नाकाबिले इंकार
(अल-हाक्का)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. नाकाबिले इंकार *(वाक्या)*•

2. क्या एक नाकाबिले इंकार *(वाक्या)*!

3. वो है वाकई नाकाबिले इंकार•

4. तमूद और आद ने कुफ्र किया हिला देने वाले में•

5. जहाँ तक तमूद, वो फनाह किये गये थे तबाह करने वाले *(ज़लज़ले)* से•

6. जहाँ तक आद, वो फनाह किये गये थे एक जारी रहने वाले, तेज़ तूफान से•

7. उन्होंने खुला छोड़ दिया उसे उनके ऊपर सात रातों और आठ दिनों के लिए, तेज़ी से• तुम देख सकते लोगों को उछाले गये इधर उधर मुरझाये हुए नख्ल के तने जैसे•

8. क्या तुम पा सकते हो उनका कोई सुराग?

9. फिरऔन, दूसरे उस से पहले, और गुनाहगारें *(सुडोम के)* थे बदकार•

10. उन्होंने नाफरमानी की उनके रब के रसूल की• इस वजह से, उन्होंने बदला चुकाया उनको एक तबाह करने वाले बदले से•

11. सैलाब था तबाह करने वाला, इसलिए हमने उठाया तुम्हें तैरती हुई *(कश्ती)* पर•

12. हमने उसे एक सबक बनाया तुम्हारे लिए, ताके कोई सुनने वाला कान समझ सके•

13. जब सुर फूंका जाता है एक बार•

14. ज़मीन और पहाड़ें उठा लिये जायेंगे और कूटे जायेंगे; पूरी तरह कूटे गये•

15. वो है दिन जब अटल वाक्या गुज़र जायेगा•

16. आसमान फट जायेगा, और अलग हो जायेगा•

17. फरिश्ते होंगे हर तरफ, और तुम्हारे रब कि सल्तनत फिर घेरे में लेगी आठ *(कायनातें)*•*

**69:17 यह ज़मीन है मुसीबत से भरी उसके अल्लाह से जिस्मानी फासले कि वजह से, चुंकि वो है सांतवे कायनात में (7:143)• अगली ज़िंदगी में, आठवीं कायनात पैदा की जायेगी जो हमारे सातवीं कायनात से भी ज़्यादा दूर होगी; वो बुलाई जायेगी"जहन्नम" (89:23)•*

18. उस दिन पर, तुम बेनकाब किये जाओगे, तुम्हारा कुछ भी छिपा नहीं रह सकता•

ईमानवाले

19. जहाँ तक वो जो पाता है उसका दफ्तर उसके दाहिने हाथ से, वो कहेगा, "आओ पढ़ो मेरा दफ्तर•

20. "मैंने ज़रूर ईमान रखा कि मैं ज़िम्मेदार ठहराया जाने वाला था•"

21. वो मुस्तेहिक हुआ है एक खुश ज़िंदगी का•

22. एक आला जन्नत में•

23. उसके फलें हैं पहुँच में•

24. खाओ और पियो खुशी से तुम्हारे पिछले दिनों के कामों के बदले में•

काफिरें

25. जहाँ तक उसके जो पाता है उसका दफ्तर बायें हाथ में, वो कहेगा, "ओ, काश मैंने नहीं पाया होता मेरा दफ्तर•

26. "काश मैं कभी नहीं जानता मेरा हिसाब•

27. “काश मेरी मौत होती दाईम•

28. “मेरा पैसा मेरी मदद नहीं कर सकता•

29. “मेरी सारी ताकत चली गई•”

30. लो उसे और हथकड़ी लागाओ उसे•

31. जला दो उसे जहन्नम में•

32. एक ज़ंज़ीर में जो है सत्तर गज़ लम्बी, बांध दो उसे•

33. इसलिए कि उसने ईमान नहीं रखा **अल्लाह**, सबसे बुलंद में•

34. नाहीं उसने वकालत किया गरीब को खिलाने का•

35. इस वजह से, उसके पास नहीं हैं दोस्त यहाँ•

36. नाहीं कोई खाना, सिवाए कड़वे किस्म का•

37. खाना गुनाहगारों के लिए•

38. मैं कसम खाता हूँ जो तुम देखते हो•

39. और जो तुम नहीं देखते•

40. यह बयान है एक इज़्जत वाले रसूल का•

41. एक शायर का बयान नहीं; कभी कभार ही तुम ईमान रखते हो•

42. नाहीं एक नजूमी का बयान; कभी कभार ही तुम तवज्जो लेते हो•

43. एक वही कायनात के रब की तरफ से•

मुहम्मद मना किये गये
किसी मज़हबी तालिमों
को जारी करने से

44. अगर उसने बोला होता कोई दूसरी तालीमें•

45. हमने सज़ा दिया होता उसे•

46. हमने रोक दिया होता वहियें उसकी तरफ•

47. तुम में से कोई भी मदद नहीं कर पाता उसकी•

48. यह है एक ताकीद नेककार के लिए•

49. हम जानते हैं; तुम में से कुछ हो ठुकराने वाले•

50. यह है लेकिन गम काफिरों के लिए•

51. यह है बिल्कुल सच•

52. इसलिए, तुम्हें बड़ाई करनी चाहिए तुम्हारे रब के नाम की, सबसे बुलंद•

****

सुरह 70: ऊँचाईयाँ
(अल-माआरिज)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. एक सवाल करने वाला सवाल कर सकता है अटल आज़ाब•

2. काफिरों के लिए, कोई भी नहीं रोक सकता उसे•

3. **अल्लाह** कि तरफ से; रखने वाले सबसे ऊँचीं ऊँचाई के•

4. फरिश्ते उनके दफ्तरों के साथ, चढ़ते हैं उनकी तरफ एक दिन में जो बराबर है पचास हज़ार सालों के•

5. इसलिए, तुम्हें करम वाले सब्र को चुनना चाहिए•

6. इसलिए कि वो देखते हैं उसे बहुत दूर•

7. जबकी हम देखते हैं उसे बहुत करीब•

8. दिन आयेगा जब आसमान होगा पिघले हुए चट्टानों कि तरह•

9. पहाड़े होंगे जैसे मुलायम ऊन•

10. कोई दोस्त ख्याल नहीं करेगा उसके करीबी दोस्त के बारे में•

11. जब वो उसे देखेंगे, मुजरिम चाहेंगे वो दे सकते उनके खुदके बच्चों को फिदये जैसा, बचाने के लिए उसे उस दिन के आज़ाब से•

12. इसके अलावा उसका जोड़ा, और उसका भाई•

13. यहाँ तक के उसका पूरा कबीला जिसने उसे पाला•

14. यहाँ तक के सारे लोग ज़मीन पर, अगर वो उसे बचा सकते•

15. नहीं, वो जल रहा है•

16. बेसब्र जलाने के लिए•

17. वो पुकारता है उनको जो पलट गये•

18. वो जिन्होंने बटोरा और गिना•

19. वाकई, इंसान है बेचैन•

20. अगर छुआ जाता है तकलीफ से, नाउम्मीद•

21. अगर बक्शा जाता है दौलात से, कंजूस•

22. सिवाए इबादत करने वालों के•

23. जो हमेशा अदा करते हैं उनकी रावता नमाज़ें *(सलात)*•

24. उनके पैसे का हिस्सा अलग रखा जाता है•

25. गरीब और ज़रूरतमंद के लिए•

26. वो ईमान रखते हैं इंसाफ के दिन में•

27. वो उनके रब के बदले का एहतराम करते हें •

28. उनके रब का बदला हल्का नहीं लिया जाता•

29. वो रखते हैं उनकी आबरू•

30. *(वो ताल्लुक रखते हैं)* सिर्फ उनके जोड़ों के साथ, या जो हैं कानूनी उनके—

31. जो कोई पार करता है इन हदों को है एक गुनाहगार—

32. और ईमानवाले रखते हैं उनकी ज़बान; वो हैं कविले ऐतमाद•

33. उनकी गवाही है सच्ची•

34. वो मुसलसल अदा करते हैं उनकी रावता नमाज़ें *(सलात)*, वक्त पर•

35. वो मुस्तेहिक हुए हैं एक मकाम इज़्ज़त का, जन्नत में•

36. क्या रोक रहा है उन्हें जिन्होंने कुफ्र किया तुमसे जुड़ने को?

37. दाहिनी तरफ, और बाई तरफ, वो फरार होते हैं•

38. उनमें से कैसे कोई उम्मीद कर सकता है मुसर्रत भरी जन्नत में दाखिल होने का?

39. कभी नहीं; हमने पैदा किया उनको, और वो जानते हैं किस से•

40. मैं संजीदगी से कसम खाता हूँ मशरिकों और मगरिबों के रब की; हम हैं काविल—

41. तवदील करने के लिए वेहतर लोग तुम्हारी जगह में; हम कभी शिकस्त नहीं दिये जा सकते•

42. इसलिए, उनको गलत करने और खेलने दो, जब तक वो मिल नहीं जाते दिन से जो उनका इंतेज़ार कर रहा है•

43. वो है दिन जब वो आते हैं कब्रों से बाहर जल्दी में, जैसे वो जमा किये जाते हैं *(कुरवान करने वाले)* कुरबानगाहों को•

44. ज़ेर की गई उनकी आँखों के साथ, शर्म ढांक लेगी उनको• वो है दिन जो इंतेज़ार कर रहा है उनका•

****

सुरह 71: नुह

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हमने भेजा नुह को उसके लोगों कि तरफ: "तुम्हें तुम्हारे लोगों को खबरदार करना चाहिए इससे पहले कि एक दर्दनाक आज़ाव परेशान करे उनको•"

2. उसने कहा, "ऐ मेरे लोगों, मैं एक वाज़े खबरदार करने वाला हूँ तुम्हारी तरफ•

3. "तुम्हें होशियार करने के लिए कि तुम्हें **अल्लाह** की इबादत करनी चाहिए, एहतराम करो उनका, और मेरी ऐतबा करो•

4. "वो फिर तुम्हें माफ करेंगे तुम्हारे गुनाहों को और मोहलत देंगे एक पहले से मुकर्रर किये गये मुद्दत के लिए• विला शक, **अल्लाह** से मुलाकात कभी मुलतवी नहीं की जा

सकती, जब उसका वक्त हो जाये, अगर तुम सिर्फ जानते•"

5. उसने कहा, "मेरे रब, मैंने दावत दिया है मेरे लोगों को दिन और रात•

6. लेकिन मेरे दावत ने सिर्फ बढ़ाया उनकी नफरत•

7. "जब भी मैंने दावत दिया उनको आप से माफ किये जाने के लिए, उन्होंने डाला उनके उंगलियों को उनके कानों में, ढांका अपने आप को उनके कपड़ों से, इसरार किया और मगरूर बन गये•

8. "फिर मैंने दावत दिया उनको ऐलानिया•

9. "फिर मैंने ऐलान किया उनको शोर से, और बोला उनको खुफिया तौर पर•

10. "मैंने कहा, 'इल्तेजा करो तुम्हारे रब से मगफरत के लिए; वो हैं माफ करने वाले•

11. " 'वो फिर बरसायेंगे तुम्हें फरागदिली से बारिश के साथ•

12. " 'और मुहय्या करेंगे तुम्हें पैसे और औलाद, और बागीचों, और नहरों से•

13. तुम्हें क्यों **अल्लाह** का एहतराम करने के लिए जद्दोजहेतद नहीं करना चाहिए?

14. वो हैं वाहिद जिन्होंने पैदा किया तुम्हें मरहलों में•

15. क्या तुम एहसास नहीं करते कि अल्लाह ने पैदा किया सात कायनातों को परतों में?

16. उन्होंने उसमें चाँद की नक्शकारी की एक नूर होने के लिए, और रखा सूरज को एक चिराग होने के लिए•

17. और **अल्लाह** ने उगाया तुम्हें ज़मीन से पौधों कि तरह•

18. फिर वो लौटाते हैं तुम्हें उसके अंदर, और वो यकीनन लायेंगे तुम्हें बाहर•

19. **अल्लाह** ने ज़मीन को काबिल बनाया तुम्हारे रहने के लिए•

20. ताके तुम सड़कों को बना सको उसमें•

21. नुह ने कहा, "मेरे रब, उन्होंने मेरा कहना नहीं माना, और पैरवी की उनकी जो थे और ज़्यादा बिगड़े हुए जब बक्शे गये थे पैसे और औलाद से•

22. "उन्होंने साज़िश किया वहशतनाक साज़िशें•

23. "उन्होंने कहा, 'न छोड़ो तुम्हारे खुदाओं को• न छोड़ो वद, सुवा, यागूथ, याऊक, और नस्र को•'

24. "उन्होंने कईयों को बहकाया• इसलिए, बदकार को डूबने दो नुकसान की गहराई में•"

25. उनके गुनाहों कि वजह से वो डुबो दिये गये थे और हवाले किये गये थे जहन्नम कि आग को• उन्होंने नहीं पाया कोई मददगारों को उनकी **अल्लाह** से हिफाज़त करने के लिए •

26. नुह ने यह भी कहा, "मेरे रब, न छोड़िये एक भी काफिर ज़मीन पर•

27. "इसलिए की अगर आप उनको रहने देंगे, वो सिर्फ गुमराह करेंगे आप के बंदों को और देंगे जनम कुछ नहीं सिवाए बदकार काफिरों के•

28. "मेरे रब, माफ करिये मुझे और मेरे वालिदैन को, और जो कोई दाखिल होता है मेरे घर में एक ईमानवाले जैसा, और सारे ईमानवाले मर्दों और औरतों को• लेकिन न दिजियें काफिरों को कुछ भी सिवाय हलाकत के•"

****

सुरह 72: जिनें
(अल-जिन)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कहो, "मैं इल्हाम किया गया था कि जिनों के एक गिरोह ने सुना, फिर कहा, 'हमने सुना है एक हैरतअंगेज़ कुरान•*

2. " 'वो हिदायत करता है नेककारी की तरफ, और हम ईमान लाये हैं उसमें; हम कभी बुतों को कायम नहीं करेंगे हमारे रब के सिवाए•

3. " 'सबसे आला हैं हमारे सिर्फ रब• उनके पास कभी नहीं था एक हमनवा, नाहीं एक बेटा•

4. " 'वो हैं बेवकूफ हम में से जो कहते थे ऐसा बकवास **अल्लाह** के बारे में•

5. " 'हमने सोचा कि नाही इंसाने, नाही जिनें, मुमकिन झूठों को कह सकते हैं **अल्लाह** के बारे में•

6. “इंसानें ताकत तलाश किया करते थे जिन हस्तियों के ज़रिये, लेकिन उन्होंने सिर्फ अज़ियत दिया उनको कई मुसीबत के साथ•

7. “ ‘उन्होंने सोचा, जैसे ही तुमने सोचा, **अल्लाह** नहीं भेजेंगे दूसरा *(रसूल)*•

8. “ ‘हमने छुआ आसमान और पाया उसे भरा हुआ ज़बरदस्त पहरेदारों और गोलों से•

9. “ ‘हम वहाँ बैठा करते थे जासूसी करने के लिए• जो कोई सुनता है पीछा किया जाता है एक ताकतवर गोले से•

10. “ ‘हमे कोई इल्म नहीं अगर कोई चीज़ बुरा इरादा किया गया है ज़मीन के रहने वालों के लिए, या अगर उनके रब चाहते हैं उनकी मगफरत करने के लिए•

11. “ ‘हम में से कुछ हैं नेककार, और कुछ हैं नेककार से कम; हम पैरवी करते हैं मुख्तलिफ रास्तों की•

12. “ ‘हम अच्छे से जानते थे कि हम कभी भाग नहीं सकते **अल्लाह** से ज़मीन पर; हम कभी भाग और फरार नहीं हो सकते•

13. “ ‘जब हमने सुना हिदायत, हम उसमें ईमान लाये• जो कोई ईमान रखता है उसके रब में कभी नहीं डरेगा किसी नाइंसाफी, नाहीं किसी अज़ियत से•

14. “ ‘हमारे बीच हैं फरमानबरदारें, और हमारे बीच हैं समझौता करने वाले•’ ” जहाँ तक वो जिन्होंने फरमानबरदारी की, वो हैं सही रास्ते पर•

15. जहाँ तक समझौता करने वाले, वो होंगे जहन्नम के लिए इंधन•

16. अगर वो रहें सही रास्ते पर, हम बक्शेंगे उनको बहुत सारे पानी से•

17. हम यकीनन आज़मायेंगे उन सारों को• जहाँ तक उसके जो नज़रअंदाज़ करता है उसके रब का पैगाम, वो हिदायत करेंगे उसकी सदा बड़ती आज़ाब कि तरफ•

18. **अल्लाह** की हैं इबादत की जगहें; किसी और को न पुकारो सिवाए **अल्लाह** के•

अल्लाह के वादे
*का रसूल**

19. जब **अल्लाह** के बंदे* ने वकालत की उनकी सिर्फ• तकरीबन वो सारों ने गिरोह बनाया एक साथ उसकी मुखालिफत करने के लिए•

20. कहो, “मैं सिर्फ मेरे रब कि इबादत करता हूँ; मैं कभी किसी बुतों को कायम नहीं करता सिवाए उनके•”

21. कहो, “मैं नहीं रखता कोई ताकत तुम्हें नुकसान करने, नाहीं तुम्हें हिदायत करने के लिए•”

**72:1-28 रसूल यहाँ रियाज़ी तौर पर, नाम किया गया है, “रशाद खलीफा” जैसा, जिसे अल्लाह ने नाज़िल किया दुनिया का खत्म (अपेन्डिक्स 25)• आयतों का नंबर 1:1 से 72:27 तक, जहाँ रसूल बयान किया गया है, है 5472, 19x72x4• लफ्ज़ “रशदा” सुरह 72 में 4 दफा वाकै होता है• “रशदा” कि वेल्यू है 504, और 504+28 (सुरह 72 कि आयतें) है 532, 19x28• “रशाद खलीफा” कि वेल्यू (1230)+72+28=1330 = 19x70• अददें सुरह 72 और उसके आयतों के नंबर (28) की जुड़ते हैं 7+2+2+8=19 को• इसके अलावा, एहम जुमला, “सिर्फ एक रसूल जिसे वो चुनते हैं” के पास है वेल्यू 1919, 19x101•*

22. कहो, “कोई भी हिफाज़त नहीं कर सकता मेरी **अल्लाह** से, नाहीं मैं पा सकता हूँ कोई दूसरी पनाह सिवाए उनके•

23. “मैं पहुँचाता हूँ **अल्लाह** के ऐलानों और पैगामों को•” वो जो नाफरमानी करते हैं **अल्लाह** और उनके रसूल की हासिल करते हैं जहन्नम की आग, जिसमें वो रहते हैं हमेशा के लिए•

24. जब वो देखेंगे जो उनका इंतेज़ार कर रहा है, वो जान लेंगे कौन है असल में कमज़ोर ताकत में, और कम तादाद में•

25. कहो, “मैं नहीं जानता अगर जो वादा किया गया है तुम को होगा जल्दी, या अगर मेरे रब उसे मुल्तवी करें कुछ देर के लिए•”

26. वो हैं जानने वाले मुस्तकबिल के; वो नाज़िल नहीं करते मुस्तकबिल किसी को•

27. सिर्फ एक रसूल जिसे वो चुनते हैं,* करते हैं वो नाज़िल माज़ी और मुस्तकबिल से, खास खबरें•*

28. यह है साबित करने के लिए कि उन्होंने पहुँचाया है उनके रब के पैगामों को• वो हैं पूरी तरफ वाकिफ जो है उनके पास• उन्होंने गिन रखा है सारी चीज़ों की अददें•

****

सुरह 73: ढका हुआ (अल-मुज़म्मिल)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ऐ ढके हुए•
2. ध्यान करो रात के दौरान, सिवाए कभी कभार•
3. उसका आधा, या थोड़ा कम•
4. या थोड़ा ज़्यादा• और पढ़ो कुरान गिलाफ से गिलाफ तक•
5. हम देंगे तुम्हें एक वज़नी पैगाम•
6. रात के वक्त ध्यान करना है ज़्यादा असरदार, और ज़्यादा नेक•
7. तुम्हारे पास है कफी वक्त दिन के दौरान दूसरे मामलों के लिए•
8. तुम्हें ज़िक्र करना चाहिये तुम्हारे रब का नाम, आने के लिए हमेशा करीब और करीब उनकी तरफ•
9. रब मगरिब और मशरिक के; कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए उनके• तुम्हें चुनना चाहिए उनको तुम्हारा वकील जैसा•
10. और साबित कदम रहो उनकी बातों की सूरत में, और नज़रअंदाज़ करो उनको एक अच्छे अंदाज़ में•
11. और मुझे बरताव करने दो ठुकराने वालों के साथ, जो फरागदिली से बख्शे गये थे; बस दो उनको थोड़ा वक्त•
12. हमारे पास हैं सख्त सज़ाएं, और जहन्नम•
13. खाना जो मुश्किल से निगला जा सकता है, और र्ददनाक आज़ाब•
14. दिन आयेगा जब ज़मीन और पहाड़ें लरज़ेंगे, और पहाड़ें बदल जायेंगे एक बेवज़न ढेर में•
15. हमने भेजा है तुम्हारी तरफ एक रसूल, जैसा हमने भेजा फिरऔन कि तरफ एक रसूल•
16. फिरऔन ने नाफरमानी की रसूल की और, इस वजह से, हमने सज़ा दिया उसे सख्ती से•
17. अगर तुम कुफ्र करो, तुम कैसे टाल सकते हो एक दिन को इतना हौलनाक जो बना देता है बच्चों को बूढ़ा?
18. आसमान चकनाचूर हो जायेगा उस से• उनका वादा है सच्चा•

**72:27 देखें फुटनोट के लिए 72:1-28•*

19. यह है एक ताकीद; जो कोई चाहता है, उसे चुनने दो रास्ता उसके रब कि तरफ•
20. तुम्हारे रब जानते हैं कि तुम ध्यान करते हो रात के दो तिहाईयों के दौरान, या उसका आधा, या उसका एक तिहाई, और उसी तरह करते हैं वो जो तुम्हारे साथ ईमान रखते हैं• **अल्लाह** ने नक्शकारी की है रात और दिन की, और वो जानते हैं कि तुम हरबार नहीं कर सकते हो इसे• उन्होंने तुम्हें माफ किया है• बल्कि, तुम्हें जितना हो सके कुरान पढ़ना चाहिए• वो जानते हैं तुम में से कुछ होंगे बिमार, दूसरे सफर कर रहे होंगे **अल्लाह** की नियामतों कि तलाश में, और दूसरे जद्दोजहेद कर रहे होंगे **अल्लाह** के वास्ते• तुम्हें जितना हो सके उससे पढ़ना चाहिए, और अदा करो राबता नमाजें *(सलात)*, दो ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*, और दो एक उधार **अल्लाह** को नेककारी का• जो कुछ तुम भेजो आगे तुम्हारी रूहों कि तरफ से, तुम पाओगे उसे **अल्लाह** के पास कहीं बेहतर और फरागदिली से इनाम दिये गये• और इल्तेजा करो **अल्लाह** से मगफरत के लिए• **अल्लाह** हैं माफ करने वाले, सबसे रहम वाले•

****

सुरह 74: छिपा राज़
(अल-मुदस्सिर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. ऐ छिपा राज•*
2. बाहर आ और खबरदार कर•
3. बड़ाई कर तेरे रब की•
4. साफ कर तेरे लिबास को•*
5. छोड़ दे जो है गलत•
6. खुश रह तेरे हिस्से से•
7. साबित कदमी से ज़िक्र कर तेरे रब का•
8. फिर, जब सुर फूंका जाता है•
9. वो होगा एक मुश्किल दिन•
10. काफिरों के लिए, आसान नहीं•
11. मुझे बरताव करने दो उसके साथ जिसे मैंने पैदा किया एक शक्स जैसा•
12. मैंने मुहय्या किया उसे बहुत से पैसे के साथ•
13. और औलाद निहारने के लिए•
14. मैंने सारी चीज़ें आसान किया उसके लिए•
15. फिर भी, वो लालची है ज़्यादा के लिए•
16. वो ज़िद्दी तौर पर इंकार करता है इन सबूतों को कबूल करने के लिए•
17. मैं लगातार सज़ा दूंगा उसे•
18. इसलिए कि उसने गौर किया, फिर फैसला किया•
19. मुसीबतज़दा है जो उसने फैसला किया•
20. मुसीबतज़दा, है वाकई जो उसने फैसला किया•
21. उसने देखा•
22. उसने घुड़का और कराहा•
23. फिर वो पलट गया तकब्बुर से•
24. उसने कहा, "यह है लेकिन चालाक जादू!
25. "यह है इंसानी बना•"
26. मैं हवाले करूंगा उसे आज़ाब कि तरफ•
27. कौन सा आज़ाब!
28. पूरा और मुकम्मल•
29. ज़ाहिर सारे लोगों के लिए•

**74:1 अल्लाह कि लामहदूद हिकमत ने चाहा कुरान को मुहम्मद के ज़रिये नाज़िल होने के लिए, जबकी कुरान का 19 पर बुनियाद ज़बरदस्त रियाज़ी मौजेज़ा अल्लाह के वादे के रसूल के ज़रिये नाज़िल किया गया था कुरान के नुज़ूल के 1406 चाँद के सालों बाद (1406=19x74 और 1974 एडी था खोज का साल सूरज का)• माज़ी में देखते हुए, हम एहसास करते हैं कि पूरी सुरह मुखातिब करती है कुरान के 19 पर बुनियाद मौजज़े कि तरफ (अपेन्डिक्सें 1 और 2)•*

**74:4 कुरान है लिबास शामिल करता हुआ खुफिया कोड• यह मुखातिब करता है 9:128-9को निकालने के लिए•*

कुरान का
कॉमन डिनॉमिनेटर

30. उस पर हैं उन्नीस•*

31. हमने मुकर्रर किया फरिश्तों को जहन्नम का निगहबाने होने के लिए, और हमने दिया उनको अदद *(19)*
    (1) काफिरों को परेशान करने के लिए,
    (2) ईसाईयों और यहूदियों को यकीन दिलाने के लिए *(की यह है एक खुदाई आसमानी किताब)*,
    (3) अकीदा मज़बूत करने के लिए अकीदे वाले का;
    (4) ईसाईयों, यहूदियों, साथ साथ ईमानवालों के दिलों से शक के सारे सुरागों को निकालने के लिए, और
    (5) फाश करने के लिए उन्हें जो शक को पनाह देते हैं उनके दिलों में, और काफिरें; वो कहेंगे, "क्या मतलब है इस मिसाल से **अल्लाह** का?" **अल्लाह** इस तरह गुमराह करते हैं जिसकिसी को वो चाहते हैं, और हिदायत करते हैं जिसकिसी को वो चाहते हैं• कोई नहीं जानता तुम्हारे रब के लश्करों को सिवाए उनके• यह है एक ताकीद लोगों के लिए•
32. बेशक, *(मैं कसम खाता हूँ)* चाँद की•
33. और रात जैसे वो गुज़रती है•
34. और सुबह जैसे वो चमकती है•

बड़े मौजज़ों से एक

35. यह है बड़े मौजज़ों से एक•*

36. एक ताकीद इंसानी नस्ल के लिए•

37. तुम में से उनके लिए जो आगे बढ़ना, या पलटना चाहते हैं•

38. हर रूह दबा है उसके गुनाहों से•

39. सिवाए उनके जो हैं दाहिने पर•

40. जबकि जन्नत में, वो पूछेंगे•

41. मुजरिम के बारे में•

42. "क्या लाया तुम्हें इस आज़ाब कि तरफ?"

43. वो कहेंगे, "हमने अदा नहीं किया राबता नमाजें *(सलात)*•

44. हमने गरीब को नहीं खिलाया•

45. "हमने गलती किया गलती करने वालों के साथ•

46. "हमने कुफ्र किया इंसाफ के दिन में•

47. "जब तक यकीन नहीं आया हमारी तरफ अब•"

48. शिफाअत करने वालों की शिफाअत कभी मदद नहीं करेगी उनकी•

49. क्यों वो हैं इतने नाराज़ इस ताकीद की तरफ?

50. दौड़ते हैं ज़ेबरों कि तरह•

51. जो फरार हो रहे हैं शेर से!

52. क्या उनमें से हर एक पाना चाहता है आसमानी किताब ज़ाती तौर पर?

53. वाकई, वो नहीं डरते अगली ज़िंदगी से•

54. वाकई यह है एक ताकीद•

55. उनके लिए जो तवज्जोह लेना चाहते हैं•

56. वो तवज्जोह नहीं ले सकते **अल्लाह** कि मर्ज़ी के खिलाफ• वो हैं नेककारी का ज़रिया; वो हैं मगफरत का ज़रिया•

****

सुरह 75: हश्र (अल-कियामाह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. मैं कसम खाता हूँ हश्र के दिन की•

2. और मैं कसम खाता हूँ इल्ज़ाम लगाती रूह की•

3. क्या इंसान सोचता है कि हम दोबारा तामीर नहीं करेंगे उसकी हड्डियाँ?

4. हाँ वाकई; हम काबिल हैं दोबारा तामीर करने के लिए उसकी उंगली का छोर•

**74:30-35 यह "बड़े मौजज़ों से एक" मुहय्या करता है पहला जिस्मानी सबूत कि कुरान है अल्लाह का पैगाम दुनिया के लिए• यह 19 पर बुनियाद मौजेज़ा तफसील किया गया है अपेन्डिक्स 1 में•*

5. लेकिन इंसान झुकता है ईमान रखने के लिए सिर्फ जो वो देखता है उसके सामने•

6. वो शक करता है हश्र का दिन•

7. जब नज़र तेज़ की जायेगी•

8. और चाँद ग्रहन कर दिया जायेगा•

9. और सूरज और चाँद टकरा जायेंगे एक दूसरे में•

10. इंसान कहेगा उस दिन पर, "कहां है बचाव?"

11. बेशक, वहाँ नहीं बचाव•

12. तुम्हारे रब कि तरफ, उस दिन पर, है आखरी मुकद्दर•

13. इंसान इत्तेला किया जायेगा, उस दिन पर, सारी चीज़ उसने किया खुद को बढ़ाने के लिए, और सारी चीज़ उसने किया खुदको पलटने के लिए•

14. इंसान होगा उसके खुद का मुंसिफ•

15. कोई बहाने कबूल नहीं किये जायेंगे•

मुहम्मद मना किये गये कुरान को समझाने से

16. न चलाओ तुम्हारी ज़बान को उसे जल्दी करने के लिए•

17. यह हम हैं जो जमा करेंगे उसे कुरान में•

18. जब हम सुनाये उसे, तुम्हें पैरवी करनी चाहिये ऐसी एक कुरान की•

19. फिर वो हम हैं जो उसे समझायेंगे•

20. वाकई, तुम चाहते हो इस फरार होती ज़िंदगी को•

21. जबकी नज़रअंदाज़ करते हुए अगली ज़िंदगी•

22. कुछ चेहरे, उस दिन पर, होंगे खुश•

23. देखते हुए उनके रब को•

24. दूसरे चहरे होंगे, उस दिन पर, मुसीवतज़दा•

25. उम्मीद करते हुए सबसे बुरा•

26. वाकई, जब *(रूह)* पहुँचेगी हलक को•

27. और उसे हुक्म दिया जायेगा: "छोड़ दे!"

28. वो जानता है यह है खत्म•

29. हर एक पैर बेहरकत पड़ा होगा दूसरे पैर के पास•

30. तुम्हारे रब कि तरफ, उस दिन पर, है हाज़िर होना•

31. इसलिए कि उसने नाहीं अदा किया खैरात, नाहीं रावता नमाज़ें *(सलात)*•

32. लेकिन उसने कुफ्र किया और पलट गया•

33. उसके कुम्बे के साथ, वो पेश आया गुरूर से•

34. तुम मुस्तेहिक हुए हो इसके•

35. वाकई,तुम मुस्तेहिक हुए हो इसके•

36. क्या इंसान सोचता है कि वो जायेगा सिफर को?

37. क्या वो नहीं था एक बूंद निकले हुए मनी का?

38. फिर उन्होंने पैदा किया एक एमब्रियो उससे!

39. उन्होंने बनाया उसे मर्दाना या ज़नाना में!

40. क्या फिर वो नहीं हैं काबिल मुर्दे को दोबारा ज़िंदा करने के लिए?

****

सुरह 76: इंसान
(अल-इंसान)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. क्या वो एक हकीकत नहीं कि वहाँ था एक वक्त जब इंसान कुछ नहीं था बयान किये जाने के लिए?

2. हमने पैदा किया इंसान को एक सयाल मिलाव से, दो वालिदैनों से, ताके उसे आज़मायें• इस तरह, हमने बनाया उसे एक सुनने वाला और एक देखने वाला•

3. हमने दिखाया उसे दो रास्ते, फिर, वो है या तो कद्रदान, या नाकद्रदान•

4. हमने तैयार किया काफिरों के लिए ज़ज़ीरें, हथकड़ियाँ, और एक लहकती जहन्नम•

5. जहाँ तक नेक, वो पियेंगे प्यालों से साथ मसालेदार आबे हायात•

6. एक चश्मा जो मखसूस किया गया है **अल्लाह** के बंदों के लिए; वो फूंट निकलेगा जैसा वो चाहेंगे•

7. वो पूरा करते हैं उनके एहदों को, और एहतराम करते हैं एक दिन जो है बेहद मुश्किल•

8. वो देते हैं उनका पसंदीदा खाना गरीब, यतीम, और बंदी को•

9. "हम खिलाते हैं तुम्हें **अल्लाह** के वास्ते; हम उम्मीद नहीं रखते किसी इनाम का तुमसे, नाहीं शुक्र•

10. "हम डरते हैं हमारे रब से एक दिन जो है आफत और मुसीबत से भरा•"

11. इस वजह से, **अल्लाह** हिफाज़त करते हैं उनकी उस दिन कि बुराईयों से, और इनाम देते हैं उनको खुशी और सुकून के साथ•

12. वो इनाम देते हैं उनको उनकी साबित कदमी के लिए जन्नत के साथ, और रेशम•

13. वो आराम करते हैं उसमें आरामदेह बिछौनों पर• वो नाहीं झेलते हें सूरज कि गरमी, नाहीं कोई ठंड•

14. छांव छाता है उनको उसमें, और फलें लाये जाते हैं पहुँच के अंदर•

15. वो मुहय्या किये जाते हैं शरबतें चांदी के बरतनों और प्यालों में जो हैं झलकदार•

16. झलकदार प्याले, हाँलाकी बने चांदी के; वो सही तौर पर हकदार हुए इन सारों के•

17. वो मज़े लेते हैं ज़ायकेदार स्वादों के शरबतों का•

18. उसमें एक चश्मे से जाना जाता है “सलसाबील” जैसा•

19. खिदमत करते होंगे उनकी लाफानी खादिमें• जब तुम उनको देखोगे, वो दिखेंगे बिखरे हुए मोतियों कि तरह•

20. जहाँ भी तुम देखो, तुम देखोगे मुसर्रत, और एक हैरतअंगेज़ सलतनत•

21. उनपर होंगे हरे मखमल, साटिन के कपड़े, और चांदी के गहने• उनके रब मुहय्या करेंगे उनको खालिस शरबतों से•

22. यह है इनाम जो इंतेज़ार कर रहा है तुम्हारा, इसलिए कि तुम्हारी कोशिशो कि कद्र की गई है•

23. हमने नाज़िल किया है तुम्हारी तरफ यह कुरान; एक खास नुज़ूल हमारी तरफ से•

24. तुम्हें साबित कदमी से पूरा करना चाहिए तुम्हारे रब के हुक्मों को, और ऐतबा न करो उनमें से किसी गुनाहगार काफिर का•

25. और ज़िक्र करो तुम्हारे रब का नाम दिन और रात•

26. रात के दौरान, गिर जाओ सजदे में उनके आगे, और बड़ाई करो उनकी कई एक लम्बी रात•

27. ये लोग मसरूफ हैं इस फरार होती जिंदगी के साथ, जबकी नज़रअंदाज़ करते हुए—बस उनके आगे—एक वज़नी दिन•

28. हमने पैदा किया उनको, और कायम किया उनको, और जब भी हम चाहें, हम तबदील कर सकते हैं दूसरों को उनकी जगह में•

29. यह है एक ताकीद: जो कोई चाहता है चुनना उसके रब की तरफ का रास्ता•

30. जो कुछ तुम इरादा करो है **अल्लाह** के इरादे के मुताबिक में• **अल्लाह** हैं सब कुछ जानने वाले, हिकमत वाले•

31. वो दाखिल करते हैं जिसकिसी को वो चाहते हैं उनकी रहमत में• जहाँ तक खतावारों के लिए, उन्होंने तैयार किया है उनके लिए एक दर्दनाक आज़ाब•

****

सुरह 77: रवाना किये गये (अल-मुरसलात)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. *(फरिश्ते)* रवाना किये गये लगातार•

2. हवा चलाने के लिए•

3. बादलों को हिलाने•

4. नियामतों को तकसीम करने•

5. पैगामों को पहुँचाने•

6. अच्छी खबरें, साथ साथ ताकीदों के•

7. जो वादा किया गया है गुज़र जायेगा•

8. इस तरह, जब सितारे बुझा दिये जायेंगे•

9. आसमान खोल दिया जायेगा•

10. पहाड़े उड़ा दिये जायेंगे•

11. रसूलें हाज़िर किये जायेंगे•

12. वो है मुकर्रर किया गया दिन•

13. फैसले का दिन•

14. क्या एक फैसले का दिन!

15. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

16. क्या हमने फनाह नहीं किया पिछली नस्लों को?

17. फिर हमने दूसरों को उनके पीछे चलने दिया?

18. यह है जो हम करते हैं मुजरिमों के लिए•

19. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

20. क्या हमने पैदा नहीं किया तुम्हें एक निचले सयाल से?*

21. फिर हमने रखा उसे एक अच्छे से हिफाज़त किये गये ताबूत में•

22. एक खास मुद्दत के लिए•

23. हमने नापा उसे दुरूस्ती से•* हम हैं अच्छे नक्शकारें•

24. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

25. क्या हमने नहीं बनाया ज़मीन को एक ठिकाना?

26. ज़िंदा और मुर्दा के लिए?

27. हमने रखा उस पर ऊंचे पहाड़ें, और मुहय्या किया तुम्हें पीने के लिए ताज़े पानी से•

28. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

29. जाओ उसकी तरफ जिसमें तुम कुफ्र किया करते थे•

30. जाओ तीन मुख्तलिफ शिद्दतों कि एक छाव कि तरफ•

31. इसके बावजूद, वो मुहय्या करता है नाहीं ठंडक, नाहीं हिफाज़त गरमी से•

32. वो फेंकता है चिंगारियाँ इतना बड़ा जैसे महलें•

33. इतना पीला जैसे ऊंठों का रंग•

34. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

35. वो हैं दिन वो नहीं करते बात•

36. नाहीं उनको इजाज़त दी जाती है माफी मांगने के लिए•

37. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

38. यह है दिन फैसले का• हमने हाज़िर किया है तुम्हें और पिछली नस्लों को•

**74:20-23 लैंगमेन मेडिकल एमब्रियोलॉजी के मुताबिक, टी• डब्लु• सैडलर कि तरफ से (पाँचवी छपाई, पेज 88): "आम तौर पर हमल कि मुद्दत जनीन के एक पूरे अरसे के लिए है 266 दिनें या 38 हफ्ते रहने के बाद•" दोनो 266और 38 है 19 के ज़रपें (अपेन्डिक्स 1)•*

39. अगर तुम्हारे पास है कोई साज़िशें, बढ़ो आगे और बनाओ साज़िश•

40. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

41. नेककार मज़े लेंगे छाव और चश्मों के•

42. और फलें जिनकी वो तमन्ना करते हैं•

43. खाओ और पियो खुशी से बदले में तुम्हारे कामों के लिए•

44. हम इस तरह इनाम देते हैं नेककार को•

45. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

46. खाओ और मज़े लो आरज़ीतौर पर; तुम हो मुजरिम•

47. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

48. जब उनसे कहा जाता है, "झुको नीचे," वो नीचे नहीं झुकते•

49. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•

50. कौनसी *हदीस*, इसके वजाये, वो बरकरार रखते हैं?

****

सुरह 78: हादसा
(अल-नबा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. क्या सवाल कर रहे हैं वो?

2. बड़ा हादसा•

3. जो वहेस किया जाता है उनकी तरफ से•

4. वाकई, वो पता लगा लेंगे•

5. बिला शक, वो पता लगा लेंगे•

6. क्या हमने नहीं बनाया ज़मीन को रहने के काविल?

7. और पहाड़ों को तवाजुनें?

8. हमने पैदा किया तुम्हें हमनवाओं जैसा *(एक दूसरे के लिए)*•

9. हमने पैदा किया नींद ताके तुम आराम कर सको•

10. हमने बनाया रात को एक गिलाफ•

11. और दिन नियामतों को तलाश करने के लिए•

12. हमने तामीर किया तुम्हारे ऊपर सात कायनातें•

13. हमने पैदा किया एक रौशन चिराग•

14. हम भेजते हैं नीचे बादलों से बहता हुआ पानी•

15. उस से पैदा करने के लिए दाने और पौधे•

16. और मुख्तलिफ बगीचे•

17. फैसले का दिन है मुकर्रर•

18. दिन जब सुर फूंका जायेगा, और तुम आओगे हुजूमों में•

19. आसमान खोला जायेगा फाटकों कि तरह•

20. पहाड़े निकाल दिये जायेंगे, जैसे वो थे एक धोखा•

21. जहन्नम है अटल•

22. खतावारों के लिए; वो होगा उनका ठिकाना•

23. वो रहते हैं उसमें ज़मानों के लिए•

24. वो कभी नहीं चखते उसमें ठंडक, नाहीं एक शरबत•

25. सिर्फ एक भट्टी और कड़वा खाना•

26. एक बराबर बदला•

27. उन्होंने कभी उम्मीद नहीं किया ज़िम्मेदार ठहराये जाने के लिए•

28. और बिल्कुल ठुकराया हमारी निशानियाँ•

29. हमने गिना सारी चीज़ को एक दफ्तर में•

30. झेलो नतीजे; हम सिर्फ बढ़ायेंगे तुम्हारा आज़ाब•

31. नेककार हकदार हुए हैं एक इनाम के•

32. बागीचे और अंगूरें•

33. शानदार जोड़े•

34. ज़ायकेदार शरबतें•

35. वो कभी नहीं सुनेंगे उसमें कोई बकवास या झूठें•

36. एक इनाम तुम्हारे रब कि तरफ से; एक फरागदिल बदला•

37. रब आसमानों और ज़मीन के, और सारी चीज़ें उनके दरमियान• सबसे रहमवाले• कोई भी मनसूख नहीं कर सकता उनके फैसले•

38. दिन आयेगा जब रूह और फरिश्ते खड़े होंगे एक सफ में• कोई भी बात नहीं करेंगा सिवाए जो इजाज़त दिये गये सबसे महेरबान कि तरफ से, और वो कहेंगे सिर्फ जो है सही•

39. ऐसा है अटल दिन• जो कोई चाहता है उसे पनाह लेने दो उसके रब में•

40. हमने काफी तौर पर खबरदार किया हैं तुम्हें एक अंकरीब आज़ाब के बारे में• वो है दिन जब हर एक जांचेगा जो उसके हाथों ने भेजा है आगे, और काफिरें कहेंगे, "ओह, काश मैं होता धूल•"

****

सुरह 79: छीनने वाले (अल-नाज़ियात)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरवान, सबसे रहम वाले

1. *(फरिश्ते जो)* छीनते हैं *(रूहें काफिरों की)* ज़बरदस्ती से•

2. और वो जो नर्मी से लेते हैं *(रूहें ईमानवालों की)* खुशी से•

3. और जो तैर रहे हैं हर जगह•

4. शौक से दौड़ रहे हैं एक दूसरे के साथ—

5. पूरा करने के लिए मुख्तलिफ हुक्मों को•

6. दिन जब ज़लज़ला लरज़ेगा•

7. पीछा किया गया दूसरे वार से•

8. कुछ ज़हने दहशतज़दा होंगे•

9. उनकी आँखें होंगी ज़ेर की गई•

10. वो कहेंगे, “हम दोबारा पैदा किये गये कब्र से!

11. “यह कैसे हुआ इसके बाद कि हम बदल गये सड़ी हुई हड्डीयों में?”

12. उन्होंने कहा था, “यह है एक नामुमकिन दोहराव•”

13. उसे लगता है सिर्फ एक ठोक•

14. जिसपर वो उठ खड़े होते हैं•

15. क्या तुमने जाना है मुसा की तारीख के बारे में?

16. उसके रब ने पुकारा उसे तुवा की मुकद्दस वादी के पास•

17. “जाओ फिरऔन कि तरफ; उसने किया है खता•”

18. कहो उसे, “क्या तुम इस्लाह नहीं करोगे?

19. “मुझे हिदायत करने दो तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ, ताके तुम बन जाओ एहतराम करने वाले•”

20. उसने फिर दिखाया उसे बड़ा मौजेज़ा•

21. लेकिन उसने कुफ्र किया और बगावत किया•

22. फिर वो पलट गया जल्दी में•

23. उसने हाज़िर किया और ऐलान किया•

24. उसने कहा, “मैं हूँ तुम्हारा रब; सबसे ऊंचा•”

25. इस वजह से, **अल्लाह** ने हवाले किया उसे आज़ाब कि तरफ अगली ज़िंदगी में, इसके साथ साथ पहली ज़िंदगी में•

26. यह है एक सबक एहतराम करने वाले के लिए•

27. क्या तुम ज़्यादा मुश्किल हो पैदा करने के लिए आसमान से? उन्होंने तामीर किया उसे•

28. उन्होंने उठाया उसके अंबारों को, और पूरा किया उसे•

29. उन्होंने बनाया उसकी रात अंधेरी, और रौशन किया उसकी सुवह•

30. उन्होंने बनाया ज़मीन अंडे की शक्ल में•*

31. उस से, उन्होंने पैदा किया उसका खुदका पानी और चारागाह•

32. उन्होंने कायम किया पहाड़ों को•

33. यह सब तुम्हें और तुम्हारे जानवरों को मुहय्या करने के लिए ज़िंदगी का सहारा•

34. फिर, जब बड़ी मार आयेगी•

35. वो हैं दिन जब इंसान को याद आयेगा सारी चीज़ उसने किया•

36. जहन्नम वजूद में लाई जायेगी•

37. जहाँ तक वो जिन्होंने खता किया•

38. जो था मसरूफ इस ज़िंदगी के साथ•

39. जहन्नम होगा ठिकाना•

40. जहाँ तक वो जिन्होंने एहतराम किया उसके रब कि अज़मत का, और ताकीद किया खुदको गुनाहगारी वाले हवसों से•

41. जन्नत होगा ठिकाना•

42. वो पूछते हैं तुमसे वक्त के बारे में, और वो कब होगा!

43. यह तुम नहीं *(मुहम्मद)* जो मुकर्रर किये गये उसके वक्त को ऐलान करने के लिए•

44. तुम्हारे रब फैसला करते हैं उसकी तकदीर•

45. तुम्हारा मकसद है खबरदार करना उन्हें जो उसकी उम्मीद करते हैं•

46. दिन जब वो देंखेंगे उसे, वो महसूस करेंगे ऐसे जैसे वो रहे एक शाम या एक दिन का आधा•

****

सुरह 80: उसने घुड़का
(अबसा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. वो *(मुहम्मद)* घुड़का और पलट गया•

2. जब अंधा आदमी आया उसकी तरफ•

3. तुम कैसे जानते हो? हो सकता है वो पाक करे अपने आप को•

4. या हो सकता है वो तवज्जो ले, और फायदा ले पैगाम से•

5. जहाँ तक अमीर आदमी के लिए•

6. तुमने दिया उसे तुम्हारा ध्यान•

7. इसके बावजूद कि तुम ज़मानत नहीं दे सकते उसकी निजात का•

8. एक जो आया तुम्हारी तरफ शौकी से•

9. और है असलमें एहतराम करने वाला•

10. तुमने उसे नज़रअंदाज़ किया•

11. वाकई, यह है एक ताकीद•

12. जो कोई चाहता है तवज्जो ले•

13. इज़्जतवाली आसमानी किताबों में•

14. बुलंद किये गये और खालिस•

15. *(लिखे गये)* रसूलों के हाथों से•

16. जो हैं बाइज़्जत और नेक•

17. हाय हो इंसान के लिए; वो है कितना नाकद्रदान!

18. उन्होंने उसे किस से पैदा किया?

19. एक छोटी बूंद से, वो पैदा करते हैं उसे और नक्शकारी करते हैं उसकी•

20. फिर वो बताते हैं रास्ता उसके लिए•

21. फिर वो डालते हैं उसे मौत को, और कब्र के अंदर•

22. जब वो चाहते हैं, वो उसे दोबारा ज़िंदा करते हैं•

23. उसे उनके हुक्मों को बरकरार रखना चाहिए•

24. इंसान को गौर करने दो उसका खाना!

**79:30 अरबी लफ्ज़ "दहहाहा" लिया गया है "दाहयाह" से जिसके मायने है "अंडा•"*

25. हम उंडेलते हैं पानी फरागदिली से•

26. फिर हम अलग करते हैं मिट्टी को खुला•

27. हम उगाते हैं उस में दानें•

28. अंगूरें और चारा•

29. ज़ैतूनें और नख्लें•

30. एक किस्म बगीचों की•

31. फलें और सब्ज़ियाँ•

32. मुहय्या करने के लिए तुम्हें और तुम्हारे जानवरो को ज़िंदगी का सहारा•

33. फिर, जब मार गुज़र जायेगी•

34. वो हैं दिन जब एक फरार होता है उसके भाई से•

35. उसके माँ और बाप से•

36. उसके जोड़े और बच्चों से•

37. हर एक उनमें से, उस दिन पर, फिक्र करता है उसके खुदके तकदीर के बारे में•

38. कुछ चेहरे उस दिन पर होंगे खुश•

39. हंसते हुए और मुसर्रत भरे•

40. दूसरे चेहरे, उस दिन पर, ढके होंगे मुसीबत से•

41. मजबूर किये गये नदामत से•

42. ये हैं बदकार काफिरें•

****

सुरह 81: लिपटना (अल-तकवीर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. जब सूरज लिपटा जाता है•

2. सितारें टकरा दिये जाते हैं एक दूसरे में•

3. पहाड़ें मिटा दिये जाते हैं•

4. पैदाईश थामी जाती है•

5. ज़िंदा चीज़ें हाज़िर किये जाते हैं•

6. समंदरें दहकाये जाते हैं•

7. रूहें लौटाये जाते हैं उनके जिस्मों को•

8. लड़की जो ज़िंदा दफन की गई थी पूछी जाती है:

9. किस जुर्म के लिए वो कत्ल की गई थी?

10. दफ्तरें फाश किये जाते हैं•

11. आसमान निकाला जाता है•

12. जहन्नम सुलगाई जाती है•

13. जन्नत पेश की जाती है•

14. हर रूह जानेगी सारी चीज़ वो लाई•

अल्लाह के वादे का रसूल

15. मैं संजीदगी से कसम खाता हूँ कहकशाओं की•

16. दुरूस्ती से दौड़ रहे उनके दायरों में•

17. रात कि कसम जैसे वो गिरती है•

18. और सुबह जैसे वो सांसे लेती है•

19. यह है बयान एक बाइज़्जत रसूल का•*

20. इजाज़त दिये गये तख्त के रखने वाले कि तरफ से, पूरी तरह मदद किये गये•

21. उसकी अताअत और भरोसा किया जाना चाहिए•

22. तुम्हारा दोस्त *(रशाद)* नहीं है दिवाना•

23. उन्होंने देखा उसे ऊंची उफाक के पास•*

24. वो नहीं छिपा रहा है किसी खबरों को•

25. वो नहीं है बात एक ठुकराये गये शैतान की•

26. अब फिर, तुम कहाँ जाओगे?

27. यह है एक पैगाम सारे लोगों के लिए•

**81:19 जोड़ते हुए सुरह का नंबर साथ आयत का नंबर साथ जिमेटरिकल वेल्यू नाम "रशाद" के (505), साथ वेल्यू "खलीफा" के (725), हम पाते हैं 1330, 19x70• यह मुहय्या करता है कुरानी रियाज़ी सबूत कि यह रसूल है रशाद खलीफा•*

**81:23 रशाद खलीफा हाज़िर किये गये थे ऊंचे उफाक को जैसा तफसील किया गया है अपेन्डिक्स 2 में•*

28. उनके लिए जो सीधा जाना चाहते हैं•

29. जो कुछ तुम चाहो है **अल्लाह** कि मर्ज़ी के मुताबिक में, कायनात के रब•

****

सुरह 82: चकनाचूर होना (अल-इंफितार)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. जब आसमान चकनाचूर किया जाता है•

2. नजमें बिखेर दिये जाते हैं•

3. समंदरें फोड़ दिये जाते हैं•

4. कब्रें खोले जाते हैं•

5. हर रूह पता लगा लेगी क्या सबब बना उसके आगे बढ़ने का, और क्या सबब बना उसे पलटने का•

गौर करो अल्लाह
की खिलकतों पर

6. ऐ इंसान, किसने फेरा तुम्हें तुम्हारे रब कि तरफ से, सबसे बाइज़्जत?

7. वाहिद जिन्होंने तुम्हें पैदा किया, तुम्हारी नक्शकारी की, और मुकम्मल किया तुम्हें•

8. जिसकिसी नक्श में उन्होंने चुना, उन्होंने तामीर किया उसे•

9. वाकई, तुम कुफ्र करते हो मज़हब में•

10. गफिल हकीकत से की वहाँ हैं *(गायब)* निगहबाने तुम्हारे आस पास•

11. वो हैं ईमानदार दर्ज करने वाले•

12. वो दर्ज करते हैं सारी चीज़ तुम करते हो•

13. यकीनन, मुत्तकी हकदार हुआ है मुसर्रत का•

14. जबकी बदकार हकदार हुआ है जहन्नम का•

15. हासिल करेगा उसे इंसाफ के दिन पर•

16. वो कभी नहीं छोड़ते उसे•

17. ज़बरदस्त है इंसाफ का दिन•

18. क्या एक दिन: इंसाफ का दिन!

19. वो है दिन जब कोई रूह मदद नहीं कर सकेगी दूसरी रूह की, और सारे फैसले, उस दिन पर, होंगे अल्लाह के•

****

सुरह 83: धोखा देने वाले
(अल-मुतफ्फिफीन)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हाय हो धोखा देने वालों के लिए•
2. जो तकाज़ा करते हैं पूरा नाप जब पाते है लोगों से•
3. लेकिन जब देते हुए उनको नापें या वज़ने, वो धोखा देते हैं•
4. क्या वो नहीं जानते कि वो दोबारा ज़िंदा किये जायेंगे?
5. एक हैबतनाक दिन पर?
6. वो है दिन जब सारे लोग खड़ें होंगे कायनात के रब के सामने•
7. वाकई, किताब बदकार की है *सिज्जीन* में•
8. क्या तुम जानते हो क्या है *सिज्जीन?*
9. एक रियाज़ी तौर पर बनाई गई किताब•
10. हाय हो उस दिन पर ठुकराने वालों के लिए•
11. वो ईमान नहीं रखते इंसाफ के दिन में•
12. कोई भी कुफ्र नहीं करता उसमें सिवाए खतावार, गुनाहगार के•
13. जब हमारी आयतें पढ़ी जाती है उसके लिए, वो कहता है, “कहानियाँ माज़ी से!”
14. वाकई, उनके दिलें रोके गये हैं उनके गुनाहों से•
15. वाकई, वो अलग किये जायेंगे, उस दिन पर, उनके रब से•

16. फिर वो फेंके जायेंगे जहन्नम में•
17. उनसे कहा जायेगा, “यह है जिसे तुम इंकार किया करते थे•”
18. वाकई, नेककारों कि किताब होगी *इल्लीईन* में•
19. क्या तुम जानते हो क्या है *इल्लीईन?*
20. एक रियाज़ी तौर पर बनाई गई किताब•
21. देखे जाने के लिए उनकी तरफ से जो मेरे करीब•
22. नेककारें हकदार हुए हैं मुसर्रत के•
23. आरामदेह बिछौनों पर वो देखते हैं•
24. तुम पहचानोगे उनके चेहरों में खुशी की मुसर्रत•
25. उनके शरबतें होंगे मसालेदार आबे हयात•
26. उसका मसाला जैसे मश्क• यह है जिसके लिए मुकाबला करने वालों को मुकाबला करना चाहिए•
27. मिलाये गये होंगे उसमें खास ज़ायके•
28. एक चश्में से जो मखसूस किया उनके लिए जो मेरे करीब•
29. बदकार हंसा करते थे उनपर जिन्होंने ईमान रखा•
30. जब वो गुज़रते उनके पास से, वो मज़ाक उड़ाया करते•
31. जब वो जमा होते इकट्ठा उनके लोगों के साथ, वो मज़ाक किया करते थे•
32. जब भी उन्होंने देखा उनको, उन्होंने कहा, “ये लोग हैं बहुत दूर बहके हुए!
33. “उनके पास नहीं ऐसी चीज़ जैसे *(गायब)* निगहबानें•”
34. आज, वो जिन्होंने ईमान रखा हंस रहे हैं काफिरों पर•
35. आरामदेह बिछौनों पर वो देखते हैं•
36. बिला शक, काफिरें बदला दिये जाते हैं उसके लिए जो उन्होंने किया•

****

सुरह 84: फटना
(अल-इंशिकाक)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. वक्त आयेगा जब आसमान फट जायेगा•
2. वो हवाले करेगा उसके रब को और खत्म हो जायेगा•
3. ज़मीन सपाट कर दी जायेगी•
4. वो निकालेगी उसके बातिनें, जैसे वो फटती है•

5. वो हवाले करेगी उसके रब को और खत्म हो जायेगी•

6. ऐ इंसानों, तुम अटल तौर पर बढ़ रहे हो एक मुलाकात के लिए तुम्हारे रब के साथ•

7. जहाँ तक वो जो पाता है उसका दफ्तर उसके दाहिने हाथ में,

8. उसका हिसाब होगा आसान•

9. वो लौटेगा उसके लोगों कि तरफ खुशी से•

10. जहाँ तक वो जो पायेगा उसका दफ्तर उसके पीठ के पीछे,

11. वो लदा होगा नदामत से•

12. और जलेगा जहन्नम में•

13. वो तकब्बुर से पेश आया करता उसके लोगों के बीच•

14. उसने सोचा कि वो कभी हिसाब के लिए नहीं बुलाया जायेगा•

15. हाँ वाकई, उसके रब थे देखने वाले उसके•

16. मैं संजीदगी से कसम खाता हूँ गुलाबी शाम की•

17. और रात जैसे वो फैलती है•

18. और चाँद और उसकी सूरतें•

19. तुम बढ़ोगे मरहले से मरहले कि तरफ•

20. वो क्या ईमान नहीं रखते?

21. और जब कुरान पढ़ी जाती है उनके लिए, वो सजदा नहीं करते•

22. यह इसलिए कि वो जो कुफ्र करते हैं ठुकरा रहे हैं *(कुरान)*•

23. **अल्लाह** हैं पूरी तरह वाकिफ उनके सबसे अंदरूनी ख्यालों से•

24. वादा करो उनको दर्दनाक आज़ाब•

25. जहाँ तक वो जिन्होंने ईमान रखा और एक नेक ज़िंदगी बसर किया, वो पाते हैं एक बदला जो है अच्छे से लायक•

****

सुरह 85: कहकशायें
(अल-बुरूज)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. आसमान और उसकी कहकशायें•

2. वादा किया गया दिन•

3. गवाह और देखे गये•

4. हाय हो दर्री के लोगों के लिए•

5. उन्होंने सुलगाया एक दहकती आग•

6. फिर बैठे उसके इर्द गिर्द•

7. ईमान वालों को जलता देखने के लिए•

8. उन्होंने नफरत किया उनसे किसी दूसरी वजह के लिए नहीं सिवाए ईमान रखना **अल्लाह**, सारी ताकत वाले, काबिले तारीफ में•

9. उनकी है बादशाहत आसमानों और ज़मीन की• और **अल्लाह** गवाह होते हैं सारी चीज़ों के•

10. यकीनन, जो कोई ऐज़ा देते हैं ईमान वाले मर्दो और औरतों को, फिर नाकामयाब होते हैं तौबा करने के लिए, हासिल किया है जहन्नम का आज़ाब; उन्होंने हासिल किया है आज़ाब जलने का•

11. यकीनन, वो जिन्होंने ईमान रखा और एक नेक ज़िंदगी बसर किया, मुस्तेहिक हुए हैं बहती हुई नहरों के साथ बागों के• यह है सबसे बड़ी फतेह•

12. वाकई, तुम्हारे रब का वार है सख्त•

13. वो हैं वाहिद जो शुरू करते हैं और दोहराते हैं•

14. और वो हैं माफ करने वाले, सबसे नर्म•

15. रखने वाले शानदार तख्त के•

16. करने वाले जो कुछ वो चाहते हैं•

17. क्या तुमने ध्यान दिया है टोलियों की तारीख?

18. फिरऔन और तमूद?

19. जो कोई करते हैं कुफ्र भरे हैं इंकार से॰

20. अल्लाह पूरी तरह वाकिफ हैं उनसे॰

21. वाकई, यह है एक शानदार कुरान॰

22. एक महफूज़ रखे गये असल तख्ती में॰

****

सुरह 86: चमकता सितारा (अल-तारिक)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कसम आसमान और अल-तारिक॰

2. क्या तुम जानते हो क्या है अल-तारिक?

3. चमकता सितारा॰

4. बेशक, हर एक है अच्छे से हिफाज़त किया गया॰

5. इंसान को गौर करने दो उसकी खिलकत पर॰

6. वो पैदा किया गया था निकले सयाल से॰

7. रीढ़ और आंत के बीच से॰

8. वो यकीनन काबिल हैं उसको दोबारा ज़िंदा करने के लिए॰

9. दिन सारे राज़ें फाश हो जाते हैं॰

10. उसके पास कोई ताकत नहीं रहेगी, नाहीं एक मदद करने वाला॰

11. आसमान कि कसम जो लौटाता है *(पानी)*॰

12. ज़मीन कि कसम जो फटता है *(पौधों को उगाने के लिए)*॰

13. यह है एक संजीदा बयान॰

14. हल्का लिये जाने के लिए नहीं॰

15. वो मनसूबा और साज़िश बनाते हैं॰

16. लेकिन उसी तरह मैं भी॰

17. बस मोहलत दो काफिरों को एक छोटी मोहलत॰

****

सुरह 87: सबसे ऊँचे (अल-आला)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. तुम्हारे रब के नाम की बड़ाई करो, सबसे ऊँचे॰

2. वो पैदा करते हैं और शक्ल देते हैं॰

3. वो नक्शकारी करते हैं और हिदायत करते हैं॰

4. वो पैदा करते हैं चारा॰

5. फिर बदल देते हैं उसे हल्की सूखी घांस में॰

6. हम पढ़कर सुनायेंगे तुमको; न भूलना॰

7. सारी चीज़ है **अल्लाह** की मर्ज़ी के मुताबिक में; वो जानते हैं क्या है ऐलानिया, और क्या है खुफिया॰

8. हम हिदायत करेंगे तुम्हें सबसे आसान रास्ते कि तरफ॰

9. इसलिए, तुम्हें याद दिलाना चाहिए; शायद याद दिलाना फायदा दे॰

10. एहतराम करने वाले तवज्जो लेंगे॰

11. बदकार नज़रअंदाज़ करेंगे उसे॰

12. इस वजह से, वो झेलेगा बड़ी जहन्नमी आग॰

13. जिसमें वो कभी नहीं मरता, नाहीं ज़िंदा रहता है॰

14. कामयाब हैं वाकई वो जो मगफरत कराता है उसकी रूह को॰

15. याद करते हुए उसके रब का नाम, और अदा करते हुए रावता नमाज़ें *(सलात)*॰

16. वाकई, तुम मसरूफ हो इस पहली ज़िंदगी के साथ॰

17. इसके बावजूद की अगली ज़िंदगी है कहीं बेहतर और दाईम॰

18. यह दर्ज किया गया है पिछली तालीमों में•

19. तालीमें इब्राहीम और मूसा की•

****

सुरह 88: मजबूर करने वाला (अल-गाशियाह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. क्या तुम वाकिफ हो मजबूर करने वाले से?

2. चेहरे उस दिन पर होंगे शर्मसार•

3. मशक्कत करते हुए और थके हुए•

4. झेलते हुए एक दहकती जहन्नमी आग में•

5. पीते हुए एक जलते हुए झरने से•

6. उनके पास नहीं होगा कोई खाना सिवाए बेकार किस्म का•

7. वो कभी नहीं देता गिज़ा, नाहीं मिटाता है भूख•

8. दूसरे चेहरे उस दिन पर होंगे खुशी से भरे•

9. मुतमईन उनके काम से•

10. एक बुलंद जन्नत में•

11. उसमें, कोई बकवास नहीं सुनी जाती है•

12. उसमें, एक नहर बहती हुई•

13. उसमें, वहाँ हैं आरामदेह बिछौने•

14. और शरबतें दस्तयाब किये गये•

15. और घड़े कतारो में•

16. और फर्शें सब जगह•

17. क्यों वो ऊंठों पर ध्यान नहीं देते हैं और कैसे वो बनाये गये हैं?

18. और आसमान और कैसे वो उठाया गया है•

19. और पहाड़े और कैसे वो तामीर किये गये हैं•

20. और ज़मीन और कैसे वो बनाई गई है•

21. तुम्हें याद दिलाना चाहिए, इसलिए कि तुम्हारा मकसद है इस याद दिलाने वाले को पहुँचाना•

22. तुम्हारे पास कोई ताकत नहीं उनपर•

23. जहाँ तक वो जो पलट जाते हैं और कुफ्र करते हैं•

24. **अल्लाह** हवाले करेंगे उनको बड़े आज़ाब कि तरफ•

25. हमारी तरफ है उनका आखरी मुकद्दर•

26. फिर हम पुकारेंगे उनको हिसाब के लिए•

****

सुरह 89: सवेरा (अल-फजर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. सवेरे कि कसम•

2. और दस रातें•*

3. कसम *इवेन* और *ऑड* की•*

4. रात कि कसम जैसे वो गुज़रती है•

5. एक गहरी कसम, उसके लिए जो अक्ल रखता है•

6. क्या तुमने ध्यान दिया है क्या तुम्हारे रब ने किया आद को?

7. इरम; शहर ऊँची इमारतों के साथ•

8. वहाँ कुछ नहीं था कहीं भी उसकी तरह•

9. इसके अलावा तमूद, जिन्होंने चट्टानों को तराशा उनकी वादी में•

10. और फिरऔन जिसने रखा ताकत•

11. उन सारों ने खता किया ज़मीन में•

12. उन्होंने फैलाया बुराई हर जगह•

13. इस वजह से, तुम्हारे रब ने उंडेला उनपर एक कोड़ा मारता हुआ आज़ाब•

14. तुम्हारे रब हैं हमेशा निगेहवान•

15. जब इंसान आज़माया जाता है उसके रब कि तरफ से, रहमतों और खुशी के ज़रिये, वो कहता है, मेरे रब हैं फरागदिल मेरी तरफ•"

16. लेकिन अगर वो आज़माते हैं उसे नियामतों के कम होने के ज़रिये, वो कहता है, "मेरे रब रूसवा कर रहे हैं मुझे!"

17. गलत! ये तुम हो जो लाये उसे अपने आप पर यतीम को न ध्यान देने कि वजह से•

18. और नहीं करते हुए वकालत खैरात गरीब कि तरफ•

19. और हड़पते हुए बेबस यतीमों कि विरासत•

20. और चाहते हुए बहुत ज़्यादा पैसा•

21. वाकई, जब ज़मीन कूटी जाती है, पूरी तरह कूटी जाती है•

*89:2 आखरी दस राते रमज़ान की, जिसमें कई ईमानवाले पलटते हैं मस्जिदों कि तरफ (2:187)•

*89:3 देखें अपेन्डिक्स 1 इवेन नंबरों और ऑड नंबरों के किरदार के लिए•

22. और तुम्हारे रब आयेंगे, इकठ्ठा फरिश्तों के साथ सफ बाद सफ में•

23. उस दिन पर, जहन्नम आगे लाई जायेगी• उस दिन पर, इंसान को याद आयेगा—लेकिन क्या एक याद—बहुत देर हो चुकी होगी•

24. वो कहेगा, "ओह, काश मैंने तैयारी की होती मेरी *(दाईम)* ज़िंदगी के लिए•"

25. उस दिन पर, कोई आज़ाब बुरा नहीं हो सकता उनके आज़ाब से•

26. और कोई कैद उतनी असरदार नहीं है जितनी उनकी कैद•

27. जहाँ तक तू, ऐ खुश रूह•

28. लौट तेरे रब कि तरफ, राज़ी और रज़ा करने वाला•

29. खुशामदीद मेरे बंदों में•

30. खुशामदीद मेरी जन्नत में•

****

सुरह 90: शहर
(अल-बलद)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. मैं संजीदगी से इस शहर कि कसम खाता हूँ•

2. जिस शहर में तुम रहते हो•

3. जनने वाला और जना हुआ•

4. हमने पैदा किया इंसान को मेहनत करने के लिए *(खुदकी मगफरत के लिए)*• *

5. क्या वो सोचता है कि कोई भी नहीं पुकरेगा उसे कभी हिसाब के लिए?

6. वो शेखी करता है, "मैं इतना ज़्यादा पैसा खर्च करता हूँ!"

7. क्या वो सोचता है कि कोई नहीं देखता उसे?

8. क्या हमने नहीं दिया उसे दो आँखे•

9. एक ज़बान और दो होंठें?

10. क्या हमने नहीं दिखाया उसे दो राहें?

11. उसे चुनना चाहिए मुश्किल राह•

12. कौनसी है मुश्किल राह?

13. आज़ाद करना गुलामों को•

14. खिलाना, तंगी के वक्त के दौरान•

15. यतीमें जो हैं रिश्तेदार•

16. या गरीब जो है ज़रूरतमंद•

17. और होते हुए उनमें से एक वो ईमान रखते हैं, और नसीहत करते हुए एक दूसरे को सावित कदम होने के लिए, और नसीहत करते हुए एक दूसरे को नर्म होने के लिए•

18. ये हकदार हुए हैं ख़ुशी के•

19. जहाँ तक वो जो कुफ़्र करते हैं हमारी वहियों में, उन्होंने हासिल किया है मुसीबत•

20. वो कैद किये जायेंगे जहन्नमी आग में•

****

सुरह 91: सूरज
(अल-शम्स)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कसम सूरज और उसकी रौशनी की•

2. चाँद जो उसके पीछे चलता है•

3. दिन जो ज़ाहिर करता है•

4. रात जो ढांकता है•

5. आसमान और वो जिन्होंने उसे बनाया•

6. ज़मीन और वो जो उसे संभालते हैं•

7. रूह और वो जिन्होंने उसे पैदा किया•

8. फिर दिखाया उसे क्या है बुरा और क्या है अच्छा•

**90:4 हमारी पैदाईश के पीछे मकसद के लिए देखें तार्रुफ और अपेन्डिक्स 7•*

9. कामयाब है वो जो उसकी मगफरत कराता है•

10. नाकामयाब है वो जो नज़रअंदाज़ करे उसे•

11. तमूद का कुफ़्र सबब बना उनके खता करने का•

12. उन्होंने पैरवी की उनमें से सबसे बुरे की•

13. **अल्लाह** के रसूल ने उनसे कहा, यह है **अल्लाह** कि ऊंठनी; उसे पीने दो•"

14. उन्होंने उसको नहीं माना और ज़बा कर दिया उसे• उनके रब ने बदला चुकाया उनको उनके गुनाह के लिए और फनाह कर दिया उनको•

15. इसके बावजूद, वो जो आये उनके बाद रहे बेपरवाह•

****

सुरह 92: रात
(अल-लैल)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कसम रात की जैसे वो ढाकती है•

2. दिन जो ज़ाहिर करता है•

3. और वो जिन्होंने पैदा किया मर्द और औरत•

4. तुम्हारे आमालें हैं मुख्तलिफ किस्मों के•

5. जहाँ तक वो जो देते हैं खैरात और नेककारी बरकरार रखते हैं•

6. और बरकरार रखते हैं आसमानी किताब•

7. हम हिदायत करेंगे उसकी ख़ुशी कि तरफ•

8. लेकिन वो जो हैं कंजूस, हालांकी वो है अमीर•

9. और कुफ़्र करता है आसमानी किताब में•

10. हम हिदायत करेंगे उसकी मुसीबत कि तरफ•

11. उसका पैसा कभी मदद नहीं कर सकता उसकी जब वो गिरता है•

12. हम मुहय्या करते हैं हिदायत•

13. हम काबू करते हैं अगली ज़िंदगी, साथ साथ यह ज़िंदगी•

14. मैंने खबरदार किया है तुम्हें दहेकती हुई जहन्नमी आग के बारे में•

15. कोई नहीं जलता उसमें सिवाए बदकार के•

16. जो कुफ़्र करता है और पलट जाता है•

17. उससे बचने वाले होंगे नेककार•

18. वो देता है उसके पैसे खैरात के लिए•

19. तलाश करते हुए कुछ नहीं बदले में•

20. तलाश करते हुए सिर्फ उसका रब, सबसे ऊंचे•

21. वो यकीनन हासिल करेगा निजात•

****

सुरह 93: दोपहर से पहले
(अल-दुहा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कसम दोपहर से पहले की•
2. कसम रात की जैसे वो पड़ती है•
3. तुम्हारे रब ने कभी छोड़ा नहीं तुम्हें, नाहीं वो भूले•
4. अगली ज़िंदगी है कहीं बेहतर तुम्हारे लिए इस पहली *(ज़िंदगी)* से•
5. और तुम्हारे रब देंगे तुम्हें काफी; तुम होगे खुश•
6. क्या उन्होंने नहीं पाया तुम्हें यतीम, और उन्होंने दिया तुम्हें एक घर?
7. उन्होंने पाया तुम्हें गुमराह, और हिदायत की तुम्हारी•
8. उन्होंने पाया तुम्हें गरीब और बनाया तुम्हें अमीर•

9. इसलिए, तुम्हें यतीम को तर्क नहीं करना चाहिए•
10. नाहीं तुम्हें भिखारी को धुतकारना चाहिए•
11. तुम्हें ऐलान करना चाहिए तुम पर इनायत की गई तुम्हारे रब कि रहमत को•

****

सुरह 94: गुस्सा ठंडा करना (अल-शर्र)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. क्या हमने तुम्हारे गुस्से को ठंडा नहीं किया?
2. और हमने हल्का किया तुम्हारे *(गुनाहों के)* बोझ को•
3. एक जो लदा हुआ था तुम्हारे पीछे•
4. हमने बुलंद किया तुम्हें एक बाइज़्जत मकाम को•
5. दर्द के साथ है नफा•
6. वाकई, दर्द के साथ है नफा•
7. जब भी मुमकिन तुम्हें जद्दोजहेद करना चाहिए•
8. तलाश करते हुए सिर्फ तुम्हारे रब को•

****

सुरह 95: इंजीर (अल-तीन)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कसम इंजीर और ज़ैतून की•
2. कोहे तूर•
3. और इस बाइज़्जत शहर *(मक्का)* की•*
4. हमने पैदा किया इंसान को सबसे अच्छे ढांचें में•
5. फिर बदल दिया उसे कमज़रफी के सबसे निचले में•
6. सिवाए उनके जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं; वो पाते हैं एक इनाम जो है पूरा लायक•
7. क्यों तुम फिर भी ठुकराते हो अकीदा?
8. क्या **अल्लाह** नहीं हैं सबसे हिकमत वाले, सारे हिकमत वालों से?

****

सुरह 96: एम्ब्रियो (अल-अलक)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. पढ़ो, तुम्हारे रब के नाम में, जिन्होंने पैदा किया•*
2. उन्होंने पैदा किया आदमी को एक एम्ब्रियो से•
3. पढ़ो, और तुम्हारे रब, सबसे बुलंद•
4. सिखाते हैं कलम के ज़रिये•
5. वो सिखाते हैं आदमी को जो वो कभी नहीं जानता था•
6. वाकई, इंसान खता करता है•

7. जब वो अमीर बन जाता है•

8. तुम्हारे रब कि तरफ है आखरी मुकद्दर•

9. क्या तुमने देखा है उसे जो हिदायत करता है•

10. दूसरो को नमाज़ पढ़ने से?

11. क्या बेहतर नहीं उस के लिए हिदायत कि पैरवी करना?

**95:1-3 इंजीर, ज़ैतून, तूर, और मक्का मुमकिन है इशारा करता है आदम, ईसा, मूसा, इब्राहीम, और मुहम्मद, इस तरतीब में• इस तरह, सारे बड़े मज़हबें नुमाइंदगी किये गये हैं•*

**96:1-19 96 से 114 तक है 19 सुरतें• पहली नुज़ूल (96:1-5) है 19 अरबी लफ्ज़ें, 76 हुरूफें (19x4)• सुरह में हैं 19 आयतें और 304 अरबी हुरूफें (अप• 1 और 23)•*

12. या नेककारी की वकालत करना?

13. अगर वो कुफ्र करता है और पलट जाता है•

14. क्या वो एहसास नहीं करता कि **अल्लाह** देखते हैं?

15. वाकई, जब तक वो बाज़ नहीं आता, हम लेंगे उसे सामने के बाल से•

16. एक माथा जो हैं कुफ्र करने वाला और गुनाहगार•

17. फिर उसे उसके मददगारों को पुकारने दो•

18. हम पुकारेंगे जहन्नम के निगहबानों को•

19. तुम्हें उसका ऐतबा नहीं करना चाहिए; तुम्हें सजदे में गिरना और ज़्यादा करीब आना चाहिए•

****

सुरह 97: तकदीर
(अल-कद्र)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हमने नाज़िल किया उसे तकदीर की रात में•*

2. कितनी ज़बरदस्त है तकदीर की रात!

3. तकदीर की रात बेहतर है एक हज़ार महीनों से•

4. फरिश्ते और रूह उतरते हैं उसमें, उनके रब की मर्ज़ी से, हर हुक्म को पूरा करने के लिए•

5. वो अमन से भरा है सवेरे कि आमदगी तक•

****

सुरह 98: सबूत
(अल-बय्यीनाह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. वो जिन्होंने कुफ्र किया आसमानी किताब के लोगों में से, इसके अलावा बुतपरस्ती करने वाले, इसरार करते हैं उनके रास्तों पर, उनको सबूत दिये जाने के बावजूद•*

2. एक रसूल **अल्लाह** कि तरफ से पढ़ रहा है उनके लिए मुकद्दस हिदायतें•*

3. उनमें हैं बेशकीमती तालीमें•

4. असल में, वो जिन्होंने पाया आसमानी किताब बहेस नहीं किया जब तक सबूत नहीं दिया गया था उनको•

5. उनको सिर्फ पूछा गया था **अल्लाह** कि इबादत करने के लिए, मनसूब करते हुए मज़हब पूरी तरह सिर्फ उनके लिए, अदा करना रावता नमाजें *(सलात)*, और देना ज़रूरी खैरात *(ज़कात)*• ऐसा है मुकम्मल मज़हब•

6. जो कोई कुफ्र करते हैं आसमानी किताब के लोगों में से, और बुतपरस्ती करने वालों ने हासिल किया है जहन्नम की आग हमेशा के लिए• वो हैं सबसे बुरी मखलूकें•

7. वो जिन्होंने ईमान रखा और बसर किया एक नेक ज़िंदगी हैं सबसे अच्छी मखलूकें•

8. उनका इनाम उनके रब के पास है अदन के बागें बहती हुई नहरों के साथ, जिसमें वो रहते हैं हमेशा के लिए• **अल्लाह** खुश हैं उनसे, और वो खुश हैं उनसे• ऐसा है इनाम उनके लिए जो उनके रब का एहतराम करते हैं•

****

**97:1 कुरान रखी गई थी मुहम्मद की रूह में रमज़ान कि 27वीं रात पर, 13 बी• एच (हिजर से पहले)• देखें 17:1, 44:3, 53:1-18, और अपेन्डिक्स 28 भी•*

**98:1-2 सबूत है कुरान का रियाज़ी कोड (अपेन्डिक्स 1) और रसूल है रशाद खलीफा• सुरह का नंबर (98), साथ आयत नंबर (2), साथ अददी वेल्यू "रशाद खलीफा" की (1230) जुड़ते हैं 1330 को (19x70), वही टोटल जैसा 81:19 में (अप• 2)•*

सुरह 99: ज़लज़ला
(अल-ज़लज़ला)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. जब ज़मीन सख्ती से हिलाया जायेगा•
2. और ज़मीन निकालेगा उसके अंबारों को•
3. इंसान हैरान होगा: "क्या हो रहा है?"
4. उस दिन पर, वो बतायेगा उसकी खबरें•
5. कि तुम्हारे रब ने हुक्म दिया है उसे•
6. उस दिन पर, लोग निकलेंगे हर तरफ से, दिखाये जाने के लिए उनके कामों को•
7. जो कोई करता है एक ज़र्रा बराबर वज़न की अच्छाई देखेगा उसे•
8. और जो कोई करता है एक जर्रा बराबर वज़न की बुराई देखेगा उसे•

****

सुरह 100: सरपट दौड़ने वाले
(अल-आदियात)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कसम तेज़ सरपट दौड़ने वालों की•
2. सुलगाते हुए चिंगारियाँ•
3. चढ़ाई करते हुए *(दुश्मन की)* सुबह को•
4. वार करते हुए दहशत उसमें•
5. दाखिल होते हुए उनके इलाके के दिल कि तरफ•
6. इंसान है नाकद्रदान उसके रब का•
7. वो इस हकीकत की गवाही देता है•
8. वो चाहता है जिस्मानी चीज़ों को बेतहाशा•
9. क्या वो एहसास नहीं करता कि दिन आयेगा जब कब्रें खोले जाते हैं?
10. और सारे राज़ें बाहर निकाले जाते हैं•
11. वो जान जायेंगे, उस दिन पर, कि उनके रब थे पूरी तरफ वाकिफ उनसे•

****

सुरह 101: हिला देने वाला
(अल-कारियाह)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हिला देने वाला•
2. क्या एक हिला देने वाला!
3. क्या तुम्हें है कोई इल्म क्या है हिला देने वाला?
4. वो है दिन जब लोग आते हैं बाहर तितलियों के हुजूमों कि तरह•
5. पहाड़ें होंगे जैसे नर्म ऊन•
6. जहाँ तक उसके जिसके वज़नें हैं भारी•
7. वो बसर करेगा एक खुश *(दाईम)* ज़िंदगी•

8. जहाँ तक उसके जिसके वज़नें हैं हल्के•

9. उसका मुकद्दर है निचला•

10. क्या तुम जानते हो क्या है वो?

11. दहकती जहन्नमी आग•

****

सुरह 102: ज़खीरा जमा करना
(अल-तकासुर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. तुम मसरूफ रहते हो ज़खीरा जमा करने के साथ•

2. जब तक तुम कब्रों को नहीं पहुंच जाते•

3. वाकई, तुम जान जाओगे•

4. बिला शक, तुम जान जाओगे•

5. अगर सिर्फ तुम जान सकते यकीन के वासते•

6. तुम तसव्वुर करते जहन्नम•

7. फिर तुम देखते उसे यकीन की आँख से•

8. फिर तुम सवाल किये जाओगे, उस दिन पर, रहमतों के बारे में तुमने मज़े लिया था•

****

सुरह 103: दोपहर
(अल-अस्र)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कसम दोपहर की•

2. इंसान है पूरी तरह खोया•

3. सिवाए उनके जो ईमान रखते हैं और एक नेक ज़िंदगी बसर करते हैं, और नसीहत करते हैं एक दूसरे को सच बरकरार रखने के लिए, और नसीहत करते हैं एक दूसरे को साबित कदम होने के लिए•

****

सुरह 104: गीबतखोर
(अल-हुमाज़ा)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हाय हर गीबतखोर, बेइज़्ज़त करने वाले के लिए•

2. वो जमा करता है पैसा और गिनता है उसे•

3. ऐसे जैसे उसका पैसा बनायेगा उसे लाफानी•

4. कभी नहीं; वो फेंका जायेगा तबाह करने वाले के अंदर•

5. क्या तुम जानते हो क्या है तबाह करने वाला?

6. **अल्लाह** की दहेकती जहन्नमी आग•

7. वो जलाती है उनको अंदर बाहर•

8. वो कैद किये जायेंगे उसमें•

9. बढ़ाये गये खंभो में•

****

सुरह 105: हाथी
(अल-फील)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. क्या तुमने ध्यान दिया है तुम्हारे रब ने क्या किया हाथी के लोगों को?

2. क्या उन्होंने सबब नहीं बनाया उनकी साज़िशों को उल्टा नतीजा निकलने का?

3. उन्होंने भेजा उनके ऊपर हुजूमें परिंदों के•

4. जिसने बौछार किया उनको सख्त पत्थरों से•

5. उन्होंने बना दिया उनको चबाई गई सूखी घांस कि तरह•

****

सुरह 106: कुरैश
(कुरैश कबीला)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. इसका लगाव करना चाहिए कुरैश कि तरफ से•

2. जिसतरह वो लगाव करते हैं सर्दी और गर्मी के कारवाओं का•

3. उनको इस इबादतगाह के रब की इबादत करनी चाहिए•

4. इसलिए कि वो हैं वाहिद जिन्होंने खिलाया उनको भूख के बाद, और मुहय्या किया उनको साथ हिफाज़त खौफ के बाद•

****

सुरह 107: खैरात
(अल-माऊन)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. क्या तुम जानते हो कौन असल में ठुकराता है अकीदा?

2. वो है एक जो बदसुलूकी करता है यतीमों के साथ•

3. और वकालत नहीं करता गरीब को खिलाने की•

4. और हाय हो उनके लिए जो अदा करते हैं रावता नमाज़ें *(सलात)*—

5. जो हैं पूरी तरह गाफिल उनकी नमाज़ों से•

6. वो सिर्फ दिखावा करते हैं•

7. और वो मना करते हैं खैरात•

****

सुरह 108: फज़्ल
(अल-कौसर)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. हमने बक्शा है तुम्हें कई एक फज़्ल के साथ•

2. इसलिए, तुम्हें नमाज़ पढ़ना चाहिए तुम्हारे रब के लिए *(सलात)*, और खैरात को देना चाहिए•

3. तुम्हारे मुखालिफ होंगे हारने वाले•

****

सुरह 109: काफिरें
(अल-काफिरून)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कहो, "ऐ काफिरों•

2. "मैं इबादत नही करता जिसकी तुम इबादत करते हो•

3. नाहीं तुम इबादत करते हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ•

4. "नाहीं मैं कभी इबादत करूंगा जिसकी तुम इबादत करते हो•

5. "नाहीं तुम कभी इबादत करोगे जिसकी मैं इबादत करता हूँ•

6. "तुम्हारे लिए है तुम्हारा मज़हब, और मेरे लिए है मेरा मज़हब•"

****

सुरह 110: फतेह
(अल-नस्र)
[नाज़िल की गई आखरी सुरह]*

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. जब फतेह आती है **अल्लाह** की तरफ से, और जीत•

2. तुम देखोगे लोगों को कबूल करते हुए **अल्लाह** का मज़हब हुजूमो में•

3. तुम्हें बड़ाई और तारीफ करनी चाहिए तुम्हारे रब की, और इल्तेजा करो उनसे मगफरत के लिए• वो हैं माफ करने वाले•

****

सुरह 111: कांटें
(अल-मसद)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. मलामत किया गया है अबी लहब के कामों को, और वो मलामत किया गया है•*

2. उसका पैसा और जो कुछ उसने हासिल किया है कभी मदद नहीं करेंगे उसकी•

3. उसने हासिल किया है दहकता जहन्नम•

**110:1-3 यह आखरी सुरह, तारीखवार तौरपर, शामिल करता है 19 अरबी लफ्ज़ों को (देखें 96:1), और पहली आयत शामिल करती है 19 हुरूफों को• यह इशारा करता है कि इस ईमानवालों की नस्ल हासिल करेगी वादा की गई जीत• फरमानबरदारी (सही इस्लाम) तारी होगा पूरी दुनिया पर (48:28)•*

**111:1 अबी लहब था मुहम्मद का चचा और मुखालिफत का रहबर• उसकी बीवी ने जारी किया एक मुहिम एज़ारसानी का मुहम्मद और ईमानवालों के खिलाफ• जन्नत और जहन्नम के सारे बयानों कि तरह, कांटों की रस्सी है एक मिसाल•*

2696 *118120*

4. इसके अलावा उसकी बीवी, जिसने रहबरी की एज़ारसानी•

5. वो *(दोबारा ज़िंदा)* की जायेगी उसके गर्दन के इर्द गिर्द कांटों की एक रस्सी के साथ•

****

सुरह 112: मुकम्मलपन
(अल-इख्लास)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. ऐलान करो "वो हैं वाहिद और सिर्फ **अल्लाह**•

2. "मुकम्मल **अल्लाह**•"

3. "कभी उन्होंने नहीं जना• नाहीं वो थे जने गये•

4. "कोई भी बराबरी नहीं करता उनकी•"

****

सुरह 113: इश्राक
(अल-फलक)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कहो, "मैं तलाश करता हूँ पनाह इश्राक के रब में•

2. "उनकी खिलकतों में बुराईयों से•

3. "अंधेरेपन की बुराईयों से जब वो गिरती है•

4. "खराबी करने वालों की बुराईयों से•

5. "जलन करने वालों की बुराईयों से जब वो जलते हैं•

****

सुरह 114: लोग
(अल-नास)

अल्लाह के नाम से,
सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले

1. कहो, "मैं पनाह तलाश करता हूँ लोगों के रब में•

2. "बादशाह लोगों के•

3. "खुदा लोगों के•

4. "चुपके से वसवसे करने वालों की बुराईयों से•

5. "जो वसवसे करते हैं लोगों के सीनों में•

6. "वो हों जिनों, या इंसानों के•"

2698* ***118123****

**इस तरह, टोटल वाक्या एहम लफ्ज़ "अल्लाह" का पूरे कुरान में है 2698, 19x142• पढ़ने वाला मालूम कर सकता है दुरूस्ती इस टोटल का बेसिलसिले तौर पर जांचते हुए अददें लफ्ज़ "अल्लाह" की इस किताब के किसी पन्नों के नीचे• इसके अलावा, अगर कोई जोड़ता है आयत नंबरें जहाँ भी लफ्ज़ "अल्लाह" वाकै होता है, टोटल आता है 118123 को, भी एक ज़रप 19 का (118123=19x6217)• कुरान के बेमिसाल रियाज़ी ढांचे कि तफसीलें दिये गये हैं 1, 2, 24, 25, 26 और 29 अपेन्डिक्सों में•*

अपेन्डिक्स 1

बड़े मौजज़ों में से एक [74:35]

कुरान ज़ाहिर की गई है एक बेमिसाल कुदरत के ज़रिये जो किसी इन्सानी लिखी गई किताब में कभी नहीं मिलती• कुरान का हर हिस्सा रियाज़ी तौर पर तरतीब किया गया है—सुरतें, आयतें, लफ्ज़ें, खास हुरूफों के अदद, लफ्ज़ों का नम्बर उसी जड़ से, खुदाई नामों के किस्म और नम्बर, यकता हिज्जे खास लफ्ज़ों के, गैर मौजुदगी या जानबूझकर तबदीली कुछ हुरूफों कि खास लफ्ज़ो के दरमियान, और कई दूसरे हिस्से कुरान के उसके मज़मून के अलावा• कुरान के रियाज़ी निज़ाम के दो एहम पहलु हैं: (1) रियाज़ी अदबी ढ़ाचा, और (2) सुरतों और आयतों के नम्बरों को शामिल करता हुआ रियाज़ी ढ़ाचा• इस ठोस रियाज़ी निज़ाम के वजह से, ज़रा सा भी बिगाड़ कुरान के मत्न या जिस्मानी तरतीब का फौरन बेनकाब हो जाता है•

आसान समझने के लिए

नामुमकिन नक्ल करने के लिए

पहली बार तारीख में हमारे पास है एक आसमानी किताब जिसमें शामिल किया गया है उसके रब्बानी मुसन्निफ होने का सबूत — एक गैरमामुली रियाज़ी ढ़ाचा•

कोई भी इस किताब को पढ़ने वाला आसानी से तसदीक कर सकता है कुरान का रियाज़ी मौजज़ा• लफ्ज़ "**अल्लाह**" पूरी किताब में मोटे हुरूफों में लिखी गई है• लफ्ज़ "**अल्लाह**" वाकै होने कि अकसरियत नोट किया गया है हर पेज के निचले हिस्से पर• मत्न का आखरी पेज, पेज 372, लफ्ज़ "**अल्लाह**" के वाकै होने का टोटल 2698 दिखाता है, या 19x142•

इसके अलावा, जब हम जोड़ते हैं सारी आयतों के नम्बरें जहाँ लफ्ज़ "अल्लाह" वाकै हाता है, हम हासिल करते हैं एक टोटल 118123 का, ये भी एक ज़रप 19 का (118123=19x6217)• उन्नीस है पूरे कुरान के रियाज़ी निज़ाम का कॉमन डिनोमिनेटर•

ये कुदरत अकेला काफी है अटल सबूत जैसा कि कुरान अल्लाह का पैगाम है जहान के लिए• कोई इन्सान(या एक से ज़्यादा) हिसाब नहीं रख सकता था 2698 लफ्ज़ "**अल्लाह**" का वाकै होने का, और आयतों के नम्बरें जहाँ वो वाकै होते हैं• ये है खास तौर पर नामुमकिन इस नज़रिए में कि (1) कुरान नाज़िल हुआ था जहालत के ज़माने में, और (2) सूरतें और आयतें दर हकीकत दूर दूर तक जुदा की गई थीं नुज़ूल के वक्त और जगह में• तारीखवार तरतीब नुज़ूल का निहायत मुखतलिफ था आखरी तरतीब से (अपेन्डिक्स 23)• बहेरहाल, कुरान का रियाज़ी निज़ाम लफ्ज़ "**अल्लाह**" तक ही महदूद नहीं है, वो इंतेहाई ज़बरदस्त, इंतेहाई पेचीदा, पुरी तरह फैला हुआ है•

सादी हकीकतें

खुद कुरान कि तरह, कुरान का रियाज़ी कोड फैला है बहुत सादे से, बहुत उल्झे हुए तक• सादी हकीकतें हैं वो तफतीशें जिन्हें साबित किया जा सकता है किसी औज़ारों के इस्तेमाल किए बगैर• पेचीदी हकीकतों के लिए एक कैलकुलेटर या एक कम्प्युटर कि मदद कि ज़रूरत पड़ती है• नीचे दि गई हकीकतों को साबित करने के लिए किसी औज़ारों कि ज़रूरत नहीं पड़ती:

1. पहली आयत (1:1), जाना जाता है जैसे "बिस्मिल्लाह," में है…………………… 19 हुरूफें•
2. कुरान में हैं 114 सूरतें, जो है……………………………………………19 x 6•
3. कुरान में टोटल आयतों का नम्बर है 6346, या………………………………19 x 334•
   [6234 नम्बर दी गई आयतें और 112 बगैर नम्बर वाली आयतें
   (बिस्मिल्लाह) 6234 + 112 = 6346] नोट करें के 6 + 3 + 4 + 6 =……19•
4. बिस्मिल्लाह 114 बार वाके होता है, सुरेह 9 में उसके मशहूर तरीके से
   गायब होने के बावजूद (वो दो बार वाके होता है सुरेह 27 में) और 114 =…19 x 6•
5. सुरेह 9 के गायब *बिस्मिल्लाह* से
   सुरेह 27 के ज़ाएद *बिस्मिल्लाह* तक, वहाँ हैं ठीक ठीक…………………………19 सुरतें•
6. वो इस तरह चलता है के सुरेह नम्बरों का टोटल
   9 से 27 तक (9+10+11+12+…+26+27) है 342, या…………….19 x 18.
7. ये टोटल (342) बराबरी करता है सुरेह 27 के दो *बिस्मिल्लाओं* के बीच
   लफ्ज़ों के नम्बर से भी, और 342 = ……………………………………..19 x 18•
8. मशहूर पहली नुज़ूल (96:1-5) में हैं ………………………………….19 लफ्जें•
9. ये 19-लफ्ज़ों वाली पहली नुज़ूल में 76 हुरूफें हैं……………………………19 x 4•
10. सुरेह 96, पहली तारीखवार तरतीब में, हैं……………………………………19 आयतें•
11. ये पहली तारीखवार सुरेह रखी गई है आखीर के………………………………19 सुरतों के पहले•
12. सुरेह 96 में हैं 304 अरबी हुरूफें, और 304 बराबर है………………………19 x 16•
13. आखरी नुज़ूल (सुरेह 110) में हैं……………………………………………19 लफ्जें•
14. आखरी नुज़ूल (110:1) कि पहली आयत में हैं ……………………………19 हुरूफें•
15. 14 मुखतलिफ अरबी हुरूफें, 14 मुखतलिफ "कुरानी इनीशियलों"
    के गिरोहों से (जैसे अ•ल•म• 2:1 का), और 29 सुरतें जिनके पहले वो हैं•
    ये नम्बरें जुड़ कर होते हैं 14+14+29 = 57 = ………………………..19 x 3•
16. 29 सुरेह नम्बरों का टोटल जहाँ कुरानी इनीशियलें
    वाके होते हैं 2 + 3 + 7 +….+ 50 + 68 = 822 है, और
    822 + 14 (14 इनीशियलों का गिरोह) बराबर है 836 के, या……………..19 x 44•
17. पहली इनीशियल वाली सुरेह (सुरेह 2) और आखरी इनीशियल
    वाली सुरेह (सुरेह 68) के बीच वहाँ हैं 38 गैर इनीशियल वाली सूरतें……………19 x 2•
18. पहली और आखरी इनीशियल वाली सुरेह के बीच…………………………19 गिरोहों
    कि "इनीशियल वाली" और "गैर इनीशियल वाली" सूरतें बारी बारी हैं•

19. कुरान बयान करता है 30 मुखतलिफ नम्बरें: 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 19, 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 99, 100, 200, 300, 1000, 2000, 3000, 5000, 50,000, और 100,000•
इन नम्बरों का जोड़ है 162146, जो बराबर है .... 19x8534 के•

ये एक बेहद मुख्तसर खुलासा है सादी हकीकतों का•

अदबी रियाज़ी तरतीब

कुरान ज़ाहिर की गई है एक बेमिसाल कुदरत के ज़रिये जो किसी किताब में कभी नहीं मिलती; 29 सूरतों कि शुरूआत होती है "कुरानी इनीशियलों" के 14 मुखतलिफ गिरोहों के साथ, जिनमें हैं एक से पाँच हुरूफें हर गिरोह में• चौदाह हुरूफें, अरबी के आधे हुरूफ, शामिल होते हैं इन इनीशियलों में• कुरानी इनीशियलों का मायने रहा एक रब्बानी महफूज़ राज़ 14 सदीयों के लिए•

कुरान कहता है 10:20 और 25:4-6 में के उसका

उन्होंने कहा, "क्यों उसके पास मौजेज़ा नीचे नहीं उतरा उसके रब कि तरफ से?" कहो, "सिर्फ अल्लाह जानते हैं मुस्तकबिल• इस लिए, इन्तेज़ार करो, और मैं इन्तेज़ार करूंगा तुम्हारे साथ•" [10:20]

****

जिन्होंने नहीं माना कहा, "ये उसकी तरफ से बनावट से ज़्यादा कुछ नहीं, दूसरे लोगों कि मदद के साथ•" यकीनन, उन्होंने एक बेअदबी कही; एक झूठ• दूसरों ने कहा, "माज़ी से किस्से जिसे उसने लिख लिया है नीचे; वो उसको दिन और रात लिखवाए गए थे•" कहो, "ये नीचे भेजा गया था उस वाहिद कि तरफ से जो आसमानों और ज़मीन में 'राज़' को जानते हैं•" यकीनी तौर पर, वो हैं माफ करने वाले , सबसे रहीम• [25:4-6]

मौजेज़ा, यानी रब्बानी मुसन्निफ होने का सबूत, मुर्करर किया गया था राज़ रहना एक पहले से तय किए गए दरमियानी वकफे के लिए•

कुरानी इनीशियलें कायम करते हैं एक बड़ा हिस्सा कुरान के 19-पर बुनियाद रियाज़ी मौजज़े का•

टेबल 1: कुरानी इनीशियलें और उनकी सूरतों के लिस्ट

नं•	सुरेह नं•	सुरेह का नाम	कुरानी इनीशियलें
1.	2	बछिया	अ•ल•म•
2.	3	ऑले इमरान	अ•ल•म•
3.	7	ऑराफ	अ•ल•म•सा•
4.	10	युनुस	अ•ल•र•
5.	11	हूद	अ•ल•र•
6.	12	युसुफ	अ•ल•र•
7.	13	बिजली कि गरज	अ•ल•म•र•
8.	14	इब्राहीम	अ•ल•र•
9.	15	अल हिज्र वादी	अ•ल•र•
10.	19	मरयम	क•ह•य•ऐ•सा•
11.	20	त•ह•	त•ह•
12.	26	शायरें	त•स•म•
13.	27	चीटीं	त•स•
14.	28	तारीख	त•स•म•
15.	29	मकड़ी	अ•ल•म•
16.	30	युनानी	अ•ल•म•
17.	31	लुकमान	अ•ल•म•
18.	32	सजदा	अ•ल•म•
19.	36	य•स•	य•स•
20.	38	सा•	सा•
21.	40	माफ करने वाले	हा•म•
22.	41	तफसील किया गया	हा•म•
23.	42	मशवराह	हा•म• ऐ•स•कॅ•
24.	43	गहने	हा•म•
25.	44	धुआँ	हा•म•
26.	45	घुटने के बल झुकते हुए	हा•म•
27.	46	रेत के टीले	हा•म•
28.	50	कॅ•	कॅ•
29.	68	कलम	नून

तारीखी पास मन्ज़र

1968 में, मैंने एहसास किया के मौजुदा अंग्रेज़ी कुरान के र्तजुमे **अल्लाह** कि आखरी किताब का सच्चा पैगाम पेश नहीं करते• मिसाल के तौर पर, दो सबसे मशहूर र्तजुमान, युसुफ अली और मारमाडुके पिक्टहॉल, गालिब नहीं हो पाए अपने बिगड़े मज़हबी रिवाजों पर जब कुरान के बड़े मयार कि बात 39:45 में आई•

जब सिर्फ अल्लाह बयान किये जाते हैं, दिलें उनके जो ईमान नहीं रखते अगली ज़िंदगी में सिकुड़ जाते हैं नफरत से• लेकिन जब दूसरे बयान किये जाते हैं उनके साथ, वो जश्न मनाते हैं• [39:45]

युसुफ अली ने र्तक कर दिया एहम लफ्ज़ "**सिर्फ**" उसके र्तजुमे से, और बदल दिया बाकि कि आयत लफ्ज़ "(खुदाओं)" को दाखिल करते हुए• इस तरह, उसने बिल्कुल तबाह कर दिया इस सबसे एहम कुरानी मयार को• उसने 39:45 का इस तरह र्तजुमा किया:

जब अल्लाह, वाहिद और अकेले, बयान किये जाते हैं, उनके दिल जो ईमान नहीं रखते अगली ज़िन्दगी में भर जाते है नफरत और दहशत से; लेकिन जब उनके अलावा दूसरे (खुदाओं) को बयान किया जाता है, देखो, वो खुशी से भर जाते हैं• [39:45]
(ए. युसुफ अली के मुताबिक)

जुमला "जब **अल्लाह, वाहिद** और **अकेले**, बयान किये जाते हैं," बराबर नहीं है कहना, "जब सिर्फ **अल्लाह** बयान किये जाते हैं" जैसा• कोई बयान कर सकता है "**अल्लाह, वाहिद** और **अकेले,**" का और बयान कर सकता है मुहम्मद या ईसा भी, और कोई नाराज़ नहीं होगा• लेकिन अगर "सिर्फ **अल्लाह** बयान किये जाते हैं," आप किसी और का नाम नहीं ले सकते, और ज़्यादातर लोग — जो मुहम्मद या ईसा को बुत बनाते हैं — नाराज़ हो जायेंगे• इस तरह, युसुफ अली अपने आप को नहीं ला पाया कुरान कि सच्चाई पेश करने के लिए, अगर वो बेनकाब करता हो उसके बिगड़े अकीदे को•
मारमाडुके पिक्टहॉल ने र्तजुमा "**सिर्फ**" सही किया, लेकिन मयार को तबाह कर दिया उसके खुदके अकीदे को ब्रेकिट में डालते हुए; उसने 39:45 का इस तरह र्तजुमा किया:

और जब सिर्फ अल्लाह बयान किये जाते हैं, उनके दिल जो अगली ज़िन्दगी में ईमान नहीं रखते नागवार हो जाते हैं, और जब वो उनका (जिनकी वो इबादत करते हैं) बयान करते हैं उनके साथ, देखो! वो खुश हैं• [39:45]
(मारमाडुके पिक्टहॉल के मुताबिक)

जब मैंने अल्लाह के लफ्ज़ कि सच्चाई इस तरह बिगड़ते देखा, मैंने फैसला किया कुरान का र्तजुमा करने का, कम से कम मेरे अपने बच्चों के फायदे के लिए• चुँके मैं पेशे से एक कैमिस्ट था, और मेरे गहरे मज़हबी पास मन्ज़र होने के बावजूद — मेरे वालिद मिस्र में एक मशहूर सूफी इमाम थे — मैंने **अल्लाह** से एहद किया कि मैं नहीं हिलुंगा एक आयत से दूसरी को जब तक मैं उसे पूरी तरह समझ न लूँ•

मैंने कुरानी र्तजुमे और तफसीर कि सारी मौजुदा किताबें जिन्हें पा सकता था खरीदे, रखा एक बड़े से टेबल पर, और शुरू किया मेरा र्तजुमा• पहली सुरेह, चाबी, पुरी कर दी गई थी कुछ दिनों में• पहली आयत सुरेह 2 में है "अ•ल•म•" इस आयत का र्तजुमा करने के लिए चार साल लगे, और इत्तेफाक हुआ कुरान का बड़ा रियाज़ी मौजेज़ा "एक राज़" रब्बानी बेनकाब होने के साथ •

कुरानी तफसीरों कि किताबें एक राय से इकरार करती थीं के “कुरानी इनीशियलें अ•ल•म या कोई दूसरे इनीशियलों के मायने या एहमियत कोई नहीं जानता•” मैंने फैसला किया कुरान को कम्प्युटर के अंदर लिखने का, पूरे मत्न कि तफ्तीश करने, और देखने का कहीं वहाँ है कोई रियाज़ी ताल्लुक इन कुरानी इनीशियलों के दरमियान •

मैंने वक्त पर बटे एक कम्प्युटर को इस्तेमाल किया, जो जुड़ा हुआ था टेलिफोन से एक बड़े कम्प्युटर को• मेरी तजवीज़ को जाँचने के लिए, मैने फैसला किया देखने का उन कुरानी इनीशियलों कि तरफ जो तन्हा हुरूफ थे — “कॅ” (कॉफ) सुरेह 42 और 50 कि, “सा” (साद) सुरेह 7¸ 19 और 38 कि, और “न” (नून) सुरेह 68 कि• जैसा मेरी पहली किताब कुरान का मौजेज़ा में तफसील किया गया है: एहमियत पोशिदा हुरूफों कि (इस्लामिक प्रोडक्शन्स 1973), राज़ को बेनकाब करने कि पिछली कई कोशिशें नाकामयाब रहीं थीं•

कुरानी इनीशियल “कॅ” (कॉफ)

कम्प्युटर के डेटा ने बतलाया के सिर्फ कॅ—इनीशियल कि गई सूरतों 42 और 50, के मत्न, में हैं बरावर नम्बर के कॅ, 57 और 57• कुरान में एक जान बूझकर रियाज़ी निज़ाम हो सकने का वो था पहला इशारा•

सुरेह 50 का नाम दिया गया है “कॅ”, शुरू होता है “कॅ” से, और पहली आयत कहती है, “कॅ, और शानदार कुरान•” इसने इशारा किया कि “कॅ” “कुरान” के लिए खड़ा होता है, कॅ का टोटल नम्बर कॅ-इनीशयल कि गई सूरतों में नुमाइन्दगी करता है कुरान कि 114 सूरतों कि (57+57 = 114 = 19x6)• ये नज़रिया पुख्ता किया गया था इस हकीकत से के “कुरान” वाकै होता है कुरान में 57 बार•
कुरान सुरेह “कॅ” में “मजीद” (शानदार) जैसा बयान किया गया है, और अरबी लफ्ज़ “मजीद” का जिमेटरिकल वेल्यु 57 है: म (40) + ज (3) + य (10) + द (4) = 57•

सुरेह 42 में हैं 53 आयतें, और 42 + 53 = 95 = 19x5
सुरेह 50 में हैं 45 आयतें, और 50 + 45 = 95, वही टोटल जैसा सुरेह 42 में है•

पूरे कुरान में हर “आयत 19” में हुरूफ “कॅ” गिनते हुए, टोटल गिनती आती है 76 को, 19x4• यहाँ है एक खुलासा कॅ के—मुताल्लिक डेटा का:

1• “कॅ” कि अकसरियत सुरेह “कॅ” में (न•50) है 57, 19x3•
2• हुरूफ “कॅ” वाकै होता है दूसरी कॅ—इनीशियल कि गई सुरेह (न•42) में ठीक ठीक उतनी ही बार, 57•
3• टोटल वाकै होना हुरूफ “कॅ” का दो कॅ—इनीशियल कि गई सूरतों में है 114, जो बराबर होता है कुरान में सूरतों के नम्बर से•
4• “कुरान” बयान किया गया है कुरान में 57 बार•
5• कुरान का बयान किया जाना जैसा “मजीद” (शानदार) ताल्लुक पैदा करता है हुरूफ “कॅ” वाकै होने कि अकसरियत के साथ हर कॅ—इनीशियल कि गई सूरतों में• लफ्ज़ “मजीद” का जिमेटरिकल वेल्यु है 57•
6• सुरेह 42 में हैं 53 आयतें, और 42 + 53 है 95, या19x5•
7• सुरेह 50 में हैं 45 आयतें, और 50 + 45 भी है 95, 19x5•
8• सारी “19” नम्बर दि गई आयतों में कॅ का अदद पूरे कुरान में है 76, 19x4•

कुरान के रियाज़ी ढ़ाचे का झलक उभरना शुरू हुआ• मिसाल के तौर पर, देखा गया था के लोग जिन्होंने लूत में ईमान नहीं लाया बयान किए गए हैं 50:13 में और वाकै होते हैं कुरान में 13 बार — 7:80; 11:70, 74, 89; 21:74; 22:43; 26:160; 27:54, 56; 29:28; 38:13; 50:13; और 54:33• बाउसूल, उन्हें दरयाफ्त किया गया है “कौम” कि तरह, सिर्फ कॅ—इनीशियल कि गई सुरेह 50 को छोड़कर जहाँ वो दरयाफ्त किए गए हैं “इख्वान” जैसे• ज़ाहिर है, हस्बे मामूल, अगर लफ्ज़ “कौम”

जिसमें कॅ—शामिल है इस्तेमाल किया जाता, सुरेह 50 में हुरूफ "कॅ" कि गिनती 58 हो जाती, और ये पूरी कुदरत गायब हो जाती• इकरार किये गये मैथमैटिक्स कि कामिल दुरूस्ती के साथ, एक तन्हा हुरूफ कि तबदिली निज़ाम को तबाह कर देती है•

एक और ताल्लुक रखता हुआ मिसाल है मक्के का हवाला 3:96 में "बक्का" जैसा! मशहूर शहर के इस अजीब हिज्जे ने कई सदीयों से इस्लामी आलिमों को उलझन में डाल रखा है• हाँलाके मक्का कुरान में दुरूस्ती से हिज्जे किया गया है 48:24 में, हुरूफ "म" तबदील किया गया है "ब" से 3:96 में• जैसा पेश आता है सुरेह 3 एक म—इनीशियल कि गई सुरेह है, और हुरूफ "म" कि गिनती भटक जाती कुरान के कोड से अगर "मक्का" 3:96 में सही हिज्जे किया गया होता•

नून (नून)

ये इनीशियल तन्हा है; वो वाकै होता है एक सुरेह, 68 में, और हुरूफ का नाम हिज्जे किया गया है तीन हुरूफों जैसा — नून वॉव नून — असल मत्न में, और इस वजह से दो नून जैसा गिना जाता है• टोटल गिनती इस न—इनीशियल किए गए सुरेह में है 133, 19x7•

हकीकत कि "न" आखरी कुरानी इनीशियल है (देखें टेबल 1) बाहर लाता है खास तवज्जेह वाला एक नम्बर• मिसाल के तौर पर, आयतों का नम्बर पहली कुरानी इनीशियल (2:1 का अ•ल•म•) से आखरी इनीशियल (68:1 का न) तक है 5263, या 19x277•

लफ्ज़ "अल्लाह" वाकै होता है 2641 (19x139) बार पहली इनीशियल और आखरी इनीशियल के दरमियान• चूँके लफ्ज़ "अल्लाह" वाकै होता है 2698 बार, वो युँ होता है के 2:1 का "अ•ल•म•" इनीशियलों के बाहर एक तरफ, और 68:1 का "न" इनीशियल दूसरी तरफ, 57 बार है उसका वाकै होना , 19x3• टेबल 9 से 20 साबित करता है के इनीशियल "नून" ज़रूरी है हिज्जे किया जाए दो नून बताने के लिए•

सा (साद)

ये इनीशियल तीन सूरतों के पहले आता है, 7,19 और 38, और टोटल वाकै होना हुरूफ "सा" (साद) का इन तीन सूरतों में है 152, 19x8 दफा (टेबल 2)• ये काबिले गौर है कि 7:69 में, लफ्ज "बसततान" लिखा गया है कुछ छपाईयों में "साद" के साथ, बजाए "सीन" के• ये एक गलती से विगाड़ है जो कुरान के कोड को तोड़ता है• मौजूदा सबसे पूरानी कुरान कि कॉपी, ताशकन कॉपी, को देखते हुए ये पाया गया था के लफ्ज़ "बसततान" सही लिखा गया है "सीन" के साथ (फोटोकॉपी देखें नीचे)•

टेबल 2ः हुरूफ "सा" का अकसरियत साद— इनीशियल कि गई सूरतों में

सुरेह	"सा" कि अकसरियत
7	97
19	26
38	29
	152
	(19x8)

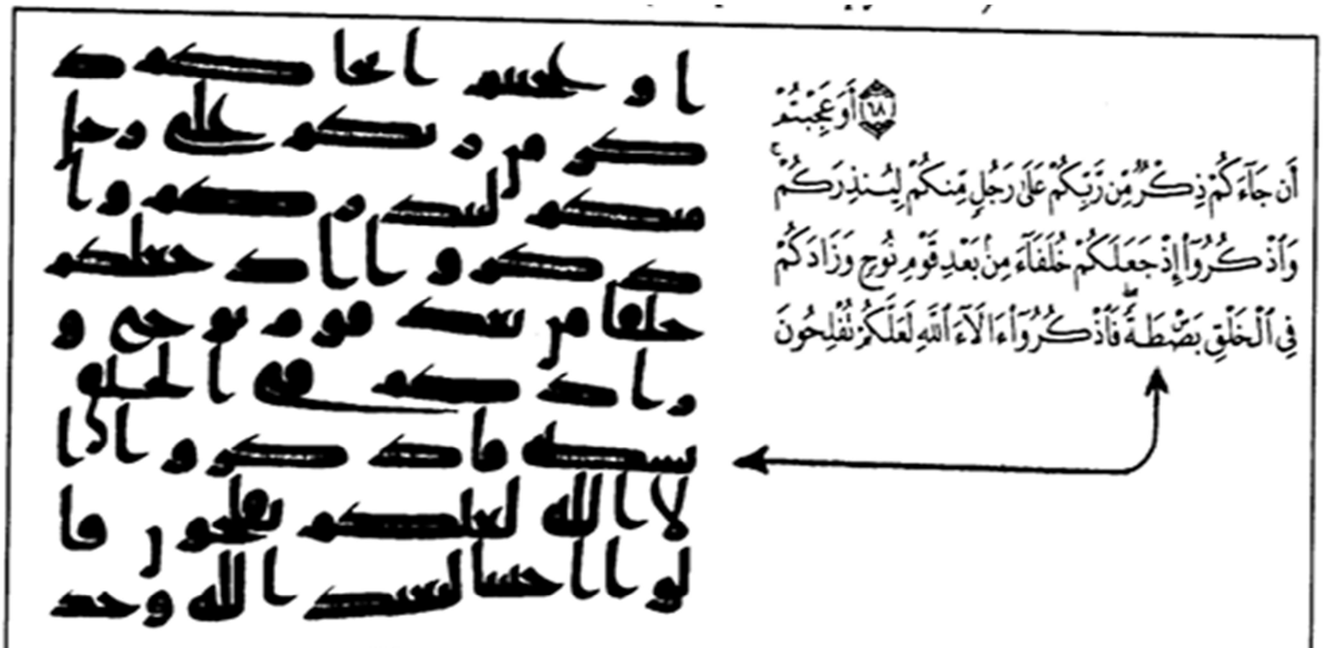

Photocopy from the Tashkent Quran.

तारीखी नोट

निहायत एहम खोज कि “19” है कुरान का कॉमन डिनोमिनेटर बनगई एक हकीकत जनवरी 1974 में, जुल—हिज्जा 1393 ए•एच• के साथ मेल खाते हुए • कुरान नाज़िल हुआ था 13 बी•एच• (हिजरत से पहले) में• ये बनाता है कुरान के नाज़िल होने से लेकर उसके मौजज़े के नाज़िल होने तक के सालों का नम्बर 1393 + 13 = 1406 = 19x74• जैसा ऊपर नोट किया गया है, मौजज़े का बेनकाब होना पेश आया जनवरी 1974 में• ताल्लुक 19x74 चाँद के सालों और 1974 सूरज के सालों के दरमियान नहीं बच सका नज़र से• ये है खास तौर पर अजूबा इस नज़रिए में के ये हकीकत “19” बयान कि गई है सुरेह 74 में•

य• स• (या सीन)

ये दो हुरूफें सुरेह 36 के शुरूआत में आते हैं• हुरूफ “य” वाके होता है इस सुरेह में 237 बार, जबके हुरूफ “स” (सीन) वाके होता है 48 बार• दोनों हुरूफों का टोटल है 285, 19x15•

ये काबिले गौर है कि हुरूफ “य” कुरान में लिखा गया है दो रूपों में; एक है साफ और दूसरा है हल्का• हुरूफ का हल्का रूप हो सकता है उल्झा दे उनको जो अरबी ज़बान से अच्छी तरह वाकिफ नहीं हैं• एक अच्छी मिसाल है लफ्ज़ “अरायनी أرني ” जो दो दफा बयान किया गया है 12:36 में• हुरूफ “य” इस लफ्ज़ में दो दफा इस्तेमाल किया गया है, पहला “य” हल्का है और दूसरा साफ है• सुरेह 36 में नहीं है एक भी हल्के किस्म का “य”• ये एक ज़बरदस्त मौजज़ा है• और ऐसा जो उमुमन वाके नहीं होता सुरेह 36 जैसे एक लम्बे सुरेह में• मेरी किताब कुरान: नज़र में आने वाली पेशकश मौजज़े कि (इस्लामिक प्रोडक्शन्स, 1982) हर “य” और “स” सुरेह 36 में निशान किया गया है एक सितारे से•

ह•म• (हा मीम)

टेबल 3: वाके होना हुरूफें “ह” और “म” का सात ह•म•-इनीशियल कि गई सूरतों में

सुरेह	वाके होने कि अकसरियत		
नं•	"ह"	"म"	" ह + म "

सात सूरतें शुरू होती हैं “ह ح” और “म م ;” हुरूफों के साथ सुरेह 40 से 46 तक• टोटल वाकै होना इन दो हुरूफों का ह•म•- इनीशियल कि गई सात सूरतों में है 2147, या 19x113• तफसील में दिया गया डेटा दिखाया गया टेबल 3 में•
कुदरती तौर पर, तबदीली एक भी हुरूफ “ह” या “म” कि किसी भी सात ह•म•-इनीशियल कि गई सात सूरतों में इस पेचीदे मौजज़े को तबाह कर देता•

40	64	380	444
41	48	276	324
42	53	300	353
43	44	324	368
44	16	150	166
45	31	200	231
46	36	225	261
	292	1855	2147
			(19x113)

ऐ•स•कॅ• (ऐन•सीन•कॉफ)

ये इनीशियलें कायम करते हैं सुरेह 42 कि 2 आयत, और टोटल वाकै होना इन हुरूफों का इस सुरेह में है 209, या 19x11• हुरूफ “ऐ” (ऐन) वाकै होता है 98 दफा, हुरूफ “स” (सीन) वाकै होता है 54 दफा, और हुरूफ “कॅ” (कॉफ) वाकै होता है 57 दफा•

अ•ल•म• (अलिफ लाम मीम)

हुरूफें “अ,” “ल,” और “म” सबसे मुसलसल इस्तेमाल कि जाने वाली हुरूफें हैं अरबी ज़बान में, और उसी तरतीब में जैसा हम कुरानी इनीशियलों में देखते हैं — “अ,” फिर “ल,” फिर “म•” ये हुरूफें छ: सूरतों कि शुरूआत में आतें हैं — 2, 3, 29, 30, 31, और 32 — और हर छ: सूरतों में तीन हुरूफों का टोटल वाकै होना है एक 19 का ज़रप

[9899 (19x521), 5662 (19x298), 1672 (19x88), 1254 (19x66), 817 (19x43), और 570 (19x30), इस तरतीब में]• इस तरह, तीन हुरूफों का टोटल वाकै होना छ: सूरतों में है 19874 (19x1046), और तबदीली इन में से एक हुरूफों कि इस मौजज़े को तबाह कर देती है•

टेबल 4 : वाकै होना “अ,” “ल,” और “म” हुरूफों का अ•ल•म•-इनीशियल कि गई सूरतों में

सुरेह नं•	वाकै होने कि अकसरियत "अ"	"ल"	"म"	टोटल
2	4502	3202	2195	9899 (19x521)
3	2521	1892	1249	5662 (19x298)
29	774	554	344	1672 (19x88)
30	544	393	317	1254 (19x66)
31	347	297	173	817 (19x43)
32	257	155	158	570 (19x30)
	8945	6493	4436	19874 (19x1046)

अ•ल•र• (अलिफ लाम रा)

ये इनीशियलें पाई जाती हैं 10, 11, 12, 14, ओर 15 सूरतों में• इन सूरतों में इन हुरूफों का टोटल वाकै होना है 2489 (19x131), 2489 (19x131), 2375 (19x125), 1197 (19x63), और 912 (19x48) इस तरतीब में (टेबल 5)•

टेबल 5 : वाकै होना “अ,” “ल,” और “र” हुरूफों का अ•ल•र•-इनीशियल कि गई सूरतों में

सुरेह नं•	वाकै होने कि अकसरियत "अ"	"ल"	"र"	टोटल
10	1319	913	257	2489 (19x131)
11	1370	794	325	2489 (19x131)
12	1306	812	257	2375 (19x125)
14	585	452	160	1197 (19x63)
15	493	323	96	912 (19x48)
	5073	3294	1095	9462 (19x498)

अ•ल•म•र• (अलिफ लाम मीम रा)

ये इनीशियलें एक सुरेह नं• 13 के शुरूआत में आते हैं, ,

और टोटल वाके होने कि अकसरियत चार हुरूफों कि है 1482, या 19x78• हुरूफ “अ” वाके होता है 605 बार, “ल” वाके होता है 480 बार, “म” वाके होता है 260 बार, और “र” वाके होता है 137 बार•

अ•ल•म•सा• (अलिफ लाम मीम साद)

सिर्फ एक सुरेह, सुरेह 7,कि शुरूआत इन इनीशियलों से होती है और हुरूफ “अ” इस सुरेह में 2529 बार वाके होता है, “ल” वाके होता है 1530 बार, “म” वाके होता है 1164 बार, और “सा” (साद) वाके होता है 97 बार• इस तरह इस सुरेह में इन चार हुरूफों का टोटल वाके होना है 2529+1530+1164+97 = 5320 = 19x280•

यहाँ पर एक ज़रूरी तवज्जो है हुरूफ “सा” (साद) को शामिल करता हुआ आपस में गुथा हुआ रिश्ता• ये इनीशियल सुरेह 19 और 38 में भी वाके होता है• अपनी साथी हुरूफों को सराहते हुए सुरेह 7 में एक 19 से तकसीम होता हुआ टोटल देने के लिए, सुरेह 19 और 38 में इस हुरूफ कि अकसरियत भी अपनी साथी हुरूफों को सराहती है एक 19 का ज़रप देने के लिए (देखें पेज 380)•

इसके अलावा, कुरानी इनीशियल “सा” (साद) राबता कायम करता है कुरानी इनीशियलें “क•ह•य•ऐ•” (काफ हा या ऐन) के साथ सुरेह 19 में एक दुसरा टोटल देने के लिए जो भी एक 19 का ज़रप है (देखें पेज 383)• ये आपस में गुथा हुआ रिश्ता — जो तन्हा नहीं है इनीशियल “सा” (साद) के लिए — मदद करता है बारीकी में कुरान के रियाज़ी कोड की•

क•ह•य•ऐ•स• (काफ हा या ऐन साद)

ये सबसे लम्बा इनीशियलों का गिरोह है, जिसमें है पाँच हुरूफें, और वाके होता है एक सुरेह, सुरेह 19 में• हुरूफ “क” सुरेह 19 में वाके होता है 137 बार, “ह” वाके होता है 175 बार, “य” वाके होता है 343 बार, “ऐ” वाके होता है 117 बार, और “सा” (साद) वाके होता है 26 बार• इस तरह, पाँच हुरूफों का टोटल वाके होना है 137+175+343+117+26 = 798 = 19x42•

ह•, त•ह• (ता हा), त•स• (ता सीन), और त•स•म• (ता सीन मीम)

एक बारीक आपस में गुथा हुआ रिश्ता मिलाता है इन जुड़े हुए कुरानी इनीशियलों को एक टोटल पैदा करने के लिए जो भी एक 19 का ज़रप है• इनीशियल “ह” पाया जाता है 19 और 20 सूरतों में• इनीशियलें “त•ह•” सुरेह 20 कि शुरूआत में आता है• इनीशियलें “त•स•” पाए जाते हैं सुरेह 27 में, जबके इनीशियलें “त•स•म•” उसकी इर्द गिर्द वाली सूरतें 26 और 28 कि शुरूआत में आते हैं•

टेबल 6 : वाके होना “ह,” “त•ह,” “त•स,” और ““त•स•म” कुरानी इनीशियलों का उनकी सूरतों में

सुरेह	कि अकसरियत			
नं•	"ह"	" त"	"स"	"म"
19	175	---	---	---

20	251	28	---	---
26	---	33	94	484
27	---	27	94	---
28	---	19	102	460
	426	107	290	944

426+107+290+944=1767=(19x93)

इस वक्त ये नोट करना ज़रूरी है के लम्बातर, ज़्यादा पेचीदा, आपस में गुथे हुए और जुड़े हुए इनीशियलें पाए जाते हैं उन सूरतों में जहाँ गैर मामूली ताकतवर मौजेज़ात बयान किए गए हैं• मिसाल के तौर पर, बिन ब्याही पैदाईश ईसा कि दी गई है सुरेह 19 में, जो सबसे लम्बे इनीशियलों के गिरोह, क•ह•य•ऐ•सा• से शुरू होता है•

टेबल 8 : 14 हुरूफें इस्तेमाल किया गया कुरानी इनीशियलों का रूप देने में

हुरूफ	वेल्यु	पहली सुरेह
अ (अलिफ)	1	2
ल (लाम)	30	2
म (मीम)	40	2
सा (साद)	90	7
र (रा)	200	10
क (काफ)	20	19
ह (हा)	5	19
य (या)	10	19
ऐ (ऐन)	70	19

आपस में गुथे हुए इनीशियलें “ह•,” “त•ह•,” “त•स•,” और “त•स•म•” मूसा, ईसा के मौजेज़ात और सुलैमान और उसके जिनों के इर्द गिर्द के गैर मामुली वाकयात बयान करती हुई सूरतों के शुरूआत में आते हैं• अल्लाह इस तरह अता करते हैं ज़्यादा ताकतवर सबूत ज़्यादा ताकतवर मौजज़ो कि मदद करने के लिए• अकसरियत इन इनीशियलों कि पेश की गई है टेबल 6 में•

“जिमेटरिकल वेल्यु” क्या है ?

जब कुरान नाज़िल हुआ था, 14 सदियों पहले, आज कि जानी हुई नम्बरें वजूद में न थीं• एक आम निज़ाम इस्तेमाल किया जाता था जहाँ पर अरबी, अब्रानी, अरामी और युनानी हरूफों को नम्बरों कि तरह इस्तेमाल किया जाता था• नम्बर मुर्कर्रर किया जाना हर हुरूफ को है उसका “जिमेटरिकल वेल्यु•” अददी वेल्युएं अरबी हुरूफ के बतलाए गए हैं टेबल 7 में•

टेबल 7 : जिमेटरिकल वेल्युएं अरबी हुरूफ कि

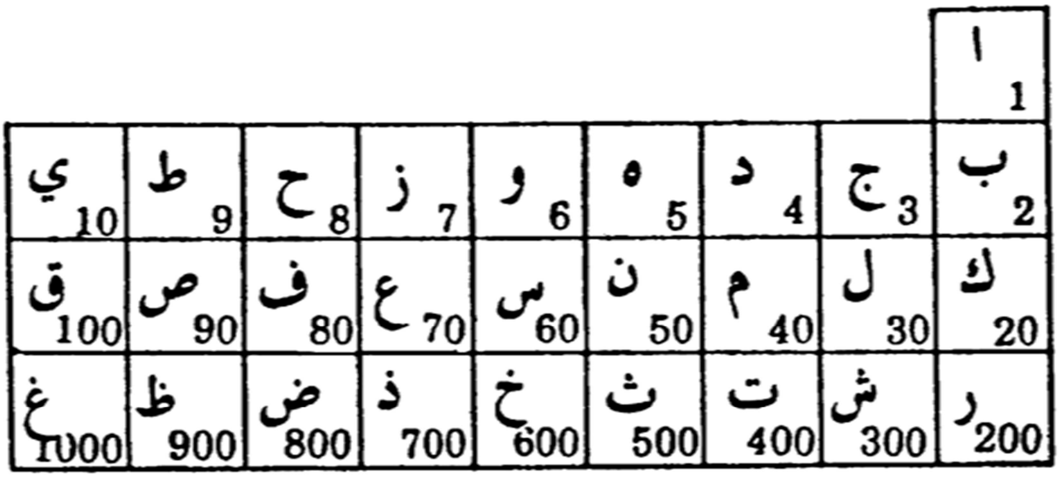

								ا 1
ي 10	ط 9	ح 8	ز 7	و 6	ه 5	د 4	ج 3	ب 2
ق 100	ص 90	ف 80	ع 70	س 60	ن 50	م 40	ل 30	ك 20
غ 1000	ظ 900	ض 800	ذ 700	خ 600	ث 500	ت 400	ش 300	ر 200

दूसरी रियाज़ी सिफतें

इनीशियल कि गई सूरतों कि

चौदाह अरबी हुरूफें, आधे अरबी हुरूफ, शामिल होते हैं 14 मुख्तलिफ कुरानी इनीशियलों के गिरोहों कि बनावट में• इन हर एक हुरूफों कि जिमेटरिकल वेल्यु जोड़ते हुए, साथ सूरतों का नम्बर जो कुरानी इनीशियलों (29) से शुरू होती हैं, हम पाते हैं एक टोटल 722 का, 19x19x2•

त (ता)	9	20
स (सीन)	60	26
हा (हा)	8	40
कॅ (कॉफ)	100	42
न (नून)	50	68
	693	295

693 + 295 = 998 = 19x52•

इसके अलावा 693 + 29 (सूरतें) = 722 = 19x19x2

उसके अलावा, अगर हम जमा करें टोटल जिमेटरिकल वेल्यु सारे 14 इनीशियलों कि, साथ पहली सुरेह का नम्बर जहाँ इनीशियल वाकै होता है, हम एक बड़ा टोटल 988, 19x52 का पाते हैं, टेबल 8 पेश करता है ये डेटा को•

अगर हम जमा करें हर 14 हुरूफों के वाकै होने का नम्बर जो टेबल 8 में एक इनीशियल कि तरह लिस्ट किया गया है, साथ सूरतों का नम्बर जहाँ वो एक इनीशियल कि तरह वाकै होता है, बड़ा टोटल आता है 2033 को, 19x107• टेबल 9 देखें•

टेबल 9 : रियाज़ी ढ़ाचेदार फैलाव कुरानी इनीशियलों का

इनीशियल	वाकै होने का नम्बर	सूरतें जहाँ वो वाकै होते हैं	टोटल
अ (अलिफ)	13	[+2+3+7+10+11+12+13 +14+15+29+30+31+32]	222
ल (लाम)	13	[+2+3+7+10+11+12+13 +14+15+29+30+31+32]	222
म (मीम)	17	[+2+3+7+13+26+28+29+30+31 +32+40+41+42+43+44+45+46]	519
सा (साद)	3	+7+19+38	67
र (रा)	6	+10+11+12+13+14+15	81
क (काफ)	1	+19	20
ह (हा)	2	+19+20	41
य (या)	2	+19+36	57
ऐ (ऐन)	2	+19+42	63
त (ता)	4	+20+26+27+28	105
स (सीन	5	+26+27+28+36+42	164
हा (हॅा)	7	+40+41+42+43+44+45+46	308
कॅ (कॉफ)	2	+42+50	94
न (नून)	2	+68	70
	79	1954	2033 (19x107)

टेबल 10 : टोटल जिमेटरिकल वेल्युएं
सारी कुरानी इनीशियलों कि उनकी सूरतों में

सुरेह	इनीशियलें	इनीशियलों की अकसरियत	टोटल वेल्य पूरी सुरेह में

टेबल 10 पेश करता है कुरानी इनीशियलों के हर गिरोह कि टोटल अकसरियत, साथ जिमेटरिकाल वेल्यु इन हुरूफों कि पूरे सुरेह में• बड़ा टोटल सारी इनीशियल की गई सूरतों का है 1089479• ये नम्बर, दस लाख से ज़्यादा में, 19 का ज़रप है (1089479 = 19x57341)• ज़रासी भी तबदीली या बिगाड़ निज़ाम को तबाह कर देती है•

नोट: टोटल जिमेटरिकल वेल्यु कुरानी इनीशियलों कि एक दी गई सुरेह में बराबर होती है जिमेटरिकल वेल्यु हर इनीशियल कि ज़रप किए गए उसके इनीशियल के वाकै होने कि अकसरियत के साथ उस सुरेह में•

2	अ•ल•म•	9899	188362
3	अ•ल•म•	5662	109241
7	अ•ल•म•सा•	5320	103719
10	अ•ल•र•	2489	80109
11	अ•ल•र•	2489	90190
12	अ•ल•र•	2375	77066
13	अ•ल•म•र•	1482	52805
14	अ•ल•र•	1197	46145
15	अ•ल•र•	912	29383
19	क•ह•य•ऐ•सा•	798	17575
20	त•ह•	279	1507
26	त•स•म•	611	25297
27	त•स•	121	5883
28	त•स•म•	581	24691
29	अ•ल•म•	1672	31154
30	अ•ल•म•	1254	25014
31	अ•ल•म•	817	16177
32	अ•ल•म•	570	11227
36	य•स•	285	5250
38	सा•	29	2610
40	हा•म•	444	15712
41	हा•म•	324	11424
42	हा•म•-ऐ•स•कॅ•	562	28224
43	हा•म•	368	13312
44	हा•म•	166	6128
45	हा•म•	231	8248
46	हा•म•	261	9288
50	कॅ	57	5700
68	न,न	133	6650
		41388	1048091

41388 + 1048091 = 1089479 (19x57341)

बड़ी हकीकतें कुरानी इनीशियलों कि (सूरतें, आयतें, अकसरियत, पहली सुरेह, और आखरी सुरेह)

टेबल 11 दिखाता है के सूरतों और आयतों के नम्बरों का जमा जहाँ कुरानी इनीशियलें पाए जाते हैं, साथ इनीशियल कि वाकै होने की अकसरियत उस सुरेह में, साथ पहली सुरेह का नम्बर जहाँ इनीशियलें पाए जाते हैं, साथ आखरी सुरेह का नम्बर जहाँ इनीशियलें वाकै होते हैं, पैदा करते हैं एक टोटल जो बराबर है 44232 के, या 19x2348• इस तरह, कुरानी इनीशियलों का फैलाव इनीशियल कि गई सूरतों में है इतना पेचीदा के उनकी गिनतियाँ और उनके ठिकाने सूरतों के दरमियान आपस में लिपटे हुए हैं एक बड़ा टोटल देने के लिए जो है 19 का ज़रप•

ये काबिले गौर है कि इनीशियल “न” ज़रूरी है दो न'ओं जैसे गिनें जाएँ• ये इस हकीकत कि तरफ इशारा करता है के पहली कुरानी मत्न हिज्जे करती है इस इनीशियल को 2 न'ओं के साथ•

टेबल 11 : हकीकतें 14 तन्हा कुरानी इनीशियलों कि

इनीशियल	सुरेह, आयत, और (अकसरियत) हर सुरेह में इनीशियल कि	पहली सुरेह	आखरी सुरेह
अ (अलिफ)	2:1 (4502), 3:1 (2521), 7:1 (2529), 10:1 (1319) 11:1 (1370), 12:1 (1306), 13:1 (605), 14:1 (585), 15:1 (493), 29:1 (774), 30:1 (544), 31:1 (347), 32:1 (257)	2	32
ल (लाम)	2:1 (3202), 3:1 (1892), 7:1 (1530), 10:1 (913), 11:1 (794), 12:1 (812), 13:1 (480), 14:1 (452), 15:1 (323), 29:1 (554), 30:1 (393), 31:1 (297), 32:1 (155)	2	32
म (मीम)	2:1 (2195), 3:1 (1249), 7:1 (1164), 13:1 (260) 26:1 (484), 28:1 (460), 29:1 (344), 30:1 (317), 31:1 (173), 32:1 (158), 40:1 (380), 41:1 (276), 42:1 (300), 43:1 (324), 44:1 (150), 45:1 (200), 46:1 (225)	2	46
सा (साद)	7:1 (97), 19:1 (26), 38:1 (29)	7	38
र (रा)	10:1 (257), 11:1 (325), 12:1 (257), 13:1 (137), 14:1 (160), 15:1 (96)	10	15
क (काफ)	19:1 (137)	19	19
ह (हा)	19:1 (175), 20:1 (251)	19	20
य (या)	19:1 (343), 36:1 (237)	19	36
ऐ (ऐन)	19:1 (117), 42:2 (98)	19	42
त (ता)	20:1 (28), 26:1 (33), 27:1 (27), 28:1 (19)	20	28
स (सीन)	26:1 (94), 27:1 (94), 28:1 (102), 36:1 (48), 42:2 (54)	26	42
हा (हॉ)	40:1 (64), 41:1 (48), 42:1 (53), 43:1 (44) 44:1 (16), 45:1 (31), 46:1 (36)	40	46
कॅ (कॉफ)	42:2 (57), 50:1 (57)	42	50
न (नून)	68:1 (133)	68	68
	43423	295	514
	बड़ा टोटल = 43423+295+514 = 44232 = 19x2328		

एक खास रियाज़ी कोड दिया जाना सावित करता है आयतों का नम्बर जहाँ खुद कुरानी इनीशियलें पाए जाते हैं• जैसा टेबल 11 में तफसील किया गया है, सारी कुरानी इनीशियलें आयत 1 में वाके होते हैं, सिवाए (1 और 2 आयतों में इनीशियलें) सुरेह 42 में • ये हकीकत मदद की गई है गैर मामुली रियाज़ी कुदरत से जो टेबल 12 में तफसील कि गई है• अगर हम टेबल 12 कि पहली दो कॉलमों को ज़रप करें, जोड़ने के बजाए, हमें फिर भी टोटल मिलता है जो 19 से तकसीम हो जाता है (टेबल 13 देखें)•

ज़ाहिर है, ये ज़रूरी है दो मुख्तलिफ इनीशियल कि गई आयतों का होना सुरेह 42 में ताके कुरान के रियाज़ी कोड के मुताविक हो• हकीकत ये के सुरेह 42 कि आयत 1 में है दो कुरानी इनीशियलें "हा•म•" और दूसरी आयत में है तीन इनीशियलें "ऐ•स•कॅ" ने हैरान किया है मुस्लिम आलिमों और माहिरों को 14 सदियों तक•

टेवल 12 : रियाज़ी कोड दिया जाना आयतों के नम्बर को इनीशियलों के साथ

सुरेह न•	इनीशियलों का न•	इनीशियल कि गई आयतें
2	3	1
3	3	1
7	4	1
10	3	1
11	3	1
12	3	1
13	4	1
14	3	1
15	3	1
19	5	1
20	2	1
26	3	1
27	2	1
28	3	1
29	3	1
30	3	1
31	3	1
32	3	1
36	2	1
38	1	1
40	2	1
41	2	1
42	5	2
43	2	1
44	2	1
45	2	1
46	2	1
50	1	1
68	2	1
822	79	30
822 + 79 + 30 = 931 (19x49)		

इस अपेन्डिक्स के खत्म होते, पढ़ने वाला देखेगा कि कुरान का हर हिस्सा रियाज़ी तौर पर सावित किया गया है• हिस्से जिनकी हम अभी बात कर रहे हैं "नम्बर कुरानी इनीशियलों का हर इनीशियल कि गई सुरेह में" और "आयतों का नम्बर जिनमें कुरानी इनीशियलें हैं•" टेवल 11 से 13 ने ज़हिर किया है इन दो हिस्सों को•

टेवल 13 : टेवल 12 कि पहले दो कॉलमों का ज़रप करते हुए बजाए जमा करने के

सुरेह न•	इनीशियलों का न•	इनीशियल कि गई आयातें का न•
2	3	1
3	3	1
7	4	1
-	-	-
42	5	2
-	-	-
50	1	1
68	2	1
…………………..........		……
2022		30
2022 + 30 = 2052 (19x108)		

इसके अलावा रियाज़ी सबूत दिखाया गया है टेवल 14 और 15 में• टेवल 14 में, हमारे पास है सारे इनीशियल कि गई सूरतों के नम्बरें जोड़े गए हर सुरेह में आयतों के नम्बर के साथ, साथ आयतों में शामिल इनीशियलों का नम्बर, साथ जिमेटरिकल वेल्युएं उन इनीशियलों कि• बड़ा टोटल है 7030, या 19x370•

टेवल 14 : रियाज़ी सिफतें इनीशियल कि गई सूरतों कि

सुरेह नम्वर		आयतों का नम्वर		इनीशियल कि गई आयतों का नम्वर		इनीशियलों कि जिमेटरिकल वेल्यु		टोटल
2		286		1		71		360
3		200		1		71		275
7		206		1		161		375
10		109		1		231		351
11		123		1		231		366
12		111		1		231		355
13		43		1		271		328
14		52		1		231		298
15		99		1		231		346
19		98		1		195		313
20		135		1		14		170
26		227		1		109		363
27		93		1		69		190
28		88		1		109		226
29		69		1		71		170
30		60		1		71		162
31		34		1		71		137
32		30		1		71		134
36		83		1		70		190
38		88		1		90		217
40		85		1		48		174
41		54		1		48		144
42		53		2		278		375
43		89		1		48		181
44		59		1		48		152
45		37		1		48		131
46		35		1		48		130
50		45		1		100		196
68		52		1		50+50		221
- - -		- - -		- - -		- - - -		- - - -
822	+	2743	+	30	+	3435	=	7030 (19x370)

अजीब तौर से, अगर हम ज़रप करें टेवल 14 के पहले दो कॉलमों को, बजाए उनको जमा करते हुए, **हमें फिर भी एक बड़ा टोटल मिलता है जो 19 से तकसीम हो जाता है** (टेवल 15)•

हर सुरेह में आयतों कि तादाद, और नम्वरें दिया जाना हर आयत को हैं कुरान के वुनियादी हिस्से• ये हिस्से रियाज़ी तौर पर सावित ही नहीं किए गए, वलिके दोनों इनीशियल कि गई और गैर इनीशियल कि गई सूरतें अलहायदगी से कोड किए गए हैं• चुँकि हम अव इनीशियल सूरतों कि वात कर रहे हैं, टेवल 16 पेश करता है नम्वरें दिया जाना इन सूरतों को, जमा करते हुए हर सुरेह में आयतों के नम्वरें, साथ आयत के नम्वरों का जमा (1+2+3+…+ n)• वड़ा टोटल है 190133, या 19x10007•

टेवल 15 : ज़रप करते हुए टेवल 14 कि पहले 2 कॉलमों को, वजाए उन्हें जोड़ते हुए

सुरेह नम्बर		आयतों का नम्बर		इनीशियल कि गई आयतों का नम्बर		इनीशियलों कि जिमेटरिकल वेल्यु		टोटल
2	x	286	+	1	+	71	=	644
3	x	200	+	1	+	71	=	672
7	x	206	+	1	+	161	=	1604
-		-		-		-		-
50	x	45	+	1	+	100	=	2351
68	x	52	+	1	+	(50+50)	=	3637
- - - - - - - - - - - - - - - -				- - - -		- - - - -		- - - -
60071			+	30	+	3435	=	63536 (19x3344)

टेवल 17 : हासिल हुई वेल्युएं सुरेह नम्बरों को मुसलसल जमा करते हुए

सुरेह नम्बर	केल्कुलेट कि गई वेल्यु
2	3
3	6
7	28
10	55
11	66
12	78
13	91
14	105
15	120
19	190
20	210
-	-
44	990
45	1035
46	1081
50	1275
68	2346

15675 (19x825)

हर सुरेह के नम्बर को अगली सुरेह के नम्बर से जोड़ते हुए, और सुरेह नम्बरों के मजमुओं को जमा करते हुए जैसे हम इस अमल को कुरान के आखीर तक जारी रखते हैं, हमारे पास होगा एक वेल्यु जो मुताबिक होगा हर सुरेह के• इस तरह, सुरेह 1 के पास होगा एक मुताबिक वेल्यु 1 का, सुरेह 2 के पास होगा एक

वेल्यु 1+2=3 का, सुरेह 3 के पास होगा एक वेल्यु 3+3=6 का, सुरेह 4 के पास होगा एक वेल्यु 6+4=10 का, और इस तरह कुरान के आखीर तक• इनीशियल और गैर इनीशियल कि गई सूरतों कि टोटल वेल्युएं अलहायदगी से 19 से तकसीम हो जाती हैं• इनीशियल कि गई सूरतों कि वेल्युएं दिखाई गई हैं टेबल 17 में•

टेबल 16 : रियाज़ी ढाचा दिया जाना इनीशियल कि गई सूरतों कि आयतों का

सुरेह न•	आयतों कि न•	आयत # तों का जमा	टोटल
2	286	41041	41329
3	200	20100	20303
7	206	21321	21534
-	-	-	-
50	45	1035	1130
68	52	1378	1498
822	2743	186568	190133 (19x10007)

केल्कुलेट हुई गैर इनीशियल कि गई सूरतों कि वेल्युएं जुड़ती हैं 237785 टोटल को, जो भी है एक 19 का ज़रप (237785 = 19x12515)•

खास लफ्ज़ों का रियाज़ी कोड दिया जाना

लफ्ज़ "अल्लाह"

[1] जैसा पहले दिखाया गया लफ्ज़ "अल्लाह" कुरान में वाके होता हैं 2698 बार, 19x142•

[2] आयतों के नम्बरें जहाँ लफ्ज़ "अल्लाह" वाके होते हैं जुड़ते हैं 118123 को, एक और 19 का ज़रप (118123 = 19x6217)•

सिर्फ लफ्ज़ "अल्लाह" गिनते हुए ये सादे मौजज़ों ने हमें कई दिक्कतें दिया• हम कम्प्युटरों के साथ आरास्ता किए गए मुलाज़िमों कि एक जमात थे, और हम सारे कॉलेज ग्रेजुएटस• इस के बावजूद, हमने कई गलतियाँ कि गिनने में, हिसाब करते हुए, या सिर्फ लफ्ज़ "अल्लाह" कि गिनती लिखते हुए• जो कोई अब भी दावा करते हैं कि मुहम्मद मुसन्निफ थे कुरान के हैं पूरी तरह नामाकूल; वो कभी कॉलेज नहीं गये और उनके पास नहीं था कम्प्युटर•

टेबल 18: वाकैयात लफ्ज़ "अल्लाह" का इनीशियल किए गए हिस्से के बाहर

सुरेह का नम्बर	आयतों के नम्बरें	बार वाके होना
1	1,2	2
69	33	1
70	3	1
71	3,4,13,15,17,19,25	7
72	4,5,7,12,18,19,22,23	10
73	20	7
74	31, 56	3
76	6, 9, 11, 30	5

79	25	1
81	29	1
82	19	1
84	23	1
85	8, 9, 20	3
87	7	1
88	24	1
91	13	2
95	8	1
96	14	1
98	2, 5, 8	3
104	6	1
110	1, 2	2
112	1, 2	2
1798	634	57 (19x3)

सूरतों और आयतों के नम्बरों का जमा = 1798 + 634 = 2432 = 19x128.

टोटल वाकैयात लफ्ज़ “अल्लाह” का इनीशियल किए गए हिस्से के बाहर = 57(19x3)•

[3] पहली कुरानी इनीशियलों (अ•ल•म• 2:1) से लेकर आखरी इनीशियल (न• 68:1) तक, वहाँ लफ्ज़ “अल्लाह” वाक़े होते हैं 2641 बार, 19 x 139•

[4] लफ्ज़ अल्लाह 57 बार वाक़े होते हैं इनीशियलों के बाहरी वाले हिस्से में (टेबल 18)•

[5] सूरतों और आयतों के नम्बरो को जोड़ते हुए जहाँ ये 57 बार वाक़े हुए लफ्ज़ “अल्लाह” पाए जाते हैं, हम पाते हैं एक टोटल 2432 का, या 19x128• देखें टेबल 18•

[6] लफ्ज़ अल्लाह 85 सूरतों में वाक़े होते हैं• अगर हम पहली और आखरी लफ्ज़ “अल्लाह” के वाक़े होने के दरमियान हर सुरेह के नम्बर को आयतों के नम्बरों से जोड़ें, दोनों आयतें शामिल करते हुए, बड़ा टोटल आता है 8170 को या 19 x 430• डेटा का मुखतसर पेशकश दिखाया गया है टेबल 19 में•

टेबल 19: सारी सूरतें जिनमें लफ्ज़ “अल्लाह” बयान किया गया है

नं•	सुरेह नं•	पहली आयत	आखरी आयत	आयतें पहली से आखीर
1.	1	1	2	2
2.	2	7	286	280
3.	3	2	200	199
-	-	-	-	-
83	104	6	-	1
84.	110	1	2	2
85.	112	1	2	2
	3910			4260

3910 + 4260 = 8170 = 19x430

ये रियाज़ी सिफ्तें शामिल करते हैं सारे वाकैयात लफ्ज़ “अल्लाह” के•

बेहद एहमियत लफ्ज़ “एक” की कुरान का बुनियादी पैगाम जैसा वाज़े किया गया है इस हकीकत में कि कुरान का कॉमन डिनोमिनेटर, 19 होता है लफ्ज़ “एक” का जिओमेट्रिकल वेल्यु•

[7] कुरान का ज़बरदस्त पैगाम है कि सिर्फ “एक अल्लाह” हैं• लफ्ज़ “एक” अरबी में “वाहिद” वाक़े होता कुरान में 25 बार• इन में से छ: वाकैयात अल्लाह के अलावा किसी और का हवाला देते हैं (एक किस्म का खाना, एक दरवाज़ा, वगैरह वगैरह)• दूसरी 19 वाकैयात अल्लाह का हवाला देते हैं• ये डेटा आला दर्जे का हवाला **कुरान कि लफ्ज़ों कि फेरिस्त** में पाए जाते हैं•

19 क्यों!

जैसा दिखाया गया है इस अपेन्डिक्स कि आखीर में, अल्लाह कि सारी आसमानी किताबें, सिर्फ कुरान हि नहीं, कोड किया गया था रियाज़ी तौर पर नम्बर “19” के साथ• यहाँ तक के कायनात भी आम तौर पर बरकरार रखती है इस रब्बानी निशान को• नम्बर 19 देखा जा सकता है हकताला पैदा करने वाले के दस्तखत जैसा हर चीज़ पर उन्होंने बनाए हैं (अपेन्डिक्स 38 देखें)• नम्बर “19” रखता है इस अपेन्डिक्स कि गुंजाईश के बाहर बेमिसाल रियाज़ी सिफतें• मिसाल के तौर पर:

[1] वो है एक प्राइम नम्बर•

[2] वो शामिल करता है पहली गिनती (1) और आखरी गिनती (9), ऐसा जैसे अल्लाह कि सिफत 57:3 में ऐलान करने के लिए "पहला और आखरी" जैसा•

> **रब हमारे अल्लाह एक हैं!**
> **इसलिए, तुम्हें इबादत करनी चाहिए**
> **रब तुम्हारे अल्लाह**
> **तुम्हारे पूरे दिल से,**
> **तुम्हारे पूरे रूह से,**
> **तुम्हारे पूरे दिमाग से,**
> **और तुम्हारी पूरी ताकत से•**
> **[डुटोरोनोमी 6:4-5]**
> **[मार्क 12:29]**
> **[कुरान 12:163, 17:22-23]**

[3] दुनिया कि सारी ज़बानों में वो एक जैसा दिखता है• दोनों हिस्से, 1 और 9, हैं सिर्फ गिनतीयाँ जो एक जैसा दिखते हैं सारे ज़बानों में•

[4] वो रखता है कई खास रियाज़ी सिफतें• मिसाल के तौर पर, 19 जमा है पहली कुवतें 9 और 10 कि, और फरक 9 और 10 कि दूसरी कुवतों के बीच कि•

हम अब समझते हैं कि आलमी कोड दिया जाना अल्लाह कि मखलूकों को साथ नम्बर 19 के रहता है इस हकीकत में कि वो जिमेटरिकल वेल्यु है लफ्ज़ "एक" का हर आसमानी किताबी ज़बानों में — अरामी, अब्रानी, और अरबी•

नम्बर 19, इसलिए, ऐलान करता है **पहला** हुक्म सारी आसमानी किताबों में: कि सिर्फ **एक** अल्लाह है•

जैसा टेबल 7 में दिखाया गया है, कायम किए गए आलमी निज़ाम के मुताबिक अरामी, अब्रानी, और अरबी हुरूफें इस्तेमाल किए गए तबदील होते हैं गिनती जैसे• अब्रानी लफ्ज़ "एक" के लिए है "वहद" (कहे जाते हैं वाहद)• अरबी में, लफ्ज़ "एक" के लिए है "वहद" (कहे जाते हैं वाहिद)• टेबल 20 देखें•

लफ्ज़ "कुरान"

लफ्ज़ "कुरान" 58 बार वाके होता है, उनमें से एक, 10:15 में, "दूसरे कुरान" का हवाला देते हुए के साथ• ये खास वाकेयाह, इसलिए, ज़रूरी है खारिज किया जाए• इसतरह, "इस कुरान" के वाके होने कि अकसरियत
कुरान में है 57 बार, या 19x3•

टेबल 21: सूरतें और आयते जहाँ "कुरान" वाके होता है

सुरेह	आयत	सुरेह	आयत
2	185	30	58
4	82	34	31
5	101	36	2
6	19	-	69
7	204	38	1
9	111	39	27
10	37	-	28
-	61	41	3
12	2	-	26
-	3	42	7
15	1	43	3
-	87	-	31
-	91	46	29

टेबल 20: "19 क्यों!"

हुरूफ		
अब्रानी	अरबी	वेल्यु
व	व	6
अ	अ	1
ह	ह	8
द	द	4
		....
		19

16	98
17	9
-	41
-	45
-	46
-	60
-	78
-	82
-	88
-	89
-	106
18	54
20	2
-	113
-	114
25	30
-	32
27	1
-	6
-	76
-	92
28	85

47	24
50	1
-	45
54	17
-	22
-	32
-	40
55	2
56	77
59	21
72	1
73	4
-	20
75	17
-	18
76	23
84	21
85	21
……..	…….
1356	3052
1356 + 3052 = 4408 (19x232)	

दूसरे दो कवायदी सूरतें लफ्ज़ "कुरान" के वाकै होते हैं 12 आयतों में• ये शामिल करते हैं लफ्ज़ "कुरानुन" और लफ्ज़ "कुरानहु•" इन में से एक वाकैयात, 13:31 में हवाला देता है "दूसरे कुरान" का जो पहाड़ों को रेज़ा-रेज़ा करने का सबब बनता है• दूसरा वाकैयाह, 41:44 में, हवाला देता है "एक गैर अरबी कुरान" का• ये दो वाकैयात, इसलिए, खारिज किए गए हैं• टेबल 21 सूरतों और आयतों का एक लिस्ट दिखाता है जहाँ लफ्ज़ "कुरान," अपने सारे कवायदी सूरतें में, वाकै होते हैं•

एक मज़बूत बुनियाद

कुरान कि पहली आयत, "अल्लाह के नाम से, सबसे महेरवान, सबसे रहमवाले," जाना जाता है बिसमिल्लाह जैसा, शामिल करता है 19 अरबी हुरूफें• उसके हिस्से वाले लफ्ज़ कुरान में बाअसूल 19 के ज़रप में वाकै होते हैं•

पहला लफ्ज…………… "इस्म" (नाम)……………वाकै होता है……...19 बार•
दूसरा लफ्ज़ ……………."अल्लाह" (अल्लाह)……….वाकै होता है…….. 2698 बार (19x142)•
तीसरा लफ्ज……………"अल-रहमान" (सबसे महेरवान) ………………..57 बार, 19x3•
चौथा लफ्ज़……………"अल-रहीम" (सबसे रहमवाले) …………………….114 बार, 19x6•

प्रोफेसर सीज़र

माजुल ने अल्लाह कि 400 सिफतों से ज़्यादा कि जिमेटरिकल वेल्यु कि तरफ देखा, और पाया सिर्फ चार नामों को जिनकी जिमेटरिकल वेल्युएं हैं 19 का ज़रप:

खुदाई नाम	जिमेटरिकल वेल्यु
1. “वाहिद” (एक)...	19
2. “जुल फदल अल-अज़ीम (लामहदूद रहमत के मालिक)...................................	2698
3. “मजीद” (अज़ीमुश्शान)..	57
4. “जामी” (जमा करने वाले)...	114

जैसा ऊपर नोट किया गया है, जिमेटरिकल वेल्युएं सिर्फ उन खुदाई नामों कि जो 19 से हैं काबिले तकसीम ठीक ठीक जुड़ते हैं **बिस्मिल्लाह** के चार लफ्ज़ों कि वाकै होने कि अकसरियतों से:

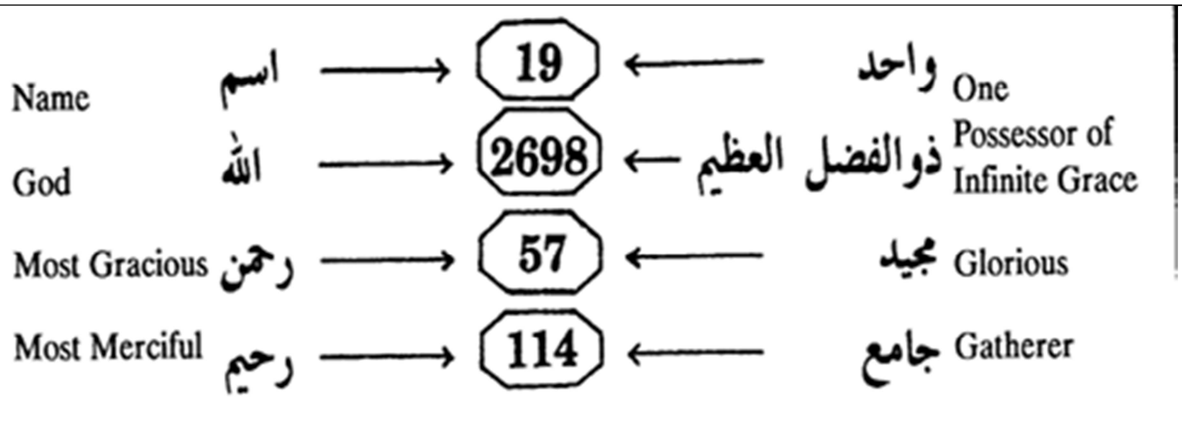

*The four words of **Basmalah** are shown on the left side, and the only four divine names whose gematrical values are divisible by 19 are on the right side. The numbers in the middle are the frequencies of occurrence of the words of **Basmalah**, and, at the same time, the gematrical values of the four divine names.*

बिस्मिल्लाहके चार लफ्ज़ों को दिखाया गया हैं बांयी तरफ, और जिमेटरिकल वेल्युएं सिर्फ उन खुदाई नामों कि जो 19 से हैं काबिले तकसीम हैं दाहिनि तरफ• बीच में हैं नम्बरें **बिस्मिल्लाह** के वाकै होने कि अकसरियतों के, और, उसी के साथ, जिमेटरिकल वल्युएं चार खुदाई नामों की•

इस्लाम के पाँच खम्भे

हाँलाके कुरान मुहय्या करता है कई ऐहम एहकामात हमारी ज़िन्दगियों कि सारी पहलुओं को चलाने के लिए (मिसाल के तौर पर देखें 7:22-38), पाँच बुनियादी “खम्भे” रिवायती तौर पर ज़ोर दिए गए हैं• वो हैं:

टेवल 22: पहला वाकेया **ला इलाहा इल्ला हू** से आखरी वाकेया तक सारी सूरतें और आयतें •

शुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत #ों का जमा	टोटल
2	123	27675	27800
3	200	20100	20303

1. *शहादाह*: गवाही देना कि कोई खुदा नहीं अल्लाह के अलावा•

2. *सलात*: रोज़ाना कि पाँच वक्त कि राबता नमाज़ें अदा करना•

3. *सियाम*: इस्लामी कैलेन्डर (रमज़ान) कि नवी महीने के दरमियान रोज़ा रखना•

4. *ज़कात*: मखसूस लोगों को अपनी खालिस आमदनी में से 2.5% देना खैरात के तौर पर•

5. *हज*: ज़ियारत करना मक्का कि अरसा-ए-हयात में एक बार उनके लिए जो उसकी हैसियत रखते हैं•

-	-	-	-
9	127	8128	8264
-	-	-	-
72	28	406	506
73	9	45	127
……..	……	……..	……..
2700	5312	308490	316502 (19x16658)

दूसरी हर चीज़ कि तरह कुरान में, ये रियाज़ी तौर पर तरतीब किए गए हैं•

1. एक अल्लाह (शहादाह)

जैसा पहले तज़किरा किया गया है, लफ्ज़ "एक" जो अल्लाह का हवाला देते हैं वाके होते हैं कुरान में 19 बार• अल्लाह के लिए हवाला "सिर्फ" वाके होता है 5 बार, सुरेह और आयत के नम्बरों का जमा जहाँ हम ये पाँच वाकैयात पाते हैं है 361, 19x19•

"इस्लाम का पहला खम्भा" ज़िकर किया गया है 3:18 में "**ला इलाहा इल्ला हू**" जैसा (कोई खुदा नहीं सिवाए उनके)• ये सबसे ज़रूरी कलमा वाकै होता है 19 सूरतों में• पहला वाकेया है 2:163 में, और आखरी वाकेया है 73:9 में• टेबल 22 दिखाता है के सुरेह नम्बरों का टोटल, साथ आयतों का नम्बर पहली और आखरी वाकेयात के दरमियान, साथ इन आयत के नम्बरों का जमा है 316502, या 19x16658•

इसके अलावा, 19 सूरतों को जोड़ते हुए जहाँ **ला इलाहा इल्ला हू** वाकै होता है, साथ आयत कि नम्बरें जहाँ ये एहम कलमा पाया जाता है, इसके साथ वाकेयात होने का टोटल नम्बर (29), बड़ा टोटल आता है 2128 को, या 19x112• तफसीलें टेबल 23 में दिखाई गई हैं•

टेबल 23: एहम जुमला: "**ला इलाहा इल्ला हू**" (कोई खुदा नहीं सिवाए उनके) सारे वाकेयातों का लिस्ट

नं•	सुरेह नं•	आयतें शहादाह के साथ	शहादाह कि अकसरियत
1	2	163, 255	2
2	3	2, 6, 18, 18	4
3	4	87	1
4	6	102, 106	2
5	7	158	1
6	9	31	1
7	11	14	1
8	13	30	1
9	20	8, 98	2
10	23	116	1
11	27	26	1
12	28	70, 88	2
13	35	3	1
14	39	6	1
15	40	3, 62, 65	3
16	44	8	1
17	59	22, 23	2
18	64	13	1
19	73	9	1
	……	……….	………
	507	1592	29
	507 + 1592 + 29 = 2129 = 19x112		

2. राबता नमाज़ "सलात":

लफ्ज़ “**सलात**” कुरान में वाके होता है 67 बार, और जब हम जोड़ें इन 67 वाकेयात के सूरतों और आयतों के नम्बरों को, टोटल आता है 4674, या 19x246 (देखें कुरान कि फैहरिस्त)•

3. <u>रोज़ा (सियाम):</u>

एहकाम रोज़ा रखनेका तज़किरा किया गया है 2:183, 184, 185, 187, 196, 4:92; 5:89 95; 33:35, 35; 58:4 में• इन नम्बरों का टोटल है 1387, या 19x73• ये काबिले गौर है के 33:35 ज़िकर करता है दो बार रोज़ा रखना, एक ईमानवाले मर्दो के लिए, और दूसरा ईमानवाली औरतों के लिए•

4. <u>ज़रूरी खेरात (ज़कात):</u> और
5. <u>मक्के कि ज़ियारत हज:</u>

जबके पहले तीन “इस्लाम के खम्भे” ज़रूरी हैं सारे मुसलमान मर्दो और औरतों पर, *ज़कात* और *हज* हुक्म हुआ है सिर्फ उनके लिए जो उनकी हैसियत रखते हैं• ये समझाता है एक दिलचस्प रियाज़ी मौजेज़ा *ज़कात* और हज के मुताल्लिक•

ज़कात खैरात बयान किया गया है 2:43, 83, 110, 177, 277; 4:77, 162; 5:12, 55, 7:156; 9:5, 11, 18, 71; 18:81; 19:13, 31, 55; 21:73; 22:41, 78; 23:4; 24:37, 56; 27:3; 30:39; 31:4; 33:33; 41:7; 58:13; 73:20; और 98:5 में• ये सारे नम्बर जमा होते हैं 2395 को• ये टोटल एक ठीक ठीक 19 के ज़रप को नहीं बनाता; वो 1 है से ऊपर•

ज़ियारत हज वाके होता है 2:189, 196, 197; 9:3; और 22:27 मे• ये नम्बरें जमा होते हैं 645 को, और ये टोटल एक ठीक ठीक 19 के ज़रप को नहीं बनाता; वो 1 से नीचे है•

इसतरह, *ज़कात* और *हज,* साथ में, देते हैं एक टोटल 2395 + 645 = 3040 = 19x160•

कुरान का रियाज़ी ढ़ाचा

कुरान कि सूरतें, आयतें, लफ्ज़ें, और हुरूफों को हि नहीं रियाज़ी तौर पर तरतीब किया गया है, बलिके बंदोबस्त किया गया है एक गैरमामुली ढ़ाचे में जो खालिस रियाज़ी है, यानी, अदबी मज़मून का कोई सरोकार नहीं एसे इंतेज़ाम से•

चुँकि कुरान कि जिस्मानी बनावट खालिस रियाज़ी है, उम्मीद किया जाना चाहिए कि कुरान में बयान किए गए अददें ज़रूरी हैं मुताबिक हो कुरान के 19-पर बने कोड के साथ•

टेबल 24: सारी कुरानी अददें

<u>नम्बर</u>	<u>मिसाल का ठिकाना</u>
1	2:163
2	4:11
3	4:171
4	9:2
5	18:22
6	25:59
7	41:12
8	69:17
9	27:48
10	2:196
11	12:4
12	9:36
19	74:30
20	8:65
30	7:142
40	7:142
50	29:14
60	58:4
70	9:80
80	24:4
99	38:23
100	2:259
200	8:65
300	18:25
1000	2:96
2000	8:66
3000	3:124
5000	3:125
50000	70:4
<u>100000</u>	37:147
162146 (19x8534)	

कुल 30 यकता अददें बयान कि गई हैं पूरे कुरान में, और इन सारे नम्बरों का जमा है 162146, एक 19 का ज़रप (162146 = 19x8534)• टेबल 24 कुरान में बयान किए गए सारे नम्बरों को लिस्ट करता है, बगैर दोहराए•

अददें जो कुरान में सिर्फ एक दफा बयान कि गई हैं: 11, 19, 20, 50, 60, 80, 99, 300, 2000, 3000, 5000, 50000, और 100000•

कुरान में बयान किए गए सारे नम्बर, दोहराए जाने के साथ, वाके होता है 285 दफा, और ये नम्बर 19 का ज़रप है; 285 = 19x15•

सूरतों और आयतों कि नम्बरें

कुरान के सूरतों और आयतों का रियाज़ी निज़ाम सही तौर पर महफूज़ रखा गया है• सिवाए कुछ नाजाएज़ और आसानी से पता लगने वाली छपाईयाँ इख्तेलाफ रखती हैं मयारी निज़ाम से जो रब्बानी तौर पर महफूज़ है•

जब हम जमा करते हैं सारी सूरतों के नम्बरों को, साथ हर सुरेह में आयतों के नम्बर को, साथ आयत के नम्बरों का जमा, पूरी कुरान का बड़ा टोटल आता है 346199 को, 19x19x959• टेबल 25 इन डेटा कि एक छोटी पेशकश है• इस तरह, एक सुरेह या आयत कि ज़रा सी भी तबदीली इस निज़ाम को तबाह कर दी होती• जैसा टेबल 16 में दिखाया गया है, अगर हम सिर्फ 29 इनीशियल कि गई सूरतों पर गौर करें, ये वही डेटा पैदा करते हैं एक बड़ा टोटल जो भी एक 19 का ज़रप है• वो इस तरह चलता है के गैर इनीशियल कि गई सूरतों के लिए डेटा भी 19 से तकसीम हो जाता है•
टेबल 26 वही डेटा कि एक छोटी पेशकश है 85 गैर इनीशियल कि गई सूरतों के मुताल्लिक•

टेबल 25 : सुरेह और आयत नम्बरों को रियाज़ी कोड देना•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत # ों का जमा	टोटल
1	7	28	36
2	286	41041	41329
-	-	-	-
9	127	8128	8264
-	-	-	-
113	5	15	133
114	6	21	141
— —	— — —	— —	— — —
6555	6234	333410	346199 (19x19x959)

टेबल 26 : 85 गैर इनीशियल कि गई सूरतों को रियाज़ी कोड देना

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत # ों का जमा	टोटल
1	7	28	36
4	176	15576	15756
-	-	-	-
9	127	8128	8264
-	-	-	-
113	5	15	133
114	6	21	141
5733	3491	146842	156066 (19x8214)

गैरमामुली अददी तरतीबें

चलें हम लिखें कुरान में हर आयत के नम्बर को, उस सुरेह में शुरू करें हर सुरेह कि आयतों के नम्बर से• इसतरह, सुरेह 1, जिसमें हैं 7 आयतें, नुमाइंदगी कि जायेगी नम्बर 7 1234567 से• हम जो कर रहे हैं वो है लम्बे नम्बरों को यहाँ शक्ल देना आयतों के नम्बरों को एक दूसरे के आस पास लिखते हुए• सुरेह 2 कि नुमाइंदगी करता नम्बर को पता लगाने के लिए, आप लिखें आयतों का नम्बर 286, इस सुरेह में, उसके बाद हर आयत का नम्बर, लिखा गया एक दूसरे के आस पास• इस तरह, सुरेह 2 कि नुमाइंदगी करता नम्बर यूँ दिखेगा: 286 12345.....284285286• पहली दो सूरतों कि नुमाइंदगी करते दो नम्बरें हैं:

7 1 2 3 4 5 6 7 और 286 1 2 3 4 5 .....284 285 286.

इन दो नम्बरों को एक साथ रखते हुए ताके पहली दो सूरतों कि नुमाइंदगी करता एक नम्बर बने, हमे ये नम्बर मिलता है:

7 1 2 3 4 5 6 7 286 1 2 3 4 5.....284 285 286.

ये तरीका जारी रहता है जब तक कुरान में हर आयत लिखली नहीं जाती है, इस तरह शक्ल देना एक बहुत लम्बा नम्बर जो शामिल करता है कुरान में हर आयत के नम्बर को• पूरे कुरान कि नुमाइंदगी करता नम्बर है **एक 19 का ज़रप और शामिल करता है 12692 अददें, जो भी एक 19 का ज़रप है•**

7 1234567 286 12345...286 ...5 12345 6 123456

पहला नं•: ये बहुत लम्बा नम्बर शामिल करता है 12692 अददों को (19x668) और कुरान में हर आयत को शामिल करता है• हर सुरेह में आयतों का नम्बर उसकी आयतों से पहले आता है• एक खास कम्प्युटर प्रोग्राम जो काफी लम्बे नम्बरों को तकसीम करता है दिखाया है कि ये लम्बा नम्बर है 19 का ज़रप•

बजाए डालते हुए हर सुरेह में आयतों के टोटल नम्बर को सुरेह से पहले, चलें उसे हर सुरेह कि आखरी में डालें• इस तरह, सुरेह 1 कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह नज़र आयेगा: 1234567 7, बजाए 7 1234567• सुरेह 2 कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह नज़र आयेगा: 12345.....284 285 286 286 बजाए 286 12345.....284285286 के• पहली दो सूरतों कि नुमाइंदगी करते नम्बरें इस तरह नज़र आयेंगे:

1 2 3 4 5 6 7 7 और 1 2 3 4 5.....284 285 286 286.

पहली दो सूरतों कि नुमाइंदगी करता एक लम्बा नम्बर बनाने के लिए इन दो नम्बरों को एक साथ लिखते हुए, हम पाते हैं एक नम्बर जो इस तरह नज़र आता है:

1 2 3 4 5 6 7 7 1 2 3 4 5.....284 285 286 286.

चुँकि हम डाल रहे हैं हर सुरेह में आयतों कि टोटल नम्बर को हर सुरेह कि आखरी में, हमें ज़रूरी है डालना कुरान के आखीर में नम्बर दी गई आयतों (6234) के टोटल नम्बर को• पिछली नम्बरें, इसलिए, नुमाइंदगी करती है आखरी सुरेह कि (123456 6), उस के बाद कुरान में नम्बर दी गई आयतों का टोटल नम्बर (6234):

1 2 3 4 5 6 6 और 6234 > > >1 2 3 4 5 6 6 6234.

सारी सूरतों कि सारी आयतों को एक साथ डालते हुए, पैदा करता है एक लम्बा नम्बर जिस में है 12696 अददें, और **है एक 19 का ज़रप•**

1234567 7 12345...286 286 12345 5...123456 6 6234

दूसरा नं•: हर सुरेह में आयतों के नम्बर के पीछे हर सुरेह में हर आयत का नम्बर• यहाँ दिखाई गई पिछली 11 अददें हैं आखरी सुरेह कि 6 आयतें, बाद उसके आयतों का नम्बर (6), उसके बाद कुरान में नम्बर दी गई आयतों का नम्बर (6234)• मुकम्मल, बहुत बड़ा नम्बर, है 19 का ज़रप•

चलें अब हम शामिल करें हर सुरेह का नम्बर•

लिखें हर सुरेह में हर आयत का नम्बर, उसके बाद सुरेह का नम्बर, उसके बाद सुरेह में आयतों का नम्बर• इस तरह, सुरेह 1 कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह दिखता है: 1 2 3 4 5 6 7 1 7• सुरेह 2 कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह दिखता है: 1 2 3 4 5.....284 285 286 2 286• आखरी सुरेह (नं• 114) कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह दिखता है: 1 2 3 4 5 6 114 6• नंबर दी गई आयतों का नंबर जोड़ा जाता है आखीर में• नम्बर जो नुमाइंदगी करता पूरे कुरान की, **है 19 का ज़रप**; वो इस तरह नज़र दिखता है:

1234567 1 7 12345…286 2 286 …123456 114 6 6234

तीसरा नं•: हर आयत का नम्बर, उसके बाद सुरहे नम्बर, फिर सुरेह में आयतों का नम्बर• नम्बर दी गई आयतों का टोटल नम्बर ज़ोड़ा गया है आखीर में• लम्बा नम्बर (12930 अददें) है एक 19 का ज़रप•

बजाए हर सुरेह में आयतों के टोटल नम्बर को सुरेह के बाद डालते हुए, चलें अब हम डालें उसे सुरेह के आगे• इस तरह सुरेह 1 कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह दिखता है: 7 1234567 1, बजाए 1234567 1 7 के, और सुरेह 2 कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह दिखता **है**: 286 12345.....284 285 286 2, बजाए 12345.....284 285 286 2 286• पूरे कुरान कि नुमाइंदगी करता ये बहुत लम्बा नम्बर **है एक 19 का ज़रप•**

7 1234567 1 286 12345…286 2…6 123456 114 6234

चौथा नं•: हर सुरेह में आयतों का टोटल नम्बर उसके बाद हर आयत का नम्बर, फिर सुरेह नम्बर• ऊपर दिखाई गई आखरी 14 अददें हैं आखरी सुरेह (6) में आयतों का नम्बर, उसके बाद छ: आयतों कि नम्बरें (123456), उसके बाद सुरेह (114) का नम्बर, फिर कुरान में नम्बर दी गई आयतों का टोटल नम्बर•
एक बहुत लम्बा नम्बर (जिसमें हैं 12930 अददें) है एक 19 का ज़रप•

अब, चलें लिखें हर सुरेह में हर आयत के नम्बर को, उसके बाद हर सुरेह के लिए आयत नम्बरों का जमा• सुरेह 1 में है 7 आयतें, और आयत नम्बरों का जमा है 1+2+3+4+5+6+7 = 28• इस तरह, सुरेह 1 कि नुमाइंदगी करता नम्बर ऐसा दिखता है: 1234567 28•

सुरेह 2 के लिए आयत नम्बरों का जमा है 41041 (1+2+3+ … + 286)• इसतरह, सुरेह 2 कि नुमाइंदगी करता नम्बर ऐसा दिखता है: 12345…284 285 286 41041•

आखरी सुरेह कि नुमाइंदगी करता नम्बर, जिसमें हैं 6 आयतें, ऐसा दिखता है: 123456 21, चुँकि 1+2+3+4+5+6 = 21•

पूरे कुरान कि नुमाइंदगी करता, पूरा नम्बर, शामिल करता है 12836 अददें और **है एक 19 का ज़रप•** वो इस तरह दिखता है:

1234567 28 12345…284285286 41041…123456 21

पाँचवा नं•: हर सुरेह में हर आयत के नम्बर के बाद आयत नम्बरों का जमा• इस लम्बे नम्बर में है 12836 अददें, और है एक 19 का ज़रप•

गैरमामुली तौर पर, अगर हम लें "पाँचवे नं•" को जैसा ऊपर दिखाया गया है और आयत नम्बरों और आयत नम्बरों के जमा कि तरतीव को पलट दें, यानि, आयत नम्बरों के जमा को हिला दें, और उसे सुरेह के पहले डाल दें, हासिल हुआ लम्बा नम्बर **फिर भी है एक 19 का ज़रप •**

28 1234567 41041 12345….285286…..21 123456

छठा नं•: आयत नम्बरों के जमा को हर सुरेह के आगे लगाते हुए, बजाए उसके बाद के, पैदा करता है एक लम्बा नम्बर (12386 अददें) जो भी है एक 19 का ज़रप •

यहाँ तक कि सूरतों को पीछे कि तरफ से लिखते हुए, यानि, सूरतों कि तरतीब को पलटते हुए आखरी सुरेह से शुरू करते हुए और पहली सुरेह से खत्म करते हुए, और आयत नम्बरों के जमा को हर सुरेह कि आयतों के बाद रखते हुए, नतीजा **फिर भी है एक 19 का ज़रप•**

123456 21 12345 15..12345..286 41041 1234567 28

सातवाँ नं•: सूरतों कि तरतीब को पलटते हुए — आखरी सुरेह से शुरू करते हुए और पहली सुरेह से खत्म करते हुए — और हर आयत के नम्बर को लिखते हुए, साथ हर सुरेह के लिए आयत नम्बरों का जमा बाद उसकि आयतों के, नतीजा है एक लम्बा नम्बर जिसमें है 12836 अददें• ये लम्बा नम्बर है एक 19 का ज़रप •

पूरे कुरान के लिए आयत नम्बरों का जमा लिखें (333410), उसके बाद कुरान में नम्बर दी गई आयतों का नम्बर (6234), फिर सूरतों का नम्बर (114)• फिर हर सूरेह कि नुमाइंदगी कि गई है उसके नम्बर से बाद उसकी आयतों के नम्बर से• सुरेह 1 और 2 कि नुमाइंदगी करती नम्बरें हैं 1 7 और 2 286• कुरान कि हर सुरेह को शामिल करता हुआ, पूरे नम्बर, में है 474 अददें, और **एक 19 का ज़रप है** — वो इस तरह दिखता है:

333410 6234 114 1 7 2 286 3 200..113 5 114 6

आठवाँ नं•: आयत नम्बरों का बड़ा जमा (333410) है उसके बाद नम्बर दी गई आयतों का टोटल नम्बर (6234), सूरतों का नम्बर (114), फिर सुरेह नम्बर और हर सुरेह कि आयतों का नम्बर•

चलें अव हम सुरेह नम्बर कि तरतीब और उसकी आयतों के नम्बर को पलटें जैसा "आठवें नं•" में पेश किया गया है• इस तरह, पहली दो सूरतों कि नुमाइंदगी करती नम्बरें ऐसी दिखती हैं: 7 1 और 286 2, बजाए 1 7 और 2 286 के• पूरे नम्बर में भी हैं 474 अददें और **फिर भी 19 का ज़रप है**• वो इस तरह दिखता है:

333410 6234 114 7 1 286 2 200 3…5 113 6 114

नवाँ नं•: सुरेह नम्बर और आयतों के नम्बर कि तरतीब को पलटते हुए हमें फिर भी एक लम्बा नम्बर देता है जो है 19 का ज़रप•

अगर हम सुरेह 1 के लिए आयत नम्बरों का जमा (28) लिखें, बाद उसके सुरेह 2 के लिए आयत नम्बरों का जमा (41041), और इस तरह कुरान कि आखीर तक, और आयत नम्बरों का बड़ा जमा (333414) को आखीर में रखते हुए, हासिल हुआ लम्बा नम्बर (दसवाँ नं•) में है 377 अददें, और एक है 19 का ज़रप•

28 41041 20100 ….. 15 21 333410

दसवाँ नं•: कुरान में हर सुरेह के लिए आयत नम्बरों के जमाओं को, एक दूसरे के साथ लिखा गया है, उसके बाद आखीर में आयत नम्बरों का बड़ा जमा (333410)• ये लम्बा नम्बर (377 अददें) है एक 19 का ज़रप•

अगर हम कुरान में सूरतों के नम्बर (114) को लिखें, उसके बाद नम्बर दी गई आयतों का टोटल नम्बर (6234), उसके बाद हर सुरेह का नम्बर और उसकी आयत नम्बरों का जमा, आखरी लम्बा नम्बर (612 अददें) है एक 19 का ज़रप•

114 6234 1 28 2 41041 3 20100…113 15 114 21

ग्यारहवाँ नं•: सूरतों का नम्बर, बाद उसके नम्बर दी गई आयतों का नम्बर, फिर हर सुरेह का नम्बर और उसकी आयत नम्बरों का जमा, पैदा करता है ये लम्बा नम्बर (612 अददें) जो है 19 का ज़रप•

कहीं कोई शक्स हो सकता है न सोचे के कोई कुरानी हकीकतें रखी गई हैं बिना हिफाज़त के इस गैर मामुली कोड के साथ, चलें हम देखें ज़्यादा हकीकतों कि तरफ•

अगर हम लिखें सूरतों का नम्बर (114), नम्बर दी गई आयतों का नम्बर (6234), बाद उसके आयत नम्बरों का बड़ा जमा पूरे कुरान में (333410), उसके बाद हर सुरेह कि नम्बरें और उसकी आयतें, हम पहुँचते हैं एक काफी लम्बे नम्बर को (12712 अददें) जो है 19 का ज़रप •

114 6234 333410 1 1 2 3 4 5 6 7 ...114 1 2 3 4 5 6
बारहवाँ नम्बर

अगर हम लिखें हर सुरेह में आयतों के नम्बरों को एक दूसरे के आस पास, हम पहुँचते हैं एक 235—अदद वाले नम्बर को जो है एक 19 का ज़रप• ऐसा करने के लिए, कुरान में नम्बर दी गई आयतों का नम्बर लिखें (6234), उसके बाद हर सुरेह में आयतों का नम्बर, फिर कुरान में आयतों के नम्बर से बंद करें• हासिल हुआ नम्बर ऐसा दिखता है:

6234 7 286 200 176 ..... 127 .... 5 4 5 6 6234
(टोटल आयतें) (पहली 4 सूरतें) (सुरेह 9) (आखरी 4 सूरतें) (टोटल आयतें)
तेरहवाँ नम्बर

अगर हम कुरान में नम्बर दी गई आयतों का नम्बर (6234) लिखें, उसके बाद सूरतों का नम्बर (114), उसके बाद हर सूरह में हर आयत का नम्बर, फिर कुरान में आयतों का नम्बर (6234) और सूरतों का नम्बर (114) से बंद करें, हासिल हुए नम्बर में है 12479 अददें, और है एक 19 का ज़रप•

6234 114 1234567 12345…286…123456 6234 114
चौदहवाँ नम्बर

दूसरा लम्बा नम्बर जिस में है 12774 अददें बनता है हर सुरेह में हर आयत का नम्बर लिखने से, उसके बाद हर सुरेह का नम्बर उसकी आयतों के नम्बर से जोड़ते हुए• सुरेह 1 में है 7 आयतें, और टोटल 1 + 7 है 8• इसलिए, सुरेह 1 कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह दिखता है: 1234567 8• चुँकि सुरेह 2 में है 286 आयतें, सुरेह 2 कि नुमाइंदगी करता नम्बर इस तरह दिखता है: 12345…286 288•

ऐसा किया जाता है कुरान में हर सुरेह के लिए• आखरी जुड़े हुए नम्बर में है 12774 अददें, **और एक है 19 का ज़रप•**

1234567 8 12345....286 288 ....123456 120
(1+7) (2+286) (114+6)
पन्द्रहवाँ नम्बर

ज़्यादा मखसूस की गई सिफतें हैं अपेन्ड़िक्स 2, 9, 19, 24, 25, 26, 29, और 37 में•

आखरी लम्हे की खोज

[मई 26, 1989 — जोड़ा जाय अपेन्डिक्स 1 को]

मि• अब्दुल्लाह अरिक ने इन खोजों को किया बस छपाई के वक्त से पहले:

1. अगर हम लिखें हर सुरेह में आयतों का नम्बर, उसके बाद आयत नम्बरों को जमा, और रखें सारे नम्बर को बाई तरफ, सारे बाई तरफ रखे गये नम्बरों का टोटल है 4,859,309,774, या 19x255753146 (टेबल 1)•
2. वैसा ही करें जैसा ऊपर, सिवाए लिखें हर आयत का नम्बर, बजाये आयतों के नम्बर के• इस बार टोटल में है 757 अददें और हैं फिर भी 19 का एक ज़रप (टेबल 2)•
3. वैसा ही करें जैसा ऊपर, लेकिन रखें सारी चीजों को दाहिनी तरफ, और लिखें सूरह नंबर, उसके बाद उस सुरेह में आयतों का नम्बर, उसके बाद सुरेह में हर आयत का नम्बर, और आखीर में, आयत नम्बरों का जमा• टोटल में है 759 अददें और है एक 19 का ज़रप भी (टेबल 3)•

<u>तारीफ हो अल्लाह की</u>

टेबल 1

सुरेह 1	*728*
सुरेह 2	*28641041*
-	-
सुरेह 114	*621*
टोटल = 4859309774= 19x255753146	

टेबल 2

सुरेह 1	*123456728*
सुरेह 2	*1234….28641041*
-	-
सुरेह 114	*12345621*

टेबल 3

सुरेह 1	*17123456728*
सुरेह 2	*2286123….28641041*
-	-
सुरेह 114	*114612345621*

बनी इस्राईल में से एक गवाह [46:10]

ऐलान करो: "क्या अगर वो अल्लाह कि तरफ से है, और तुमने उसमे ईमान नहीं लाया ? बनी इस्राईल में से एक गवाह ने सामना किया है ऐसे ही एक मौजज़े का, और उसने ईमान लाया, जबकि तुम काफी मगरूर बन गए हो ईमान लाने को• अल्लाह बदकार को हिदायत नहीं देते•" [46:10]

नीचे दिया गया हवाला लिया गया है *STUDIES IN JEWISH MYSTICISM*, (Assosciation for Jewish Studies, Cambridge, Mass., Joseph Dan & Frank Talmage, eds., Page 88, 1982)• हवाला मुखातिब करता है मुत्तकी रबी जुडाह के काम कि तरफ (12वीं सदी एडी)•

*फ्रांस में लोगों (यहूदीयों) ने लफ्ज़ों को [सुबह कि इबादत में] दाखिल करने का एक रिवाज बना लिया: "अशरी तेमिमी देरेक [मुबारक हैं वो जो नेक राह चलते हैं]," और हमारा मुत्तकी, रबी, मुबारक याददाश्त वाला, ने लिखा कि वो पूरी तरह और बिल्कुल गलत थे● वो है सारा बड़ा झूठ, इसलिए कि वहाँ पाक नाम बयान किया गया है सिर्फ उन्नीस बार [उस सुबह कि इबादत के हिस्से में]... और इसी तरह आप पाते हैं लफ्ज़ इलोहिम उन्नीस बार वि-इल्लेह शेमॉट के पारे में. . . इसीतरह, आप पायेंगे कि इस्राईल बुलाए गए हैं "बेटे" उन्नीस बार, और वहाँ हैं कई दूसरी मिसालें● ये सारे उन्नीस के गिरोह बारीकि से आपस में पिरोए गए हैं और उनमें कई पोशिदे और छिपी मायने हैं, जो शामिल की गई हैं आठ बड़े जिल्दों से ज़्यादा में. . . उसके अलावा, इस हिस्से में वहाँ हैं **152 (19x8)** लफ्ज़े●*

<u>मन्ज़ूरियाँ</u>

सारी तारीफ और शुक्र है अल्लाह के लिए जिनकी मर्ज़ी थी के उनके कुरान का मौजेज़ा नाज़िल हो इस वक्त● उन्होंने नीचे दिए गए शख्सों को चुना और उन्हें बक्शा है नाज़िल करते हुए उनके जरिए ये निहायत एहम खोज के कई हिस्से: अब्दुल्लाह अरिक, मुहामूद अली अबीव, लिसा स्प्रे, एदिप युकसेल, इहसान रमादान, फिरोज़ करमअल्ली, इस्माईल बराकात, गतूत अदीसोमा, अहमद युसुफ (लागोस के), सिज़र ए● माजूल, मुहतेसिम एरिसेन, एमिली केय स्टैरेट, और सेसिलिया अल्बरथा वॉलेन●

अपेन्डिक्स 2

अल्लाह के वादे का रसूल

अल्लाह के वादे का रसूल एक जोड़ने वाला रसूल है। उस का मिशन है पाक और एक करना सारी मौजुदा मज़हबों को एक में: इस्लाम (फरमानबरदारी)।

इस्लाम एक नाम नहीं है; वो एक सिर्फ अल्लाह कि तरफ किसी के मुकम्मल फरमानबरदारी करने और इबादत करने का बयान है, बगैर ईसा, मरयम, मुहम्मद, या बुर्जुगों को बुत बनाते हुए। जो कोई इस मयार को पहुँचता है एक "मुसलमान" (फरमानबरदार) है। इसलिए, कोई एक यहूदी मुसलमान, एक इसाई मुसलमान, एक हिन्दु मुसलमान, बुद्ध मुसलमान, या मुसलमान मुसलमान हो सकता है।

अल्लाह के वादे का रसूल पहुँचाता है आल्लाह का ऐलान कि "अल्लाह कि तरफ से सिर्फ मंजूर किया गया मज़हब है फरमानबरदारी" (3:19) और ये कि "जो कोई तलाश करता है फरमानबरदारी के अलावा कोई और एक मज़हब जैसा, वो उसके / उसकी तरफ से कबूल नहीं किया जाएगा" (3:85)।

ज़रूरी है कि अल्लाह का एक रसूल सबूत पेश करे कि वो है अल्लाह का रसूल। अल्लाह का हर रसूल मदद किया गया है अटल खुदाई निशानियों के साथ साबित करते हुए कि उसे कादिरे मुतलक कि तरफ से इख्तेयार दिया गया है उनके पैगामों को पहुँचाने के लिए। मुसा ने उसके आसे को नीचे फेका और वो एक सांप में बदल गया, ईसा ने कोहणियों को ठीक किया और मुर्दों को ज़िन्दा किया अल्लाह कि मर्ज़ी से, सालेह कि निशानी थी मशहूर ऊंटनी, इब्राहीम आग से चलकर बाहर निकल आये, और मुहम्मद का मौजेज़ा था कुरान (29:50-51)।

कुरान (3:81, 33:7, 33:40) और इंजील (मलाकाई 3:1-3) ने जोड़ने वाले रसूल, अल्लाह के वादे का रसूल कि आमदगी कि पेशीनगोई की है। वो सिर्फ इस मुताबिक है कि एक रसूल ऐसे ऐहम मिशन के साथ ज़रूरी है सबसे ज़बरदस्त मौजज़े से मदद किया जाए (74:30-35)। जबकि पिछले रसूलों के मौजेज़ात महदूद थे वक्त और जगह में, अल्लाह का मौजेज़ा उनके वादे के रसूल कि मदद करता हुआ है हमेशा के लिए; उसे कोई भी देख सकता है, किसी भी वक्त, किसी भी जगह में।

ये अपेन्डिक्स जिस्मानी, काबिले जाँच, काबिले तसदीक, और नाकाबिले इन्कार वाले सबूत पेश करता है कि रशाद खलीफा है अल्लाह के वादे का रसूल ।

एक कुरानी सच्चाई

कुरान में बड़े पेशीनगोईयों में से एक है कि अल्लाह के वादे का रसूल भेजा जाएगा जब सारे नबी इस दुनिया में आ चुके होंगे, और बाद इसके कि अल्लाह कि सारी आसमानी किताबें पहुँचाई जा चुकी होंगी•

अल्लाह ने नबियों से एक वादा लिया, कहते हुए, "मैं तुम्हें आसमानी किताब और हिकमत दूंगा• उसके बाद, एक रसूल आयेगा तसदीक करने के लिए जो है तुम्हारे पास• तुम्हें चाहिए कि उस में ईमान लाओ और उसकी मदद करो•" उन्होंने कहा, "क्या तुम इसे इकरार करते हो, और एहद करते हो इस वादे को बरकारा रखने का?" उन्होंने कहा, "हम इकरार करते हैं•" उन्होंने कहा, "तुमने इस तरह गवाही दी है, और मैं गवाह हूँ तुम्हारे साथ•" (3:81)

मुहम्मद मारमाडुके पिक्टहॉल ने 3:81 को इस तरह र्तजुमा किया:

जब अल्लाह ने (उनका) वादा लिया नबियों से, (उन्होंने कहा): देखो मैंने जो दिया है तुम्हें आसमानी किताब और इल्म• और उसके बाद तुम्हारे पास आयेगा एक रसूल, तसदीक करता हुआ उसकी जो तुम्हारे पास है• तुम्हें चाहिए उसमें ईमान लाओ और तुम्हें चाहिए कि उसकी मदद करो• उन्होंने कहा: क्या तुम इकरार करते हो, और क्या तुम मेरा बोझ उठाओगे (जो मैं तुमपर आएद करता हूँ) इस (मामले) में? उन्होंने जवाब दिया: हम इकरार करते हैं• उन्होंने कहा: फिर गवाह रहो• मैं एक गवाह रहूंगा तुम्हारे साथ•

हम सीखते हैं सुरेह 33 से कि मुहम्मद नबियों में से एक थे जिन्होंने वो संजीदा वादा किया अल्लाह के साथ•

और जब हमने लिया वादा नबियों से, और तुमसे (ऐ मुहम्मद) और नुह और इब्राहीम और मूसा और ईसा मरयम के बेटे से, हमने उनसे लिया एक संजीदा वादा• 33:7
(मुहम्मद मारमाडुके पिक्टहॉल के मुताबिक)

आयत 3:81, दूसरी कई आयतों में से, अता करती है "नबी" और "रसूल" के मायनें• इसतरह "नबी" है अल्लाह का एक रसूल जो एक नई आसमानी किताब पहुँचाता है, जबकि "रसूल" वो है एक जिसे ज़िम्मेदारी दी गई है अल्लाह कि तरफ से मौजुदा आसमानी किताब कि तसदीक करने के लिए; वो नहीं लाता नई आसमानी किताब • कुरान के मुताबिक, हर "नबी" है एक "रसूल," लेकिन हर "रसूल" नहीं है एक "नबी•"

हर रसूल को एक नई आसमानी किताब नहीं दी गई थी• ये दुरूस्त नहीं कि अल्लाह एक नबी को एक आसमानी किताब दें, और कहें उससे कि रखे उसे सिर्फ अपने आप के लिए, जैसा कहा गया है कुछ मुस्लिम "आलिमों" कि तरफ से (2:42, 146, 159)• जो कोई काफी तौर पर वाकिफ नहीं हैं कुरान से झुकते हैं इस सोच कि तरफ के हारून थे एक "नबी", जिन्होंने कोई आसमानी किताब नहीं पाई , जैसा बयान किया गया है 19:53 में, बहेरहाल, कुरान साफ तौर पर बयान करता है कि कानून कि किताब दी गई थी खास तौर पर "दोनों मूसा और हारून" को (21:48, 37:117)•

हम कुरान से सीखते हैं, 33:40, के मुहम्मद आखरी नबी थे, लेकिन आखरी रसूल नहीं:

मुहम्मद वालिद नहीं थे तुम में से किसी मर्दो के; वो थे एक रसूल अल्लाह के और आखरी नबी• [33:40]

इस ऐहम मायने कि तसदीक कि गई है कुरान के रियाज़ी कोड के ज़रिये• 33:40 में इस्तेमाल किया गया जुमला, “मुहम्मद खातुम अल नबीयीन” (आखरी नबी)• इस जुमले का जिमेटरिकल वेल्यु, जमा सुरेह नम्बर (33) और आयत नंबर (40) का है 1349, 19X71, जबकि गलत जुमला “मुहम्मद खातुम अल मुरसलीन” (आखरी रसूल) का वेल्यु 19 का ज़रप नहीं है•

पूराने ज़माने से, ये इन्सानी खुसुसियत रही है ठुकराना एक हालियाह, ज़िन्दा रसूल को• युसुफ को “आखरी रसूल” ऐलान कर दिया गया था (40:34)• इस के बावजूद, कई रसूलें आये उनके बाद, मूसा, दाऊद, सुलैमान, ईसा, और मुहम्मद को शामिल करते हुए•

वादा पूरा हुआ

हाँलाकि सारे नबीयें मर चुके हैं, जहाँ तक के इस दुनिया का ताल्लुक है, हम जानते हैं के उनकी रूहें, असल शक्सियतें, वजूद में हैं सदा के लिए कायनात में कहीं पर• कई आयतें हमें ताकीद करतीं हैं सोचने के लिए कि ईमानवाले जो अपने जिस्मों को उतारते हैं और रूखसत हो गए हैं इस दुनिया से हैं मरे हुए (2:154, 3:169, 4:69)• हाँलाकि वो लौट नहीं सकते हमारी दुनिया को (23:100), वो हैं “ज़िन्दा” कायनात नें कहीं पर• [अपेन्ड़िक्स 17]•

मेरे मक्का को हज के दौरान, सूरज तुलु होने से पहले मंगल के रोज़, 3 जुलहिज्जा, 1391, 21 दिसम्बर, 1971, मैं, रशाद खलीफा, रूह, असल शक्स, जिस्म नहीं, ले जाया गया था किसी जगह कायनात में, जहाँ मेरा ताररूफ कराया गया था सारे नबियों को अल्लाह के वादे के रसूल कि तरह• मुझे तफसीलों कि इत्तेलाह नहीं दी गई थी और वाकेया का सही मायने नहीं बताया गया था रमज़ान 1408 तक•

मैंने जो देखा, था तेज़ हवास में, कि मैं चुपचाप बैठा था, जबकि सारे नबीयें, एक के बाद एक, आये मेरी तरफ, देखा मेरे चेहरे कि तरफ, फिर अपने सरों को हिलाया• अल्लाह ने उन्हें मुझे दिखाया जैसा वो इस दुनिया में दिखते थे, अपने अपने तरीके के लिबास में• वहाँ था एक माहौल बड़े जलाल, सुरूर और इज़्ज़त का•

किसी भी नबियों को मुझे पहचानवाया नहीं गया था, सिवाए इब्राहीम के• मुझे पता था कि वहाँ सारे नबीयों को शमिल करते हुए थे मूसा, ईसा, मुहम्मद, हारून, दाऊद, नुह और बाकी• मेरा मानना है कि इब्राहीम कि पहचान बतलाने कि वजह थी के मैंने उनके बारे में पूछा• मैं उनकी तेज़ शुबाहत से हैरान था जो मिलती थी मेरे खुदके के कुम्बे — मेरे खुदसे, मेरे वालिद, मेरे चचाओं से• सिर्फ यही वक्त था जब मैंने ताज्जुब किया, “कौन है ये नबी जो मेरे रिश्तेदारों कि तरह दिखते हैं?” जवाब आया: “इब्राहीम•” कोई ज़बान नहीं बोली गई थी• सारी बातचीत ज़ेहनी तौर पर कि गई थी•

ये काबिलेगौर है कि नबीयों का वादा पूरा होने कि तारीख थी जुलहिज्जा 3, 1391• अगर हम जमा करें महीना (12), जोड़ें (3), जोड़ें साल (1391), हम एक टोटल पाते हैं 1406 का, 19X74• सुरेह 74 हैं जहाँ कुरान का कॉमन डिनोमिनेटर, नम्बर 19, बयान किया गया है• नोट करें कि नम्बर 1406 है कुरान के नज़ूल होने से उसके मौजज़े कि नाज़िल होने तक के सालों का नम्बर भी (अपेन्ड़िक्स 1)•

अल्लाह के वादे का रसूल का मिशन है मौजुदा आसमानी किताबों कि तसदीक करना, उन्हें पाक करना, और उन्हें एक खुदाई पैगाम में जोड़ना• कुरान बयान करता है कि ऐसे एक रसूल को ज़िम्मा दिया गया है अल्लाह के पैगाम को लौटाना उसके असल पाकीज़गी को, नेक ईमान वाले — यहूदीयों, ईसाईयों, मुसलमानों, बुद्धों, सिक्खों, हिन्दुओं और दूसरों को — अंधेरे से बाहर रौशनी में लाना (5:19 और 65:11)• वो है ऐलान करने के लिए कि इस्लाम (अल्लाह की पूरी फरमानबरदारी) है सिर्फ मज़हब कबूल किया गया अल्लाह कि तरफ से (3:19)•

लो, मैं भेज रहा हूँ मेरा रसूल मुझ से पहले का रास्ता तैयार करने के लिए;
और अचानक वहाँ आयेंगे इबादतगाह को
रब जिनकी तुम तलाश करते हो और वादे का रसूल जिसका तुम
अरमान रखते हो•
हाँ, वो आ रहा है, कहते हैं मेज़बानों के रब•
लेकिन कौन बर्दाशत करेगा उसके आने का दिन ?
और कौन सामना कर सकेगा जब वो नज़र आएगा ?
इसलिए कि वो साफ करने वाले आग कि तरह है, या कपड़ा साफ करने के पानी कि तरह• [मलाकाई 3:1-2]

सबूत

अल्लाह के वादे का रसूल का नाम कुरान में रियाज़ी तौर पर कोड किया गया है “रशाद खलीफा” जैसा• बिला शुबह ये सबसे दुरूस्त तरीका है अल्लाह के रसूल का तारुफ कराना दुनिया के लिए कम्प्युटर ज़माने में•

(1) जैसा अपेन्डिक्स 1 में दिखाया गया है, अल्लाह का बड़ा मौजेज़ा कुरान में प्राइम नम्बर 19 पर बुनियाद है, और वो रहा 1406 सालों (19X74) तक छिपा रहा• ये ज़बरदस्त मौजेज़ा पहले से कादिरे मुतलक अल्लाह कि तरफ से मुकर्रर किया गया था रशाद खलिफा के ज़रिए बेनकाब होने के लिए• सैकड़ों मुसलमान और माहिर आलिमों ने पिछली 14 सदियों से कोशिश किया है फ़ुज़ूल में, लेकिन उनमें से किसी को इजाज़त नहीं दि गई थी कुरानी इनीशियलों कि ताबीर जानने की•

(2) कुरान आसान बनाया गया है मुखलिस ईमानवालों और तलाश करने वालों के लिए (54:17, 22, 32, 40 और 39:28)• ये एक अटल खुदाई कानून है कि किसी को इजाज़त नहीं कुरान तक पहुंचने का, उसका मौजेज़ा तो दूरकिनार, जबतक वो एक मुखलिस ईमान वाला या वाली न हो जिन्हें खास खुदाई इजाज़त दी गई हो (17:45-46, 18:57, 41:44, 56:79)• कुरान का मौजेज़ा बेनकाब होना रशाद खलीफा के ज़रिए उसके रसूल होने कि एक बड़ी निशानी है•

(3) “रशाद رشاد ” नाम का बुनियादी लफ्ज़ है “रशदा رشد ” (सही हिदायत को बरकरार रखना)• ये बुनियादी लफ्ज़ कुरान में 19 बार बयान किया गया है• 19 कुरान का कॉमन डिनोमिनेटर है (देखें कुरान कि लफ्ज़ों कि फेहरिस्त, पहली छपाई, पेज 320)•

टेबल 1: सूरतें और आयतें “रशदा” और “खलीफा” कि

	“रशदा”		“खलीफा”	
नं•	सुरेह	आयत	सुरेह	आयत
1.	2	186	(2)	30
2.	-	256	38	26
3.	4	6		
4.	7	146		
5.	11	78		
6.	-	87		
7.	-	97		
8.	18	10		
9.	-	17		
10.	-	24		
11.	-	66		
12.	21	51		
13.	40	29		
14.	-	38		
15.	49	7		
16.	72	2		
17.	-	10		
18.	-	14	(सुरेह 2 दोहराया गया है)	
19.	-	21		
	224	1145	38	56

224 + 1145 + 38 + 56 = 1463 = 19x77

(4) लफ्ज़ "रशाद" वाके होता है 40:29 और 38 में• लफ्ज़ "खलीफा" वाके होता है 2:30 और 38:26 में• पहला "खलीफा" एक गैर इन्सानी "खलीफा" को मुखातिब करता है, मसलन, शैतान, जबकि दूसरा वाकेया (सुरेह 38), एक इन्सानी "खलीफा" को मुखातिब करता है• अगर हम "रशाद" (40:29, 38) और "खलीफा" (38:26) कि सूरतों और आयतों के नम्बरों को जमा करें हम पाते हैं 40 + 29 + 38 + 38 + 26 = 171 = 19X9•

(5) जमा सारे सुरेह और आयत नम्बरों का जहाँ सारे "रशदा" और सारे "खलीफा" वाके होते हैं, बगैर फरक किए, जुड़ते हैं 1463 को, 19X77 (टेबल 1)•

(6) सारी सूरतों और आयतों का टोटल जहाँ बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" वाके होता है 1369 है, या (19X72) + 1, जबकि सारे "खलीफा" के टोटल वाकेयात है 94, (19X5)-1• ये हकीकत कि "रशदा" एक से ऊपर है और "खलीफा" एक से नीचे है मुकर्रर करता है नाम "रशाद खलीफा" जैसा, और कोई भी "रशाद" या कोई भी "खलीफा" नहीं•

टेबल 2 : कुरान कि शुरूआत से पहला वाक्या बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" तक सूरतें और आयतें

सुरेह नं•	आयतों का नं	आयत # ों का जमा
1	7	28
2	185	17205
3	192	17233 (19x907)

इसके अलावा, "रशाद" (505) + "खलीफा" (725) + टोटल सुरेह (3) + आयतों का टोटल (192) = 1425 (19x75)
505+725+3+192 = 1425 = 19x75

(7) "रशाद" का जिमेटरिकल वेल्यु है 505 और "खलीफा" का वेल्यु है 725 (टेबल 7, अपेन्डिक्स 1)• अगर हम "रशाद खलीफा" कि वेल्यु जोड़ें (1230) सुरेह नम्बरों को, और आयतों के नम्बर, कुरान कि शुरूआत से "रशदा" कि पहली वाकेया तक, टोटल है 1425, 19X75• टेबल 2 में तफसीलें दिये गये हैं•

(8) अगर हम हर सुरेह में सारी आयतों के नमबरों को जोड़ें, यानी, आयत नम्बरों का जमा (1+2+3+...+n) कुरान कि शुरूआत से पहली बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" के वाकेया होने तक, टोटल आता है 17233, 19X907 (टेबल 2)•

(9) कुरानी इनीशियलें कायम करतीं हैं कुरान के मौजज़े का असल बुनियाद• ये इनीशियलें वाके होते हैं 2, 3, 7, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 19, 20, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 36, 38, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 50, और 68 सूरतों में• अगर हम जोड़ें इन नम्बरों को (822) "रशाद खलीफा" कि वेल्यु (1230) से, टोटल है 2052, 19X108•

टेबल 3 : सूरतें जहाँ बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" वाके होता है

सुरेह नं•	आयतों का नं•	टोटल
2	286	288
4	176	180
7	206	213
11	123	134
18	110	128
21	112	133
40	85	125
49	18	67
72	28	100
224	1144	1368 (19x72)

(10) जैसा टेबल 3 में दिखाया गया है, अगर हम सारी सूरतों के नम्बरों को जमा करें जहाँ बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" वाके होते हैं, साथ आयतों के नम्बर, हम पाते हैं 1368, या 19X72•

(11) अगर हम सुरेह नम्बर को लिखें, उसके बाद हर सुरेह में आयतों के नम्बर को, उसके बाद तन्हा आयत नम्बरें, बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" (2:186) के पहले वाकेया से "रशदा" (72:21) के आखरी वाकेया तक, और रखें इन नम्बरों को एक दूसरे के आस पास, हम पाते हैं एक बहुत लम्बा नम्बर जिसमें है 11087 अददें,

और है एक 19 का ज़रप• ये बहुत लम्बा नम्बर शुरू होता है सुरेह 2 के नम्बर से, उसके बाद सुरेह 2 में आयतों का नम्बर "रशदा" का पहला वाकेया आयत 186 पर से सुरेह कि आखिर तक (100 आयतें). इस तरह, शुरूआत का नम्बर ऐसा दिखता है: 2 100• इन 100 तन्हा आयतों कि नम्बरें (187 से 286 तक) रखी गई हैं इस नम्बर के बाद• इस तरह, सुरेह 2 कि नुमाइंदगी करता नम्बर ऐसा दिखता है: 2 100 187 188 189 ….. 285 286• यही तरीका जारी रखा जाता है 72:21 तक, जो है आखरी वाकेया बुनियाद "रशदा" का• पूरा नम्बर इस तरह दिखता है:

2 100 187 188 189 …. 72 21 1 2 3 …. 19 20 21
सुरेह नम्बर के बाद है आयतों का नम्बर, फिर तन्हा आयतों कि नम्बरें, पहली से लेकर आखरी "रशदा" के वाकै होने तक (2:187 से 72:21 तक)•
पूरे नम्बर में है 11087 अददें, और 19 से तकसीम हो जाता है•

(12) अगर हम सूरतों और आयतों का मुआयना करें बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" के पहले वाकेया से लफ्ज़ "खलीफा" तक 38:26 में, हम पाते हैं कि सुरेह नम्बरें और उनमें आयतों कि नम्बरों का जमा है 4541, या 19X239• तफसीलें टेबल 4 में हैं•

(13) अगर हम "रशाद" कि वेल्यु (505) लिखें, उसके बाद "खलीफा" कि वेल्यु (725), उसके बाद हर सुरेह नम्बर जहाँ बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" वाकै होते हैं, उसके बाद उसकि आयतों कि नम्बरें, पहली "रशदा" (2:186) से लफ्ज़ "खलीफा" (38:26) तक, हम पाते हैं एक लम्बा नम्बर जो 19 से तकसीम हो जाता है•
"रशदा" सब से पहले वाकै होता है 2:186 में• इस तरह, हम लिखते हैं 2 186• दूसरा वाकेया है 2:256 में, इसलिए हम लिखते हैं 256• दूसरा वाकेया है 4:6 में, इसलिए हम लिखते हैं 4 6, और इस तरह आगे, जबतक हम लिख न लें 38 26 ("खलीफा" 38:26 में वाकै होता है)• पूरा नम्बर इस तरह दिखता है:

टेबल 4 : सूरतें और आयतें पहला "रशदा" से "खलीफा" तक•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	टोटल
2	100 (187-286)	102
3	200	203
4	176	180
5	120	125
-	-	-
35	45	80
36	83	119
37	182	219
38	26	64
740	3801	4541 (19x239)

505 725 2 186 256 4 6 …….. 38 26

"रशाद" कि जिमेटरिकल वेल्यु के बाद है "खलीफा" कि वेल्यु, उसके बाद सुरेह नम्बर और आयत नम्बरें हर वाकेया बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" का पहला वाकेया "रशदा" का से "खलीफा" के वाकै होने तक 38:26 में•

अल्लाह कि तरफ से सिर्फ मन्जूर किया गया मज़हब है फरमानबरदारी
[3:19]

(14) कुरान इस्लाम (फरमानबरदारी) के तीन रसूलों कि शिनाख्त करता है:

इब्राहीम ने पहुँचाया इस्लाम के सारे तरीके• उनके नाम का वेल्यु है	= 258
मुहम्मद ने कुरान पहुँचाया• उनके नाम का वेल्यु है	= 92
रशाद ने पहुँचाया इस्लाम कि सदाकत का सबूत• उनके नाम का वेल्यु है	= 505
3 नामों कि टोटल जिमेटरिकल वेल्यु = 258 + 92 + 505	= 855 (19X45)

सच्चा यहूदी मज़हब, ईसाई मज़हब, और इस्लाम जोड़ा जायेगा एक मज़हब में — सिर्फ अल्लाह की मुकम्मल फरमानबरदारी और कामिल वंदगी•

मौजुदा मज़हबें, शामिल करते हुए यहूदी मज़हब, ईसाई मज़हब और इस्लाम, बुरी तरह बिगाड़ दिए गए हैं और सादगी से खत्म हो जायेंगे (9:33, 48:28, 61:9)•

(15) चुँकि कुरान बाज़औकात मुखातिब करता है "इब्राहीम, इस्माईल, और इस्हाक" को, मशवराह दिया गया था कि इस्माईल और इस्हाक को शामिल किया जाए• अजीब तौर से, इस्माईल और इस्हाक के जोड़ ने दिया है एक टोटल जो फिर भी 19 का ज़रप है• जैसा टेवल 5 में दिखाया गया है, नया टोटल है 1235, या 19X65• 19 से तकसीम होने कि काबिलियत मुमकिन नहीं अगर 3 नामों इब्राहीम, मुहम्मद, या रशाद में से किसी को खारिज किया जाए•

क्यों 81: आयत 81 और सुरेह 81

(16) अल्लाह के वादे का रसूल कि पेशीनगोई की गई है सुरेह 3 की **आयत 81** में• जुड़ना "रशाद" कि जिमेटरिकल वेल्यु (505) का, साथ "खलीफा" कि जिमेटरिकाल वेल्यु (725), साथ आयत नम्वर (81), पैदा करता है 505 + 725 + 81 = 1311 = 19X69•

(17) अगर हम **सुरेह 81** कि तरफ देखें, हम पढ़ते हैं अल्लाह के एक रसूल के वारे में जो ज़वरदस्त तौर से कादिरे मुतलक कि तरफ से मदद और जायेज़ किया गया है (आयत 19)• इसतरह, सुरेह 3 कि आयत 81, और सुरेह 81, आयत 19 मज़वूती से जुड़े हैं "रशाद खलीफा" नाम से 505 + 725 + 81 = 1311 = 19X69•

टेवल 5: 5 रसूलों कि जिमेटरिकल वेल्यु

णाम	तन्हा हुरूफों कि वेल्यु	टोटल
इब्राहीम	1+2+200+5+10+40	258
इस्माईल	1+60+40+70+10+30	211
इस्हाक	1+60+8+100	169
मुहम्मद	40+8+40+4	92
रशाद	200+300+1+4	505
	…………………	……
	1235	1235 (19x65)

(18) अगर हम सुरेह नम्वरों को आयतों के नम्वरों से जोड़े कुरान कि शुरूआत से आयत 3:81 तक, जहाँ वादे के रसूल कि पेशीनगोई कि गई है, टोटल आता है 380 को, 19X20• ये डेटा है टेवल 6 में•

टेवल 6: सुरतें आयतें 1:1 से 3:81 तक

सुरेह नं•	आयतों का नं•	टोटल
1	7	8
2	286	288
3	81	84
6	374	380 (19x20)

(19) आयत 3:81 कि जिमेटरिकल वेल्यु है 13148, 19X692• ये वेल्यु मिलता है आयत में हर हुरूफ कि जिमेटरिकल वेल्युऐं को जोड़ते हुए•

(20) अगर हम आयत 3:81 के हिस्से कि तरफ देखें जो खास तौर पर वादे के रसूल को मुखातिब करता है: "एक रसूल आएगा तुम्हारी तरफ, तसदीक करता हुआ जो तुम्हारे पास है," अरबी में:

"जाआकुम रसूलुन मुसददीकुन लिमॉ माआकुम"

हम पाते हैं कि इस ऐहम जुमले कि जिमेटरिकल वेल्यु है 836, 19X44•

"यकीनन, तुम हो रसूलों में से एक" (36:3)

(21) मुझे बेहद पुरज़ोर तरीके से कहा गया था, फरिश्ते जिब्राईल के ज़रिये, कि आयत 3 सुरेह 36 कि खास तौर पर मुझको मुखातिब करती है• अगर हम सिर्फ इनीशियल की गई सूरतों कि तरतीब करें• सुरेह 2 से शुरू करते हुए, फिर सुरेह 3, फिर सुरेह 7, और इसी तरह, हम पाते हैं कि सुरेह 36, या सीन, 19 नम्बर कि जगह लेता है•

(22) आयत 3 सुरेह 36 कि कहती है, "यकीनन, तुम हो रसूलों में से एक•" इस जुमले कि जिमेटरिकल वेल्यु है 612• ये वेल्यु (612), साथ सुरेह नम्बर (36), साथ आयत नम्बर (3), साथ जिमेटरिकल वेल्यु "रशाद खलीफा" कि (505+725) के साथ जोड़ते हुए, हम पाते हैं 36+3+612+505+725 = 1881 = 19X99•

(23) सुरेह 36 में 83 आयतें हैं• अगर हम सुरेह नम्बर (36) को उसकी आयतों के नम्बर (83), साथ "रशाद खलीफा" कि जिमेटरिकल वेल्यु (505+725) से जोड़े, हम पाते हैं 36+83+505+725 = 1349 = 19X71•

(24) जहाँ वादे के रसूल कि पेशीनगोई कि गई है, 3:81 से, सुरेह 36 तक, वहाँ हैं 3330 आयतें• "रशाद खलीफा" कि वेल्यु (1230) को, इस आयतों के नम्बर (3330) से जोड़ते हुए, हम पाते हैं 505+725+3330 = 4560, 19X240•

(25) 3:81 से 36:3 तक वहाँ हैं 3333 आयतें• इस नम्बर को "रशाद" कि जिमेटरिकल वेल्यु (505) से जोड़ते हुए, हम पाते हैं 3333 + 505 = 3838 = 19X202•

(26) 1:1 से 36:3 तक कि आयतों का नम्बर है 3705, 19X195 (टेबल 7)•

(27) 1:1 से 36:3 तक कि हर सुरेह कि आयतों के नम्बरों का जमा है 257925, 19X13575 (टेबल 7)•

टेबल 7: सूरतें और आयतें
सुरेह 1 से सुरेह 36 कि आयत 3 तक•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत #ों का जमा
1	7	28
2	286	41041
3	200	20100
-	-	-
9	127	8128
-	-	-
34	54	1485
35	45	1035
36	2	3
666	3705 (19x195)	257925 (19x13575)

(28) सुरेह 1 से सुरेह 36 तक सुरेह नम्बरों का जमा है 666 (टेबल 7)• अगर हम ये जमा करें "रशाद खलीफा" कि जिमेटरिकल वेल्यु (505+725) से, साथ उसकी आयत 36:3 कि जिमेटरिकल वेल्यु से "यकीनन, तुम हो रसूलों में से एक," (612), टोटल है: 666+505+725+612=2508=19X132•

टेबल 8 : सूरतें और आयतें
पहली "रशदा" से सुरेह 36:3 तक •

सुरेह नं•	आयतों कि नं•	आयत # ों का जमा
1.	2(186-286)	23836
2.	3	20100
3.	4	15576
4.	5	7260
-	-	-
10.	9	8128
-	-	-
33.	34	1485
34.	35	1035
35.	36(1-3)	6
	665 (19x35)	240695

35+665+240695 = 241395 (19x12705)

(29) अगर हम आयत नम्बरों के जमा को जोड़े (1+2+3+....+n) बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" (2:186) का पहला वाकेया से 36:3 तक (तुम हो रसूलों में से एक) टोटल (35) सूरतों से, साथ खुद सुरेह कि नम्बरें, टोटल है 241395, या 19X12705 (टेबल 8)•

(30) सुरेह नम्बरों का जमा बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" का पहला वाकेया से 36:3 तक है 665, 19X35• नोट करें कि ये हैं 35 सूरतें (टेबल 8)•

"आसमानी किताब के लोगों कि तरफ एक रसूल"

(यहूदियों, ईसाईयों, और मुसलमानों)

ऐ आसमानी किताब के लोगों, हमारा रसूल तुम्हारी तरफ आ चुका है, तुम्हारे लिए चीज़ों को साफ करने के लिए, बाद एक लम्बे अरसे तक बगैर रसूलों के• ताके तुम न कहो, "कोई नसीहत करने वाला या खबरदार करने वाला नहीं आया हमारे पास•" एक नसीहत करने वाला और खबरदार करने वाला आ चुका है तुम्हारे पास• अल्लाह हैं कादिरे मुतलक • [5:19]

(31) ज़ाहिर है, इस आयत का नम्बर है 19, कुरान का कॉमन डिनोमिनेटर खोज किया गया रशाद के ज़रिए, और "रशदा" के वाकेयात का नम्बर कुरान में•

(32) अगर हम "रशाद खलीफा" कि वेल्यु (1230) को जोड़ें, साथ सुरेह नम्बर (5), साथ आयत नम्बर (19) के, हम पाते हैं 1230+5+19 = 1254 = 19X66•

(33) सुरेह नम्बरों और आयतों के नम्बर का जमा कुरान कि शुरूआत से इस आयत (5:19) तक है 703, 19X37• टेबल 9 देखें•

टेबल 9 : सूरतें और आयतें
शुरू से सुरेह 5:19 तक •

सुरेह नं•	आयतों कि अदद	टोटल
1	7	8
2	286	288
3	200	203
4	176	180
5	19	24
15	688	703 (19x37)

(34) सुरेह 98, "सबूत" आयत 2, अल्लाह के वादे के रसूल कि आमदगी का ऐलान करती है "आसमानी किताब के लोगों (यहूदियों, ईसाई यों, और

मुसलमानों)” के फायदे के लिए• जोड़ते हुए “रशाद खलीफा” कि जिमेटरिकल वेल्यु (505+725) सुरेह नम्बर (98) से, साथ आयत नम्बर (2), हम पाते हैं: 505 + 725 + 98 + 2 = 1330 = 19X70•

वो जिन्होंने कुफ्र किया आसमानी किताब के लोगों में से (यहूदियों, ईसाईयों, मुसलमानों), और मुशरिकीन, ईमान नहीं लायेंगे, उन्हें गहरी निशानी दिए जाने के बावजूद• [98:1]
अल्लाह कि तरफ से एक रसूल, तिलावत करते हुए मुकद्दस आसमानी किताब कि • [98:2]

(35) ये काबिले गौर है कि लफ्ज़ “बय्येनाह,” जिसके मायने हैं “गहरी निशानी,” और है सुरेह 98 का नाम, वाके होता है कुरान में 19 बार• ये है एक और रियाज़ी तसदीक के कुरान का सबूत खुदाई मुसन्निफ होने का प्राइम नम्बर 19 पर बुनियाद है, और ये कि “रशाद खलीफा” रसूल है 98:2 में•

एक गहरा रसूल आ चुका है [44:13]

(36) जोड़ते हुए सुरेह नम्बरों को, हर सुरेह में आयतों के नम्बर के साथ, 1:1 से 44:13 तक, टोटल आता है 5415, (19X19X15) (टेबल 10)•

(37) जमा सुरेह नम्बर (44) का साथ आयत का नम्बर (13) जहाँ रसूल कि पेशीनगोई की गई है बराबर है 57 के, 19X3• देखें टेबल 10•

दुनिया का खत्म

(38) सिर्फ अल्लाह जानने वाले हैं मुस्तकबिल के; वो जानते हैं सही सही कब ये दुनिया खत्म होगी (7:187, 31:34, 33:63, 41:47, 43:85)• हम सीखते हैं कुरान से कि अल्लाह नाज़िल करते हैं कुछ पहलू मुस्तकबिल का उनके चुने हुए रसूलों को• अपेन्डिक्स 25 में, सबूत पेश किया गया है कि “रशाद खलीफा” बक्शे गए थे दुनिया के खत्म होने का बेनकाब करने के लिए, 72:27 के मुताबिक में•

(39) आयतों का नम्बर कुरान कि शुरूआत से आयत 72:27 तक है 5472, या 19X72X4• नोट करें कि रसूल जिसे मुस्तकबिल कि इत्तेलाह दी गई है 72:27 में, और ये कि इस सुरेह में हैं 4 “रशदा” लफ्ज़ें (72:2, 10, 14, और 21)• जमा करते हुए “रशाद खलीफा” कि वेल्यु (1230), सुरेह नम्बर (72) के साथ, साथ 4 आयतों कि नम्बरें जहाँ “रशदा” बयान किया गया है, हम पाते हैं 1230 + 72 + 2 + 10 + 14 + 21 = 1349 = 19X71•

टेबल 10 : सूरतें और आयतें 1:1 से सुरेह 44:13 तक •

सुरेह नं•	आयतों का नं•	टोटल
1	7	8
2	286	288
3	200	203
4	176	180
5	120	125
-	-	-
9	127	136
-	-	-
41	54	95
42	53	95
43	89	132
44	13	57
990	4425	5415 (19 x 19 x 15)

(40) आयत 72:27 शुरू होती है जुमले से (सिर्फ रसूल जो वो चुनते हैं)• ये मुखातिब रसूल को जो चुना गया है अल्लाह कि तरफ से मुस्तकबिल के बारे में खबर पाने के लिए है जिमेटरिकल वेल्यु 1919 कि• टेबल 11 पेश करता है डेटा•

टेवल 11 : जिमेटरिकल वेल्य चुने रसूल कि 72:27 में•

हुरूफ	जिमेटरिकल वेल्यु
अ	1
ल	30
अ	1
म	40
न	50
अ	1
र	200
त	400
द	800
य	10
म	40
न	50
र	200
स	60
व	6
ल	30
	……..
	1919

कैसे पहचाना जाए अल्लाह के रसूल को एक झूठे रसूल से

कुरान पेश करता है साफ मयार अल्लाह के सच्चे रसूलों को पहचानने का झूठे रसूलों से:

[1] अल्लाह का रसूल वकालत करता है <u>सिर्फ</u> अल्लाह कि इबादत करने, और मनसूख करना बुत परस्ती कि सारी किस्मों को•

[2] अल्लाह का रसूल कभी नहीं मांगता मुआवज़ा खुद के लिए•

[3] अल्लाह के रसूल को दिया गया है खुदाई, अटल सबूत उसके रसूल होने का•

जो कोई दावा करे अल्लाह का रसूल होने का, और न पहुँचे ऊपर बयान किए गए कम से कम तीन मयार को है एक झूठा दावेदार•

सबसे ऐहम फरक अल्लाह के रसूल और एक झूठे रसूल के दरमियान है के अल्लाह का रसूल मदद किया गया है अल्लाह कि तरफ से, जबकि झूठा रसूल नहीं:

*** अल्लाह का रसूल मदद किया गया है अल्लाह के गैबी लश्करों से (3:124-126, 9:26 और 40, 33:9, 37:171-173, 48:4 और 7, 74:31)•**

*** अल्लाह का रसूल मदद किया गया है अल्लाह के खज़ाने से (63:7-8)•**

*** अल्लाह का रसूल, साथ साथ ईमानवालों, के ज़मानत दिये गयें हैं फतह और अज़मत, इस दुनिया में और सदा के लिए (40:51 और 58:21)•**

इस तरह, सच्चाई अल्लाह के रसूल कि अटल तौर से गालिब होती है, जबकि एक झूठे रसूल का झूठ अटल तौर पर, जल्द या देरी से, फाश हो जाता है•

असल ज़िम्मेदारियाँ अल्लाह के वादे के रसूल की

जैसा कुरान में बयान किया गया है, 3:81, अल्लाह के वादे का रसूल तसदीक करेगा सारे आसमानी किताबों की, जो पहुँचाए गए थे सारे नबियों के ज़रिए, और लौटायेगा उन्हें उनकी असल पाकीज़गी को•

अल्लाह कि तरफ से रहमत [21:107]

जब ईमानवालों का सामना होता है एक मसले से, वो कई मुमकिन हलों को सामने लाते हैं, और ये बिला कसर ले जाता है तकरार, फूट और हंगामे कि तरफ• हम सीखते हैं 2:51, 3:164, और 21:107 से के वो है असल में रहमत अल्लाह कि तरफ से के वो भेजते हैं रसूलों को हमारी तरफ हमारे मसलों के असल हलों को मुहय्या करने के लिए• हम सीखते हैं 42:51 से कि अल्लाह भेजते हैं उनके रसूलों को हमारे साथ रावता कायम करने के लिए, और नई खबर को बिखेरने के लिए• इसलिए पुख्ता ताकीद 4:65, 80 में कबूल करना, बगैर ज़रासी भी हिचकिचाहट के, तालीमें पहुँचाई गई हमारी तरफ अल्लाह के रसूलों के ज़रिए•

नीचे दिया गया है एक फेहरिस्त असल ज़िम्मेदारियाँ अल्लाह के वादे के रसूल की:

1. **बेनकाब करना और ऐलान करना कुरान के रियाज़ी मौजज़े का (अपेन्डिक्स 1)•**
2. **फाश करना और निकालना दो झूठी आयतें 9:128-129 कुरान से (अप• 24)•**
3. **समझाना हमारी ज़िन्दगियों के मकसद; हम यहाँ, क्यों हैं (अपेन्डिक्स 7)•**
4. **ऐलान करना एक मज़हब सारे लोगों के लिए, बताना और साफ करना मुसीबत देती सारी खराबियों को यहूदी मज़हब, ईसाई मज़हब और इस्लाम से (अपेन्डिक्स 13, 15, 19)•**
5. **ऐलान करना कि ज़कात (ज़रूरी खैरात) एक ज़रूरी है मगफरत के लिए (7:156), और समझाना सही तरीका ज़कात देने का (अपेन्डिक्स 15)•**
6. **दुनिया के खत्म होने का बेनकाब करना (अपेन्डिक्स 25)•**
7. **ऐलान करना कि जो कोई मरते हैं 40 कि उम्र से पहले जाते हैं जन्नत को (अपेन्डिक्स 32)•**
8. **समझाना ईसा कि मौत (अपेन्डिक्स 22)•**
9. **समझाना कुरान के पहुँचने का, उस वक्त मुहम्द के ज़रिए (अपेन्डिक्स 28)•**
10. **ऐलान करना कि मुहम्द ने लिखा अल्लाह कि वहियों को (कुरान) उनके खुद के हाथ से (अपेन्डिक्स 28)•**
11. **समझाना कि ज़्यादातर अल्लाह में ईमान रखने वाले क्यों जन्नत तक नहीं पहुँचते (अपेन्डिक्स 27)•**
12. **ऐलान करना कि अल्लाह ने कभी भी हुक्म नहीं दिया इब्राहीम को उनके बेटे को कत्ल करने का (अपेन्डिक्स 9)•**
13. **ऐलान करना राज़ मुकम्मल खुशी का (तॉररूफ,XX)•**
14. **कायम करना एक मुजरिमाना कानुनी निज़ाम (अपेन्डिक्स 37)•**

अपेन्डिक्स 3

हमने बनाया कुरान आसान [54:17]

आयत 11:1 हमें इत्तेला करती है के कुरान का रियाज़ी मौजेज़ा शामिल करता है [1] उसके जिस्मानी बनावट का गैरमामूली रियाज़ी ढांचा और [2] साथ साथ बंदोबस्त गैरमामूली अदबी काम की खूबी का•

कोई काबिल हो सकता है ज़रूरतें पूरी करना एक सादे रियाज़ी पैर्टन के अदद का फैलाव पाने के लिए• हाँलाकि, ये हरबार हासिल होता है अदबी खूबी को कुरबान करते हुए• पूरे कुरान में काबू करना अदबी अंदाज और साथ साथ तन्हा हुरूफों के बारीक रियाज़ी फैलाव को (अपेन्डिक्स 1) साबित है इस हकीकत में के कुरान बनाया गया है आसान याद करने, समझने, और मज़ा लेने के लिए• एक इन्सानी किताब से मुख्तलिफ, कुरान मज़ेदार है बेहिसाब बार बार पढ़ने के लिए•

इस अपेन्डिक्स का मज़मून दोहराया गया है सुरेह 54, आयतें 17, 22, 32 और 40 में• जैसा पेश होता है, कुरान का अरबी मत्न इस अंदाज़ में तरतीब किया गया है के पढ़ने वाले या याद करने वाले को बाद आने वाले सही कलाम या बाद की आयत का याद दिलाए• अल्लाह ने हमें पैदा किया और वो जानते हैं सबसे बेहतर तरीका अदबी चीज़ों को हमारी याददाश्त में बिठाने के लिए• याद करना कुरान का काम आया है एक एहम किरदार असल मत्न की हिफाज़त करने में नसल बाद नसल ऐसे वक्त में जब लिखी गई किताबें थीं कम•

यहाँ तक के उसे एहसास हुए बगैर, जो शक्स कुरान याद करता है खुदाई तौर पर मदद किया गया है एक बारीक अदबी निज़ाम कि तरफ से जब वो कुरानी लफ्ज़ों कि आवाजों को निकालता है• तकरीबन हर आयत कुरान में शामिल करती है जिसे मैं कहता हूँ "याद दिलाने वाली घंटीयाँ•" उनका काम है पढ़ने वाले को याद दिलाए वो जो आता है बाद• ये निज़ाम इतना ज़बरदस्त है, मैं सिर्फ दो ही मिसालया बयान दूँगा:

1. सुरेह 2 में, आयतें 127, 128 और 129 तीनों खत्म होते हैं **अल्लाह** के दो मुख्तलिफ नामों के साथ• ये नामों के जोड़े हैं "*अल-सामी अल-अलीम* (सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले)," "*अल-तव्वाब अल-रहीम* (माफ करने वाले, सबसे रहीम)", और "*अल-अज़ीज अल-हकीम* (कादिरे मुतलक, सबसे हकीम)", हस्बे तरतीब• अगर ये एक आम किताब होती, कोई आसानी से इन छ: नामों के नामुनासिब जोड़े बनाता• इसतरह कुरान में नहीं• उसी आयत में इन में से हर एक जोड़ों से पहले एक "याद दिलाने वाली घंटी" आती है जो हमें सही नामों का जोड़ याद दिलाती है• इस तरह, आयत 127 इब्राहीम और इस्माईल के काबा कि नीवें ऊँचा करने के बारे में बात करती है• आयत खत्म होती है "*अल-सामी अल-अलीम*" नामों के साथ• उभरी हुई आवाजें यहाँ हैं "स," "म, " और "ऐन" कि• ये तीन हुरूफें उभरे हुए हैं लफ्ज़ "इस्माईल" में• हम पाते हैं जुमले में ये लफ्ज़ मशहूर तरीके से मुलतवी किया गया है, जबकि उसकि अदबी खूबी को संवारते हुए• इस तरह, हम पाते है आयत यूँ चलती है: "जब इब्राहीम ने ऊँचा किया *काबा* कि नीवों को, इक्ट्ठे इस्माई ल के साथ ..." आम तौर पर, एक इन्सान लिखने वाला कहेगा, "जब इब्राहीम और इस्माईल ने *काबा* कि नीवों को ऊँचा किया ...." लेकिन "इस्माईल" कि आवाज़ों को मुलतवी करना लाता है उन्हें आयत के आखिर के करीब, और इस तरह हमें याद दिलाता है के "*अल-सामी अल-अलीम*" इस आयत में **अल्लाह** के सही नामें हैं•

"*अल-तव्वाब अल-रहीम* " नामों के फौरन पहले आयत 128 में लफ्ज़ "तुब्व" उभरा हुआ है• लफ्ज़ "तुब्व" इस तरह याद दिलाने वाली घंटी का काम करता है• 2:129 के आखिर में अल्लाह के नामें हैं "*अज़ीज हकीम•*" यहाँ उभरी हुई आवाजें हैं "ज़" और "क•" ज़ाहिर है, "यूज़क्कीहिम" लफ्ज़ इस आयत में याद दिलाने वाली घंटी है•

2. दूसरी अच्छी मिसाल पाई जाती है 3:176, 177, और 178 में, जहाँ पर काफिरों के लिए आज़ाब "अज़ीम (शदीद)," "अलीम (दर्दनाक)," और "मुहीन (ज़िल्लतआमेज़)," कि तरह हस्बे तरतीब बयान किया गया है• इन्सानी बनी किताब में, याद करने वाला आसानी से गलत मेल करदेगा इन तीन किस्मों को• लेकिन हम पाते हैं इन में से हर एक सिफतों से पहले ज़बरदस्त याद दिलाने वाली घंटीयाँ जो ऐसी गलती से रोकती हैं• 176 आयत का लफ्ज़ "अज़ीम" से पहले लफ्ज़ "हुज़ुन" आता है, जिसकि सीरत बयान कि गई है एक ज़ोर दिए गए लफ्ज़ "ज़" से• ये हमें आयत की आखीर पर खास सिफत का याद दिलाने का काम करता है•

177 आयत का लफ्ज़ "अलीम" से पहले "ईमान" लफ्ज़ कि आवाज़ आती है याद दिलाने वाली घंटी का काम करने के लिए, और 3:178 का लफ्ज़ "मुहीन" से पहले इस पूरे आयत में कसरत से "म" और "ह" पाए जाते हैं•

दूसरी मिसालें याद दिलाने वाली घंटीयाँ शामिल करती हैं खत्म होना 3:173 का और शुरू होना 3:174 का, खत्म होना 4:52 का और शुरू होना 4:53 का, खत्म होना 4:61 का और शुरू होना 4:62 का, खत्म होना 18:53 का और शुरू होना 18:54 का, और बहोत सारे•

****

अपेन्डिक्स 4

क्यों कुरान अरबी में नाज़िल किया गया था?

हम सीखते हैं 41:44 से के सच्चे ईमानवालों के पास है कुरान कि इजाज़त, बावजूद उनके मादरी ज़बान के• काफिरों को, दूसरी ओर, इजाज़त नहीं कुरान का दाखला , चाहें वो अरबी ज़बान के प्रोफेसर हों तब भी (17:45, 18:57, 41:44, और 56:79)•

अरबी सबसे काबिल ज़बान है दुनिया में, खास तौर पर जब कानूनों के ठीक ठीक बयान करने कि बात आती है• चुँके कुरान एक कानून कि किताब है, ये एहम था कि ऐसे कानुनों को साफ तौरपर बयान किया जाना चाहिए• उनकी आखरी किताब के लिए अल्लाह ने अरबी को चुना क्योंकि इस ज़ाहिर वजह से के वो सबसे मुनासिब ज़बान है उस मकसद के लिए• अरबी बेमिसल है उसकी काबिलियत और दुरूस्ती में• मिसाल के लिए लफ्ज़ "वो" उर्दु में तुम्हें नहीं बताता अगर "वो" मर्द या औरतें हैं• अरबी में वहाँ है "वो" मर्दो के लिए, "***हुम***", और एक "वो" है औरतों के लिए, "***हुन्ना•***" यहाँ तक के वहाँ है एक "वो" दो मर्दो के लिए, "***हुमा,***" और एक "वो" दो औरतों के लिए, "***हातान•***" ये खासियत दुनिया में किसी और ज़बान में मौजूद नहीं• मैंने सराहा अरबी ज़बान कि इस काबिलियत को जब मैंने मिसाल के लिए, 2:228, का र्तजुमा किया• ये आयत ताकीद करती है तलाक देने वाली को छोड़ दे खुदके इरादों को अपने शौहर को तलाक देने के लिए, अगर उसे पता चले के वो हमल से है, और शौहर दोबारा सुलह चाहता हो — बच्चे कि बेहतरी अव्वलियत लेती है• अरबी ज़बान कि काबिलियत बेहद मददगार थी इस कानून को बयान करने में• कोई दूसरी ज़बान ने उसे तकरीबन नामुमकिन बना दिया होता बताना किसके इरादों को तरजी दी जानी है, कम से कम इतने कम लफ्ज़ों में नहीं जैसा हम 2:228 में देखते हैं•

लफ्ज़ "*कालता*" 28:23 का, मिसाल के लिए, चार उर्दु लफ्ज़ों में र्तजुमा होता है: "दो औरतों ने कहा•" ऐसी काबिलियत है अरबी ज़बान कि•

दूसरी मुमकिन वजह अरबी को चुनने कि हकीकत इस वजेह से है के "करता" या "करती" ज़रूरी नहीं कुदरती जिन्स कि तरफ इशारा करे• इस तरह, जब **अल्लाह** का हवाला दिया जाता है "he," से ये बिल्कुल जिन्स कि तरफ इशाराा नहीं करता• **अल्लाह** कि तारीफ हो; **वो** नाहीं मर्द है, नाहीं औरत• इस्तेमाल किया जाना "he" **अल्लाह** को अंग्रेज़ी ज़बान में मुखातिब करने

के लिए, मिसाल के लिए, मदद किया है **अल्लाह** का गलत रूप बनाने के लिए• इसकी मदद नहीं कि गई थी हुलिया बिगाड़े गए "बाप" जैसे कलमात से जब **अल्लाह** का हवाला दिया जाता है• आप कभी नहीं पाऐंगे ऐसा हवाला **अल्लाह** के लिए कुरान में•

****

अपेन्डिक्स 5

जन्नत और जहन्नम

जन्नत और जहन्नम पूरे कुरान में मिसालया बयानात हैं• और कुरान हमें ऐसा कहता है जब भी ऐसे बयानात वाके होते हैं एक तन्हा कलमात कि तरह, एक आम मौज़ू के अंदर नहीं• देखें 2:24-26, 13:35 और 47:15• लफ्ज़ "मिसाल" इस्तेमाल किया गया है इन आयतों में• ज़बानी तौर पर, लफ्ज़ "मिसाल" इन आयतों में से निकाला जा सकता है, और फिर भी हमे मुकम्मल जुमले मिलते हैं• लेकिन वो हैं वहाँ इसलिए के जन्नत और जहन्नम के बयानात हैं मिसालया•

किस तरह हैं जन्नत और जहन्नम हमारे समझ के बाहर हैं• इस लिए मिसाल कि ज़रूरत•

कैसे कोई बयान कर सकता है, मिसाल के लिए, चॉकलेट का ज़ायका एक शक्स को जिसने चॉकलेट कभी न चखा हो? मिसाल इस्तेमाल करना होगा• उस शक्स को इन्तेज़ार करना होगा असल में चॉकलेट को चखने के लिए ताके जान सके चॉकलेट का ज़ाएका कैसा लगता है• कुछ भी मिसाल हम इस्तेमाल करें चॉकलेट के ज़ायके को बयान करने के लिए कभी भी असल चीज़ के करीब नहीं पहुँच सकते हैं•

जन्नत पहले से मौजूद है, आदम और हव्वा उसमें रखे गए थे उनके मासूमियत के दिनों में (2:35)• हम सीखते हैं सुरेह 55 से के वहाँ हैं दो "ऊँची जन्नतें" — एक इन्सानों के लिए और एक जिनों के लिए — और दो "निचली जन्नतें" — एक इन्सानों के लिए और एक जिनों के लिए हैं (देखें अपेन्डिक्स 11 ज़्यादा तफसीलों के लिए)•

अब तक जहन्नम नहीं बनाई गई है• वो बनाई जायेगी इंसाफ के दिन पर (69:17 & 89:23)• ज़्यादा तफसीलें दिए गए हैं अपेन्डिक्स 11 में•

ऊँची जन्नत मुकाबले निचली जन्नत के

ऊँची जन्नत और निचली जन्नत के दरमियान बड़ी फर्कें हैं• मिसालया तौर पर, ऊँची जन्नत में पानी आज़ादी से बहता है (55:50), जबके निचली जन्नत के पानी को पम्प करना पड़ता है निकालने के लिए (55:66)•

मिसालया तौर पर, ऊँची जन्नत में हर किस्म के फल हैं (55:52), जबके निचली जन्नत में थोड़े किस्म के फलें हैं (55:68)•

मिसालया तौर पर, पाक जोड़े आसानी से अपने जोड़ों से मिलते हैं ऊँची जन्नत में (55:56), जबके निचली जन्नत के रहने वालों को अपने जोड़ों को जा कर लाना चाहिए (55:72)•

इस के बावजूद, निचली जन्नत है एक ना काबिले ज़बरदस्त इनाम उनके लिए जो बस खुश किसमत हैं जहन्नम से बचने और निचली जन्नत में जाने के लिए (3:185) — निचली जन्नत को जाना है एक बड़ी फतेह• लोग जो रूकसत होते हैं इस ज़िन्दगी से उनके 40 वे सालगिरह को पहुंचने से पहले, और अपनी रूहों को काफी सुधार नहीं पाए, जाएंगे निचली जन्नत को (46:15, अपेन्डिक्स 11 और 32)• ऊँची जन्नत मखसूस की गई है उनके लिए जो ईमान लाये, एक नेक ज़िन्दगी बसर की, और अपनी रूहों को काफी बढ़ा पाये•

जो कोई कामयाब होता है बस जहन्नम से बचने में, और जन्नत में दाखिल किया जाता है, हासिल कर लिया है एक बड़ी फतेह [3:185]•

****

अपेन्डिक्स 6

अल्लाह कि अज़मत

हम सीखते हैं आयत 39:67 से के **अल्लाह** कि अज़मत है इन्सानों के समझ के कहीं बाहर— ये आयत कहती है कि सारे सात कायनातें हैं "लिपटे **अल्लाह** के हाथ में•"

कुरान के अज़ीम रियाज़ी कोड से मदद किया गया, हमें सिखाया गया है की हमारी कायनात सबसे छोटी और सबसे अंदर की है सात कायनातों में से (41:12, 55:33, 67:5 & 72:8-12)• इस दौरान में, हमारी साइन्स कि तरक्कियों ने हमें दिखाया है के हमारी कहकशाँ, आकाश गंगा, आर पार 100,000 रौशनी के साल हैं, और ये के हमारी कायनात में हैं ऐसे सौ करोड़ कहकशाँएं और सौ करोड़ दस खरब सितारे, इसके अलावा अनगिनत सौ करोड़ दस खरब दस खरब आसमानी अंबारें• अंदाज़ा किया गया है के हमारी कायनात कि हद का फासला 20,000,000,000 रौशनी के सालों से ज़्यादा है•

गिनें सितारों को!

अगर हम लें एक हज़ार करोड़ करोड़ [1,000,000,000,000,000,000] सितारें और उन्हें सिर्फ गिनें [सिफर से एक हज़ार करोड़ करोड़ तक] एक गिनती एक सेकंड में दिन और रात, इसे लगेंगे 3200 करोड़ सालें (हामरी कायनात कि उम्र से ज़्यादा)• उतना है जो हमें लगेगा सिर्फ उन्हें "गिनने" के लिए; लेकिन **अल्लाह** ने उन्हें "बनाया" है• ऐसी है **अल्लाह** कि अज़मत•

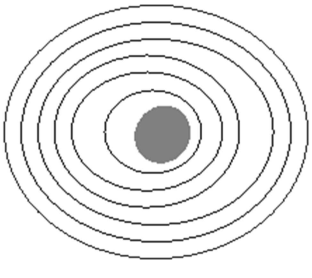

हम तारीफ कर सकते हैं हमारी कायनात कि अज़मत अगर हम एक फिज़ा कि सफर को जाने का तसव्वुर करें• जब नज्म ज़मीन को छोड़ते हैं सूरज कि तरफ, रौशनी कि रफ्तार से, हम सूरज पहुँचते हैं 93,000,000 मीलों और 8 मिनट बाद• हमें लगेंगे 50,000 सालों से ज़्यादा रौशनी कि रफ्तार से हमारी कहकशाँ से बाहर निकलने के लिए, आकाश गंगा के बाहरी किनारे से, हमारा नज्म ज़मीन है ओझल• यहाँ तक के सबसे ताकतवर टेलिस्कोप भी नहीं पकड़ सकता हमारे नन्हें "जमीन" को •

हमें 2,000,000 सालों से ज़्यादा बिताना होगा रौशनी कि रफ्तार से हमारे पड़ोस कि कहकशाँ कि दहलीज़ पहुँचने के लिए• कम से कम 10,000,000,000 सालें, बिताने पड़ेंगे रौशनी कि रफ्तार से, हमारी कायनात के बाहरी किनारे को पहुँचने के लिए• हमारे कायनात के बाहरी किनारे से, यहाँ तक कि आकाश गंगा है धूल का एक नुक्ता एक बड़े से कमरे में•

दूसरी कायनात हमारी कायनात को घेरे मे लेती है• तीसरी कायनात दूसरी कायनात से बड़ी है, और इस तरह दूसरे• ज़्यादा दुरूस्ती से, हमारी कायनात सातवीं कायनात मानी जानी चाहिए, घेराव किए हुए छठे कायनात से, जो के पाँचवे कायनात से घिरा हुआ है, और इस तरह दूसरे• क्या आप तसव्वुर कर सकते हैं अज़मत पहली, बाहरी कायनात कि? कोई अदद मौजूद नहीं पहली कायनात का दायरा बयान करने के लिए• ये नाकाबिले समझ अज़मत है "**अल्लाह** के हाथ की मुट्ठी के अंदर•" बाहरी कायनात के बाहरी किनारे से, कहाँ है नज्म ज़मीन? क्या एहमियत है उसकी? कमतरीन ज़र्रा ज़मीन पर, एसे ज़र्रे से छोटे मखलूकात जैसे मरयम, ईसा, और मुहम्मद रहे• इसके बावजूद, कुछ लोग बनाते हैं इन बेदम इन्सानों को खुदा जैसा!

अल्लाह कि अज़मत नुमाइंदगी की गई है सिर्फ इस हकिकत से ही नहीं के **वो** थामते हैं सातों कायनातों को **उनके** हाथ में, बल्कि इस हकीकत से भी के **वो** पूरी तरह काबू करते हैं हर ज़र्रे को, और ज़र्रे से छोटे पुरज़ों को भी, हर जगह बड़े से बड़े कायनात में (6:59, 10:61, & 34:3)•

****

अपेन्डिक्स 7

हम क्यों पैदा किए गए थे ?

हम हैं इस दुनिया में क्योंके हमनें किया है एक संगीन जुर्म, और ये जिन्दगी है हमारा मौका अपने आपकी मगफरत कराने के लिए, अपने जुर्म को कसूरवार ठहराने, और दोबारा **अल्लाह** कि मखलूक में शामिल होने के लिए•

ये सब शुरू हुआ कुछ करोड़ों साल पहले जब 'एक हंगामा शुरू हुआ आसमानी कौम में' (38:69)• ऑला दरजों के मखलूको में से एक, शैतान, ने तकब्बुर वाले ख्यालों को पनाह दिया के उसे **अल्लाह** से दी गई ताकतें कामयाब करतीं हैं उसे **अल्लाह** के अलावा एक खुदा होने के लिए• उसने इस तरह **अल्लाह** के मुकम्मल इक्तेदार को ललकारा • नाहि सिर्फ शैतान का ख्याल था बेदीनी, वो था गलत– सिर्फ **अल्लाह**, कोई और नहीं, रखता है काबिलियत और सलाहियत एक खुदा होने की• शैतान के बेअदबी के बाद, एक तकसीम वाकेया हुआ आसमानी कौम में, और **अल्लाह** के मखलूक के सारे टुकड़े बट गए चार गिरोहों में:

1. फरिश्ते: मखलूकें जिन्होनें बुलन्द रखा **अल्लाह** के मुकम्मल इक्तेदार को•
2. जानवरें: बागियें (जानवरें, दरख्तें, पेड़ें, सितारें, वगैराह) जिन्होंने लिया अल्लाह कि पेशकश का फायदा तौबा करने और उनकी बादशाहत में दोबारा दाखिल होने के लिए• *[तार्रुफ से]*
3. जिनें: मखलूकें जो राज़ी हुए शैतान के साथ; के वो काबिल है एक 'खुदा' होने का•
4. इन्सानें: मखलूकें जो तय नहीं कर पाए; वो **अल्लाह** के मुकम्मल इक्तेदार पर पुख्ता फैसला लेने में नाकामयाब हुए•

सबसे रहेम वाले

फरिश्तों ने उम्मीद किया **अल्लाह** खारिज कर दे उन मखलूकों को जिन्होंने बरकरार नहीं रखा **उनके** मुकम्मल इक्तेदार को (2:30)• लेकिन **अल्लाह** हैं **सबसे रहेम वाले**; **उन्होंने** फैसला किया एक मौका देने का ताके हम कसूरवार ठेहराऐं हमारे गलती को, और इत्तेला दी फरिश्तों को के **वो** जानते थे जो वो नहीं जानते हैं (2:30)• **अल्लाह** जानते थे कि कुछ मखलूकें एक मौके के हकदार थे माफ किये जाने के लिए•

अगर तुम दावा करो हवाई जहाज़ उड़ाने का, तुम्हारे दावेको आज़माने का सबसे बेहतर तरीका है के तुम्हें एक हवाई जहाज़ दिया जाए और कहा जाए उसे तुम उड़ाओ• ठीक ठीक यही है जो **अल्लाह ने** फैसला किया शैतान के दावे के जवाब में• **अल्लाह ने** पैदा किया सात बड़े आसमानों को, फिर इत्तेला दिया फरिश्तों को के वो शैतान को मुर्करर कर रहें हैं एक खुदा जैसा छोटे से तिनके पर जिसका नाम है 'ज़मीन'(2:30)• कुरानी शुमार शैतान को मुर्करर किया जाना एक आरज़ी 'खुदा' जैसा (36:60)तसदीक करता है पिछली आसमानी किताब का•

अल्लाह का मनसूबाह पुकारता था मौत पैदा किए जाने के लिए (67:1-2), फिर लाए जाना इन्सानों और जिनों को इस दुनिया में• इस तरह, वो शुरू करें बिना कोई तरफदारी के, और इस्तेमाल करें पूरी आज़ादी अल्लाह के मुकम्मल इक्तेदार या शैतान का मुशरिकाना नज़रिया बरकरार रखने के लिए•

इस एहम फैसले को करने के लिए, हर इन्सान पाता है **अल्लाह** कि तरफ से एक पैगाम **उनके** मुकम्मल इक्तेदार कि वकालत करते हुए, इसके साथ साथ शैतान कि तरफ से एक ज़ोर देता हुआ पैगाम उसके मुशरिकाना उसुलों का•

हमें पेशकदमी देने के लिए, **सबसे रहेमवाले** ने सारे इन्सानों को **उनके** सामने जमा किया, हमें इस दुनिया मे भेजने से पहले, और हमने गवाही दी के सिर्फ वही हैं हमारे **रब** और **मालिक** (7:172)• इस तरह, अल्लाह के मुकम्मल इक्तेदार को बरकरार रखना है एक कुदरती फितरत जो है एक अंदरूनी हिस्सा हर इन्सान का•

तू, शैतान, कहा तेरे दिल में: 'मैं आसमानों पर चढूंगा• अल्लाह के सितारों के ऊपर• मैं कायम करूंगा मेरा तख्त• मैं लेजाऊंगा अपनी कुरसी मजलिस कि चढ़ान पर, शुमाल कि गहराई में• मैं चढूंगा बादलों के ऊपर; मैं होऊंगा सबसे ऊँचे कि तरह!' [इसाईयाह 14:13-15]

शैतान फिर ले गया ईसा को ऊपर एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर और ज़ाहिर किया उसके सामने सारी दुनिया कि सल्तनतें उनके शानो शौकत में, वादा करते हुए: 'ये सब मैं तुझे अता करूंगा अगर तू अपने आप को मेरे सामने सजदा करे फरमाबरदारी में•' इसपर ईसा ने उसे कहा 'तू दूर होजा शैतान!
आसमानी किताब में है: 'तुम्हें तुम्हारे रब **अल्लाह** कि इबादत करनी चाहिए; **सिर्फ उनकी** तुम्हें पुजा करनी चाहिए•'
[मिथ्यु 4:8-10] & [लूक 4:5-8]

बागियों को मौत रसीद करने के बाद, इन्सानों और जिनों कि रूहों को रखा गया एक खास जमा करने वाली जगह में• **अल्लाह** ने फिर पैदा किया मुनासिब जिस्में जिनों और इन्सानों कि रूहों के बसने के लिए आज़माइश के वकफे के दरमियान• पहले जिन का जिस्म आग से बनाया गया था, और शैतान मनसूब किया गया था उस जिस्म को (15:27)• पहले इन्सान का जिस्म पैदा किया गया था ज़मिनी चीज़, मिट्टी से (15:26), और अल्लाह ने मनसूब किया पहले इन्सान कि रूह उस जिस्म को• खुदाई मनसूबा कहता था फरिश्तों को इन्सानों कि खिदमत करना ज़मीन पर - उनकी हिफाज़त करना, हवा और बारिश को चलाना उनके लिए, ज़रूरतों को बांटना, बगैराह• ये हकीकत बयान कि गई है कुरान में मिसालिया अंदाज़ में: 'तुम्हारे **रब** नें कहा फरिश्तों से, 'सजदे में गिर जाओ आदम के सामने•' ज़ाहिरी तौर पर शैतान ने इन्कार किया कोई सरोकार रखने के लिए इन्सानी नस्ल कि खिदमत करने में (2:34, 7:11, 17:61, 18:50, 20:116)•

जबके आदम का जिस्म ज़मीन पर रहा, अस्ल शक्स, रूह, दाखिल किया गया था जन्नत में बिल्कुल बाहर वाले आसमान में• **अल्लाह** ने आदम को कुछ खास अेहकामात दिए, मना किए गए पेड़ कि शक्ल में, और शैतान को मुर्करर किया गया था आदम का साथी आदम को उसका शैतानी पैगाम पहुँचाने के लिए, बाकि है तारीख•

जब भी एक इन्सान पैदा होता है, एक इन्सान शक्स मनसूब किया जाता है नये बच्चे को उस जगेह से जहाँ रूहें जमा रखी गई हैं• अल्लाह मनसूब करते हैं रूहों को उनके इल्म के मुताबिक (28:68)• हर रूह मुस्तेहेक है एक खास जिस्म को मनसूब किए जाने, और खास हालात में जिए जाने के लिए• सिर्फ अल्लाह जानते हैं कौनसी रूहें अच्छी हैं और कौनसी रूहें बुरी• हमारे बच्चे हमारे घरों में मनसूब किए जाते हैं आल्लाह के मनसूबे के मुताबिक में•

एक तन्हा जिन रूह भी मनसूब किया जाता है नए इन्सान को शैतान के नज़रिये की नुमाइंदगी करने के लिए• जबके किसी जिन का असल जिस्म पैदा किया जाता है वालिदैन जिनों से, जिन का रूह है एक तन्हा शक्स का• जिनें हैं शैतान की औलादें (7:27, 18:50)• मनसूब किया गया जिन रहता है इन्सान के साथ पैदाइश से मौत तक, और काम देता है अहेम गवाह होने का इंसाफ के दिन पर (50:23)• एक लगातार बहेस जारि रहती है हमारे ज़हनों में इन्सानी रूह और जिन ी रूह के दरमियान जब तक दोनों एक नज़रिये पर राज़ी नहीं हो जाते•

पहला गुनाह

आम अकीदे के खिलाफ, **आल्लाह** के कानून कि नाफरमानी नहीं था आदम का 'पहला गुनाह' जब उसने मना किए गए पेड़ से खाया• बड़े हंगामे के वक्त **अल्लाह** के मुकम्मल इक्तेदार को बरकरार रखने में नाकामयाबी था हमारा पहला गुनाह• अगर इन्सान शक्स यकीन दिला देता या देती है उसके जिन साथी को उस पहले गुनाह की मलामत करने, और **अल्लाह** के मुकम्मल इक्तेदार को बरकरार रखने के लिए, दोनों मखलूकों कि मगफरत कर दी जाती है **अल्लाह** कि सदा कायम रहने वाली सल्तनत में इंसाफ के दिन पर• लेकिन अगर जिन साथी राज़ी कर ले इन्सान को शैतान के मुशरिकाना नज़रिए को बरकरार रखने के लिए, फिर दोनों मखलूकें खारिज कर दिए जाते हैं सदा के लिए **अल्लाह** कि सल्तनत से•

उसके नज़रिए को आगे बढ़ाने के लिए, शैतान और उसके नुमाइंदे बेबस मखलूकें जैसे मुहम्मद, ईसा, मरयम और बुर्जुगों को बुत बनाने की वकालत करते हैं• चूँकी हम यहाँ हैं हमारे मुशरिकाना रूझानों कि वजेह से, हम में से ज्यादा आसान शिकार हैं शैतान के लिए•

शैतान कि नाकाबिलियत एक 'खुदा' जैसा होने की पहले से साबित हो चुकी है उस की पूरी सल्तनत में अफरा तफरी, बिमारी, हादसे, मुसीबत और जंग का वाकय होने कि वजह से (36:66)• दूसरी तरफ, इन्सानें जो ठुकराते हैं शैतान को, बरकरार रखते हैं **अल्लाह** के मुकम्मल इक्तेदार को, और बाज़ आते हैं बेबस और मुर्दा मखलूकें जैसे ईसा और मुहम्मद को बुत बनाने से, लौटाए जाते हैं **अल्लाह** कि हिफाज़त कि तरफ – वो लुत्फ उठाते हैं बेऐब ज़िंदगी की यहाँ इस दुनिया में और हमेशा के लिए•

इसलिए कि हमारी जिंदगी इस दुनिया में है आज़माईशों का एक सिलसिला बनाई गई हमारे मुशरिकाना ख्यालों को फाश करने के लिए, बुतपरस्ती ही है सिर्फ ना माफ होने वाला जुर्म (4:48, 116)• दुनिया खुदाई तौर पर बनाई गई है ज़ाहिर करने के लिए हमारा फैसला यातो **अल्लाह** का मुकम्मल इक्तेदार बरकरार रखना या शैतान के मुशरिकाना नज़रियों को (67:1-2)• दिन और रात लगातार बदलते रहते हैं इरादे को आज़माने के लिए कि हम **अल्लाह** के कानूनों को बरकरार रखते हैं सुबह कि नमाज़ अदा करते हुए और सबसे गर्मी और सबसे लम्बे दिनों में रोज़ा रखते हुए• सिर्फ उनकी मगफरत की जाती है जो पूरी तरह यकीनी हैं **अल्लाह** के मुकम्मल इक्तेदार के बारे में (26:89)•

****

अपेन्डिक्स 8

शिफाअत का वहेम

मानना के कोई भी, **अल्लाह** के अलावा, शिफाअत कर सकता है हमारे वासते हमारे गुनाहों को माफ कराने के लिए या हमारे ख्वाहिशों को पूरा कराने के लिए, है शरीकों को कायम करना **अल्लाह** के साथ• ये बुतपरस्ती है• कुरान ऐलान करता है के "सारी शिफाअत है **अल्लाह** के पास" (39:44), और ये के "नहीं होगा शिफाअत वहाँ फैसले के दिन पर" (2:254)•

शिफाअत का वहेम है शैतान के सबसे बड़े फरेबों में से एक ताके धोखा दे करोड़ों लोगों को बुत कि इबादत करने में• करोड़ों ईसाईयें मानते हैं के ईसा उनके लिए शिफाअत करेंगे **अल्लाह** के पास, और करोड़ों मुसलमानें ईमान रखते हैं के मुहम्मद शिफाअत करेंगे उनके वासते• इस वजह से, ये लोग बुत बनाते हैं ईसा और मुहम्मद को•

शिफाअत का नज़रिया है बिल्कुल नामाकूल• जो कोई मुहम्मद कि शिफाअत में ईमान रखते हैं, मिसाल के तौर पर, मुतालबा करते हैं के वो पूछेंगे **अल्लाह** से उन्हें माफ करने के लिए और उन्हें जन्नत में दाखिला देने के लिए• वो मुहम्मद को तसव्वुर करते हैं इंसाफ के दिन पर चुनते हुए उम्मीदवारों को उनकी शिफाअत के लिए• अगर आप उनसे पुछें जो शिफाअत में ईमान रखते हैं: "कैसे पहचानेंगे मुहम्मद उनको जो मुसतहेक हैं उनकी शिफाअत के?" वो कहेंगे तुम्हें, "**अल्लाह** उन्हें बतायेंगे!" इस नज़रिये के मुताबिक, एक शक्स जाएगा मुहम्मद के पास और दरख्वास्त करेगा उनकी शिफाअत का• मुहम्मद फिर **अल्लाह** से पुछेंगे क्या ये शक्स मुसतहेक है उनकी शिफाअत का या नहीं• **अल्लाह** मुहम्मद को इत्तेला करेंगे के ये शक्स मुसतहेक है जन्नत को जाने के लिए• मुहम्मद फिर पिछे पलटेंगे और कहेंगे **अल्लाह** को कि ये शक्स हकदार है जन्नत को जाने के लिए! बेअदबी ज़ाहिर है; जो कोई शिफाअत में ईमान रखते हैं बनाते हैं अल्लाह को एक सेकरेटरी उनके बुत मुहम्मद का• तारीफ हो **अल्लाह** की•

चुंके कुरान है सबसे दुरूस्त किताब, वो कबूल करता है के हर कोई जन्नत में वकालत करेगा या करेगी अपने चाहनेवालों के वासते: " बराए करम **अल्लाह**, मेरी वालिदा को जन्नत में दाखिल कर दीजिए•" ये शिफाअत काम आएगी अगर उस शक्स कि वालिदा मुसतहेक है जन्नत को जाने के लिए (2:255, 20:109, 21:28)• इस तरह, शिफाअत, हालाँके इस अंदाज़ में की जाएगी, है बिल्कुल बेकार•

हम सीखते हैं कुरान से के इब्राहीम, **अल्लाह** के चहीते बंदे, शिफाअत नहीं कर सके उनके वालिद के वासते (9:114)• नुह उनके बेटे के वासते शिफाअत नहीं कर सके (11:46)• मुहम्मद शिफाअत नहीं कर सके उनके चचा (111:1-3) या रिशतेदारों के के वासते (9:80)• वो क्या है जो किसी को आमादा करती है सोचने पर के एक नबी या एक बुजुर्ग शिफाअत करेंगे एक बिल्कुल अंजान शक्स के वासते?! देखें 2:48, 123; 6:51, 70, 94; 7:53; 10:3; 19:87; 26:100; 30:13; 32:4; 36:23; 39:44; 40:18; 43:86; 53:26 और 74:48 मुहम्मद कि शिफाअत है 25:30 में•

****

अपेन्डिक्स 9

इब्राहीम: पहले रसूल इस्लाम के

बड़ी गलत फेहमियों में से एक है की मुहम्मद थे इस्लाम के आगाज़ करने वाले• हालाँके इस्लाम, पूरी फरमानबरदरी सिर्फ **अल्लाह** के लिए, है सिर्फ मज़हब **अल्लाह** कि तरफ से कबूल किया गया आदम के वक्त से (3:19, 85), इब्राहीम बयान किये गये हैं कुरान में सब से पहले "इस्लाम" लफ्ज का इस्तेमाल करने वाले और हैं वो जिन्होंने हमें नाम दिया "मुसलमानें", यानी, फरमानबरदारें (22:78)• इब्राहीम कि मुकम्मल फरमानबरदारी **आल्लाह** के लिए ज़ाहिर की गई है उसके सिर्फ बेटे, इस्माईल को कुरबान करने के लिए मशहूर रज़ामंदी के ज़रिये, जब उसने <u>सोचा</u> के वो **अल्लाह** का हुक्म था• जैसा पता चलता है, ऐसा हुक्म असल में था शैतान कि तरफ से•

अल्लाह ने कभी हुक्म नहीं दिया इब्राहीम को उसके बेटे को कुरबान करने लिए

अल्लाह हैं **सबसे रहीम • वो** कभी नहीं तोड़ते खुद का कानुन (7:28)• कोई भी शक्स जो मानता है के **सबसे रहीम** ने इब्राहीम को उसके बेटे को कत्ल करने का हुक्म दिया मुमकिन नहीं के **अल्लाह** की जन्नत में जा सके• ऐसी बुरी सोच रखना **अल्लाह** के बारे में है एक बड़ी बेअदवी• कहीं भी हम कुरान में नहीं देखते के अल्लाह ने इब्राहीम को उसके बेटे को कत्ल करने का हुक्म दिया हो• बलिके, **अल्लाह** ने दखल अंदाज़ी किया इब्राहीम और इस्माईल को शैतान के मनसूबे से बचाने के लिए (37:107), और उन्होंने इबराहीम को कहा: "तुमने सपने पर यकीन किया" (37:105)• बिला शक, वो सपना शैतान कि तरफ से इल्हाम किया गया था• **अल्लाह** का अटल कानून है: "**अल्लाह** कभी भी गुनाह कि वकालत नहीं करते" (7:28)•

मिल्लते इब्राहीम

इस्लाम कहा जाता है "*मिल्लते इब्राहीम*" पूरे कुरान में (इब्राहीम का मज़हब) (2:130, 135; 3:95; 4:125: 6:161; 12:37-38; 16:123; 21:73; 22:78)• इसके अलावा, कुरान हमें इत्तेला करता है के मुहम्मद थे इब्राहीम के एक पैरवी करने वाले (16:123)•

इस हकीकत कि आम बेखबरी कि वजह से कि इब्राहीम थे पहले रसूल इस्लाम (फमनबरदारी) के, कई कहलाये जाने वाले मुसलमानें **अल्लाह** को ललकारते हैं: "अगर कुरान है मुकम्मल और पूरी तरह तफसील की गई (जैसा **अल्लाह** दावा करते हैं), हम कहाँ पा सकते हैं हर रावता नमाज़ (सलात) में रकातों (अददों) के शुमार को?" हम सीखते हैं कुरान से के सारे मज़हबी तरीके इस्लाम के कायम किए गए थे कुरान के नाज़िल होने से पहले (8:35, 9:54, 16:123, 21:73, 22:27, 28:27)• आयत 16:123 है सीधा सबूत के सारे मज़हबी तरीके इस्लाम में सलामत थे जब मुहम्मद पैदा हुए थे• मुहम्मद को ताकीद किया गया था "पैरवी करो इब्राहीम के मज़हब की•" अगर मैं आप से कहूं एक रंगीन टीवी खरीदने के लिए, ये समझा जाता है के आप जानते हैं कि एक रंगीन टीवी क्या है• उसी तरह, जब **अल्लाह** ने मुहम्मद को ताकीद किया इब्राहीम के तरीकों पर चलने के लिए (16:123), ऐसे तरीके लाज़िम हैं अच्छे से वाकिफ हुए होने चाहियें•

दुसरा सबूत खुदाई हिफाज़त इब्राहीम को दिए गए इस्लामी तरीकों का है “आलमी कबूलियत” ऐसे तरीकों की• कोई नाइत्तेफाकी नहीं है रोज़ाना पाँच नमाज़ों में रकातों के शुमार के मुताल्लिक• ये सबित करता है सलात के खुदाई हिफाज़त का• कुरान का रियाजी कोड पाँच नमाजों में रकातों के शुमार कि तसदीक करता है 2, 4, 4, 3, और 4, उस तरतीब में• नम्बर 24434 है एक 19 का ज़रप•

कुरान ताआल्लुक रखता है सिर्फ उन तरीकों के साथ जो बिगाड़ दिए गए थे• मिसाल के तौर पर, बिगड़ा हुआ वजू फिर दुरूस्त किया गया है 5:6 में उसके असल चार हिस्सों को• रावता नमाज़ों (सलात) के दरमियान आवाज़ का अंदाज़ बिगाड़ दिया गया था — कई मुसलमानें खामोशी से पढ़ते हैं• ये दुरूस्त किया गया था कुरान में, 17:110• रोज़ा रमज़ान के दरमियान तवदील किया गया रात में शहवत कि इजाज़त देने के लिए कुरान में (2:187)• ज़कात दुरूस्त किया गया है 6:141 में, और हज दुरूस्त किया गया सही चार महीनों को (देखें अपेन्डिक्स 15)•

****

अपेन्डिक्स 10

अल्लाह का एक से ज्यादा वाला हाल इस्तेमाल करना

अंग्रेज़ी बोलने वाले जहान में, जहाँ ट्रिनिटी अकीदा आम है, कुछ लोग रागिब होते हैं **अल्लाह** के एक से ज्यादा वाला हाल इस्तेमाल किये जाने पर कुरान में• कुरान का ज़बरदस्त पैगाम, जहाँ नहीं है कोई समझौता कि “**अल्लाह हैं एक**” (2:133, 163; 4:171; 5:73; 6:19; 9:31; 12:39; 13:16; 14:48, 52; 16:22, 51; 18:110; 21:108; 22:34; 37:4; 38:65; 39:4; 40:16; 41:6; 112:1)•

जब भी *first person* एक से ज़्यादा वाला रूप इस्तेमाल किया जाता है कादिरेमुतलक कि तरफ से, वो हमेशा इशारा करता है दूसरी हस्तीयों का शामिल होना, जैसा के फरिश्ते• मिसाल के लिए, नाज़िल होना इस कुरान का ज़रूरत पड़ी फरिश्ते जिब्राईल और नबी मुहम्मद कि• इसलिए 15:9 में इस्तेमाल किया जाना एक से ज्यादा वाला रूप: “हम ने नाज़िल किया ये आसमानी किताब, और हम इसे महफूज़ रखेंगे•” यहाँ पर एक से ज्यादा वाला रूप सादगी से हकीकत को इशारा करता है के फरिश्ते जिब्राईल और नबी मुहम्मद शामिल हुए पहुँचाने के निज़ाम में•

दुसरा मिसाल है आदम और ईसा को ज़िंदगी की साँस फूँके जाने के मुताल्लिक• आदम की पैदाईश हुई जन्नत में और **अल्लाह** ने सीधे फूँका उसमें ज़िन्दगी की साँस• इसलिए, *first person* वाहदाना रूप मुसलसल इसतेमाल किया गया है; “**मैंने** फूँका आदम के अंदर **मेरी** रूह से” (15:29, 38:72)• ईसा की पैदाईश, दूसरी तरफ, हुई ज़मीन पर, और जिब्राईल ने पहुँचाया **अल्लाह** का “लफ्ज़” मरियम कि तरफ• एक से ज़्यादा वाला रूप मुसलसल इस्तेमाल किया गया है जब हवाला दिया जाता है ईसा की पैदाईश का (21:91, 66:12)•

जब **अल्लाह** ने मूसा से सीधे बात किया, बगैर फरिश्तों की दखल अंदाज़ी के, हम देखते हैं कि **अल्लाह** बात कर रहे हैं सिर्फ वाहदाना अंदाज़ में: “***मैं हूँ अल्लाह*** • कोई खुदा नहीं ***मेरे*** सिवाए• तुम्हें सिर्फ ***मेरी*** इबादत करनी चाहिए, और बाकायदगी से अदा करो रावता नमाज़े (सलात) ***मुझे*** याद करने के लिए•” (20:12-14)•

जब भी **अल्लाह** की इबादत बयान की जाती है, वाहदाना अंदाज इस्तेमाल किया जाता है (51:56)•

****

अपेन्डिक्स 11

हश्र का दिन

सुर फूँका गया है, जिसपर हर कोई आसमानों और ज़मीन में बेहोश कर दिए गए हैं, सिवाए उनके जो **अल्लाह** कि तरफ से बचाये गए हैं• फिर वो फूँका गया है दूसरी बार, जिसपर वो उठ खड़े होते हैं• [39:68]

इंसानों और जिनों कि सारी नस्लें जिलाए जायेंगे इस ज़मीन पर; उनमें से तकरीबन 15,000 करोड़• लेकिन हम ज़मीन से बंधे न होंगे• **अल्लाह** हमें सिखाते हैं तितली के बच्चे के मिसाल के ज़रिए; वो तबदील होता है प्यूपा में गिलाफ (कब्र) के अंदर, फिर निकलता है गिलाफ से उड़ती तितली की तरह• उसी तरह, हम यहाँ ज़मीन पर रहते हैं, और जब हम निकलेंगे कब्र से हश्र के दिन पर हम ज़मीन से बंधे न होंगे; तितली की तरह (101:4)•

ज़मीन चमकेगी **अल्लाह** की रौशनी से (39:69) जैसे ही **वो** आते हैं हमारी कायनात कि तरफ, साथ फरिश्तों के (89:22)• चूँकि हमारी कायनात है एक आरज़ी सलतनत शैतान के लिए, वो सामना नहीं कर सकती **अल्लाह** के जिस्मानी मौजुदगी का (7:143)• जैसे ही **कादिरे मुतलक** करीब आयेंगे, सितारे एक दूसरे में टकरा जाऐंगे (77:8, 81:2), और जमीन हमारे पैरों के नीचे चकनाचूर हो जाएगी (69:14, 89:21)• ये दहशतें परेशान नहीं करेंगीं ईमान वालों को (21:103)•

ऊँची जन्नत

कादिरे मुतलक अल्लाह के आने पर, सारे इंसानें और जिनें अपने आप तकसीम हो जाऐंगे उनके बढ़ने और तरक्की के दरजे के मुताबिक• वो जिन्होंने सिर्फ **अल्लाह** की इबादत के ज़रिए उनके रूहों की परवरिश की, ईमान रखते हुए अगली ज़िंदगी में, और बसर करते हुए एक नेक ज़िन्दगी होंगे काफी ताकतवर **अल्लाह** के करीब रहने के लिए; वो सबसे ऊँचे दरजों को हासिल करेंगे (देखें अपेन्डिक्स 5)•

निचली जन्नत

वो जिन्होंने उनकी रूहों को कम दरजे तक बढ़ाया, और वो भी जो मर गए चालीस साल की उम्र से पहले, वो जाऐंगे नीचे की तरफ निचली जन्नत को• वो जाऐंगे उस जगह जहाँ वो रह सकते हैं **अल्लाह** के उतने करीब जितना उनका बढ़ने और तरक्की का दरजा उन्हें इजाज़त दे होने के लिए•

ऑराफ

वहाँ होंगे लोग जिन्होंने उनकी रूहों की परवरिश की बस इतना के उनको बचाया जा सके जहन्नम से, लेकिन काफी नहीं निचली जन्नत में दाखिल होने के लिए• वो हैं नाहि जहन्नम में, नाहि जन्नत में• वो इल्तेजा करेंगे **अल्लाह** से उन्हें निचली जन्नत में दाखिल करने के लिए (7:46-50)• **अल्लाह** उनपर रहेम करेंगे, और मिला देंगे ऑराफ को निचली जन्नत में•

जहन्नम

एक नई, आठवी कायनात पैदा की जाएगी घर करने के लिए उनको जो दूर भाग जाते हैं **अल्लाह** से उनकी कमज़ोरी की वजह से; वो नाकामयाब हुए उनकी रूहों की परवरिश और तरक्की करने के लिए (69:17)• **अल्लाह** एक भी जान को जहन्नम में नहीं डालते; वो जाते हैं उसकी तरफ उनकी खुद की मरज़ी पर (अपेन्डिक्स 5)•

****

अपेन्डिक्स 12

नबी मुहम्मद का काम

नबी का सिर्फ मकसद था कुरान पहुँचाना, पूरा कुरान, और कुरान के अलावा कुछ नहीं (3:20; 5:48-50, 92, 99; 6:19; 13:40; 16:35, 82; 24:54; 29:18; 42:48; 64:12)•

कुरान पहुँचाना इतना ऐहेम और अज़ीम मकसद था के नबी के पास कोई वक्त नहीं था कुछ और करने के लिए• इसके अलावा, नबी सबसे सख्त लफ्ज़ों में ताकीद किये गये थे कुरान के अलावा कोई और तालीमों को जारी करने से (69:38-47)• वो यहाँ तक के कुरान को समझाने से ताकीद किये गये थे (75:15-19) – सिर्फ **अल्लाह** हैं सिखाने वाले कुरान के (55:1-2) और कुरान है सबसे अच्छी *हदीस* (39:23 & 45:6)•

ये कुरानी हकीकतें ज़ाहिर किये गये हैं तारीखी सच्चाई में कि नबी को मनसूब किए गए लफ्ज़ें और तरीके (*हदीस* और *सुन्नत*) नज़र नहीं आये उनकी मौत के दो सदी बाद तक• कुरान ने पेशीनगोई किया है नबी के दुश्मनों की तरफ से *हदीस* और *सुन्नत* का झूठ (6:112-115)• कुरान हमें सिखाता है कि वो थी **अल्लाह** की मर्ज़ी इजाज़त देना *हदीस* और *सुन्नत* के एजाद होने का ताके मयार जैसा काम करे फाश करने के लिए उनको जो ईमान रखते हैं सिर्फ उनके जबानों से, उनके दिलों में नहीं• जो कोई *हदीस* और *सुन्नत* की तरफ रागिब होते हैं साबित किये जाते हैं झूठे ईमानवाले होने के लिए (6:113)• अफसोस के, *हदीस* की किताबें इत्तेला देतीं हैं नबी के हुक्में लिखने के लिए उनकी तरफ से कुछ नहीं सिवाए कुरान! नीचे दिखाई गई हैं ऐसी दो *हदीसें* ली गई हदीस मानने वालों की सबसे काबिले ऐतबार ज़रीये से, सही मुस्लिम और इसाह अहमद इब्न हन्बल:

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «لَا تَكْتُبُوا عَنِّي شَيْئاً سِوَى الْقُرْآنِ . مَنْ كَتَبَ شَيْئاً
سِوَى الْقُرْآنِ فَلْيَمْحُهُ»⁽¹⁾ .

नबी ने कहा, “न लिखो मुझसे कुछ भी सिवाए कुरान” [अहमद, किताब 1, पेज 171, सही मुस्लिम]

عَنْ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ : [دَخَلَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَلَى مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ، فَحَدَّثَهُ حَدِيثاً ، فَأَمَرَ إِنْسَاناً أَنْ يَكْتُبَ ، فَقَالَ زَيْدٌ : إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى أَنْ نَكْتُبَ شَيْئاً مِنْ حَدِيثِهِ ، فَمَحَاهُ] .

ये हदीस बयान करती है नवी ने बरकरार रखा हदीस की मुखालफत उनकी मौत तक॰ [अहमद, किताब 1, पेज 192]

****

अपेन्डिक्स 13

इस्लाम (फरमानबरदारी) का पहला खम्बा

"ला इलाहा इल्लल्लाह" (कोई खुदा नहीं सिवाए अल्लाह के)

आयत 3:18 बयान करती है इस्लाम (फरमानबरदारी) का पहला खम्बा: "**अल्लाह** गवाही देते हैं कि कोई खुदा नहीं सिवाए उनके, और उसी तरह फरिश्ते और वो जो रखते हैं इल्म"॰

इस सबसे ऐहम खम्बे को बिगाड़ दिया गया है॰ करोड़ों मुसलमानों ने अपनाया है शैतान का मुशरिकाना नुसखा, और मुहम्मद का नाम लेने पर इसरार देते हैं **अल्लाह** के नाम के साथ॰ बहेरहाल, कुरान का बड़ा मयार 39:45 में ऐसे मुसलमानों पर काफ़िरों जैसा मोहर लगाता है: "जब सिर्फ **अल्लाह** बयान किये जाते हैं, दिलें उनके जो ईमान नहीं रखते अगली ज़िंदगी में सिकुड़ जाते हैं नफरत से॰ लेकिन जब दूसरे बयान किये जाते हैं उनके साथ, वो मुतमईन हो जाते हैं"॰

इस मयार पर मैंने किया हैं भारी तहकीकात, और मैं पहुँचा हूँ एक हैरतअंगेज़ नतीजे पर: बुतपरस्ती करने वाले जो बरकरार नहीं रखते इस्लाम के पहले खम्बे को जैसा हुक्म हुआ है 3:18 में रोके गए हैं **अल्लाह** कि तरफ से सही शहादत कहने से॰ वो नहीं कह सकते सिर्फ "*अश्हदु **अल्लाह** इलाहा इल्लल्लाह*" खुद से, मुहम्मद का नाम लिए बगैर॰ आज़माओ इस से कोई बुत परस्त को जो एक मुसलमान होने का दावा करता है॰ दावा करो उनको कहने के लिए "*अश्हदु **अल्लाह** इलाहा इल्लल्लाह*"॰ वो कभी नहीं कह सकते इसे॰ चूँकी ये है इब्राहीम का मज़हब (2:130, 135; 3:95; 4:125; 6:161; 12:37-38; 16:123; 22:78; अपेन्डिक्स 9), **सिर्फ** अकीदा होना चाहिए **"ला इलाहा इल्लल्लाह"** (कोई खुदा नहीं सिवाए **एक अल्लाह** के) • मुहम्मद नहीं थे मौजूद ज़मीन पर इब्राहिम से पहले॰

एक बहुत बड़ी बेअदबी

कुरान को बिगाड़ना नबी मुहम्मद को बुत बनाने के लिए उनकी मरज़ी के खिलाफ इस से बड़ी कोई बेअदबी नहीं॰ आयत 19 सुरेह 'मुहम्मद' कि (47:19) कहती है: "तुम्हें पता होना चाहिए कि कोई खुदा नहीं सिवाए एक **अल्लाह** के"॰ दिखाई गई है नीचे एक फोटो कॉपी आम निशानी एक मुस्लिम इश्तेहार कि THE REVIEW OF RELIGIONS (The London Mosque, 16 Gressenhall Road, London SW18 5QL, England) • कुरान कि कलाम कशी का अंदाज़ इस्तेमाल करते हुए, THE REVIEW OF RELIGIONS के छापने वालोंने शामिल कर दिया जुमला "मुहम्मद रसूल अल्लाह" इस अंदाज़ में जो देता है एक झूठा एहसास कि ऐसा है कुरानी कलमा 47:19 का॰ क्या एक बेअदबी!

तुम्हें पता होना चाहिए के कोई खुदा नहीं सिवाए एक **अल्लाह** के, अल्लाह• मुहम्मद रसूल अल्लाह•

[बेअदबी]

यकसा मिसाल बिगड़े हुए इस्लाम का

****

अपेन्डिक्स 14

तकदीर

हम पूरी तरह आज़ाद हैं अल्लाह को मानने या न मानने में• ये अल्लाह की मर्ज़ी है कि हम चाहें (18:29, 25:57, 73:19, 74:37, 76:29, 78:39, 80:12)•

हमारा पहला गुनाह करने के बाद (अपेन्डिक्स 7), अल्लाह ने दिया हमें एक मौका अपने जुर्म की मलामत और **उनके** मुकम्मल इकतेदार को कबूल करने के लिए (33:72)• लेकिन हमने तय किया के हम शैतान की काबिलियत एक खुदा जैसे का एक मुज़ाहिरा देखना चाहते हैं• कई लोग इस हकीकत पर ऐतराज़ करते हैं कि अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है, ताके गुज़ारे उन्हें इस हौलनाक आज़माईश से• ज़ाहिर है, ऐसे लोग वाकिफ नहीं हैं कि [1] उन्होंने एक खौफनाक र्जुम किया है (तॉरूफ और अपेन्डिक्स 7), और [2] कि उन्हें दिया गया है एक मौका उनके र्जुम कि मलामत और खुदकी मगफरत करने के लिए, लेकिन उन्होंने चुना आज़माईश से गुज़रना•

हम सीखते हैं 57:22 से कि हमारी जिंदगीयाँ, साथ हमारे इर्द गिर्द सारी चीज़ों के, हैं पहले से दर्ज कोई चीज़ जैसे के एक वीडियो टेप पर• अल्लाह पूरी तरह जानते हैं किस किस्म का फैसला हम में से हर एक पहले से मुकर्रर किया गया है लेने के लिए; वो जानते हैं हम में से कौन जा रहा है जन्नत को और कौन जा रहा है जहन्नम को• यहाँ तक कि हमारे इस दुनिया में पैदा होने से पहले, अल्लाह जानते थे कौनसी रूहें हैं अच्छी और कौनसी रूहें हैं बूरी• जहाँ तक अल्लाह कि हर चीज़ के इल्म का ताल्लुक है, हम तसव्वुर कर सकते हैं एक मोहर का हर किसी के माथे पर जो कहता है "जन्नत" या "जहन्नम•" इसके बावजूद, जहाँ तक के हमारा ताल्लुक है, हम हैं पूरी तरह आज़ाद अल्लाह के मुकम्मल इकतेदार, या शैतान के मुशरिकाना रायों कि तरफ होने के लिए• तकदीर, इसलिए, है एक हकीकत जहाँ तक अल्लाह का ताल्लुक है, लेकिन जहाँ तक हमारा ताल्लुक है नहीं•

ये समझ समझाती है कई आयतें कहती हैं कि "अल्लाह हिदायत देते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं, और गुमराह करते हैं जिस किसी को वो चाहते हैं•" उनके इल्म कि बुनियाद पर, अल्लाह मुकर्रर करते हैं हमारी रूहें हालातों कि तरफ जिसके हम मुस्तेहेक हैं• जब अल्लाह ने फरिश्तों को कहा, "मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते" (2:30), इसका मतलब था कि हम में से कुछ हकदार थे एक मौके का खुदकी मगफरत कराने के लिए• एक मिसाल अल्लाह की हिदायत की उनके लिये जो मुस्तेहेक हैं हिदायत के पाई जाती है 21:51 में: "हमने अता किया इब्राहीम को उसकी हिदायत, क्योंकि हम थे उससे पूरी तरह वाकिफ•" दूसरे लफ्ज़ों में, अल्लाह जानते थे कि इब्राहीम थे एक अच्छी रूह जो हकदारा थे हिदायत पाने के लिए, और अल्लाह ने उन्हें अता किया उनकी हिदायत और समझ• दूसरा अच्छा मिसाल बयान किया गया है 12:24 में • युसुफ डगमगा गया मिस्र के अमीर की बिवी पर, और तकरीबन ज़िना कर बैठा "अगर अगर वो उसके लिए न होता कि उसने देखा एक निशानी उसके रब कि तरफ से•"

अल्लाह हमें सिखाते हैं 12:24 में के उन्होंने "पलट दिया बुराई और गुनाह को युसुफ की तरफ से, इसलिए कि वो था मेरे तावेदार इबादत करने वालों में से एक•" क्या वो युसुफ था जिसने उसकी हवस को काबू में किया? या, थी वो अल्लाह की हिफाज़त गुनाह से जिसने उसे पाक दामन रखा? ऐसी है तकदीर•

****

अपेन्डिक्स 15

मज़हबी फरायेज़: एक तोहफा अल्लाह की तरफ से

जब इब्राहीम ने **अल्लाह** से इल्तेजा किया 14:40 में, उन्होंने नहीं मांगा दौलत या सेहत; तोहफा जो उन्होंने मांगा वो था: "बराए करम **अल्लाह,** बनाईये मुझे वो जो कायम करता है रावता नमाज़ें (सलात)•" मज़हबी फरायेज़ कायम किए गए **अल्लाह** की तरफ से हकीकत में हैं एक बड़ा तोहफा **उनकी** तरफ से• वो कायम करते हैं ज़रूरती खुराक हमारे रूहों के बढ़ने और तरक्की के लिए• बगैर ऐसी खुराक के, इंसाफ के दिन पर हम **अल्लाह** के जिस्मानी मौजुदगी से जुड़ी बेइन्तेहा ताकत को बरदाश्त नहीं कर सकते• **अल्लाह** पर अकीदा रखना अपने आप में ज़मानत नहीं देता हमारी मगफरत; ज़रूरी है हम हमारी रूहों की परवरिश करें (6:158, 10:90-92)• इसके अलावा, 15:99 कहता है कि कायम करना मज़हबी फरायज़ कायम किए गए **अल्लाह** कि तरफ से हैं हमारा ज़रिया यकीन हासिल करने का: "इबादत करो तुम्हारे **रब** की यकीन हासिल करने के लिए•"

रावता नमाज़ें (सलात)

रोज़ाना के पाँच रावता नमाजें हैं एहेम खाने हमारी रूह के लिए• जबके एक रूह हासिल कर सकती है कुछ बढ़हत और तरक्की एक नेक ज़िन्दगी बिताते हुए, और बगैर कायम करते हुए रावता नमाज़ें, ये ऐसा होगा जैसे जिन्दा रहना नाश्तों पर रोज़ाना के खानों के बगैर•

हम सिखते हैं 2:37 से कि हम कायम कर सकते हैं रावता **अल्लाह** के साथ **अल्लाह** कि तरफ से हमें दिए गए खास <u>अरबी लफ्जों</u> को कहते हुए• सुरेह 1, **चाबी,** है एक रियाज़ी तौर पर ढ़ाली गई तरतीब आवाज़ों की जो खोलती है हमारे और **अल्लाह** के बीच का दरवाज़ा:

1. सुबह की नमाज़ ज़रूरी है अदा कि जाए सूरज निकलने के दो घंटे पहले के दरमियान (11:114, 24:58)•
2. दोपहर की नमाज़ वाजिब हो जाती है जब सूरज ढलता है उसके सबसे ऊँचे जगह से दोपहर को (17:78)•
3. असर की नमाज़ अदा की जा सकती है सूरज डूबने से 3-4 घंटों पहले के दरमियान (2:238)•
4. मग़रिब की नमाज़ अदा करने का वक्त हो जाता है सूरज डूबने के बाद (11:114)•
5. रात की नमाज़ अदा की जा सकती है आसमान से शाम की रौशनी गायब होने के बाद(24:58)•

* जुमे को दोपहर की जमात वाली नमाज़ है एक ज़रूरी फर्ज़ हर फरमानबरदारी करते मर्द और औरत पर (62:9)• ना कामयाब होना जुमे की नमाज अदा करने के लिए है एक बहुत बड़ा जुर्म•

हर एक रावता नमाज़ है दुरूस्त अगर वो अदा की जाए कभी भी उसके वाजिब होने के वक्त से लेकर बाद वाली नमाज़ के वाजिब होने तक के दरमियान• कोई भी एक रावता नमाज़ एक बार खोना, है एक मौका खोना जो कभी पूरा नहीं किया जा सकता; कोई सिर्फ तौबा और मगफरत माँग सकता है• पाँच नमाज़ों में हैं 2, 4, 4, 3, और 4 अददें (रकातें), इस तरतीब में•

सबूत के *सलात* इब्राहीम के ज़रिये पहले से कायम थी पाई जाती है 8:35, 9:54, 16:123, और 21:73 में• ये सबसे एहेम फ़र्ज़ इस्लाम में इतनी बुरी तरह बिगाड़ दी गई है कि रावता नमाज़ें (*सलात*) बन गई है बुतपरस्ती का एक अमल ज़्यादातर मुसलमानों के लिए• हाँलाके कुरान हुक्म करता है कि हमारी रावता नमाज़ें सिर्फ **अल्लाह** को मनसूब की जानी चाहिए (20:14; 39:3, 45), आज के मुसलमानें इसरार करते हैं ज़िक्र करना "मुहम्मद और उनका कुम्बा" और "इब्राहीम और उनका कुम्बा" उनकी नमाज़ों के दौरान• ये नमाजों को रदद और ज़ाया कर देते हैं (39:65)•

नीचे दिया गया मत्न", मौजज़ों के मुताल्लिक रावता नमाज़ों की तसदीक करता हुआ, लिया (और सही किया) गया है <u>सबमिटर परसपैकटिव</u> के जनवरी 1990 रिसाले से (रेगुलर और स्पेशल बोनस रिसाले), जैसा लिखा गया डॉ रशादा खलीफा कि तरफ से•

ज़बरदस्त रियाज़ी मौजेज़ा
सारे पाँच राबता नमाज़ों की तसदीक करता है

[1] सुरेह 1 है **अल्लाह** का तोहफा हमारे लिए, **उनके** साथ राबता (सलात) कायम करने के लिए• लिखें सुरेह का नम्बर और आयतों का नम्बर एक दुसरे के आस पास और आप पायेंगे 17, टोटल नम्बर रकॉतों की रोज़ना के 5 नमाजों में•

[2] चलें लिखें सुरेह नम्बर, उसके बाद सुरेह के हर आयत का नम्बर• ये है जो हम पाते हैं:
1 1 2 3 4 5 6 7 ये नम्बर है एक 19 का ज़रप •

[3] अब, चलें बदल दें हर आयत का नम्बर उस आयत में हुरूफों के तादाद से• ये है जो हम पाते हैं:

1 19 17 12 11 19 18 43 ये नम्बर भी है एक 19 का ज़रप• उसुलन, कोई सुरेह 1 कि हुरूफों का नम्बर बदल सकता है, और रख सकता है वही हरूफों का नम्बर• बहेरहाल, नीचे दिया गया रियाज़ी कुदरत उस मुमकिन को खारिज करता है• इसलिए कि हर एक हुरूफ कि जिमेटरिकल वेल्यु पर तवज्जो दिया गया है• यहाँ है वो:

खुसुसियत सुरेह 1 कि, चाबि

आयत नम्बर	हुरूफों के अदद	जिमेटरिकल वेल्यु
1	19	786
2	17	581
3	12	618
4	11	241
5	19	836
6	18	1072
7	43	6009

[4] चलें हम शामिल करें हर आयत कि जिमेटरिकल वेल्यु को, और लिखें उसे हर आयात के हुरूफों के नम्बर के बाद:

1 19 786 17 581 12 618 11 241 19 836 18 1072 43 6009 ये नम्बर भी है एक 19 का ज़रप •

[5] अब, चलें जोड़ें हर आयत के नम्बर को, उसके बाद उस आयत कि हुरूफों के नम्बर से, फिर जिमेटरिकल वेल्यु उस आयत कि• ये है जो हम पाते हैं:

1 1 19 786 2 17 581 3 12 618 4 11 241 5 19 836 6 18 1072 7 43 6009 एक ज़रप 19 का•

[6] बजाए हर आयत के जिमेटरिकल वेल्यु के, चलें लिखें जिमेटरिकल वेल्यु सुरेह 1 के हर एक हुरूफ कि• ये वाकई ज़बरदस्त मौजेज़ा, दिखाता है के हसिल हुआ लम्बा नम्बर, जिसमें 274 अददें हैं, ये नम्बर भी है एक 19 का ज़रप• **अल्लाहू अकबर•**

1 7 1 19 2 60 40 1 30 30 5 1 30 200 8 40 50 1 30 200 8 10 40 2 17 … 50

ये नम्बर शुरू होता है सुरेह नम्बर के साथ, उसके बाद सुरेह में आयतों के नम्बर से, उसके बाद आयत का नम्बर, उसके बाद उस आयत में हुरूफों के नम्बर से, उसके बाद इस आयत में हर हुरूफ के जिमेटरिकल वेल्यु से, उसके बाद अगली आयत के नम्बर से, उसके बाद उस आयत के हुरूफों के नम्बर से, उसके बाद इस आयत में हर हुरूफ के जिमेटरिकल वेल्यु से, और इसी तरह सुरेह की आखीर तक• इस तरह, आखरी हिस्सा 50 है, "न" (आखरी हुरूफ) का वेल्यु•

[7] चुँके यहाँ मैं लम्बा नम्बर नहीं लिख सकता, चलें हम लम्बे नम्बर के लिए जिसमें हैं हर आयत का नम्बर बदलें [*] से, उसके बाद आयत में हुरूफों के नम्बर से, उसके बाद आयत में हर एक हुरूफ के जिमेटरिकल वेल्यु से• अगर हम लिखें सुरेह का नम्बर, उसके बाद उसके आयतों का नम्बर, हम पाते हैं 17, अददों (रकातों) का नम्बर रोज़ाना के 5 नमाज़ों में• 17 के पास, पहली नमाज़ में रकातों का नम्बर (2), उसके बाद दो [*], उसके बाद इस दूसरी नमाज़ में रकातों का नम्बर (4), उसके बाद चार [*], और उसी तरह आगे• इतना ही नहीं के हासिल हुआ लम्बा नम्बर है एक 19 का ज़रप, बलिके उस अददों के हिस्से का नम्बर है 4636 (19x244)…. बराए करम ध्यान दें कि कोई भी नुमाइंदगी सुरेह 1 कि ले सकती है [*] कि जगह नीचे दिखाये गये नम्बर में बगैर नतीजे को असर करते हुए; वो सारे देते हैं 19 का ज़रप• मिसाल के लिए, "चाबी" की एक छोटी नुमाइंदगी शामिल करती है सुरेह नम्बर (1), उसके बाद आयतों का नम्बर (7), उसके बाद सुरेह (1) में हुरूफों का टोटल नम्बर (139) उसके बाद पुरे सुरेह की टोटल जिमेटरिकल वेल्यु (10143)• हासिल हुआ नम्बर (1713910143) भी नुमाइंदगी किया जा सकता है [*] से•

17 2[*][*]4[*][*][*][*]4[*][*][*][*]3[*][*][*]4[*][*][*][*]

जुमे कि नमाज़ों की तसदीक

[8] चुँके जुमे कि नमाज़ों में हैं दो खुदबे और दो रकातें (टोटल है फिर भी 4 अदद), हम सिर्फ 15 "चाबीयाँ" पढ़ते हैं जुमे को, दुसरे दिनों में 17 के मुकाबले• अबदुल्लाह अरिक ने पता लगाया के अगर हम 17 को 15 से बदल देते हैं लम्बे नम्बर [7] में और निकाल दें दो "चाबीयों" को दोपहर कि नमाज़ से, हम फिर भी पाते हैं 19 का ज़रप • 2 "चाबीयों", के साथ दोपहर को, ये जुमे कि नमाज़ की तसदीक करता है• नीचे बताया गया लम्बा नम्बर नुमाइंदगी करता के जुमे कि पाँच नमाज़ें; ये है एक 19 का ज़रप•

15 2[*][*] 4[*][*] 4[*][*][*][*] 3[*][*][*] 4[*][*][*][*]

"चाबी" (अल-फातेहा) ज़रूरी है अरबी में पढ़ा जाए

[9] कुरान में पहली सुरेह ऐसे रियाज़ी अंदाज़ में तरतीब की गयी है के ज़मीन पर सबसे बड़े रियाज़तदानों को दावा करती है और हैरानी में डाल देती है• अब हम इस हकीकत को सराहते हैं जब हम सुरेह 1 "चाबी" को पढ़ते हैं, हमारी राबता नमाज़ों के दरमियान, कुछ होता है कायनात में, और हम राबता कायम करते हैं हामारे **पैदा करने वाले** के साथ• इस का अंजाम है मुकम्मल खुशी, अभी और हमेशा के लिए• हमारे **कादिरे मुतलक पैदाकरने वाले** से एक दिन में 5 बार राबता कायम करते हुए, हम परवरिश करते हैं और बढ़ाते हैं हमारी रूहों को उस **बड़े दिन** की तैयारी में जब हम **अल्लाह** से मिलेंगे• सिर्फ वही जो उनकी रूहों कि परवरिश करते हैं काबिल होंगे **कादिरे मुतलक अल्लाह** कि जिस्मानी मौजूदगी का सामना करने और लुत्फ उठाने के लिए•

सारे फरमानबरदारें, हर मुल्कों के, पढ़ते हैं "चाबी" के लफ्ज़ों को जो लिखा गया था **खुद अल्लाह** कि तरफ से, और दिया गया हमें उनके साथ राबता कायम करने के लिए (2:37)•

एदिप युकसेल का खोज इज़ाफा करता है "चाबी" के शानदार होने का और साफ तौर पर ऐलान करता है के उसे अरबी में पढ़ा जाना चाहिए•

जब आप "चाबी" को अरबी में पढ़ते हैं, आप के होंठ ठीक ठीक एक दूसरे से 19 बार छूते हैं•

आपके होंठ छूते हैं एक दूसरे को जहाँ हुरूफ "ब"और "म" आते हैं• वहाँ हैं 4 "ब" और 15 "म" और ये मिलकर 19 हो जाते हैं• 4 "ब" की जिमेटरिकल वेल्यु है 4x2=8, और 15 "म" की जिमेटरिकल वेल्यु है 15x40=600• 4 "ब" और 15 "म" का टोटल जिमेटरिकल वेल्यु है 608, जो है 19x32•

रोज़ाना के 5 नमाज़ों की तसदीक, झुकने (रूकु), सजदों, और तशहहुद के अदद

[10] आम दावों में से एक ...है: "अगर कुरान है मुकम्मल और तफसील में (जैसा दावा किया गया है 6:19, 38 & 114 में), कहाँ हैं रावता नमाज़ों (सलात) की तफसीलें?" ये लोग ऐसा सवाल करते हैं क्योंकि वो बेखबर हैं के कुरान हमें इत्तेला करता है के रावता नमाज़ें आई हैं इब्राहीम की तरफ से (21:73 & 22:78)• अगर हम लिखें नमाज़ों के नम्बरें उनके रूकुओं, सुजूद और तशहहुदों के साथ, हम पाते हैं:

1 1 2 2 4 1 2 4 4 8 2 3 4 4 8 2 4 3 3 6 2 5 4 4 8 2

इस लम्बे नम्बर में है सुरह जो हम पढ़ते हैं 5 नमाज़ों में (1) उसके बाद पहली नमाज़ का नम्बर (1), फिर "चावीयों" कि अदद जो हम पढ़ते हैं इस नमाज़ में (2), फिर रूकुओं कि अदद (2), फिर सुजूद के अदद (4), फिर तशहहुदों के अदद (बैठे हाल में) (1), फिर दूसरी नमाज़ का नम्बर (2), फिर "चावीयों" कि अदद जो हम पढ़ते हैं दूसरी नमाज़ में (4), फिर रूकुओं कि अदद इस नमाज़ में (4), फिर सुजूद के अदद (8), फिर तशहहुद के अदद (2), फिर तीसरी नमाज़ का नम्बर (3), और इसी तरह आखरी नमाज़• ये लम्बा नम्बर है 19 का ज़रप, और ये तसदीक करता है नमाज़ों कि सबसे छोटी तफसीलें, यहाँ तक रूकु, सुजूद और तशहहुद के अददें•

	लफ्ज़	हुरूफ	वेल्यु
1.	बिस्म	ब	2
2.	बिस्म	म	40
3.	रहमान	म	40
4.	रहीम	म	40
5.	अलहम्दु	म	40
6.	रब्ब	ब	2
7.	आलमीन	म	40
8.	रहमान	म	40
9.	रहीम	म	40
10.	मालिक	म	40
11.	यौम	म	40
12.	नॉबुदु	ब	2
13.	मुस्तकीम	म	40
14.	मुस्तकीम	म	40
15.	अनअमता	म	40
16.	अलैहिम	म	40
17.	मगदुब	म	40
18.	मगदुब	ब	2
19.	अलैहिम	म	40
			608 (19x32)

ज़रूरी खैरात (ज़कात)

ज़रूरी है *ज़कात* दिया जाए "फसल कि कटाई के दिन" (6:141)• जब भी हम पाते हैं "पूरी आमदनी," ज़रूरी है हम अलग कर दें 2.5% और दें उसे खास पाने वालों को — वालिदैन, रिश्तेदारों, यतिमों, गरीब, और अनजान मुसाफिर, इस तरतीब में (2:215)• सबसे बड़ी ऐहमियत *ज़कात* की ज़ाहिर की गई है **अल्लाह** के कानुन में: "मेरी रहमत शामिल करती है सारी चिज़ों को, लेकिन मैं बताऊंगा नेककारों के लिए जो *ज़कात* देते हैं" (7:156)•

ज़रूरी है *ज़कात* ध्यान से हिसाब किया जाए और मामूल तौर पर दिया जाए जब भी हम कोई आमदनी पायें• गर्वमेन्ट के टेक्स घटा दिए जाने चाहिए, लेकिन दुसरे अखराजात नहीं जैसे उधार, गिरवी, और रहने के अखराजात• अगर किसी को जरूरतमंद शक्स नहीं मालूम, दे सकता या दे सकती है ज़कात किसी मस्जिद या खैराती जमात को सिर्फ गरीब लोगों के मदद के मकसद से• मस्जिदों या हॉस्पिटलों या जमातों को किया गया खैरात *ज़कात* नहीं माना जा सकता•

रोज़ा

पूरी तफसील दी गई है रोज़े की (2:183-187) में•

ज़ियारत: हज और उमराह

ज़िंदगी में एक बार, हज और *उमराह* फरमान किये गये हैं उनके लिए जो उसकी हैसियत रखते हैं• ज़ियारत याद दिलाता है इब्राहीम कि उमदा फरमानबरदारी अल्लाह के लिए (अपेन्डिक्स 9), और अदा किया जाना चहिए चार मुकददस महीनों के दरमियान — जुलहिज्जा, मुर्हरम, सफर, और रबीउलअव्वल (बारहवें, पहले, दूसरे, तीसरे महीने) (2:197; 9:2, 36)• *उमराह* कभी भी अदा किया जा सकता है• इस्लाम के दूसरे फरायज़ कि तरह, हज बिगाड़ दिया गया है• ज्यादातर मुसलमान हज अदा करते हैं जुलहिज्जा के सिर्फ कुछ दिनों के दरमियान, और वो रज्जब, जुलकायदा, जुलहिज्जा, और मुर्हरम (सातवें, ग्यारहवें, बारहवें, पहले महीने) को मुकददस महीने मानते हैं• ये है एक बिगाड़ जो सख्ती से मना किया गया है (9:37)•

हज शुरू होता है नहाने से, उसके बाद पाकीज़गी की हालत जिसे "*एहराम*" कहा जाता है, जहाँ पर हाजी मर्द बिना सिली चादरों का सामान पहनता है, और औरत इज्ज़त वाला लिबास पहनती है (2:196)• पूरे हज के दरमियान, हाजी परहेज़ करते हैं शहवत से, खुद की ऐहमियत जैसे दाढी और बाल काटने से, हुज्जत करने, बदइखलाकी, और बुरी ज़बान से (2:197)• सफाई, नहाना, और बाकायदा सेहत और सफाई वाली आदतों की हौसला अफज़ाई कि गयी है• मक्का में मुकददस मस्जिद पहुँचने पर, हाजी काबा के इर्द-गिर्द सात दफा चक्कर लगाते हैं, **अल्लाह** की बड़ाई और तारीफ करते हुए (2:125, 22:26-29)• आम नुस्खा है: "लब्बैका अल्लाहुम्मा लब्बैक" (मेरे **अल्लाह**, मैंने **आपका** जवाब दिया है)• "लब्बैका ला शरीका लका लब्बैक" (मैंने **आपका** जवाब दिया है, और मैं ऐलान करता हूँ कि कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए **आपके**; मैंने **आपका** जवाब दिया है)• इसके बाद का अमल है आधा मील चलना सफा और मरवाह के टिलों के दरमियान का फासला सात दफा, कभी कभार दौड़ते हुए (2:158)• ये मुकम्मल करता है हज के *उमराह* का हिस्सा•

फिर हाजी अरफात जाता है एक दिन बिताने के लिए इबादत, ध्यान और **अल्लाह** कि बड़ाई करने के लिए, सुबह से सुरज ढलने तक (2:198)• सुरज डूबने के बाद, हाजी जाता है मुज़दलिफा जहाँ पर रात की नमाज़ पढ़ी जाती है, और 21 कंकड़ें उठाये जाते हैं निशानी तौर पर मिना में शैतान को मारने के लिए• मुज़दलिफा से, हाजी दो या तीन दिन बिताने के लिए मिना जाता है (2:203)• मिना में पहली सुबह को, हाजी जानवर की कुरबानी देता है गरीबों को खिलाने के लिए और याद करने के लिए **अल्लाह** की दखलअंदाज़ी इस्माईल और इब्राहीम को शैतान के जालसाज़ी से बचाने के लिए (37:107, अपेन्डिक्स 9)• पत्थर मारने कि रस्में शैतान के मुशरिकाना ख्याल को ठुकराने की निशान पेश करते हैं और ऐसा किया जाता है हर तीन मकामों पर सात कंकड़ें मारकर, **अल्लाह** कि बड़ाई करते हुए (15:34)• हाजी फिर मक्का लौटता है और अलविदा तवाफ करता है काबा का सात बार•

बदनसीबी से, आज के ज़्यादातर मुसलमान हाजीयें एक रस्म बनाते हैं नबी मुहम्मद की कब्र की ज़ियारत करने के लिए जहाँ वो बेहद खुल्लम खुल्ला बुतपरस्ती वाली हरकतें करते हैं और इस तरह उनके हज को ज़ाया करते हैं• कुरान मुसलसल "मुकददस मस्जिद," के बारे में बात करता है जबकि आज के मुसलमानें "दो मुकददस मस्जिदों" के बारे में बात करते हैं!एक शदीद बुतपरस्ती वाली हरकत में, मुसलमानों ने मुहम्मद कि कब्र को एक दूसरा "मुकददस मस्जिद" कायम कर लिया है! ये है एक बेअदबी वाली कुरान की नाफरमानी, और, मज़े कि बात है कि, *हदीस* की भी नाफरमानी करता है• नीचे बताई गई हदीस दिखाती है इस अजीब मसखरे को:

لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ

तरजुमा इस झूठे जुमले का: "अल्लाह ने लानत भेजा है यहूदियों और इसाईयों पर उनके नबीयों कि मज़ारों को मस्जिदों में तबदील करने के लिए•"[बुखारी, नवावी ऐडिशन, जिल्द 6, पेज 14]

जिस्मानी फायदे

उनके गैरमामुली रूहानी फायदों के अलावा, राबता नमाज़े (सलात), ज़रूरी खैरात (ज़कात), रमज़ान के महीने में रोज़ा रखने में , और हज को अदा करने में काफी ज्यादा जिस्मानी, माली और सेहती फायदे हैं•

सुबह की नमाज़ अदा करना तोड़ता है लम्बे वक्फे ठहरावपन के नींद के दरमियान; ये अब साबित हो चुका है मदद करता है जोड़ों कि तकलीफ रोकने में• इस के अलावा, सुबह जल्दी उठना मदद करता है उदासी और दूसरे दिमागी परेशानियों का मुकाबला करने में• सजदे का अंदाज़ जो दोहराया जाता है राबता नमाज़ों के दरमियान हमारे दिमागों की खून कि नसों को बड़ाता है ज्यादा खून ठहराने के लिए, और ये सर की दर्दो को रोकता है• बार बार झुकना पीठ और जोड़ों का है एक तन्दुरूस्ती वाली वरज़िश• ये सारी सांइन्स के ज़रिए साबित की गई हकीकतें हैं•

वजुओं का ज़रूरी होना राबता नमाज़ों से पहले हमारी हौसला अफज़ाई करता है अकसरियत से पाखाने का इस्तेमाल करने के लिए• ये आदत हमारी हिफाज़त करता है एक आम और तबाह करने वाली कैन्सर से, कोलोन कैन्सर• नुकसान पहुंचाने वाले केमिकल पिशाब और संडास कि चीज़ से खारिज किए जाते हैं• अगर ये खारिज की गई चीज़ें रखी जाएँ कोलोन में लम्बे वक्फे के लिए, नुकसान पहुंचाने वाली चीज़ें फिर से जज़्ब हो जाती हैं जिस्म के अंदर, और बनते हैं कैन्सर की वजह•

रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना लौटाता है हमारे बढ़े हुए पेठों को उनके सही नापों को, हमारे बलड प्रेशर को कम करता है थोड़ी देर प्यास के ज़रिए, निजात देता है जिस्म को नुकसान पहुंचाने वाले ज़हरों से, देता है हमारे गुरदों को ज़्यादा ज़रूरतमंद आराम, और कम करता है हमारा वज़न बेशुमार और नुकसान पहुंचाने वाले चर्बी को निकालते हुए•

ज़कात खैरात और हज ज़ियारत में हैं कई माली और सामाजी फायदे•

****

अपेन्डिक्स 16

खुराकी मनाईयाँ

कुरान सिखाता है के **अल्लाह** निहायत नाराज़ होते हैं उनसे जो हराम करार देते हैं कोई भी चीज़ जो खास तौर पर कुरान में मना नहीं किया गया था (16:112-116)• बरकरार रखना किसी भी मनाईयों को जिसे खास तौर पर कुरान में बयान न किया गया हो बराबर है बुतपरस्ती के (6:142-152)• ऐसी मनाईयाँ नुमाइंदगी करती हैं किसी दूसरे खुदा(ओं) की सिवाए **अल्लाह** के• अगर आप **सिर्फ अल्लाह** की इबादत करते हैं, आप **सिर्फ उनकी** तालीमों को बरकरार रखेंगे और सिर्फ **उनकी** तरफ से कायम किये गये हुक्मों और मनाईयों का एहतराम करेंगे•

कामिल मख्सुसियत खुराकी मनाईयों की कुरान में बेहतर अंदाज़ में बयान किया गया है 6:145-146 में• हम सीखते हैं इन दो आयतों से के जब **अल्लाह** "गोश्त" हराम करते हैं, **वो** सिर्फ "गोश्त" हराम करते हैं और कुछ नहीं, और जब **वो** "चर्बी" हराम करते हैं, वही है जो **वो** खास तौर पर हराम करते हैं• ये दो आयतें हमें इत्तेला करतीं हैं के खिन्ज़ीरों का "गोश्त" हराम किया गया है "चर्बी" नहीं• ज़ाहिर है, **अल्लाह** जानते थे के कई मुल्कों में, खिन्ज़ीर की चर्बी इस्तेमाल की जायेगी बेकरी कि चीज़ों में और दूसरे खाने के समानों में, और ये के ऐसा इस्तेमाल किया जाना खानों को *हराम* (मना) नहीं करता• कुरान खास तौर पर चार गोश्तों को हराम करता है (2:173, 5:3, 6:142-145, & 16:112):

कहो, "मैं नहीं पाता उसमें जो मुझ पर नाज़िल हुआ था
कोई हराम किसी खाने वाले के लिए
जब तक वो न हो (1) मुर्दार, (2) बहता हुआ खून,
(3) खिन्ज़ीरों का गोश्त, इसलिए के वो गन्दा है, और
(4) गोश्त बेअदबी से **अल्लाह** के अलावा किसी दूसरे को मनसूब किया गया हो•"
अगर किसी पर ज़ोर दिया जा रहा हो इन्हें खाने के लिए
बगैर हसद रखते हुए या जानबूझकर,
फिर तुम्हारे **रब** हैं **माफकरने वाले, सबसे रहीम** • [6:145]

****

अपेन्डिक्स 17

मौत

मौत एक बडा राज़ है ज़्यादातर लोगों के लिए• कुरान की तालीम हासिल करने वालों के लिए ऐसा नहीं है• हम सीखते हैं के मौत ठीक ठीक नींद जैसी है; सपनों से भरी (6:60, 40:46)• मौत और जिलाने के दर्मियान का वक्फा गुज़रता है एक रात के नींद की तरह (2:259; 6:60; 10:45; 16:21; 18:11, 19, 25; 30:55)•

मौत के वक्त, हर कोई जानता है उसका या उसकी तकदीर; जन्नत या जहन्नम• काफिरों के लिए, मौत है एक खौफनाक वाक्या; फरिश्ते मारते हैं उन्हें चेहरों और पिछले हिस्सों पर जब वो छीनते हैं उनकी रूहों को (8:50, 47:27, 79:1)•

मुसलसल, कुरान दो मौतों कि बात करता है, पहली मौत हुई जब हम नाकामयाब हुए **अल्लाह** के कामिल इख्तेयार पर फैसला करने में (अपेन्डिक्स 7)• वो पहली मौत कायम रही तब तक जब हम पैदा हुए इस दुनिया में• दूसरी मौत खत्म करती है हमारी ज़िन्दगी इस दुनिया में (2:28, 22:66, 40:11)•

नीचे दिया गया है एक कॉपी अगले आरटिकल फरवरी, 1990 इशु से <u>सबमिटर्स पर्सपेक्टिव</u> का, जो है माहवारी बुलेटिन युनाईटेड सबमिटर्स इंटरनेशनल का● ये आखिर से पहले वाला इशु था जो डॉ● खलीफा ने लिखा था● वो पूरा किया गया और डाक में डाला गया था वक्त से पहले, दिसम्बर, 1989 में● डॉ● खलीफा शहीद कर दिए गए थे जनवरी 31, 1990 को और उनकी रूह को सीधे जन्नत में ले जाया गया●

<u>नई बड़ी वही:</u> *<u>बड़ी खबर ईमानवालों के लिए</u>*

नेककार असल में मरते नहीं
वो सीधे जन्नत को जाते हैं

وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُواْ مِنْهَا مِن ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُواْ هَٰذَا ٱلَّذِى رُزِقْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَأُتُواْ بِهِۦ مُتَشَٰبِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيهَآ أَزْوَٰجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٥﴾	*खुशखबरी दो उन्हें जो ईमान रखते हैं और नेककारी वाले काम करते हैं कि उनके लिए होंगे बागात बहती नेहरों के साथ● जब मुहय्या किये जायेंगे उसमें फलों कि नियामतों के साथ, वो कहेंगे, "ये है जो दिया गया था हमें माज़ी में●" उन्हें वैसी ही नियामतें दीं जायेंगी, और उनके लिए होंगे पाक जोड़े उसमें● वो रहेंगे उसमें हमेशा के लिए● (2:25)*
وَلَا تَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ قُتِلُواْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمْوَٰتًۢا ۚ بَلْ أَحْيَآءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾	*ना सोचो के वो जो मारे गए हैं **अल्लाह** कि राह में "वो मर गये हैं"; वो ज़िन्दा हैं उनके **रब** के पास, इस के लिए मुहय्या किये जाते● (3:169)*
وَلَا تَقُولُواْ لِمَن يُقْتَلُ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمْوَٰتٌۢ ۚ بَلْ أَحْيَآءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾	***ना** कहो उनके बारे में जो मारे गये हैं **अल्लाह** कि राह में "वो मर गये हैं●" वो ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम नहीं समझते● (2:154)*
يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسْتَجِيبُواْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ	*ऐ ईमान वालो, तुम्हे चाहिए जवाब देना **अल्लाह** और रसूल का जब वो दावत दे उसकी तरफ जो तुम्हें ज़िन्दा रखता है● (8:24)*
وَٱلَّذِينَ هَاجَرُواْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوٓاْ أَوْ مَاتُواْ لَيَرْزُقَنَّهُمُ ٱللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا	*जो कोई हिजरत करे **अल्लाह** कि राह में, फिर मार दिया जाए या मर जाए, **अल्लाह** यकिनन मुहय्या करेंगे उनके लिए एक अच्छी नियामत● (22:58)*
لَا يَذُوقُونَ فِيهَا ٱلْمَوْتَ إِلَّا ٱلْمَوْتَةَ ٱلْأُولَىٰ ۖ وَوَقَىٰهُمْ عَذَابَ ٱلْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾	*वो मौत नहीं चखते, पहली मौत के बाद, और **अल्लाह** उन्हें बचाते हैं जहन्नम के आज़ाब से● (44:56)*
قِيلَ ٱدْخُلِ ٱلْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَٰلَيْتَ قَوْمِى يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِى رَبِّى وَجَعَلَنِى مِنَ ٱلْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾	*उस से कहा गया था, "जन्नत मे दाखिल हो●" उसने कहा, "काश मेरे लोग (ज़मीन पर) जानते: के मेरे **रबने** मुझे माफ किया है और मुझे इज़्ज़त दी है●" (36:26-27)*
	गुनाह का मुआवज़ा मौत है [रोमन्स 6:23]

जैसा बयान किया गया है 3:81 और 46:9 में, **अल्लाह** के वादे का रसूल कोई भी चीज़ नई नहीं लाता; जो कुछ मैं पाता हूँ और आगे बड़ाता हूँ तुम्हारी तरफ पहले से है कुरान में● बहेरहाल, कुरान खबर से भरा है जो रखा गया है **कादिर मुतलक अल्लाह** के तरफ से एक खास वक्त पर नाज़िल होने के लिए● अब है वक्त ऊपर दिखाए गये आयतों को देखने का और बड़ी खबर को जानने का: **नेककार मरते नहीं**; जब उनकी ज़िन्दगियाँ इस ज़मीन पर पहले से मुकर्रर की गई अंजाम को पहुँच जाती है, उन्हें मौत का फरिश्ता सिर्फ दावत देता है उनके ज़मीनी जिस्मों को छोड़ने और जन्नत में जाने के लिए, वही जन्नत जहाँ आदम और हव्वा एक दफा रहे थे● जन्नत आदम और हव्वा के वक्त से वजूद में है● हम सीखते हैं 89:27-30 से के **अल्लाह** ईमान वालों कि रूहों को दावत देते हैं: "दाखिल हो **मेरी जन्नत** में●"

मेरा खुद का तजुर्बा

जब **अल्लाह** का वादा नबियों के साथ पूरा हुआ था 3:81 के मुताबिक में, मुझे ले जाया गया था जन्नत को जहाँ नेककार **अब** रहते हैं (4:69)● जबकि मेरा जिस्म था यहाँ नीचे ज़मीन पर, मैं उसी आदम और हव्वा वाले जन्नत में था●

काफिरें

जहाँ तक काफिरें, वो जानते हैं मौत के वक्त के उनकी तकदीर है जहन्नम● फरिश्ते मारते हैं उन्हें चेहरों और पिछले हिस्सों पर (8:50 & 47:27), उन्हें हुक्म देते हैं उनकी रूहों को निकलने के लिए (6:93), फिर "छीन लेते हैं उनकी रूहों को" (79:1)● कुरान सिखाता है के काफिरें 2 मौतों से गुज़रते हैं (2:28 & 40:11)● उन्हें मौत दिया जाएगा — एक खालीपन कि हालत जिसके दरमियान वो देखते हैं जहन्नम दिन और रात लगातार एक डरावने सपने में जो कायम रहता है इंसाफ के दिन तक (40:46)● जहन्नम अब तक वजूद में नहीं है (40:46, 89:23)●

ज़ाहिर है, नेककार रूख्सत होते हैं

जहाँ तक ज़मीन पर लोगों का सरोकार है, नेककार "मरते हैं●" लोग एहसास नहीं करते के नेककार सिर्फ छोड़ जाते हैं उनके जिस्मों को, और जाते हैं जन्नत को● ऊपर दिखाई गई आयतें खुदबखुद साफ करतीं हैं● वो हमें बतातीं हैं के नेककार सिर्फ एक बार मरते हैं — एक मौत जिससे हम पहले से गुज़र चुके हैं बड़ी झड़प कि वजेह से (38:69)●
36:26-27 में, हम देखते हैं सबसे अच्छा सबूत कि नेककार जन्नत को जाते हैं, जबके उनके दोस्त और रिश्तेदार अब भी ज़मीन पर रह रहे हैं● जैसे हवाई को जाना और वहाँ हमारा इन्तेज़ार करना●

देखें 16:32 & 6:60-62 भी●

अपेन्डिक्स 18

तुम्हारे निजात के लिए सिर्फ चाहिए: कुरान

कुरान के अल्फाज़ बोलते हैं 19:64 में, कहते हुए, "हम नीचे उतरते हैं तुम्हारे **रब** के हुक्मों के मुताबिक में• **वो** मालिक हैं माज़ी, मौजूदा और मुस्तकबिल के• तुम्हारे **रब** कभी नहीं भूलते•" मिसाल के तौर पर, **अल्लाह** नहीं भुले, हम से बताना कैसे सोना चाहिए (18:109, 31:27)• इस के बावजूद, *हदीस और सुन्नत* जैसा अकीदा गढ़ने वाले आये हैं मज़हबी तालीमों के साथ हुक्म करते हुए उनकी पैरवी करने वालों पर के कैसे सोना चाहिए, और यहाँ तक के कैसे तुम्हारे नाखूनों को काटना चाहिए• मुकददस मस्जिद मक्का में और मदीने का नाजायेज़ "मुकददस मस्जिद", किराए पर लेते हैं कुछ शक्सों को थके हुए ज़ियारतियों को तलाश करने के लिए और छड़ी से मारने के लिए अगर वो गलत रूख पर सो जायें!

कुरान ऐलान करता है कि कुरान है कामिल, मुकम्मल, और पुरी तफसील में (6:19, 38, 114, 115;50:45), और ये कि मज़हबी पाबंदियाँ खास तौर पर कायम नहीं किए गए कुरान में इस्लाम के अलावा दूसरे मज़हब कि नुमाइंदगी करते हैं (42:21, 17:46)• सच्चे ईमानवाले कुरान को बरकरार रखते हैं, पूरा कुरान, और कुरान के अलावा कुछ नहीं• ये कायदा तसदीक किया गया है कुरान के रियाज़ी कोड से• सुरेह 17 कि आयत 46 ऐलान करती है कि हमें **सिर्फ** कुरान को बरकरार रखना चाहिए• लफ्ज़ "**सिर्फ**" कुरान में 6 बार वाके होता है: 7:70, 17:46, 39:45, 40:12 & 84, और 60:4• ये सारे वाकेयात **अल्लाह** का हवाला देते हैं, सिवाए 17:46 के• जब हम जमा करते हैं सुरतों और आयतों के नम्बरें जो "**सिर्फ अल्लाह**" का हवाला देते हैं, हम पाते हैं 361, 19x19• ये साबित करता है के 17:46 "**सिर्फ** कुरान" का हवाला देती है•

****

अपेन्डिक्स 19

हदीस और सुन्नत: शैतानी बिदआतें

कौन सी *हदीस*, अल्लाह और उनकी वहियों के अलावा, वो बरकरार रखते हैं?	[45:6]
कुरान कोई झुठी *हदीस* नहीं; ...वो सारी चीज़ों कि तफसील करता है•	[12:111]
कुछ लोग बेबुनियाद *हदीस* बरकरार रखते हैं दुसरों को अल्लाह के रास्ते से पलटने के लिए•	[31:6]
सिर्फ उसी सुन्नत पर चलना चाहिए जो है अल्लाह कि सुन्नत•	[17:77, 33:62, 48:23, 6:114]

कुरान हमें इत्तेला करता है कि नबी के कुछ दुश्मनें, "इन्सान और जिनि शैयातीन," जैसा बयान किये गये गढ़ेंगे झूठों को और मनसूब करेंगे उन्हें नबी को (6:112, 25:31). ठीक ठीक यही हुआ नबी मुहम्मद कि मौत के बाद; *हदीस* (ज़बानी) और *सुन्नत* (तरीके) ऐजाद किए गए और नबी को मनसूब किए गए थे• *हदीस* और *सुन्नत* शैतानी बिदआतें हैं क्योंकि वो: [1] ललकारता है खुदाई ऐलान को कि कुरान है कामिल, मुकम्मल, पूरी तफसील की गई है, और होना चाहिए सिर्फ सरचश्मा मज़हब कि हिदायत का (6:19, 38, 114 & 45:6-7), [2] बेअदबि करना नबी के खिलाफ और उसे बयान करना जैसे एक सख्त ज़ालिम जिसने कुरान को बरकरार नहीं रखा, और [3] और वेहेम पर बुनियाद झूठे अकीदे, जेहालत और नाकाबिले बचाव बेहूदे रिवाजों को पैदा करना• नबी मुहम्मद ताकीद किए गए थे, बहुत सख्त अल्फाज़ों में, कुरान के सिवाए कोई मज़हबी तालिमों को जारी करने से (69:38-48)•

कुछ मुस्लमानें समझौता करते हैं: 'अगर कोई *हदीस* इकरार करता हो कुरान से हम कबूल करेंगे उसे, और अगर वो इख्तेलाफ करे कुरान का, हम उसे ठुकरा देंगे!' ऐसी बुनियाद साबित करती है कि ये लोग ईमान नहीं रखते अल्लाह के ऐलान पर कि कुरान 'कामिल, मुकम्मल और पूरी तफसील की गई' है• जिस लम्हा वो हिदायत तलाश करते हैं किसी और चीज़ से सिवाए

कुरान के, चाहे कितना भी वो 'सही' लगे, वो गिर जाते हैं शैतान के जाल में (देखें 63:1)• इस लिए के उन्होंने ठुकराया अल्लाह के लफ्ज़ को और कायम किया है अल्लाह के अलावा दूसरा खुदा (18:57)• देखें अपेन्डिक्स 33•

कुरान का रियाज़ी मौजेज़ा मुहय्या करता है रियाज़ी सबूत के सिर्फ कुरान ही सरचश्मा होना चाहिए हमारी मज़हबी तालिमों का• यहाँ हैं सिर्फ दो मिसालें:

1. 'हमनें कोई चीज़ नहीं छोडा इस किताब के बाहर,' है आयत 38 (19x2) में और हैं इस में 19 अरबी हुरूफ (6:38)•
2. 'उन्होंने भेजा है नीचे पूरी तफसील की गई इस किताब को,' है आयत 114 (19x6) में और है इस में 19 अरबी हुरूफ (6:114)•

****

अपेन्डिक्स 20

कुरान: किसी और किताब कि तरह नहीं

कुरान है **अल्लाह** की आखरी किताब दुनिया के लिए, और **उन्होंने** एहेद किया है थोडे से बिगाड़ से भी उसकी हिफाज़त करने का (15:9)• इसतरह, कुरान गैबी ताकतों से घिरा है जो उसकी हिफाज़त और उसकी खिदमत करते हैं (13:39, 41:42, 42:24)•

किसी और किताब कि तरह नहीं, कुरान सिखाया जाता है **अल्लाह** कि तरफ से (55:1-2); **वो** हमें सिखाते हैं जो हमे चाहिए उस वक्त जब हमें उसकी ज़रूरत होती है• यही वजह है हम कुरान सैकड़ों बार पढ़ते हैं बगैर तंग होते हुए• मिसाल के तौर पर,हम एक नॉविल पढ़ सकते हैं, सिर्फ एक बार• लेकिन कुरान पढ़ा जा सकता है अनगिनत बार, और हम उससे हर बार पाते हैं नई और कीमती जानकारी• दूसरी तरफ, गैरसंजीदा पढ़ने वाले — वो जो कुरान पढ़ने हैं उसमे खामि निकालने के लिए — पलट दिए जाते हैं कुरान से (7:146, 17:45, 18:57, 41:44)• असल में, **अल्लाह** कि गैबी ताकतें उनकी मदद करतीं हैं गलतीयां निकालने के लिए जो तलाश करते हैं• चुँके कुरान है मुकम्मल, ऐसी "गलतीयां" खिदमत करतीं हैं ज़ाहिर करना **अल्लाह** के दुश्मनों कि बेवकूफी•

अल्लाह खुद कि सिफतों का इस्तेमाल करते हैं कुरान को बयान करने के लिए; **वो** कुरान को "*अज़ीम* = **बड़ा**" (15:87), "*हकीम* = **हिकमत से भरा**" (36:2), "*मजीद* = **शान दार**" (50:1), और "*करीम* = **बा इज़्ज़त वाला**" (56:77) पुकारते हैं• हम क्या कह सहते हैं?

चुँके कुरान **अल्लाह** का पैग़ाम है सारे लोगों के लिए, चाहे उनकी कोई भी ज़बान हो, कुरान ईमान वालों कि पहुँच में है, चाहे उनकी कोई भी ज़बान हो (41:44)• ये एक गहरी कुदरत को समझाता है: ईमानवाले जो अरबी नहीं जानते अरबी बोलने वाले ईमान न रखने वालों से कुरान बेहतर जानते हैं• कुरान कि खिदमत करती हुई गैबी ताकतों कि वजह से, वो आसानी से और मज़े से है समझने के काबिल संजीदा ईमान वालों के लिए, और इन्तेहाई ना काबिल समझने के लिए ईमान न रखने वालों के लिए (17:45, 18:57, 56:79)•

अपेन्डिक्स 21

शैतान: गिरा हुआ फरिश्ता

अल्लाह कि बादशाहत में, कुछ मखलूकों को लाज़मि तौर पर दिये गये हैं ज़रूरतमन्द ताकतें उनके फरायेज़ों को पूरा करने के लिए• शैतान ने माना के उसे अल्लाह-से दी गई ताकतें उसे काबिल बनाती हैं एक तनहा खुदा जैसा काम करने के लिए• जैसा साबित होता है आफत, बिमारी, हादसे, और जंग का होना उसकी सल्तनत में, हम अब जानते हैं के शैतान है नाकारा•

कुरान साफ तौर पर बयान करता है के शैतान था एक फरिश्ता, उसपर ज़बरदस्त ताकतें और दरजा बक्शे जाने कि वजह से• यही वजह है वो एक फरिश्ता जैसा मुखातिब किया गया है (2:34, 7:11, 15:29, 17:61, 18:50, 20:116, 38:71) उसके गिरने से पहले• उसूलन, एक जिन है एक गिरा हुआ फरिश्ता (18:50)• शैतान कि बगावत हमें सिखाती है के फरिश्ते पैदा किए गए थे उनके खुद के ज़हनों, और चुनने कि कामिल आज़ादी के साथ (2:34)•

****

अपेन्डिक्स 22

ईसा

कुरान, इत्तेला करता है हमें के ईसा थे **अल्लाह** के एक इन्सानी रसूल जिनका मकसद था सिर्फ **अल्लाह** का पैगाम पहुँचाना; उनके पास कभी भी कोई ताकत नहीं थी, और अब मर चुके हैं (4:171, 5:75, 117)• जो कोईसमझते हैं ईसा को **अल्लाह**, या **अल्लाह** का बेटा, या ट्रिनिटि का हिस्सा हैं "बुतपरस्त" (5:17, 72, 73)• इसाई मज़हब के बड़े उलमा पहुँचे हैं इसी नतीजों पर (द मिथ ऑफ गॉड इनकारनेट, जॉन हिक्क, एड•, द वेस्टमिनिसटर प्रेस, फिलाडेलफिया, 1977 & द मिथ मेकर, हयाम माक्कोबि, हारपर & रो 1986)• इसाई मज़हब पैदावार है निसेन कि (AD 325)•

इंजील का ईसा

ईसा ने ज़ोर से ऐलान किया: "जो कोई रखता है अकीदा मुझमें मानता नहीं है ज़्यादा मुझे बलिके उसमें जिसने मुझे भेजा है; ..... इसलिए के मैंने खुद से नहीं कहा है; नहीं, वो बाप जिसने मुझे भेजा है हुक्म दिया है मुझे क्या कहना है और कैसे कहना है• चुँके मैं जानता हूँ उनके हुक्म का मतलब है दाईम ज़िंदगी, जो कुछ भी मैंने अभी कहा है ठीकठीक वही है जो उन्होंने मुझे हुक्म दिया है•" [जॉन 12:44-50]

"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता• मैं इंसाफ करता हूँ जैसे मैं सुनता हूँ, और मेरा इंसाफ है ईमानदारी वाला इसलिए के मैं तलाश नहीं कर रहा मेरा खुदका इरादा बलिके उनका इरादा जिन्होंने मुझे भेजा है•"

[जॉन 5:30]

ईसा ने कहा: "मेरा अकीदा मेरा नहीं है; ये आता है उनकी तरफ से जिन्होंने मुझे भेजा है•"

[जॉन 7:16]

*"इस्राईल के मर्दों, मेरी सुनो! ईसा था एक नाज़ोरीन जो आदमी जिसे **अल्लाह** ने भेजा तुम्हारी तरफ मौजज़ों, अजूबों, और निशानियों के साथ उसकी काबिलियत जैसे• ये सब **अल्लाह** ने किया उसके ज़रिए तुम्हारे दरमियान, जैसा तुम बेहतर जानते हो•"*

[ऐक्टस 2:22]

"...वो आदमी जो मेरे लफ्ज़ को सुनता है और रखता है अकीदा उसमें जिन्होंने मुझे भेजा है हासिल करता है सदा कि जिन्दगी•"
[जॉन 5:24]

"जो कोई मेरा इस्तेकबाल करता है इस्तेकबाल, नहीं करता मेरा, बलके उनका जिन्होंने मुझे भेजा है"
[मैथ्यु 10:40, मार्क 9:37, लूक 9:48, जॉन 13:20]

"...मैं अपने आप से नहीं आया हूँ• मैं भेजा गया था उस ***वाहिद*** *की तरफ से जिनको हक्क है भेजने का, और उन्हें तुम नहीं जानते• मैं उन्हें जानता हूँ इसलिए के ये वो हैं जिनकी तरफ से आता हूँ; उन्होंने मुझे भेजा है•"*
[जॉन 7:28-29]

ईसा ने ऊपर आसमान की तरफ देखा और कहा, "...आपको जानना, सिर्फ एक सच्चा ***खुदा:*** *यही है सदा की ज़िन्दगी, और वो जिसे आपने भेजा, है ईसा मसीह•"* *[जॉन 17:1-3]*

जो कोई रहबरी किये जाते हैं ***अल्लाह*** *कि रूह कि तरफ से हैं* ***अल्लाह*** *के बेटे•* *[रोमन्स 8:14]*

ईसा ने ऊपर की तरफ देखा और कहा, "ऐ बाबा, मैं आप का शुक्र अदा करता हूँ मेरी सुनने के लिए• मैं जानता हूँ के आप हमेशा मुझे सुनते है लेकिन मैंने हुजूम के खातिर ऐसा कहा है, ताके वो मान सकें के आपने मुझे भेजा है•"[जॉन 11:41-42]

जैसे ही वो सफर के लिए निकल रहा था एक आदमी दौड़ता आया, उसके सामने घुटने के बल गिर पड़ा और कहा, "अच्छे उस्ताद, मुझे क्या करना चाहिए दाईम जिन्दगी में शिरकत पाने के लिये?" ईसा ने जवाब दिया, "तुम मुझे अच्छा क्यों बुलाते हो? कोई अच्छा नहीं सिवाए सिर्फ ***अल्लाह*** *के•"*
[मार्क 10:17-18]

*"उनमें से कोई भी नहीं जो मुझको '****रब****' पुकारते हैं दाखिल होंगे* ***अल्लाह*** *कि बादशाहत में, सिवाय सिर्फ उस एक के जो करता है मर्ज़ी आसमान में मेरे बाबा की•"* *[मैथ्यू 7:21]*

"...जाओ मेरे भाईयों के पास और उनसे कहो, 'मैं चढ़ रहा हूँ मेरे बाबा और तुम्हारे बाबा के पास, मेरे ***अल्लाह*** *और तुम्हारे* ***अल्लाह*** *के पास•'"* *[जॉन 20:17]*

*"****अल्लाह*** *मेरे* ***रब*** *और तुम्हारे* ***रब*** *हैं; तुम्हें चाहिए के सिर्फ* ***उनकी*** *इबादत करो• ये है सही रास्ता•"*
[कुरान 3:51, 19:36, & 43:64]

ट्रिनिटि, जो अकीदा ***अल्लाह*** *का सिखाया जाता है इसाईयों के ज़रिए ज़ोर देता है के* ***अल्लाह*** *वाहिद हैं असल मायनों में लेकिन तीन "शक्स," में बाप, बेटा, और पाक रूह में• नातो लफ्ज़ ट्रिनिटि, नाहीं ऐसा ठीक ठीक अकीदा, नज़र आता है इन्जील में, नाहीं ईसा और उसके पैरवी करने वालों ने चाहा तौरैत में शेमा का इख्तेलाफ करना: "सुनो ऐ इस्राईल: हमारे* ***रब अल्लाह*** *हैं एक"*
(ड्यिुट 6:4)
[एनसायक्लोपिडीया ब्रिटेनिका 1975]

ईसा कि रूह उठा ली गई थी, यानी, उन्हें मौत दिया गया था गिरफ्तारी और उनके जिस्म को सूली पर चड़ाने से पहले• इस तरह, उनको गिरफ्तार करने वालों ने गिरफ्तार किया, अज़ियत पहुँचाई, और सूली पर चड़ाया एक खाली जिस्म - ईसा पहले से जा चुके थे रूहों कि दुनिया को (3:55, 4:157)•

ईसा की मौत

ये रहा है एक सबसे बहेस वाला मौजू दुनिया में• कुरान के मौजज़े वाले रियाज़ी कोड ने अब मुहय्या किया है आखरी जवाब इस बात का:

उन्होंने तजवीज़ किया और मनसूबाह बनाया,
लेकिन किया **अल्लाह** ने उसी तरह,
और **अल्लाह** सबसे बेहतर मनसूबाह बनाने वाले हैं•
इस तरह, **अल्लाह** ने कहा, "ऐ ईसा,
मैं तुम्हें मौत देता हूँ,
और उठाता हूँ तुम्हें **मेरी** तरफ;
मैं बचाऊंगा तुम्हें काफिरों से•"

[कुरान 3:54-55]

उन्होंने दावा किया के उन्होंने मसीहा का कत्ल किया,
ईसा, मरयम का बेटा, **अल्लाह** का रसूल !
असल में, उन्होंने उसे हरगिज़ कत्ल नहीं किया;
उन्होंने हरगिज़ उसे सूली पर नहीं चड़ाया;
उन्हें मानने दिया गया था के उन्होंने किया•

[कुरान 4:157]

रहमत से, **अल्लाह** ने दिया है हमारी नस्ल को एक ज़िन्दा मिसाल एक शक्स का जिसकी रूह रूख्सत हो गई इस दुनिया से, लेकिन उसका जिस्म जारी रहा 19 महीनों तक रहने के लिए• नवम्बर 25, 1984 को, लुइसविल्ले, कैनटकी के हियुमाना हॉस्पिटल के डॉक्टरों ने निकाला बिमार दिल मि• विलयम श्रोडर का और बदल दिया एक प्लासटिक और धातू पम्प से (**द न्यु यॉर्क टाइम्स**, पीर, नवम्बर 26, 1984)•

इस तारीखी ऑपरेशन के बाद 19 वे दिन - जुम्मेरात, 13 दिसम्बर 1984 को, - मि• श्रोडर, एक असल शक्स, रूह, रूख्सत हो गई इस दुनिया से• मि• श्रोडर मर गया• लेकिन उसका जिस्म जारी रहा काम करने के लिए नकली दिल के साथ लगाया गया उसके जिस्म में• दुनिया से कहा गया था कि उसने "शायद एक झटका झेला" (**द न्यु यॉर्क टाइम्स**, 14 दिसम्बर 1984)• काबिले गौर, मि• श्रोडर के रूख्सत होने से सिर्फ एक दिन पहले, उसने प्रेसिडेन्ट रॉनल्ड रेगन से नेशनल टिवी पर बात किया, और मुतालबा किया के सोशल सिक्योरिटि एडमिनिस्ट्रेशन भेजें उसका वाजिब चेक• वो सही तौर पर बाखबर था• उस वक्त से जब "उसने एक झटका झेला," उसने नहीं पहचाना दिन या वक्त, नाहीं उसके कुम्बे वालों को• असल में, मि• श्रोडर अब इस दुनिया में नहीं था•

इन्जील साफ तौर पर बयान करता है के ईसा का गिरफ्तार किया गया जिस्म था गाफिल इर्द गिर्द के वाक्यों से:

सबसे बड़े पादरियों ने, इस दौरान में,
लाए कई इल्ज़ामात ईसा के खिलाफ•
पायलेट ने उस से दोबारा सवाल किया:
"यकीनन तुम्हारे पास कुछ जवाब है ?
देखो कितने सारे इल्ज़ामात
वो तुम्हारे खिलाफ लगा रहे हैं•"
लेकिन पायलेट निहायत हैरतज़दा,
<u>ईसा ने आगे कोई जवाब नहीं दिया•</u> *[मार्क 15:3-5]*

हैरॉड निहायत खुश था ईसा को देखने के लिए• उसके बारे में खबरों कि वजह से वो एक लम्बे वक्त से चाह रहा था उसे देखना, और वो उम्मीद कर रहा था उसे कुछ मौजज़ों को करते देखे• उसने सवाल किया ईसा से काफी देर तक, लेकिन ईसा ने कोई जवाब नहीं दिया• सबसे वड़े पादरियें और कातिबीन पास थे परज़ोर तरीके से उसपर इल्ज़ाम लगाने के लिए• हैरॉड और उसके चौकिदारों ने फिर उस के साथ तौहीन और ज़िल्लत से बर्ताव किया•

[लूक 23:8-11]

मसीहा ने मुझ से कहा, "वो जिसे पेड़ पर तुमने देखा, खुश और हँसता हुआ, ये है ज़िन्दा ईसा • लेकिन ये जिसके हाथों और पैरों में वो कीलें मार रहें हैं है गोश्त वाला हिस्सा• [एपोक्लिप्स ऑफ पीटर, VII, 3, 81] नाग हम्मादी लाइब्रेरी से (हार्पर ऐन्ड रो, 1977, जेम्स एम• रोबिनसन, एड, पेज 339)•

ये हकीकते के (1) मि• श्रोडर कि रूह ऑपरेशन के बाद 19 वे दिन रूख्सत हुई, (2) और उसका जिस्म 19 महीनों तक ज़िंदा रहा, हैं अनोखी ताकीदें जिसे **अल्लाह** चाहते थे दुनिया को पता लगने देने के लिए बराबरी श्रोडर की हालत, और ईसा कि रूखसत गिरफ्तारी से पहले का साबित किस्सा, अज़ियत पहुँचाने, और उसकी बगैर रूह के जिस्म को सूली पर चड़ाने से पहले के दरमियान•

****

अपेन्डिक्स 23

तारीख वार सिलसिला नुजूल का

तरतीब सुरेह	**17...107**	**34....50**	**51....10**	**68....88**	**85....29**	**102...24**
1.....96	**18...109**	**35....90**	**52....11**	**69....18**	**86....83**	**103...22**
2.....68	**19...105**	**36....86**	**53....12**	**70....16**	**87.....2**	**104...63**
3.....73	**20...113**	**37....54**	**54....15**	**71....71**	**88.....8**	**105...58**
4.....74	**21...114**	**38....38**	**55.....6**	**72....14**	**89.....3**	**106...49**
5......1	**22...112**	**39.....7**	**56....37**	**73....21**	**90....33**	**107...66**
6....111	**23....53**	**40....72**	**57....31**	**74....23**	**91....60**	**108...64**
7.....81	**24....80**	**41....36**	**58....34**	**75....32**	**92.....4**	**109...61**
8.....87	**25....97**	**42....25**	**59....39**	**76....52**	**93....99**	**110...62**
9.....92	**26....91**	**43....35**	**60....40**	**77....67**	**94....57**	**111...48**
10....89	**27....85**	**44....19**	**61....41**	**78....69**	**95....47**	**112....5**
11....93	**28....95**	**45....20**	**62....42**	**79....70**	**96....13**	**113....9**
12....94	**29...106**	**46....56**	**63....43**	**80....78**	**97....55**	**114..110**
13...103	**30...101**	**47....26**	**64....44**	**81....79**	**98....76**	
14...100	**31....75**	**48....27**	**65....45**	**82....82**	**99....65**	
15...108	**32...104**	**49....28**	**66....46**	**83....84**	**100...98**	
16...102	**33....77**	**50....17**	**67....51**	**84....30**	**101...59**	

अपेन्डिक्स 24

खिलवाड़ अल्लाह के लफ्ज़ के साथ

एक गैर मामूली रियाज़ी निज़ाम फैला है पूरे कुरान में और खिदमत करता है उसमें हिफाज़त और हर रूकुन कि तसदीक करने के लिए•
नबी के मरने के उन्नीस साल बाद, कुछ कातिबों ने सुरेह 9 के आखिर में दाखिल किया दो झूठी आयतें, मदीने में नाज़िल हुई आखरी सुरेह• सबूत जो इस अपेन्डिक्स में पेश किए गए हैं नाकाबिले इन्कार निकालते हैं इन इन्सानी दुखूलों को, लौटाता है कुरान को अपने असल पाकीज़गी को, और ज़हिर करता है कुरान के रियाज़ी कोड का एक बड़ा मकसद, यानी, हिफाज़त करना कुरान की ज़रासी भी खिलवाड़ से• इस तरह, कोड ठुकराता है **सिर्फ** झूठे दुखूलों को• 9:128-129

यकीनन, हम ने नाज़िल किया है इस आसमानी किताब को, और यकीनन हम इसे महफूज़ रखेंगे• [15:9]

कुरान है **अल्लाह** की आखरी किताब• इसलिए रब्बानी एहेद इसे मुकम्मल तौर पर महफूज़ रखने के लिए• हमें रब्बानी मुसन्निफ होने, और कुरान कि मुकम्मल हिफाज़त दोनों का यकीन दिलाने के लिए, **कादिरे मुतलक** मुसन्निफ ने कुरान को रियाज़ी तरतीब दिया है• जैसा अपेन्डिक्स 1 में जिस्मानी सबूत से साबित किया गया है, ऐसी रियाज़ी तरतीब इन्सान के काबिलियत के है कहीं बाहर • **अल्लाह** कि आखरी किताब कि ज़रासी भी खलल मुर्करर किया गया है दमकते बेसुरेपन में अलग नज़र आने के लिए• इख्तेलाफ सिर्फ 1 से — एक सुरेह, एक आयत, एक लफ्ज़, यहाँ तक के एक हुरूफ — फौरन बेनकाब हो जाता है•

नबी मुहम्मद के मरने के उन्नीस साल बाद, खलीफा उसमान के दौर में,कातिबों की एक कमेटि मुर्करर कि गई थी कुरान कि कई कॉपियाँ बनाने के लिए नए मुस्लिम इलाकों को रवाना करने के लिए• कॉपियाँ बनाई जानी थी पहली कुरान से जो लिखी गई थी मुहम्मद के हाथ से (अपेन्डिक्स 28)•

ये कमेटि उसमान इब्ने अफ्फान, अली इब्ने अबि तालिब, ज़ैद इब्ने ताबित, उबय इब्ने कॉब, अब्दुल्लाह इब्ने अल-जुबैर, सईद इब्ने अल-आस और अब्दुल रहमान इब्ने अल-हारिथ इब्ने हिशाम के निगरानी मे थी • ज़ाहिर है, नबी ने, कुरान लिखा था उसके नाज़िल होने के तारीखवार अदब में (अपेन्डिक्स 23), हर टुकड़े को अपनी सही जगह में रखने कि ज़रूरी हिदायतों के साथ• आखरी सुरेह नाज़िल हुई मदीने में थी सुरेह 9• सिर्फ सुरेह 110, एक बहुत छोटी सुरेह, नाज़िल हुई थी सुरेह 9 के बाद, मिना में•

कातिबों कि कमेटि आखिरकार पहुँची सुरेह 9 को, और डाला उसे अपनी सही जगह में• कातिबों में से एक ने मशवरा दिया एक आयतों का जोड़ा नबी कि तारीफ में दाखिल करने के लिए• ज्यादातर कातिबों ने इकरार किया• अली गुस्से में आ गये• उन्होंने पुरज़ोर तरीके से बरकरार रखा के **अल्लाह** का लफ्ज, लिखा गया **उनके** आखरी नबी के हाथ से, कभी नहीं बदलना चाहिए•

अली का ऐतराज़ कई जगहों पर लिखा गया है, लेकिन मैं यहाँ हवाला और नक्ल पेश करता हूँ ऑला दर्जे का हवाला अल इत्कान फी उलूम अल कुरान जलालउददीन अल-सुयूती कि तरफ से, अल अज़हरियाह प्रेस, काहिरा, मिस्र, 1318 हिजरी, पेज 59 [देखें दर्जे 1]•

قعد علي بن أبي طالب في بيته فقيل ما أقعدك قال رأيت كتاب الله يزاد فيه
فحدثت نفسي أن لا ألبس ردائي إلا الصلاة حتى أجمعه

र्तजुमा: 'अली से पूछा गया था: "तुम घर पर क्यों रह रहे हो ?" उसने कहा, "कुछ दाखिल किया गया है कुरान में, और मैने मेरे बाहर का लिबास कभी ना पहनने का एहेद किया है, सिवाए नमाज़ के लिए, जब तक कुरान दुरूस्त नहीं किया जाता•"
[दर्ज 1]

हैबतनाक पहलू इस जुर्म का महसूस किया जा सकता है जब हम देखते हैं अंजामों कि तरफ:

(1) उसमान का कत्ल कर दिया गया था, और अली को चौथा खलीफा बना दिया गया था•

(2) एक 50 साल की जंग छिड़ गई नए खलीफा और उसके हिमाएतीयें एक तरफ और दूसरी तरफ कुरान के बिगाड़ने वाले मुहम्मदन के दरमियान•

(3) अली शहीद कर दिये गये थे, और आखिर कार उनका कुम्बा, नबी मुहम्मद का कुम्बा, सिवाए कुछ औरतों और बच्चों के, कत्ल कर दिये गए•

(4) आफत नतीजे पर पहुँचा मशहूर करबला के जंग में, जहाँ अली का बेटा, हुसैन, और उसका कुम्बा हलाक कर दिया गया•

(5) सारे मुसलेमीन मेहरूम कर दिए गए थे पाक, ना बदला हुआ, कुरान से 1400 साल के लिए•

कुरान के बिगाड़ने वालों ने आखिर कार जंग जीत लिया, और "ओहदे दार" तारीख जो हम तक पहुँची उसने नुमाइंदगी किया जीतने वालों के नज़रिए का• ये नुमाया जीत **अल्लाह** के दुश्मनों कि थी, ज़ाहिर है, **अल्लाह** के मर्ज़ी के मुताबिक में• बस बीस सालों में नबी के मौत के बाद, बुतपरस्त जो नबी से शिकस्त दिए गए थे मक्का (632 AD) की जीत में पलट गए बुतपरस्ती कि तरफ• अफसोस के, इस बार करीब करीब उनका बुत थे खुद नबी• ऐसे बुतपरस्त ज़ाहिर है मुस्तहिक नहीं थे पाक कुरान को हासिल करने के लिए• इस वजह से मुबारक शहादत सच्चे ईमान वालों की जिन्होंने कोशिश कि कुरान को लौटाने की, और नुमाया जीत **अल्लाह** के लफ्ज़ को बिगाड़ने वालों के लिए•

इस लम्बे और आफत अंगेज़ जंग के बाद पहला अमन के वक्त का हाकिम था मारवान इब्ने अल हाकम (मरा 65 हिजरी/684 AD)• सारे कामों में से सब से पहला काम उसने किया वो था तबाह करना पहली कुरान, एक वो जिसे बहुत बारीकी से नबी के खुद के हाथ से लिखा गया था, "डरते हुए के वो बन जाए नए तकरारों का सबब" देखें **उलूम अल-कुरान**, अहमद वोन डेनफर कि तरफ से, इस्लामिक फाउन्डेशन, लिचेस्टर, युनाईटेड किंगडम, 1983,पेज 56]• सवाल जो एक अकलमन्द शक्स को पूछना चाहिए वो है: "अगर पहली कुरान वैसी ही थी उस कुरान के जो उस वक्त दौर में थी, क्यों मारवान इब्ने अल-हाकम को उसे बरबाद करना पड़ा?!"

सबसे पुराने इस्लामी हवालों का जाएज़ा लेते हुए, हमें एहसास होता है के झुठे दूखूल, 9:128-129, हर बार शुबाह वाले थे• मिसाल के तौर पर, हम पढ़ते हैं बुखारी के मशहूर *हदीस*, और अल-सुयूती के मशहूर *इत्कान* में, के हर एक आयत

कुरान में जाँची गई थी बहुत गवाहों की तरफ से सिवाए आयात 128 और 129 सुरेह 9 की; वो पाई गई थी सिर्फ खुज़ैमाह इब्ने थाबित अल-अन्सारी के साथ•" जब कुछ लोगों ने सवाल किया इस ना मुनासिब छूट के बारे में, कोई आया एक *हदीस* के साथ कहते हुए कि "खुज़ैमाह की शहादत बराबर है दो मर्दो के!!!"

अनोखे पन से, झुठे दूखूल 9:128-129 लेवल किया गया है रवाएती कुरान छपाईयों में जैसे "मक्के की" [देखें दर्ज 2]•

सुर्खी तस्वीर सुरेह 9 की एक हस्बे मामूल कुरान से, बताती है के ये सुरेह मदीने की हैं, "सिवाए आखरी दो आयतों के; वो हैं मक्के की"!!! [देखें दर्ज 2]

कैसे हो सकता है ये 'मक्के की' आयतें खुज़ैमाह के पास मिले, एक देर 'मदीने का' मुसलमान??!! कैसे हो सकता है एक मदीने की सुरेह में हो मक्के की आयातें, जबके आम रवायात रहा है नबी के मक्का से हिजरत के बाद सारे वहियों को 'मदीने का' लेबल देना??!! बावजूद इन खामियों के, साथ कई ज़्यादा दमकदार इख्तेलाफात आयात 9:128-129 से जुड़े, किसी ने हिम्मत नहीं किया उसकी सदाकत पर सवाल करने की• 1974 में कुरान के रियाज़ी कोड का पता लगना, बहेरहाल, रहनुमाई किया एक नए दौर में जहाँ कुरान में हर हिस्से की सदाकत साबित की गई है (अपेन्डिक्स 1)•

जैसा पेश होता है, दो झूठे आयतों 9:128-129 के दुखूल का अन्जाम हुआ:
(1) ज़ाहिर करना कुरान के रियाज़ी निज़ाम का बड़ा मकसद, और
(2) पैदा करना एक ज़बरदस्त मौजेज़ा अपने खुद के हक में, और
(3) फरक करना सच्चे ईमान वालों से मुनाफिकीन को (वो रिवाजों को बरकरार रखते हैं)•

दो झूठे आयतों का तर्जुमा दिखाया गया है दर्ज 3 में:

"एक रसूल आ चुका है तुम में से तुम्हारे पास जो चाहता है तुम्हें कोई आफत पेश न आए, और फिकरमंद होता है तुम्हारे बारे में, और दर्दमंद है ईमान वालों कि तरफ, रहमतवाला• अगर वो पलट जाएँ, तो कहो, 'काफी है मेरे लिए अल्लाह, कोई खुदा नहीं सिवाए उनके• मैं अपना भरोसा उनमें रखता हूँ• वो रब हैं बड़े तख्त वाले•' "

[दर्ज 3]

जिस्मानी सबूत

[1] सबसे पहला खलल अंदाज़ी कुरान के कोड का आयात 9:128-129 कि तरफ से नज़र आया जब लफ्ज़ "**अल्लाह**" कि गिनती कुरान में 2699 पाई गई, जो के एक 19 का ज़रप नहीं है, जब तक हम एक न निकालें• लफ्ज़ "**अल्लाह**" कि गिनती हर पेज के नीचे हिस्से में दिखाई गई है इस तर्जुमें में• टोटल दिखाया गया कुरान के आखीर में है 2698, 19x142 इसलिए के झूठे दुखूल, 9:128-129, निकाले दिये गये हैं•

[2] जहाँ लफ्ज़ "**अल्लाह**" वाके होते हैं उन सारे आयत नम्बरों का जमा है 118123, या 19x6217• ये टोटल हासिल होता है आयतों के नम्बरों को जमा करने पर जहाँ पर लफ्ज़ "**अल्लाह**" पाया जाता है• अगर झूठी आयत 9:129 शामिल की जाती है, ये कुदरत गायब हो जाती है•

[3] जैसा सुरेह 9 के आखीर में दिखाया गया है इस तर्जुमे में, टोटल वाके होना लफ्ज़ "**अल्लाह**" का सुरेह 9 के आखीर तक है 1273, 19x67• अगर झूठे दुखूल 9:128-129 शामिल किए जाते, तो टोटल हो जाता 1274, एक 19 का ज़रप नहीं•

[4] वाके होना लफ्ज़ "**अल्लाह**" सबसे पहले कुरानी इनीशियल (अ•ल•म 2:1 का) से आखिरी इनीशियल ("न" 68:1 का) तक टोटल होता है 2641, या 19x139• चुँकि ये आसान है उन सूरतों का लिस्ट बनाना जो इनीशियल किए गए कुरान के हिस्से के बाहर हैं, टेबल 1 दिखाता है 57 वाके होना लफ्ज़ "**अल्लाह**" का उस हिस्से में• लफ्ज़ "**अल्लाह**" के टोटल वाके होने से 57 को घटाने पर हमें देता है 2698-57 = 2641 = 19x139, सबसे पहले इनीशियल से आखिरी इनीशियल तक• अगर इन्सानी दुखूल 9:128 और 129 शामिल किए जाते, लफ्ज़ "**अल्लाह**" कि गिनती इनीशियल किए गए हिस्से में हो जाती 2642, एक 19 का ज़रप नहीं•

[5] सुरेह 9 है एक गैर इनीशियल सुरेह , और अगर हम देखें 85 गैर इनीशियल की गई सूरतों कि तरफ, हम पातें हैं कि लफ्ज़ "**अल्लाह**" इन 57 सूरतों में वाके होता है, 19x3• टोटल नम्बर आयतों का उन सूरतों में जहाँ लफ्ज़ "**अल्लाह**" पाया जाता है 1045, 19x55 है• अगर 9:128-129 शामिल किए जाते, आयातें जिनमे है लफ्ज़ "**अल्लाह**" बड़ जाता1 से•

[6] लफ्ज़ "**अल्लाह**" गायब बिस्मिल्लाह (सुरेह 9) से ज़ाएद बिस्मिल्लाह (सुरेह 27) तक पाया जाता है 513 आयतो में, 19x27, 19 सूरतों के अंदर (टेबल 2)• अगर झूठे दुखूल 9:128-129 शामिल किये गये होते, आयतों का नम्बर जहाँ लफ्ज़ "**अल्लाह**" मिलता है हो जाता 514, और ये कुदरत गायब हो जाती•

[7] लफ्ज़ "*इलाह*" जिसके मायने है "खुदा" मिलता है 9:129 आयतों में• टोटल वाके होना इस लफ्ज़ का कुरान में 95 बार है, 19x5• 9:128-129 का दुखूल इस लफ्ज़ के 1 से बड़ने का सबब बनता है , 96 को•

टेबल 1: वाके होना लफ्ज़ "अल्लाह" का इनीशियल कि गई सूरतों के बाहर•

सुरेह नं•	वाके होने का नं•	शुरेह नं•	वाके होने का नं•
1	2	84	1
69	1	85	3
70	1	87	1
71	7	88	1
72	10	91	2
73	7	95	1
74	3	96	1
76	5	98	3
79	1	104	1
81	1	110	2
82	1	112	2
			57 = (19x3)

टेबल 2 : लफ्ज़ "अल्लाह" गायब बिस्मिल्लाह से ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक•

न•	सुरेह न•	आयतों का नम्बर साथ के "अल्लाह"
1	9	100
2	10	49
3	11	33
4	12	34
5	13	23
6	14	28
7	15	2
8	16	64
9	17	10
10	18	14
11	19	8
12	20	6
13	21	5
14	22	50
15	23	12
16	24	50
17	25	6
18	26	13
19	27	6
…….	…….	…..
19	342	513

आयतों का नम्बर = 19•
सुरेह नम्बरों का टोटल = 342 = 19x18•
आयतों का टोटल = 513 = 19x27•

[8] कुरान के लफ्ज़ों की फेहरिस्त, 116 "*रसूल*" लफ्ज़ों को लिस्ट करता है, इन लफ्ज़ों में से एक है 9:128 में, इस आयत को निकालने से 115 "*रसूल*" लफ्ज़ बचते हैं• एक और "*रसूल*" लफ्ज़ जिसे खारिज किया जाना चाहिए गिनने से है 12:50 में, चूँके वो "फिरऔन के रसूल" का हवाला देता है, **अल्लाह** के रसूल का नहीं• इस तरह, टोटल वाकै होना **अल्लाह** के "*रसूल*" का है 114, 19x6•

[9] एक और एहेम लफ्ज़ जो वाकै होता है झूठी आयतें 9:128-129 में है लफ्ज़ "*रहीम*" (रहमवाले)• ये लफ्ज़ बिलाशर्त कुरान में इस्तेमाल किया गया है **अल्लाह** के नाम जैसा, और उसकी टोटल गिनती है 114, 19x6, लफ्ज़ 9:128 का "*रहीम*" निकालने के बाद, जो नबी का हवाला देता है• 7:188, 10:49 और 72:21 के मुताबिक नबी के कब्ज़े में नहीं थी कोई रहेम की ताकत•

[10] फेहरिस्त लिस्ट करता है 22 वाकै होना लफ्ज़ "*अर्श*" (तख्त) का• झूठा दुखूल 9:129 निकालने के बाद, और युसुफ का "*अर्श*" जो वाकै होता है 12:100 में, और शीबा की रानी का "*अर्श*" (27:23), हमें आखिर कार मिलते हैं 19 लफ्ज़ें "*अर्श*"• ये साबित करता है के लफ्ज़ "*अर्श*" 9:129 का कोई तॉल्लुक नहीं कुरान मे•

[11] कुरानी हुक्म "*कुल*" (कहो) वाकै होता है कुरान में 332 बार• साथ साथ, लफ्ज़ "*कालू*" (उन्होंने कहा) वाकै होता है उतनी ही बार, 332• चूँके झूठी आयत 9:129 शामिल करती है लफ्ज़ "*कुल*" (कहो) को, उसका दाखला बरबाद कर देता इस हसबे रिवाज कुरानी कुदरत•

[12] कुरान में है 6234 नम्बर दी गई आयतें और 112 आयतें जिनको नम्बर नहीं दिया गया (*बिस्मिल्लायें*)• इस तरह, कुरान के आयतों का टोटल नम्बर है 6346, 19x334• झूठी आयतें 9:128-129 तोड़ते हैं कुरान के कोड का ये एहम मयार•

[13] लफ्ज़ों के नम्बरों को बिगाड़ने के अलावा जैस ऊपर लिस्ट किया गया है, 9:128-129 तोड़ते हैं कुरान का रियाज़ी ढ़ाँचा• जब हम हर सुरेह में आयतों का नम्बर जोड़ते हैं, साथ आयत नम्बरों का जमा (1+2+3+…+n, जहाँ n = आयतों की तादाद), साथ हर सुरेह का नम्बर, टोटल मजमुआ पूरे कुरान का आता है 346199 को, या 19x19x959• ये कुदरत तसदीक करता है कुरान कि हर आयत की सदाकत, 9:128-129 को खारिज करते हुए•

टेबल 3:"19" पर बुनियाद रियाज़ी कोड दिया जाना कुरान कि सूरतों और आयतों का•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	जमा आयत #ों का	टोटल
1	7	28	36
2	286	41041	41329
-	-	-	-
9	127	8128	8264
-	-	-	-
114	6	21	141
6555	6234	333410	346199
			(19 x 19 x 959)

टेबल 3 है एक छोटी पेशकश नज़रिया 13 के हिसाबों का• ये कुदरत नामुमकिन है अगर झूठी आयतें 9:128-129 शामिल किये जाते हैं•

[14] जब हम करते हैं वही गिनतियाँ जो ऊपर नज़रिया 13 में किया गया है, लेकिन सिर्फ 85 गैर इनीशियल सुरतों के लिए, जो शामिल करता है सुरेह 9, टोटल मजमुआ भी है एक 19 का ज़रप• सारे गैर इनीशियल सुरतों का मजमुआ है 156066, या 19x8214• इस नतीजे का दारो-मदार है इस हकीकत पर के सुरेह 9 में 127 आयतें हैं, 129 नहीं• ये हकीकत दिखाये गये हैं टेबल 4 में• झूठी आयतें बरबाद कर देते इस मयार को•

[15] सारी गैर इनीशियल सूरतों (85 सूरतें) के सुरेह नम्बरों को जोड़ते हुए, साथ उनकी आयतों के नम्बर, कुरान कि शुरूआत से सुरेह 9 कि आखीर तक हम पाते हैं 703, 19x37• तफसील किया गया डेटा टेबल 5 में दिखाया गया है•

टेबल 4: रियाज़ी कोड दिया जाना कुरान के 85 गैर इनीशियल की गई सूरतों का •

सुरेह नं•	आयतों का नं•	जमा आयत #ों का	टोटल
1	7	28	36
4	176	15576	15756
-	-	-	-
9	127	8128	8264
-	-	-	-
114	6	21	141
			156066
			(19x8214)

ये कुदरत इस हकीकत पर दारोमदार है कि सुरेह 9 में हैं 127 आयतें•

टेवल 5 : गैर इनीशियल की गई सूरतें और उनकी आयतें शुरूआत से लेकर सुरेह 9 तक•

सुरेह	# आयतें	टोटल
1	7	8
4	176	180
5	120	125
6	165	171
8	75	83
9	127	136
		703
		(19x37)

*टेवल 6: गैर इनीशियल की गई सूरतें और उनकी आयतें गायव **विस्मिल्लाह** से (सुरेह 9) कुरान कि आखीर तक•*

सुरेह नं•	आयतों का नं•	जमा आयत #ों का	टोटल
9	127	8128	8264
16	128	8256	8400
-	-	-	-
113	5	15	133
114	6	21	141
			116090
			(19x6110)

[16] गैर इनीशियल सूरतों के सुरेह नम्बर को जोड़ते हुए, साथ आयतों के नम्बर, साथ आयत नम्बरों का जमा गायब *विस्मिल्लाह* (9:1) से कुरान के आखीर तक, बड़ा टोटल आता है 116090, या 19x6110• ये डेटा टेबल 6 में हैं• अगर आयतें 9:128-129 शामिल किये जाते हैं, सुरेह 9 के लिए आयतों के नम्बर हो जाते हैं 129, और बड़ा टोटल बन जाता 116349, 19 का एक ज़रप नहीं•

[17] जब आईटम 16 कि यही गिनतियाँ की जाती हैं सुरेह 9 के गायब *विस्मिल्लाह* से सुरेह 27 के ज़ायद *विस्मिल्लाह* तक सारी आयतों के लिए, बड़ा टोटल आता है 119966, या 19x6314• ये कुदरत बरबाद हो जाती, और टोटल 19 से तकसीम कभी नहीं होता, अगर आयतों का नम्बर सुरेह 9 में 129 होता• चुँकि ये कुदरत सुरेह 9 कि गैर मौजूद *विस्मिल्लाह* से भी जुड़ा है, ये समझाया गया है और डेटा का तफसील टेबल कि शक्ल में अपेन्डिक्स 29 में दिया गया है•

[18] जब 16 और 17 आईटमों वाली यही गिनतियाँ की जाती हैं गायब *विस्मिल्लाह* (9:1) से उस आयत तक जहाँ 19 नम्बर बयान किया गया (74:30), हम पाते हैं कि बड़ा टोटल 207670 को आता है, या 19x10930 (टेवल 7)• ज़रूरी है सुरेह 9 में 127 आयतें हों•

[19] सुरेह 9 में हैं 127 आयतें• अददें 127 कि जुड़ती हैं 1+2+7 = 10• चलें हम देखें उस सारी आयतों कि तरफ जिनकी अददें जुड़ती हैं 10 को, सुरेह 9 कि गायब *विस्मिल्लाह* से, सुरेह 27 कि ज़ायद *विस्मिल्लाह* तक• अगर सुरेह 9 में 129 आयतें होतीं, बड़ा टोटल होता 2472, एक 19 का एक ज़रप नहीं, और ये कुदरत गायब हो जाती• डेटा टेबल 8 में है•

टेवल 7: सूरतें और आयतें गायव विस्मिल्लाह से 74:30 तक•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	जमा आयत #ों का	टोटल
9	127	8128	8264
10	109	5995	6114
-	-	-	-
73	20	210	303
74	30	465	569
2739	4288	200643	207670
			(19x10930)

[20] झूठ गढ़ने वाले चाहते थे हम मानें कि सुरेह 9 में हैं 129 आयतें• नम्बर 129 खत्म होता है अदद "9" से• चलें हम देखें पहली सुरेह और आखरी सुरेह कि तरफ जिनकी आयतों के नम्बर "9" से खत्म होते हैं• ये हैं सुरेह 10 और सुरेह 104• सुरेह नम्बर को जोड़ते हुए, साथ आयतों के नम्बर से, साथ आयत नम्बरों का जमा, सुरेह 10 से सुरेह 104 तक, हमें एक बड़ा टोटल मिलता है जो 23655, या 19x1245 के बराबर है• तफसीलें टेवल 9 में दिखाई गई हैं• सुरेह 9 में गलत आयतों का नम्बर, 129 का दाखला, बदल दिया होता दोनो आयत नम्बरों का जमा और टोटल मजमुआ — आयत नम्बरों का जमा हो जाता 627 + 129 = 756, और टोटल मजमुआ नहीं होता 23655 — और कुरान के कोड का बिगाड़ हो जाता (टेवल 9)•

[21] झूठे दुखूल में है आयत 128 और 129 सुरेह 9 की आखीर में• अगर हम देखें 128 और 129 नम्बरों कि तरफ, हम देखते हैं दो 1, दो 2, एक 8, और एक 9• चलें अब हम देखें कुरान में सारी आयतों कि तरफ, और गिनें सारे 1 जो हम देखते हैं• इस के मायने 1 जो हम देखते हैं 1, 10, 11, 12, 13, ... 21, 31, और इसी तरह आयतों में• टोटल गिनती 1 कि है 2546 (19x134), बर्शते के सुरेह 9 में सही आयतों का नम्बर, 127, इस्तेमाल किया गया हो• अगर 128 और 129 शामिल किए जाते, बड़ा टोटल बन जाता 2548, जो 19 का एक ज़रप नहीं है (टेबल 11)•

[22] चुँकि सुरेह 9 एक गैर इनीशियल की गई सुरेह है, चलें हम देखें सारी 85 गैर इनीशियल सूरतों में आयत नम्बरों कि तरफ और गिने सारे 1 जो हम देखते हैं• जैसा टेबल 10 में दिखाया गया है, टोटल गिनती अदद “1” कि गैर इनीशियल सूरतों में है 1406, या 19x74• ज़ाहिर है, अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें, हम देखते दो ज़ाएद 1, 128 और 129 से, और कोड का बिगाड़ हो जाता•

टेबल 10 : 85 गैर इनीशियल की गई सूरतों में सारे 1 कों' को गिनते हुए•

सुरेह	# आयतों का	1 कों' का #
1	7	1
4	176	115
-	-	-
9	127	61
-	-	-
113	5	1
114	6	1
		......
		1406 (19x74)

[23] जारी रखते हुए वही तरीका जो 21 और 22 आईटमों में समझाया गया है अदद “1” के लिए, चलें हम गिने सारे 2, 8, और 9 को पूरे कुरान कि सारी आयत नम्बरों में• जैसा टेबल 11 में दिखाया गया है, टोटल गिनती सारे 2, 8, और 9 की है 3382, या 19x178• ये बनाता है बड़ा टोटल सारे 1, 2, 8, और 9 का 2546 + 3382 = 5928, 19x312•

टेबल 8: आयतें जिनकी अददें जुड़तीं 10 को 9:1 से 27:29 तक•

सुरेह नं•	नं• आयतों का	कितने जुड़ते हैं 10 को	नं• का टोटल
9	127	12	148
10	109	10	129
11	123	11	145
12	111	10	133
13	43	3	59
14	52	4	70
15	99	9	123
16	128	12	156
17	111	10	138
18	110	10	138
19	98	9	126
20	135	12	167
21	112	10	143
22	78	7	107
23	118	11	152
24	64	6	94
25	77	7	109
26	227	22	275
27	29	2	58
342	1951	177	2470

342 = 19x18 और 2470 = 19x130

टेबल 9: सारी सूरतें जिनकीं आयतों का नम्बर “9” से खत्म होता है•

सुरेह नं•	नं• आयतों का	जमा आयत #ों का	टोटल
10	109	5995	6114
15	99	4950	5064
29	69	2415	2513
43	89	4005	4137
44	59	1770	1873
48	29	435	512
52	49	1225	1326
57	29	435	521
81	29	435	545
82	19	190	291
87	19	190	296
96	19	190	305
104	9	45	158
748	627	22280	23655 (19x1245)

इस काबिले गौर कुदरत में, हमने लिया कुरान में हर एक आयत को, और तफतीश किया तन्हा अददें जो आयतें 128 और 129 को बनाती हैं• चुँकि 128 और 129 में है 6 अददें, शामिल करना इन इन्सानी दुखूलों का सबब बनता है टोटल गिनती पूरे कुरान में इन अददों कि 5928 + 6 = 5934 को, 19 का एक ज़रप नहीं•

टेवल 11: पूरे कुरान में उन अददों को गिनते हुए जो 128 और 129 को बनाते हैं•

सुरेह	1ों ' का #	2ों ' का #	8ों ' का #	9ों ' का #	टोटल
1	1	1	0	0	2
2	159	146	55	48	408
.	.	.	.	.	.
9	61	31	22	22	136
10	31	21	21	21	94
.	.	.	.	.	.
114	1	1	0	0	2
	2546	1641	908	833	5928
	(19 x 134)				(19 x 312)

[24] टोटल गिनती सारे अददों कि (1 से 9 तक) 85 गैर इनीशियल सूरतों कि सारी आयत नम्बरों में, 127 आयतों के साथ सुरेह 9 शामिल करते हुए, है 27075, या 19x19x75•

[25] कुरान कि सूरतों और आयतों कि अददों को जोड़ते हुए पैदा करता है एक 19 का ज़रप, बर्शते के सुरेह 9 के लिए, सही आयतों का नम्बर 127, लिया जाए• ऐसा करने के लिए आप, कुरान कि 114 सूरतों और हर सुरेह में आयतों के नम्बर का एक फेहरिस्त बनाएं• हर सुरेह नम्बर कि अददों को जोड़े• 10 = 1, 11 = 2, 12=3, 99=18, और इस तरह इन अददों का जमा• सारे सूरतों का टोटल है 975• यही किया गया है हर सुरेह में आयतों के नम्बरों के लिए• मिसाल के लिए, सुरेह 2 में है 286 आयतें• 286 कि अददें जुड़ती हैं 2+8+6=16• सुरेह 9 के लिए, उसकी आयतों के नम्बर कि अददें जुड़ती हैं 1+2+7=10• सारे 114 सूरतों के लिए टोटल है 906• इस तरह, बड़ा टोटल सारे सूरतों और आयतों कि अददों के जमा के लिए है 975+906 = 1881 = 19x99• ज़ाहिर है, ये तवज्जोह मुमकिन न होगी अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें• टेवल 12 छोटा किया गया है हिसाबों को ज़ाहिर करने के लिए•

टेवल 12: पूरे कुरान में सारे सूरतों और आयत नम्बरों के अददों का जमा•

सुरेह नं•	आयतों के नं•	सूरतों	आयतों
		के अददों का जमा	
1	7	1	7
2	286	2	16
3	200	3	2
.	.	.	.
9	127	9	10
.	.	.	.
114	6	6	6
		975	906
	975 + 906 = 1881 = 19x99		

[26] मौजज़ाना तौर पर, अगर हम हिसाब करें कुरान में हर सुरेह के लिए अददों का जमा, और ज़रप करें हर सुरेह के लिए जमा उसके आयतों के नम्बर के अददों के जमा से, बजाए जोड़ते हुऐ, हम फिर भी एक बड़े टोटल को पहुँचते हैं जो एक 19 का ज़रप है• मिसाल के लिए, सुरेह 2 में हैं 286 आयतें• अददों का जमा 2+8+6 = 16• इसलिए आप ज़रप करते हैं 2 को 16 से, और आप पाते हैं 32, बजाए जोड़ने के 2+16 जैसा हमने किया आयटम 26 में• ये किया गया है कुरान में हर सुरेह के लिए• सारी सूरतों के लिए बड़ा टोटल है 7771, या 19x409• एक बार फिर, कुरान में हर एक आयत कि तसदीक की गई है, जवकि झूठी आयतें बिल्कुल ठुकरा दी गई हैं• टेवल 13 देखें•

टेबल 13: कुरान कि सूरतों और आयतों कि अददों के जमा का ज़रप•

सुरेह नं•	नं• आयतों का	सुरतों	आयतों		ज़रप का नतीजा
		कि अददों का जमा			
1	7	1	7		7
2	286	2	16		32
3	200	3	2		6
.	.	.	.	.	
9	127	9	10		90
.	.	.	.		
114	6	6	6		36
		975	906		7771 (19x409)
		975 + 906 = 1881 = 19x99			

[27] वाकई में एक और ज़बरदस्त मौजेज़ा: सुरेह 9 एक ऑड नम्बर वाली सुरेह है, अगर हम सिर्फ ऑड नम्बर वाली सूरतों के लिए ऊपर बयान किये गये हिसाबों को करें, हम पाते हैं कि सूरतों के लिए टोटल है 513 (19x27), आयतों के लिए टोटल है 437(19x23), और बड़ा टोटल दोनो के लिए है 513+437 = 950 (19x50)• टेबल 14 ज़ाहिर करता है ये काबिले गौर मौजेज़ा•

[28] चलें हम सारी सूरतों को लें जिनमें हैं 127 आयते या कम• वहाँ हैं 105 ऐसी सूरतें• इन 105 सूरतों के सुरेह नम्बरों का जमा, साथ उनके आयत नम्बरों का जमा है 10963, या 19x577• सुरेह 9 ही है सिर्फ सुरेह जिसमें हैं 127 आयतें• टेबल 15 देखें• अगर सुरेह 9 में वाकई में 129 आयतें होतीं, वो इन सूरतों कि फेहरिस्त में शामिल नहीं होती, टोटल 10827 होता (10963-136), ये मौजेज़ा गायब हो जाता, और कुरान के कोड का बिगाड़ हो जाता•

टेबल 14: वही डेटा जैसे टेबल 12 में, लेकिन सिर्फ ऑड नम्बर वाली सूरतों के लिए•

सुरेह नं•	आयतों के नं•	सूरतों	आयतों	टोटल
		के अददों का जमा		
1	7	1	7	8
3	200	3	2	5
.	.	.	.	
9	127	9	10	19
.	.	.	.	
113	5	5	5	10
		513	437	950
		(19x27)	(19x23)	(19x50)

[29] चुँकि सुरेह 9 ऑड नम्बर वाली है, और उसके आयतों का नम्बर भी ऑड है, चलें हम देखें सारी ऑड नम्बर वाली सूरतों कि तरफ जिनकी आयतों के नम्बर भी ऑड हैं• ये हमें 27 सूरते देते हैं: 1, 9, 11, 13, 15, 17, 25, 27, 29, 33, 35, 39, 43, 45, 57, 63, 81, 87, 91, 93, 97, 101, 103, 105, 107, 111, और 113• उनमें हैं 7, 127, 123, 43, 99, 111, 77, 93, 69, 73, 45, 75, 89, 37, 29, 11, 29, 19, 15, 11, 5, 11, 3, 5, 7, 5, और 5 आयतें इस तरतीब में• इन सुरेह नम्बरों का जमा, साथ उनके आयत नम्बरों का जमा है 2774, 19x146• अगर हम सुरेह 9 के लिए गलत आयतों का नम्बर लें, यानी, 129, ये मौजेज़ा गायब हो जाता है•

[30] सुरेह 9 में सही आयतों का नम्बर है 127, और ये एक प्राईम नम्बर है — वो किसी से तकसीम नहीं होता सिवाए 1 के, और खुदसे• चलें हम देखें सारी सूरतों कि तरफ जिनकी आयतों का नम्बर एक प्राईम नम्बर है• ये सूरते हैं 1, 9, 13, 33, 43, 45, 57, 63, 81, 87, 93, 97, 101, 103, 105, 107, 111, और 113• इन सूरतों में आयतों के नम्बरें हैं 7, 127, 43, 73, 89, 37, 29, 11, 29, 19, 11, 5, 11, 3, 5, 7, 5, और 5, इस तरतीब में• अगर आप इन सूरतों के अददों को जोड़ें, आप पाते हैं 137, जबकि आयतों कि अददें जुड़ते हैं 129 को• ये बनाता है बड़ा टोटल सारी अददों का 137+129 = 266 = 19x14•

टेबल 15 : रियाज़ी कोड दिया जाना सारे सूरतों का जिनमें हैं 127 आयतें या कम•

सुरेह नम्बर	नं• आयतें का	टोटल
1	7	8
5	120	125
8	75	83
9	127	136
.	.	.
113	5	118
114	6	120
6434	4529	10963
		(19x577)

[31] बिगाड़ने वालों ने जोड़ा दो झूठी आयतें सुरेह 9 को, और ये सबब बना 129 आयते होना सुरेह का• चुँकी 129 में है 3 अददें, और है 3 का तकसीम, चलें हम देखें सूरतों कि तरफ जिनकी आयतों के नम्बर 3 से तकसीम होते हैं, और है 3 अददें• इन सुरेह नम्बरों का टोटल है 71, और टोटल आयतों का नम्बर है 765• ये पैदा करता है एक बड़ा टोटल 71 + 765 = 836 का, या 19x44• टेबल 16 में डेटा दिखाया गया है•

अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें, वो शामिल किया गया होता इस टेबल में, और तबाह कर देता इस कुदरत को•

टेबल 16 : सारी सूरतें जिनकी आयतों के नम्बर है 3 अददें, और 3 से तकसीम होते हैं•

सुरेह	# आयतों का	टोटल
2	120	125
6	165	171
11	123	134
12	111	123
17	111	128
20	135	155
71	765	836
		(19 x 44)

[32] अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें, जैसा झूठ गढ़ने वाले चाहते हैं हम मानें, तो चलें हम देखें सारी सूरतों कि तरफ जिन में 129 आयतें हैं या ज़्यादा• वहाँ हैं 8 ऐसी सूरतें• उनके डेटा टेबल 17 में दिखाए गए हैं•

आगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें, आयतों के नम्बर का टोटल होता 1577+129 = 1706, 19 का एक ज़रप नहीं•

[33] नम्बरें 127, 128 और 129 में दो अददें शामिल हैं "1" और "2•" चलें हम लें सारी सूरतों को जिनकी आयतों के नम्बर में है शामिल अददें 1 और 2 • सुरेह नम्बरों को जोड़ते हुए साथ आयतों के नम्बरों से, हम पाते हैं 1159, 19x61• टेबल 18 देखें•

टेबल 17 : सारी सूरतें जिनमें हैं 129 आयतें या ज़्यादा•

शुरेह नं•	नं• आयतों का
2	286
3	200
4	176
6	165
7	206
20	135
26	227
37	182
	1577 (19 x 83)

अगर सुरेह 9 में 129 आयतें होतीं, टोटल हो जाता 1159+2 = 1161, 19 का एक ज़रप नहीं•

[34] सुरेह 9 एक तन्हा अदद वाली सुरेह है जिसकी आयतों के नम्बर में हैं अददें 1 और 2• वहाँ सिर्फ एक दूसरी सुरेह जिसके पास है ये खुसुसियतें: सुरेह 5 है एक तन्हा अदद वाली सुरेह, और उस में हैं 120 आयतें• जैसा टेबल 19 में दिखाया गया है, आयतों का नम्बर इन दो सूरतों में है 120 + 127 = 247 = 19x13•

अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें, टोटल होता 247 + 2 = 249, 19 का एक ज़रप नहीं•

[35] हमने देखा सारी सूरतों कि तरफ जिनकी आयतों के नम्बर में है "1" और "2•" चलें अब हम देखें सारी सूरतों की तरफ जिनकी आयतों के नबर शुरू होते हैं अदद "1" से• वहाँ हैं 30 सूरतें जिनके पास हैं ये खूबी: सूरतें 4, 5, 6, 9, 10, 11, 12, 16, 17, 18, 20, 21, 23, 37, 49, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 82, 86, 87, 91, 93, 96, 100, और 101•

उनकी आयतों के नम्बरें हैं 176, 120, 165, 127, 109, 123, 111, 128, 111, 110, 135, 112, 118, 182, 18, 13, 14, 11, 11, 18, 12, 12, 19, 17, 19, 15, 11, 19, 11, और 11• आयत नम्बरों का जमा (1+2+3+... + n) इन 30 सूरतों के लिए है 126122, या 19x6638•

अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें, उनकी आयत नम्बरों का जमा होता 126122 + 128 +129 = 126379, और ये टोटल एक 19 का ज़रप नहीं है•

टेबल 18: सूरतें जिनकि आखरी आयत में अददें "1" और "2" शामिल हैं साथ आयतों के जिनकि बात हो रही है (127, 128, और 129) •

सुरेह नं•	आयतों का नं•	टोटल
5	120	125
9	127	136
11	123	134
16	128	144
21	112	133
37	182	219
65	12	77
66	12	78
92	21	113
322	837	1159 (19x61)

टेबल 19: सिर्फ वही सूरतें जिनका नम्बर एक तन्हा अदद है, और आयतों के नम्बर में हैं "1" और "2" अददें•

सुरेह नं•	आयतों का नं•
5	120
9	127
	247 (19x13)

[36] सुरेह 9 में हैं 127 आयतें, और 9+1+2+7 बराबर है 19 के• चलें हम देखें सारी सूरतों कि तरफ जिनकी सुरेह और आयतों कि अददें जुड़ती हैं 19 को• वहाँ हैं 10 सूरतें जो इस खासियत को पहुँचते हैं, और उनकी सुरेह नम्बरों का और आयतों के नम्बरों का टोटल है 1216, या 19x64• डेटा टेबल 20 में दिखाए गए हैं•

मस्जिद टूसॉन के मिस्टर गतूत अदीसोमा ने नीचे बताई गई दो खोजें की•

[37] सुरेह 9 में हैं 127 आयतें, और (9) साथ (1+2+7) जुड़ते हैं 19 को• वहाँ हैं तीन सूरतें पूरी कुरान में जिनकी सुरेह कि अददें 9 को जुड़ती हैं और उनकी आयतों के नम्बर कि अददें जुड़ती हैं 10 को• ये हैं सूरतें 9, 45, 54, और 72• उनमें हैं 127, 37, 55, और 28 आयतें, इस तरतीब में• इन चार सूरतों में आयतों के नम्बर का टोटल है 247, 19x13•

अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें, पहली बात तो वो इस टेबल में शामिल नहीं होती• देखें टेबल 21•

[38] अगर सुरेह 9 में होतीं 129 आयतें जैसा बिगाड़ने वाले दावा करते हैं, फिर पूरी कुरान में वहाँ है एक दूसरी सुरेह जिसकी सुरेह कि अददें जुड़ते हैं 9 को, और उसकी आयतों के नम्बर कि अददें जुड़ते हैं 12 को, मसलन सुरेह 27•

जैसा टेबल 22 में दिखाया गया है, ये मेल, 129 आयतें सुरेह 9 के लिए, मेल नहीं खाता कुरान के कोड के साथ•

टेबल 20: सारी सूरतें जहाँ सुरेह नम्बर कि अददें और आयतों का नम्बर जुड़ते हैं 19 को•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	टोटल
9	127	136
22	78	100
26	227	253
45	37	82
54	55	109
64	18	82
72	28	100
77	50	127
78	40	118
84	25	109
531	685	1216 (19x64)

[39] चलें हम मानें कि सुरेह 9 में हैं 129 आयतें। चुँकी नम्बर 129 खत्म होता है अदद “9” से, चलें हम देखें सारी सूरतों कि तरफ जहाँ आयतों के नम्बर खत्म होते हैं अदद “9” से।

हम पाते हैं कुरान में 13 सूरतें जिनकी आयतों के नम्बर खत्म होते हैं अदद “9” से। वो सूरते हैं 10, 15, 29, 43, 44, 48, 52, 57, 81, 82, 87, 96, और 104। उनकी आयतों कि नम्बरें हैं 109, 99, 69, 89, 59, 29, 49, 29, 29, 19, 19, 19, और 9, इस तरतीब में।

जैसा टेबल 23 में ज़ाहिर किया गया है, कई नतीजे मुआफिक हैं कुरान के कोड के साथ अगर सिर्फ सुरेह 9 खारिज किया गया हो; वो शामिल नहीं करता 129 आयतें। सुरेह 9 के बगैर, आयतों के टोटल नम्बर इन 13 सूरतों में हैं 627, 19x33। इसके अलावा, सुरेह नम्बर, साथ आयतों का नम्बर, साथ आयत नम्बरों का जमा, जुड़ते हैं 23655 को, या 19x1245। ये कुदरत गायब हो जाती अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें।

टेबल 23: सारी सूरतें जिनकि आयतों का नम्बर अदद “9” से खत्म होता है।

सुरेह नं।	आयतों का नं।	आयत #'ों का जमा	टोटल
10	109	5995	6114
15	99	4950	5064
29	69	2415	2513
43	89	4005	4137
44	59	1770	1873
48	29	435	512
52	49	1225	1326
57	29	435	521
81	29	435	545
82	19	190	291
87	19	190	296
96	19	190	305
104	9	45	158
748	627	22280	23655
	(19x33)		(19x1245)

टेबल 21: सारी सूरतें जहाँ सुरेह नम्बर कि अददें जुड़ते हैं 9 को, और आयतों के नम्बर कि अददें जुड़ते हैं 10 को।

सुरेह नं।	आयतों का नं।
9	127
45	37
54	55
72	28
	247
(19x13)	

टेबल 22: सारी सूरतें जहाँ सुरेह नम्बर कि अददें जुड़ते हैं 9 को, और आयतों के नम्बर कि अददें जुड़ते हैं 12 को, मानते हुए कि सुरेह 9 में है 129 आयतें।

सुरेह नं।	आयतों का नं।
9	129
27	93
	222
(एक 19 का ज़रप नहीं)	

[40] सुरेह 9 एक ऑड-नम्बर वाली सुरेह है जिसकी आयतों के नम्बर खत्म होते हैं अदद “9” से। चलें हम अब देखें सारी ऑड नम्बर वाली सूरतों कि तरफ जिनकी आयतों के नम्बर खत्म होते हैं “9” से। जैसा टेबल 24 में दिखाया गया है, सुरेह नम्बर और आयतों के नम्बर का टोटल इन सूरतों में है 646, या 19x34। अगर सुरेह 9 में होतीं 129 आयतें, वो शामिल किया गया होता इस गिरोह में, और टोटल होता 646 + 129 + 9 = 784, जो के एक 19 का ज़रप नहीं है।

[41] अब तक, ये सरई तौर पर सावित हो चुका है कि सुरेह 9 में हैं 127 आयतें। चलें अब हम देखें सूरतों कि तरफ जिनकी आयतों के नम्बर खत्म होते हैं “7” से। वहाँ हैं 7 ऐसी सूरतें; वो सूरते हैं 1, 9, 25, 26, 45, 86, और 107। उनकी आयतों कि नम्बरें हैं 7, 127, 77, 227, 37, 17, और 7 आयतें, इस तरतीब में।

सुरेह नम्बरों का बड़ा टोटल साथ आयतों के नम्बर इन सात सूरतों के लिए है 798, 19x42• तफसीलें टेबल 25 में दिखाई गई है•

इस तरह, हर सुरेह जिनकी आयतों के नम्बर खत्म होते हैं अदद “7” से, सुरेह 9 को शामिल करते हुए, मुआफिक है कोड के साथ•

टेबल 24: ऑड नम्बर वाली सूरतें जिनकि आयतों के नम्बर “9” के साथ खत्म होते हैं•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	टोटल
15	99	114
29	69	98
43	89	132
57	29	86
81	29	110
87	19	106
312	334	646
		(19x34)

[42] आखरी दो आयतें सुरेह 9 कि हैं 126 और 127• चुँकी बिगाड़ने वालों ने जोड़ दिया दो आयतें, चलें हम देखें कुरान में हर सुरेह कि आखरी दो आयतों कि तरफ, और उनमें गिनें सारे अदद “7” को•

जैसा टेबल 26 में दिखाया गया है, अदद “7” का टोटल नम्बर कुरान में हर सुरेह की आखीर के दो आयतों के दरमियान है 38, 19x2•

अगर आखरी आयत सुरेह 9 में होती 129 बजाए 127 के, अदद “7” के वाकेआत का नम्बर होता 37, 38 नहीं, और ये मयार बरबाद हो जाती•

[43] मानते हुए तरफ सारी लिए, 129 सूरतें हम 19

टेबल 25: सूरतें जिनकि आयतों के नम्बर अदद “7” से खत्म होते हैं •

सुरेह नं•	आयतों का नं•	टोटल
1	7	8
9	127	136
25	77	102
26	227	253
45	37	82
86	17	103
107	7	114
299	499	798
		(19x42)

कि सुरेह 9 में हैं 129 आयतें, चलें हम देखें सारी सूरतों कि जिनमें है एक आयत नं• 129• इसके मायने हैं कि हम देखे सूरतों कि तरफ जिनमें हैं 129 या ज़्यादा आयतें• मिसाल के सुरेह 2 में है 286 आयतें• इसलिए, उसमें है एक आयत जिसको दिया गया है नम्बर “129•” हम फिर लेते हैं इस आयत को जोड़ते हैं दूसरी सारी आयतों से जिनको नम्बर दिया गया है पूरी कुरान में• इस नज़रिए के तहेत, वहाँ हैं 9 जिनमें हैं एक आयत नं• 129• दिलचस्पी वाली बात है कि, पाते हैं कि सुरेह नम्बरों का टोटल इन 9 सूरतों का है एक (114) का ज़रप, जबकी टोटल नौ 129 के लिए हो सकता है एक ज़रप 19 का अगर 2 घटाया जाए उनके टोटल से• दूसरे लफ़्ज़ों में, हमें कहा गया है कि इन 9 सूरतों में से एक में है 2 ज़्यादा आयतें• तफसीलें टेबल 27 में हैं•

जब हम जोड़ें 114, साथ 1161 के, और निकालें 2 को, हम पाते हैं 1273, या 19x67• बराबरी करें इस टोटल (1273) कि नीचे बताए गए आयटम 44 के टोटल के साथ• टेबल 27 में लिस्ट की गई 9 सूरतों में, से एक में है 2 ज़्यादा आयतें ? जवाब आयटम 44 में दिया गया है•

[44] इन दो झूठी आयतों का सही सही ठिकाना बताने के लिए, चलें हम देखें सारी सूरतों कि तरफ जिनमें है एक आयत नं• 128, जबकि जारी रहें मानते हुए की सुरेह 9 में हैं 129 आयतें• ये हमें सूरतों का वही फेहरिस्त देगा जैसा टेबल 27 में है, और लाता है सुरेह 16 भी जिसमें है ठीक ठीक 128 आयतें•

जैसा टेबल 28 में दिखाया गया है, सुरेह 9 दमकदार बेसुरेपन में अलग खड़ा होता है; वो बाहर निकाला जाता है जैसे झूठी आयतें हैं सुरेह में• सूरतों और आयतों का टोटल बन जाता है 19 का तकसीम **सिर्फ** अगर

टेबल 26: अदद “7” का टोटल नम्बर कुरान में हर सुरेह कि आखरी दो आयतों के दरमियान•

सुरेह नं•	आखरी 2 आयतें	आखरी 2 आयतों में 7 ों
1	6, 7	1
2	285, 286	0
3	199, 200	0
4	175, 176	2
.	.	.
9	126, 127	1
.	.	.
25	76, 77	3
.	.	.
114	5, 6	0
		38

सुरेह 9 निकाला जाता है॰ गौर करें कि तकसीम होने वाला टोटल, सुरेह 9 को निकालने के बाद, है 1273, 19x67, जो है वही टोटल ऊपर आयटम 43 में हासिल हुआ है 2 आयतों को निकालने के बाद॰ ये गैरमामूली कुदरत साबित करता है कि सुरेह 9 में नहीं हो सकता एक आयत नं॰ 128॰

[45] सुरेह 9 एक गैर इनीशियल वाली सुरेह है जिसकी आखरी दो आयतें हैं 126 और 127॰ चलें हम लें 85 गैर इनीशियल वाली सूरतें, और हर सुरेह में आखीर दो आयतों के नम्बरों को जोड़ें॰ मिसाल के लिए, आखरी दो आयतें सुरेह 1 में हैं 6 और 7॰ जोड़ें 6+7 और आप पाते हैं 13॰ अगली गैर इनीशियल वाली सुरेह है सुरेह 4; उसकी आखरी दो आयतें हैं 175 और 176॰ जोड़ें 175+176 और आप पाते हैं 351॰ सारे गैर इनीशियल वाली सूरतों के लिए ऐसा करें॰ डेटा टेबल 29 में हैं॰ इस तरह, साबित होता है सुरेह 9 कि आखरी दो आयतें हैं 126 और 127॰

टेबल 27: सारी सूरतें जिनमें है एक आयत नम्बर "129"॰

सुरेह नं॰	आयत नं॰
2	129
3	129
4	129
6	129
7	129
9 ?	129
20	129
26	129
37	129
114	1161
(114+1161 – 2 = 1273 = 19x67)	

[46] चलें अब हम लें कुरान में हर सुरेह में आखरी दो आयतें॰ इनीशियल और गैर इनीशियल वाली, और जोड़ें हर सुरेह में आखरी दो आयतों कि अददें (टेबल 30)॰

ये आसानी से ज़ाहिर है कि कुरान में हर सुरेह कि आखरी दो आयतें खुदाई तौर पर जमाए गए हैं, और खुदाई तौर पर हिफाज़त किया गया है इस पेचीदे रियाज़ी कोड के ज़रिए॰ साबित होता है सुरेह 9 कि आखरी दो आयतें 126 और 127 हैं, 128 और 129 नहीं॰

टेबल 28: सारी सूरतें जिनमें है एक आयत नम्बर "128"॰

सुरेह नं॰	आयत नं॰
2	128
3	128
4	128
6	128
7	128
9?	128
16	128
20	128
26	128
37	128
130	1280
(130+1280 = 1410, एक 19 का ज़रप नहीं) अगर हम सुरेह 9 निकालें, उसकि आयत 128 के साथ, हमें मिलता है 1410 – 9 – 128 = **1273** = 19x67॰	

[47] सुरेह 9 में है 127 आयतें, और 127 में हैं 3 अददें॰ चलें हम देखें सारे सूरतों कि तरफ जिनकी आयतों के नम्बर में हैं 3 अददें; ये सूरतें हैं 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11, 12, 16, 17, 18, 20, 21, 23, 26, और 37॰ उनकी आयत नम्बरे हैं 286, 200, 176, 120, 165, 206, 127, 109, 123, 111, 128, 111, 110, 135, 112, 118, 227, और 182, इस तरतीब में॰ हर आयतों के नम्बर में आखरी अदद लेते हुए, और इन अददों को जोड़ते हुए, हम पाते हैं 6+0+6+0+5+6+7+9+3+1+8+1+0+5+2+8+7+2 = 76 = 19x4॰

टेबल 29: छोटा किया गया टेबल गैर इनीशियल वाली सूरतों में आखरी दो आयतों की॰

सुरेह नं॰	आखरी दो आयतें	टोटल
1	6+7	13
4	175+176	351
5	119+120	239
.	.	.
9	126+127	253
.	.	.
114	5+6	13
		6897
		(19x363)

अगर सुरेह 9 में होतीं 129 आयतें, आखरी अदद उसकी आयतों के नम्बर में होता 9 बजाए 7 के, और आखरी अददों का टोटल होता 78 बजाए 76 के, और ये कुदरत गायब हो जाती॰

[48] चलें हम ऊपर बताए गए आयटम 47 में सूरतों कि फेहरिस्त कि तरफ देखें॰ चुँकि आयतों का नम्बर सुरेह 9 में है एक ऑड नम्बर, चलें अब हम गौर करें ऑड नम्बर वाली आयत नम्बरें॰ वहाँ हैं 8 सूरतें 3-अदद के साथ, आयतों के ऑड नम्बर: सूरतें 6, 9, 10, 11, 12, 17, 20, और 26॰ उनकी आयतों कि नम्बरें हैं 165, 127, 109, 123, 111, 111, 135, और 227॰

टेबल 30: कुरान में हर सुरेह कि आखरी दो आयतों कि अददों का जमा•

सुरेह नं•	आखरी दो आयतें	अददों का जमा
1	6, 7	6 + 7
2	285, 286	2+8+5+2+8+6
3	199, 200	1+9+9+2+0+0
.	.	.
9	126, 127	1+2+6+1+2+7
.	.	.
113	4, 5	4+5
114	5, 6	5+6
		1824 = 19x96

इन आयतों कि नम्बरों में आखरी अददें हैं 5, 7, 9, 3, 1, 1, 5, और 7, इस तरतीब में, और इन अददों का जमा है 38, या 19x2• ज़ाहिर है, अगर सुरेह 9 में होतीं 129 आयतें, उसका आखरी अदद होता 9, 7 नहीं, और जमा होता आखरी अददों का 40, 19 का एक ज़रप नहीं• तफसील किया गया डेटा दिखाया गया है टेबल 31 में• इस तरह, हम ज़्यादा से ज़्यादा बारीक होते जा रहे हैं, जैसे हम आयतों के नम्बर में आखरी अदद के बिल्कुल करीब होते जाते हैं•

[49] चलें हम आयटम 47 और 48 कि वही सूरतों कि गिरोह के साथ जारी रहें काम करते हुए• चुँकि सुरेह 9 एक ऑड नम्बर वाली सुरेह है, चलें अब हम निकालें आयटम 47 में दिखाई गई सूरतों कि फेहरिस्त से सारी ईवेन नम्बर वाली सूरतों को• अब हमारे पास है ऑड नम्बर वाली सूरते, ऑड नम्बर वाली आयतों के साथ• पूरे कुरान में वहाँ हैं ऐसी सिर्फ तीन सूरतें: 9, 11, और 17• उनकी आयतों कि नम्बरें हैं 127, 123, और 111 (टेबल 32)• अगर सुरेह 9 में होती 129 आयतें, ये काबिले गौर कुदरत बरबाद हो जाती•

ड्टेबल 31: सारी सूरतें जिनकि आयतों का नम्बर ऑड है, और उसमे हैं 3 अददें•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आखरी अदद
6	165	5
9	127	7
10	109	9
11	123	3
12	111	1
17	111	1
20	135	5
26	227	7
		38 (19x2)

[50] चलें हम आयटम 49 में फेहरिस्त कि गई तीन सूरतों के साथ जारी रहें काम करते हुए• ये हैं सारी सूरतें कुरान में जिनके नम्बर हैं ऑड (जैसा सुरेह 9), उनकी आयतों के नम्बर में हैं 3 अददें (जैसा सुरेह 9) और उनके आयतों के नम्बर भी हैं ऑड (जैसा सुरेह 9)•

जैसा टेबल 32 में दिखाया गया है, इन 3 सूरतों कि आयत नम्बरें हैं 127, 123, और 111• सिर्फ तन्हा अददों को जोड़ें, और आप पाते हैं 1 + 2 + 7 + 1 + 2 + 3 + 1 + 1 + 1 = 19•

ज़ाहिर है, ये कुदरत इस पर बुनियाद है कि अब साबित हुई सच्चाई कि सुरेह 9 में हैं 127 आयतें• अगर सुरेह 9 में होती 129 आयते, कुरान में सिर्फ वो सूरतें जिनके पास है ऊपर बयान कि गई खूबियाँ जुड़कर हो जातीं 1+2+9+1+2+3+1+1+1 = 21• दूसरे लफ्ज़ों में, ये एहम हिस्सा कुरान के रियाज़ी कोड का गायब हो जाता•

टेबल 32: ऑड नम्बर वाली सूरतें जिनकि आयतें ऑड हैं और उसमें हैं 3 अददें•

सुरेह नं•	आयतों का नं•
9	127
11	123
17	111
	361 (19x19)

[51] वहाँ हैं तीन सूरतें (1) जिनकी नम्बरें हैं ऑड, (2) उनकी आयतों कि नम्बरें हैं ऑड, और (3) आयतों के नम्बर में हैं 3 अददें• वो हैं सूरतें: 9, 11, और 17 (आयटम 48 से 50 देखें इस मुद्दे का बहाव देखने के लिए)• बस जोड़ें तन्हा अददों को जो बनाते हैं तीन सुरेह नम्बरें, और आप पाते हैं 9+1+1+1+7=19•

[52] नम्बर 129 तकसीम होता है 3 से• अगर सुरेह 9 में होतीं 129 आयतें जैसा बिगाड़ने वालों ने दावा किया है, तब वो होती (1) एक ऑड नम्बर वाली सुरेह जिसमें (2) होता 3 अदद नम्बर कि आयतें, (3) आयतों के नम्बर होते ऑड, और (4) आयतों का नम्बर 3 से तकसीम होता• वहाँ हैं पूरे कुरान में सिर्फ दो सूरतें जिनके पास हैं ये खूबियाँ, सुरेह 11 साथ 123 आयतों के, और सुरेह 17 साथ 111 आयतों के• दोनों सुरेह नम्बरों का और आयतों कि नम्बरों कि अददों का जमा आता है 1+1+1+2+3+1+7+1+1+1 = 19• ये सिर्फ देखा जा सकता है अगर सुरेह 9 में हैं 127 आयतें•

[53] सुरेह 9 है (1) ऑड नम्बर वाली, (2) उसकी आयतों का नम्बर है ऑड, (3) उसकी आयतों का नम्बर खत्म होता है अदद "7" से, (4) उसकी आयतों का नम्बर एक प्राईम नम्बर है, और (5) सुरेह नम्बर 3 और 9 से तकसीम होता है• सिर्फ सूरतें जिसके पास है ये खूबियाँ: सुरेह 9 (127 आयतें), और सुरेह 45 (37 आयतें)• सिर्फ अददों को जोड़ें और देखें

9+1+2+7 = 19 और 4+5+3+7 = 19; दोनों सूरतों के लिए टोटल = 19 + 19 = 38•

[54] चलें हम मानें कि सुरेह 9 में हैं 129 आयतें• इस हालत में हमारे पास होंगी सिर्फ दो सूरतें पूरी कुरान में जिनके नम्बर शुरू होते हैं 9 से, और उनकी आयतों के नम्बर 9 से खत्म होते हैं; सुरेह 9 (129 आयतें) और सुरेह 96 (19 आयतें)• जैसा टेबल 33 में तफसील किया गया है, बड़ा टोटल सुरेह नम्बर का, साथ आयतों के नम्बर, साथ आयत नम्बरों का जमा है 8828, 19 का एक ज़रप नहीं•

टेबल 33: सूरतें जिनके नम्बर "9" से शुरू होते हैं और उनके आयत नम्बर "9" से खत्म होते हैं •

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत #ों का जमा	टोटल
9	129?	8385	8523
96	19	190	305
105	148	8575	8828
(एक 19 का ज़रप नहीं)			

चलें अब हम झूठी आयतों (128 और 129) को निकालें सुरेह 9 से, और दोहरायें उन्हीं हिसाबों को• इस दुरूस्ती का नतीजा टेबल 34 में दिखाया गया है• बड़ा टोटल बन जाता है 8569, 19x451•

[55] चलें हम मानें कि सुरेह 9 में हैं 129 आयतें• इन अददों का टोटल है 9+1+2+9=21• चलें हम सारी सूरतों कि तरफ देखें जहाँ उनकी आयतों के नम्बर कि अददें जुड़कर 21 होती हैं• वहाँ हैं 7 ऐसी सूरतें: 9, 25, 27, 37, 68, 94, और 97•

टेबल 34: वही डेटा जैसा टेबल 33 में, सुरेह नम्बर 9 में आयतों के नम्बर को सही करने के बाद•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत #ों का जमा	टोटल
9	127	8128	8264
96	19	190	305
105	146	8318	8569
			(19 x 451)

सुरेह नम्बरों को जोड़ते हुए, साथ हर सुरेह में आयतों का नम्बर, साथ आयत नम्बरों का जमा, बड़ा टोटल आता है 34744 को, 19 का एक ज़रप नहीं (टेबल 35)•

अव, चलें हम इस्तेमाल करें सुरेह 9 में आयतों के सही नम्बर को, 127, और दोहराएं वही हिसाबों को जैसा टेबल 35 में है• ये सबब बनता है बड़ा टोटल 34485 बनने का, या 19x1815• देखें टेबल 36•

टेबल 35: सुरेह जिनकि सुरेह नम्बरों कि अददें और आयत नम्बरें जमा होते हैं 21 को, मानते हुए कि सुरेह 9 में हैं 129 आयतें•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत #ों का जमा	टोटल
9	129?	8385	8523
25	77	3003	3105
27	93	4371	4491
37	182	16653	16872
68	52	1378	1498
94	8	36	138
97	5	15	117
357	546	33841	34744
			(19 से ज़रप नही होतां)

[56] आखरी बार के लिए, चलें हम मानें कि सुरेह 9 में हैं 129 आयतें• हमारे पास यहाँ हैं एक सुरेह जो (1) ऑड नम्बर वाली सुरेह है, (2) उसका नम्बर 3 से तकसीम होता है, (3) आयतों का नम्बर, 129, भी 3 से तकसीम होता है, और (4) आयतों का नम्बर अदद "9" से खत्म होता है• वहाँ है सिर्फ एक सुरेह जिसके पास है ये खूबियाँ: सुरेह 15 तकसीम होती है 3 से, उसकी आयतों का नम्बर है 99, जो 3 से तकसीम होता है और अदद

"9" से खत्म होता है• अगर सुरेह 9 में हाती 129 आयतें, और हम जोड़ते सुरेह और आयत नम्बरों को इन दो सूरतों के लिए, हम पहुँचते नीचे बताए गए नतीजे को: 9 + 121 + 15 + 99 = 252 – 19 का एक ज़रप नहीं•

टेबल 36: टेबल 35 के हिसाबें, सुरेह 9 में आयतों को सही करने के बाद•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत #ों का जमा	टोटल
9	127	8128	8264
25	77	3003	3105
27	93	4371	4491
37	182	16653	16872
68	52	1378	1498
94	8	36	138
97	5	15	117
357	544	33584	34485 (19x1815)

अगर हम फेक दें झूठा नम्बर 129, हमारे पास एक सुरेह है कुरान में जिसका नम्बर है ऑड, और उसकि आयतों का नम्बर होता है तकसीम 3 से और होता है खत्म अदद 9 से — सुरेह 15• अब हमारे पास है नीचे दिखाया गया नतीजा:

15 + 99 = 114 = 19x6.

[57] अभी कुछ वक्त से, हम नम्बरों के साथ वहस कर रहे थे• चलें अब हम देखें खास लफ्ज़ों और हुरूफों कि तरफ जो झूठे दुखूलों 9:128-129 में वाकै होते हैं•

आखरी जुमला 9:127 में बयान करता है काफिरों को "ला यफकहून" (वो नहीं समझते) जैसा• इसतरह, आखरी हुरूफ सुरेह 9 में हैं "न" (नून)•

झूठ गढ़ने वालों के मुताबिक, आखरी आयत है 129, और आखरी हुरूफ है "म" (मीम), चुँकि आखरी झूठा लफ्ज़ है "अज़ीम•"

चलें अब हम देखें हर सुरेह में पहली हुरूफ और आखरी हुरूफ कि तरफ कुरान कि शुरूआत से सुरेह 9 तक, और हिसाब करें उनकी जिमेटरिकल (अददी) वेल्युएं• टेबल 37 दिखाता है कि आखरी सही हुरूफ सुरेह 9 में "न" होना चाहिए "म" नहीं•

टेबल 37: जिमेटरिकल वेल्यु पहली और आखरी हुरूफों कि हर सुरेह कि कुरान कि शुरूआत से सुरेह 9 तक•

सुरेह नं•	पहली अदद	आखरी अदद	टोटल
1	ब =2	न =50	52
2	अ =1	न =50	51
3	अ =1	न =50	51
4	य =10	म =40	50
5	य =10	र =200	210
6	अ =1	म =40	41
7	अ =1	न =50	51
8	य =10	म =40	50
9	ब =2	न =50	52
	38 (19x2)	570 (19x30)	608 (19x32)

[58] मस्जिद टुसॉन कि बहन एहसान रमदान (सुज़ान मामोदिसीन) ने गिनती किया सारी सूरतों को कुरान में जो खत्म होते हैं हुरूफ "न" (नून) से, आखरी हुरूफ सुरेह 9 में•

उसने पता किया कि 43 सूरतें खत्म होती हैं वही हुरूफ से जैसे सुरेह 9 (न) — सूरतें 1, 2, 3, 7, 9, 10, 11, 12, 15, 16, 21, 23, 26, 27, 28, 29, 30, 32, 36, 37, 38, 39, 40, 43, 44, 46, 49, 51, 58, 61, 62, 63, 66, 67, 68, 70, 77, 81, 83, 84, 95, 107, और 109• बस जोड़ें सुरेह नम्बरों को + सूरतों के नम्बर जो खत्म होते हैं "न" से, और आप पाते हैं:

1919.

इसलिए, एक बार फिर साबित होता है आखरी हुरूफ सुरेह 9 में "न," है "म" नहीं•

[59] चलें अब देखें एहम जुमला "**ला इलाहा इल्ला हू**" (कोई खुदा नहीं सिवाए उनके) कि तरफ• ये जुमला वाकै होता है झूठे दुखूल 9:129 में•

ये बहुत खास जुमला वाकै होता है 19 सूरतों में 29 बार (टेबल 38)• 19 सूरतों के सुरेह नम्बरों को जोड़ते हुए, साथ आयत नम्बरें जहाँ जुमला "**ला इलाहा इल्ला हू**" वाकै होता है, साथ इस एहम जुमले के वाकेयात का नम्बर, बड़ा टोटल आता है 2128 को, या 19x112• ये ज़बरदस्त नतीजा इस हकीकत पर बुनियाद है कि 9:128-129 कुरान का हिस्सा नहीं हैं•

ज़ाहिर है, अगर 9:129 शामिल किया गया होता, पहला खम्भा इस्लाम का, एहम जुमला "**ला इलाहा इल्ला हू**," मुताबिक नहीं होता रियाज़ी कोड के साथ•

[60] पहला वाकेया "**ला इलाहा इल्ला हू**" का है 2:163 में, और आखरी वाकेया है 73:9 में• अगर हम जोड़ें सुरेह नम्बर को, साथ आयतों के नम्बर, साथ आयत नम्बरों का जमा पहला वाकेया से आखरी वाकेया तक, बड़ा टोटल आता है 316502, या 19x16658•

*टेबल 38: लिस्ट सारे वाकेयात एहम जुमला "**ला इलाहा इल्ला हू**" (कोई दूसरा खुदा नहीं सिवाए उनके) का, 9:129 निकालने के बाद•*

नं•	सुरेह नं•	आयतें एहम जुमले के साथ	एहम जुमले कि अकसरियत
1	2	163, 255	2
2	3	2, 6, 18, 18	4
3	4	87	1
4	6	102, 106	2
5	7	158	1
6	9	31	1
7	11	14	1
8	13	30	1
9	20	8, 98	2
10	23	116	1
11	27	26	1
12	28	70, 88	2
13	35	3	1
14	39	6	1
15	40	3, 62, 65	3
16	44	8	1
17	59	22, 23	2
18	64	13	1
19	73	9	1
	507	1592	29
507 + 1592 + 29 = 2128 = 19x112			

टेबल 39 पेश करता है डेटा तफसील में• कुदरतन, अगर "**ला इलाहा इल्ला हू**" झूठी आयत 129 कि शामिल की गई होती, ये कुदरत गायब हो जाती•

[61] जुमला "**ला इलाहा इल्ला हू**" सुरेह 9 कि गायब बिस्मिल्लाह और सुरेह 27 कि ज़ाएद बिस्मिल्लाह के दरमियान 7 बार वाकै होता है, 9;31, 11:14, 13:30, 20:28, 20:98, 23:116,और 27:26 में• 7 आयतों के नम्बरों को जमा करते हुए, हम पाते हैं 323, या 19x17• तफसील में डेटा टेबल 40 में दिखाया गया है•

*टेवल 39: सारी सूरतें और आयतें **"ला इलाहा इल्ला हू"** के पहले वाकै होने से आखरी वाकै तक•*

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत # ों का जमा	टोटल
2	123 (286-163)	27675	27800
3	200	20100	20303
.	.	.	.
9	127	8128	8264
.	.	.	.
72	28	406	506
73	9	45	127
2700	5312	308490	316502 (19x16658)

*टेवल 40: **"ला इलाहा इल्ला हू"** जुमले का वाकेयात गायव विस्मिल्लाह से ज़ाएद विस्मिल्लाह तक•*

सुरेह नं•	आयत नम्बरें जहाँ जुमला वाकै होता है
9	31
11	14
13	30
20	8
20	98
23	116
27	26
	323 (19x17)

अगर 9:129 कुरान का हिस्सा होता, टेवल 40 में होता: 323+129 = 452, एक 19 का ज़रप नहीं• अल्लाह ठुकराते हैं जो मुनाफिकीन कहते हैं, अगर वो सच्च ही क्यों न हो (63:1)

सबसे बड़ा कुरानी मौजेज़ा

[62] भाई अब्दुल्लाह अरिक ने जो पता लगाया है मैं जिसे समझता हूँ है सबसे बड़ा कुरानी मौजेज़ा• ये हैरतअंगेज़ कुदरत अटल तौर पर सदाकत पेश करता है हर एक आयत का कुरान में — हर सुरेह में आयतों का नम्बर, और नम्बरें दी गई हर एक आयत को कुरान में — बेनकाब करते हुए और ठुकराते हुए झूठे दुखूलों को, 9:128-29• इस बड़े मौजज़े का गवाह होने के लिए, देखें पेज 397• कुरान में हर आयत का नम्बर शुरू से आखीर तक सिलसिलेवार डालते हुए, साथ हर सुरेह में आयतों के नम्बर हर सुरेह में आयत नम्बरों के आगे, आखरी नम्बर में है 12692 अददें (19x668), और नम्बर खुद भी 19 का एक ज़रप है• अगर सुरेह 9 के लिए आयतों का गलत नम्बर — 129 इस्तेमाल किया गया होता बजाए 127 के — अददों का नम्बर ही नहीं, बल्कि खुद नम्बर भी 19 से तकसीम नहीं होता•

[63] चुँकि इस अपेन्डिक्स का मौजू है सुरेह 9 और उसकी सही आयतों का नम्बर, ये काबिले गौर है कि अगर हम लिखें सुरेह का नम्बर, 9, बाद उसके सही आयतों का नम्बर, 127, उसके बाद सारी आयतों कि नम्बरें 1 से 127 तक, हासिल हुआ लम्बा नम्बर है 19 का एक ज़रप• ज़रूरी नहीं कहना, अगर आयतों का गलत नम्बर इस्तेमाल किया जाता है, यानि, 129 बजाए 127 के, ये काबिले गौर मौजेज़ा गायब हो जाता:

9 127 1 2 3 4 5 …. 122 123 124 125 126 127.
सुरेह 9 में टोटल आयतों के नम्बर के बाद है सुरेह में हर आयत कि नम्बरें 1 से 127• हासिल हुआ लम्बा नम्बर है 19 का एक ज़रप•

[64] सुरेह 9 में आयतों का नम्बर, 127, है एक ऑड नम्बर• झूठ गढ़ने वालोंने जोड़ा दो झूठी आयतें, और इसने किया आयतों का नम्बर 129, जो भी है एक ऑड नम्बर• मि• अरिक ने इस्तेमाल किया वही कम्प्युटर प्रोग्राम जो उसने तैयार किया ऊपर आयटम 62 के लिए कुरान में सारी ऑड नम्बर वाली आयतों को जाँचने के लिए• इसतरह, हर सुरेह में आयतों का नम्बर लिखा गया था, बाद उसके सिर्फ उस सुरेह में हर ऑड नम्बर वाली आयतों कि आखरी अदद• सुरेह 1 कि नुमाइंदगी की गई थी 71357 नम्बर से• सुरेह 2 कि नुमाइंदगी की गई थी 28613579…..5 नम्बर से, और इसतरह आखरी सुरेह तक• नतीजा है एक लम्बा नम्बर, 3371 अददों के साथ, जो 19 से तकसीम होता है• ज़ाहिर है, सुरेह 9 कि नुमाइंदगी कि गई थी 12713579……7 नम्बर से:

7 1 3 5 7 286 1 3 5 … 3 5 …….5 1 3 5 6 1 3 5.
हर सुरेह में आयतों के नम्बर के बाद है आखरी अदद हर ऑड नम्बर वाली आयत का• हासिल हुआ लम्बा नम्बर, 3371 अददों का, है 19 का एक ज़रप•

[65] चुँकि सुरेह 9 एक गैर इनीशियल वाली सुरेह है, मि• अरिक ने लगाया वही कम्पयुटर प्रोग्राम सारी 85 गैर इनीशियल वाली सूरतों के लिए• हर 85 सूरतों में हर आयत का नम्बर लिखा गया था, बगैर आयतों का नम्बर सुरेह में• इसतरह, सुरेह 1 कि नुमाइंदगी कि गई थी नम्बर 1234567 से, 71234567 से नहीं• ये किया गया था सारी गैर इनीशियल वाली सूरतों के साथ• हासिल हुए नम्बर में है 6635 अददें, और है 19 का एक ज़रप• ये ज़बरदस्त मौजेज़ा तबाह हो जाता अगर हम आयतों का गलत नम्बर इस्तेमाल करते सुरेह 9 के लिए, जो है, 129 बाजाए 127 के•

अल्लाह के वादे का रसूल
पहले से मुकर्रर किए गए थे कुरान को पाक करने के लिए

[66] आखिर कार, कुरान के कादिरे मुतलक मुसन्नफ के पेश आगाही का एक गहरी दलालत में, वो रियाज़ी तौर पर कोड किया गया है कि "जो शक्स पहले से मुकर्रर किया गया था साबित करने के लिए कि सुरेह 9 में हैं 127 आयतें है रशाद खलीफा, अल्लाह के वादे का रसूल" (देखें अपेन्डिक्स 2)• यहाँ पेश किया गया आयटम है एक और उन कई सबूतों में से एक; उसे चुना गया है इस अपेन्डिक्स से ताल्लुक होने के वजह से•

लफ्ज़ "रशाद" कि जिमेटरिकल वेल्यु, जैसा कुरान (40:29, 38) में लिखा गया है 505 (र=200, श=300, अ=1, और द=4)• लफ्ज़ "खलीफा" कि जिमेटरिकल वेल्यु, जैसा कुरान (38:26) में लिखा गया है 725 (ख=600, ल=30, या=10, और फ=80, ह=5)• लिखते हुए वेल्यु "रशाद" कि, बाद उसके वेल्यु "खलीफा" कि, बाद उसके सुरेह 9 का नम्बर, बाद उसके इस सुरेह में आयतों का सही नम्बर, नतीजा है 5057259127• ये नम्बर 19 का एक ज़रप है; ये बराबर है 19 x 266171533 के•

[67] आयतों का नम्बर 3:81 से, जहाँ अल्लाह के वादे के रसूल कि पेशीनगोई कि गई है, 9:127 तक, सुरेह 9 का खत्म, है 988 (19x52)• टेबल 41•

[68] आयत नम्बरों का जमा 3:81 से 9:127 तक भी है एक ज़रप 19 का (टेबल 41)•

टेबल 41: 3:81 से सुरेह 9 के आखिर तक आयतों कि तादाद•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत #ों का जमा
3	119	16860
4	176	15576
5	120	7260
6	165	13695
7	206	21321
8	75	2850
9	127	8128
	988	85690
	(19x52)	(19x4510)

[69] आयत 3:78 में, अल्लाह के वादे का रसूल का ऐलान करते हुए सिर्फ 3 आयतें पहले, लफ्ज़ "अल्लाह" नम्बर 361 (19x19) वाके होता है• ये आयत (3:78) हमें इत्तेला करती है कि कुछ झूठ गढ़ने वाले "दाखिल करेंगे कुरान में, फिर दावा करेंगे कि वो कुरान का हिस्सा है; वो अल्लाह को झूठ मनसूब करते हैं, जानबूझ कर•"

[70] लफ्ज़ "अल्लाह" वाके होता है 912 बार (19x48) आयत 3:78 से, 9:127, तक जो झूठ गढ़ने वालों को बेनकाब करता है•

टेबल 42: वाकेया लफ्ज़ "अल्लाह" का 3:78 से सुरेह 9 कि आखीर तक•

सुरेह नम्बर•	"अल्लाह" की अकसरियत
3	132
4	229
5	147
6	87
7	61
8	88
9	168
	912
	(19x48)

[71] हुरूफों का नम्बर, साथ लफ्ज़ों का नम्बर 3:78 में और झूठी आयतों 9:128-129 में, देती है वही टोटल 143• आयत 3:78 में हैं 27 लफ्ज़ें और 116 हुरूफें, और 9:128-129 में हैं 115 हुरूफें और 28 लफ्ज़ें•

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُونَ أَلْسِنَتَهُم بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ
هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ {78}

हम क्या कह सकते हैं ?

ज़बरदस्त जिस्मानी सबूत मुहय्या किया गया कादिरे मुतलक कि तरफ से उनके पैगाम कि हिफाज़त और तसदीक करने के लिए नहीं छोड़ता कोई शक कि; (1) कोई बिगाड़ किसी किस्म का दाखिल नहीं हो सकता कुरान में, (2) आयतें 9:128-129 कुरान का हिस्सा नहीं हैं, और (3) कुरान में हर जुज़ू इन्सानी काबिलियतों के कहीं बाहर रियाज़ी तौर पर ढाला गया है — सूरतों का नम्बर, आयतों का नम्बर, नम्बरें मुकर्रर किया जाना सूरतों और आयतों का, एहम कलमों कि वाकै होने कि अकसरियत, लफ्ज़ों का नम्बर, हुरूफों का नम्बर, और अनोखा और अकसर गैर मामूली हिज्जे कुछ लफ्ज़ों के•

ये अपेन्डिक्स दर्ज करता है एक गहरा मौजेज़ा अपने खुद के हक में• कुशादाह और बिल्कुल जबरदस्त जैसा के वो है, वो गालिब नहीं होता या यहाँ तक के बराबरी भी नहीं करता कुरान के पूरे रियाज़ी मौजज़े का जो अपेन्डिक्स एक में तफसील किया गया है• ये महेज़ तसदीक करता है इस हकीकत कि के कुरान के मुसन्नफ कादिरे मुतलक ने जानबूझकर इजाज़त दिया है बेअदबी वाला दाखला करना दो आयतों का सुरेह 9 में ताके:

(1) बयान करें बहुत ज़रूरी काम कुरान के रियाज़ी ढ़ाचे का•
(2) साबित करें नामुमकिन होना कुरान के साथ छेड़कानी•
(3) पूरा करें अल्लाह का वादा ईमान वालों को पहचानने और मुनाफिकीन को बेनकाब करने के लिए•

अल्लाह ने उसे क्यों इजाज़त दिया 1400 सालों के लिए ? ?

बड़े पैमाने पर बिगाड़ इस्लाम का नबी मुहम्मद कि मौत के कुछ ही वक्त बाद, ज़ाहिर है अल्लाह ने पूरा किया है उनका वादा 47:38 में• एक रब्बानी फरमान जारी किया सुरेह 47 में, जिसका नाम दिया गया है "मुहम्मद," आयत 38 (19x2), मुकर्रर करता है कि "अगर अरबी लोग नाकामयाब होते हैं कुरान को बरकरार रखने के लिए, अल्लाह बेदखल कर देंगे उनको उनकी रहमत से, और बदल देंगे दूसरे लोगों को उनकी जगह में•"

जब अरबियों ने बिगाड़ा कुरान को नबी कि मौत के कुछ सालों बाद, और मिटा दिया नबी के कुम्बे को इस अमल में, उन्होंने हासिल किया 47:38 का अल्लाह का वादा, और इसके बाद कुरान; एक सच्चा कुरान को अपने पास रखने के हकदार नहीं रहे• ना काबिले रदद सबूत है कि अरबियों ने कुरान को ठुकरा दिया है बड़े पैमाने पर•

मिसाल के लिए, आज कि तारीख (1989) में एक भी मस्जिद नहीं हैं मुस्लिम कहे जाने वाले मुमालिक में जो इस एहम फरमान को बरकरार रखते हैं: "मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं; तुम्हे चाहिए नहीं पुकारो किसी और को साथ अल्लाह के" (72:18)•

नमाज़ का बुलावा (आज़ान) और नमाज़ खुद नहीं रही मनसूब सिर्फ अल्लाह को; मुसतकिल तौर पर मुहम्मद का नाम लिया जाता है अल्लाह के नाम के साथ•

"इस्लाम का पहला खम्भा" साफ तौर पर कुरान में बयान किया गया है, 3:18 और 47:19, और फरमान हुआ है उनके लफ्जों का होना: "**ला इलाहा इल्ला अल्लाह**" (कोई और खुदा नहीं सिवाए अल्लाह के)• लेकिन मुसलमानों को, यहाँ तक के पहली सदी AH से, नहीं चाहिए अल्लाह अगर उनके नाम के साथ मुहम्मद का नाम नहीं लिया जाता है• ये आज कि तारीख में आसानी से साबित किया जा सकता है किसी मस्जिद में जाते हुए और ऐलान करते हुए: "**ला इलाहा इल्ला अल्लाह**;" ये असल में आजके मुसलमानों को तैश में ला देगा• ये बरताव कुरान में, 39:45 में दर्ज किया गया है• इस के सिवाए, मेरी खुद कि तलाश ने मुझे यकीन दिला दिया है के रवायती मुसलमानों को **अल्लाह कि तरफ से रोका गया है** कुरानी, रब्बानी तौर पर बयान कि गई शहादत: ***"अश—हदू अल्ला इलाहा इल्ला अल्लाह"*** कहने से• वो ये शहादत कभी नहीं कह सकते हैं (मुहम्मद का नाम लिए बगैर)• आप खुद उन्हें आज़माएं• बिगाड़ा गया

इस्लाम का पहला खम्भा, **ला इलाहा इल्ला अल्लाह, मुहम्मद रसूल अल्लाह,** मुतविक नहीं है अल्लाह के फरमान के साथ जो आया मुहम्मद के ज़रिए हमारे पास (देखें अपेन्डिक्स 13)•

कई और दूसरे एहकामों कि भी खिलाफ वर्ज़ी हुई है इस मुहम्मदी *शहादत* के ज़रिए• मिसाल के लिए, कुरान मुसलसल हमें ताकीद करता है किसी किस्म का फरक करने से अल्लाह के रसूलों के दरमियान (2:136, 285; 3:84)• बिगड़ी हुई शहादत ज़्यादा तमीज़ देता है मुहम्मद को, उनके इरादे के खिलाफ• कुरान के मुसलसल ज़ोर देने के बावजूद कि वो है "कामिल, मुकम्मल, और पूरी तरह तफसील में" (6:19, 38 और 114), मुसलमानों ने उनके खालिक को मानने से इन्कार किया है; वो बरकरार रखते हैं ऐसी ऊट पटांग और बेहुदी बुनियादें जैसे *हदीस* और *सुन्नत*• ये एक राय से बगावत अल्लाह और उनके रसूल के खिलाफ, और बड़े पैमाने पर पलटना दमकदार बुतपरस्ती कि तरफ — नबीयों और वलीयों को बुत बनाते हुए — ने बुलाया पूरा करने के लिए अल्लाह का वादा 47:38 में•

नाकाबिले रद रब्बानी सबूत जो यहाँ पेश किया गया है, और अपेन्डिक्स 1, 2, और 26 के नज़रिए में, नीचे दी गई आयतों कि सही कद्र कर सकता है कोई भी•

यकीनन, हमने नाज़िल किया है ये पैगाम,
और यकीनन, हम उसे महफूज़ रखेंगे• [15:9]

कहो, "अगर सारे इन्सानें, और सारे जिनें,
एक गिरोह में हो जाएं, ताके पैदा करें कुरान इस जैसी,
वो यकीनन नाकामयाब होंगे, चाके वो कितनी ही मदद
वो एक दूसरे को दें•" [17:88]

काफिरों ने इस पैगाम को ठुकराया
जब वो उनके पास आया, बावजूद इसके कि वो एक गहरी आसमानी किताब है•
कोई झूठ उसमें दाखिल नहीं हो सकता,
इज़ाफे या घटाने से•
इसलिए कि वो एक वही है
सबसे हिकमत, सबसे काबिले तारीफ कि तरफ से• [41:41-42]

अगर हम इस कुरान को नाज़िल करते एक पहाड़ को,
तुम देखते उसे लरज़ते हुए,
रेज़ा रेज़ा होते हुए,
अल्लाह कि एहतराम कि वजह से• [59:21]

मैं कबूल करते हुए शुक्र अदा करता हूँ काबिले कद्र शुमुलियतें महमूद अली अबीब, गतूत अदिसोमा, अबदुल्लाह अरिक, सुज़ान मामोदिसीन, लिसा इस्प्रे, और एदिप युक्सेल का• कुछ हैरत अंगेज़ रियाज़ी हकीकतें पेश किए गए इस अपेन्डिक्स में दरयाफ्त किए गए थे इन मेहनतकश तलाश करने वालों के ज़रिए मस्जिद टुसॉन में•

****

अपेन्डिक्स 25

खत्म दुनिया का

(अल्लाह हैं) जानने वाले मुस्तकबिल के;
वो इजाज़त नहीं देते किसी को ऐसे इल्म को बेनकाब करने के लिए•
सिर्फ रसूलों के ज़रिए जिन्हें वो चुनते हैं
करते हैं वो नाज़िल मुस्तकबिल और पिछले वाकेआत• [72:27]

ज़िम्मेदारियों में से एक मुझे सुर्पुद किया गया है **अल्लाह** के वादे के रसूल होने कि वजह से बेनकाब करना दुनिया का खत्म (पेज 415)• हम सीखते हैं 18:7-8 और 69:13-15 से के ये दुनिया खत्म हो जाएगी• मौजूदा आसमानें और ज़मीन बदल दिये जाएंगे एक नई ज़मीन और नए आसमानों से (14:48)•

निशानियाँ दुनिया के खत्म होने के करीब होने का

कुरान हमें अता करता है कई निशानियाँ, और कहता है के बताया गया है तरीका बेनकााब करना दुनिया के खत्म होने का (47:18)• निशानियाँ दी गई कुरान में शामिल करती हैं:

1. **चाँद का अलग होना**: ये अब से पहले हो चुका है जून 1969 में जब हम उतरे चाँद पर और लाए वापस चाँद कि चट्टानें• लोग ज़मीन पर अब जा सकते हैं कई म्युज़ियमों, कॉलेजों और आसमान कि खोज करने वाले इदारों में चाँद के टुकडों को देखने के लिए•

2. **खोज करना 19-पर बना कुरान का रियाज़ी कोड** (74:30-37): पुरा हुआ 1969-1974 में•

3. **वो मखलूक** (27:82): “बनाया गया ज़मीन से, उसने आगाह किया लोगों को कि वो गाफिल रहें हैं उनके **खालिक** से•” वो मखलूक, बनाया गया ज़मीन से, बेशक नुमाया हुआ और मद्दगार था कुरान के रियाज़ी कोड को बेनकाब करने में, और ऐलान किया कि दुनिया ने अल्लाह के पैग़ाम को नज़रअंदाज़ किया; वो मखलूक है कम्प्युटर• ध्यान दें कि अददें जो बनाते हैं 27:82 को जुड़ते हैं 19 को•

4. **अल्लाह के वादे के रसूल का नुमाया होना** (3:81): जैसा तफसील में बयान किया गया है अपेन्डिक्स **2** में, एक मज़बूत करने वाला रसूल, पेशीनगोई किया गया कुरान में, आता है सारे नबियों के आसमानी किताबों को पहुँचाने के बाद, पाक करने और एक करने के लिए• ये पेशीनगोई पूरी हुई रमज़ान 1408 में•

5. **वो धुआँ** (44:10): वाकै होता है जब **अल्लाह** के वादे का रसूल ने पहुंचा दिया एक किया गया पैगाम और ऐलान किया कि फरमानवरदारी (इस्लाम) जैसा सिर्फ एक मज़हब कबूल किया गया **अल्लाह** कि तरफ से•

6. **याजूज और माजूज**: वो दोबारा नुमाया होते हैं, **अल्लाह** के मनसूबे के मुताबिक में, साल 1700 हिजरी में (2271 AD)• याजूज और माजूज बयान किए गए हैं 18:94 और 21:96 में• अगर आप गिनें आयतों को 18:94 से सुरेह 18 के आखीर तक, आप पाएंगे17• अगर आप गिनें आयतों को 21:96 से सुरेह 21 के आखीर तक, आप फिर भी उन्हें 17 पाऐंगे• ये कुरान कि निशानी है कि याजूज और माजूज दोबारा नुमाया होंगे 1700 हिजरी में•

वो नहीं रहेगा छिपा हुआ [20:15]

आयत 15 सुरेह 20 कि हमें इत्तेला करती है के दुनिया का खत्म होना नाज़िल किया जाएगा **अल्लाह** कि तरफ से दुनिया के खत्म होने से पहले, और सुरेह 15, आयत 87, देती है वक्त उस वाकेया के लिए:

हमने तुम्हें सात जोड़े दिए, और एक ज़बरदस्त कुरान• [15:87]

सात जोड़े हैं कुरान के 14 इनीशियलें• कुरान के इन गहरे सुतूनों के मौजेज़े का टोटल जिमेटरिकल वेल्यु इशारा करता है दुनिया के खत्म होने का साल• ये काबिले गौर है कि आयत 85 सुरेह 15 कि कहती है: "दुनिया का खत्म होना यकीनन गुज़र जाएगा•" इस के बाद कि आयत, 15:86, कहती है हमें के **अल्लाह** खालिक हैं इस दुनिया के, और, बेशक, वो जानते हैं वो कब खत्म होगी• उसके बाद कि आयत 15:87, हमें कहती है कब दुनिया खत्म होगी• जैसा दिखाया गया टेबल 1 में, कुरान के इनीशियलें "सात जोड़ों" के जिमेटरिकल वेल्यु का टोटल 1709 है (देखें अपेन्डिक्स 1 का टेबल 1 भी)• 15:87 के मुताबिक, दुनिया बचेगी रहेगी 1709 चाँद के सालों तक उस वक्त से जब ये पेशीनगोई बयान की गई है कुरान में• इस के मायने हैं के दुनिया खत्म होगी सन हिजरी 1710 में• ये नम्बर 19 का एक ज़रप है; 1710 = 19x90

इस खबर का बेनकाब होना पेश आया सन 1400 हिजरी में, पेशीनगोई किया गया दुनिया के खत्म होने के 309 सालों पहले (1709-1400=309)• नम्बर 309 एक कुरानी नम्बर है (18:25), और जुड़ा है दुनिया के खत्म होने से (18:21)• अजीब तरीका 309 लिखने का 18:25 में, "तीन सौ साल, बढ़ाए गए नौ से," इशारा करता है के 309 चाँद के साल हैं• सूरज के 300 सालों और चाँद के 300 सालों के दरमियान 9 सालों का फरक है•

इस खोज का साल, 1400 हिजरी, मेल खाता है 1980 AD के साथ, 1980 और सूरज के 300 सालों का जमा है 2280, एक ज़रप 19 का भी, 19x120• इस तरह दुनिया खत्म होती है 1710 हिजरी में, 19x90, जो मेल खाता है 2280 AD के साथ, 19x120• ना मानने वालों के लिए जो इन ताकतवर कुरानी सबूतों को कबूल नहीं करते, दुनिया खत्म होगी अचानक (6:31, 44, 47; 7:95, 187; 12:107; 21:40, 22:55; 26:202; 29:53; 39:55; 43:66; और 47:18)•

टेबल 1: कुरानी इनीशियलों के "सात जोड़े" का टोटल जिमेटरिकल वेल्यु •

	कुरानी इनीशियल	जिमेटरिकल वेल्यु
1.	कॅ	100
2.	न	50
3.	सा (साद)	90
4.	हा•म•	48
5.	य•स•	70
6.	त•ह•	14
7.	त•स•	69
8.	अ•ल•म•	71
9.	अ•ल•र•	231
10.	त•स•म•	109
11.	ऐ•स• कॅ•	230
12.	अ•ल•म•सा•	161
13.	अ•ल•म•र•	271
14.	क•ह•य•ऐ•सा•	195
		1709

हालाँकि *हदीस* मना किया गया है मज़हबी तॉलिमों का एक बुनियाद होने के लिए (अपेन्ड़िक्स 19), वो एक फायदेमन्द ज़रिया हो सकता है तारीख का• हम पता लगा सकते हैं कई खबर तारीखी वाकेयात के बारे में और मकामि रस्मों और रिवाजों के बारे में इस्लाम के शुरूवाती सदियों के दौरान• हदीस कि किताबें इशारा करतीं हैं कि कुरानी इनीशियलें माने जाते थे मुस्लिम *उम्मत* कि मुद्दत पता लगाने के लिए• अल—बदवी कि तरफ से हस्बे मामूल तफसीर हवाला देती है के नीचे दिया गया तारीखी वाकया है एक मुमकिन बयान कुरानी इनीशियलों का• यही वाकया तफसील किया गया है अल सुयूति कि इत्कान में, पहली छपाई, 1318 हिजरी, किताब 2, पेज 10:

मदीने के यहूदीयें नबी के पास गए और कहा, "तुम्हारा कुरान इनीशियल किया गया है अ•ल•म के साथ•, और ये इनीशियलें तुम्हारे मज़हब कि मुद्दत बयान करते हैं• चुँकि 'अ' है 1, 'ल' है 30, और 'म' है 40, इसके मायने हैं कि तुम्हारा मज़हब ज़िन्दा रहेगा सिर्फ 71 सालों तक•" मुहम्मद ने कहा, "हमारे पास अ•ल•म•स• भी हैं•" उन्होंने कहा, "'अ' 1 है, 'ल' 30 है, 'म' 40 है, और 'स' है 90• ये जुड़ते हैं 161 को• क्या तुम्हारे पास और कुछ है?" नबी ने कहा, "हाँ, अ•ल•म•र•" उन्होंने कहा, "ये लम्बा और वज़नी है; 'अ' 1 है, 'ल' 30 है, 'म' 40 है, और 'र' 200 है, टोटल बनाते हैं 271•" उन्होंने आखिरकार हार मान ली, कहते हुए, " हम नहीं जानते कितने ऐसे इनीशियलें उसे दिये गये थे!"

[अल सुयूति का मशहूर हवाला इत्कान]

इसके बावजूद के ये बयान मशहूर है, कई आलिमों ने हिचकिचाया है कबूल करने के लिए वेचूक जोड़ कुरानी इनीशियलों और दुनिया के खत्म होने के बीच• वो अपने आप को नहीं ला पाए इस मौजू पर बहस करने के लिए फकत इस वजह से के ये हिसाब दुनिया के खत्म होने, और इंसाफ को, बनाता है एक हकीकत•

****

अपेन्डिक्स 26

इस्लाम के तीन रसूलें

ये अपेन्डिक्स मुहय्या करता है कुरानी रियाज़ी सबूत कि [1] इब्राहीम पहले रसूल थे इस्लाम के, जो है, फरमानबरदारी (22:78), [2] मुहम्मद आसमानी किताब पहुँचाने वाले रसूल थे (47:2), और [3] रशाद पाक करने और जोड़ने वाले रसूल हैं जिन्होंने मज़हब के सच्चे होने का सबूत पहुँचाया (3:81 और अपेन्डिक्स 2)•

जारी रहने वाला और काबिले तसदीक सबूत

टेबल 1: सुरेह और आयतें पहले से आखरी वाकेया तक इब्राहीम का•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	आयत #ों का जमा	टोटल
2	163	33415	33580
3	200	20100	20303
4	176	15576	15756
5	120	7260	7385
-	-	-	-
9	127	8128	8264
-	-	-	-
84	25	325	434
85	22	253	360
86	17	153	256

87	19	190	296
3827	5835	323598	333260 (19x17540)

[1] जैसा अपेन्डिक्स 2 में बताया गया है, “इब्राहीम” कि जिमेटरिकल वेल्यु है 258, “मुहम्मद” कि जिमेटरिकल वेल्यु है 92, “रशाद” कि जिमेटरिकल वेल्यु है 505, और 258+92+505 = 855 = 19x45•

[2] अगर हम शामिल करें “इस्माईल” को जिनकी जिमेटरिकाल वेल्यु है 211 और “इसहाक” जिनकी जिमेटरिकल वेल्यु है 169, हम फिर भी आखीर में पहुँचते हैं एक टोटल जिमेटरिकल वेल्यु 855+211+169 = 1235 = 19x65 को• टोटल जिमेटरिकल वेल्यु तीन रसूलों कि, या पाँच कि, मुआफिक नहीं होती कुरान के 19-पर बुनियाद रियाज़ी कोड के साथ अगर इन में से एक इब्राहीम, मुहम्मद, या रशाद शामिल नहीं किए जाते•

टेबल 2: सूरतें और वाकेयात इब्राहीम, मुहम्मद, और रशदा के•

सुरेह नं•	वाकेयात का नम्बर		
	इब्राहीम	मुहम्मद	रशदा
2	15	-	2
3	7	1	-
4	4	-	1
6	4	-	-
7	-	-	1
9	3	-	-
11	4	-	3
12	2	-	-
14	1	-	-
15	1	-	-
16	2	-	-
18	-	-	4
19	3	-	-
21	4	-	1
22	3	-	-
26	1	-	-
29	2	-	-
33	1	1	-
37	3	-	-
38	1	-	-
40	-	-	2
42	1	-	-
43	1	-	-
47	-	1	-

48	-	1	-
49	-	-	1
51	1	-	-
53	1	-	-
57	1	-	-
60	2	-	-
72	-	-	4
87	1	-	-
991	69	4	19

991+69+4+19 = 1083 = 19x19x3

- "रशदा" वाकै होता है 19 बार•
- टोटल है 19x19x3, 3 रसूलें•

[3] पहली और आखरी वकेयात इब्राहीम कि हैं 2:124 और 87:19 में• जोड़ते हुए सुरेह नम्बरों को आयतों के नम्बर के साथ, साथ आयत नम्बरों का जमा पहला वाकेया से आखरी वाकेया तक, बड़ा टोटल है 333260, 19x17540 (टेबल 1)•

[4] जैसा अपेन्डिक्स 2 में बताया गया है, नाम अल्लाह के वादे का रसूल का ताररूफ किया गया है कम्प्युटर ज़माने को रियाज़ी कोड दिए जाने के ज़रिए• अगर कुरान में नाम मखसूस किया गया होता, जैसा पिछले रसूलों के साथ वाकै हुआ है, मिलयनों लोगोंने अपने बच्चों का नाम "रशाद खलीफा" रखा होता• इस तरह, बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" कुरान में 19 बार बयान किया गया है (अपेन्डिक्स 2)•

[5] "इब्राहीम" बयान किये गये हैं 25 सूरतों में, "मुहम्मद" 4 सूरतों में बयान किये गये हैं, और "रशदा" वाकै होते हैं 9 सूरतों में• इन सूरतों का टोटल है 25+4+9 = 38 = 19x2 (कुरान कि लफ्ज़ों कि फेहरिस्त, अब्दुल बकी),

[6] अगर हम जोड़ें सूरतों के नम्बरों को जहाँ इब्राहीम, मुहम्मद, और रशदा वाकै होते हैं, साथ हर सुरेह में वाकेयात का नम्बर, टोटल आता है 1083, 19x19x3 (टेबल 2)•

[7] अगर हम लें सारी सूरतों को जहाँ इब्राहीम, मुहम्मद, और बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" बयान किये गए हैं, और सुरेह नम्बरों को जोड़ें साथ हर सुरेह में पहली आयत का नम्बर जहाँ पर हर तीनों लफ्जें बयान किए गए हैं, टोटल आता है 2793, 19x147 (टेबल 3)•

[8] सारी सुरेह नम्बरों का जमा जहाँ तीन लफ्ज़ें वाकै होते हैं, बगैर दोहराए गए, साथ सारी आयत नम्बरों का जमा, बगैर दोहराए गए, जमा होते हैं 6479, 19x341 को• सूरतें हैं 2, 3, 4, 6, 7, 9, 11, 12, 14, 15, 16, 18, 19, 21, 22, 26, 29, 33, 37, 38, 40, 42, 43, 47, 48, 49, 51, 53, 57, 60, 72, और 87• इन नम्बरों का जमा है 991 (देखें टेबल 3)•

टेबल 3: सूरतें और पहली आयत जहाँ इब्राहीम, मुहम्मद, और रशदा वाकै होते हैं•

सुरेह	पहली वाकेया का नम्बर		
नं•	इब्राहीम	मुहम्मद	रशदा
2	124	-	186
3	33	144	-
4	54	-	6
6	74	-	-
7	-	-	146
9	70	-	-
11	69	-	78

आयतें जहाँ तीन लफ़्ज़ें बयान किए गए हैं, बगैर दोहराए गए, हैं 2, 4, 6, 7, 10, 13, 14, 16, 17, 19, 21, 24, 26, 29, 31, 33, 35, 37, 38, 40, 41, 43 ,45, 46, 51, 54, 58, 60, 62, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 74, 75, 76, 78, 83, 84, 87, 95, 97, 104, 109, 114, 120, 123, 125, 126, 127, 130, 132, 133, 135, 136, 140, 144, 146, 161, 163, 186, 256, 258, और 260• इन नम्बरों का जमा है 5488, और: 5488 + 991 = 6479 = 19x341•

[9] अगर हम जमा करें सुरेह नम्बर को, साथ आयत नम्बरों के, साथ आयतों का नम्बर जहाँ इब्राहीम, मुहम्मद, और रशदा वाकै होते हैं, हम पाते हैं एक बड़ा टोटल जो बराबर होता है 7505, 19x395 के (टेबल 4)•

12	6	-	-
14	35	-	-
15	51	-	-
16	120	-	-
18	-	-	10
19	41	-	-
21	(51)	-	(51)
22	26	-	-
26	69	-	-
29	16	-	-
33	7	40	-
37	83	-	-
38	45	-	-
40	-	-	29
42	13	-	-
43	26	-	-
47	-	2	-
48	-	29	-
49	-	-	7
51	24	-	-
53	37	-	-
57	26	-	-
60	4	-	-
72	-	-	2
87	19	-	-
....	....	....	....
991	1123	215	464

991+1123+215+464 = 2793 = 19x147

* आयत 21:51 दो बार जमा नही किया जा सकता•

टेबल 4: सूरतें, आयतें और वाकेयात "इब्राहीम", "मुहम्मद", और "रशदा" का•

सुरेह नं•	आयतें जहाँ 3 लफ्जें बयान किए गए हैं: इब्राहीम	मुहम्मद	रशदा	आयतों का नं•
2	124,125,126,127 130,132,133,135 136,140,258,260	-	186,256	14
3	33,65,67,68 84,95,97	144	-	8
4	54,125,163	-	6	4
6	74,75,83,161	-	-	4
7	-	-	146	1
9	70,114	-	-	2
11	69,74,75,76	-	78,87,97	7
12	6,38	-	-	2
14	35	-	-	1
15	51	-	-	1
16	120,123	-	-	2
18	-	-	10,17,24,66	4
19	41,46,58	-	-	3
21	51,60,62,69	-	51	5
22	26,43,78	-	-	3
26	69	-	-	1
29	16,31	-	-	2
33	7	40	-	2
37	83,104,109	-	-	3
38	45	-	-	1
40	-	-	29,38	2
42	13	-	-	1
43	26	-	-	1
47	-	2	-	1
48	-	29	-	1
49	-	-	7	1
51	24	-	-	1
53	37	-	-	1
57	26	-	-	1
60	4	-	-	1
72	-	-	2,10,14,21	4
87	19	-	-	1
991	5068	215	1145	86
991+5068+215+1145+86 = 7505 = 19x395				

इस तरह, वो रियाज़ी तौर पर कुरान में कोड किया गया है कि इब्राहीम, मुहम्मद, और रशाद हैं तीन रसूलें इस्लाम (फरमानवरदारी) के•

[10] जैसा टेबल 4 में दिखाया गया है, 19 वाकेयात बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" के हैं 186, 256, 6, 146, 78, 87, 97, 10, 17, 24, 66, 51, 29, 38, 7, 2, 10, 14, और 21 आयतों में• ये है 38 अददें, 19x2•

[11] टेबल 4 दिखाता है कि आयत नम्बरों का जमा जहाँ हम देखते हैं 19 वाकेयात बुनियादी लफ्ज़ "रशदा" का है 1145• ये आयत नम्बरों (1145) का टोटल जोड़ते हुए, नाम "रशाद" कि जिमेटरिकल वेल्यु (505) के साथ, साथ जिमेटरिकल वेल्यु नाम "खलीफा" (725) के, हम पाते हैं 1145+505+725 = 2375, 19x125•

[12] अगर हम लिखें इन नम्बरों को एक दूसरे के आस पास, जो है, आयत नम्बरों का टोटल (1145), बाद उसके जिमेटरिकल वेल्यु नाम "रशाद" कि (505), बाद उसके नाम "खलीफा" कि जिमेटरिकल वेल्यु (725), हम फिर भी पाते हैं एक नम्बर जो है एक 19 का ज़रप: 1145505725 = 19x60289775•

आयत नम्बरों का जमा जहाँ 19 "रशदा" वाकै होता है	= 1145
जिमेटरिकल वेल्यु नाम "रशदा" का...	= 505
जिमेटरिकल वेल्यु नाम "खलीफा" का...	= 725

1145 + 505 + 725 = 2375 = 19x125

1145 505 725 = 1145505725 = 19x60289775

****

अपेन्डिक्स 27

कौन है तुम्हारा अल्लाह ?

ज़्यादातर लोग आग बबूला हो जाते हैं ये सवाल सुनने पर• वो पूछते हैं "क्या मतलब है तुम्हारा, 'कौन है तुम्हारा खुदा?' ". " मेरे खुदा हैं पैदा करने वाले आसमानों और ज़मीन के•" और ज़्यादातर इन लोगों को सदमा पहुँचेगा जानकर कि उनका ऐलान कि उनके खुदा हैं पैदा करने वाले आसमानों और ज़मीन के ज़बानी बात के अलावा कुछ नहीं, और ये कि हकीकत में वो मुकर्रर किए गए हैं जहन्नम के लिए (12:106)•

तुम्हारा खुदा वो है जो तुम्हारे ज़ेहन पर छाया रहे सबसे ज़्यादा वक्त•

तुम्हारा खुदा हो सकता है तुम्हारे बच्चे (7:190), तुम्हारे जोड़े (9:24), तुम्हारा कारोबार (18:35), या तुम्हारी अना (25:43)• इसलिए हम देखते हैं कि सबसे एहम और सबसे ज़्यादा दोहराए जाने वाले एहकामों में से एक है कुरान में:

ऐ ईमानवालो, तुम्हें चाहिए अल्लाह को याद करो बार बार; उनकी बड़ाई करो दिन और रात• [33:41]

इस हुक्म को आदत में डालने के लिए, हमें चाहिए कुछ आदतों को कायम करना जिस के ज़रिए हम ज़मानत दें कि अल्लाह छाए रहें हमारे ज़ेहनों पर किसी और चीज़ों से ज़्यादा• कुरान हमारी मदद करता है ऐसी रूह बचाने वाली आदतों को कायम करने में:

1. राबता कायम करने वाली नमाज़ें *(सलात)*: जो कोई रोज़ाना कि 5 नमाज़ें अदा करते हैं आते हैं दूर तक अल्लाह को याद करते हुए एक एहम हिस्सा उनके जागते हुए घंटों में• *सलात* हमें मदद करता है अल्लाह को याद करना नमाज़ के कुछ मिनटों में हीं नहीं, बलिके सारी उम्मीद के वक्तों में• सुबह 11 बजे, कोई उसके या उसकी घड़ी कि तरफ देख सकता है देखने के लिए दोपहर कि नमाज़ का वक्त हुआ है अभी• ये अमल किसी को अल्लाह के बारे में सोचने का सबब बनता है, और किसी को नफा पहुँचता है उसके मुताबिक (20:14)•

2. <u>अल्लाह को याद करो खाने से पहले</u>: आयत 6:121 हमें ताकीद करती है अल्लाह का नाम लेने के लिए खाने से पहले: "तुम्हे चाहिए न खाओ उससे जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो•"

3. <u>अल्लाह ने चाहा तो</u> (इन्शा अल्लाह): "तुम्हे चाहिए ना कहो, 'मैं ये या वो करूंगा कल,' बगैर कहे, 'अल्लाह ने चाहा तो' (इन्शा अल्लाह)• अगर आप ऐसा करने से भूल जाएं, तो माफी मांगें और कहें, 'मेरे रब्ब मुझे हिदायत दें बेहतर करने के लिए अगली बार•' " [18:24]• यह एक सीधा हुक्म है कि जो हमें पूरा करना चाहिए, चाहे हम किसी के साथ बात कर रहे हों•

4. <u>अल्लाह का तोहफा</u> (माशा अल्लाह): अल्लाह कि हिफाज़त मांगना हमारी चहीती चीज़ों के लिए — हमारी औलाद, हमारी कारें, हमारे घरों, वगैराह — हमें ताकीद किया गया है 18:39 में "माशा अल्लाह" कहने के लिए (यह है अल्लाह का तोहफा)•

5. <u>अल्लाह कि बड़ाई करना दिन और रात</u>: जब हम कोई चीज़ खाते हैं, हमें जानवरों कि तरह नहीं होना चाहिए; हमें चाहिए अल्लाह कि बनावट पर गौर करें खाना जो हम खा रहे हैं — ज़ाएका, हमारा लुत्फ एहसासों कि वजह से जो अल्लाह ने हमें दियें हैं, सही गिलाफ केले या संतरे का, अल्लाह कि तरफ से पैदा किए गए समुन्दरी खानों कि किस्में, वगैराह — और उनकी बड़ाई करें जैसे हम उनकी नियामतों का लुत्फ उठाते हैं• जब हम देखते हैं एक खुबसूरत फूल, या जानवर, या सूरज का डूबना, हमें चाहिए अल्लाह कि बड़ाई करें• हमें हर मुमकिन मौके को कब्ज़ा करना चाहिए अल्लाह कि याद और बड़ाई करने के लिए, ताकि अल्लाह हों हमारे अल्लाह •

6. <u>पहला कलमा</u>: एक आदत बना लो कहने के लिए: "अल्लाह के नाम से, सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले• कोई खुदा नहीं सिवाए अल्लाह के," जिस वक्त आप उठें हर सुबह• अगर आप कायम करें यह अच्छी आदत, यह है वो जो आप कहेंगे जब आप जिलाए जाते हैं•

****

अपेन्डिक्स 28

मुहम्मद ने लिखा अल्लाह कि वहीयों को उनके खुद के हाथ से

पहला नज़ूल था "पढ़ो," और शामिल किया बयान "अल्लाह सिखाते हैं <u>कलम</u> के ज़रिए से" (96:1-4), और दूसरा नुज़ूल था "कलम" (68:1)• कलम का सिर्फ काम है लिखना•

गाफिल मुस्लिम आलिमें कुरान के बाद पहली दो सदियों के नहीं समझ पाये कुरान का दावा उसकी तरह कोई चीज़ पैदा करने का• उन्हें कुरान के रियाज़ी तरतीब का कोई इल्म नहीं था, और वो जानते थे कि कई अदबी माहिरें पैदा कर सकते थे कुरान के बराबर कि टक्कर वाला तरतीब किये गये काम• असल में, ऐसे कई अदबी माहिरों ने ज़रूर दावा किया है पैदा करने कि काबिलियत एक अदबी किताब ऐसी उम्दा जैसे कुरान• सबसे ताज़ा दावा आया एक मशहूर मिस्री कातिब, ताहा हुसैन कि तरफ से•

गाफिल मुसलमान आलिमों ने फिर मुहम्मद को एक अनपढ़ आदमी ऐलान करने का फैसला किया! उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि ये कुरान के गैरमामूली अदबी फज़ीलत को हकीकत में अजूबा बना देगा• लफ्ज़ "उम्मी" था जिसपर उन्होंने ऐतबार किया नबी पर जाहिलियत इनायत करने का• बदनसीबी से उन "आलिमों" के लिए, इस लफ्ज़ के साफ मायनें हैं "आसमानी किताब का न जानने वाला," या एक वो जो किसी आसमानी किताब पर नहीं चलता (तौरैत, इंजील या कुरान) [देखें, 2:78, 3:20, और 75, 62:2]; उसके मायनें "अनपढ़" **नहीं** हैं•

नबी थे एक कामयाब ताजिर• "मुसलमान आलिमों ने" जिन्होंने झूठ गढ़ा अनपढ़पन वाला झूठ भूल गए कि वहाँ नबी के ज़माने में कोई गिनतियाँ नहीं थीं; हुरूफ कि लिखावटों को इस्तेमाल किया जाता था गिनतियों कि तरह• जैसा एक ताजिर हर रोज़ कारोबार करता है गिनतियों के साथ, नबी को ज़रूरी था मालूम होना हुरूफ, एक से लेकर एक-हज़ार तक•

कुरान हमें कहता है कि मुहम्मद ने कुरान लिखा – मुहम्मद के ज़माने वालों का हवाला दिया गया है कहते हुए "ये हैं किस्से माज़ी से जो उसने नीचे लिखा है• वो उसे इमला किये जाते हैं दिन और रात" (25:5)• आप एक अनपढ़ शक्स को "इमला" नहीं कर सकते• नबी के दुश्मनें जिन्होंने उनपर तोहमत लगाया अनपढ़पन का ठुकराते हैं आयत 29:48, जो खास तौर पर पिछली आसमानी किताबों को मुखातिब करती है•

13 बी• एच• (हिजरी से पहले) रमज़ान कि 27वीं रात, मुहम्मद कि रूह, असल शक्स, जिस्म नहीं, हाज़िर किया गया था सबसे ऊँचे आसमान को और कुरान उन्हें दिया गया था (2:97, 17:1, 44:3, 53:1-18, 97:1-5)• उसके बाद, फरिश्ते जिब्राईल ने मदद किया मुहम्मद कि एक वक्त पर कुरान कि कुछ आयतों को रूह से मुहम्मद कि याददाशत में रिहा करने का• नबी ने नीचे लिख लिया और हिफ्ज़ कर लिया आयतें जैसे ही रिहा की गई उनके ज़ेहन के अंदर• जब नबी कि मौत हुई, उन्होंने छोड़ रखा मुकम्म्ल कुरान लिखी गई उनके खुद के हाथ से तारीखवार नुज़ूल में, साथ खास हिदायतों के कि हर आयत किस जगह रखनी है• खुदाई हिदायतें दर्ज किये गए नबी के ज़रिए नक्शकारी किये गये थे कुरान को एक साथ जमा किये जाने के लिए आखरी शक्ल में जैसा इरादा किया गया था अल्लाह कि आखरी किताब के लिए दुनिया कि तरफ (75:17)• शुरूआत के मुसलमानें जमा नहीं हुए कुरान को एक साथ जमा करने के लिए खलीफा राशिद उस्मान के वक्त तक• एक जमात मुकर्रर की गई थी इस काम को अन्जाम देने के लिए• पढ़ें अपेन्डिक्स 24 तफसीलों के लिए•

****

अपेन्डिक्स 29

गायब बिस्मिल्लाह

कुरान में हर सुरेह "अल्लाह के नाम से, सबसे मेहरबान सबसे रहम वाले" बयान से शुरू होती है सिवाए सुरेह 9 के, जो जाना जाता है *बिस्मिल्लाह* जैसा • ये मशहूर गायब होना *बिस्मिल्लाह* का सुरेह 9 से रहा है एक हैरतज़दा सिफत कुरान कि 14 सदियों के लिए• कई नज़रियों को पेश किया गया है इस कुदरत को समझाने के लिए•

हमें अब समझ में आता हैं कि गायब बिस्मिल्लाह काम करता है एक बड़ा किरदार जैसे [1] एहम हिस्सा कुरान के रियाज़ी मौजज़े का, और [2] एक दमकदार निशानी सबसे मेहरबान, सबसे रहम वाले कि तरफ से, कि सुरेह 9 के साथ खिलवाड़ किया गया है और ज़रूरी है पाक किया जाना (अपेन्डिक्स 24)• दोनों किरदार गायब *बिस्मिल्लाह* के नाज़िल किए गए थे

टेबल 1 : आयतें जिनमें हैं लफ्ज़ "अल्लाह" गायब

बिस्मिल्लाह से ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक•

सुरेह नम्बर	# आयतें साथ "अल्लाह" के
9	100
10	49
11	33
12	34
13	23
14	28
15	2
16	64
17	10
18	14
19	8
20	6
21	5
22	50
23	12
24	50
25	6
26	13
27	6
342 (19x18)	513 (19x27)

कुरान के रियाज़ी मौजज़े के पता लगने के साथ• नीचे बताई गई हकीकी नजरिऐं रौशन करते हैं अजूबी सिफतें गायब *बिस्मिल्लाह* की:

[1] चूँकि *बिस्मिल्लाह* में हैं 19 अरबी हुरूफ, और आता है सारे सूरतों के शुरूआत में सिवाए एक के, वो समझा जा सकता है नीव जिसपर कुरान का 19-पर बुनियाद कोड बना है• लेकिन सुरेह 9 से *बिस्मिल्लाह* का गायब होना सबब बनता है इस एहम खोलने वाले बयान को 113 होने का, एक नम्बर जो कुरान के कोड के मुताबिक नहीं• बहरहाल, हम पाते हैं इस खामी कि भरपाई की गई है सुरेह 27 में• दो *बिस्मिल्लाएं* वाके होते हैं सुरेह 27 में, एक खोलने वाला जैसा और एक आयत 30 में• ये लौटाता है टोटल नम्बर बिस्मिल्लाओं का कुरान में 114, 19x6•

[2] सुरेह 9 के गायब *बिस्मिल्लाह* से सुरेह 27 के ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक, वहाँ हैं 19 सूरतें•

[3] सुरेह नम्बरों का जमा गायब *बिस्मिल्लाह* (सुरेह 9) से ज़ाएद *बिस्मिल्लाह* (सुरेह 27) तक है 9+10+11+12+……+25+26+27 = 342, 19x18• यह है एक रियाज़ी सिफत, कोई भी लगातार 19 नम्बरें जमा होंगी एक 19 के ज़रप को• लेकिन हैरतअंगेज़ कुरदरत है कि यह नम्बर, 342, बराबर होता है सुरेह 27 के पहले *बिस्मिल्लाह* से 27:30 में दूसरे *बिस्मिल्लाह* तक लफ्ज़ों के नम्बर से•

[4] वाकेया ज़ाएद *बिस्मिल्लाह* का 27:30 में मुताबिक है कुरान के कोड से इस तरह के सुरेह नम्बर, साथ आयत नम्बर के है एक 19 का ज़रप (27+30 = 57 = 19x30)•

[5] वाकेया ज़ाएद *बिस्मिल्लाह* का आयत 30 में बराबरी करता हैं नम्बर 19 का वाकेया खुद आयत 30 में (सुरेह 74)•

[6] कुरान में 6234 नम्बर वाली आयतें हैं• *बिस्मिल्लाह* का गायब होना सुरेह 9 से, और भरपाया किया जाना उसके लिए सुरेह 27 कि आयत 30 में देता है हमें दो नम्बर वाली *बिस्मिल्लाएं*, 1:1 और 27:30, और 112 गैर नम्बर वाली *बिस्मिल्लाएं*• ये सबब बनता है आयतों का टोटल नम्बर कुरान में 6234+112 = 6346, 19x334 होने का•

टेबल 2 : सूरतें और आयतें गायब बिस्मिल्लाह से ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक•

सुरेह	आयतें	आयत # का जमा
9	127	8128
10	109	5995
11	123	7626
12	111	6216
13	43	946
14	52	1378
15	99	4950
16	128	8256
17	111	6216
18	110	6105
19	98	4851
20	135	9180
21	112	6328
22	78	3081
23	118	7021
24	64	2080
25	77	3003
26	227	25878
27	29	435
342	1951	117673
1951+117673 = 119624 = 19x6296		

[7] गायब *बिस्मिल्लाह* से ज़ाएद *बिस्मिल्लाह* तक, आयतों का नम्बर जिनमें हैं लफ्ज़ "अल्लाह" है 513, 19x27• ध्यान दें कि 27 है सुरेह नम्बर जहाँ ज़ाएद *बिस्मिल्लाह* वाकै होता है• डेटा टेबल 1 में हैं•

[8] आयत नम्बरों का जमा (1+2+3+……+ n), साथ आयतों के नम्बर, गायब *बिस्मिल्लाह* से ज़ाएद *बिस्मिल्लाह* तक है 119624, 19x6296• देखें टेबल 2•

[9] ये आयटम ये भी साबित करता है कि सुरेह 9 में हैं 127 आयतें, 129 नहीं (देखें अपेन्डिक्स 24)• 127 अददों का जमा है 1+2+7 = 10• ढूढंते हुए सारी आयतें जिनकी अददें जुड़तीं हैं 10 को, सुरेह 9 के गायब बिस्मिल्लाह से सुरेह 27 के ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक, फिर इन आयतों के नम्बर को जोड़ते हुए आयतों के टोटल नम्बर से गायब बिस्मिल्लाह से ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक, हम पाते हैं 2128, या 19x112 (टेबल 3)•

[10] सुरेह 9 एक ऑड नम्बर वाली सुरेह है जिसकि आयतों का नम्बर (127) भी ऑड है• गायब बिस्मिल्लाह से ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक, वहाँ हैं 7 सूरतें जिनके पास है यह सिफत; वो हैं ऑर्डनम्बर वाली सूरतें जिनकी आयतों का नम्बर भी है ऑड• जैसा टेबल 4 में तफसील किया गया है, ये सूरतें हैं 9, 11, 13, 15, 17, 25 और 27• अददें जो सुरेह नम्बरों को और आयतों के नम्बरों को बनाते हैं जोड़ते हुए, बड़ा टोटल है 114, 19x6•

[11] अगली दो सिफतें साबित करतीं हैं दोनों गायब *बिस्मिल्लाह* और सुरेह 9 में आयतों के नम्बर को (जहाँ दो झूठी आयतें दाखिल किये गए थे)• अगर हम लें वही सूरतें जैसा टेबल 4 में लिस्ट किया गया है, ऑड नम्बर वाली सूरतें जिनकी आयतों कि नम्बरें भी हैं ऑड, और लिख लें हर सुरेह का नम्बर, बाद उसकी आयतों के नम्बर, हासिल हुआ लम्बा नम्बर (30 अददें) है एक 19 का ज़रप (तस्वीर 1)•

टेबल 3 : आयतें जिनकी अददें 10 को जमा होते हैं, गायब बिसि्ल्लाह से ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक•

सुरेह नं•	आयतों का नं•	वाकेयात का नं•
9	127	12
10	109	10
11	123	11
12	111	10
13	43	3
14	52	4
15	99	9
16	128	12
17	111	10
18	110	10
19	98	9
20	135	12
21	112	10
22	78	7
23	118	11
24	64	6
25	77	7
26	227	22
27	29	2
342	1951	177
(19x18) और 1951+177 = 2128=19x112		

टेबल 4 : ऑड नम्बर वाली सूरतें जिनकी आयतों का नम्बर भी ऑड हैं•

सुरेह नं•	अददों का जमा	आयतों का नं	अददों का जमा
9	9	127	10
11	2	123	6
13	4	43	7
15	6	99	18
17	8	111	3
25	7	77	14
27	9	29	11
	45		69
45 + 69 = 114 = 19x6			

[12] चलें हम जारी रहें काम करने के लिए टेबल 4 में लिस्ट की गई सूरतों के साथ• वो हैं ऑड नम्बर वाली सूरतें जिनकी आयतें भी हैं ऑड नम्बर वालीं, गायब बिस्मिल्लाह से ज़ाएद बिस्मिल्लाह तक• अगर हम लिख लें हर सुरेह का नम्बर, बाद उसके उस सुरेह में हर आयत में आखरी अदद, हम पहुँचते हैं एक लम्बे नम्बर को, 1988 अददों का, जो 19 से तकसीम हो जाता है (तस्वीर 2)•

9 127 11 123 13 43 15 99 17 111 25 77 27 29 हर सुरेह नम्बर के बाद है आयतों का नम्बर उस सुरेह में ये लम्बा नम्बर बराबर है 19 x 48037427533385052195322409091 (तस्वीर 1)

****

अपेन्डिक्स 30

एक से ज़ाएद शादी

जब तक कुरान नाज़िल नहीं हुआ 1400 साल पहले एक से ज़ाएद शादी था एक ज़िन्दगी का तरीका• जब ज़मीन थी जवान और कम आबादी वाली, एक से ज़ाएद शादी एक तरीका था उसे आबाद करने का और ज़रूरत इंसानों को लाने का अल्लाह का मनसूबा पूरा करने के लिए• जब कुरान नाज़िल हो चुका था, दुनिया काफी तौर पर आबाद हो चुकी थी, और कुरान ने एक से ज़ाएद शादी के खिलाफ पहली पाबंदियों को लागू किया•

एक से ज़ाएद शादी कि इजाज़त है कुरान में, लेकिन अदा करते हुए सख्त हालातों के अंदर• कोई भी बदसलूकी इस खुदाई इजाज़त कि मोल लेता है सख्त आज़ाब• इस तरह, हालाँकि एक से ज़ाएद शादी कि इजाज़त है अल्लाह कि तरफ से, ये ज़रूरी है हमें संभालकर जांचना हमारे हालातों का कहने से पहले कि कोई एक से ज़ाएद शादी वाला रिश्ता दुरूस्त है•

हमारा सही मिसाल यहाँ है नबी मुहम्मद• वो ब्याहे गये थे एक बिवी, खतीजा को, उसके मरने तक• उन्हें सारे बच्चे थे, खतीजा से, सिवाए एक के• इस तरह, वो और उसकी बच्चों ने लुत्फ उठाया नबी का पूरा ध्यान जबतक वो उनसे ब्याही रहीं; पच्चीस सालों तक• सारी अमली मकसदों के लिए, मुहम्मद के पास थी एक बिवी— उर्म 25 से 50 तक• उनकी ज़िन्दगी के बाकी 13 सालों के दरमियान, उन्होंने शादी की उनके दोस्तों के उर्म वाली बेवाओं से जो कई बच्चे छोड़ गए• बच्चों को ज़रूरी था एक मुकम्मल घर, एक बाप जैसा शक्स, और नबी ने वो मुहय्या किया• यतीमों को एक बाप जैसी शक्सियत मुहय्या करना है सिर्फ खास हालत जिसमें एक से ज़ाएद शादी करने कि हिमायत कि गई है बयान किया गया कुरान में (4:3)•

यतीमों कि बेवा माँओं से शादी करने के अलावा, वहाँ थी तीन सियासी शादीयाँ नबी कि ज़िन्दगी में• उनके करीबी दोस्तों अबू बकर और उमर ने इसरार किया कि वो शादी करें उनकी बेटियाँ आयशा, और हफसा से, ताके उनके कुम्बे में आपसी रिवाजी बन्धन कायम हो• तीसरी शादी थी मारिया से एक मिस्री; वो उन्हें दी गई थी दोस्ती की एक सियासी निशानी जैसे मिस्र के हाकिम कि तरफ से•

ये बिल्कुल सही मिसाल हमें कहता है कि एक मर्द को चाहिए उसका पूरा ध्यान और वफादारी दे शादी में उसकी बिवी और बच्चों को ताके एक खुशगवार और सेहतमंद कुम्बा पल सके•

कुरान बेहद सख्त लफ्ज़ों में ज़ोर देता है एक से ज़ाएद शादी के खिलाफ पाबंदियाँ: “अगर तुम डरो कहीं तुम पूरी तरह बेइंसाफ न हो जाओ एक से ज़्यादा बिवी से बर्ताव करने में, तो तुम्हें एक से मुतमईन होना चाहिए•” (4:3) “तुम बराबर नहीं हो सकते एक से ज़ाएद शादी वाले रिश्ते में, चाहे तुम कितनी ही ज़ोर कोशिश कर लो•” (4:129)

कुरानी पाबंदियाँ एक से ज़ाएद शादी के खिलाफ इशारा करती है मुमकिन गलत इस्तेमाल अल्लाह के कानून का• इसलिए, जबतक हमें पूरी तरह यकीन न हो कि अल्लाह के कानून का गलत इस्तेमाल न होगा, बेहतर होगा हम रोकें हमारी हवस को और दूर रहें एक से ज़्यादा शादी से• अगर हालतें हुक्म न दें एक से ज़ाएद शादी के लिए, बेहतर होगा हम दें हमारा पूरा ध्यान एक बिवी और बच्चों के जत्थे कि तरफ• बच्चों कि नफसियाती और सामाजी सलामती, खास तौर पर मुल्कों में जहाँ एक से ज़ाएद शादी कि मनाई है, तकरीबन बिला कसर हुक्म करता है एक शादी का• एक से ज़ाएद शादी का तसव्वुर करते हुए ज़रूरी है कुछ बुनियादी मयारों को ध्यान में रखा जाए:

1. ज़रूरी है वो दर्द और तकलीफ को हल्का करे और सबब न बने कोई भी दर्द या तकलीफ का•
2. अगर तुम्हारे पास है एक जवान कुम्बा, ये तकरीबन यकीनी है कि एक से ज़ाएद शादी है एक बदसलूकी•
3. एक से ज़ाएद शादी करना तबदील करना एक जवान बिवी के लिए है एक गलत इस्तेमाल अल्लाह के कानून का (4:19)•

****

अपेन्डिक्स 31

इवोलुशनः खुदाई तौर पर काबू की गई

हम सीखते हैं कुरान से कि इवोलुशन है एक खुदाई नक्शकारी हकीकत:

जिन्दगी शुरू हुई पानी में:	**"पानी से शूरू किया हमने सारी जिन्दा चीज़े•" (21:30, 24:45)**

इन्सानें बंदरों कि औलादें नहीं:	**"उन्होंने शुरू किया इन्सान कि पैदाईश मिट्टी से•" (32:7)**
आदमी पैदा किया गया "पुरानी" मिट्टी से:	**"मैं पैदा कर रहा हूँ इन्सान को 'पुरानी' चिकनी मिट्टी से•" (15:28)**

इवोलुशन मुमकिन है सिर्फ कुछ दी गई जिन्सों में• मिसाल के लिए, बगैर बीज वाला संतरा इवॉल्व हुआ बीज वाले संतरों से, सेबों से नहीं• मुमकिनियात के कानून खारिज करते हैं जिन्सों के दरमियान मुमकिन होना बेतुका इवोलुशन• एक मछली कभी नहीं इवॉल्व हो सकती है एक परिंदे में; एक बन्दर कभी इवॉल्व नहीं हो सकता एक इन्सान में•

मुमकिनियात के कानून खारिज करते हैं डारविन का इवोलुशन

इस कम्प्युटर के ज़माने में, हमारे पास है रियाज़ी कानूनें जो हमें कहते हैं कि फलां वाकेया मुमकिन है या नहीं• अगर हम फेकें पाँच नम्बर वाले पासों को ऊपर हवा में और उन्हें गिरने दें एक राह पर सीधी कतार में, मुमकिनियात के कानून हमें कहते हैं हम पा सकते हैं मुमकिन मेलों की तादाद: 1x2x3x4x5 = 120 मेल• इसतरह, किसी मेल को हासिल करने का मुमकिनियात है 120 में से 1, या 1/120, 0.0086• ये मुमकिनियात तेज़ी से कम होता है जब हम पासों कि तादाद को बढ़ाते हैं• अगर हम उसे एक से बढ़ायें, मेलों कि तादाद बन जाती है 1x2x3x4x5x6 = 720, और मुमकिनियात किसी मेल को पाने का कम हो जाता है 1/720, 0.0014 को• रियाज़तदानें, जो हैं बहुत सख्त साइन्सदानें, इकरार करते हैं कि मुमकिनियात कम होती है

“सिफर” को जब हम पासों कि तादाद को बढ़ाते हैं 84 तक• अगर हम 84 पासों के साथ काम करते हैं, मुमकिनियात कम होती है $209x10^{-50}$,या 0.000000000000000000000000000000000000000000000000209

डारविन का मशहूर बयान कि “जिन्दगी शुरू हुई एक ‘सादे’ सेल (cell) कि तरह” है हँसी के काबिल• इतनी हालिया जैसे 50 सालों पहले, वेल्स, हक्सली, और वेल्स ने लिखा अपने आला दरजे कि दरसी किताब में कि “कुछ नहीं देखा जा सकता है न्युक्लियस (nucleus) के अंदर सिवाए साफ सायाल के•” हम जानते हैं अब कि सेल है, एक निहायत पेचीदा हिस्सा, बिलियनों न्युक्लियोटाइडस (nucleotides) के साथ जीन (gene) वाले हिस्से में न्युक्लियस के अंदर, और मिलियनें बायोकेमिकल रिऐकशन्स (biochemical reactions)• मुमकिनियात के कानून हमें कहते हैं कि मुमकिन बेतुकी पैदाइश सख्त सिलसिलावार न्युक्लियोटाइडस कि DNA के अंदर है सिफर, उससे कई ज़्यादा• हम 84 न्युक्लियोटाइडस के बारे में नहीं बात कर रहें हैं; हम बात कर रहें हैं बिलियनों न्युक्लियोटाइडस के बारे में जो ज़रूरी है तरतीब किया जाए एक खास सिलसिले में•

चुँकि इवोलुशन के मानने वालों ने कहा है कि इन्सानी जीन (gene) और बन्दर के जीन (gene) में 90% यकसानियत है• बहरहाल, अगर यकसानियत 99% हि क्यों न होती, हम फिर भी बात कर रहे हें 300,000,000 न्युक्लियोटाइडस कि जो ज़रूरी है बेतुके तौर पर दोबारा तरतीब किया जाए बन्दर को एक इन्सान में बदलने के लिए• मुमकिनियात के कानून खारिज करते हैं इसे एक सरासर नामुमकिनियात• इन्सान के जीन (gene) में हैं 30,000,000,000 न्युक्लियोटाइडस; उसका 1% है 300,000,000•

सही हवाला यहाँ है प्रोफेसर एडविन कॉनकिलिन का; उसने कहा:

ज़िन्दगी हादसे से शुरू होने कि मुमकिनियात ऐसी है जैसे मुमकिनियात मुकम्मल डिक्शनरी का मिलना एक धमाके कि वजह से एक छपाई के कारखाने में•

****

अपेन्डिक्स 32

40 का एहम उम्र

ज़िम्मेदारी कि उम्र क्या है? यहाँ तक के अल्लाह के बारे में सुने बगैर, अगर बच्चा मर जाए 12 कि उम्र पर, क्या ये बच्चा जन्नत को जाएगा या जहन्नम? क्या अगर बच्चे कि उम्र 15 साल है, या 21, या 25? कौन सी उम्र पर इन्सान ज़िम्मेदार माना जाएगा उसके या उसकी अकीदों के लिए? इस सवालने सारे मज़हबों के खोज करने वालों को उलझन में डाल रखा है एक लम्बे अरसे से•

कुरान 40 को ज़िम्मेदारी कि उम्र मुर्करर करता है; कोई भी मरे इस उम्र से पहले जाता है जन्नत को (46:15)• अगर उस शक्स ने ई मान लाया अल्लाह में और अकीदे से फायदा उठाया रूह को गिज़ा और तरक्की देते हुए (देखें अपेन्डिक्स 15), वो जाता या जाती है ऊंची जन्नत को• वरना, वो शक्स जाता है निचली जन्नत को•

इस खबर के टुकड़े के लिए ऐतराज़ आप का सबसे पहला रद्दे अमल है: “क्या अगर वो शक्स वाकई में बुरा, बदकार, और एक काफिर था, क्या वो जन्नत को जाएगा अगर वो मर जाए 40 कि उम्र से पहले,” ये है इसलिए कि आप हैं तंगदिल, जबकी अल्लाह हैं सबसे रहेम वाले• हमारी फितरत है कि “उन सारों को जहन्नम में डालो”•

जिन लोगों ने पुरज़ोर तरीके से इस खुदाई रहमत का ऐतराज़ किया कभी एक ज़िम्मेदारी कि उम्र को नहीं बता सकते• वो ऐसे सवालों को पूछते हैं, “क्या अगर वो शक्स सही में बदकार था?” जवाब है, “क्या अल्लाह जानते हैं वो शक्स बदकार था?” “हाँ” “क्या अल्लाह जानते हैं कि ये शक्स मुस्तेहिक नहीं हैं जन्नत में जाने का?” “हाँ•” “इसलिए, ये शक्स नहीं मरेगा 40 कि उम्र से पहले•” एक सीधी सी बात• सिर्फ अल्लाह हैं जो हमारी ज़िन्दगियों को खत्म करते हैं इस ज़मीन पर• वो सही सही जानते हैं कौन मुस्तेहिक है जन्नत को जाने के लिए और कौन है मुस्तेहिक जहन्नम को जाने के लिए•

1989 कि शुरूआत में थियोडर रॉर्बट बन्डी (Theodore Robert Bundy) नाम के एक आदमी को सज़ाए मौत दी गई थी कई औरतों को कत्ल करने के लिए• पूरे मुल्क ने इकरार किया के तारीख में वो एक सबसे बदतरीन मुजरिमों में से एक था• यहाँ तक कि उसकी सज़ा एक निराले मौकों में से एक थी जहाँ सज़ाए मौत कि मुखालिफत करने वालों ने ऐतरज़ नहीं किया• बलिके उसके खिलाफ, कई लोगों ने असल में जश्न मनाया उसकी सज़ाए मौत पर• कई अखबार लिखने वालों, इदारियों और सियासत दानों ने आहें भरी इस हकीकत पर कि अदालत ने ग्याराह साल लिए टेड बन्डी को सज़ा देने के लिए• उन्होंने कहा कि बन्डी को ज़्यादा से ज़्यादा फैसले के बाद छः सालों के अंदर सज़ा दे दी जानी चाहिए थी•

कुरान के मुताबिक, ये होती सबसे बड़ी मेहरबानी जो कोई कर सकता था बन्डी के लिए• उसकी उम्र थी 42 साल जब उसे सज़ाए मौत दी गई• अगर उसे पाँच सालों पहले सज़ा दी गई होती, 37 कि उम्र पर, वो सीधे जन्नत को जाता, और वो उसका मुस्तेहिक नहीं था•

ऐसा पता चलता है कि, बन्डी एक निशानियों में से एक था जो अल्लाह ने हमें दिया है तसदीक करने के लिए कि जो कोई मरे 40 से पहले जाते हैं जन्नत को• बन्डी का नाम, थियोडर रॉर्बट बन्डी (Theodore Robert Bundy), में हैं 19 हुरूफें, और उसने कबूल किया 19 औरतों को कत्ल करने का सिर्फ एक दिन सज़ाए मौत से पहले• वहाँ थीं और कई दूसरी निशानियाँ अल्लाह कि तरफ से•

पहुँचाना इस खबर के एहम टुकड़े को अल्लाह के वादे के रसूल कि तरह है एक ज़िम्मेदारीयों में से एक जो मुझे दी गई हैं• ये *मेरा* खुदका नज़रिया नहीं है•

ये गौर करने वाली बात है कि मारटिन लुथर किंग और मैलकम एक्स दोनों उनके 40 वें जन्मदिन के सिर्फ कुछ महीनों पहले कत्ल कर दिए गए थे•

****

अपेन्डिक्स 33

क्यों अल्लाह ने भेजा एक रसूल अभी?

जैसा 3:81 में, और अपेन्डिक्स 2 में बयान किया गया है, अल्लाह ने एक रसूल भेजा हैं ताके जोड़े सारे नबियों के ज़रिए भेजे गए पैगामों को, उन्हें पाक करे, और जमा करे उन्हें एक मज़हब: फरमानबरदारी में• यकीनन वक्त तैयार हो चुका है इस एहम पेशीनगोई के पूरे होने का, नीचे दी गई वजहों के लिए:

1. यहूदी मज़हब, इसाई मज़हब, और इस्लाम पहचान से बाहर बिगाड़ दिए गए हैं•
2. अल्लाह के सारे पैगामों को पहुँचा दिया गया है; कुरान है आखरी किताब•
3. 93% से ज़्यादा इन्सान जो मुर्करर किए गए हैं इस दुनिया में रहने के लिए अभी आने बाकी हैं• जैसा पेज xv, तार्रुफ में बताया गया है, लोग जो आदम से अब तक रहें हैं इस ज़मीन पर है सिर्फ पाँचवा हिस्सा सारे तय किए गए इन्सान कि तादाद से•

यहूदी मज़हब

सबसे अच्छा बयान आजके बिगड़े यहूदी मज़हब का पाया जा सकता है एक मशहूर रब्बी; हैरोल्ड एस कुशनर कि किताब में• उसकी मशहूर किताब में *जब अच्छे लोगों के साथ बूरी चीज़े होती हैं*, एवोन बुक्स, 1981, रब्बी कुशनर ये बयान करता हैं:

> ..., हमें मशवरा दिया जाएगा जितना हो सके इस दुनिया को संजीदगी से लो, इस सूरत में कि अगर वो सिर्फ एक ही है जो हमें कभी भी मिल सकती है, और देखे मायनों और फैसलों के लिए यहाँ• (पे•29)
>
> बूरी चीज़े ज़रूर होती हैं अच्छे लोगों को इस दुनिया में, लेकिन वो अल्लाह नहीं हैं जो चाहते हैं• अल्लाह चाहेंगे लोग पाएं जिसके वो मुस्तेहेक हैं, लेकिन वो हमेशा मुहय्या नहीं कर सकते हैं उसे• (पे•42)
>
> अल्लाह नीचे नहीं उतरते कुदरत के कानूनों के कामों में दखलअंदाज़ी करने के लिए नेककरों को तकलीफ से बचाने के लिए• हमारी दुनिया का यह एक दूसरा इलाका हैं जो सबब बनता है बूरी चीज़े होना अच्छे लोगों को, और अल्लाह उसका सबब नहीं बनते और उसे कभी नहीं रोक सकते• (पे•58)
>
> अल्लाह हर चीज़ नहीं कर सकते, लेकिन वो कर सकते हैं कुछ एहम चीज़ों को• (पे•113)
>
> हम उनसे हमारे लिए बीमारी से पूरी तरह आज़ादी नहीं मांग सकते, क्योंकि वो उसे नहीं कर सकते• (पे•125)
>
> मैं उनकी हदों को पहचानता हूँ• जो वो कर सकते हैं उसमें वो महदूद हैं कुदरत के कानून कि वजह से, और बदलती हुई इन्सान कि फितरत और इन्सान कि ज़हनी आज़ादी कि वजह से• (पे•134)

ईसाई मज़हब

अगर आज ईसा वापस ज़िन्दा होते हैं, ईसाई उन्हें सूली पर चढ़ा देंगे• मशहूर ईसाई आलिमें पहुँच चुके हैं पुख़्ता फैसलों को कि आज के ईसाई मज़हब का कोई वासता नहीं ईसा से, और ये कि उसका मज़हब फानी तौर पर बदनाम निसीन कि इज़तेमों में बिगाड़ दी गई थी (325 ए•डी)• देखें *द मिथ ऑफ गॉड इनकारनेट*, वेस्टमिनिस्टर प्रेस, फिलाडेलफिया, 1977•

इस्लाम

अगर मुहम्मद वापस आ जायें इस दुनिया को, “मुसलमानें” उन्हें पत्थर से मौत दे देंगे• मज़हब जिसपर वो आज चलते हैं उसका कोई वासता नहीं इस्लाम से, जो है फरमानबरदारी, नसीहत किया गया इब्राहीम और मुहम्मद कि तरफ से• हरचीज़ जो “मुसलमानें” करते हैं है गलत: पहला खम्भा (*शहादत*), *सलात* के लिए (*आज़ान*) बुलावा, वजू (*वुदू*), रोज़ाना कि *सलात* नमाज़ें, *ज़कात* खैरात, हज, और सारे दूसरे तरीके इस्लाम के (देखें अपेन्डिक्सें 2, 13, और 15)•

“एक मज़हब जिसकी कभी इजाज़त नहीं दी गई अल्लाह कि तरफ से”
(42:21)

इस्लाम किस हद तक बिगाड़ दिया गया है नीचे टेबल में तफसील किया गया है:

विदआत	तोड़े गये कुरानी उसूलें
हदीस और सुन्नत	6:19, 38, 114; 7:1-3; 12:111; 17:46; 31:6; 45:6; 69:38-47; इसके अलावा कई और•
कत्ल करना किसी को भी जिसे वो एक मुरतद समझते हैं	2:256; 4:90; 10:99; 18:29; 88:21-22.
ज़ालिम मुजरिमाना अदालती निज़ाम:	
चोर का हाथ कलम करना	5:38, 12:31.
ज़ानियों को पत्थर से मौत देना	24:2, 4:25.
कत्ल करना किसी को जो सलात अदा न करे	2:256, 18:29.
कत्ल करना उसे जो पिये शराब 4 थी वार	2:256, 18:29.
हैज़ में औरतों को हराम करना इबादत	2:222.
हराम करना औरतों को जुमे कि नमाज़ से	62:9.
मुहम्मद को बुत बनाते हुए उनकी मरज़ी के खिलाफ:	
उन्हें "सबसे इज़्ज़त वाला रसूल" पुकारना	2:285.
दावा करना के वो बेखता थे	4:79; 9:117; 17:73-74; 33:37; 40:66, 66:1; 80:1-10; 93:7.
उनकी कब्र को एक "मुकददस मस्जिद" जैसा करार देना	2:149-150.
दावा करना कि उनके पास शिफाअत कि ताकत है	2:48,123,254; 6:70,94; 7:53; 10:3; 39:44; 43:86; 74:48.
उनका उरूज आसमानों कि तरफ एक घोड़े पर, रौशनी कि रफ्तार से, और 50 सलात नमाजों का मोल भाव करने के बारे में एजाद करते हैं बेबचाव कहानी• रौशनी कि रफ्तार से, वो अब भी आकाश गंगा के अन्दर सफर कर रहे होते•	17:1; 53:1-18.
जोड़ते हुए उनके नाम को सलात नमाज़ों और आज़ान में	20:14; 72:18.
जोड़ते हुए उनका नाम इस्लाम के पहले खम्भे को	3:18; 37:35; 39:45.
मुहम्मद कि तौहीन करना उन्हें एक बदकार आदमी जैसा बयान करते हुए:	
वो दावा करते हैं कि उन्होंने लोगों कि आँखों को नोच कर बाहर निकाल डाला	3:159; 68:4.
दावा करते हैं कि उनके पास 30 आदमियों कि शहवानी ताकत थी	18:110; 25:20
मनसूख करते हुए इस हकीकत को कि मुहम्मद थे आखरी नबी ये तालीम देते हुए कि ईसा दोबारा आयेंगे इस दुनिया को• ये ईसा को आखरी नबी बनाता है•	33:40.
दावा करना कि मुहम्मद थे अनपढ़, कुनज़हन•	देखें अपेन्डिक्स 28.
कई मनाईयों के साथ एक अजीब गिज़ाई निज़ाम	6:145-150; 16:115-116.
पाक महीनों को उलटपुलट करते हुए	9:37.
बिगाड़ कि वजह से ज़कात खैरात नज़र अंदाज़ करना	6:141, अपेन्डिक्स 15.
औरतों पर जुल्म करना और उन्हें सर को ढ़ाकने और नामुनासिब कपड़े पहनने के लिए ज़ोर देते हुए; और उन्हें शादी, तलाक, विरासत, वगैराह में सारे हकों से महरूम करते हुए	3:195; 4:19, 32; 9:71; 2:228.
तौहीन करना औरतों कि कायम करते हुए कि "अगर एक बन्दर, कुत्ता, या एक औरत गुज़रे एक नमाज़ पढ़ने वाले शक्स के सामने से, उसकी नमाज़ ज़ाया हो जाती है" (हदीस)	
वज़ू से, नमाज़ तक, सोते हुए तक, किसी के नाखूनों को काटते हुए तक, कई कानूनों का ऐजाद करते हुए	5:101; 42:21; 2:67-71.
सोना और रेशम मर्दों के लिए हराम करते हुए	5:48-49; 7:31-32.
मौसिकी और हुनरों को हराम करते कुए	7:32; 42:21; 34:13.
बेइज़्ज़ती करते हुए इस्लाम कि ये कहते हुए कि ज़मीन बनाई गई है एक बड़ी व्हेल मछली के ऊपर!! (79:30; इब्ने कथीर, 1200 ऐ डी और बिन बाज़, 1975 ऐ डी)	

ये बिगाड़ों का सिर्फ एक छोटा सा नमूना है जो "मुसलमान" करते हैं रोज़ाना• यही वजह है क्यों अल्लाह ने भेजा अभी उनके वादे का रसूल•

अपेन्डिक्स 34

कुंवारापन

सच्चे ईमानवालों के बेटों और बेटियों को ज़रूरी है सिखाया जाए कि उनकी पूरी जिन्दगियों में उनकी खुशी अल्लाह के कानून पर चलने और उनके पाक दामनपन को महफ़ूज़ रखने पर बुनियाद है। इसके मायने हैं कि उन्हें चाहिए अपने आप को रखे सिर्फ उनके जोड़ों के लिए, और इजाज़त न दें कभी भी किसी और को उन्हें छूने के लिए शहवानी अंदाज़ में (23:5-6, 24:30, 33:35, 70:29-30)।

आज का माशरा लबरेज़ है ज़बरदस्त बहकावों से। अस्सी के ज़माने में अमेरिका के माशरे में, यहाँ तक के वालिदैन शूरू करते हैं बात उनकी बेटियों के लिए बॉयफ्रेन्डस और बेटों के लिए गर्लफ्रेन्डस के बारे में। जब वो उनकी उठती जवानी को पहुँचते हैं, कई वालिदैन यहाँ तक के मुहय्या करते हैं हमल रोकने के नुस्खे अपने बच्चों को। एक भयानक फिसदी कमसिन लोग हैं शहवानी तौर पर मुबतिला, यहाँ तक के वो ज़हनी तौर पर तैयार नहीं हैं, और बगैर कोई अखलाकी हदों के। मिलयनों नाजायज़ हमलें और उनसे जुड़े हादसे, इसके अलावा मिलयनों अफसोसज़दा हमलों का गिराया जाना, होते हैं हर महीने यु एस ए में।

इस अखलाकी नाकामी के नतीजों में से है: अनचाहे और लावारिस बच्चे, गुनेहगार और गैर ज़िम्मेदार बापें, मुजरिमें जिनको कोई एहतराम नहीं लोगों कि जिन्दगियों और जायदादों का, मिलयनें माशरे पर न उतरने वाले, ना ठीक होने वाली आज़ाए तनासुल के मुताल्लिक खुजलियाँ, ना ठीक होने वाली आज़ाए तनासुल के मुताल्लिक फोड़ियाँ, बरबाद करने वाली पिशाब के दौरान जलन (syphilis) और दर्द (gonorrhea), dysplasia, और हलाक करने वाली एड्स, और नई बिमारियाँ जिन्हें पहले कभी नहीं जाना गया।

ज़्यादातर लोग ये नहीं जानते कि इस अखलाकी नाकामयाबी कि वजह से उन्हें उनकी पूरी ज़िन्दगियों भर बहुत बड़ा हरजाना भरना पड़ता है। इसलिए कि सिर्फ कानून जो हुकूमत करता है दुनिया पर है अल्लाह का कानून, और ये खुलेआम खिलाफ वरज़ी अल्लाह के कानून कि सबब बनती है उनके लिए बहुत सारी मुसीबतों और परेशानियों का (20:124)।

सच्चे ईमानवाले जो ख्याल रखते हैं उनके बच्चों का उन्हें मुसलसल और बार बार मशवरा देंगे और उन्हें याद दिलाएंगे (20:132) ताके वो अपने पाक दामनपन को बरकरार रखें। इसके मायने हैं रहना कुंवारा उनकी शादी कि रात तक, फिर अपने जोड़े के साथ रहें बावफा — नहीं करते हुए कभी भी ज़िना — उनकी खुदकी खुशी के लिए। अल्लाह का मशवरा हमारे पाक दामनपन को बरकरार रखने का, पहले और शादी के बाद है हमारे खुदके अच्छे के लिए। अल्लाह हैं वाहिद जो काबू करते हैं हमारी सेहत, दौलत और खुशी या मुसीबत (53:43, 48)।

****

अपेन्डिक्स 35

शराब और नशे कि चीज़ें

किसी भी तरह का समझौता नहीं है नशिली चीज़ों और शराब के मुताल्लिक; उन्हें "घिनौने और शैतान का काम" (5:90) कहा गया है। 2:219 और 5:90 में, हम देखते हैं कि "नशे वाली चीजें, जुआ, बुतों के कुरबानगाहें, और तुक्के वाले खेल" सख्ती से मना किए गए हैं। लफ्ज़ "खम्र" इस्तेमाल किया गया है नशेवाली चीज़ों के लिए बुनियादी लफ्ज़ "खमारा" से जिसके मायने हैं "ढ़ाकना।" इसतरह, कोई भी चीज़ जो ज़हेन को रोके या ढ़ाके मना किया गया है। ये शामिल करती है कोई भी चीज़ जो ज़हेन को बदलती है, जैसे गांजा, हिरोईन, कोकीन, शराब, चरस, और कोई भी चीज़ जो ज़हेन को असर करती है।

अपेन्डिक्स 36

क्या कीमत एक बड़ा मुल्क

अगर आसमानी किताब के लोग (यहूदी, ईसाई, और मुसलमान) ईमान लाएं और एक नेक ज़िन्दगी बरकरार रखें, हम उनके गुनाहों को माफ करेंगे और दाखिल करेंगे उन्हें मुर्सरत वाली जन्नत में• अगर वो मानते तौरैत, इन्जील, और उसपर जो नाज़िल हुआ है इसमें उनके रब कि तरफ से, वो लुत्फ उठाते नियामतों का उनके ऊपर से, और उनके पैरों के नीचे से• उनमें से कुछ हैं नेक, लेकिन उनमें से ज़्यदातर हैं बुरा करने वाले•
[5:65-66]

अगर सिर्फ मुखतलिफ कौमों के लोग ईमान लाते और बरकरार रखते एक नेक ज़िन्दगी, हमने बरसाया होता उनको नियामतों के साथ आसमान और ज़मीन से• [7:96]

अल्लाह हैं वाहिद जिनके काबू में है तुम्हारी खुशी, या मुसीबत•
.... अल्लाह हैं वाहिद जो बनाते हैं तुम्हें अमीर या गरीब• [53:43, 48]

एक मुल्क जो अल्लाह के कानूनों को बरकरार रखता है ज़मानत दिया गया है शोहरत फतेह, तरक्की, और खुशी पाने का दुनिया के मुल्कों के दरमियान, (10:62-64, 16:97, 24:55, 41:30-31)• दूसरी तरफ, एक मुल्क जो तोड़े अल्लाह के कानूनों को हासिल करता है आफतज़दा ज़िन्दगी (20:124)• एक मुल्क जो बरकरार रखे अल्लाह के कानूनों को ज़मानत दिया गया है एक बड़ा मुल्क होने का• ये महज़ एक ख्याली सोच नहीं है; चुँकि अल्लाह के पास है पूरा काबू (10:61), उनकी ज़मानतें और वादे होते हैं पूरे• एक मुल्क जो अल्लाह के कानूनों को बरकरार रखता है इन सिफतों से जाना जाता है:

1. ज़्यादा से ज़्यादा आज़ादी लोगों के लिए — मज़हब कि आज़ादी, बोलने कि आज़ादी, सफर के लिए आज़ादी, और माशियत कि आज़ादी (2:256, 10:99, 88:21-22)•
2. इन्सानी हुकुकों कि ज़मानत सारे लोगों के लिए, बगैर लिहाज़ उनके नस्ल, रंग, मज़हब, सामाजी रूतबा, माली हैसियत, या सियासी ताल्लुक के (5:8, 49:13)•
3. तरक्की सारे लोगों के लिए• अल्लाह का माशियती निज़ाम माल कि बराबर रवानी, कोई रिबा नहीं और पैदावारी चीज़ों में कारोबर पर बुनियाद है• गैर पैदावारी माशियत जैसे जुआ, लॉटरी और ज़्यादा ब्याज पर कर्ज़े कि इजाज़त नहीं है (2:275-7, 59:7)•
4. सामाजी इन्साफ सबके लिए• कोई भी नहीं रहेगा भूखा या बगैर छत के, ज़रूरी सदका *(ज़कात)* कि वजह से (2:215, 70:24-25, 107:1-7)•
5. एक सियासी निज़ाम जो एक राय से इत्तेफाक पर बुनियाद हो• आपसी मशवरे और बोलने कि आज़ादी के ज़रिए, किसी दिए गये मसले का एक नज़रिया यकीन दिलाए बहस में शामिल सारों को• आखीर अन्जाम है एक राय पर रज़ामन्दी, 51% कि एक बड़ी तादाद का नज़रिया नहीं मारा जाता है 49% कि कम तादाद कि हलक पर (42:38)•
6. एक माशरा जो नेक तौर तरीके के सबसे ऊँचें दर्जो को बुलन्द और बरकरार रखता है• वहाँ होगा एक मज़बूत कुम्बा, कोई शराबी नहीं, कोई नशिली चीज़ें नहीं, कोई नाजायज़ हमलें नहीं, कोई हमलें ज़ाया नहीं, और हकीकत में कोई तलाक नहीं•
7. ज़्यादा से ज़्यादा एहतराम लोगों कि ज़िन्दगियों और मिलकियतों का• इसतरह, वहाँ नहीं होगा लोगों कि जिन्दगियों या मिलकियतों के खिलाफ जुर्म•

8. फैलाव मुहब्वत, खुश इख्लाकि, अमन, और आपसी एहतराम लोगों के दरमियान, और इस मुल्क और दुनिया के दूसरे कौमों के बीच (3:110, 60:8-9)•
9. ज़ाया करने वाले तरीकों को मना करते हुए और निगरानी के ज़रिए माहौल कि हिफाज़त की ज़मानत दी जाती है (30:41)•

****

अपेन्डिक्स 37

मुजरिमाना इन्साफ

अगर एक चोर आपसे एक हज़ार डॉलरों को चुराता है, और वो डाल देते हैंउसे जेल में, तुम्हें क्या मिलता है? अगर चोर के पास एक विवी और बच्चे हैं, उनका क्या जुर्म है? वो क्यों महरूम किये जायें उनके वालिद से?

कुरान इस मसले को हल करता है, साथ साथ आज कि दुनिया में जारी उन मसलों के जो मुजरिमाना अदालती निज़ामों के साथ जुड़े हैं•

बराबरी का है कानून [2:178-179]

कुरानी मुजरिमाना इन्साफ के मुताविक, चोर जिसे सज़ा दी गई है आपसे एक हज़ार डॉलरों को चुराने के लिए चाहिए आप के लिए काम करे जबतक आपके खोए हज़ार डॉलरों कि पूरी तरह अदाएगी नहीं हो जाती, साथ दूसरा कोई नुकसान और ज़हमत चोरी कि वजह से आपने झेला हो• साथ साथ, चोर के मासूम विवी और बच्चे महरूम नहीं किये जाते उनके आदमी से, और महंगे कैदी निज़ाम को खारिज करता है• कैद है एक ज़ालिम और बेरहम सज़ा जो उससे ताल्लुक रखने वाले सारों के लिए फुजूल सावित हुआ है•

आम अकीदे के खिलाफ, चोर के हाथ को काट कर अलग नहीं करना चाहिए• शुक्र है अल्लाह का कुरान में उनकी रहमत और उनके रियाज़ी मौजज़े के लिए, हम अब जानते हैं कि चोर के हाथ को निशान लगाना चाहिए• चोर के हाथ को निशान लगाना बयान किया गया है 5:38 में• सुरेह और आयत नम्बरें जुड़ती हैं 5+38 = 43 को• दूसरी जगह कुरान में जहाँ "हाथ कटा है" मिलता है 12:31 में• यहाँ है जहाँ हम देखते हैं औरतों ने इतना पसंद किया युसुफ को, उन्होंने उनके हाथों को "काट" लिया• ज़ाहिर तौर पर, उन्होंने उनके हाथों को अलग नहीं किया; वैसा कोई नहीं कर सकता• सुरेह और आयत नम्बरें जुड़ती हैं 12+31 = 43 को, वही टोटल जैसा 5:38 में• यह देता है रियाज़ी तसदीक कि कुरानी कानून कहता है चोर के हाथ को निशान लगाना, उसे अलग नहीं करना• इसके अलावा रियाज़ी तसदीक मुहय्या किया गया है: 19 आयतों के बाद 12:31, हम दोबारा "हाथ का कटना" देखते हैं• फरमानबरदारी (इस्लाम) में सज़ा बराबरी और सामाजी दबाव पर बुनियाद है (2:178, 5:38, 24:2)•

बेअदवी जिसे कहते हैं "*हदीस और सुन्नत*" ने कायम किया है पत्थर से मौत देना सज़ा जैसा शादी शुदा ज़ानियों के लिए• यह अल्लाह का कानून नहीं है• जैसा 24:2 में बयान किया गया है, ज़ानी के लिए सज़ा है कोड़ें मारना लोगों में; एक सौ इशारतन कोड़े• जैसा ऊपर इशारा किया गया है, बुनियादी सज़ा है सामाजी दवाव और रूसवा करना मुजरिम को• लोगों में कोड़े मारना इस मकसद को अन्जाम देता है•

कत्ल के साथ बरताव करने में, यकीनन तौर पर कुरान सज़ाए मौत कि हिमायत नहीं करता (2:179)• "आज़ाद के लिए आज़ाद, गुलाम के लिए गुलाम, औरत के लिए औरत" (2:178)• इन्सान के संगदिलि और नाइन्साफी कि वजह से, कई लोग यहाँ तक के तसव्वुर नहीं कर सकते यह कुरानी कानून क्या कहता है• वो साफ फरमानों को कबूल करने से इन्कार करते हैं कि ज़रूरी है बराबरी का सख्त ख्याल किया जाए — अगर एक औरत एक मर्द को कत्ल करे, या एक मर्द एक औरत को कत्ल, या एक गुलाम एक आज़ाद शक्स को कत्ल करे, या एक आज़ाद शक्स एक गुलाम को कत्ल करे, सज़ाए मौत लागू नहीं कि जा सकती है• कुरान चाहता है कि कातिल मुआवज़ा दे मकतूल के कुम्बे को•

****

अपेन्डिक्स 38

19: पैदा करने वाले का दस्तखत

सिर्फ खुदाई किताबें ही नहीं अल्लाह कि खलकें जो रियाज़ी तौर पर तरतीब की गई हैं जहाँ नम्बर 19 है कॉमन डिनोमिनेटर• यह वाकई है गहरा कि गैलिलियो ने कहा उसका मशहूर बयान: "इल्म रियाज़ी है एक ज़बान जिसके साथ अल्लाह ने कायनात पैदा किया है•" एक बहुत सारे इल्मी मालूमातों ने अब दिखाया है कि नम्बर 19 नुमाईन्दगी करता हैं अल्लाह का दस्तखत कुछ मखसूस मखलूकों पर• यह खुदाई मोहर नुमाया होता है पूरे कायनात में उसी अन्दाज़ में जिस तरह दस्तखत माइकलएन्जिलो और पिकासो के कामों का शिनाख्त करते हैं• मिसाल के तौर पर:

1. सूरज, चाँद, और ज़मीन एक कतार में आते हैं वही आपसी मकामों में हर 19 सालों में एक बार (देखें एनसाइक्लोपीडिया जुडाईका "कैलेन्डर" में)•
2. हैली कॉमेट, एक बाजे आसमानी कुदरत, दौरा करता है हमारे शमसी निज़ाम को हर 76 सालों में, 19x4•
3. अल्लाह का मोहर आप और मुझपर उजागर किया गया है इस हकीकत में कि इन्सान के जिस्म में हैं 209 हडडियाँ, 19x11•
4. लैन्गमेन्स मेडिकल इमब्रियोलॉजी, टी• डब्लयु• सेडलर कि तरफ से, इस्तेमाल किया जाता है एक दरसी किताब ज़्यादा तर यु•एस•ए के मेडिकल स्कुलों में• पाँचवी छपाई के पेज 88 पर, हम पढ़ते हैं नीचे दिया गया बयान: "आम तौर पर हमल कि मुददत एक पूरे कोख का अरसा माना जाता है 280 दिन या 40 हफ्ते आखरी हैज़ होने के बाद, या ज़्यादा सही सही, 266 दिन या 38 हफ्ते ठहरने के बाद•" 266 और 38 दोनों नम्बरे ज़रप हैं 19 के•

<u>तारीफ हो अल्लाह की</u>

एक मुत्ताहिदा मज़हब
सारे लोगों के लिए
एलान करते हुए

दुनिया के सारे मज़हबें — यहुदी मज़हब, ईसाई मज़हब, इस्लाम, हिन्दू मज़हब, बुद्ध मज़हब, और दूसरे — बुरी तरह बिगाड़ दिए गये हैं बिदातों, रिवाजों के जरिए, और नबियों और वलियों जैसे इन्सानों को पूजते हुए•

अल्लाह का मनसूबा, जैसे तौरैत (मलाकाई 3:1), इन्जील (लुक 17:22-36 और मैथयू 24:27), और इस आखरी किताब में (3:81) बयान किया गया है, पुकारता है अल्लाह के वादे के रसूल को भेजने के लिए जब सारी आसमानी किताबों को पहुँचा दिया जा चुका है• अल्लाह के वादे के रसूल का एहम काम है पाक करना आसमानी किताबों को और उन्हें इस दुनिया के लिए एक आलमी पैगाम में जोड़ना इस दुनिया के पैदा करने वाले और राज़िक कि तरफ से•

ये बड़ी आसमानी किताबी पेशीनगोई पूरी हो चुकी है• अल्लाह के वादे का रसूल आ चुका है, बेपनाह काबिले महसूस सबूत से मदद किए हुए (देखें अपेन्डिक्स दो)• पाक करने का और एक करने का काम शुरू हो चुका है• अल्लाह का मनसूबा मदद किया गया है अल्लाह के गैबी ताकतों के ज़रिए, और इस खुदाई मनसूबे का बड़ा वुसत ज़ाहिर होता है हालही में झूठे मज़हब के मानने वालों का फाश, और ऐसी आज़ादी के खिलाफ रूकावटों जैसे बरलिन वॉल, आयरन करटेन, और बाम्बू करटेन का निकलना•

आईदा से, फरमानबरदारी — है सिर्फ एक मज़हब जो अल्लाह को मंजूर है• जो कोई अपने आप को अल्लाह के हवाले करता है और मनसूब करता है इबादत सिर्फ अल्लाह को है एक "फरमानबरदार•" इसतरह, कोई हो सकता है एक यहूदी फरमानबरदार, एक ईसाई फरमानबरदार, एक बुद्धिस्ट फरमानबरदार, एक हिन्दू फरमानबरदार, या एक मुसलमान फरमान बरदार•

अल्लाह को सिर्फ फरमानबरदारी मज़हब कबूल है • [3:19]

जो कोई फरमानबरदारी के अलावा तलाश करता है उसके मज़हब जैसा,
वो उससे कबूल नहीं कि जायेगी और, अगली ज़िन्दगी में,
वो होगा हारने वालों के साथ [3:85]

रब, तुम्हारा अल्लाह, एक नबी मेरी तरह ऊपर उठायेंगे तुम्हारे लिए तुम्हारे अज़ीज़ो में से, तुम्हें उसे सुनना होगा
(मूसा ड्युटेरेनोमी में 18:15)

मैं उठाऊँगा ऊपर उनमें से एक नबी तुम्हारी तरह उनके अज़ीज़ों में से, और डालूंगा उसके मुंह में मेरी अल्फाज़ें, वो उन्हें कहेगा सब जो मैं उसे हुक्म दूँगा। अगर कोई आदमी मेरे अलफाज़ों को नहीं सुनेगा जो वो कहता हैं मेरा नाम लेकर, मैं उससे खुद जवाब तलब करूंगा उसके लिए। (ड्युटेरेनोमी में 18:18-19)

मैं अपने वालिद से पूछुंगा, और वो देंगे तुम्हें एक और पेरासिलिट —तुम्हारे साथ हमेशा रहने के लिए:
सच्चाई का रूह। (ईसा जॉन में 14:16-17)

जब सच्चाई का रूह आता है तुम्हारे पास, वो रहनुमाई करेगा तुम सब की सच्चाई कि तरफ, और ऐलान करेगा तुम्हारे लिए आने वाले चीज़ों का। (ईसा जॉन में 16:13)

अल्लाह के वादे का रसूल

लो, मैं भेज रहा हूँ मेरा रसूल तैयार करने के लिए मुझसे पहले का रास्ता; और इबादतगाह को अचानक आऐंगे रब जिसकि तुम तलाश करते हो, और वादे का रसूल जिसकी तुम तमन्ना करते हो।
हाँ, वो आ रहा है, कहते हैं मेज़वानों का रब। लेकिन उसके आनेवाले दिन को कौन बरदाशत करेगा?
और कौन खड़ा होगा जब वो पेश होगा,
इस लिए कि वो है साफ करने वाली आग कि तरह .... वो बैठेगा पाक करता हुआ........ (मलाकाई 3:1-3)

जब सिर्फ अल्लाह बयान किए जाते हैं, दिलें उनके जो ईमान नहीं रखते अगली ज़िन्दगी में सिकुड़ जाते हैं नफरत से, लेकिन जब दूसरे बयान किये जाते हैं उनके साथ, वो खुश हो जाते हैं•

[39:45]

रमज़ान कि 27 वीं रात, 13 बी•एच• (हिजरी से पहले) (610 ए•डी), नबी मुहम्मद (रूह — असल शक्स — जिस्म नहीं) हाज़िर किए गए थे मुमकिन सबसे ऊँची जगह को, नजम ज़मीन से रौशनी के मिलयनों सालों दूर, और यह कुरान रखी गई थी उनके दिल में (2:185, 17:1, 44:3, 53:1-18, 97:1)•

उसके बाद, कुरान आज़ाद किया गया था मुहम्मद कि यादाश्त में, जिब्राईल कि मदद से, 23 सालों के एक अरसे में, 610 से 632 ए•ड़ी• (17:106)• जिस वक्त आज़ाद किया गया, मुहम्मद ने बारीकी से लिखा उनके खुदके हाथ से (अपेन्डिक्स 28)• जो मुहम्मद ने छोड़ा वो था मुकम्मल कुरान, नुज़ूल के तारिखवार सिलसिले में लिखा गया, साथ तफसील हिदायतों के वहियों को सिलसिले में डालने का जैसा फरमान किया गया था अल्लाह कि तरफ से•

दोबारा तरतीब करते वक्त, कातिबें जिन्होंने नबी को बुत बनाया सुरह 9 के आखीर में दो आयतों को जोड़ा, मदीने में नाज़िल हुई आखरी सुरह• यह बेहुरमती वाली हरकत अन्जाम बनी एक 50 साल कि जंग कि अली इब्ने अबी तालिब और उसके हिमायत करने वाले एक तरफ और कुरान के बिगाड़ने वाले दूसरी तरफ के बीच• जंग खत्म हुई जब हुसैन इब्ने अली और उसका कुम्बा शहीद कर दिये गए थे करबला में•

वो था उमय्या का हाकिम मारवान इब्ने अल हाकम (मरा 680 एडी में) जिसने पहली कुरान को तबाह कर दिया जो लिखा गया था मुहम्द के हाथ से, "नई झड़पों कि आगाज़ से डरते हुए•"

अल्लाह के वादे के रसूल ने ज़बरदस्त सबूत पेश किया है कि 9:128-129 कुरान का हिस्सा नहीं हैं (अपेन्डिक्स 24)• इन झूठी आयतों को निकालने के साथ, कुरान आखिरकार दुरूस्त कर दिया गया है• हमारी नस्ल सबसे पहली है कुरान को उसके पाकीज़ा और मुकर्रर किए गए रूप में पाने की (अपेन्डिक्स 1 और 28)•

तार्रुफ

अल्लाह के नाम से, सबसे मेहरबान, सबसे रहमवाले.

यह इन्सानियत के लिए अल्लाह का आखरी पैगाम है• अल्लाह के सारे नबियें इस दुनिया को आ चुके हैं, और सारी आसमानी किताबें पहुँचा दी जा चुकीं हैं• वक्त आ चुका है अल्लाह के नबियों के ज़रिए पहुँचाए गए सारे पैगामों को पाक करने का और जोड़ने का एक पैगाम में, और ऐलान करने का कि आइंदा से, सिर्फ एक मज़हब है अल्लाह को कबूल, “फरमानबरदारी” (3:19, 85)• “फरमानबरदारी” है मज़हब जिससे हम पहचानते हैं अल्लाह कि मुकम्मल इकतेदार को, और एक अटल यकीन को पहुँचते हैं कि सिर्फ अल्लाह रखते हैं सारी ताकत; किसी और हसती के पास कोई ताकत नहीं जो तन्हा है उनसे• कुदरतन अंजाम ऐसी समझ का है मनसूब करना हमारी ज़िन्दगियों को और हमारी इबादत को पूरी तरह सिर्फ अल्लाह के लिए• यह पहला हुक्म है सारी आसमानी किताबों में, शामिल करते हुए तौरेत, इंजील, और ये आखरी किताब•

सुनो, ऐ इस्राईल! रब हमारे अल्लाह हैं एक अल्लाह!
इसलिए तुम्हें चाहिए परसतिश करो रब तुम्हारे अल्लाह कि
साथ तुम्हारे पूरे दिल,
साथ तुम्हारे पूरी रूह,
साथ तुम्हारे पूरे ज़हन,
और साथ तुम्हारे पूरी ताकत से• *[डियुटेरोनोमी 6:4-5, लुक 12:29-30, कुरान 3:18]*

चलें हम अल्लाह पर गौर करें, उनकी शानदार सिफतें,
जो हैं बाइस हर चीज़ के इस कायनात में उसके पैदा करने वाले कि वजह से,
जो मुस्तहिक हैं हर वक्त हर जगह मौजूद होने वाले, कादिरे मुतलक, हर चीज़ के जानने वाले कि तरह इबादत किए जाने के लिए,
और खुद ज़िंदा बाखबर हसती,
जो निकालते हैं सारी जाहिलियत और नापाकियों को ज़हन से
और पाक करते हैं और तेज़ करते हैं हमारी समझ को *[गायत्री मंत्र, याजुर वेदा]*

जबकि सारे मज़हब बिगाड़ दिए जा चुके हैं बिदआतों, रिवाजों, झूठे, बुतपरस्ती वाले अकीदों के ज़रिए से, हो सकते हैं “फरमानबरदारें” हर मज़हब के अंदर• हो सकते हैं फरमानबरदारें जो हैं इसाई, यहूदी, मुसलमान, हिन्दु, बुद्धिस्ट, या कोई और• ये फरमानबरदारें, एक साथ, कायम करते हैं सिर्फ मज़हब जो कबूल है अल्लाह को• जैसे ज़ोर दिया गया है इस किताब कि पहली पेज पर, सारे फरमानबरदारें जो सिर्फ अल्लाह को मनसूब करते हैं, और नहीं बनाते हैं कोई बुतों को अल्लाह के साथ, बक्श दिए जाते हैं अल्लाह कि दायम रहने वाली बादशाहत में (2:62)• एक पहचान सच्चे फरमानबरदारों कि है कि वो कुछ भी काबिले ऐतराज़ नहीं पायेंगे कुरान में•

इस वसीहत नामे कि आमदगी के साथ, अल्लाह का पैगाम इस दुनिया के लिए अब है मुकम्मल• लम्बे अरसे से इंतेज़ार के बाद हमने अब पाया है हमारे सबसे ज़रूरी सवालों के जवाबों को — हम कौन हैं, हमारी ज़िन्दगियों का मकसद, इस दुनिया में हम कैसे आये, कहाँ जायेंगे हम यहाँ से, कौन सा मज़हब है सही, क्या वो था इवोलुशन या खिलकत, वगैराह•

हो सकता है कोई सोचे: “क्यों अल्लाह ने अब तक इंतेज़ार किया उनके पैगाम को पूरा और मज़बूत करने के लिए? आदम से अब तक के सारे लोगों का क्या जिन्होंने मुकम्मल आसमानी किताब नहीं पाई?” ध्यान रखते हुए कि कुरान इस सवाल का जवाब 20:52 में देता है, यह एक मामला है सादी शुमारियत का कि दुनिया कि तादाद शरूआत से अब तव 7,000,000,000 के पार नहीं गई• यह हिसाब लगाया गया है कि अबसे दुनिया के खत्म होने तक, 2280 ए•डी• (अपेन्डिक्स 25), दुनिया कि टोटल तादाद 75,000,000,000 को पार कर जाएगी• इसतरह, बड़ी तादाद के लोग मुर्करर किए गए हैं अल्लाह के पाक किए गए और मज़बूत किए गए पैगाम को पाने के लिए (देखें नक्शा)•

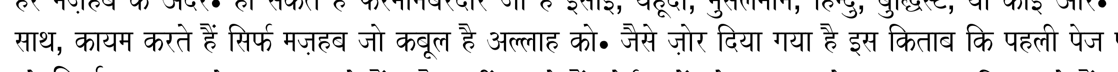

[काला हिस्सा नुमाइंदगी करता है दुनिया कि तादाद आदम के वक्त से]

पैदाईश से पहले

यह शुरू हुआ बिलयनों सालों पहले जब अल्लाह के आला दर्जो कि खिलकतों में से एक, शैतान, ने तकब्बुर वाले ख्याल को पनाह दिया के वो चला सकता है एक सल्तनत जैसे एक तन्हा खुदा के अल्लाह के सिवा• यह दावा अल्लाह के मुकम्मल इकतेदार को नाहि था गुस्तखाना सिर्फ अल्लाह की शान में, वो गलत भी था• शैतान था जाहिल इस हकीकत से कि सिर्फ अल्लाह के पास है एक काबिलियत एक खुदा होने की, उसने जितना समझा उससे कहीं ज़्यादा थी खुदाई• वो था अना — जिहालत से बढ़ाया गया तकब्बूर — जिसने रहबरी की शैतान को मानने के लिए कि वो संभाल सकता है एक सल्तनत, एक खुदा जैसा, और उसे चलाए बिमारी, आफत, जंग, हादसों, और अफरातफरी के बगैर• अल्लाह कि मखलूकों कि बड़ी तादाद ने शैतान कि मुखालफत की• इसके बावजूद, खुदपरस्ती वाली छोटी तादाद जो मुखतलिफ हद तक उससे राज़ी हुए थे बिलयनों में• इसतरह, एक बड़ी फूट भड़क उठी आसमानी कौम में (38:69), बागियों का नाजाएज़ दावा अल्लाह के मुकम्मल इकतेदार का सामना किया गया और निपटाया गया सबसे मुसतैद अंदाज़ में• बागियों को उनके जुर्म कि मलामत और अपने आपको उनके फरमानबरदार होने के लिए काफी मौके देने के बाद, अल्लाह ने संगीन बागियों को एक स्पेस शिप जिसका नाम ज़मीन पर जिला वतन देने का फैसला किया, और इसके बावजूद उन्हें एक और मौका देने का अपने आप कि मगफरत कराने के लिए•

अगर तुम दावा करते हो हवाई जहाज़ उड़ाने का, तुम्हारे दावेको आज़माने का सबसे बेहतर तरीका है के तुम्हें एक हवाई जहाज़ दिया जाए और कहा जाए उसे तुम उड़ाओ• ठीक ठीक यही किया अल्लाह ने शैतान के दावे के जवाब में के वो खुदा हो सकता है; अल्लाह ने उसे मुर्करर किया एक आरज़ी खुदा छोटे से ज़र्रे ज़मीन पर (2:30, 36:60)• जहाँ तक वो जो राज़ी हुए शैतान के साथ, उन्हें मौका दिया गया था उनके अनाओं को खत्म करने और अल्लाह कि मुकम्मल इकतेदार को फरमानबरदार होने का• जबकि खतावार बन्दों कि बड़ी तादाद ने इस मौके का फायदा उठाया, एक ज़र्रा बराबर तादाद तकरीबन शामिल करते हुए 150 बिलयन खिलकतें नाकामयाब हुए इस पेशकश का फायदा उठाने के लिए (33:72)•

सफेद इलाका नुमाइंदगी करता है बड़े तादाद कि जो शैतान से राज़ी नहीं हुए

सुरमई इलाका नुमाइंदगी करता है बड़े तादाद कि जिन्होंने तौबा किया और फरमानबरदारी की

झड़प आसमानी कौम में सबब बना अल्लाह कि मखलूकों की मुखतलिफ गिरोहों में दरजाबंदी की•

(1) फरिश्ते

मखलूकें जिन्होंने कभी सवाल नहीं किया अल्लाह के मुकम्मल इकतेदार पर दरजाबंदी कर दि गई फरिश्तों जैसे; उन्हें पता था कि *सिर्फ* अल्लाह के पास काबिलियत और खूबीयाँ हैं एक खुदा होने की• बड़ी तादाद अल्लाह कि मखलूकों की — अनगिनत तादाद — हैं इस गिरोह में• फरिश्तों कि तादाद इतनी बड़ी है, यहाँ तक कि फरिश्ते खुद नहीं जानते वो कितने हैं; सिर्फ अल्लाह उनकी तादाद जानते हैं (74:31)•

(2) जानवरें

हाँलाकि फरिश्तों ने मशवराह दिया कि बागियों और उनके सरदार को अल्लाह कि सल्तनत से जिला वतन देना चाहिए (2:30), सबसे रहमवाले ने चाहा बागियों को एक मौका देने का उनके जुर्म कि मलामत करने, तौबा करने, और फरमानबरदार होने का उनके मुकम्मल इकतेदार को (33:72)• जैसे ऊपर बताए गए नक्शे में नुमाइन्दगी कि गई है, बागियों में से बड़ी तादाद ने अल्लाह के रहमत वाले भेंट का फायदा उठाया उनकी सल्तनत में दोबारा दाखिल होने के लिए• वो राज़ी हुए अपनी अनाओं को खत्म करने के लिए, इस दुनिया में आनेका एक फरमानबरदारी वाला किरदार अदा करने के लिए, एक कफ्फारे जैसा उनकी बेअदबी के लिए• उनके फरमानबरदारी वाले किरदार के बदले में इस दुनिया में, इन मखलूकों कि निजात कि जाती है वापस अल्लाह के दायम सल्तनत को (6:38)• घोड़ा, कुत्ता,

पेड़, सूरज, चाँद, सितारे, यहाँ तक के माजूर और नाकाबिल बच्चे हैं अकलमंद मखलूकों में से जिन्होंने उनके जुर्म कि मलामत कि और तौबा किया:

क्या तुम नहीं समझते कि हर चीज़ सजदा करती है अल्लाह को आसमानों और जमीन में; सूरज, चाँद, सितारे, पहाड़ें, पेड़ें, जानवरें, यहाँ तक कि कई लोग? कई लोग, हाँलाकि, मुर्करर किए गए हैं आज़ाब के लिए•	*(22:18)*

सितारे और पेड़ें सजदा करते हैं	*(55:6)*

घोड़े के पास अना नहीं है• घोड़े का मालिक हो सकता है अमीर या गरीब, लम्बा या छोटा, मोटा या पतला, जवान या बुढ़ा, और घोड़ा उन सबकी खिदमत करेगा• कुत्ते के पास अना नहीं है; चाहे कितना ही अमीर या गरीब हो मालिक, वो हिलाएगा उसकी पूंछ को उसके मालिक के लिए• सूरज उगता और डूबता हर दिन अल्लाह की तरफ से मुर्करर किये गये ठीक ठीक वक्तों पर• चाँद चलता है उसके मेल किये गये दायरे में ज़मीन के इर्द गिर्द, बगैर ज़रासा भी भटकते हुए• इन्सान का जिस्म — एक आरज़ी लिबास — है ज़मीन का; खुदसे, वो है एक फरमानबरदार• दिल, फेफड़े, गुर्दे, और दूसरे जिस्मानी हिस्से, उनके कामों को अदा करते हैं हमारे काबू के बगैर•

(3) इन्सानें

संगीन बागियें — इन्सानों और जिनों — ने इन्कार किया उनके जुर्म कि मलामत करने का, और चुना शैतान के दावे का मुज़ाहिरा देखने के लिए• ये अना वाली मखलूकें जो नाकामयाब हुए अल्लाह के मुकम्मल इकतेदार कि तरफ फरमानबरदार होने के लिए, बावजूद के जब मौका दिया गया था ऐसा करने के लिए, आधे में बट गए थे• आधा हिस्सा जो कम मुतमईन था शैतान के नज़रिए से दरजाबंदी हो गई इन्सानों जैसी• हाँलाकि उन्हें शक था शैतान के दावे के बारे में, वो नाकामयाब हुए अल्लाह के मुकम्मल इकतेदार के मुताल्लिक एक पुख्ता फैसला करने के लिए• वो है अना जिसने रोका इन मखलुकों को अल्लाह के कादिरे मुतलक होने का कद्र करने से, वो है अना जिसने उन्हें रोका फरमानबरदारी करने से जब ऐसा एक मौका दिया गया था उनको (33:72), और वो है अना जो खड़ा होता है हम में से ज़्यादा के और अल्लाह कि सल्तनत को मगफरत पाने के बीच (25:43)• इस वजह से "तुम्हारी अना का कत्ल करो" है सबसे पहले हुक्मों में से एक कुरान में (2:54)•

(4) जिनें

दूसरा आधा हिस्सा मुजरिम मखलूकों का, जो झुका शैतान के नज़रिए कि तरफ और मुज़ाहिरा किया सबसे बड़े अनाओं का, दरजाबंदी हो गई जिनों जैसे• ये अल्लाह का मनसूबा था एक जिन को मुर्करर करने का हर इन्सान के लिए पैदाईश से मौत तक• जिन साथी नुमाइंदगी करता है शैतान कि और मुसलसल उसके नज़रिए कि हिमायत करता है (50:23, 27)• जिनों और इन्सानों दोनों को एक कीमती मौका दिया गया है इस दुनिया में अपने आप को दोबारा तालीम देने, अपने अनापन कि मलामत करने, और अपने आप को माफ कराने का अल्लाह कि मुकम्मल इकतेदार कि फरमानबरदारी करते हुए• जब भी एक इन्सान पैदा होता है, एक जिन पैदा होता है और मुर्करर किया जाता है नए इन्सान को• हम कुरान से सीखते हैं कि जिनें हैं शैतान कि औलादें (7:27, 18:50)• जब एक जिन पैदा होता है और मुर्करर किया जाता है एक इन्सान को, जिन रहता है एक मुसतकिल साथी इन्सान का जब तक इन्सान मर नहीं जाता• जिन फिर आज़ाद हो जाता है, और ज़िन्दा रहता है कुछ सदियों के लिए• इन्सानों और जिनों दोनों को ज़रूरी है सिर्फ अल्लाह कि इबादत करने का (51:56)•

अल्लाह को रोबोटों कि ज़रूरत नहीं

आसमानी कौम में झड़प जैसा 38:69 में बयान किया गया है और ऊपर बताया गया है साबित करता है कि अल्लाह कि मखलूकों के पास चुनने कि आज़ादी है; उनके पास ज़हने हैं उनके खुदके• ज़र्रा बराबर तादाद कि बगावत अल्लाह के मखलूकों के दरमियान ने खिदमत किया है हैरत अंगेज़ हकीकत पर ज़ोर देनेका कि अल्लाह कि मखलूकें उनकी खिदमत करते हैं इसलिए कि वो उनकी लामहदूद अज़मत कि कद्र करते हैं• बगावत के बगैर, हम कभी भी नहीं जान पाते कि आज़ादी है अल्लाह का तोहफा उनके मखलूको कि तरफ•

सबसे मेहरबान, सबसे रहमवाले

यहाँ तक कि हमारी दुनियावी वुसत में, कोई भी मालिक कारोबार के बेहतरी के लिए उम्मीद करता है उसके मुलाज़िमों से वफादार और भरोसेमंद होने का• अगर कोई मुलाज़िम पूरी तरह मनसूब नहीं होता है कारोबार कि तरफ, या देखा जाता है बटा हुआ वफादारीयों को रखने का, वो फौरन बरखास्त कर दिया जाता है• चुँके इन्सानों और जिनों ने तरफदारी कि शैतान के साथ, फिर ठुकराया अल्लाह कि पेशकश को अपनी बगावत वाली हरकतों पर दोबारा गौर करने के लिए, फरिश्तों ने उम्मीद किया शैतान और उसके साथियों को अल्लाह कि सल्तनत से जिलावतन दिए जाने का (2:30)• वो थी अज़ीम रहमत अल्लाह कि तरफ से कि उन्होंने हमें अता किया यह एक और मौका हमारे जुर्म कि मलामत करने और अपने आप को माफ कराने के लिए•

मगफरत का यह निहायत रहमतवाला मनसूबा पूरा करने के लिए, अल्लाह ने "पैदा किया मौत" (67:1-2)• खुदाई मनसूबे ने पुकारा बागियों को दूसरे वजूद में लाने का, जहाँ उनके पास कोई याददाश्त नहीं आसमानी झड़प की• इस ज़िन्दगी के हालातों के मातहेत, इन्सानें और जिनें पाते हैं दोनों अल्लाह के पैगामों और शैतान के पैगामों को, फिर आज़ादी से दो मे से एक तरफ चुनते हैं• उनकी अपनी मरज़ी के फैसले के बनिस्बत, वो या तो निजात पाते हैं अल्लाह कि सल्तनत को, या हमेशा के लिए जिलावतन किये जाते हैं शैतान के साथ•

शैतान कि आरज़ी सल्तनत

शैतान का मुमकिना सल्तनत को बेहद हकीर बताने के लिए, अल्लाह ने पैदा किया बिलयनों कहकशाएं, बिलयन ट्रिलयन सितारे, एक बड़ी कायनात के अंदर जिसकी चौड़ाई है रौशनी के बिलयनों सालें• अगर हम सफर करते हैं सूरज कि तरफ (93,000,000 मीलें) रौशनी कि रफ्तार से, हम उसको पहुँचेंगे आठ मिनटों में• अगर हम चलते रहें, हम पहुँचेंगे हमारी कहकशां आकाश-गंगा के छोर को 50-70,000 सालों बाद रौशनी कि रफ्तार से• सबसे करीबी कहकशां को पहुँचने के लिए, उसके लिए हमें लगेंगे 2,000,000 सालें रौशनी कि रफ्तार से, और वहाँ हैं 2,000,000,000 कहकशाएं "हमारी कायनात" में• सबसे ताकतवर टेलिस्कोपों के साथ, ज़मीन निहायत ओझल है हमारे खुदके कहकशां के किनारे से, हमारी कायनात के किनारे से तो दूर कि बात• ऐसा जैसा के हमारी कायनात काफी नहीं थी, अल्लाह ने छ: और, बलिके और बड़ी कायनातें हमारी कायनात के इर्द-गिर्द बनाई (2:29, 67:3)• अल्लाह ने फिर शैतान को इत्तेला किया कि एक कमतरीन ज़र्रा सबसे छोटे और अंदर वाले कायनात में, नजम ज़मीन, होगी उसकी सल्तनत• अल्लाह के मनसूबे ने पुकारा इन्सानों और जिनों को एक कायनात में रखने का जो उनके जिस्मानी मौजूदगी का सामना नहीं कर सकता (7:143)• इसतरह, शैतान अल्लाह कि जिस्मानी मौजूदगी से दूर उसकी छोटी सी सल्तनत पर हुक्म चलाता है, हाँलाकि अल्लाह कि पूरी जानकारी और काबू के साथ• ये भी गौर करना चाहिए कि बागियों कि तादाद जिन्होंने तौबा किया थी इतनी बड़ी, कि नजम ज़मीन उन सारों को मुमकिन तौरपर नहीं ठहरा पाती• जैसा पेश होता है, जानवरें इस नजम पर इन्सानों से कई ज़्यादा तादाद में हैं• जिन्हें लगेगा एक नामुमकिन ज़मीन नदामत वाले सारे बागियों को ठहराने के लिए• इसलिए रखना बेहद अनगिनत मखलूकों का बाहरी फिज़ा में•

आदम और हव्वा

सबसे पहले इन्सान का जिस्म ढाला गया था ज़मीन पर अल्लाह के फरिश्तों के ज़रिए, अल्लाह कि हिदायतों के मुताबिक में (7:11)• अल्लाह ने फिर मुर्करर किया पहला शक्स, आदम, उस जिस्म को• जब अल्लाह ने फरिशतों को इत्तेला किया कि वो खिदमत करेंगे इन्सानों कि पूरी आज़माईश के दरमियान — उनकी हिफाज़त करते हुए, हवाओं को चलाते हुए, बारिश और नियामतों को तकसीम करते हुए, वगैराह — सिर्फ शैतान था वाहिद जिसने इन्कार किया "सजदे में गिर" जाने के लिए (2:34, 15:31, 38:74)• आदम का जोड़ा क्लोन किया गया था आदम से, ज़नाना रूपों के साथ, और अल्लाह ने मुर्करर किया दूसरा इन्सान उसके जिस्म को• जबकी खाली (बिना रूह के) जिस्में आदम और हव्वा के रहे ज़मीन पर, उनकी रूहें, असल शक्सें, रहीं जन्नत में• आदम और हव्वा जन्नत में रहे उस वक्त तक जब तक उन्होंने बरकरार रखा अल्लाह के हुक्मों को• जब उन्होंने सुना शैतान को उनके बदले, उन्होंने हम सब में एक ऐबवाली इन्सानी फितरत को ज़ाहिर किया, और वो फौरन हुए नीचे ज़मीन पर शैतान कि सल्तनत के— "उनके जिस्में हो गए ज़ाहिर उनको" (7:20, 20:121)• बाकी है तारीख•

शैतान: सारे जिनों का वालिद

जिनों और इन्सानों को आज़माईश में डालना मुकर्रर किया कि शैतान पैदा करेगा जबभी एक इन्सान पैदा होता है• जैसा ऊपर बयान किया गया है, हरबार जब एक इन्सान पैदा होता है, एक जिन शक्स पैदा होता है खिदमत करने के लिए इन्सान शक्स का एक मुसलसल साथी जैसा• हर इन्सान को सामना कराया जाता है लगातार उकसाए जाने का शैतान के नुमाइंदे कि तरफ से जो रहता है उसी जिस्म में पैदाईश से मौत तक• शैतान का नुमाइंदा कोशिश करता है इन्सान साथी को शैतान के नज़रिए का यकीन दिलाने के लिए: के अल्लाह काफी नहीं है• इंसाफ के दिन पर, जिन साथी काम देता है एक गवाह जैसा इन्सानी जोड़े के खिलाफ (43:38; 50:23, 27)• कई जिनें यकीन दिला दिये जाते हैं अल्लाह के नज़रिए कि तरफ इन्सान साथियों के ज़रिए•

अल्लाह ने नहीं छोड़ा इन्सान को तैयारी के बगैर• इन्सानों को मदद करने के लिए उनके आखरी मौके में ताके वो अपनी बेअदबी पर दोबारा गौर कर सकें, हर इन्सान पैदा होता है फितरती इल्म के साथ कि सिर्फ अल्लाह, और कोई और नहीं, हैं हमारे रब और मालिक (7:172-173)• जिन्नों को ये फितरती इल्म नहीं दिया गया था, लेकिन उन्हें एक ज़्यादा लम्बा उम्र और ज़्यादा बड़ी काबिलियतें दी जातीं हैं अल्लाह कि निशानियों पर गौर करने के लिए सबसे अंदर वाली पूरी कायनात में• चुँकि वो नुमाइंदगी करते हैं शैतान के नज़रिये का, उनकी फितरती ज़ात पुख्ता तौर पर बुतपरस्ती के हक में झुकती है• इसके अलावा सिर्फ अल्लाह कि इबादत करने कि हमारी पहले से बनी फितरत, अल्लाह भेजते हैं रसूलों को हमारी मदद करने के लिए ताके अपने आपकी मगफरत करा सकें• साथ इन सारी चीज़ो के मद्देनज़र, हम कद्र कर सकते हैं इस हकीकत का के सिर्फ नामाफी के काबिल जुर्म (अगर बरकरार रखा जाता है मौत तक) है बुत परस्ती: मानना कि अल्लाह के अलावा किसी के पास है कोई ताकत•

चालीस सालें रहमत कि मुद्दत

इन्सान को गौर करने के लिए चालीस सालें दिये गएं हैं, आसपास देखने, सोचने, और सारे नज़रियों को जाँचने के लिए इस सबसे एहम फैसले को करने से पहले — शैतान के नज़रिये को बरकरार रखना, या अल्लाह के मुकम्मल इकतेदार को• जो कोई मरता है चलीस साल कि उम्र से पहले चुना गया है अल्लाह कि तरफ से मगफरत के लिए हालातों कि वजह से जिसका इल्म सिर्फ अल्लाह को है• जो कोई मरता है 40 कि उम्र से पहले जाता है जन्नत को (46:15, अपेन्डिक्स 32)• अल्लाह कि अज़ीम रहमत इस हकीकत से साबित होती है कि यहाँ तक के वो जो कुरान में ईमान रखते हैं पाते हैं मुश्किल इस शफीक खुदाई कानून को कबूल करने के लिए•

अल्लाह के रसूलों ने पहुँचाई खुश खबरियाँ हमारे अल्लाह कि तरफ से दिया गया मौका खुदकी मगफरत कराने के लिए, और वो मदद किए गए थे ज़बरदस्त निशानियों से• जब मूसा गए फिरऔन के पास, वो मदद किए गए थे ऐसे मौजज़ों के साथ जैसे बदल जाना उनकी लाठी एक सांप में• ईसा ने अल्लाह कि मरज़ी से पैदा किया मिट्टी से ज़िन्दा चिड़ियों को, कोहड़ियों को और अन्धों को ठीक किया अल्लाह कि मरज़ी से, और मुर्दों को ज़िन्दा किया अल्लाह कि मरज़ी से• नबी मुहम्मद, अल्लाह के रसूल जिन्होंने यह आखरी किताब पहुँचाई, नहीं पेश किया ऐसे मौजज़ों को (10:20)• कुरान खुद था मौजज़ा मदद करता हुआ मुहम्मद के मिशन को (29:50-51)• वो थी खुदाई हिकमत जिसने अलग किया कुरान का मौजज़ा मुहम्मद से 14 सदियों तक• अब के जब हम समझते हैं कुरान के रियाज़ी मौजज़े कि निहायत बड़ी एहमियत (अपेन्डिक्स 1), हम समझते हैं कि लाखों लोग मुहम्मद कि इबादत करते अल्लाह का मुजससिमा जैसा अगर यह मौजज़ा उनकी तरफ से नाज़िल हुआ होता•

जिस्मानी, काबिले महसूस, ना काबिले रद्द: सदाकात का सबूत

कम्प्युटर ज़माने कि आमदगी के साथ, हमें पता लगता है कि कुरान का रियाज़ी कोड है "बड़े मौजज़ों में से एक" जैसा 74:30-35 में बयान किया गया है• जबकि पिछले रसूलों को दिये गये मौजज़े महदूद थे वक्त और जगह में, कुरान का मौजज़ा है कायम रहने वाला• सिर्फ कुछ लोग गवाह थे मूसा और ईसा के मौजज़ों के, लेकिन कुरान के मौजज़े का कोई भी गवाह हो सकता है किसी भी वक्त• इसके आगे, कुरान का मौजज़ा दर्ज करता है और साबित करता है पिछली सारे मौजज़ों को (5:48)•

जैसा अपेन्डिक्स 1 में तफसील किया गया है, कुरान का रियाज़ी मौजेज़ा "19" पर बुनियाद है• पढ़ने वाले के साथ इस ज़बरदस्त मौजज़े को बांटने के लिए, लफ्ज़ "अल्लाह" छापा गया है पूरे हिंदी मत्न में मोटे लफ्ज़ों में और वाकै होने के नम्बरों का जमा दिखाया गया है हर पेज कि निचली बांएं कोने पर• इस सबसे एहम लफ्ज़ के वाकै होने का टोटल दिखाया गया है कुरान कि आखीर में 2698 होने का• यह टोटल है एक 19 का ज़रप• इसके अलावा, जब हम हर आयत को दिए गए नम्बरों को जमा करते हैं जहाँ लफ्ज़ "अल्लाह" वाकै होता है, टोटल आता है 118123 को, भी एक 19 का ज़रप (19X6217)• मजमुआ आयत नम्बरों के जमा का जहाँ लफ्ज़ "अल्लाह" वाकै होता है दिखाया गया है निचले दाहिने कोने पर हर पेज के• ये सादी जिस्मानी हकीकतें हैं आसानी से काबिले जाँच पढ़ने वाले के लिए, और वो काफी है कुरान के रियाज़ी ढाचे को गैर मामूली कुदरत होने का साबित करने के लिए•

सदाकत का सबूत जाँचा जाए पढ़ने वाले की तरफ से

टोटल गिनती लफ्ज़ "अल्लाह" की	*आयत नम्बरों का टोटल जमा*
(दिखाया गया है हर पेज कि निचले बाएं कोने पर)	*(दिखाया गया है निचले दाएं कोने पर)*
2698 (19X142)	*118123 (19X6217)*

कुरान के गैरमामूली रियाज़ी ढाचे के अलावा, हम पाते हैं एक बड़ी तादाद कुरानी हकीकतों कि जो साबित हो चुके हैं या आज के साइंस ने थियोरी के तौर पर पेश किये हैं• यहाँ हैं कुछ मिसालें ऐसी तरक्की वाली इल्मी मालुमात कि:

1. ज़मीन अंडे कि शक्ल में बनाई गई है (39:5, 79:30)• 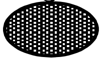
2. ज़मीन बेहरकत खड़ी हुई नहीं है; वो लगातार हरकत करती है (27:88)•
3. सूरज एक सर चशमा है रौशनी का, जबकि चाँद उसका अक्स लौटाता है (10:5, 25:61, 71:16)•
4. ऑक्सीजन का हिस्सा कम होता जाता है जैसे ही हम आसमान कि तरफ चढ़ते हैं (6:125)•
5. "बिग बैंग थियोरी" तसदीक कर दी जा चुकी है (21:30)•
6. "ऐक्सपानशन ऑफ द युनिर्वस थियोरी" तसदीक कर दी जा चुकी है (51:47)•
7. कायनात शुरू हुई एक गैस वाले अंबार कि तरह (41:11)•
8. इवोलुशन एक हकीकत है; एक दिए गए जिन्सों के दरमियान, इवोलुशन है एक खुदाई तौर पर काबू किया गया अमल (21:30, 24:45, 32:7-9, 18:37, 15:28-29, 7:11, 71:13-14, अपेन्डिक्स 31)•
9. मर्द का नुत्फा तय करता है बच्चे का जिन्स (53:45-46)•

वाहियात नहीं

कुरान में कोई वाहियात कि गैर मौजुदगी है उतनी हि मौजज़े वाली• ये खास तौर पर एहम है इस नज़रिए में कि गफलत और वहेम का गलबा था कुरान नाज़िल होने के वक्त• मिसाल के लिए, सबसे एहतराम कि जाने वाली तफसीर रिवायती मुसलमानों के दरमियान है इब्ने कथीर की• इस मशहूर हवाले में, लिखी गई नबी के सदियों बाद, हम पढ़ते हैं कि ज़मीन उठाई गई है एक देव जैसे बैल के 40,000 सींगों पर, जो खड़ा है एक देव जैसी व्हेल पर (देखें इब्ने कथीर कि तफसीर आयत 68:1 का)•

हाल ही कि बात है जैसै 1975, और उसी जगह में जहाँ कुरान नाजिल हुआ था, सऊदी अरब, मदीना के इस्लामी युनिर्वसिटि के सदर, शेख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़, ने ऐलान किया कि ज़मीन सपाट और रूकी हुई है (देखें दर्ज)!!

من مطبوعات الجامعة الاسلامية
بالمدينة المنورة ١٣٩٥ هـ

الأدلة النقليّة والحسّيّة
على جريان الشمس وسكون الأرض

عبد العزيز بن باز

ولو كانت الأرض تدور كما
يزعمون لكانت البلدان ، والجبال ، والأشجار ، والأنهار ، والبحار
لا قرار لها ، ولشاهد الناس البلدان المغربية في المشرق ، والمشرقية في المغرب ؛
ولتغيرت القبلة على الناس حتى لا يقرّ لها قرار

तर्जुमा बिन बाज़ कि किताब से, पेज 23: "अगर जमीन घूमती रहती जैसा वो दावा करते हैं, ममालिक, पहाड़ें, दरखतें, नदियाँ, और सारे समंदर होते बगैर सतह के और लोग देखते मशरिकी मुमालिक को मगरिब कि तरफ चलते हुए और मगरिबी मुमालिक मशरिक को चलते हुए•"

मुकम्मल खुशी: अभी और हमेशा के लिए

हर इन्सान के लिए सबसे पोशीदा मकसदों में से एक है “खुशी•” कुरान ज़ाहिर करता है इस दुनिया में और हमेशा के लिए खुशी हासिल करने का राज़• हम सीखते हैं कुरान से कि खुशी एक तन्हा खूबी है रूह कि• इसतरह, एक जिस्म जो हासिल करता है सारी जिस्मानी तरक्कियों को — पैसा, ताकत, शोहरत, वगैराह —जिसकि वो तमन्ना करता है अकसर होता है एक नाखुश शक्स का• खुशी असल शक्स, रूह के बड़ने के दर्जे और हासिल कि गई तरक्की के ज़रिए पर पूरी तरह बावसता है• कुरान मुहय्या करता है एक तफसील किया गया नक्शा जिस्म और रूह दोनों कि मुकम्मल खुशी के लिए, दोनों इस दुनिया में और हमेशगी वाली अगली ज़िंदगी में (अपेन्डिक्स 15)•

कई आयतों में इस सबित कि गई पूरी किताब में, अल्लाह खुद ज़मानत देते हैं ईमान वालों को खुशी, अभी और हमेशा के लिए:

बेशक, अल्लाह के साथियों को कुछ न होगा डरने के लिए,
नाहीं वो गमज़दा होंगे•
वो हैं जो ईमान लाते हैं
और एक नेक जिंदगी बसर करते हैं•
उनके लिए खुशी इस ज़िंदगी में, और अगली जिंदगी में•
ऐसा है अल्लाह का अटल कानून•
ये है सही फतह• [10:62-64]

सारे ईमान वाले नुमाइंदगी करते हैं एक काबिले कबूल मज़हब

जैसा उम्मीद किया जाता है खालिक के आखरी पैगाम से, कुरान में सबसे पहले उभरे हुए मौजूओं में से एक है बुलावा सारे ईमान वालों के दरमियान एकता का, और दोहराई गई मनाई अल्लाह के रसूलों के दरमियान कोई फरक करने कि• अगर इबादत कि वजह वही और एक है, वहाँ होगी मुकम्मल एकता सारे ईमान वालों के दरमियान• वो है इन्सानी वजह, जो है बेबस इन्सानें जैसे ईसा, मुहम्मद, और वलियों कि इबादत और तासिब जो सबब बनता है बटवारे, नफरत, और कडवाहटी जंग बहके हुए ईमान वालों के बीच• एक हिदायत याफता ईमानवाला मनसूब होता है सिर्फ अल्लाह को, और खुश होता है किसी दूसरे ईमानवाले को देखते हुए जो मनसूब है सिर्फ अल्लाह को, ऐसा एक ईमानवाला या वाली चाहे अपने मज़हब को किसी भी नाम से पुकारते हों•

यकीनन, जो कोई ईमान रखते हैं,
वो जो कोई हैं यहूदी,
ईसाईयें,
और जो तबदील हुए हैं;
जो कोई
(1) *ईमान रखे अल्लाह में,*
(2) *ईमान रखे आखरी दिन में, और*
(3) *बसर करे एक नेक ज़िन्दगी,*
पायेंगे उनका जज़ा उनके रब कि तरफ से;
उनके पास नहीं है कुछ डरने के लिए, नाहीं वो होंगे गमज़दा • [2:62, 5:69]

अल्लाह के वादे का रसूल

जैसा अपेन्डिक्स 2 में तफसील किया गया है, छपाई इस किताब कि एक नये ज़माने कि आमदगी कि निशानी है — ज़माना जहाँ अल्लाह के पैगामात, पहुँचाए गये उनके सारे नबियों के ज़रिए, जोड़े गये हैं एक में• अल्लाह का एक और सिर्फ मज़हब, “फरमान बरदारी,” हावी होगा दूसरे सारे मज़हबों पर (9:33, 48:28, और 61:9)• आजके बिगड़े हुए मज़हबें शामिल करते हुए, यहूदी मज़हब, ईसाई मज़हब, हिंदू मज़हब, बुद्ध मज़हब, और इस्लाम, सादगी से खत्म हो जायेंगे, और “फरमान बरदारी” तारी होगा• यह एक इन्सान या एक इन्सानो के मजमे कि ख्याली सोच नहीं है; यह है अल्लाह का अटल कानून (3:19, 9:33, 41:53, 48:28, 61:9, 110:1)•

रशाद खलीफा
टुसॉन
रमदान 26, 1409*

**आखरी ड्राफ्ट पहली छपाई का मुकम्मल हुआ शबे कद्र 1409 मे• अगर हम जोड़ें दिन, महीना, और साल इस तारीख का, हम पाते हैं 1444, या 19x19x4• [रमदान 26, 1409: =9+26+1409 = 1444.]*